एक ओंकार सतिगुरू प्रसादि ||

श्री गुर भगत माल सटीक

इस ग्रंथ में आदि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की बाणी में आए भगतों, अवतारों और ऋषियों के नाम और सिक्ख इतिहास मे बड़े बड़े भगत जन और सिक्खों के जीवन की साखीयां दरज हैं।

www.9009.co.in

ੴ एक ओंकार सतिगुरू प्रसादि || ੴ

श्री गुर
भगत माल
सटीक

इस ग्रंथ में आदि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की बाणी में आए भगतों, अवतारों और ऋषियों के नाम और सिक्ख इतिहास मे बड़े बड़े भगत जन और सिक्खों के जीवन की साखीयां दरज हैं।

www.9009.co.in

१ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ततकरा

नंबर	पन्ना
सुणि साखी मन जपि प्यार	९
१ श्री धरू भगत जी	१२
२ प्रहिलाद भगत जी	२३
३ ऋषी बालमीक जी	३५
४ श्री राम चन्द्र जी	४३
५ सीता जी की कथा	४८
६ शिव जी महाराज	५२
७ साखी सनकादिक	५४
८ शेश नाग	५६
९ सुकदेव मुनी जी की कथा	५८
१० राजा जनक जी	६५
११ भगत अंगरा जी	७३
१२ अम्बरीक भगत जी	७५
१३ गोतम मुनी की कथा	८०
१४ हनूमान की कथा	८८
१५ गनिका	९५
१६ कपल मुनी	१०१
१७ अजामल	१०४
१८ पिंगला की कथा	१११
१९ माता यशोधा जी की कथा	१२३
२० कुबिजां मालण की कथा	१२४
२१ तिधर भगत की कथा	१२७
२२ द्रोपती की कथा	१३१
२३ राजा हरी चन्द	१३६
२४ सतियावादी राजे हरी चन्द जी की कथा	१४०
२५ राजा उगरसैन की कथा	१५०
२६ ऊधो की कथा	१५४
२७ अकरूर जी की कथा	१५४
२८ गजिंदर की कथा	१५९
२९ सुधामा भगत की कथा	१६२
३० राजा बल की कथा	१६६
३१ राजे भगतों की कथा	
१ राजा प्रोछत	१६८
२ पहूरवा	१६९
३ भगीरथ	,,
४ मानधाता	,,
५ रुकमांगद	१७०
६ रावण	,,
७ अज राजा	१७१
८ बाबा आदम	,,
९ अरण पिंगला	१७२
१० इन्द्र दी पया	१७३
३२ ब्रह्मा और उन की लड़की सुरसवती की कथा	,,
१ करन की कथा	१७४
२ समुन्द्र के खारे होने की कथा	१७५
३ केसी दैंत	,,
४ काली सर्प	१७६
५ दुरबाशा रिषी	,,
६ अठारां पुराण	१७७
७ सहस बाहू और रावण	,,
८ रकत बीज	१७८
९ मधकीटभ	,,
३३ महांदेव ने लड़का मारना	१७९
१ बिंदराबन	१८१
२ पारजात	,,
३४ ब्रह्मा जी की कथा	१८२
३५ चन्द्रहांस की कथा	१८३
१ चन्द्रहांस का भगति करना	१८४

www.9009.co.in

नंबर	पन्ना
२ धृष्टबुद्धि मन्त्री की कथा	१८५
३ जलादां ने चंदरहांस को जंगल में ले जाना	१८७
४ बिखया से मलाप और शादी	१९३
५ चंदरहांस की थां मदन की मौत	१९५
३६ महांबली अरजन की कथा	१९९
३७ भीष्म पितामा जी	२०६
३८ गरुड़ की कथा	२१३
३९ देवा पन्डा की अरदास	२१६
४० भगत कबीर जी की साखी	२२१
१ कबीर जी का जन्म	,,
२ कबीर जी ने बाणी उचारी	२२६
३ कबीर जी की बीमारी	२३०
४ कबीर जी ने गुरू धारन करना	२३३
५ रामानंद जी पास	२३६
६ महांदानी कबीर जी	२३९
७ कबीर जी का साधूओं को भोजन कराउणा	२४२
८ कथा संसार असथिर है	२४७
९ बादशाह ने कबीर जी को	
१० कबीर जी को अगनी में फेंकना	२७१
११ कबीर जी को हाथी के आगे फेंकना	२७७
१२ कबीर जी का उपदेश	२८४
१३ कबीर जी ने कांशी का त्याग करना	२८८
१४ अन्न की महिमा	२९०
१५ कबीर जी का चलाणा	१९२
४१ भगत रविदास जी	
१ श्री रामानंद जी के दर्शन	२९५
२ श्री रविदास जी ने भगती ते किरत करनी	३०१
३ पण्डितों की दुशमनी	३०३
४ चतौड़ गड़ की रानी	३११
५ भगत जी ने ठाकर नदी में तराये	३२३
६ मीरां बाई भगत रविदास जी	३२८
७ भगत रविदास जी का उपदेश	३४१
८ अभीच और पुरब स्नान	३४४
९ भगत रविदास जी और पारस	३४६
१० भगत रविदास के पक्के मंदर बनने	३५०
४२ भगत पीपा जी	३५३
१ राजे को सुपना औना	३५५
२ सन्तों के साथ मेल	३५७
३ पीपा जी भगत बन गए	३६०
४ भगत पीपा जी को भगवान कृष्ण जी के दरशन होने	३६३
५ ठग साधू और सीता जी	३६७
६ राजा सूर्ज मल को उपदेश	३७०
४३ श्री सैन जी	३७२
४४ भगत गुरू रामानंद जी	३७६
४५ भगत धन्ना जी	३७९
४६ भगत नामदेव जी	३८८
१ ठाकुरों को दूध पलाना	३९०
२ पंडर पूर में बीठुल के चरनों में	३९३
३ मरी गऊ जवाना	३९६
४ देहुरा फिरने की कथा	४०१
५ नामदेव जी ने बरागी बणना	४०४
६ बीठुल के चरनों में	४०७
७ नामदेव जी का नवां घर	४०९
८ नामदेव जी का प्रलोक गमन	४१२
४७ भगत जै देव जी	४१४
१ जै देव जी राज कवी	४१७
२ भगत जी की तीरथ यात्रा	४१८
३ भगत जी की पदमावती के साथ शादी	४१९
४ भगत जी का धमाण मुड़ना	४२२
५ भगत जी का गीत गोबिंद की	
६ भगत जी को गोविंदपुरी के मन्दर में भेजना	४२३

www.9009.co.in

नंबर	पन्ना
७ भगत जी का लुटना	४२९
८ भगत जैदेव जी का अंतकाल	४३१
४८ भगत त्रलोचन जी	,,
जै चन्द को उपदेश	४४०
४९ भगत सूरदास जी	४४३
१ सूरदास वणना	४४४
२ सूरदास की रचना	४४७
५० भगत प्रमा नन्द जी	४४८
५१ भगत वेणी जी	,,
५२ भगत भीखन जी	४५५
५३ बाबा शेख फरीद जी	४५७
१ पहली घोर तपस्या	४५९
२ हउमैं का सिर नीचा	,,
३ दूसरी बार तपस्या करनी	४६२
४ मुराद धारना	४६३
५ पाकपटन में उपदेश	४६६
५४ भगत सधना जी की कथा	४६८
१ मास बेचने का काम छोड़ना	४६९
२ खून जिमे लगा	४७०
५५ सत्ता और बलवंड की कथा	४७५
सत्ता और बलवंड को कोहड़ होना	४७९
५६ बाबा सुन्दर दास जी	४८६
५७ बारां तीरथों की कथा	४८७
१ घुसमेशवर तीरथ की कथा	४८८
२ नागेशवर अथवा लंकेशवर	४९१
३ सत बन्ध रामेशवर	४९२
४ श्री मलकारजन तीरथ	,,
५ सोमनाथ	४९५
६ श्री महां केलशवर जी	,,
७ कदार नाथ बदरी नाथ	४९५

नंबर	पन्ना
८ भीम शंकर	४९५
९ ओंका रामेशवर जी	४९६
१० श्री विशवेशवर जी	,,
११ त्रियंबकेशवर जी	४९७
१२ वैदय नाथ	,,
५८ राजे जनमेजे की कथा	५००
१ महा भारत की कथा	५०६
२ जरासिंध के मरने की कथा	५११
५९ श्री कृष्ण जी ने हाथी को मारना	५१३
६० श्री कृष्ण जी और चडूर की कुशती	५१४
६१ चंद्राभली के छलण की कथा	५१५
६२ देवी के तीरथ थापन की कथा	५१९
६३ भाई मेहरू की कथा	५२२
६४ श्री अमृतसर की कथा	५२५
१ अमृतसर की पवित्रता	५२८
२ अमृतसर नाम पड़ने की कथा	५२९
३ शहिर का हाल	५४०
४ बाबा अटल पकी पकाई घल	५४२
५ गरु के बाग का हाल	५४३
६५ भाई तिलकू जी	५४७
६६ समुन्द जी की कथा	५५१
६७ साधू रानी जी की कथा	५५५
६८ भाई भाना उपकारी जी	५५७
६९ भाई साईआं जी	५६२
७० भाई सरखाना जी की कथा	५६७
७१ भाई सुजाना जी	५७२
७२ जटू तपे की कथा	५७८
७३ भाई छजू झीवर	५८२
७४ भाई जोगा सिंह जी	५८७
७५ बीबी बसन्त लता जी	५९७

www.9009.co.in

सुणि साखी मन जपि पिआर

सुणि साखी मन जपि पिआर ॥ अजामलु उधरिआ कहि ऐक बार ॥ बालमीकै होआ साध संग ॥ ध्रू कउ मिलिआ हरि निसंग ॥ तेरिआ संता जाचउ चरन रेणै ॥ ले मसतकि लावउ करि क्रिपा दे ॥१॥ रहाउ ॥ गणिका उधरी हरि कहै तोत ॥ गजइन्द्र धिआइओ हरि कीओ मोख ॥ बिप सुदामे दालदु भंज ॥ रे मन तू भी भजु गोबिंद ॥२॥ बधिकु उधारिओ खमि प्रहार ॥ कुबिजा उधरी अंगुसट धार ॥ बिदरु उधारिओ दासत भाइ ॥ रे मन तू भी हरि धिआइ ॥३॥ प्रहिलाद रखी हरि पैज आप ॥ बसत्र छीनत द्रोपती रखी लाज ॥ जिनि जिनि सेविआ अंत बार ॥ रे मन सेवि तू परहि पार ॥ ४ ॥ धंनै सेविआ बाल बुधि त्रिलोचन गुर मिली भइ सिधि ॥ बेणी कउ गुरि कीओ प्रगासु ॥ रे मन तू भी होहि दासु ॥ जै देव तिआगिओ अहंमेव नाई उधरिओ सैनु सेव ॥ मनु डीगि न डोलै कहू जाइ ॥ मन तू भी तरसहि सरणि पाइ ॥६॥ जिह अनुग्रहु ठाकुरि कीओ आपि ॥ से तै लीने भगत राखि ॥ तिन का गुणु अवगणु न बीचारिओ कोइ ॥ इह बिधि देखि मनु लगा सेव ॥७॥ कबीरि धिआइओ ऐक रंग ॥ नामदेव हरि जीओ बसहि संगि ॥ रविदास धिआए प्रभ अनूप ॥ गुर नानक देव गोविंद रूप ॥८॥१॥

(बसंतु महला ५)

यह हुकम पांचवें पातशाह का है। शहीदों के सिरताज रबी बाणी को प्रगट करन वाले शहिनशाह फुरमाते हैं कि हे जीव ! सिखिआ लेने के लिए साखीआं सुण। तेरे हृदय में प्यार उत्पन्न होगा। वही प्यार 'जत' का रूप धारण कर

www.9009.co.in

लेगा। अजामल ने एक बार 'नराइन' का नाम लिया तो तर गया क्योंकि जिस ने प्रभू को एक बार धिआया उसके पाप कट गए। वह जन्म मरण से छूट गया। वह पारब्रह्म से ऐसे घुल मिल गया, जैसे नदीयां सागर में अरूप हो जाती हैं। कोई भेद नहीं रहता।

पांचवें पातशाह ने सारे उन भगतों के नाम लिए, जिन्हों ने उस नाराइण हरि का जस गाया। इन सारे भगतों के जीवन वृतांत लड़ी का नाम भगत-माला है। इसका पाठ करना शांती, प्रेम, ऐकता, कल्याण, गुरु प्यार और मानव सत्कार प्राप्त करने के लिए एक साधन है। क्योंकि नेक और करनी वाले पुरुषों के जीवन जन साधारण के लिए रोशन मुनारे होते हैं। जिनसें अंधेरे में गिरने से बचते हैं। इसलिए जोर दिया जाता है कि इत्हास पड़ा जाए। आत्मक जगत का इतिहास अनोखा है इस को समझते गुरमख जन ही हैं, जो बरोसाए गए हैं। जिन पर प्रमात्मा ने आप उचेची मिहर की हो, जीव चौरासी के गेड़ में भरमता रहा, फिरता रहा जूनें भोग-२ कर कष्ट उठाता रहा, क्योंकि दूसरी और यह प्रभू प्रमात्मा से दूर थी। जैसे सतिगुरु जी तीसरे सरूप में फुरमाते हैं :-

हउमै जलते जलि मुए भ्रमि आऐ दूजै भाइ ॥

इस जगत को जलता देख कर ही सतगुरु नानक देव जी महाराज ने अवतार लिआ, भारत आए, लुकाई को बचाया

www.9009.co.in

पूरे सतिगुरि राखि लीए आपणै पंनै पाइ ॥
इहु जगु जलता नदरी आइआ गुर कै सबदि सुभाई ॥
सबदि रते से सीतल भए नानक सचु कमाइ ॥१॥
(सलोक महला ३ वार सोरठि महला ४)

इस माइया के चमत्कार, हंकार और लालच की आग से जलने वाले जगत में जीवन आत्मा को पूरा सतिगुरू ही बचा सकता है। क्योंकि वह आपणे सेवकों की आप लाज रखता है। जलता जगत देख कर गुरू जी ने शब्द रूपी बाण चलाया तो शीतल हो गया। जो शब्द से लगे वह शीतल हो गए। भाव - शांत रहे। संतोख में रहे।

भगत जन आप तो इस संसार रूप सागर से तैरते हैं, जिस में कई प्रकार के मगरमच्छ, तंदूए भाव माइआ के चमत्कार हैं जो भगतों पर असर नहीं करते, पर अपने सेवकों और खानदानों को भी तार सकते हैं। मेरे पातशाह फुरमाते हैं :-

सफलिओ सतिगुरू सेविआ धंनु जनमु परवाणु ॥ जिना सतिगुरू जीवदिआ मुइआ न विसरै सेई पुरख सुजाण ॥ कुलु उधारे आपणा सो जन होवै परवाणु गुरमुखि मुए जीवदे परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि ॥ नानक मुए न आखीअहि जि गुर कै सबदि समाहि ॥२॥ (मः ३)

सो हे जगत जीवो ! आओ भगत जनों की कथन थावाँ साखीआं करीए और सुनीए तांकि मन को शांति मिले। आज सारा जगत माया हउमै, वासना लालच आदिक औगुणों से जल रहा है। आज प्रमाणु शक्ति से जगत एक बार नष्ट करने के यत्न हो रहे हैं। भगती से कोरे लोग उलटा सोचते हैं। उनकी सोच शक्ति को बदला जाए। सारी खलकत, सृष्टि-शक्तिइयां सब प्रमात्मा की हैं, प्रमात्मा ही सब का करता हरता है। इन ऋषीओं मुनीओं की धरती पर भगती और प्रेम की बारश होनी चाहिए। आओ सुणें और प्रेम कथा करीए 'श्री गुर भगत माल' की जैसे कि ग्रन्थों में बताई गई है।

नालि नराइणु मेरै ॥ जमदूत न आवै नेरै ॥
कंठि लाइ प्रभ राखै ॥ सतिगुर की सचु साखै ॥
(सोरठि मः ५)

१. श्री धरूअ भगत जी

आदि काल में, जिसका नाम सतिजुग है, भगत धरूअ जी हुए हैं। आप का जन्म राजे उतानपाद के घर हुआ। इनकी माता का नाम सुनीता था। वह बहुत धारमक नेक और सतवंती स्त्री थीं। उस राजे उतानपाद की दो राणीआं थीं। छोटी राणी कुछ तो सुंदरी बहुत थी, दूसरा चंचल मन और ईरखा वाली थी। उसने राजे को काबू कर रखा था। सदा आपणे महिल में रखती। उसका भी एक लड़का था। वह राजे के पास रहिता था। राजा उसको गोदी में उठाता। सुनीता के लड़के धरूअ को मतरेई राजे की गोद में बैठ कर सुख न लेने देती। ऐसी दशा में बालक कई बार सोचता कि बालक के लिए बाप के मन का धरम पिआर का निघा सुखदाई होता है। जिसको बाप का प्यार नहीं मिलता, उस बच्चे का जीवन अधूरा होता है। उसके मन में सारी उमर वेदनां खत्म नहीं होती।

भाई गुरदास जी ने श्री धरूअ भगत जी के जीवन की कथा इस प्रकार बिआन की है :-

धरूअ हसदा घर आइआ कर पिआर पिउ कुछड़ लीता ॥
बाहों पकड़ उठालिआ मन विच रोस मत्रेई कीता ॥
डडहुलिका मां पुछे तूं सावाणी हैं कि सरीता ॥
सावाणी हां जनम दी नाम न भगती करम द्रिड़ीता ॥
किस उत्तम ते राज मिले सत्र ते सभ होवन मीता ॥
परमेशर आराधीऐ जिदूं होईऐ पतित पुनीता ॥

ब्राहर चलिआ करन तप मन बैरागी होइ अतीता ।।
नारद मुनि उपदेसिआ अबिचल राज करहु नित नीता ।।
हार चले गुरमुखि जग जीता ।।

भाई साहिब के कथन अनुसार एक दिन बालकों से खेलता हुआ धरूअ घर (राज महल) पहूंचा। वह बहुत प्रसन्नचित और खुश था। उसको हंसता देख कर राजे के अन्दर मोह जागा। प्यार आइआ। उसको पकड़ कर गोद में बिठा लिया। घुट कर सीने से लगाया और सिर पर प्यार देते हुए राजा उस से तोतली आवाज में बातें करने लगा।

जब राजा अपने पुत्र धरूअ से पिआर से बातें कर रहा था, तब उसकी छोटी राणी सुरिची आ गई। वह उनसे ईरखा करती थी। अपने पुत्र को राज्य का मालिक बनाना चाहती थी। उसने जब देखा कि उसकी सौंकण का पुत्र धरूअ राजे की गोद में बैठा पिआर प्राप्त कर रहा है तो उसके मन में बहूत गुसा आया। उसके माथे पर तिऊड़ी पड़ गई, होंठ मरोड़े गए। उसने जल्दी से बच्चे को बाजू से पकड़ कर राजे की गोद से उठा कर कहा - तुम राजे की गोद में नहीं बैठ सकते। निकल जाओ ! इस महिल से दोबारा इस और कभी मत आना।

आपणी छोटी राणी सुरिची की यह गल्त हरकत को देखकर राजा उतानपाद चुप कर रहा। उसको कोई बात न सूझी। वह राणी की सुन्दरता और जवानी का दास था। वासना ने उसको नीचा किया था। वह बोल न सका। यह कह ना सका कि उसको क्या हक था बाप की गोद से पुत्र को बांह पकड़ कर उठाने का। वह चुप कर

www.9009.co.in

रहा। सुरिची के माथे की तिऊड़ी ने उस को ठण्डा कर दिया। वह उसे देखता ही रह गया।

दूसरी और बालक धरूअ बाप की गोदी में से डडोलिका होकर दुख महिसूस करता और गलेडु भरता हुआ आपणी माता की और चला गया। उसके पैर मुशकल से हिलते थे। वह बालक सिआणा था, मन में सोचने लग पड़ा कि उस को अपने ही बाप की गोद में से क्यों उठाया गया। वह आखर राजे का पुत्र था। वह जैसे जैसे वह आपणी माता के पास गया, वैसे वैसे ही उसका रोणा बढ़ता गया माँ के पास जाकर उसकी भुबाँ निकल गईआँ, जैसे कि उसको किसी ने खूब पीटा हो।

पिआरे पुत्र को रोता देख कर सुनीती के कालजे का रुग भरिआ गया। उसने चुक लिया ते उसको गोद मे बिठाउने का यत्न किया। पुत्र! माँ सदके, तुझे क्या हुआ है? क्या किसी ने तुमको मारा है? इत्ना क्यों रोता है, रोने का कारण बताओ'।

'माँ...में पिता जी की गोद में बैठा था, छोटी माँ ने मुझे बाजू पकड़ कर उठा दिया। कहा...तूँ नहीं बैठ सकता। रोते हुए धरूअ ने ऐसे अपणे रोणे का कारण बता दिया।

'ठीक है, पुतर ! मेरे लाल! तुझे आपणे बाप की गोद में नहीं बैठणा चाहिए। तेरा कोई हक नहीं। ....कोई हक नही मेरे लाल! राणी ने पुत्र को घुट के सीने से लगा लिया। उसका मुँह चूमा और साथ ही राणी का दिल रो पढ़ा। उसकी आंखों में आंसू आ गऐ।

'माँ....! सच्च बताओ तुम रानी हो कि दासी? मुझे कोई पता तो चले? मासूम बाल धरूअ ने पूछा! उस के मन में कुदरती ज्ञान आ गया।

'पुत्र ! हुं तो मैं रानी ! पर...!' वह चुप कर गई।

'फिर पिता जी की गोद में बैठ क्यों नहीं सकता ?'

'क्योंकि भगती नहीं कीती। ना भगती करने के कारन यह हालत हो रही है। राज सुख भगती वालों को मिलता है।'

'मां ! बताओ फिर मैं क्या करूं, जिस कारन मुझे राज सुख मिले। मुझे कोई राज सिंघासन से ना उठाए। कोई न झिड़के ?

सात साल के बच्चे के मन ने पुछ कीती। मां, ममता मारी मां ने कहा, पुतर ! प्रमातमा की भगती करनी चाहीदी है। उस भगती तपसिआ कारन ही राज सुख प्राप्त होता है।'

'अच्छा मां ! मैं भगती करने जाता हुं। धरूअ ने कह दिया।

'मां - पुत्र ! अभी भगती करने का समय नहीं, अभी तुम बालक हो। तेरे जाने के बाद मैं क्या करुंगी ? मेरी होंद पुतरा तेरे साथ। मुझे पहले ही कोई नहीं पूछता। जब तुम चले गए तो फिर क्या बनेगा।' इस तरह राणी आपणे पुत्र से प्यार करती हुई बोलती गई। उस के मन को घोर पैंण लग पड़े। मां भला कैसे पुत्र को आंखों से ओहले कर सकती है ?

रात आई धरूअ को नींद ना आई। उस की आंखों के आगे मतरेई की गुस्से भरी शक्ल सी बांहों पकड़कर खींचने की झांकी राज और तपस्या का ख्याल था। वह बे-चैन सा हुआ। उठ कर बैठ गया उसने देखा कि मां सो रही है। सोई मां को देख कर घर तिआग करने का ख्याल पक्का हो गया। आधी रात आगे और आधी पीछे थी। धरूअ राज महिल में से मलकड़े जिहे खिसक गया और बाहर आ गया। ऐसा भाणा वरतिआ कि किसी ने देखा। राज भवन के पहरेदार भी आंखें मीट गए।

www.9009.co.in

नंगे पांव बालक जंगल में पहुंचा। रात का समय था। अंधेरा और भिआनक जंगल, निरभैता से चलते गए। उसने किसी चीज की कोई परवाह न की। उसकी आंखें मसाले की तरह सुर्ख हो रहीं थी। शेर और बघेले कूकदे सी. शोर मच रहा था पर वह न डरा। मासूम हृदय से पुकारने लगा - 'भगवान ! मैं आ रहा हुं। मैं आपका नाम नहीं जानता....मैं नहीं जानता की कहां, पर रिहा हां।

वह थक गया और धरती पर बैठ गया। उसे नींद आ गई। आंख खुली तो सुबह हो चुकी थी। सूरज की सुनहिरी किरनों से सारा जंगल जगमगा रहा था। रंगा रंग के बनफूल खिले थे। वृक्षों पर पक्षी इलाही राग गा रहे थे। शांती थी। उठ कर धरूअ आगे को चल पढ़ा। आगे फूलों वाली झील थी जिसका निरवल जल नीले रंग की भाअ मारता था। उसके किनारे जा खड़ा हुआ। उसने देखा पक्षीयों से बिना चार पांव वाले जानवर आते और पाणी पी पी कर वापस जा रहे हैं। वह भी किनारे बैठ गया। जल पिआ। उठ, उठकर ध्यान से देखने लगा। 'भगवान' कहां होगा।....उठ कर ऊंची आवाज लगाई. 'भगवान ! भगवान ! मैं आया हां।

उसके आवाज लगाते ही नारद मुनी आ गए। नारद मुनि को देख कर कहा, क्या आप हैं ?

'नहीं बालक' मैं भगवान नहीं - भगवान दूर रहता है, वहां तुम नही जा सकते। नारद ने उत्तर दिया।

धरूअ - 'मैं क्यों नहीं जा सकता ?

नारद - तेरी उमर छोटी है, तूं राजे उतानपाद का पुत्र है। मैं यह जानता हूं तपोपन दूर हैं। रास्ते में भिआनक जंगल हैं।

तुझे बलाईं खा जाएंगी। भूख, प्यास, बिजली बारष, पाला गरमी तेरा शरीर नहीं सहि सकता। आ मेरे साथ में तुझे तेरे बाप के पास ले जाऊं। वह तुझे राज दे देगा - आधा राज।'

धरुअ हंस पढ़ा 'आधा राज! ...अभी मैं भगवान के दर्शन करने चला हूं तो आधा राज्य, अगर दर्शन कर लूंगा तो अवश्य ही पूरा राज्य मिलेगा।' उसने मन ही मन सोचा और फिर दलेरी से बोला, देखो जी! मैं नहीं जानता कि आप कौन हैं? कहां से आए हैं। अगर मुझे भगवान की भगती से रोकते हो तो मेरे दुश्मन हो। बस आपके लिए अच्छा यही है कि यहां से चले जाओ। अपने रास्ते पढ़ो। कोई बला मुझे खा जाए आपको क्या?

मासूम बालक धरुअ की जबान से ऐसा बचन सुन कर उस का द्रिड़ विश्वास देखकर नारद मुनी हैरान हो गए। उस ने बालक की और देखा और अंत उपदेश दिया। 'ठीक है। बालक रुप में कोई महान आत्मा है।' तेरा बीचार ठीक है। भगवान की भगती करनी सब से अच्छा करम है। यह मन्त्र याद कर लो। ओ३म नमो भगवते वासदेवाय' और आखें बन्द कर 'केशव कलेष हरी' हरी का ध्यान धरी रखणा। कोई विघ्न नहीं पढेगा। तेरे कारज रास होंगे।

ऐसे उपदेश करके ब्रह्म शक्ति आसरे नारद मुनी अलोप हो गया। उस दा अलोप होणा धरुअ के लिए अचम्भे की बात थी। 'कहीं यही तो भगवान नही था। बालक के मन में शंका फुरिआ। वह आगे जाकर एक पत्थर की सिल के ऊपर बैठ गया और भगती करने लगा।

दूसरी और मां सुनीती जागी। उसने आपणे कंवल नैणों से आपणे पुत्र की और देखा तो उसका बिस्तरा खाली था। जल्दी से उठी। दिल धड़कने लग पढ़ा, आवाज लगाई :-

www.9009.co.in

धरूअ ! धरूअ मेरा लाल कहां है? महिल गूँजिआ। दासीआं आईआं, पर किसी ने यह न बताया कि धरूअ कहां है ? सारा महिल छाना, महिल के साथ बाग देखे। दास दासीयों ने पूछा, पर उसका कोई पता न चला। सुनीती विआकुल हो उठी। उस की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। उसके सिर के बाल गले में आपणे आप ही बिखर गए।

राजे उतानपाद को खबर हुई, वह सुनीती के महिल में पता करने जाने लगा तो छोटी राणी ने रोक लिया। 'ना जाओ ! खुद ही मिल जायेगा। उसने कोई चालाकी की होगी। खुद ही छिपा दिया होगा। आपको हैरान करना चाहती है।'

राजा रुक गया, मन ही मन में सोच रहा था कि एक तारा हाथ में पकड़े नारद मुनी जी खड़ाऊं का खड़का करते हुए आ गए।

राजा के पास आ कर 'हरी नराइन!' उचारिआ। हे राजन ! आज क्या मामला है, आप हैरान हो, क्या छोटी राणी ने घूरा है ?

नारदमुनी की जबान से यह सुन कर राजा कुछ शरमिंदा हो गया नारदमुनी त्रैकालदरशी, उसको नमस्कार करके राजे ने कहा :- 'हे मुनी जन ! मेरी बड़ी राणी सुनीती का पुत्र धरूअ सुना है कि राज महल में से गुम हो गया है, उस की चिंता है। कल उसको छोटी राणी ने मेरी गोद में से उठा दिया था। इससे नाराज होकर पता नहीं बच्चा किधर गया ?

'हरी नाराइण !' ...कहि के नारद मुनी बोला 'हे राजन !...आपका लड़का गुम नहीं हुआ। वह तो तपोबन में पहुंच कर भगती करने लग पड़ा है। उस मासूम का दिल दुखाया। हे राजन ! आप ने बहुत गलती की है। राज के कारन, माया के चमत्कार से आप मोहित हो गए हैं। आपका पुत्र-पिआर हो सकता है, पर नारी प्यार परबल है।

रूप वासन के गुलाम हो गए थे। आपने पुत्र को प्यार नहीं दिया। राणी सुनीती ने दुरकार दिया। ऐसा करम और वितकरा करने वाला पुरख सदा दुखी होता है। वह 'केशव कलेष' की भगती करके राज्य प्राप्त करेगा !

कुछ बातें सुन कर राजा शरमिंदा हुआ और धरूअ का तपोबन को जाणा सुण कर उसको हैरानी हुई। उसने नारद मुनी की और देख कर पूछा :-

सच्च ही मेरा पुत्र तपोबन को चला गया ? वह घोर तप करेगा ? मासूम सा बालक भूख, गर्मी और ठण्ड कैसे सहण करेगा। उफ ! यह कहि कर राजे ने होका भरा। उसको हैरानी हुई ! 'हे मुनी जी ! यह खबर आपणें माड़ी सुनाई। 'जाओ ! मेरे पुत्र को वापस लाओ में उसको अपना आधा राज्य देता हुं। वह अपने राज्य में सुख से रहे धरम करे। जीवन सुख माणे। पर यह नहीं देख सकता कि मेरा पुत्र भूख से मरे !'

नारदमुनी-'हे राजन ! मोड़ देखना, पर मुड़ेगा नहीं। वोह ज़रूर तपसिया करेगा।'

यह कैह कर नारद मुनी 'हरी नाराइण' कहिते हुए रानी सुनीता के पास गये। उस को धीरज दी। और कहा-'हे रानी ! आप की कुख सफल हुई, चिंता ना कर ! खुश हो, आप का पुत्र भगत बनेगा।

राजा उतानपद जंगल में धरूअ के पास उसको मनाने के लिए गिया, लालच दिया, तरले किये, मगर राजा धरूअ को वापस लाने में सफल ना हो सका। निराश हो कर वापस मुड़ आया।

राजा के जाने से धरुअ को पूरा विशवास हो गया कि भगती करना

ठीक है। जे तपसिया तों पहिलां अद्धा राज मिलदा है तां भगती कीतियां जरूर पूरा राज मिलेगा। ओह निराअहार रहि कर घोर तपसिया करने लगा। इन्द्र ने धरुअ की तपसिया को भंग करने के लिये अनेक यतन कीए, माइया के चमत्कार दिखाए, धरूअ ना डोला। उसने नेत्र ना खोले, अंत में 'माया मय' दैंत को भेजा। वह दैंत वड़ा भिआनक था। उस ने तपोबन में भिआनकता पैदा कर दी। उस ने हनेरीआं, बारशाँ लै आँदीआं, गड़े पाए, दरखत डेगे, धरती हलाई मगर धरुअ अडोल बैठ रहा। वह घोर तपसिया करता रहा। उसने इन्द्र को डरा दिया।

इन्द्र आपने राज दरबार से चल कर विष्नूं भगवान के पास आया। उनको कैहने लगा--'धरूअ तपसिया कर रहा है कहीं ......!'

इन्दर की बात पूरी ना हूई पर विष्नूं भगवान सारी बात जान गए। उनहों ने कहा--'हे इन्दर ! धरू जिस इच्छा को धारन करके तप कर रहा है, ओह पूरी होएगी। उस की इच्छा आप का राज लेने की नहीं। वह तो आपने पिता के राज का ध्यान कर रहे हैं। उनको ओह मिलेगा। ऊंची पदवी होगी।

इन्दर खुश होकर आपने राज-भवन में चला गिया। विष्नूं भगवान आपना रूप बदल कर तपोबन में पहुंच गए। उनहों ने वैसा ही रूप धारन किया जैसा कि धरूअ के ध्यान में था। अडोल और अहिल समाधी को तोड़ा और दरशन दिये। धरूअ ने जब दर्शन किये तो प्रसंन हो गिया। उसकी प्रसंनता देख कर भगवान ने वचन किया-- 'घोर तपसिआ नाल मन मोहिआ। जाओ राज मिलेगा। २६ हजार साल राज करके अमर होगा। स्रिष्टी के रहिते तक नाम रहेगा। यह वर देकर आपने भगत को घर भेज कर भगवान विषनूं आपने आसन की तरफ चले गए।

नारद मुनी ने राजा को बताया। वह रथ लेकर आगे लेने के लिए आया। मंगलचार हुए। प्रजा ने खुशी मनाई और राणी सुनीती आई उस के लिए संसार रोशन हो गया। सब को वधाई देने लगे।

राजा उतानपाद ने धरूअ को राज दे दिया। भगवान के वरकर के २६ हजार साल राज किया। बाद में वह अमर हो गए। आज 'धरुअ तारे' के नाम से याद किया जाता है। वह जीवन का एक अमिट और अडोल केंदर है। हे जगिआसू जनो! जो भगती करता है वह उत्तम पदवी प्राप्त करता है। सभ भगवान की लीला है।

गिआन प्रकाश

इस पुस्तक में आठ कांड हैं। जिन में करम, धरम, नाम, मुकती, मृत्यू, जन्म, मरन, धरम और सिआसत, नरक, सवरग शरीर की बणतर और अन्दर और बाहर के भेद और गुरु कौण है। इत्यादि प्रश्नों के उत्तर आदि के प्रकरण हैं। इस के पढ़ने से निश्चय ही पुरुष को अनेक प्रकार के ज्ञान की प्राप्ती होती है।

भेंटा :- २४-००

मिलने का पता :-

भाई चत्तर सिंह जीवन सिंह

पुस्तकों वाले, बाजार माई सेवां अमृतसर।

२. भक्त प्रहिलाद

आदि काल में जब भारत वर्ष में दैंत और देवते रहते थे. श्री राम चन्द्र जी से भी पहले उत्तरा खण्ड में प्रहिलाद भगत हुआ। इस भगत की महिमा बहुत है। गुरबाणी में अनेकों तुकें ऐसी हैं जिन में इन का नाम लिखा है। राम नाम लेता था। उस समय 'राम' के अर्थ थे, भगवान सरब शक्तिवान। जिस की महिमा वेद गाते हैं।

प्रहिलाद की कथा जो पुराणों में आती है। वह इस तरह है। एक कशिप ऋषी हुआ है। वह तपस्या किया करता था। घने जंगलों में तपस्या करने के बाद उस के मन में ऐसा आया कि वह जंगल छोड़कर मनुख वसों की और चला गया। मनुष्य वसों में फिरते हुए उस का मन 'दिती नाम की सुन्दरी और मुटिआर कनिआ को देख कर डोल गया। उसने कनिआ को कहा कि वह उस से शादी कर ले। वह कंनिआ मान गई। उसके मां बाप भी मान गए और रिषी ने दिती से शादी कर ली।

कुछ समय पाकर दिती की कोख से दो पुत्र और एक लड़की पैदा हुई। पुत्र का नाम हिरणकिशप और हरनाकश थे और कनिआ का नाम होलका था। यह तीनों भाई बहिन बलवान हूए। दोनों पुत्रों ने राज कायम कर लिया। एक दिन हिरणकशिप विराह भगवान के हाथों मारा गया। उसकी मौत से उसका छोटा भाई भी डर गया। उसने खिआल किया कि विराह भगवान एक दिन उसको भी मार देगा। विराह क्योंकि देवता था और हरनाकश दैंत था। देवताओं से टाकरा करना बड़ा कठिन था, पर भाई के खून का बदला लेना भी जरुरी था क्रोधवान हरनाखश रास्ता ढूंढने लगा। अन्त उसने भगवान

www.9009.co.in

को खुश करके वर प्राप्त करने के लिए 'उगर तप करना शुरु किया। वह तप करने लगा। तप भी इतना कठिन और घोर किया कि इंदर जैसे देवता घबरा गए।

इन्द्र ने हरनाकश की राजधानी पर हमला करके उस में लूट मचाई, अनेकों दैंत मारे गए उसकी गर्भवती स्त्री 'किआधू को लेकर इन्द्र लोक चला गया। जब वह उसको लेकर जा रहा था तो रास्ते में नारद मुनी जी उसको मिल गए। नारद त्रैकाल दरशी थे। उन्होंने देखा कि किआधू ऐसे बालक की मां बनने वाली है, जिस का सितारा ऊंचा है और भगत होगा। उस ने इन्द्र को कहा - 'हे देवराज! लड़ाई तो पुरुषों से होती है। स्त्री पर हाथ उठाणा ठीक नहीं है। यह स्त्री निरदोष है। निरदोष स्त्री का तंग करना भगवान की निंदा है। इस को छोड़ दो।

पहिले तो इन्द्र इधर उधर की करने लगा, फिर उस को नारद की महिमा का धिआन आया तो उसने किआधू को छोड़ दिया। नारद किआधू को आपणे आश्रम में ले गया और अपणी लड़की की तरह उसकी देख भाल की।

दैंत कन्या और हरनाकश दैंत की पत्नी किआधू नारद के आश्रम में रही तो उसकी संगत ही बदल गई। वह भगती और हरी नाम की कथा सुनने लगी। नारद मुनी भी उसको ज्ञान सुनाया करते थे। उस ज्ञान का असर बच्चे पर पढ़ा। कुछ दिन पाकर नारद मुनी के आश्रम में ही किआधू ने बच्चे को जन्म दिया, उस बालक का नाम 'प्रहिलाद' रखा गया। इस प्रथाऐ भाई गुरदास जी फुरमाते है :-

घर हरनाकश दैंत दे कलर कवल भगत प्रहिलाद ॥

पढ़न पठाया चाटसाल पांधे चित होआ अहिलाद ॥

सिमरे मन में राम नाम गावै सबद अनाहद नाद ॥
भगत करन सभ चाटढ़े पांधे होइ रहे विसमाद ॥
राजे पाज रुआइआ दोखी दैंत वधाया वाद ॥
जल अगनी विच घतिआ जलै न डुबै गुर प्रसादि ॥
कढ खड़ग सद पुछिआ कउण सु तेरा है उसताद ॥
थंम पाड़ परगटिआ नर सिंघ रूप अनूप अनाद ॥
बेमुख पकड़ पछाड़िअनु संत सहाई आदि जुगादि ॥
जै जै कार करन ब्रह्माद ॥

भाई गुरदास जी के बचन अनुसार कलर में कंवल फूल खिला। दैंत के घर भगत पैदा हुआ। हरनाकश ने तप किया तो तप को देख कर ब्रह्मा उसके पास आए। उसके कान में कहा - 'तप पवान' मांग लो जो वर मांगना है।

यह सुन कर हरनाकश ने आंखें खोली। ब्रह्मा को आपणे सनमुख खड़ा देख कर कहा । प्रभू! बस मुझे यह वर चाहिए, ना मैं दिन को मरूं ना रात को। ना अंदर मरूं न बाहर। ना कोई हथियार काट सके, न आग जला सके। पाणी में न डूबूं। सदा जीवित रहां।

ब्रह्मा यह बात सुन कर पहले तो बहुत ही घबराया। उस ने सोचा, यह दैंत है। इस की बुधी ऐसी हो, यह नुकसान करेगा पर बचन किया था तो उसका तप पूरा हो गया था। इस लिए उन्हें वर देना ही पढ़ा। तब 'तथा असतू' कहि कर ब्रह्मा जी चले गए। हरनाकश उठ कर खड़ा हो गया। वह हंकार गया। उसके हंकार से सारा देव लोक घबरा गया।

वह आपणी राजधानी में पहुंचा। तब उसी समय नारद मुनी जी भी किआधू और प्रहिलाद को लेकर आए। नारद मुनी ने सारी बात

www.9009.co.in

बताई कि इंद्र ने उसकी राजधानी को उजाड़ा है और लूट मार की है नारद की बात सुन कर हरनाकख को और गुसा आ गया। उस ने सब दैंतों को इकठ्ठा किया। जो लुके छिपे थे उन सब को भी इकठ्ठा करके आपणे तप की कथा कहि सुनाई। उससे यह सुन कर दैंतों को होंसला हूआ और हरनाकश ने कहा - 'देखो ! आओ हम सब देवताओं से बदला लेंगे। आप में से जो भी मर जायेगा वह तप शक्ति से ही जीवित हो जायेगा।

भगत जनों ! तब हरनाकश दैंत ने इन्द्र पुरी पर अपनी सेना लेकर देवताओं की पुरीओं पर हमले करने शुरू कर दिये। सभ से बड़ा हमला इन्द्र पुरी ऊपर किया। इन्द्र हरनाकश का मुकाबला ना कर सका। उह आपनी राणीओं और देवदासीओं को लेकर ब्रह्म लोक की तरफ भाग गिआ। हरनाकश ने उसकी इन्द्र पुरी उजाड़ दी देवताओं को कट वढ कीती। कटा-वढ भी ऐसी की, जैसी कि किसी ने देखी ना हो। अनेक देवताओं को अंग हीन कर दिया गिआ। उस की सेना को बरबाद करके इन्द्रपुरी को लूट कर अनेक अपछरों को आपने कबजे में लेकर आपनी राजधानी की तरफ मुड़ आया। उस ने आते ही आपने शहिर के राज में ढंडोरा पिटवा दिया कि कोई स्त्री पुरुष, किसी देवते, भगवान आदिक का नाम ना लवे - बस यही जाप किआ जाए-- 'हरे हरनाकश ! जले हरनाकश !' बोले हरनाकश ! सभ शक्तिओं के मालक हरनाकश ही हरनाकश !' देवताओं के लिए बरबादी का जुग आ गिआ, देवते घबरा गए। भै - भीत हो गए।

देवताओं के कुझ मुखीए भगवान विष्नू के पास गए। उन्हों ने जा कर पुकार की - 'हे भगवान ! आप की महिमा तो अलोप हो रही है। देवी देवताओं का नाम मिटाया जा रहा है। सोचो इस तरह

www.9009.co.in

धरम, नेकी अलोप हो जाएगी और अधरम, पाप, धक्का और शैतानी शक्तियां परबल हो जानगीआं। कोई उपाए सोचो। दैत को वर दे के ब्रह्मा जी ने ठीक नहीं किया। सभी देवते मारे जाएंगे।'

विष्नूं ने ब्रह्मा को बुलाया, ब्रह्मा ने कहा -- 'उस ने तप करके मुझ से धोखे से वर ले लिया है। उस की मौत का कोई रास्ता भगवान ही निकाले।'

सभ कुछ सोच कर विष्नूं भगवान ने कहा -- 'हे देवताओ ! घबारो ना। सदा राज धरम करता है, अधरम की शक्ति राज नहीं करती। हरनाकश की मौत का कारन उस का अधरम, उस का हंकार होगा। समझो -- उस के घर प्रहिलाद नाम का पुत्र हुआ है। उस बालक के हृदय में 'राम नाम' का प्रकाश होगा। यही वसीला बनेगा -- मारा जाएगा। फिकर ना करो। धरम और अधरम की लड़ाई आरंभ हो जाएगी।' यह सुन कर देवते खुश हो गए। वह आपो आपने स्थानों की तरफ चले गए। उन के जीवन का अंधेरा दूर हो रहा था।

विष्नूं भगवान ने हरनाकश को मारने के लिए आपने यत्न आरंभ कर दिए। उन्हों ने प्रहिलाद के हृदय में ज्ञान और भगत सच्च निरभैता के दैवी गुण प्रगट कर दिए। ६ वर्ष का प्रहिलाद हुआ तो उस को पाठशाला में पढ़ने के लिए बिठाया गिआ। उस पाठशाला में बहुत से और भी लड़के पढ़ते थे।

पाठशाला के मुख अध्यापक का नाम सन्डा मरका था। वह खुश हुआ कि राज-पुत्र के पढ़ने आने से उस की शोभा बढ़ेगी। उस को बहुत कुझ मिला करेगा। उस को धन्न मिलेगा, उस के जन्म जन्म की भूख दूर हो जाएगी। उसने बड़ी खुशी खुशी के साथ प्रहिलाद को पढ़ाना शुरू किया। मुढले अक्षर पढ़ाए। अक्षर

पड़ाउन से उस ने उस बालक से कहा - 'कहो सभी कि हरनाकश महाराज की जै !

सभ ने कहा - 'हरनाकश महाराज की जय'

पर बालक प्रहिलाद खड़ा देखता ही रहा। वह चुप खड़ा रहा। इस तरह कुछ दिन बीत गए। संडे और मरके का ध्यान पढ़ा कि प्रहिलाद हरनाकश का नाम नहीं लेता। वह उस समय चुप कर जाता समझो कि विष्णु भगवान् की प्रेरणा थी, उसने खेड खेलणी थी, सो खेलने लग पढ़ा।

प्रहिलाद बेटा ! श्री हरनाकश महाराज जी का नाम लो !' संडे मरके ने उसको प्यार से कहा।

'पंडा जी ! हरनाकश तो मेरे पिता जी का नाम है। भला पिता जी का नाम मैं किस तरह ले सकता हुं। ऐसा कैसे हो सकता है। प्रहिलाद का उत्तर था।

यह ठीक है कि वह तुम्हारा पिता है, तुम किस्मत वाले हो। पर उसने तपस्या के बल से सभी देवी देवताओं को जीत लिया है। वह अमर हो गया है। मर नहीं सकता। उसका अैसा हुकम है कि उनका ही नाम लिया जाएगा। 'श्री हरनाकश - जले थले हरनाकश !'

यह सुन_कर प्रहिलाद मुस्करा पड़ा। विष्णु की क्रिपालता से उनके अन्दर की आतमा एक बृद्ध ऋषी की तरह प्रकाशमान हो गई। उसको अस्ल धरम का ज्ञान हो गया और उनकी जुबान पर आया - 'राम नाम....'जले थले' अगन हवा सभ में राम रिहा - राम.... भगवान राम।'

पंडा जी ! देवताओं से ऊपर भी एक भगवान है....राम को पिता जी ने नहीं जीता। इसलिए सभ का दाता राम है।'

www.9009.co.in

प्रहिलाद जी की जबान से यह बात सुन कर पंडे की आत्मा तो डर गई, उस ने समझ लिया, यह तो कोई बड़ा अवतारी जीव है, भला छे सात वर्ष का बच्चा और बातें करे आतमक गिआन दीआं ?

पंडे ने प्रहिलाद को बहुत समझाने का यत्न किया, मगर प्रहिलाद ना माना। वह राम का प्यार रहा। उस ने पाठशाला के दूसरे लड़कों को बिगाड़ दिया। जोर जोर से राम धुन गाई जाने लगी। ऐसा प्यार हुआ, ऐसी प्रभु ने लीला वरताई, ऐसा गिआन हुआ। ऐसी हरनाकश राजा की मिटी पलीत हुई कि पंडा डर का मारा तड़प उठा, उसका शरीर कांपने लग पड़ा, वह हरनाकश दैंत के क्रोध से डरता था। उस ने देखा हुआ था, हरनाकश तो किसी की जान नहीं छोड़ता। उस को कोई पूछने वाला नहीं था। प्रहिलाद उस का कहा नहीं मानता था, उस ने प्रहिलाद को मार पीट की, डराया धमकाया। बातों के साथ समझाया। अंत एक रोअब भरी भारी किसी पूरे मरद की अवाज में, पंडे को उत्तर मिला -- 'पंडे ! कुझ भी हो, राम ही राम है, राम से बड़ा कोई और नहीं, राम ने ही दैंतों को मारना है।

पंडा सिर पर पाँव रख कर तेजी के साथ भाग गया। हरनाकश के दरबार में पहुंच कर डंडवत प्रनाम कर, उस ने आपने हाथ जोड़ कर कहा, 'महाराज ! मैं मजबूर हूं कहिने के लिये मेरी जबान छोटी और बात बड़ी है, आप का राज पुत्र, आप का नाम नहीं जपता। वह तो 'राम' कहिता है।

भगवान ने ऐसी खेड वरताई कि उस समय पंडे के मूंह से निकला 'राम' शब्द हरनाकश के दरबार में इतना गूँजा कि उसने अपने कानों में उंगली डालनी पढ़ी। उसको क्रोध आ

www.9009.co.in

गिआ। वह आपे तों बाहर होकर गरजिआ। 'यह नहीं हो सकता.... कोई भी मेरे नाम के बगैर किसी और का नाम ना जपे। कोई जिंदा नहीं रहि सकता में मैं आप पूछूंगा।'

हरनाकश के इन शब्दों के साथ दरबार गूंज पड़ा। सभ दरबारी और सेवक डर गए। कांप उठे। उनको ऐसे प्रतीत हुआ जिस तरह भुचाल आया था, दरबार डोल गया था।

बुलाया गया भगत प्रहिलाद को ! बाप ने बुलाया। उस समय क्रोध से दैंत का मूंह लाल सुरख हुआ था। 'प्रहिलाद ! पंडा शिकायत करता है, तू मेरा नाम नहीं लेता ?

'पिता जी ! आप मेरे पिता जी हैं, पिता जी मैं आप का नाम लेता भला शोभा देता हूं ? पिताजी का सतकार करना योग है।' 'प्रहिलाद ने मुसक्रा कर उत्तर दिया। वह निरभै था। असल में उस भगत के रास्ते जगत की महान शक्ति भगवान विष्णु मुसकरा रहा था।

'यह बात नहीं !' हरनाकश बोला।

'और कौन सी बात है पिता जी ?' प्रहिलाद ने फिर स्वाल किया। उस की छोटी आंखों ने दैंत की मलीन आत्मा की तरफ देखा, काली आत्मा क्रोध और हंकार से भरी हुई थी।

'राम नाम ना बोल ! मेरा नाम ले हरनाकश हरनाकश की माला फेर !'

यह सुन कर प्रहिलाद हंस पड़ा। ऐसे हंसा, जैसे कोई बड़ा पुरुष हंसता है। जिस को गिआन होता है त्रै-लोक का गिआन। वह बोला -'हे राजन ! यह आप का हंकार है। आप ने तपस्या करके भगवान से वर लिया। जिस से आप ने वर लिया हे, वही मेरा 'राम भगवान है।'

www.9009.co.in

'यह नाम ना ले ! मैं तुझे मार दूंगा।' दैंत के शरीर को झटका लगा। उसकी जबान से मुशकल से ही 'राम' शब्द निकलते रहा, पर प्रहिलाद सगों भखिआ। खुश होया, जिस तरह मौत उसको डराती नहीं थी।

नां क्यों ना लवां ! नारद मुनी के आश्रम में से शिक्षा ली थी। मैं माता के ग्रभ में था। कभी नहीं भूल सकता, मेरे तो रोम रोम में राम है। राम है राम !'

'ले जाओ ! इस को ले जाओ ! दरिआ में डोबो ! मारो !' हरनाकश ने हुकम दे दिया। आपने ही पुत्र को हरनाकश ने दुश्मन समझ लिया।

दैंत का दरबार डोल गिआ। उसके दरबारी बहुत हैरान होए। प्रहिलाद की मां ने मिनतें कीं, मगर हरनाकश किसी की एक भी बात नहीं सुनता था। गमी छा गई, मगर प्रहिलाद मुसकाया, उसके नेत्रों में अनोखी चमक आ गई।

दैंत पकड़ कर ले चले। मगर हरनाकश के डर से कोई ऊंची सांस ना लेता, मगर सभ के दिल घबराए, रोए, क्योंकि मासूम प्रहिलाद सभ को प्यारा था। वह तो सभ को बातें करके आपनी तरफ खींचता था।

रड़ नदी, जिसको आज कल सतलुज दरिआ कहा जाता है, उस समय मुलतान शहिर के पास ही से गुजरती था, मुलतान ही हरनाकश का शहिर था। वह आधे पंजाब का राजा था।

हाथ पांव बांदने के बगैर जलादों ने प्रहिलाद को नदी में फेंक दिया। ऐसे फेंका जैसे कोई भारी पत्थर फेंका हो।

मगर धन्न है भगवान ! प्रहिलाद का राम, जो अद्रिष्य है, करता हरता है, वह पहिले ही पहुंच गिआ। उस ने आपने हाथों पर

www.9009.co.in

आपणे भगतों को उठा लिया। 'जुग जुग भगत उपाइआ, पैज रखता आया राम राजे।' प्रहिलाद चला गया और किनारे आ गया।

किनारे लगा देख कर दैंत उस ओर दौड़ा। प्रहिलाद मुस्कराया। दुष्ट हरनाकश के मरने का वसीला पैदा करने के लिए भगवान ने कौतक रचा।

दैंतों ने मासूम बालक समझकर सरब शक्तिवान भगवान को दोबारा पकड़ लिया। उस के शरीर से भारी पत्थर बांध कर फिर दरिया में डुबोया। प्रहिलाद पहले नीचे गया, फिर ऊपर आया तो उसके शरीर से कोई पत्थर न था। वह टूट कर नीचे ही रहि गया। दैंत हैरान हो गए। वह डर गए। अब उन्होंने समझ लिया कि जरूर किसी माया शक्ति का वरताउ है। उनको कुछ ऐसा ही दिखाई दिया जैसे अनोखी शक्तियां डरा रहीं थीं। वह प्रहिलाद को छोड़ कर दौड़ गए। जा हरनाकश को कहा - वह नहीं डूबता पत्थर से भी तैर पड़ता है। राम ! राम ! बोली जाता है।

उन दैंतों को झिड़के मिलीं। दूसरों को हुकम किया, जाओ इस को ऊंचे पर्वत पर ले जा कर नीचे गिरा दो। मैं आपको शक्ति देता हूं ले जाओ उठा कर।

उन दैंतों ने ऐसा ही किया। वह उसे उठा कर पर्वत पर ले गए। जब चट्टान से नीचे गिराने लगे तो प्रहिलाद ने 'राम' कहा। राम कहते ही प्रहिलाद को उसी समय उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे वह हवा में, उढ़ता फूल था। हलका फूल। नीचे आया, धरती के उपर पैरों के बल खड़ा हो गया। जरा चोट न आई। राम ने अपने भगत की लाज रखी। आपणी शान चमकाई॥ ब्रह्म शक्ति का किया।

पर्वत में ऐसी बिजली शक्ति उत्पन्न हुई कि वहां पर खड़े दैंत

www.9009.co.in

वहीं पर गिर कर सवाह हो गए। राम का प्यारा भगत चल कर फिर राजधानी में आ गया। वह फिर राम नाम का गुन गाने लगा। अब वह और ऊंचे स्वर में गाता था। सारा शहिर, पशु, पक्षी और वहां की इमारतें भी 'राम नाम' की धुन गाने लगीं। हरनाकश अब घबरा गया। उसने क्रोध में आकर प्रहिलाद को पकड़ कर पीटना शुरु कर दिया। पर प्रहिलाद मुसकराता रहा। उसको क्रोध न आया। न ही उसको कोई दर्द हुआ।

हरनाकश की बहिन 'होलका' थी। उस को माइआ शक्ति का परदा दे कर हरनाकश ने कहा, 'इस बालक को गोद में लेकर चिता के ऊपर बैठो, आग लगेगी, तुम नहीं जलोगी यह जल जायेगा। ऐसा पुत्र होना ठीक नहीं।

होलका ने ऐसा ही किया। पर जब लकड़ी को आग लगाई तो सब से पहले उसको आग लगी। वह तो सेक लगने से पीट उठी। प्रहिलाद हंसता रहा। वह जैसे जैसे हंसता वैसे वैसे ही आग तेज होती गई। जैसे जैसे आग तेज होती वैसे वैसे ही होलका पीटती। जलती गई पर आग से बाहर न निकल सकी। वह जल कर सवाह हो गई। दैंत और देवते सब हैरान हो गए। कानों पर हाथ रख लिए। ऐसा धर्म का खेल देख कर भक्त जन हंसे। प्रहिलाद आग में से बाहर आ गया।

'कढि खड़ग सद पुछिआ कउण सु तेरा है उस्ताद॥

थंम पाड़ प्रगटिआ नरसिंघ रूप अनूप अनाद॥

हरनाकश दैंत का जब उस पर कोई भी चारा न चला तो फिर उस पापी, दुष्ट, हंकारी ने राम के भगत को लोहे का थंम तपा कर उस से बांध दिया। थंम ने भगत को कुछ न कहा। पर फिर प्रहिलाद मुसकराने लगा। गुसे से हरनाकश लाल पीला हो गया। उसे

www.9009.co.in

तरह जैसे डूबता सूर्य लाल होता है। उस का आखरी समय हीं आ गया था।

बताओ तुम्हारा कौण रक्षक है?' हरनाकश ने प्रहिलाद से पूछा।

'मेरा राखा राम है!' प्रहिलाद ने उत्तर दिया।

'कहां है?

'मेरे पास, मेरे साथ वह सदा देखता रहता....घाट घाट में बसता है। जरा होश करो, तुम्हारी मौत आई है!'

'मेरी मौत नहीं! तुम्हारी मौत,....तुम्हारी मौत ले आई है! यह कहि कर हरनाकश तलवार उठाने ही लगा था कि थंम पाढ़ गया। उस थंम में से विष्णु भगवान जी नर-सिंघ का रूप धारण कर के - मूंह शेर का धड़ आदमी का बना कर बाहर निकले। उन्होंने दोषी दैंत हरनाकश को पकड़ लिया। उन्होंने हाथों से पकड़ कर हरनाकश का पेट पाढ़ दिया। उसकी आंतड़ीआं बाहर आ गई। भगवान ने कहा - 'हंकारी दैंत! देख तूं न दिन को मर रहा है न रात को। इस समय दिन अन्दर बाहर है। धरती के ऊपर भी नहीं मारा। हाथों पर उठा कर गोडे के ऊपर रखा है। यह कह कर नरसिंघ ने हरनाकश का अंत कर दिया। हरनाकश मारा गया। तब फिर विष्णु भगवान असली रूप धारन करके प्रगट हुए। उन्होंने प्रहिलाद को तार दिया राज बखशा और धरम का राज करने के लिए उपदेश दिया। सारे मारे ब्रह्मण्ड में जै जै कार हुई।

हे जगिआसू जनो! जो भी पुरुष इस धरती रूप ब्रह्मण्ड पर जन्म लेता है, अगर वह प्रभु की भगती करता है तो वह आपणा

www.9009.co.in

जनम सफल कर जाता है।

जैसा कि सतिगुरु जी महाराज फुरमाते हैं :-

जपि मन माधो मधुसूदनो हरि स्री रंगो

परमेसरो सति परमेसरो प्रभु अन्तरजामी ॥

सभ दूखन कु हंता सभ सूखन को दाता

हरि प्रीतम गुन गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

(सारंग महला ४)

www.9009.co.in

३. ऋषी बालमीक

वाटै मानस मारदा बैठा बालमीक बटवारा ॥
पूरा सतिगुरू सेविआ मन विच होया खिजोताड़ा ।
मारन नो लोचै घणा कढ न हंघै हथ उघाड़ा ॥
सतिगुर मनूआ रखिआ होइ न आवै उछोहाड़ा ॥
अउगुण सभ प्रगासि अनु रोजगारु है ऐह असाड़ा ॥
घर विच पुछण घल्लिआ अंतकाल है कोइ असाड़ा ॥
कोड़मड़ा चउखंनीअै कोइ न बेली करदे झाड़ा ॥
सच्च द्रिड़ाइ उधारिअनु टपनि कथा ऊपर वाड़ा ॥
गुरमुख लंघै पाप पहाड़ा ॥ (भाई गुरदास)

भाई गुरदास जी के बचन अनुसार बालमीक एक ऋषी हुआ है। यह श्री राम चन्द्र जी के समय हुआ। उस काल में आरीआ और दरावड़ लोगों की कहीं बनती थी कहीं नहीं बनती थी। जंगल होते थे। जंगलों में लोग रहते थे। मार धाड़ कर लेते थे। क्योंकि मनुष्य को सही गिआन नहीं हुआ था।

त्रैते युग की बात है। जब भारत वर्ष में मनुष्य वसों बिल्कुल कम होती थी और जंगल और पशु बहुत होते थे। बहुत लोग जंगली और असभी होते थे। उनका प्यार अनोखा होता था। जिस को जरुरत कहा जाता है। पर उस समय उत्तरी हिन्द में कहीं कहीं ऋषी लोक घूमा करते थे। जिनको कुछ ज्ञान प्राप्त था। जो वेद मन्त्र पढ़ते और यज्ञ करते कराते थे। उस काल में कुछ पुरुष ऐसे थे जो राह मारी का धन्दा करते थे वह हाथ में कुहाड़ा और

www.9009.co.in

तीर कमान लेकर रास्ते में खड़े रहते। कोई किसी को मार देता तो मौत का मूल्य न पड़ता।

एक दिन वेद पढ़ने वाले ऋषी कशप, अत्रय, भारदवाज वशिषट गौतम और विश्वामित्र किसी यज्ञ के करने लिए अपने रासते जा रहे थे। यह सारे तपस्वी लोक थे। इन सब का प्यार नेकी, सत्य और धरम से था। रास्ते में उनका मेल एक भील से हो गया। वह बहुत ऊंचा, आंखें मोटी और चमकीली, होंठ मोटे, रंग काला, भारी शरीर हाथ में कुल्हाड़ी थी। उसका नाम बालमीक था। उसने रोबदार आवाज में कहा, रुक जाओ आगे पैर न उठाना, जहां हो वहीं रुक जाओ।

त्रैकाल-दरशी ऋषी खड़े हो गए। वह भी लड़ सकते थे। पर वह लड़ना नहीं चाहते थे। खड़े हो गए। गौतम ने पूछा - क्यों भाई ! क्या कहना चाहते हो ?'

मैं कहता हूं जो कुझ भी तुम्हारे पास है, अपने आप ही रख दो, नहीं तो मारे जाओगे। बालमीक बोला।

'हमारे पास क्या हो सकता है ? चिपी हरन की खाल और लंघोट इन चीजों का मूल्य कुछ नहीं पढ़ना और न ही कोई खरीदेगा। सोना तो राजाओं के पास होता है। और चीजें गृहिस्तीओं के पास। गौतम का दूसरा उत्तर था।

आप तो आरिआ हैं। किसी आरिआ को जीवित ही छोड़ देणा, रहि जान देना भी तो हम लोगों के लिए ठीक नहीं है। आप लोग दुश्मन। बस चीजें रख कर झुकते जाओ। ताकि मैं आराम से ही सब के सिर काट सकूं।

यह सुन कर विश्वामित्र मुस्कराया। उस ने बहुत ही नीति और अकल से काम लिया। ऋषीयों का जीवन-निशाना जांगलीओं

www.9009.co.in

को सुधारना था। वह बोला, देख भाई! आखर तुम पुरुष हो, ज्ञान इंदरे हैं। बैठ जा, गल सुन लै, फिर चाहे हम सब को मार देना। और चीजें घर को ले जाना। हम कुछ नहीं बोलेंगे। पर हमारी बात सुन लो।

'क्या सुन लूं!'

'यही कि डाके क्यों मारते हो?' खून क्यों करते हो? इस का फल कैसे भुगतोगे? तुम अकेले पुरुष हो।

मैं कुछ भी होवों, फल कुछ भी मिले। मैं कोई बात न सुनूंगा। आप को मारना है।

यह सुन कर बालमीक का गुस्सा देख कर वह ना तो हैरान हुए, ना ही डरे, पर उसकी मूर्खता पर मुस्कराए। उन्होंने आपस में संस्कृत भाषा में बात की। माया की खेड वरता के उन्होंने कहा - 'काट लो सिर।' यह कह कर गर्दन नीची करके खड़े हो गए।

बालमीक ने कुल्हाड़ा उठाया। जब ऊपर करने लगा तो उस से कुल्हाड़ा ऊपर न हुआ। उस की बांहें फूल गईं। उसे उस समय ऐसा प्रतीत होने लगा कि जैसे उसके घर के ही जीव उसके साहमने खड़े हो गए हों। उसको आरिआ लोग दिखाई न दे रहे थे। वह तो जैसे अपने ही घर के लोगों को आपणे हाथों अपणे ही कुल्हाड़े से मारने चला था।

बालमीक बिट बिट देखी जाने लगा। विश्वामित्र ने कहा - 'क्यों भाई! मारते क्यों नहीं?

नहीं मारूंगा.....उसने कुल्हाड़ा फेंक दिया और ऋषी खलो गए, उसके पास बेठ गए और विश्वामित्र ने कहा - 'हे भाई! हमको बताओ कि हमें मारा क्यों नहीं?

मेरा कुल्हाड़ा भारी हो गया है। मैं उठा नहीं सका। आप

www.9009.co.in

जरूर कोई अनोखे बन्दे हो।' बालमीक ने उत्तर दिया।

'यह बताओ आखिर तुम बन्दे क्यों मारते हो, लूटमार क्यों करते हो, जंगल में पक्षी, मारने को बहुत हैं, खाने के लिए फल फुंग बहुत है मामला क्या है। गौतम का सवाल था।

यह सुन कर बालमीक बोला - 'हे ऋषी जनो! बात इस प्रकार है कि डाके का और बन्दे मारने का धन्दा मुझे मेरी मां ने सिखाया है। बताया गया है कि हम भील शिकारी और डाकू हैं। इस प्रकार के धन्दों से ही हमारा गुजारा चलता है। एक दिन एक बन्दे को मार कर दो कौडां प्राप्त कीतीआं वह मां लेकर गई। मछली खरीद लाई और मछली खरीद कर बोली - 'देखो पुत्र! दो कौडों के पीछे मछली बेची यह मारी जाएंगी। इन में भी जान है। इस लिए किसी भी बन्दे को मारने से ना झिजको। बस मैं यह धन्दा करता गया आरिआ लोग हम लोगों को मार देते हैं, हम उन लोगों को। हम एक दूसरे को दुश्मनी भावना से देखते हैं।

'हे पुरख! विश्वामित्र कहने लगा। जरा आंखें बन्द करो तुम्हें आगे का हाल बताएं।

यह सुनकर बालमीक ने आंखें बन्द कर लीं। आंखें बन्द करते ही उसको नरक की झाकी दिखाई दी। नरक में पापीयों के माड़े अधरमी बन्दों को जलाया जा रहा था। किसी को उल्टा करके लटकाया था नर्कों में जीव हाए हाए कर रहे थे। उन लोगों रोना बहुत भिआनक था। यह सभ कुछ देख कर बालमीक डर गया। वह कांपा तो विश्वा मित्र ने उसके सिर पर से हाथ उठा लिया। हाथ उठाने से बालमीक ने आँखें खोली। उनकी और देखा।

बालमीक को घबराया हुआ था उसके मूंह पर पसीना ही पसीना

देख कर विश्वा मित्र ने पूछा - क्या देखा !'

'....बहुत कुछ देखा। मनुष्य को जलाया जा रहा था। गुरजां मारदे उनको उल्टे लटकाया हुआ था, दुखी हो रहे थे। यह सभ कुछ मैंने देखा है। कहां है ।'

'नरक ! वहां उनको उनके कर्मो की सजाएं दी जाती हैं। जो लोग इस धरती पर माड़े करम करते हैं। जीव करम का फल आप ही भोगता हैं। कोई भाईवाल नहीं होता।

जो कमाई खाते हैं वह भाईवाल क्यों नहीं बनते हैं। बालमीक ने पूछा।

नहीं बनते, बेशक घर जाकर देख लो। पूछ लो कि वह अधरम का फल भुगतने के समय साथ देंगे। क्या वह धर्मराज के दरबार में हाजर होने को त्यार हैं।

वालमीक की बुद्धी उपर ऐसा प्रभाव डाला कि वह ऋषीयों के पीछे चल पड़ा। उसको डाका मारना और खून करना भूल गिआ।

रिखी विश्वामित्र ने कहा -- 'अब तुम घर जाओ, आपनी स्त्री, मां और बच्चों को पूछो, कि वह धरमराज के मांगे हसाब में शामल होंगे। कि मुझे उन पापों का जो डंड मिलेगा। उस में से हिस्सा बांटेंगे ? भरोसा रखो हम यहीं बैठे रहेंगे। हम जाऐंगे नहीं, हम ने आप को वचन दिया।'

बालमीक घर चला गिआ, उस के मन को ऋषों ने भटकनी सी लगा दी। तेज तेज कदम उठाते हुवे आपनी झुगीयों के पास चला गिआ, सब से पहिले उस की मां मिली । उसने पूछा, कुझ लाया है कि खाली हाथ मुड़ आया हैं ?'

बालमीक, मां का यह सवाल सुन कर कुझ भै-भीत हुआ। उस

www.9009.co.in

ने आपनी मां को रोक कर कहा -- 'मां ! मैं तो एक बात पूछने के लिए आया हूं ।'

'क्या पूछने आया हैं। उन की मां गुसे के साथ बोली।

'मैं पूछने आया हूं, मैं जो पाप कर्म करके कमाई घर लाता हूं तो आप कोखिलाता हूं, पापों के बदले जो डंड मुझे मिलेगा, तो क्या आप उन में शामल होगी। बोलो ! धर्मराज ने लेखा मांगना है।'

'यह शिक्षा आप को किस ने दी हैं। जिस ने आपको यह शिक्षा दी उस ने यह नहीं सोचा कि मां बच्चे को गर्भ में रखती, दुःख उठाती, जन्म पीड़ सहती, कई प्रकार के कष्ट उठा कर पुत्र को बड़ा करती है....क्या उस के करम-सुकरम का हिस्सेदार पुत्र होता है? ऐसी बातें सोचने से बात नही बनती। मिहनत की कमाई करके खिलानी है। जो दण्ड मिलेगा वह तुझे ही मिलेगा। मैं क्यों दण्ड भुगतां....चल दौड़ और कुछ लाओ।'

यह कह कर उसकी मां बाहर को चली गई। वह भी किसी मार पर जा रही थी। नेकी और बदी, पुण्य और पाप के बारे में वह कभी नहीं सोचती थी।

बालमीक आपणी पत्नी के पास गया। उसने उसको भी ऐसा ही पूछा, वह हंस पढ़ी और हंसते हुए उसने बालमीक को जवाब दिया। आप ने अनोखी बात की है, सभी मरद कमाते हैं। वह चाहे खून करके या फिर मिहनत करके लाएं, पत्नी तो बस घर बैठ कर ही खाती है। मैं तो फिर भी आपके साथ शिकार पर जाती हूं। मेरे करम का फल मुझे भुगतना पढ़ेगा तो मैं आपणे कर्मो का फल भुगतूंगी मेरे मां बाप ने आपके लढ़ बांधा है। आप ने रोटी कपड़ा देने की प्रतिज्ञा की हैं। किस तरह कमा के लाओ मुझे क्या। पर ऐसी वैसी शिक्षा देने वाला कहीं आपको कोई आरिआ तो नहीं मिल गया।

वह लोग गलत होते हैं। जाओ कमाई करो। इन लोगों का कभी भी कहा ना मानना।

यह कह कर उसकी पत्नी ने बालमीक को घूरी डाली। होंठ मरोड़े आंखें लाल करके दिखलाई। बालमीक पीछे मुड़ आया। उस ने अपने मन में विचार किया कि कोई किसी का नही होता। सभी मतलब के होते हैं। मनुष्य जो करम करता है उस का फल भुगतना पड़ता है। वह लोग ठीक ही कहते हैं। ऐसे विचार करता हुआ वह ऋषीयों के पास आ गया। ऋषी उस को देख कर मुस्करा पड़े।

नजदीक आ कर बालमीक ने उनके पैरों पर माथा टेका। कहा – हे सच्चे और धरमी पुरुषो ! आप सच्च ही कहते हैं। कोई किसी का बेली नहीं बनता। सब मतलब के लोग हैं। मैंने आप को नहीं मारना। आप तो मेरे गुरु हुए। आप हुकम करें मैं क्या करूं। मैं पिछले कुकरमों का प्रासचित करने को तैयार हां। जो कुछ भूल हुई है उसके लिए क्षमा करें।

श्री विश्वामित्र ने उपदेश दिया और कहा, बस 'मरा मरा मरा जाप जपा करो। जीवन निर्वाह के लिए जैसे हो सके नेक कमाई किया करो। जंगल में अनेकों पदार्थ हैं उन पदार्थों से गुजर हो सकती है। यह कुल्हाड़ा फैंक दो।

ऋषी चले गए। उनके कहे अनुसार बालमीक ने कुल्हाड़ा फैंक दिया। वह घर का ख्याल छोड़ कर जंगल में बैठ गया और 'मरा मरा का जाप करने लगे। ब्रह्म शक्ति का ऐसा प्रताप हुआ कि मरा शब्द उलट कर 'राम' शब्द बण गया।

बालमीक ने 'राम नाम' के आसरे घोर तपस्या शुरू कर दी। अनुभवी प्रकाश हो गया और वह राह मार से ऋषी बण गया। एक

www.9009.co.in

समा ऐसा आया, जब उस ने आपणे आश्रम में सीता जी को आसरा दिया और 'रामायण' उचारी जिस की कथा आगे आएगी। उस बालमीक को अभी तक याद किया जाता है। हे भगत जनो! जो भी स्त्री-पुरुष भगती करते हैं, वह अमर हो जाते हैं। पर बदी, पाप और कुकरम करने वालों को लोग भूल जाते हैं, पर धरमी और विद्वानों को सदीओं तक कोई नहीं भूलता। सदा याद रहते हैं। नाम जपा करो। नाम जपने वालों की महिमा इस तरह बताई है :-

मात पिता सुत साथि न माइआ ॥
साध संगि सभु दूखु मिटाइआ ॥१॥
रवि रहिआ प्रभ सभ महि आपे ॥
हरि जपु रसना दुखु न विआपे ॥२॥

www.9009.co.in

४. श्री राम चन्दर

'रोवै रामु निकाला भइआ ॥ सीता लछमणु विछुड़ि गइआ ॥'

अयुधिआ के राजे दशरथ का पुत्र श्री राम चन्दर २४ अवतारों में से एक माना गया है। भारत के बहुत से हिसों में हिन्दू सनातनी संखेप ईश्वर जां भगती जाप हैं, 'सीता राम' 'राम ! राम !' 'सीता राम' के भारत में बहुत मन्दिर हैं और इन मन्दिरों में इन के बुतों की पूजा की जाती है।

कथा वरणन करने से पहले आपको यह बता देना भी जरुरी है कि यह जो 'राम' शब्द है यह सरब शक्तिवान प्रमात्मा का भी संकेत है। गुरबाणी में वाहिगुरू और प्रमात्मा के संकेत रूप में राम शब्द कई हजार बार आया है। विशेष करके तीसरी पातिशाही की बाणी में भगतों की बाणी में 'राम' शब्द अनेकों और अनगिणत बार इस्तेमाल हुआ है।

(बिलावलु महला ४)

सचि नवेलड़ीए जोबनि बाली राम ॥

(बिलावलु महला १ छंत)

आओ न जाओ कही अपुने सह नाली राम ॥

तू जानत मै किछु नही भव खंडन राम ॥

(बिलावलु रविदास)

'रामकली' राग का नाम भी रखा और ऐसे राग में लग-भग हर शब्द में 'राम' शब्द है। राम को वाहिगुरु का संकेत प्रकट किया है।

राम नामु जपि संगि सहाई गुरमुखि पावहि पारि मना ॥

www.9009.co.in

राजा राम की सरणाइ ॥

(रामकली महला ४)

राम कबीरा ऐक भए है कोइ न सकै पछानी ॥

(रामकली भगत कबीर जी)

सो 'राम नाम' वाहिगुरू, सतिनाम, सभ वाहिगुरु या उस शक्ति के नाम रखे गए हैं। जो शक्ति जगत का मूल है। जीवन धारा है। उस का ख्याल कर के आपे को जानणे का नाम भगती है। किसी तरह तअसब में आकर 'राम' शब्द से कोई अनमति का वीचार नहीं लेना चाहिए।

आपने आप राम कथा सरवन करो। जो अनेकों जीवन शिक्षा देने से भगती मारग की और ले जाने की प्रेरना भी करती है।

अयोध्या के राजे दशरथ की राणीयों के कोई भी पुत्र नहीं थे। राजे ने पुत्र प्राप्ति यज्ञ किया। उस यज्ञ में से राजा को वर मिला तो उसके घर चार पुत्र हुए। चारों पुत्रों के जन्म के समय राजा ने बेअन्त खुशी मनाई। राम लछमण दोनों भाईयों का आपस में बहुत ही प्यार था, चाहे उनके जन्म अलग अलग राणीयों से हुआ था, उन्होंनें विशिष्ट की और से शिक्षा ली। विश्वामित्र ने अनेकों प्रकार के अस्त्र शस्त्र चलाने बताए। यज्ञ भूमी को दैंतों से साफ किया और घूमते हुए जनक पुरी पहूंच गए।

वहां जनक-पुत्री सीता का स्वयम्बर था। स्वयम्बर में शरत थी कि शिवजी के धनुष को चिला पर चढ़ा कर दिखाना। वही सीता जी से शादी करे।

श्री राम चन्द्र जी ने ही शिव जी के धनुष का चिला चढ़ाते समय उस धनुष को ही तोड़ दिया। जिस से यह बात प्रकट

www.9009.co.in

हुआ कि श्री राम चन्द्र जी बहुत बड़े बली हुए हैं। उस धनुष को और राजे नहीं उठा सके थे।

धनुष को तोड़ कर श्री राम चन्द्र जी ने सीता को जीत लिया। यह एक अति सुन्दर मुटिआर थी। जीत के बाद राजा दशरथ को अयोध्या पुरी में सन्देशा भेजा गया। वह ऋषीयों, मंत्रीओं राज प्रोहितों और दरबारीयों को साथ लेकर बारात बना कर जनक पुरी पहुंचे। श्री राम चन्द्र जी के विआह समय बाकी के भाईयों के भी वहीं पर विवाह करवा दिए। खुशी खुशी सीता जी को ले कर श्री राम चन्द्र जी अयोध्या पहुंचे और मंगलाचार हुए। शहिर वासीओं ने खुशीयां मनाईं।

जैसे होणी ने करना होता है। वही हो जाता है, उस को रोक कोई नही सकता। राजा दशरथ श्री राम चन्द्र जी की बहादरी और सिआणप पर बहुत प्रसन्न हो गए। उस ने मंत्रीयों से सलाह करके उस को राज तिलक देने का फैसला किया। वह फैसला उस समय अमल में आना शुरु हूआ। परजा में खबर भेजी गई। परोहित के कहने और बताने पर धार्मिक रस्में पूरी की गई।

परन्तु जिस दिन तिलक लगाना था उससे पहिली रात को राजा दशरथ की छोटी राणी कैकेई जो रूपवन्ती थी और जिसके महिल में राजा रहिता था - ने राजे के आगे बेनती की कि- 'हे राजन! आप ने इन्द्र से युद्ध करतते समय जखमी होकर सेवा के बदले मुझे दो वचन दिए थे। वह वचन आज मेरे पूरे करो।

हे ककेई! मांग लो, बचन तो देने पढ़ेंगे। रघुकुल रीत ही ऐसी चली आ रही है। मांग लो ककेई तुम्हारे जो दो वचन हैं। क्या मांगना चाहती हो?'

उस समय राजा दशरथ बहुत खुश था। खुशी के जोश में उस

www.9009.co.in

ने यह ख्याल ही नहीं किया कि वचन माड़े भी मांगे जा सकते हैं।

'पहिला बचन तो यह पूरा करो कि राम चन्द्र को चौदह साल का बनवास दिया जाए और दूसरा मेरे पुत्र 'भरत' को राज तिलक दिया जाए। राज तिलक के लिए भरत को अभी नानके घर से बुला लिया जाए।'

यह सभ कुझ ककेई ने एक जबानों.....एक ही सांस में कहि दिया। उस ने राजे का ख्याल नहीं किया, परजा और समाज का हित नहीं देखा बस 'मत्रेई बणी।'

ककेई के इस तरह के बोल सुन कर राजा दशरथ ऐसा घबराया कि राणी ककेई की और देखता ही रहि गया। वह बोला कुझ भी नहीं। बचन तो उसने किए थे पर उसको ऐसी आस नहीं थी कि ककेई उससे इतना धोखा करेगी, वैर करेगी। वह गुम सुम सा हो गया उसकी जबान से बस इतना ही निकला - 'ककेई ! तुम्हें इतनी दुश्मनी नहीं करनी चाहिए थी। मेरे कलेजे में तुझे यह कटारी नहीं मारनी चाहिए थी।

गम से राजा की शरीरक और मानसिक दशा ही बिगड़ गई। वह मरने पढ़ गया। राज - तिलक लगवाने की पूरी त्यारी करके जब श्री राम चन्द्र जी जब राजा दशरथ को मिलने गए तो वह उन से बोल न सके। राम चन्द्र जी बहुत हैरान हुए। आखिर राजे दशरथ की चुप का कारण जालम ककेई ने बता ही दिया। 'बेटा राम चन्द्र तेरे पिता जी ने मुझे दो वर दिए थे। वह मैंने मांग लिए हैं। पहिला वर यह कि तुम्हें चौदह साल का बनवास और दूसरा भरत को राज। राजा जी आपको बता नहीं सकते। क्योंकि आप से प्यार है। डरते हैं। तुसीं नेक पुत्र हो। बाप के बचनों की पालणा करना आप का धरम है।'

'ठीक है माता जी!' कहि कर श्री राम चन्द्र जी ककेई के महिल से बाहर आ कर कपड़े उतार दिए, बनवास के वस्त्र पहिन कर बनों को जाने के लिए त्यार हो गए। उन की धरम पत्नी सीता जी और छोटा भाई लछमन भी साथ चल पढ़ा। परजा को व्याकुल छोड़ कर श्री राम चन्द्र जी अयोध्या पुरी से चल पढ़े। राजा दशरथ बाद में इसी गम में मर गया। जब भरत को भाई के विछोड़े की खबर मिली तो वह भी भाई के विछोड़े में व्याकुल हुआ। उसने राज तिलक लेने से इनकार कर दिया। बन में जाकर वीर को मिला। अन्त श्री राम चन्द्र जी की खड़ाऊं ले कर वापस आया और राज सिंहासन पर खड़ाऊं ही रख कर आप सेवक बन कर राज करता रहा।

श्री राम चन्द्र जी गंगा पार कर के दक्षिण की और जंगलों में आ गए। जो जंगल इस समय वरतमान उड़ीसा रिआसत में हैं और 'पंच वटी' अस्थान पर रहने लगे। यहां पर लंका के राजा रावन की बहिन सरूप नखा आई। उसकी पाप बिरती देख कर श्री लछमन ने उसका नाक काट दिया। जिस कारन उसका एक भाई साधू का भेस बदल कर पंच वटी आया और सीता जी को उठा कर ले गया। उस दुष्ट ने धोखा किया।

श्री राम चन्द्र और लछमण सीता जी को ढूंढते हुए धुर दक्षिण की और चले गए। आप बड़े व्याकुल हुए। हनुमान से मेल हो गया। हनुमान की सहायता से सीता जी का पूरा पता चला कि वह रावण के पास अशोक वाटका में थी। रावण की लंका पर हमला हुआ उस हमले में रावण आपणे पुत्रों समेत मारा गया। लंका जल गई। और लंका का राज रावण के धर्मी भाई विभीषण को दे कर सीता जी को लेकर वापस अयोध्या पुरी में पहुंचे। और राज करने लगे। आप के बनवास से वापस आने की खुशी में दीपमाला आज कौमी

www.9009.co.in

तिउहार बना चला आ रहा है। कहिते हैं आपने दस हजार साल धर्म का राज किया।

आप को अवतार माना जाता है। सो हे नेक पुरषो ! रामचन्द्र जी की कथा सुणन वाले के मन में धरम लगन पैदा होती है और मां बाप की आज्ञा मानने का उपदेश मिलता है।

५. सीता जी की कथा

पिछली कथा में सुना है कि सीता जी राजा जनक की पुत्री थी। इनके जन्म की कथा अनोखी है। लिखिया गया है कि धरमी राजा जनक के राज में भिआनक औड़ लगी। भाव यह कि पाणी का काल पढ़ गया। बारह साल तक बरसात न हुई। उस के राज्य के जंगल, खेत सब सूख गए, तालाब भी सूख गए। पशु और पक्षी भूख से व्याकुल होने लगे। परजा के अनेकों लोग मरने लगे। राजा घबरा गया। क्योंकि राजा का धर्म होता है परजा की रक्षा करना। अगर जान-माल की रक्षा न करे, सो राजा ही नहीं होता। लोगों के मरने का पाप राजा जनक के सिर लगने लगा। मौत ! सुण कर राजा घबरा गया।

राजा जनक ने एक सभा बुलवाई। उस राज्य सभा में आपणे राज के सभी सिआने पुरुषों और ज्योतिषयों को बुलाया। सभा में विषा यह रखा कि राज्य में इत्नी औड़ लगने का कारण क्या है? किस पाप का फल है ? कई सिआणे पुरुषों ने आपनी अपनी अकल

www.9009.co.in

अनुसार उत्तर दिए। पर राजा की तसल्ली न हुई। एक बूढ़े ऋषी ने कहा - 'हे राजन ! बात यह है कि आप के राज्य में रावण के दूत घड़ा दबा गए हैं। जितनी देर वह निकाला न जाएगा, उतनी देर तक आप के राज्य में नुकसान ही नुकसान होगा। किसी नेक करम से आप आप बच गए, नहीं तो कुल नष्ट हो जाणा था।

वह घड़ा कैसा है ? उस में क्या है ? राजा ने पूछा। वह सभ कुछ जानने को उतावला था।

'हे राजन !' ऋषी ने कहा - '...एक समय हंकारी और पापी राजा रावण ने आपने राज के ऋषी और तपस्वी लोगों से 'कर' मांगा था। पर ऋषी लोगों के पास 'कर' की माया कहां ? जब रावण के दूत ऋषी आश्रम में कर लेने गए तो सभी ऋषीयों ने सलाह कर के एक घड़े में आपणे शरीर का लहू डाला। उस घड़े का मूंह बन्द कर दिया। साथ ही दूतों को कह दिया कि रावण इस घड़े का मूंह न खोले। अगर खोलेगा तो उसका सरब नाश हो जाऐगा। इस में रावण का काल है। जो राजा गरीबों को तंग करता है वह सुखी नहीं हो सकता।...दूत राजा रावण के पास घड़ा ले गए। रावण देखने लगा तो दूत ने रोक दिया। अगर खोलोगे तो सरब नाश हो जाएगा।' यह सुण कर रावण क्रोध में आ गया। उस ने हुकम दिया - 'इस घड़े को दूर किसी राज की धरती में दबा आओ।।' दूत उस घड़े को आप के राज्य में दबा गए। वह घड़ा निकाला जाए उसका मूंह खोला जाए। पापी रावण का नाश हो जायेगा। क्योंकि वह अभी भी प्रजा को तंग कर रहा है। उसको प्राप्त की हुई ब्रह्म विद्या का डर है।।'

वह घड़ा कैसे निकाला जा सकता है? जनक ने फिर पूछा। उस का मन खुश हो गया। आस हो गई कि वह परजा का दुख नविरत करेगा।

'आप सोने का हल ले कर खेतों में जाएँ। आप उसी खेत में ही जाएंगे जहां घड़ा है। बस उसका मूंह खोल दो। ऋषी ने सारी बात स्पष्ट कर दी।

राजा ने उसी समय हुकम किया। सोने का हल त्यार किया गया। राजा जनक ने खेत में हल जोया। हल जोणे से बहुत तेज और पुरे की हवा आई। फिर बादल बणे और अचानक उस के हल से घड़ा अटका। घड़े को निकाला गया। जब उस घड़े का मूंह खुला तो उस में से छोटी सी सुन्दर कनिआ थी। उस सुन्दर कनिआं को राजे जनक ने उठा लिया। खेत में से निकलने के कारण उसका नाम सीता रखा गया।

घड़े का मूंह खुलने पर मूसलाधार बारश हो गई। परजा सुखी हो गई। राज भवन में पल कर सीता जवान हो गई। उसने एक दिन शिव धनुष को उठा लिया। यह देख कर राजा जनक ने फैसला किया जो कोई राजकुमार शिव धनुष पर शिला चढ़ाएगा उस से सीता का विवाह होगा। श्री राम चन्द्र जी ने यह शरत पूरी करके सीता से शादी करके अयोध्या पुरी ले आए।

जब श्री राम चन्द्र जी को बनवास हुआ तो सती सीता आपणे पति परमेश्वर के दुख सुख में सहाई होने के कारण उनके साथ ही एक सनिआसण का रूप धारण करके जंगलों में चली गई, राजमहिल के राज सुखों का त्याग किया।

रावण जब आपको छल करके ले गया तो श्री राम चन्द्र जी के वैराग में आप दुखी हुए, अशोक वाटिका में रहे। रावण की और से

दिए गए। कष्ट शरीर और मन पर झेले। पर स्त्री धरम का त्याग न किया। लालचों में न आई और रावण का काल बणी। सीता जी के कारण ही रावण की मौत हुई। उसका सारा कुल समाप्त हो गया।

रावण को मारने के बाद जब सीता जी ने श्री राम चन्द्र जी के चरनों पर माथा टेका तो श्री राम चन्द्र जी ने सीता जी के धरम की परीक्षा की। उस को आग में बिठाया। अग्नि देवता ने सीता जी के शरीर को न जलाया। धरम की जै हुई।

श्री राम चन्द्र जी सीता जी को लेकर वापस अयोध्या पुरी में आ पहुंचे। कुझ समय सुख से बीता। सीता जी के पाँव भारी हुए। माँ बणने की आशा पूरन होने लगी तो एक दिन अैसा आया कि श्री राम चन्द्र जी ने सीता जी को बनवास का हुकम दे दिया। तिआग और बनवास देने का कारन सिरफ अपनी परजा में उठी आवाज थी। मर्यादा प्रशोतम श्री राम चन्द्र जी ने सीता जी का तिआग कर के दुख उठाया।

श्री लछमण जी जमना पार उतरा खंड के जंगलों में सीता जी को छोड़ गए। सीता जी काले जंगलों में विचरते हुए बालमीक के आश्रम में पहुंचे। (जिस अस्थान को आज कल राम तीरथ) कहा जाता है और जिला अमृतसर में है। (श्री बालमीक के आश्रम में) रह कर ही सीता जी ने दो राजकुमारों को जन्म दिया। एक राज कुमार लव और दूसरा कुश था।

दोनों राजकुमार जवान हुए। बालमीक ने उन दोनों को शस्त्र और शास्त्र विद्या सिखाई। महा-बली राजकुमार बणे। श्री राम चन्द्र ने चक्रवरती राजा होने का ऐलान किया और अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा छोड़ा। इन दोनों ने घोड़ा पकड़ कर युद्ध किया। युद्ध में श्री राम चन्द्र जी पुत्रों के हाथों घायल हो गए। उस समय सीता

www.9009.co.in

जी और श्री राम चन्द्र जी का मेल हुआ। सीता जी धरती में अलोप हो गए। धरम पालन के कारन आज मन्दिरों में सीता जी का नाम पहिले लिया जाता है।

६. शिव जी महाराज

हिंदू ग्रन्थ अठारह पुराण, छे शास्त्र ब्राहराण, रुपाहण और महां भारत आदिक बेअन्त देवते मानते हैं। कहिते हैं, पहिले देवते आज कल के स्त्री पुरुषों की तरह ही घूमा फिरा करते और वर श्राप दिया करते थे। एक बार एक किसान ने आपणे मतलब के लिए आपणे देवते को मारा। उस किसान ने उस की टांगें तोड़ दी और उस दिन से देवते पत्थर की मूर्ती से प्रगट होने लगे। उन्हों ने मनुखा जीवन धारणा छोड़ दिया। इस तरह देवता शिवजी - एक महान देवता है।

शिव जी महाराज को शंकर भी कहते हैं। शिव-शंकर, नील कंठ, नागरती आदिक इन के ग्यारां से ऊपर नाम हैं।

कलिजुग वाले काले पत्थर की पूजा होती है, जिसको शिवलिंग कहा जाता है। जो तसवीर इस देवता की पुरश रूप में मिलती है, वह भी अनोखी है। ऊंचा छे फुट कद, सिर पर जटाव जटावों में गंगा की धार का प्रगट होना और माथे पर आधे चांद का निशान। तीसरी आंख, सांपों, रुद्राख और सांपों की गले में माला। शेर की खाल, नंगे शरीर पर राख मली हुई और एक हाथ में संख, दूसरे में त्रिशूल, कहीं नंदी बैल के ऊपर सवारी और साथ सुन्दर नारी, जिस को पारवती, कमला, लक्ष्मी आदिक नाम दिए जाते हैं। असल में शांती की देवी है। जब जगत पर परलो आती है तब शिव नाच करता है। उसको ताण्डव नाच कहते

हैं। बहुती तबाही होने लगती है तो पारवती आपणा शांती का नाच करके उसको शांत करती है। नाच से राग का देवता भी माना जाता है। शिव नाच, नाच का नाम है।

इस देवते को अमर देवता माना जाता है। श्री राम चन्द्र जी का रूप धारण करके शिवजी ने अवतार लिया। भारत में कई हजार सालों से शिवजी पूजा प्रधान है। बिनां पुत्र महांदेव और गणेश हुए हं, जिसका धड़ आदमी का और मूंह हाथी का है। महां गिआन वान प्रतापी और विद्या गुरु है।

शिव जी का गला नीला है। नील कंठ कहते हैं। इसका भाव है और कथा भी है। जब देवताओं और दैंतों ने समुन्द्र रिड़का था, तब नौ रतनों के साथ जहिर निकला था। वह जहिर शिवजी ने पी लिया था। गले में रख ली तांकि किसी जगत जीव पर शिवजी का आपणा नाश न हो। उस जहिर के असर से गला नीला हो गया।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में 'शिव शंकर' शब्द बहुत वार आता है। जिसका भाव है महान महां माया, प्रतापी शक्ति।

७. सनकादिक

सनकादिक एक समाजी शब्द है। इसका शब्दी अर्थ है सनक ते और। अलंकार और द्रिष्टांतिक ढंग से लिखा हुआ यह शब्द गुरबाणी में बहुत मिलता है। भाव यह कि ब्रह्मा के चार पुत्र थे। सनक, सनंदन, सनातन और संत कुमार। जब यह सभ को मिला कर बताना हो तो यह कहना हो कि ब्रह्मा के चारों पुत्र तो 'सनकादिक' ही कहि दिया जाता है। सभी इकट्ठे रहिते थे। सभ से ज्यादा खूबी यह है कि चारों भाई बाल अवस्था में रहे भाव यह कि पाँच साल से न बढ़े। माया ने असर किया। क्योंकि माया उन पर असर करती है जो बाल अवस्था को छोड़ कर कशोर या जवान अवस्था में जाते हैं। यह चारों भाई माया से निरलेप रहे।

सदा विचरते रहते, जैसे हवा विचरती है। माड़े, चंगे, ऊंचे नीचे स्थान जाते। भगतों का रखवाला प्रभु आप है। यह चारों ही संसार का चकर काटते रहे।

पुरानां में लिखा गया है कि सनकादिक (चारो) भाई एक बार प्रमात्मा के दर्शन करने के लिए चल पढ़े। मन की मौज अैसी ही आई यह जब प्रमात्मा के सदर दरवाजे से सातवें पड़ाव ऊपर पहुंचे तो इन चारों को द्वारपालों ने रोक लिया। द्वारपालों को हुकम था कि कोई अन्दर न आए। मनुष्य देह वाले तो बिल्कुल ही आगे नहीं जा सकते थे।

प्रमात्मा के द्वार पर आगे खड़े द्वारपाल थे। जै और अजै दोनों सगे भाई थे।

आप आगे नहीं जा सकते। पहले प्रवानगी प्राप्त करनी

www.9009.co.in

रहेगी।' बिजै ने सनक को कहा, क्योंकि सनक आगे था।

कोई लोड़ नहीं प्रवानगी की !' सनक ने उत्तर दिया। पर वह दोनों भाई आगे से ना हटे।

सनक को क्रोध आ गिया। उस ने हाथ मार कर कहा--"दूर हटो राक्शशो। जाओ ! तुम तो बुरे राक्शश हो।"

सनक का श्राप खाली ना गिआ। उसी समय वह दोनों राक्शश बन गए और स्वर्ग से निकाल दिये गए। वह धरती पर आ गिरे। ब्रह्मा जी के बेटों का श्राप अटूल रहा। जै बिजै ने तीन जन्म दैंत रूप में धारन किये। भाई भाई ही बनते रहे। हिरनकशिप और हरनाकश, शिशपाल और दंत वकर, कुम्भ करन और रावन। इन्हों ने जन्म ले कर प्रभु-भगतों को तंग किया। हंकार में रहे। जिस समय हंकार और पाप बड़ जाते हैं, तब ही प्रमातमा के हुकम से शिवजी अवतार ले कर आते हैं।

चारों भाईयों ने प्रमातमां के दर्शन किए। सारी आयु उन्हों ने तन और मन पर माया ने असर ना किया। बोलो सनकादिक की जै भगतों के राखे प्रामतमा की जै।

रणजीत कौर

इस पुस्तक में रणजीत कौर की जीवन कथा है, जिस ने आपने पती की खातर जंगल जंगल फिरा और अनेक दुष्टों का मुकाबला करती हुई भी सिख धर्म पर कायम रही। उन की दिल हिला देन वालियां बहादरीयां पढ़ने के लिये आज ही मंगाएं।

मूल्य २५) रुपए

मिलने का पता—

भाई चतर सिंह जीवन सिंह पुस्तकों वाले, बाजार माई सेवां, अमृतसर

www.9009.co.in

८. शेषनाग

ईशवर की माया है । माया का पसारा इह जगत जीव हन। चौरासी लख जूनां बनसपति के धातू । सभ का भद जानना औखा और संभव है । चौरासी लख जूनी में एक नाग जून है । हिंद-मिथिहासक कथा के अनुसार नाग भी एक देवता है । देवता भी महांबली है । भारत के बहुत सारे जांगली और सभिया वाले इलाकों में नाग की पूजा होती है ।

गुरबाणी में आता है--

एक जीह गुण कवन बखानै ॥ सहस फनी सेख अंत न जानै ॥

इस महां वाक के अर्थ करीए तां भाव निकलता है कि उस प्रमात्मा के गुन इक जीभ वाला पुरुष क्या कर सकता है जब कि सौ फन वाला शेषनाग भी अंत नहीं ले सकता. जब के वह नवें से नवां नां सौ जीभ से लेता है। शेषनाग दा उचारया 'सहंसर नामा' है ।

शेषनाग की कथा यह है कि इस जगत पर पानी ही पानी था, (जिस तरह आज का विज्ञान कहता है, तिन गुना पानी और एक गुना धरती है। धरती के नीचे भी पानी और ऊपर भी पानी है) प्रमात्मां ने आपनी माया शक्ति के साथ धरती बनाई। क्योंकि धरती पर जीवों की रचना करनी थी। पानी में धरती को रखा कैसे जाए ? प्रमात्मा ने शेषनाग को कहा कि धरती को उठा कर पानी में खलो।' यह सुन कर शेषनाग घबरा गया । उस ने प्रार्थना करी, 'हे प्रभु ! मैं तो इक मामूली जीव हूं । इतना बोझ कैसे उठाउंगा ?' तो प्रमात्मां ने उत्तर दिया--"सब कुछ हो जाएगा । धरती का बोझ

www.9009.co.in

तो धाणी आसरे होणा है। तेरे सिर को भार कम लगणा है, सिरफ सहारा है।

एक बेनती और है प्रभू !' शेषनाग ने पूछा।

'वह क्या ? दिल खोल कर पूछ लो' प्रमात्मा ने उत्तर दिया।

वह बात इस प्रकार है कि अगर मैं आप की शक्तियों का जस आप के नाम लेकर चते पहिर करू तो यह भार उतर कर किसी के सिर जा सकेगा ? शेषनाग की प्रार्थना थी।

'ठीक है।' कहि कर प्रमात्मा ने धरती शेषनाग की सौ फण के ऊपर रख दी। 'हे जगिआसू जनो ! तब से शेषनाग धरती का भार उठा कर भगवान का नाम ले रहा है। उस का अन्त कोई नहीं पा सकता। नवें से नवां नाम लेता लेता अंत 'बेअंत' पर आ खलोता। साहिब सतिगुरू गोबिंद सिंह जी महाराज ने बी आपनी बाणी जापु साहिब में बेअंत नाम प्रमात्मा के उचारे हैं। उस की महिमां वर्नन नहीं नहीं की जा सकती। वह बेअंत ही है।

दलेर कौर

इस पुस्तक की तारीफ करने की जरूरत नहीं, मगर खोजा खोजा इतना ही कहना काफी है। इस में पुराने सिखों का इतहास ही लिखा हुआ है, और बताया गिआ है कि वह कौन सा समय था, जो एक एक सिख दो दो सौ तुरक पर फतह पा जाता था, सिख में कौन कौन सी खूबीयां थीं, जो उन्हों को जोष दलाती थीं।

दोनों भागों का मूल्य २२) रुपए

मिलने का पता :-

भाई चत्तर सिंह जीवन सिंह

पुस्तकां वाले, बाजार माई सेवां, अमृतसर।

www.9009.co.in

६. सुकदेव मुनी जी की कथा

बारह बरे गरभासि वसि, जंमदे ई सुक लई उदासी।
माइआ विच अतीत होइ मन हठ बुधि न बंद खवासी।

सुकदे शब्दी अर्थ है तोता। वैसे सुकदेव जी बिआस जी के पुत्र थे। इन्हों के जन्म की अनोखी कथा इस तरह है--

पारबती और शिवजी महाराज का आपस में बहुत प्यार था। एक दिन कैलाश प्रबत पर इकेले बैठे थे। पारबती ने आपने दोनों हाथ जोड़ जर प्रार्थना की--'हे प्रभु! आप की माया ऐसी है, स्त्री बहुत जल्दी बुड्ढी हो जाती है। जब वह बुड्ढी हो जाती है तो वह जीवन सुख आनंद प्राप्त नहीं कर सकती। आपकी और मेरी अटुट प्रीत है। मुझे डर है कि आप तो त्रैकाल एक समान रहने वाले हो, पर मुझ पर जरूर बुढ़ेपा आ जाएगा। इस लिए मैं बेनती करती हूं कि मुझे अमर कथा सुना कर अमर देवें। मुझ पर बुढ़ेपा असर ना करे, सदा जवान रहूं और आप के अंग संग रहूं। यह दासी की प्रार्थना है।

शिवजी महाराज मौज में प्रसंन चित्त बिराज थे। उन्हों ने उत्तर दिया--ऐसा ही होगा, और अमर कथा सुनाने लग पढ़े। शिवजी अमर कथा सुनाई गए। उस समय पास तो कोई नहीं था, सिरफ कुदर्ती तोता बैठा था, वह कथा सुनता रहा। शिवजी चाहते थे कि और कोई कथा ना सुने ताकि प्रभु की माया--अर्थात रचना में फरक ना पड़े, मरन और जन्म कायम रहे रहे। पर तोता कथा सुनता रहा।

थोड़ी कथा सुन कर पारबती सो गई। उस के सो जाने का शिवजी ने ध्यान नहीं किया। पारबती की जगह तोता ही हुंगारा देता रहा

रहा। जब कथा समाप्त हुई तो शिवजी हैरान थे कि पारबती तो सोई पढ़ी है, हुंगारा कौन देता रहा। उन्हों देखा तो पता चला, कथा तो तोते ने सुन ली थी। शिवजी तोते को मारने के लिए उठ खड़े हुए। तोता भाग कर गंगा के किनारे पहुंच गया। आगे आगे तोता और पीछे पीछे शिवजी महाराज थे। तोता ना मरा और उड़ता उड़ता बिआस जी के आश्रम में आ गया।

बिआस ऋषी की पत्नी ऋतु-स्नान करके पवित्र-कुख थी। अमर कथा सुन कर तोता अमर और त्रैकाल दर्शी हो चुका था। उस ने शिवाजी की क्रोपी से बचने के लिए हवा का रूप धारण किया और बिआस की पत्नी के गर्भ में वास कर लिया।

यह देख कर शिवजी ने आश्रम के आगे धरना मार लिया कि जब तोता बच्चे के रुप में बाहर आएगा तो उस को मैं मार दूंगा। पर तोता माता गरभ में बारह साल अन्दर ही भगती करता रहा। बारह साल बीत गऐ।

बिआस की पत्नी बहुत ही तंग हुई। उसकी पत्नी ने उसे और प्रमात्मा के आगे बार बार बेनती की मिन्नतें की उसके हड सुखी कर दिए जाएं। प्रमात्मा को उस पर दया आ गई। सुकदेव भगती करता था। भगती करते हुए देख कर प्रमात्मा ने उसको कहा। कि हे सुकदेव! अब तुम बाहर आ जाओ। शिवजी अब तुम्हें कभी नहीं मार सकेंगे।

हे प्रभू! अगर मैं बाहर आ गया तो माया का परछावां मेरे ऊपर पड़ेगा। उस परछावें ने मुझे भजन नहीं करने देना। और शिवजी ने भी हठ नहीं छोड़ना।

उस समय प्रमात्मा ने भाखिया दिती। कहा कि यह नहीं हो सकता कि आप सदा के लिए गर्भ में रहें। आपकी माता तंग है। आप

www.9009.co.in

और माया समाधी लगाने तक असर नहीं करेगी। शिव जी भी चले जायेंगे। एक दम बाहर आ जाओ।'

इस तरह प्रमात्मा के हुकम से सुकदेव ने जन्म लिया और जन्म लेते ही जंगलों को चले गए। जंगल में जा कर समाधी लगा ली। वह कई वर्षों तक तपस्या करता रहा, पर किसी को गुरू धारन ना किया, गुरू धारन किये बिना मुक्ति नहीं होती और ना मन वस में रहता है।

कई वर्ष तप करते हुए बीत गए। सिर पर लम्बी लम्बी जटाएं हो गई और शरीर भी बड़ गया। उस ने अन्न-जल मूंह ना लगाया। निर-अहार रहा। उस की लम्बी लम्बी जटाओं में पक्षीयों ने आहलना बना लिया। एक पक्षीयों का ऐसा जोड़ा आया, जो अनुभवी-प्रकाश वाला था। एक पक्षी ने दूसरे को कहा--"हम को यहां आहलना नहीं बनाना चाहिए।"

दूसरा--'क्यों ? क्या बात है ?'

पहला--'यह ऋषी तपस्या जरूर करता है, मगर यह है निगुरा ! निगुरे पुरुष के पास रहना पाप होता है--हो सकता है, इसी प्रभाव से हम नरकों को चले जाएं बहुत भूल की है।'

दूसरा--'चलो फिर यहां से उड़ चलें ! यहां रहना ठीक नहीं।'

इस तरह मश्वरा करके वह पक्षी उड़ गए। मुड़ कर फिर ना आए, त्रैकाल दर्शी सुकदेव को पता चल गिआ, उस ने समाधी खोल ली और जंगल से उठ कर आपने धर्म पिता बिआस जी के आश्रम में आ गया।

'हे पिता जी ! पक्षीयों ने आज्ञा की है कि मैं निगुरा हां। कोई गुरू बताओ, जिस को मैं धारन करां।

सुकदेव ने कहा, पिता के आगे प्रार्थना की। पुत्र की बात

www.9009.co.in

सुन कर बिआस जी सोच में पढ़ गए, अन्त उन्होंने आपणी राय इस प्रकार प्रगट की। 'हे पुत्र! राजा जनक के बिनां तुम्हारा कोई गुरु नहीं हो सकता। उस के राज्य में जा कर उसे गुरु धारण कर लो।

बाप का हुकम सुन कर सुकदेव राजा जनक के दरबार में पहूंच गया। जब राज महल में गया तो कौतक देख कर हैरान हो गया। वह कौतक यह था कि राजा जनक राज महल में अनोखी दशा में खड़ा था। उसका एक पैर तो कड़ाहे में था और दूसरा सुन्दर स्त्री की नंगी छाती पर रखा था। यह कौतक था। इस को सुकदेव न समझा। वह हैरान हो कर वहीं खड़ा मन में सोच करता रहा - 'यह राजा कैसे मेरा गुरु बन सकता है। उसी समय एक और कौतक हुआ। वह यह था कि राजदूत ने आ कर सन्देशा दिया कि 'शहिर में आग लग गई है। 'राजदूत ने आ कर कहा कि बहुत ही भिआनक आग। धीरे-२ खबर आई कि शहर जल गया। आग जो है सिंघ पौड़ां (मुख्य द्वार) तक पहूंच रही है।

सुकदेव सिंघ पौड़ां में तूंबी और कपीन लटका आया था! उसको ख्याल आया कि उस की तूंबी और कपीन न जल कर राख हो जाए वह दौड़ कर बाहर जाने लगा तो राजा जनक ने उस को आवाज लगाई। वह रुक गया। राजा जनक गुसे से बोला।

"....वाह ओए ऋषी पुत्र! बारह साल मां के पेट में भगती की। चौबीस साल समाधी लगाई, छतीस साल बीतने के बाद भी मोह-माया का त्याग नहीं हो सका? क्या करता रहा। शहिर जल गए की चिंता नहीं, एक तूंबी कपीन की चिंता? क्या यह चीजें मिल नहीं सकती हैं। जाओ चले जाओ। तेरे जैसे मोह-माया के दासों को चेला

www.9009.co.in

नहीं बणा सकता ।

यह कह कर राजा जनक ने उसको आपणे महलों से बाहर निकाल दिया। महिलों से बाहर हो कर सुकदेव क्रोध और हंकार का शिकार हो गया। माया ने उस पर काबू पा लिया। वह घट वध बोलता हुआ अपने बाप के पास गया। उसने सारी वारता सुनाई तो बिआस ने कहा - हे सुकदेव ! यह सभ झूठ है। उसने तुम्हें परखने के लिए यह कौतक किया। ना शहिर को आग लगी न ही कोई जला। सिर्फ तेरी परख करनी थी। परख में पुत्र तुम रहि गए।

सुकदेव ने हाथ जोड़ कर कहा, फिर पिता जी मैं क्या करूं ? अब तो मैं भी शरमिंदा हूं !

बिआस - बेटा ! यही तो माया का असर है ।....एक बाप बच्चे को गुसे होकर घर से बाहर निकालता है, वह गुसा थोड़ी देर के लिए ही होता है। फिर जब वह गुसा उतरता है तो बाप बच्चे को घर बुला लेता है और बच्चा घर आ जाता है। बाप बच्चे का सदीवीं त्याग नहीं होता। इसी तरह गुरु चेले का सम्बन्ध है उसके पास फिर जाओ

'जाऊं कैसे ? कोई मुझे रास्ता दिखाओ ।'

पुत्र की यह बात सुन कर बिआस ने कहा 'ऐसा करो कि तुम उस राजा के महिल के पास जाओ। महिल के पश्चिम की और खड़े हो जाओ। वहां एक झरोखा है। उस झरोखे से राजा जनक जूठे पतल फैंकेगा, जो साधूओं को भोजन खिलाने के लिए होंगे। झरोखे के नीचे खड़े तुम्हें देख लेगा। डरना नहीं - शरम और घृणा नहीं करनी झरोखे के नीचे ही खड़े रहना। चाहे जुठ ही ऊपर गिरे। ऐसा करने से ही तुझे गुरु दर्शन होंगे।

बाप से शिक्षा लेकर सुकदेव आश्रम में चल पड़ा।

वह बहुत तेजी से चलता हुआ राजा जनक के महिल के नीचे गया। बताए हुए झरोखे के नीचे खड़ा हो गया। उस ने अपने आप का त्याग कर लिया। ऐसे अनुभव किया जैसे उस में सोच ज्ञान या चेतनता नहीं थी। उस एक पत्थर का एक अचेत बुत थी, जिस पर राजा जनक जूठे पतल फैंकता गया।

सतगुरु राम दास जी ने आपणी बाणी में फरमाया है - जात नजाति देखि मत भरमहु सुक जनक पगीलगि धिआवैंगे ॥ जूठन जूठि पई सिर ऊपरि खिनु मनूआ तिलु न डुलावैंगे।

सतिगुरू जी फुरमाते हैं, हे गुरु सिखो ! ऊच और नीच जाती या कुल का ख्याल छोड़ो, यह तो एक भरम है। असल में शरीर करके और आत्मा करके ऊचे और नीचे एक ही सामान हैं। भगती की दुनीआं तो वैसे ही अनोखी है।

सुकदेव खड़ा रहा। राजा जनक उस पर जूठ फैंकता रहा। १२ साल बीत गए। एक दिन राजा जनक को तरस आ ही गया। उस ने उसे यापणे पास बुलाया। उसको इशनान कराया।

यहीं बात समाप्त न हुई। राजा जनक ने और इमतिहान लेना चाहा। वह इमतहान यह कि सुकदेव पर नारी की सुन्दरता असर करती है या नहीं ? उसने तेल की थाली भरी। अडोल सुकदेव के हाथ पर रख दी। अब थाली अैसी थी कि अगर उस में ध्यान ना रखा जाता तो वह उलर कर गिर पढ़नी थी। ध्यान रखना और चलते जाना। हे ऋषी पुत्र! यह थाली ना उलरे ना गिरे। सारे शहिर की प्रक्रमा करके आओ। ....देखना रासते में कोई ठेडा न लगे।

हाथ में थाली उठ कर सुकदेव चल पढ़ा। रासते में राग रंग

www.9009.co.in

हो रहे थे। स्त्रीयां सुन्दर लिबास और हार शिगार करके मंगलाचार कर रहीं थी। कहीं गीत गाए जा रहे थे और कहीं नाच हो रहा था। ऋषी पुत्र को देखने के लिए अनेकों नारीयां आ गईं। उन्हों ने देखा पर सुकदेव ने किसी की और न देखा। वह तेल की थाली में अपना चेहरा देखता हुआ चलता हुआ पड़ाव पर आ गया। तेल बिल्कुल न गिरा। राजा जनक बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सुकदेव को अपणा चेला बणा लिया।

सुकदेव ऐसा भगत हुआ कि जिस पर माया ने जरा भी असर न किया। वह जन्म से सिद्ध था। मनुष्य को माया ही कहीं बांधती है। अगर माया असर न करे तो जीव कहीं टिक कर नहीं बैठ सकता। वह चलता फिरता रहता है ऐसा ही मुनी सुकदेव का हाल था। वह लगातार ही चलता रहता। ऐसा ब्रह्म ज्ञानी हो गया था कि मिट्टी और सोने, पुरुष और नारी में कोई भेत नहीं था रहा। सन्त मंडलीयों से मिलता रहता। उसने काम, क्रोध, हंकार, लालच और मोह आदि को मार लिया।

एक बार कहते हैं, प्रभूं ने उसकी परख करनी चाही। सन्त मण्डली से विचरता हुआ गंगा के किनारे गया। आगे स्त्रीयां स्नान कर रही थी। सुकदेव ने ख्याल न किया। सुकदेव भी एक और होकर स्नान करने लग पढ़ा। स्नान करके चलने लगा तो एक अति सुन्दर और बहुत ही जवान स्त्री नाच करती हुई आई। सुकदेव के आगे होकर नाचने लग पढ़ी। ऐसे हाव भाव दिखलाए जो मनमोहित करने वाले थे। सुकदेव के मन और नेत्रों पर कोई असर न हुआ। वह अडिग रहे और आगे चले गए। ध्यान ही न दिया। स्त्री शरमिंदा हुई। उस दिन के बाद कोई परीक्षा न हुई।

www.9009.co.in

१०. राजा जनक जी

राजा जनक एक राजा था। उसका राज मिथलापुरी में था। वह एक नेक पुरुष था। इन्साफ करता और जीवों पर दया करता था। उसके पास शिव धनुष था। वह उस धनुष की पूजा किया करता था। आए गए साधु सन्तों को प्रशाद छका कर आप भोजन करता था।

परन्तु एक दिन एक महात्मा ने उस को एक उलझण में डाल दिया उसने राजा जनक से पूछा - हे राजन! आप ने अपना गुरु किस को धारन किया है?

यह सुन कर राजा सोच में पढ़ गया। उस ने विचार करके उत्तर दिया - 'हे महां पुरख! मुझे याद है कि मैंने अभी तक किसी को गुरु धारण नहीं किया। मैं तो शिव धनुष की पूजा करता हूं।

'आप गुरु धारण करो। क्योंकि इसके बिना कल्यान नहीं हो सकता और न ही इसके बिना भगती सफल हो सकती है। आप धर्मी और दयावान मशहूर हैं।

'सति बचन महाराज!' राजा जनक ने उत्तर दिया और आपणा गुरू धारण करने के लिए मन्त्रीयों से सलाह मश्वरा किया। तब यह फैसला हुआ कि एक भारी सभा की जाए। उस सभा में सारे ऋषी मुनी, पण्डित, बेदाचार्य बुलाए जाएं। उन सब में से गुरू की भाल की जाए।

सभा बुलाई गई। सारे देश में से सिआणे पण्डित, विद्वान और वेदाचार्य आऐ। 'राजा जनक ने गुरू धारण करना है।' राजा जनक का गुरू होणा एक महान उच पदवी थी। सभी सोच रहे थे कि किसे प्राप्त हो। हर कोई पूरी त्यारी करके आया था। सभी विद्वान

आ गए तो राजा जनक ने उठ कर बेनती की कि 'हे विद्वान और ब्राह्मण जनो ! यह तो आपको पता चल ही गया होगा कि यह सभा इस लिए बुलाई गई है कि मैंने गुरू धारण करना है। परन्तु मेरी एक शर्त है वह यह कि मैं उस को गुरू धारण करना चाहता हूं जो मुझे घोड़े पर चढ़ते समय रकाब के ऊपर पैर रखने पर काठी पर बैठने से पहले पहले ही ज्ञान कराए। इस लिए आप सब विद्वानों, वेदाचार्यों और ब्राह्मणों में से किसी को भी आपणे आप पर अगर भरोसा है तो वह आगे आए। चन्दन की चौंकी पर विराजमान हूए। पर जे मुझे चन्दन की चौंकी पर बैठ कर मुझे ज्ञान न करा सका तो उसे दण्ड मिलेगा। क्योंकि सभा में उस पर सभ ने हंसना है और इस से मेरी भी हसी उड़ेगी। इसलिए मैं सब से प्रार्थना करता हूं कि ऐसा बल-बुद्धी वाला योग-सजण जरूर आगे आए।

यह बेनती करके धरमी राजा जनक आपणे आसण पर बैठ गया। सारे विद्वान और ब्राह्मण राजा जनक का अनोखा ऐलान सुन कर एक दूसरे का मूंह ताकने लगे। अपने-२ मन में सोचने लगे कि कौन सा नुकता था जो राजा को इत्ने थोड़े समय में ज्ञान करा सकता था। सभ के दिलो दिमाग में एक संग्राम शुरु हो गया। सारी सभा में चुप का सनाटा छा गया। राजा जनक का गुरु बणना ! मानता और सतिकार हासल करना। सभ सोचते रहे। देखते रहे। चन्दन की चौंकी की और कोई न हुआ। यह देख कर राजा जनक को चिंता हुई वह सोचने लगा उसके राज्य में ऐसा कोई विद्वान नहीं ? उस ने एक बार खड़े हो कर सभ में बैठे हुए हर एक विद्वान के चेहरे की और देखा। किसी ने आंख न मिलाई। राजा जनक निराश हुआ।

www.9009.co.in

एक ब्राह्मण उठा। उसका नाम अष्टावकर था। वह उस चन्दन की चौंकी की और बढ़ने लगा तो उसका शरीरक हुलीआ देख कर सभी ब्राह्मण और विद्वान हंस पड़े। राजा भी कुछ शरमिंदा हुआ। उस ब्राह्मण की कमर पर दो वल थे। हिक आगे और पेट पीछे को गया था। टांगें टेढ़ी थी और हाथों का तो क्या कहना। एक पंजा है नहीं था और दूसरे पंजे की उंगलीयां जुड़ी हूई थीं। जुबान चलती आंखें और चेहरा खराब नही थी। वह आगे होने लगा तो मन्त्री जी ने उस को रोका। उस ने कहा - 'फिर सोच लो! राजा जनक की तसल्ली न हुई तो मृत्यु दण्ड मिलेगा। यह कोई मजाक नहीं। यह राजा जनक की सभा है।'

अष्टावकर बोला - 'हे मन्त्री! यह बात आपको कहने का इस लिए हौंसला पढ़ा है कि मैं शरीर करके कोझा हूं। हो सकता है, गरीब और बेसहारा हां। आप के मन में भी यह भरम आया होगा, क्यों कि शायद मं लालच करके आगे आने लगा हूं। इस से यह प्रतीत होता है, जैसे इस भरी सभा में कोई ज्ञानी नहीं--कोई राजे का गुरू बनने की योगता नहीं रखता, जैसे आप भी अज्ञानी हो। आप ने अपने जैसे अज्ञानीयों पुरुषों को ही बुलाया है।...पर मैं सभी को पूछता हूं क्या ज्ञान का सम्बंध आत्मा और दिमाग के साथ है या किसी के शरीर के साथ? जो सुन्दर शरीर वाले, तिलक धारी, ऊंची कुल और अच्छे वस्त्रों वाले बैठे हैं, वह आगे क्यों नहीं आते? सभी सोचों में क्यों पढ़ गये हो? मेरे शरीर की तरफ देख कर हंसते हुए शर्म नहीं आती, क्योंकि शरीर ईश्वर की माया-रचित है। उसने अच्छा रचा है या माड़ा। जिनको तन अभिमान है, उन को ज्ञान अभिमान नहीं हो सकता।'

www.9009.co.in

अष्टावकर गुस्से से बोला। उस की बातें सुन कर सारे तिलकधारी राज ब्राह्मण शरमिंदा हो गए। उन सभ को अपनी भूल पर पछतावा हुआ।

राजा जनक आगे बढ़ा। उस ने हाथ जोड़ कर कहा, आओ! महाराज! अगर आप को अपने आप पर भरोसा है तो ठीक है।' मेरी तसल्ली करा देणी।'

अष्टावकर चन्दन की चौंकी पर बिराजमान हो गया। उसी समय राजा ने घोड़ा मंगवाया। वह घोड़ा मंगवाया जो हवा से बातें करने वाला था। साज नाल लगाम बहुत पक्की थी। अष्टावकर ने घोड़े की ओर देखा। फिर राजा जनक की ओर देख कर कहने लगा, 'हे राजन मैंने आप को ज्ञान कराया तो आप ने मेरा चेला बण जाणा है।

'यह तो जरुरी बात है! राजा जनक ने उत्तर दिया।

जब मैं गुरु हो गया तो आप चेले, तो जरुरी है कि मुझे दक्षिणा भी मिलेगी।

यह भी ठीक है, महाराज! आपको दक्षिणा मिलणी चाहिए।'

'क्योंकि मैंने आपको ज्ञान उपदेश उस समय देणा है, जब आप ने रकाब के ऊपर पैर रखणा है। फिर आप ने घोड़ा दौड़ा कर दूर निकल जाना है। इस लिए दक्षिणा पहले दो। पर हो तन मन और धन किसी वस्तु की। पहले दक्षिणा मिलनी चाहिए।'

राजा जनक सोच में पढ़ गया कि बात तो ठीक है। दक्षिणा तो पहले देणी पढ़ेगी। पर किस वस्तु की - तन, मन और धन। तीनों का सम्बन्ध जीवन से है। अगर एक चीज कम हो जाए तो नुकसान होता है। जीवन सुण नहों रहते। यह अनोखा ऋषी है इसकी बातें भी अनोखी हैं। राजा सोचता रहा पर उस को कोई बात ना औड़ी।

वह फैसला ना कर सका।

'महाराज! मुझे राज भवन में जाने की आज्ञा दी जाए। मैं वापस आ कर आप को अरज करूंगा कि दक्षिणा किस वस्तु की दे सकता हूं।

आप जा सकते हैं अष्टावकर ने आज्ञा दी।

यह सुन कर सारी सभा में सन्नाटा छा गया। सारे विद्वान सोच में पड़ गए कि करूप ब्राह्मण जरूर गुणी है।

राजा जनक राज महल में चला गया और अष्टावकर चंदन की चौंकी पर बिराज गया। उसकी पूजा होने लगी। जैसे कि गुरू धारन करने से पहले गुरू पूजा करनी पड़ती है।

राजा जनक ने कहा, जिस को मैं गुरु धारण करने लगा हूं, वह तन, मन और धन में से एक को दक्षिणा में मांगता है। बताओ क्या दूं, क्योंकि आप दुख और सुख के साथी हो।

'रानी सुन कर सोचों में पढ़ गई। कुछ समय सोच कर उस ने कहा- 'हे राजन! जे धन दान किया तो दुख होगा, गरीबी आएगी, जे तन किया तो कष्ट उठाना पड़ेगा। अच्छा तो है कि आप दक्षिणा में 'मन' दे दो। मन के देने से कोई ऐसा कष्ट नहीं होने लगा।'

राजा जनक सोचने लगा कि रानी ने जो सलाह दी है वोह ठीक है जां नहीं। पर सोच कर वोह भी ऐसे सिटे पर पहुंचा और सभा में आ कर उस ने हाथ जोड़ कर अष्टावकर को कहा--'मैं गुर दीखिआ में मन अरपन करता हूं। अब मेरे मन पर आप का अधिकार हुआ।'

'चलो ठीक है! अब आप घोड़े पर चड़ने की त्यारी करो। मन मेरा है तो मेरे कहिने लगेगा!' अष्टावकर ने आज्ञा की। सभा में बैठे सभ हैरान हो गए कि राजा जनक का गुरु बनने लगा है।

www.9009.co.in

कैसे करूप बन्दे के भाग जाग पड़े।

राजा घोड़े के ऊपर चढ़ने लगा, अभी रकाब में पैर रखा ही था कि अष्टावकर बोला, 'राजन मेरे मन की इच्छा नहीं कि घोड़े ऊपर चड़ो राजा ने उसी समय रकाब से पैर उठा कर धरती पर रख लिए और अष्टावकर की और देखने लग पढ़ा। घोड़े के ऊपर चढ़ने की उसके मन की इच्छा दूर हो गई। उस समय अष्टावकर ने दूसरी बार कहा - 'राजन! मेरा मन चाहता है कि उदाले का लिबास उतार दिया जाए राजा जनक उसी समय कपड़े उतारने लगा तो उसको ज्ञान हो गया. वह मन ऊपर काबू पाना मन के पीछे आप न लगना ही सुखों का ज्ञान है। मन भटकता रहता है। उसने उसी समय अष्टाबकर के चरनों में माथा टेक दिया और कहा, आप मेरे गुरु हुए।

उसी समय खुशी के मंगलाचार होने लग पढ़े। यज्ञ शुरु हो गया। बड़े बड़े ब्राह्मणों को अष्टावकर कचरनीं लगना पड़ा।

राजा जनक बारे भाई गुरदास जी ने उचारा है :-

भगत वडा राजा जनक है गुरमुख माइआ विच उदासी॥
देव लोक नों चलिआ गण गंधरब सभा सुख वासी॥
जमपुर गइआ पुकार सुणि विवलावन जी नरक निवासी॥
धरमराइ नों आखिओसु सभनां दी कर बद खलासी॥
करे बेनती धरमराइ हऊं सेवक ठाकुर अबिनासी॥
गहिणे धरिअनु इक नाउं पापां नाल करें निरजासी॥
पासंग पाप न पुजनी गुरमुख नाउ अतुल न तुलसी॥
नरकहुं छुटे जीअ जंत कटी गलहुं सिलक जम फासी॥
मुकति जुगति नावै की दासी॥

राजा जनक बहुत ही बड़ा प्रतापी हुआ, जो माया में उदास

था। गुरू धारन करन पिछों उसने बहुत भक्ति कीती। मन को ऐसा बना लिया कि माया का कोई भी अंग उस पर असर नहीं करता था। मोह माया, लालच, हंकार और वासना, काम का जोश भी उन के मन की इच्छा अनुसार हो गया। वह राजा भगत बन गया।

एक दिन उन के मन में आई, आखर में भक्ति करता हूं ... क्या मालूम भक्ति का असर हुआ है कि नहीं? क्यों ना परख करके देख लूं। बात तो हउमैं वाली थी, पर उस के मन आ गई। जो मन में आए वह हो सकता है।

एक दिन राजे ने अनोखा ही कौतक रचा। उस ने एक तेल का कड़ाहा गरम कराया। उस छोटे कड़ाहे के पास एक बिस्त्र बिछा कर उस पर आपनी सुन्दर स्त्री को कहा कि वह उस पर लेट जाए। जब वह लेट गई तो राजा जनक ने एक पांव कड़ाहे में रखा और एक उस रानी की छाती पर रखा। वह अडोल खड़ा रहा। अगनी ने उसको जरा भी न जलाया। और रानी की सुन्दरता, पांव के रास्ते शरीर के सपर्श ने उस के खून को ना गमाया, गरम तेल उबलता था, रानी की जवानी दुपहिर में थी। यह देख कर लोग राजे जनक की जैं जैं बोलने लगे। वह धरमात्मां - बड़ा वडा भगत हो गया। उस के पश्चात राजे को कभी माया ने ना भरमाया।

वडे प्रतापी राजे जनक की कथा बहुत वडी। अगर जे पूरा ब्यान करने लगें तो ग्रन्थों के ग्रन्थ बन जाएंगे। भगत दियां कथावां ना खत्म हों। आप का अन्त काल आ गया। पंच भूतक शरीर को छोड़ अगली दुनियां की तरफ जाना था। शरीर को जैसे ही आत्मां ने छोड़ा तो कुदरत की तरफ से आप ही बेअंत अनडिठ संख बजने लग पड़े। नरसिंघे बोले। मंगलाचार की धुनीयां उत्पन हुईं। कहिते हैं देवते और गंधरव आए। अपसरां आईं, भगत जन और नेक रूहों के

www.9009.co.in

दल स्वागत करने के लिये आए।

कहिते हैं, जनक ने जो भक्ति दा दिखावा कहा था, वोह वाहिगुरू के दर पर हउमै लिखा गया। जब देवते लेने के लिए आए तो वाहिगुरू ने हुकम किया--'हे देवताओ ! राजा जनक को नरकों वाले रास्ते देव पुरी लेआना । क्योंकि उस को हउमै का फल उसको जरुर मिले । इनसाफ होता है । यहां बे-इनसाफी नहीं हो सकती। बस इतना ही काफी है । उस का फुलों वाला बिबान उधर से ही आए।

जिस तरह वाहिगुरु का हुकम था, उसी तरह सभ ने मानना था। देवताओं ने राजा जनक का जलूस नरकों की तरफ मोड़ लिआ।

नरक आया। नरकों में हाहाकरा मची हुई थी। जीव पापों और कुकरमों का फल भोग रहे थे । कोई आग में जल रहा था और कोई उलटा लटकाया हुआ था और नीचे आग जल रही थी। कई रूहों को तेल के कड़ाहों में डाला हुआ था । तिलों जैसे कोहलू में पीड़े जा रहे थे। बड़ी हैरानी की यह बात थी कि वह ना मरते थे और ना जीवते। रूहें दुःखों को उठाती हुई विरलाप कर रहीं। वोह वासते डाल रहे थे। नरकों की तरफ देख कर राजा जनक ने पूछा-- यह कौन सा स्थान है ? नरक के राजे यमदूत ने कहा--'महाराज ! यह नरक हैं, उन लोगों के लिये जो संसार में अच्छे काम नहीं करते रहे। वह सब दुःख उठा रहे हैं।'

राजा जनक--'इन्हों को अब छोड़ देना चाहिए। बहुत दुःख उठा लिया है। देखो कैसे तरले पा रहे है।'

यम--'प्रमात्मा की आज्ञा के बिनां पता नहीं हिल सकता । हां जे कर कोई पुंन फल देवे तो इन की भी बंद-खलासी हो सकती है।'

www.9009.co.in

राजा जनक को तरस आ गया। उस ने कहा 'मेरे एक घड़ी सिमरन का फल लेकर इन को छोड़ दो।

जमों ने तकड़ मंगवाया। एक और राजा जनक के सिमरन का फल रखा और दूसरी और नर्कों रूहें बिठलाईं। धीरे धीरे सभी नर्कों रूहें छाबे पर चढ़ गईं। नरक खाली हो गए। रूहें राजा जनक के साथ ही स्वर्ग की और चल पढ़ीं। बड़े प्रताप और शान से राजा जनक वाहिगुरू के दरबार में उसके देव लोक में पहुंचा।

★

११. भगत अंगूरा

गुरु ग्रन्थ साहिब में एक तुक आती है :-

'दूरबा परूरउ अंगरै गुर नानक जसु गाइओ ॥'

जिस ने प्रमात्मा का सिमरन किया है, कोई नेकी की है, वह भगत बणा और ऐसे भगतों ने सतिगुरु नानक देव जी का जस गाया। अंगूरा वेद काल के समय भगत हुआ। इस ने सिमरन करने से अथरबण वेद को प्रगटाया। कलजुगी और दूसरे जुगों के लिए ज्ञान का भण्डारा दुनीआं के आगे रखा। इस का जस सभी करते हैं। ऐसे भगत विद्वान के पिता का नाम उरू था और माता का नाम आगने था।

'अंगूरा राजा था, इसके मन में ऐसी बात ठहिर गई कि परजा, सभ प्रभू के जीव हैं। किसी को भी दुःख मिला तो राजा ही जिमेवार होगा। राजा को इसका धिआन रखना चाहिए। ऐसे विचारों कारन अंगरा बच बच कर राज करता रहा। राज करते हुए कुझ साल उसे

www.9009.co.in

बीत गया।

एक दिन नारद मुनी जी घूमते हुए उस के राज्य में आ निकले। राज भवन में आए तो अन्गरे ने मुनी का बहुत सतकार किया। राजा ने बेनती की कि राज भवन छोड़ कर बनों में जा कर तपस्या की जाए। और देव लोक का जस किया जाए। राज की जुम्मेवारी में कई बातें ऐसी हो जाती हैं जो अच्छी नहीं होती और राजा उनके फल का भागी होता है।'

राजा अंगरा के मन की भाखिआ सुण कर नारद मुनी ने उपदेश किया - यह बचन आप के ठीक हैं। मन याप का राज करने से खुश नहीं। मन समाधीयां लगाता है। जो मन चाहे वही करना चाहिए। मन के उलट जाकर किए कारज ठीक नहीं होते। दुख का कारन बणते हैं। जाओ भगती करो।

नारद मुनी के उपदेश को सुन कर अंगरा का मन और उदास हो गया। उस ने राज भाग छोड़ दिया। राज आपणे भाई को दे कर, परजा की आज्ञा ले कर, वह बणों में चला गया। भगती की। भगती करने से ऐसा ज्ञान हुआ कि संस्कृत की कविता फुरन लग पढ़ी। उसने वेद पर सिमरती की रचना की। १७वीं सिमरती आप की कही गई है।

अन्त काल आया। उस ने जब प्राण तिआगे तो कहते हैं, प्रमात्मा ने बड़े देवताओं को आपके स्वागत के लिए भेजा। आप भगती वाले वडे भगत हुए। जिसका नाम आज भी सत्कार से लिया जाता है। भगती करने वाले सदा अमर हैं। बोलो ! सतिनाम वाहिगुरू।

★

www.9009.co.in

१२. अंब्रीक भगत जी

अबरीक मुहि वरत है रात पई दुरबाशा आया ॥
भीड़ा ओस उपारना उह उठ नहावण नदी सिधाया ॥
चरणोदक लै पोखिआ ओह सराप देण नो धाया ॥
चक्र सुदरशन काल रूप होइ भीहांवल गरब गवाया ॥
ब्राह्मण भंना जीउ लै रख न हंघन देव सबाया ॥
इन्द्र लोक शिव लोक तज ब्राह्मण लोक बैकुंठ तजाया ॥
देवतिआं भगवान सण सिख देइ सभनां समझाया ॥
आइ पइआ सरणागती मारीदा अंबरीक छुडाया ॥
भगत वछल जग बिरद सदाया ॥ ४ ॥

हे भगत जनो ! भाई गुरदास जी के कथन अनुसार अंबरीक भी एक बहुत बड़ा भगत हुआ है। इन की महिमा भी भगतों में बहुत है। आप को दुरबाशा ऋषी श्राप देने लगा, आप पांवों पर पड़ गये थे। ऐसा था वह भगत।

अंबरीक भगत पहले दक्षिण भारत का राजा था और वासदेव अथवा कृष्ण भगत था। यह माया में उदासी भगत था। इन के पिता का नाम भाग था। वह भी राजा था। जब यह जवान हो कर राजा बना तो यह साधू सन्तों की सेवा किया करता था। यज्ञ करता और आए गए जरूरत मंदों की सहायता करता था।

राजा अंबरीक में बहुत ही गुन थे। वह सभी इन्द्रीयों को सफल करता था। वह आंखों के साथ हर गरीब, अमीर, सन्त, भिखारी सब को देखता। दिमाग के साथ सोच कर लोड़मंदों की सेवा करता, जैसी उनको जरूरत होती। वह हाथों से भंडारयों में सेवा करता जबान के साथ राम नाम का सिमर्न करता, पावों से चल कर तीरथों पर जाता

कानों से सतिसंग का उपदेश सुनता।

अंब्रीक ऐसा तिआगी हो गया कि वह राज भवन, खजाना स्त्रीयां, घोड़े, हाथी इन सभ वस्तुओं को भी अपणी मलकीअत नहीं समझता था। सभी प्रजा की या भगवान की ही मानता था। एकादशी के वर्त भी रखता था। और पूजा किया करता था। इस तरह से जीवन को व्यतीत करते हुए कई साल बीत गए।

एक साल श्री कृष्ण जी की भगती में लगन प्रेम मस्ती के लोर के कारन उस ने प्रतिज्ञा कर दी कि साल की इकादशीयां रखेगा। तीन दिन निरजला वरत और मथरा बिंदराबन जा कर यज्ञ करेगा। दान भी देगा। उस ने ऐसी प्रतिज्ञा कर ली। अंब्रीक भरोसे वाला था। भरोसे में उस ने सभी बातें पूरी कर लीं और मंत्रीयों सहित मथरा में पहूंच गया। मथरा और बिंदराबन में उसने जमना स्नान करके यज्ञ लगाया। ब्राह्मणों को दान दिया। वस्त्र, अन्न के बिना सोने के सींगों वाली गऊएं दान कीं। कई जगह पुरानों में लिखा हैं साठ करोड़ गऊएं दान कीं। मतलब यह कि बहुत ही दान किया।

ऐसा समय आ गया कि ब्राह्मण छतीस प्रकार के भोजन खा कर दान ले कर निहाल हो कर घरों को चले गए तो राजा को आज्ञा मिली कि वह अपणा व्रत उपार ले। आपणे आप ही इच्छा पूर्ण होने पर राजा खुशी खुशी राज भवन की और चल पढ़ा।

राजा राज भवन में पहुंचा भी नहीं था कि उस को रास्ते में ही दुरबासा ऋषी आ मिला। राजा ने उसकों डंडवत होकर प्रणाम किया। दौनों हाथ जोड़ कर बेनती की :-

'हे श्रोमणी मुनी जन! आप भोजन खाएंगे। यज्ञ का भोजन पाकर त्रिप्त हो कर, गरीब अंब्रीक का पार उतारा करोगे।'

'जैसे राजा की इच्छा! भोजन का न्योता प्रवान करता हूं। पर जमना स्नान करके।' ऋषी दुरबासा ने उत्तर दिया। यह बोल कर ऋषी चल पढ़ा। उस ने मन में नियत धारी थी। अस्ल में वह राजा अंब्रीक को मोह-माया के जाल में फसाने के लिए आया था। वैसे भी दुरबासा मन करके क्रोधी था और छोटी छोटी बातों पर श्राप दे दिया करता था। इस के श्राप देने से कितनों को ही नुकसान मिला, वह बहुत मशहूर थे।

निओता दे कर प्रसन्न-चित अंब्रीक आपणे राज भवन में चला गया और ऋषी दुरबासा की उडीक करने लगा। द्वादशी का समय का समय भी बीतने के नजदीक आ गया। अंब्रीक ने व्रत उपारना था। पर दुरबासा न आया। पण्डितों ने यत्न किया कि राजा व्रत उपार ले, पर अंब्रीक यही उत्तर देता रहा - 'नहीं! एक महिमान के भूखे रहने से पहले मेरा व्रत उपारना ठीक नहीं।

दुरबासा पूजा पाठ करने में लीन हो गया। उस ने जान बूझ कर ही देर की। वह ना आया तो पण्डितों ने चरनामत पिला कर वरत उपार दिया। यह कहा कि चरनामत अन्न नहीं।

दुरबासा आया। उस ने योग विद्या से पता कर लिया कि राजा अम्ब्रीक ने व्रत उपार लिया है। उस को गुस्सा करने का बहाना मिल गया। उस ने राजा को मंदे बोल बोलने शुरू कर दिए। एक अतिथि को भोजन छकाए बिना आप ने व्रत उपार के शास्त्र मर्यादा का उलंघन किया है। आप को क्षमा नहीं किया जायेगा। आप तो चण्डाल! अधरमी मैं मार दूंगा। श्राप दे कर भस्म कर दूंगा। महां-मुनी क्रोध में आ कर ऐसे बोलते गए।

राजा अम्ब्रीक चुप चाप सुनता रहा। उसने उनकी बात का गुसा न किया। न ही जुबान हिलाई। राजा का धीरज देख ऋषी का दिल

डोला। पर क्रोध वस हुए ने कोई बात न की। जब दुरबासा ऋषी गाली दे कर थोड़ा ठंडा हुआ तो राजा ने दोनों हाथ जोड़कर बेनती की 'हे महां मुनी जी! जैसे पूजनीक ब्राह्मणों ने बताया, वैसे मैंने व्रत उपारा। आप की राह देखता रहा। उधर से थित बीत रही थी। अगर भूल हुई है तो क्षमा बखशें। जीव भूल कर बैठता है। आप तो महां धीरजमान मुनी लोक है। दया करो! मिहर करो! कुझ जीवन को रोशनी बखशो! मैं श्राप लेने नहीं आया। जीव कल्यान की इच्छा कर के पूजा की है।

पर ऋषी दुरबासा का क्रोध ठण्डा न हुआ। वह और तेज हो गया जैसे वह धरमी राजा को तबाह करने ही आया था। उस ने अपने क्रोध को और चमकाया। और क्रोध के जस में आ कर दुरबासा ने आपने बालों की एक लट उखाड़ी। उस लिट को जोर से हाथ में मल कर योग बल से एक भिआनक चुडैल पैदा की और उसके हाथ में तलवार दी। बिजली की तरह चमकती तलवार।

उस चुडैल को देख कर पण्डित लोग और राज भवन के सभी प्रानी डर गए। कईयों ने आंखें बन्द कर लीं। पर धर्मी और भगती भाव वाला राजा अम्ब्रीक न डोला, न डरा। शांत खड़ा रहा।

जैसे ही चुडैल धरमी राजा अम्ब्रीक पर हमला करने लगी तो राजा अम्ब्रीक के द्वार के आगे जो भगवान का सुदर्शन चक्र था, वह घूमने लगा। उसने पहले चुडैल का बाजू काटा। उसके बाद उसका सिर काट कर उसको खत्म किया। वह चक्र फिर दरबासा ऋषी की और हो गया। आगे आगे दुरबासा और पीछे पीछे चक्र। दौड़ा-२ वह देव-लोक जा पहुंचा, पर कहीं भी शांति न आई। आगे आगे दुरबासा और पीछे-२ सुदरशन चक्र। दोनों देव लोक में चले गए।

इंदर भी रक्षा न कर सका।

दुरबासा बहुत हंकारी ऋषी था। वह सदा सन्तों साधुओं और भगत जनों, अबला देवीओं को श्राप देता रहता था। शकुन्तला जैसी स्त्री को भी श्राप दे कर दुखी किया था। भगवान ने उसका हंकार तोड़ा था। हंकार तोड़ने के लिए सभ कुझ किया।

डरे हुए दुरबाशा को देवताओं ने समझाया कि राजा अम्ब्रीक के बिना किसी और ने तेरा पार उतारा नहीं करना, तुम मारे जाओगे प्रमातमा उस के हंकार को ठण्डा करने के लिए ही यह यत्न कर रहा है। उसने तप किया। पर तप से हंकार हो गया।

दुरबाशा परलोक और देव-लोक से फिर दौड़ पड़ा। वह फिर राजा अंब्रीक की नगरी में आया। और अम्ब्रीक के पैर पकड़ लिए। मिन्नतें की कि 'हे भगवान रूप राजा अम्ब्रीक! मुझे बचाओ! मैं आगे से किसी साधू-सन्त को तंग नहीं करूंगा। मेहर करो! मेरी भूल को बख्शो! क्षमा करो।

जब दुरबाशा ने ऐसे मिन्नतें की तो राजा अम्ब्रीक को तरस आ गया। उस ने दुरबाशा की मंदी दशा देखी। वह तो रो रहा था। उस के हाल पर तरस आ गया। राजा अम्ब्रीक दोनों हाथ जोड़ कर भगवान को याद किया। 'प्रभू! दया करें' हर प्राणी भूल करता रहता है। उस की भूलों को माफ करना आप का ही धर्म है। हे दाता आप मिहर करें! दया करें!' राजा ने ऐसे बेनती की जब राजा सुदरशन चक्र की और देखा तो वह अपने जगह जा लगा। दुरबाशा की जान में जान आई। सात सागरों का पाणी पीने वाला दुरबाशा ऋषी धीरज वान राजा अम्ब्रीक से हार गया। उस ने क्षमा मांगी और अपने राह चल पड़ा, इस प्रकार राजा अंब्रीक जो बहुत प्रतापी था, जगत में जस कमा कर गया। और भवजल से पार हो कर प्रभू चर्णों में मन लगाकर

www.9009.co.in

उसका सरूप हो गया। कोई भेत भ्रम ना रहा। भाई गुरदास जी के बचनों के अनुसार भगत वछल प्रमात्मा ने मेहर की ओर भगत अम्ब्रीक भवजल तर गया।

★

१३. गौतम मुनी और अहलिआ की कथा

प्राचीन काल से भारत में अनेकों प्रभू पूजा के ढग रहे हैं। उस पारब्रह्म शक्ति की भगती करने वाले कोई ना कोई साधन अख्तयार कर लेते थे, जैसा कि उस का 'गुरु शिक्षा देने वाला उपदेश करता था भाव तो प्रभू यश गाने का था। ऐसे ही भगतों में एक गौतम ऋषी जी हुए हैं। गुरबाणी में आता है। 'गौतम ऋखि जसु गाइओ ॥' जिसका भाव अर्थ है कि गौतम ऋषी ने जैसे प्रभू का यश गाया था वह प्रभु प्यारा भगत हुआ। पुराणों में जिसकी एक कथा आती है। जो महां पुरुषों और जगिआसूओं को इस प्रकार सुनाई जाती है।

गौतम जी सालग राम - शिवलिंग के पुजारी थे। उन्हों ने कई साल कठिन तपस्या की। शिव जी महाराज उन पर कृपालु हुए और वर दे दिया - हे गौतम ! जो मांगोगे वही मिलेगा। तेरी हर इच्छा पूर्ण होगी।

यह वर ले कर गौतम खुश हो गए और प्रभू की भगती में दिन गुजारने लगे। देवनेत से गौतम को एक दिन पता चला कि मुदगल की कनिआ, जिसका नाम अहलिआ था - की शादी होणी थी और स्वयंबर रचा जाना था, वह इत्नी सुन्दर थी कि हर कोई उस से शादी करना चाहता था। इंदर जैसी महान शक्तियों वाले

देवते भी त्यार थे। देवताओं और ऋषीयों की इच्छा, उन के क्रोध को देख कर मुदगल ने ब्रह्मा से बेनती की - हे प्रभू! मेरी कनिआं के शुभ कारज के बदले युद्ध होना ठीक नहीं। आप दखल देकर देवताओं को समझाएं। वह युद्ध न करें। कोई और बात सोचो।

ब्रह्मा ने यह बेनती प्रवान कर ली, वह आप ही सालस बण बैठा और उस ने सभी देवताओं और ऋषीयों मुनीयों को - जो विवाह करवाने के चाहवान थे। इकट्ठा कर के कहा - देखो! मुदगल की कनिआं सुन्दर है। पर उस को वर एक चाहिए। आप सब चाहवान हैं। यह भूल है अगर स्वयंबर मर्यादा पर चलणा है तो आप में से जो चौबीस मिण्टों में धरती का चक्र लगाए और पहले आए, उस से अहलिया का विवाह होगा।

ब्रह्मा जी से यह शरत सुन कर सभी देवते पहले तो हैरान हुए। फिर सब ने आपणे-२ तपोबल से माण कर के यह शरत प्रवान कर ली इंदर और ब्रह्मा के पुत्रों सनक, सनन्दन और सनातन को बहुत मान था। उन्होंने मन ही मन सोच लिया कि वह बाजी जीत जाएंगे। त्रिलोकी की प्रक्रमा करनी उनके लिए कठिन नहीं।

मुदगल की कनिआं अहलिआ की सुन्दरता और शोभा सुण कर गौतम ने उससे शादी की इच्छा रखी और उस ने आपणे सालगराम से प्रार्थना की। सालगराम प्रगट हुए तो उस ने कहा - 'हे गौतम! अगर आप की ऐसी इच्छा है तो पूरी होगी। मेरी प्रक्रमा कर लो। बस त्रिलोकी की प्रकरमा हो जायेगी। आप सभ से पहले आए ब्रह्मा को दिखाई दोगे।

शरत की दौड़ शुरु हो गई। गौतम ने सालग राम की प्रकरमां कर ली। उधर इंदर ते दूसरे देवते जब प्रकरमां करने लगे तो वह बहुत तेज चलें, हवा से तेज, पर जिस भी पड़ाअ पर जाते वहां पर

गोतम होता। वह बड़े हैरार हुए। गुस्से में मारने के लिए भागे मगर वह तो माया रूपी हो चुका था, इस लिए कोई ताकत उस को नष्ट नहीं कर सकती थी।

भगवान सालगराम की महान शक्ति से गौतम जी ब्रह्मा के पास पहले आ गए। ब्रह्मा खुश हो गया। और उस ने अहलिया गौतम को देने का फैसला कर लिया। यह सुण कर देवते निराश और नाराज हो गए। उन्होंने ईरखा की। जबरमस्ती छीन लेने का प्रयास किया। पर ब्रह्मा की शक्ति के आगे कोई पेश न गई। वह आपणे-२ स्थानों पर चले गए। गौतम अहलिआ को लेकर अपने आश्रम में आया। उस का आश्रम गंगा के किनारे था। वह फिर तपस्या करने लगा। उसकी महिमा दूर दूर तक बिखर गई।

उस समय देश में काल पढ़ गया। इन्द्र देवता नाराज हो गए। सारी धरती जल उठी। साधू, संत, ब्राह्मण और सब लोग बहुत तंग हो गए। उन की तंगी को देख कर दयावान गौतम का दिल भी दुखी हो गया। उस ने सालग राम की पूजा की। बेनती की कि हे भगवान सालग राम बल बखशण, वह लंगर लगाए। भगवान सालगराम ने बेनती प्रवान कर ली। और गौतम ने लंगर लगाया। ऐसी बरकत डाली की आनाज की कमी न रही। हर कोई मन भाऊंदा खाने लगा गौतम का यश त्रिलोकी में फैल गया। उस जस को देख कर इन्द्र तड़प उठा। उस को पहले ही अहलिया का गुस्सा था। उस ने माया शक्ति से काम लेना चाहा। माया शक्ति से एक बणाई, उस गऊ में यह फरक रखा कि जब गौतम हाथ लगायेगा तो वह मर जायेगी।

वह गऊ बणी गौतम के आश्रम में पहुंची। उधर से गौतम निकला बाहर आया। उस ने गऊ को हटाने के लिए हाथ लगाया तो वह

www.9009.co.in

धरती पर गिर गई और मर गई।

इन्द्र की चाल अनुसार ब्राह्मणों ने शोर मचा दिया कि ऋषी गौतम के हाथ से गौ हत्या हो गई। उसको प्रायश्चित करना चाहिए। पर सालग राम की कृपा से गौतम मुनी को पता चल गया कि यह इन्द्र की चाल थी। उस ने उन झूठे ब्राह्मणों को श्राप दिया और कहा - जाओ! आपकी भूख कभी नहीं मिट सकती। आप की भूख जन्म जन्म की रहेगी। यह श्रा लेकर ब्राह्मण बहुत दुखी हुए। और गौतम ने भोजन बन्द कर दिया।

इस प्रकार गौतम का जस होता गया और वह अहल्या से जीवन व्यतीत करता रहा। उस के घर में एक कन्या ने जन्म लिया। वह कन्या भी बहुत रूपवती थी और बालड़ी। वह आश्रम में खेल कर पलने लगी।

इन्द्र ने हठ न छोड़ा। वह अहल्या के पीछे लगा रहा। वह तो प्रेम लीला करने के लिए उतावला था। वासना की ज्वाला उसे दुखी करती थी। उस के इस व्याकुल पन बावत भाई गुरदास जी ने बचन किया है :-

गोतम नारि अहिलिआ तिस नो देखि इंद्र लोभाणा॥
पर घर जाइ सराप लै होइ सहस भग पछोताणा॥
सुंञा होइआ इन्द्र लोक लुकिआ सरवर मन शरमाणा॥
सहस भगहु लोइण सहस लैदोई इन्द्र पुरी सिधाणा॥
सती सतहु टलि सिला होइ नदी किनारे बाझ पराणा॥
रघुपति चरण छुहंदिआं चली स्वर्ग पुर सणे बिबाणा॥
भगत वछल भलिआई अहु पतित उधारण पाप कमाणा॥
गुण नो गुण सभको करे अउगण कीते गुण तिस जाणा॥
अवगति गति किआ आख वखाणा॥

भाई साहिब अहलिआ की कथा बताते हुए कहते हैं कि अहलिआ की सुन्दरता देख कर इन्द्र लोभ में आ गया था। उस को कई बजुर्गों ने समझाया - हे इन्द्र ! पर नारी का भोग मनुष्य को नरक का भागी बनाता है। यह कभी ख्याल नहीं करना चाहिए। आप की तो पहले ही अनेक राणीयां हैं। सारी इन्द्र पुरी नारी सुन्दरता से भरी पढ़ी है उन को धोखा भी नहीं देना चाहिए। पति-वरता नारी एक महान शक्ति है।

पर जब इन्द्र ने जिद न छोड़ी तो उस के एक माड़े सलाह कार ने यह कह दिया कि 'गौतम जिस समय गंगा स्नान जाता है, तब पूजा पाठ का समय होता है। उस समय भोग बिलास नहीं किए जाते। प्रभू का जस गाया जाता है। अच्छा तो यह है कि माया शक्ति से कुकड़ और चन्द्रमा से शक्ति मांगो।

'वह क्या सहायता करेंगे? इन्द्र ने पूछा। उस बाबत मुझे ज्ञान करवाओ।

इन्द्र की बात सुन कर उस पुरुष ने कहा। 'कुकड़ की बांग से गौतम जागता है। और चांद चढ़ने पर वह गंगा स्नान जाता है। अगर कुकड़ पहले बांग दे और चांद पहले चड़े तो वह गंगा स्नान करने चला जायेगा। इस प्रकार आप का चांस बन जायेगा।

यह चाल ठीक है।' इंद्र खुशी से बोला मैं अभी कुकड़ और चन्द्रमा से सहायता मांग लूंगा। उन से अभी बात करता हूं। वह जरुर ही मेरी सहायता करेंगे। फिर ऐसा होंसला कर के इन्द्र कुकड़ और चन्द्रमा के पास पहुंचा। उनको सारी हकीकत बताई और पाप के भागी बनाया। वह दोनों ऐसा करने को त्यार हो गए। उनकी बुद्धी भी भ्रष्ट हो गई।

www.9009.co.in

रात मिथी गई। उस मिथी रात को कुकड़ ने आधी रात को ही बांग दे दी। चन्द्रमा भी निकल आया। गौतम ने कुकड़ की बांग सुणी तो परना धोती उठा कर गंगा स्नान करने के लिए चल पढ़ा। अस्ल में गंगा स्नान करने का समय नहीं हुआ था। वह स्नान करने चला गया। जब गंगा स्नान करने लगा तो उसे वहां से भाखिआ मिली 'हे ऋषी गोतम! कुवेले आ कर स्नान करने लगे हो। तेरे घर चोर लगे हुए हैं। तेरे साथ धोखा हुआ है। जाओ आपणे घर की खबर लो यह ठीक नहीं किया।

ऐसी भाखिआ सुन कर गौतम वापस चल पढ़ा।

पर उसके जाने के पश्चात इन्द्र ने बिले का रूप धारण किया था। बिल्ले का रूप धारण करने का कारण यह था कि गौतम अहल्या का विसाह नहीं खाता था। क्योंकि देवते उसके पीछे पड़े थे। वह स्नान करने गया कुटीआ के साहमने द्वार में आपणी लड़की अंजनी को बिठा जाता था।

इन्द्र ने जब देखा अंजनी द्वार के आगे बैठी है और पूछेगी कि 'कौण है?' तो उसने बिल्ले का रूप धारण कर लिया। और अन्दर निकल गया। अंजनी ने ख्याल न किया। कुछ इन्द्र की माया शक्ति से अंजनी को ऊंग आ गई। वह बैठी रही। अन्दर प्रवेश कर के इन्द्र ने आपणी शक्ल गोतम जैसी कर ली। अहल्या को कोई पता न चला। इन्द्र अहल्या से प्रेम क्रीड़ा करने लग पड़ा। अभी वह अन्दर ही था कि बाहर से गौतम आ गया।

'अन्दर कौण है' अंजनी को गौतम ने पूछा। उस समय गौतम की आंखें गुसे से लाल थीं। वह बहुत व्याकुल था।

'माजार'! अंजनी ने उत्तर दिया। इस के दो मतलब हैं। एक तो है 'मां का यार और दूसरा बिल्ला। वह कुछ घबरा गई।

गौतम अन्दर चला गया। उस ने देखा कि इन्द्र उसी का रूप धारन किए हुए नग्न अवस्था में अहल्या के पास बैठा था। उस की करतूत देख कर ऋषी ने आपणे भगवान सालगराम को याद किया और श्राप दिया - हे इन्द्र ! तूं पापी बणा एक भग के बदले - जाओ तुम्हारे शरीर पर हजार भग होगी। दुखी होगा और दुख भोगेगा। उस का यह श्राप सुण कर इन्द्र घबराया। पर श्राप प्रगट होने लगा। उसका शरीर फूटने लगा। हजार भग नजर आने लगीं। शरम का मारा छिपता रहा।

इन्द्र से ध्यान हटा कर गौतम ने चन्द्रमा को श्राप दिया। तूं तो धरमीं था। जगत को रोशनी करने वाला। चोर का साथ दिया है। इसलिए डूबते चढ़ते रहोगे। बस एक दिन सम्पूर्ण कला होगी। जब कि चांद पहले सम्पूर्ण कला रहता था। उसी समय चन्द्रमा की भी कला कम हो गईं।

कुकड़ को श्राप दिया - 'कलजुग में कुवेले बांग दिया करोगे। तेरी बांग पर कोई भरोसा न करेगा।

गौतम ऋषी जब सब को श्राप दे चुका तो फिर वह अहल्या को और मुड़ा। उस समय गौतम ने देखा। एक अति सुन्दर नारी। जिसके समान कोई नारी न थी। उस को भी गौतम ने श्राप दिया। 'हे अहल्या ! तूं एक पतिव्रता स्त्री थी। तेरी बुद्धी भ्रष्ट हुई। आपणे और पराए पुरुष की कोई पहिचान न कर सकी। पत्थर की तरह लेटी रही। जाओ तुम पत्थर का रूप धारण कर लोगी। तेरा कल्यान न होगा। इस के बाद नारी का धर्म कमजोर हो जायेगा। कलिजुग में नारी बदनाम होगी।'

जब यह श्राप अहल्या ने सुणा तो वह हाथ जोड़ कर मिन्नतें करने लगी। 'हे प्रभू ! मेंरा कोई दोष नहीं, मेंने तो बस आप का रूप देखा।

www.9009.co.in

मुझे क्षमा बखशो। मेरे साथ धोखा हुआ है। मैं तो दासी हूं आपकी। मेरा धरम है...।'

अहल्या की पुकार रोणा सुण कर गौतम ने दूसरा बचन किया। 'सिल रूप में काल रहणा पड़ेगा। जित्नी देर राम चन्द्र जी अवतार नहीं करते। उन की पवित्र चरन-छोह से दोबारा नारी रूप धारण करोगी और तुम्हारा कल्यान होगा।

आश्रम में से निकल कर अहलिआ गंगा किनारे पहूंची तो उस का शरीर पत्थर हो गया। वह श्राप में सोई रही।

अहल्या कित्नी देर पत्थर बनी रही। श्री राम चन्द्र जी ने अयोध्या पुरी में जन्म लिया। श्री राम चन्द्र जी लछमण के साथ और विश्वा-मित्र के साथ जब उस तपोबन में आए तो उन के चरनों की छूह के साथ अहल्या फिर स्त्री रूप में आई।

उधर ब्रहस्पति के कहने पर इन्द्र फिर गौतम के पास गया। क्षमा मांगी। हाथ जोड़े, पैर पकड़े, कहा फिर कभी पर-नारी को न देखेगा। तब उसका रोगी शरीर ठीक हुआ। यह है गौतम और अहल्या की कथा। जो पढ़कर समझणी चाहिए।

★

१४. हनूमान जी की कथा

दाधी ले लंका गड़ु उपाड़ीले रावण बणु॥
सलि बिसलि आणि तोखीले हरी॥
करम करि कछउटी मफीटसि री॥ (गुरबाणी)

महांबीर हनूमान ने रावण की सोने की लंका को जला कर राख किया था। श्री राम चन्द्र जी का महांवीर योद्धा हुआ। जो अमर है और वीरों में गिणा जाता है। जिसने तपस्या की वह अंजनी सुत था।

महांवीर के जन्म की कथा ग्रन्थों में इस प्रकार लिखी गई है। हनूमान अंजनी का जती सती पुत्र था। अंजनी महां ऋषी गौतम की कन्या थी। उस को गौतम ऋषी ने श्राप दिया था। उस का श्राप यह था कि 'अंजनी तूं मां के धोखे में आई। जा तूं कंवारी ही बच्चे को जन्म देगी।

ऐसा श्राप सुण कर कन्या बहुत ही चिंतावान हुई। पर वह चिंता में ना रही। बलिक उस ने ईश्वर की भगती आरम्भ कर दी। उस ने घोर तपस्या की कि उस के पिता का दिया श्राप टल जाए। वह शिव की भगत थी। उस ने दिन रात तपस्या की। उस ने धरती में एक कोठा बनाया और फंसला किया कि वह किसी मर्द के दर्शन न करेगी जब किसी मर्द को न देखेगी तो उसका मन न डोलेगा। जब मन ही न डोलेगा तो कंवारी मां कैसे बणेगी इस बात से ही उस को तसल्ली थी। वह रात दिन ऐसे ही यत्न करती रहती। और भक्ति से आपणे मन को कायम रखती थी।

www.9009.co.in

अंजनी की भगती और तपस्या की बहुत चर्चा हुई। यहां तक कि तीनों लोकों में यश छा गया। सब देवी देवते उस की तपस्या की महिमा गाने लगे। तीनों लोकों में यह भी चर्चा हुई कि अगर अंजनी इसी प्रकार तपस्या करती रही तो जरुर कोई न कोई घटना होगी।

दूसरी और गौतम की बात सुणो। वह ब्रह्मा का भगत था। महां देवते ब्रह्मा ने उस को जो वर दिए थे वह ब्रुल नहीं सकते थे। न कोई वर टालने की समरथा रखता था। इस लिए गोतम के दिए हुए श्राप टल नहीं सकते थे। वह अटल रहते थे।

अंजनी की ऐसी दशा देख कर शिवजी को विचार करना पढ़ा। वह विचार कर के धरती पर आए। मात-लोक में आने पर धरती डोली। अंजनी का हृदय डोला। वह तपस्या में लीन हो गई।

शिव जी महाराज गौतम के मठ में पहुंचे। वहा अंजनी का धरती में मठ देख कर उस के पास पहुंचे। अंजनी ने एक छोटा आला रखा था जिस से वह वस्तु पकड़ती और हवा लेती थी। चांद और सूरज की रोशनी जाती थी। जीव जन्तुओं के बोल सुणाई देते थे। अंजनी ना किसी को देखती और न ही उसको कोई देख सकता था। शिव जी ने आपणी आत्मक शक्ति से अंजनी को देखा। उस को आवाज दी -

'अे गौतम कन्या अंजनी !'

यह आवाज सुण कर अंजनी का हृदय कांपा। उस ने शिव जी का बोल पछान कर कहा।

'हे भगवान ! क्योंकि आप पुरुष रूप में इस मात लोक पर

आए हैं। इस लिए मैं आप का दर्शन नहीं कर सकती, न पूजा ही कर सकती हूं। अंजनी ने कहा।

'हे अंजनी! ऐसा क्यों कर रही हो? पूरी बात तो करो। शिव जी ने अंजनी को कहा।

'नहीं महाराज! मैं आप के दर्शन नहीं कर सकती। क्योंकि मेरे ही पिता गौतम जी ने मुझे श्राप दिया हैं।

'क्या श्राप दिया है?'

'श्राप यह है कि मैं कवारी ही मां बनूंगी। पर मैं ऐसा नहीं होने देना चाहती। मैं किसी पुरुष के दर्शन न करूंगी।

ऐसा मिथिआ ज्ञान तुझे हुआ है। तुम ने जन्म लिया है। स्त्री का रूप धारण किया है। इस घोर तपस्या को छोड़ दो। जो जीवन नारी का है उसे भोगो।'

जब वह भगवान शिवजी ऐसा बोल रहे थे तब अन्जनी का शरीर गरम होता गया। पसीना भी आता रहा। उस के लहू और हृदय में वासना जागने लगी. उस का मन डोलने लगा। मन डोलता हुआ दिखाई देने लगा तो वह एक दम जोश और क्रोध से बोली - 'हे भगवान्! मैंने पुरुष के दर्शन नहीं करने। मेरा मन डोल रहा है। आप अपनी शक्ति लेकर यहां से चले जाएं। मेरी प्रतिज्ञा न तोड़ो। मेरी तपस्या को भंग न करो। चले जाओ! आप ने जरूर कुछ मन में रखा होगा।

'अंजनी! तेरी तपस्या पूरी नहीं हो सकती। क्योंकि तुम ने किसी को गुरु धारण नहीं किया है। गुरु धारन किये बिना तपस्या करना - फल नहीं मिलता। तेरा कल्यान कैसें होगा। सोच कर चलना होगा। गुरु धारण करने का सोचा नहीं।

यह सुण कर अन्जनी घबरा उठी। उस के शरीर से पसीना

www.9009.co.in

निकलने लगा तो उस ने बेनती की - हे भगवान! अगर गुरु धारण करूंगी तो दीख्या कैसे दूंगी। और किस वस्तु की दक्षिणा देनी होगी।

'कोई चिंता ना करो, सभ कुछ हो जायेगा।'

अंजनी ने गुरु धारन करने का विचार कर लिया। वह शिव-शक्ति में कीली गई। उस ने शिव जी को 'गुरमन्त्र' देने की अपील की। शिव जी ने प्रसन्न होकर कहा, कान इधर करो। नेत्रो से मैं तुम्हें गुरमन्त्र देता हूं। अंजनी ने ऐसा ही किया तो शिव जी से ओ३म् नमो भगवते वासदेव।' कहि कर गुरमंत्र दे दिया। वह गुरमन्त्र को अंजनी को देकर शिवजी चले गए।

शिव जी के चले जाने के पश्चात अंजनी का हुलीआ ही बदल गया वह तड़प उठी उस के मन ने अनुभव किया कि मेरे साथ धोखा हुआ है। भगवान शिव जी मेरे बाप का दिया हुआ श्राप पूरा कर गए हैं। मैं तो कांपती जा रही हूं।

जैसे कुदरत की मर्यादा है - वह गर्भवती हो गई। और बच्चे को जन्म देने के समय वह आपणे मठ में से निकली। उसको मठ में से निकलते हुए किसी ने ना देखा। वह निकल कर सीधी वण की और चली गई। वन में ही उस ने एक बच्चे को जन्म दिया। वह उसी समय आकाश में उढ़ गई। उस ने ना तो बच्चे का मुख देखा और न ही किसी मरद का।

उस बच्चे का नाम हनूमान रखा गया। बड़ा होकर वह पवन-पुत्र कहलाया। उस में महान शक्तियां आ गई। फिर वही हनूमान जी जवान होकर दक्षिण के बणों में आपणी सैना बणा कर रहने लगा। क्योंकि शिव जी ने इस की रूह एक भील को मार कर प्रवेश की थी। वह बहुत बली था।

www.9009.co.in

रावण को मारने के लिए जब सीता जी के हरन का खेल भगवान ने रचाया, सीता लंका पहूंच गई तो उस का पीछा करते हुए श्री राम चन्द्र जी जब दक्षिण के जंगलों में गए। बाली से मेल हुआ तो हनूंमान ने श्री राम चन्द्र जी के दर्शन किए।

श्री राम चन्द्र जी का हुकम पा कर हनूंमान जी सीता जी को ढूंडणे के लिए वानर सेना के साथ घूमे और सागर के किनारे पहूंच कर वह रुक गए। जब सागर की और देखा तो कुछ घबराए। उस को आपणे बल का ज्ञान नहीं था। उस समय उस के साथी सुग्रीव ने कहा - 'हे हनूंमान ! आपणे बल को पछानो ! तुम्हारे अन्दर इतना बल हैं। जरा कहो स्री राम !

हनूंमान ने 'स्री राम कहि कर एक किलक मारी। किलक बड़ी गरजवीं थी। उस से धरती और आकाश कांप उठे। उस ने जैसे ही बाहीं मारीं और उछला तो आकाश में पक्षीयों की तरह उड़ गया। नीचे सागर लहिरें मार रहा था। वह लंका में चला गया। अशोक वण में उस ने सीता जी के दर्शन किए। श्री राम चन्द्र जी का सन्देशा दिया और रावण के सभी बाग तबाह किए। उस ने भरे दरबार में पूंछ से रु बंदवा कर सोने की लंका जलाई। अनेकों आदमी मार दिए फिर भी निकल कर समुन्द्र पार कर लिया। सीता जी का सन्देश श्री राम चन्द्र जी को दिया। कहा - 'हे भगवान लंका पर चढ़ाई करो सीता माता जी बहुत दुखी हैं।

श्री राम चन्द्र जी ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए बानर सैना त्यार की। हनूंमान की सेना बहुत थी। दक्षिण के सारे बानर कई लाखों की गिणती में एकत्रित हो गए और राजेश्वर के मुकाम पर आ गए। जब श्री राम चन्द्र जी ने सागर का पुल बांधना शुरु किया तो हनूंमान ने बहुत काम किया। आपणी शक्ति से भारी पत्थरों को

www.9009.co.in

उठाए और पुल त्यार किया।

हे जज्ञासु और भगत जनो ! महांबीर हनूमान जी की अनेकों प्रकार की साखीआं हैं। जो भी इनकी साखी सरवन करता है उसका कल्यान होता है। इसलिए साखी सरवन करो। श्री राम चन्द्र जी के साथ हनूमान जी ने रावण के साथ युद्ध में बहुत हिस्सा लिया। उन्होंने एक महान कार्य किया। वह कार्य जैसा आज तक किसी ने भी न किया होगा। वह कार्य यह था कि युद्ध में श्री लछमन जी मूछित हो गए। उन की मुछित हो जाना श्री राम चन्द्र जी के लिए असहि था। वह विरलाप करने लगे तो उस समय वैद्य ने बेनती की कि 'हे भगवान्! लछमन जी ठीक हो सकते हैं !'

'कैसे ठीक हो सकते हैं? वैद्य राज जी। जल्दी बताएं। श्रीराम चन्द्र जी ने उन से पूछा। क्योंकि वह बहुत दुखी हो रहे थे। सच्चा भाई और प्यारा साथी युद्ध भूमी में मूछित पढ़ा था। वह बात नहीं करता था। वैद्य जी जल्दी से बताएं।

वैद्य जी ने कहा - 'द्रोणा गिरि पर्वत पर संजीवनी बूटी है, अगर अगर वह आ जाए तो मूछा ठीक हो सकती है।

श्री राम चन्द्र जी - वैद्य जी! वह बूटी आ सकती है।

वैद्य - कौन लाऐगा ? ऐसा बलि कौन है जो रातों रात समुन्द्र पार जाए और बूटी लेकर सुबह आ जाए। युद्ध छिड़ने से पहले।

श्री राम चन्द्र जी - हमारा बीर हनूमान जायेगा। जिस के पास सभी शक्तियां हैं।

यह कह कर श्री राम चन्द्र जी ने हनूमान जी को यह हुकम दिया उसी समय हनूमान जी ने 'श्री राम' का नाम लिया और आकाश में उड़ कर तेजी से द्रोणा गिरि पर्वत पर जा पहुंचे। उन्होंने वहां पर देखा। सारा पर्वत इस प्रकार से डलकता हुआ नजर आ रहा था

www.9009.co.in

जैसे दीपमाला हुई होती है। हर एक बूटी जगमगा रही थी। उस पर्वत की और देख कर हनूमान जी ने ख्याल किया - अगर एक बूटी ले गया और जरूरत दूसरी की हुई तो फिर आना मुश्किल होगा। क्या मालुम लछमण जी होश में न आएं। उन्होंने श्री राम चन्द्र जी का नाम लेकर ऐसे किलक मारी कि सरीर वधा कर पर्वत जितना किया। उस ने लम्बे हाथ से पर्वत उखाड़ा। हाथ में पर्वत उठा कर उड़ गए। रातों रात लंका की धरती में पहूंच गए। लोगों ने देखा कि जगमगाता पर्वत चला आता है। उन्होंने सोचा कि पर्वत चला आ रहा था। उन्होंने समझा शायद कोई नगरी ही उड कर आ रही है। देख देख कर लोग दहिल गए।

हनूमान ने पर्वत उस जगह से दूर रख दिया। जहां पर लछमण जी मूरछा हुए पड़े है। वैधों ने संजीवनी बूटी ली। और लछमण जी को ठीक कर दिया। वह उठ कर बैठे तो श्री हनूमान ने बहुत बड़ी खुशी खुशी मनाई। ऐसा बलि श्री हनूमान, जिसकी महिमा अपर अपार है। जिस ने भी प्रमात्मा की भगती की उस का जस संसार में हुआ। इस लिए जप मन साखी ते धर धिआन। तेरा होइ जाइ कलिआन।

★

www.9009.co.in

१५. गनिका की कथा

गनिका एक वेशया थी। वह शहिर के बाजार में रहती थी। पाप करम किया करती थी। उसका रूप और जवानी सभ बिकते थे। वह वह पापों की गठड़ी बांधती जा रही थी। जब शाम हो जाती तो उस के घर में रौनक हो जाया करती थी। रात को दिया जलते ही वह हार शिंगार कर के बैठ जाती।

पर - "सूआ पड़ावत गनिका तरी ॥
सो हरि नैनहु की पूतरी ॥ (गोंड नामदेव)

भगतों ने बचन किया है कि तोते को पढ़ाती हुई गनिका तर गई। प्रमात्मा की आंखों की पुतली बणी। वह भगतों में गिणी जाने लगी। उस का ऐसा जीवन बदल गया।

उस के पाप और नरकी जीवन में से निकलने की कथा इस प्रकार है कि वह जब बुरे काम में लगी हुई जीवन को भूल गई थी। मनुष्य जीवन के मनोरथ का बिल्कुल पता न था, तब एक दिन एक साधू आ गया। उस के पास एक तोता था।

कहते हैं कि वह साधू शहिर से बाहर रहा करता था। वह कम वसों में आता। उस रात वर्षा बहुत हुई। इत्नी वर्षा हुई कि वहाँ ऊंची नीची धरती जल थल दिखाई देने लगी। साधू ने देखा सर्दी से उसका तोता भी मरने लगा। यह पक्षी उस को जान से भी प्यारा था। क्योंकि वह 'राम-राम' की पंती पढ़ता था। तब उसने तोते के पिंजरे को उठाया शहिर की और चल पढा। उस ने आपणी गोदड़ी और वस्त्र ऊपर लिए हुए थे। इस कुदरत की शक्ति का मुकाबला करना उस के वस से बाहर था। वह पैदल चल कर आया, पर कोई

आसरा न मिला। रात का समय था। सभ लोग आपणे आपणे घरों में द्वार बन्द कर के बैठे हुए थे। काफी चलते रहने पर भी साधु को आसरा न मिला। वह चलता रहा।

गणिका का घर आया, दिया जल रहा था। द्वार भी खुला हुआ था वह राम जी का नाम लेकर अन्दर चला गया। गनिका उस को देख कर मन ही मन में बहुत खुश हुई। उस ने सोचा कि वर्षा और तूफान के कारण उस के पास कोई ग्राहक आया है जो उस को पैसे खटाऐगा उस के तन क सौदा करेगा। उस ने बड़े चाव से कहा - आओ मेरी आंखों में बैठो ! मैं आपका रास्ता देख रही थी।

गनिका का यह वाक सुण कर और उस के रूप और शिंगार को देख कर साधु बहुत हैरान हुआ। उस ने कहा - बेटी ! बाहर बारश है झोंपड़ी बहि गई। मैं आपणे तोते समेत आसरा लेने आया हूं।

'बेटी' शब्द से गनिका का पापी मन कांप उठा वह एक बार कांपी फिर निराशता से बोली - आप ने रात रहिणा है ?

'हां बेटी ! हम ने रात रहिणा है। हर आतमा प्रमातमा का अंश है और शरीर आतमा का घर। शरीर को आसरा देणा नेक मारग पर चलणा होता है। पुत्री ! प्रमातमा ने तुम्हें सुख के साधन बखशे हैं। तुम उस को याद करती होगी।

साधू सहिज सुभाव बोलता गया। उनकी आतमा सचमुच ही बड़ी निर्मल थी, परन्तु गनिका, जिसका असली नाम 'चन्द्रमणी' था वह सुण सुण कर घबराने लगी। वह तो पापी थी, उस ने घबरा कर कहा 'आप साधू हैं ?'

'हां मैं साधू हां, मेरे मालक ने मुझे साधू बणा कर आपणे नाम के सिमरन की और लगाया है। वह मालक जो सभ का करता-हरता जीवन-दाता, अन्न दाता है।'

गनिका के मन में कुछ नेक भाव आए। क्योंकि उस दिन से पहले उस जैसा पुरुष पहले कभी भी उसके पास नहीं आया था जो उस को इस पाप करम की और न लगाया करता था। मंद वरत कर उसकी मंद वासना से उस के मैले मन पर और मैल फेंकता। उस दिन वह वह सुबह स्नान करके घूमती। बारिश होती रही।

'आप साधू हैं - भगवान् के भगत ! ठीक है आओ ... बैठो। और' भीगे वस्त्र उतार कर दूसरे वस्त्र पहन लो। शायद जीवन में साधू की सेवा करने का मौका पहली बार मिला था। आओ क्या मालुम मेरे जीवन में ऐसी घटना होनी होगी।

यह कहि कर उस ने साधू के गीले वस्त्र उतरवाए और उस को गर्म वस्त्र दिए। उसने साधु और तोते के लिए आग जलाई। वह कुछ गर्म हुए तो तोते ने आपणी आदत अनुसार राम का नाम लेना शुरु कर दिया। चन्द्र मुखी गनिका को उनकी बातें अनोखी लगीं। उसने साधू से कहा - 'महाराज ! भोजन करोगे ?'

'हां पुत्री ! मैं भी भूखा हुं और यह पक्षी भी भूखा है। जो भगवान् ने लिखा है देगा। आज नहीं तो कल। उसकी जैसी इच्छा है वैसा ही होणा है।' साधू ने उत्तर दिया।

'मेरे पास जो कुछ है उस को प्रवान करो - पर मैं गनिका (वेश्या) हूं। जिस को इस घर में आए बारह साल हो गए हैं। पुरुषों के मन की खुशीयां पूरी करती रही हूं। मैं तो पापन हां पापन के घर का भोजन ! गनिका चन्द्रमुखी ने कहा। उसके चेहरे पर गम्भीरता आई शायद उसके जीवन में यह पहली घटना थी।

साधू ने देखा, गनिका ने आपने पाप करमों को अनुभव कर लिया है। अब इस को उपदेश देणा ठीक है। उन्होंने कहा - तुम्हारा दिया भोजन प्रवान होगा। इस जगत में माया का प्रवेश है। माया

www.9009.co.in

का मतलब जब जीव पर पढ़ता है तो वह भगवान को भूल कर काम क्रोध और मोह में फस जाते हैं। जीवन मारग से दूर हो जाते हैं। राम नाम का सिमरन नहीं करते। कुछ ऐसे पुरुष होते हैं जो आपणे ही मतलब के लिये किसी दूसरे को कुराहे भेजते रहते हैं। ऐसा ही इस जगत का वतीरा है।'

ठीक है महाराज! आप सत्य कहते हैं। पुरुषों ने ही मुझे कुराहे डाला है। मैं पापण हुं। पर पापण होने का ज्ञान मुझे आप के ही दर्शन करने पर हुआ है। जब आप ने मुझे 'पुत्री' कहा। मेरे घर में चाहे जवान आए चाहे बूढ़ा कभी मुझे बहिन या पुत्री किसी ने नहीं कहा। न ही मुझे पता है कि मेरी मां कौन थी। और बाप कौण? बस ऐसे ही जीवन व्यतीत होने लगा। वर्षा होते हुए दो दिन हो गए वह भी नहीं आए जो आपणे मतलब के लिए आते थे।

इस प्रकार गनिका चन्द्र मुखी को ज्ञान होता गया। उसका शरीर कांप उठा। मन कांपने लगा। उस को ऐसे मालुम होने लगा जैसे उस में एक महान तबदीली आ रही हो। एक दर्द और दरद और पीड़ा हो रही थी।

मतलब यह कि यही तो सभ कुछ है। इस समाज की जान है। (मुझे और मेरे तोते को मतलब था - आसरे का 'हम चल कर आ गए' पर इस मतलब और लब के दो रूप हैं। एक तो है माया वादो का और दूसरा ईश्वर वादी! अगर जीव को यह मतलब हो कि उस का जीवन अच्छा बणे, तो वह राम नाम का सिमरन करने के लिए साधू सन्तों और नेक पुरुषों की संगत करे। सेवा का भाव आपणे मन में रखे। धरम और समाज की मर्यादा कायम रखे तो ठीक! देख पुत्री। अगर तुम ने एक पति धारन किया होता, उसकी सेवा करती, उस से ही तन और मन की जरुरत पूरी किया करती तो बच्चे होते, बच्चों

और पती की सुख शांती के लिए पूजा पाठ करती, सभी तुझे देवी कहते। जीव करम से जाणा जाता है शरीर से नहीं। सो भला है। जो बीती सो बीती। आगे से नेक राह चलणा चाहिए। भगवान, जिस ने जीवन दिया है, वह रोजी भी देता है।

चन्द्र मणी ने साधू को भोजन करवाया। उस ने तोते को चूरी खिलाई और चरनीं लग गई। साधू की संगत ने उस के मन को बदल दिया उस को पापों का अहिसास करा दिया। तभी तो भले पुरुष कहते हैं। सदा साधू-संत, गुर पीर, नेक पुरुषों की संगत करनी चाहिए भाई गुरदास जी ने संगत का बहुत ही बड़ा महातम बताया है। भाई साहिब फुरमाते हैं :-

सण वण वाड़ी खेत विच परउपकार विकार जणावै ॥
खल कढाइ वढाइ सण रसा बंधन होइ बनावै ॥
खासा मलमल सिरीसाप सूत कताइ कपाह वणावै ॥
लजण कजण होइकै साध असाध बिरद बिरदावै ॥
संग दोख निरदोख मोख संग सुआउ न मान मिटावै ॥
त्रपड़ होवै धरमसाल साध संगत पग धूड़ धुमावै ॥
कुट कुट सण किरतास कर हरजस लिख पुराण सुणावै
पतित पुनीत करे जन भावै ॥ (१९-२५)

पथर चित कठोर है चूना होवै अगी दधा ॥
अग बुझै जल छिड़कीअै चूनो अग उठै अति वधा ॥
पाणी पाए विहुन जाइ अगन ना फुटे अवगुण बधा ॥
जीभै उभै उते रखिआ छाले पवन संग दुख लधा ॥
पान सुपारी कथ मिल रंग सुरंग संपूरण सधा ॥
साध संगत मिल साध होइ गुरमुख महां असाध समधा
पाप गवाइ मिले पल अधा ॥ २०-२५

www.9009.co.in

साध संगत का ऐसा फल है सो गनिका के मन पर असर पढ़ गया। वह सारी रात सतिसंगत करती रही।

अगले दिन फरका लगा। आकाश निरमल हो गया। धूप लगी तो साधू ने चलने की त्यारी की। तब गनिका चन्द्रमणी ने बेनती की - 'महाराज! यह पर उपकार करो, मुझे यह तोता दे जाओ। मैं इस से 'राम नाम' सुना करूंगी। इस को पढ़ाया करूंगी। ऐसा ही कारज करो अच्छा तो है आप भी रहें!

'अच्छा पुत्री! अगर तुम्हारी इच्छा है तो यह लो पिंजरा। इसको सम्भाल कर रखणा हम आपनी कुटिया में जाते हैं। आपके घर रहने से लोग आपकी और मेरी दोनों की निंदा करेंगे। लोग निंदा करानी अच्छी नहीं होती। हम चलते हैं।

यह कह कर महात्मा चला गया। वह आपना तोता छोड़ गए। वह तोता राम का नाम बोलता। गनिका कहती बोल गंगा राम राम राम।

गनिका चंद्रमनी को ऐसी लगन लग गई कि वह रात दिन गंगा राम को राम नाम की पट्टी पढ़ाने लगी। उसका मन पाप करमों से हट गया। उस ने राम नाम की धुनि गानी शुरू कर दी। धीरे धीरे उसकी बैठक खाली रहिने लगी। और 'राम नाम' की गूंज आने लगी। तन और मन की सुध ना रही। वह भुखी ही राम नाम जपने लगी।

चंद्रमनी गनिका का सिदक देख कर भगवान् प्रसन्न हो गया। उस ने चंद्रमनी को आपने पास बुलाने के लिये एक बहाना बना लिया. वह बहाना यह था कि पिंजरे में सांप का रूप धारन करके आपने काल दूत को भेजा। उस ने पहले तोता को डंग मारा। उसकी रूह को पहले भेज कर फिर बैठा रहा। गनिका उठी, उस ने

www.9009.co.in

तोते को बुलाया। बोल गंगा रामा 'राम नाम'। पर उस को कोई आवाज ना आई। उस ने आपणा हाथ पिंजरे में डाल कर तोते को हिलाया तो सांप ने उसको भी डस लिया। उसी समय उसकी रूह शरीर को छोड़ गई। रूह के लिए बबाण आया, नरसिंघे बजे। संखों की धुन में वह मात-लोग से स्वर्ग लोक को गई। इस कथा पर भाई गुरदास जी ने कहा है :-

गई बैकुण्ठ बिमान चढ़ नाम नाराइण छोत अछोता ॥

१६. कपल मुनी

थाउं निथावें माण मणोता ॥

कलकते का दरिया हुगली जहां सागर में जा कर मिलता है। उस स्थान को 'गंगा-सागर' कहा जाता है। माघी वाले दिन वहां महान पुरब या मेला लगता है। उस स्थान को कपल मुनी का आश्रम माना जाता है जो सतजुग में हुआ।

कपल मुनी बाबत गुरबाणी में आता है :-

गावहि कपिलादि आदि जोगेसुर अपरंपर अवतार वरो ॥

इसका भाव है कि प्रमात्मा को कपदेव जैसे मुनी और जोगी भी याद करते हैं, जो बड़े महां ऋषी और अवतार थे। उन को लोग अभी तक याद करते हैं और वह भगती करते रहे।

महां-ऋषी कपल-मुनी, ऋषी मंनू की पुत्री देवहुती का पहिला पुत्र था जो सुरसवती नदी के किनारे जन्मा और आश्रम में पला।

मंनू जी ने देवहुती का विवाह करदम ऋषी से कर दिया था। वह बहुत सिआणा और त्रैकाल की सोझी रखने वाला था। उसकी कुटीआ कुदरत के घर में थी और वह सदा भगती ओर ज्ञान में रहता। देवहुती से उसका बहुत प्यार था, क्योंकि देवहूती जितनी सुन्दर

www.9009.co.in

थी, उत्नी ही अकलमंद और सुलखणी थी, वह पति पूजा करती रहती उस ने आंख भर कर भी कभी पर-पुरुष की और न देखा था। उस का ज्ञान, उस का धरम उस का करम सूरज और चांद की किरनों समान निर्मल और पवित्र थी।

दिन पापकर ऐसा समय आया कि वह अणजाणे बच्चे की मां बण गई, जैसे ही बच्चे ने उस के गर्भ में प्रवेश किया वैसे ही उस को बहुत सुन्दर सुन्दर सपने आने लगे। वह सोते जागते ही मन में अच्छी भावना रखने लगी।

उस ने एक दिन आपणे पति देव से दोनों हाथ जोड़ कर बेनती की कि 'हे नाथ! मुझे ज्ञान उपदेश दिया करो, क्योंकि मैंने सुना है कि अगर माता बच्चे को कुख में रख कर अच्छी भावना करे, अच्छा ज्ञान सुणे तो उस का पुत्र महान ज्ञानवान बणता है। मेरी इच्छा है कि मेरा पुत्र महान् ऋषी बणे।'

करदम ऋषी ने जब आपणी धर्म पत्नी से अैसी बिनती सुणी तो वह बोले - 'हे देवहूती! तुम्हारी बात ठीक है। बच्चे का स्वभाव और ज्ञान पर मां बाप के गुणों और करमों का असर पढ़ना जरुरी है तुम देव पूजा किया करो। ज्ञान सुणा करो। पर मुझे एक बात का अहसास होता है।

'किस बात का अनुभव होता हैं नाथ! मुझे भी बताओ। देवहूती ने पूछा।

'बात यह हैं कि ऐसे प्रतीत होता है कि जिस बालक ने तुम्हारी कुख को पवित्र किया है वह जरुर कोई अवतार है। हो सकता है विष्णु अवतार हो। क्योंकि ऐसा ही प्रभाव पढ़ा नजर आता है। जब तुम चलती हो, जहां भी जाती हो कुदरत तुम्हारा स्वागत करती है। फूल मुरझाए खिड़ जाते हैं। चेहरे पर रौनक है।

'हे नाथ! आप के बचन सत्य हों। मेरे धन्य भाग। जो ऐसे बच्चे को जन्म दूं। इस प्रकार पती पत्नी बातें करते हुए उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे। जिस दिन बच्चे ने जन्म लेना था। पहिली वार रोणा था और जगत को हसाणा था। सूरज की किरण देखणी थी। जगत की हवा लेनी थी। कितना भागों वाला वह दिन होता है जब किसी के घर कोई जन्म लेता है।

बच्चे ने प्रभात समय जन्म लिया। जन्म होने के पश्चात करदम मुनी ने जब बच्चे को देखा तो वह खुशी से उछल पढ़ा। बच्चे के नेत्र कमल जैसे थे। चेहरा प्रभावशाली और सरवन-चक्र वाला था। खुशी की लहिर से झूमते हुए उस ने बच्चे का नाम 'कपल' रख दिया सो नामदेव या कपल मुनी आपणे नेत्रों और भूरे सुनहिरी बालों के कारण बहुत मशहूर हुए थे। आप को भगवान का अवतार भी माना जाता है।

कपल देव कोई आठ नौ साल का हुआ तो उसकी मां ने अैसे चमत्कार देखे जिस सं विष्णु अवतार सिद्ध हो गया। उस ने आपणे पुत्र से ज्ञान प्राप्त किया और उपदेश लिया। कपल घोर तपस्या करने के लिऐ जंगलों में चला गया। घूमते घूमते गंगा सागर पर आपणा आश्रम बणा लिया। कई हजार साल तपस्या करता रहा।
बोलो भगतों की जै! सतिनाम स्री वाहिगुरू!

★

१७. अजामल

अजामल उधरिआ कहि ऐक बार ।। (म:५)

'हे भगत जनो ! अजामल की कथा सरवन करो। इस कथा के सरवन करने वाले को जम भी तंग नहीं करता। वह ऊंचे चाल चलन वाला बणता है। सुणन वाले के पाप झड़ते हैं। उसका कल्याण होता है। मोक्ष मिलता है।

अजामल उस समय का बहुत बड़ा पापी माना गया है। वह पापी किसलिए था ? उस ने क्या कसूर किया था ? इस की कथा इस प्रकार आती हैं :-

अजामल एक राज-ब्राह्मण का पुत्र था। उसका बाप राजा के पास प्रोहित भी था और वजीर भी था। वह बहुत अकल वाला था। उस के सिआणे होणे की चर्चा चारों और थी।

अजामल की आयु जब पांच साल की हुई तो उस के माता पिता ने उसको स्कूल में दाखल करवा दिया। वह जिस गुरु से पढ़ता था वह बहुत ही सिआणा था। सिआणे गुरु को जब सिआणा विध्यार्थी मिल जाता है तो वह बहुत खुश हो जाता है। ऐसी ही हालत अजामल के गुरु की भी थी। जब उस ने देखा कि अजामल की जबान पर सुरसती बैठी है वह जो भी शब्द वह पढ़ता या सुणता वही याद कर लेता है। उस का गला रसीला भी था। जब वह वेद-मन्त्र पढ़ता था तो एक अनोखा ही रंग दिखाई देता था। वह बहुत ही सिआणा निकला। उसने दस साल में बीस साल की विद्या धारन कर ली। उसकी विद्वता की प्रसिद्धता हो गई ! ऐसी प्रसिद्धता कि बढे बड़े विद्वान भी दर्शन करने आते थे।

www.9009.co.in

एक दिन अजामल के सिआणे गुरु ने कहा - 'अजामल! अभी तुम शिष्य हो!'

'हाँ गुरदेव मैं शिष्य हुं - पर कितनी देर शिष्य रहूंगा?'

'कोई चार साल और लगने हैं। चारों वेद और उपनिषद पूरन हो जाएंगे।'

'जो आज्ञा गुरदेव।'

उस के गुरू ने उस की ओर देखा। ध्यान से देख कर कहने लगा। 'अजामल जब मेरी ओर आओ यां आपणे घर को जाओ नगरी से बाहर बाहर आया जाया करो। नगरी में कभी नहीं जाना, क्योंकि अभी तुम्हारे वस्त्र विद्यार्थी हैं। गुरु आज्ञा का पालण करना होगा। आज्ञा का पालन न करोगे तो दुख उठाओगे। सुखी वही रहता है जो गुरू का हुकम मानता है। क्योंकि गुरु को हर प्रकार के ज्ञान और कर्म का ज्ञान होता है।'

'हे गुरदेव! क्या मैं यह पूछ सकता हूं कि आप मुझे शहिर में आने से क्यों रोकते हो?' अजामल ने उत्तर दिया। उसका उत्तर सुण कर गुरू चुप कर गया। बस यही कहा - नगरी से बाहर बाहर आया करो, ऐसा ही करम है।'

अजामल ने गुरु की आज्ञा का पालण किया। वह शहिर के बाहर बाहर ही आया करता था। ना ही वह किसी से बात किया करता था कि उस के गुरु ने उस को शहिर में जाने से मना किया है। ऐसे कई साल बीत गए। वह विद्या पड़ता रहा। उसकी आयु बीस साल की हो गई। वह दर्शनी जवान निकला। नेत्रों में डोरे आए। उसकी विद्या पूरी होने वाली थी। उस के पश्चात उस ने गुरु दीक्षा देकर आजाद हो जाणा था।

पर एक दिन उस के आपणे मन से झेड़ा हो गया। उस ने कहा - गुरु आज्ञा का उलंघण कर के नगरी में से जाणा ही ठीक है। आखर यह तो देखा जाए, गुरू रोकता क्यों है?

उस के एक मन की यह भी भाखिआ थी 'अजामल! गुरू की आज्ञा भंग करनी नरक का भागी होणा है। दुखी होगा।

'देखी जाऐगी' अजामल ने दिल तकड़ा किया और वह विद्या गुरु के पास से उठ कर उस रास्ते को छोड़ चला जिस रास्ते आया जाया करता था। वह अणडिठे रास्ते शहिर में से चल पड़ा।

अजामल के गुरू ने उस को इस लिए शहिर में जाने से रोका था कि शहिर में माया का पसारा था। धन के रूप के चमत्कार ऐसे थे कि जिस और जवान आदमी का मन जल्दी आ जाता था। जवान को ज्ञान पूरन नहीं होता। गुरु के आश्रम के आगे वेश्याओं का बाजार था सारी ही वेश्या नगरी थी। उस मुहल्ले में वेश्याएं बैठती थी। वह जवान पुरुषों को आपणे वस में करती थीं। ऐसी हवा से बचाने के लिए गुरु ने अजामल को रोका था। वह चाहता था कि बस यह राज पण्डित बण जाए। जब विवाह हो जायेगा तो फिर इस और को ध्यान नहीं जायेगा। ऐसा ही उस का ख्याल था। क्योंकि गुरु के लिए चेला ही उस का बेटा होता है। उस का ध्यान रखना गुरु का फरज और धर्म होता है। चेले या शिष्य का भी धर्म है कि वह गुरु की सेवा करे। उसकी आज्ञा का पालन करे।

अजामल जब जाने लगा तो गुरू ने याद दिलाया कि 'अजामल! शहिर के अन्दर से मत जाणा।

'बहुत अच्छा गुरदेव' कहि कर अजामल चल पड़ा। पर वह आश्रम मेंसे निकल कर शहिर के अन्दर ही अन्दर के द्वार की और चल

www.9009.co.in

चला। वह जैसे ही द्वार के अन्दर हुआ, वैसे ही उस नगरी की महिमा ओपरी और अनोखी सी लगी। रंगा-रंग की लीला की रौणक थी। सब से बड़ी बात यह थी कि सुन्दर नारीयां हाव-भाव करती हुई इधर उधर घूमती दिखाई दीं। मरदों से बातें करती थीं। उन के रूप बहुत सुन्दर थे। नरगस जैसे नयन थे। वह सोभा अध-नंगे तन गुलाब की पत्तीयों की तरह चमकते थे। वह शोभा वाली थीं।

उन सुन्दर स्त्रीयों की और देखता हुआ अजामल आपणे घर को चला गया। घर जाकर उस का मन पढ़ने और पाठ याद करने में न लगा। उस का मन बेचैन हो गया और जो कुछ देखा था वही साहमने घूमने लगा। रात को सोया, नींद आई, वही सपने आते रहे। सुबह उठ कर स्नान किया। जब गुरु के पास गया तो गुरु ने उस की आंखों में लाली देखी। अजामन! रात सोए नहीं क्या बात है?

'सोया था गुरदेव!'

'आंखें लाल और मन उचाट क्यों है?'

'पता नहीं गुरदेव?'

'नगरी से बाहर बाहर गया था बाहर बाहर आया था।'

अजामल ने पहले तो गुरु की आज्ञा का उलंघन किया और बाद में दूसरी महान भूल यह की थी कि गुरु से झूठ बोला था। उस ने झूठ बोलते हुए कहा गुरुदेव बाहर बाहर गया था। झूठ बोला। उसकी आत्मा कांपी। पर झूठ बोल बैठा था।

उस दिन पढ़ने में मन न लगा। दो दोश हो गए। उनका अजामल के मन पर बहुत भार रहा। दूसरा उसकी आंखों के साहमने नगरी के

www.9009.co.in

नज़ारे थे वह पाठ को पढ़ने नहीं देते थे। जैसे कैसे उस ने समय को व्यतीत किया। जब छुट्टी मिली तो फिर उस नगरी के रासते चल पढ़ा। उस नगरी की वासना भरी महिमा को देखता रहा। देखता देखता वह घर चला गया।

इस प्रकार दस बारां दिन व्यतीत हो गए। वह शहिर आता रहा और जाता रहा। नारी रूप-लीला ने उस के जवान मन को असर कर दिया। जादू जैसा असर और उस का मन डोलने लगा। जब मन डोल जाए तो मनुष्य जल्दी शिकार हो जाता है। एक दिन एक रूप-वती अभी चड़ती जवानी सोलह सत्रह साल की आयू वाली वेश्या ने उस का बाज़ू पकड़ लिया। उस को जाल में फंसा कर पाप करम की और लगा दिया। वह बहुत उस के पास बैठा रहा। भोग-बिलास में लग गया और घर गया। घर पराया सा लगा। उस को नींद ना आई। सुबह विद्या पढ़ने के लिए गुरू आश्रम में समय पर न पहुंच सका।

पहले ही अजामल ने दोष किए थे। एक गुरु की आज्ञा को भंग करना और दूसरा झूठ बोलणा, उस ने दो पाप और कर दिए। एक जूठ पाओ और 'पर नारी का गमन' करना। वासना की और बढ़ गया। वेश्या को जूठा भोजन उस ने खा लिया। इन चारों ही महान दोषों ने उस की बुद्धी भ्रष्ट कर दी। वह गुरु के पास जाता पर पाठ होता। मन न लगता।

उसका सिआणा गुरु सभ कुछ चाहे जान गया था पर आपणे मन की तसल्ली करने के लिए एक दिन आपणे शिष्य अजामल के पीछे पीछे चल पढ़ा। उस ने आपणी आंखों से देख लिया था कि अजामल उसका सिआणा शिष्य एक वेश्या के अन्दर चला गया। वह वापस परत आया और बहुत बेचैन रहा। अगले दिन जब अजामल आया तो

www.9009.co.in

उस ने कहा - 'अजामल' जाओ, तुमने जो कुछ पड़ना था वह पढ़ लिया है। यह कह कर अजामल को भेज दिया। उस के बाप को बुलवा कर कहा - 'अजामल का विवाह कर दो। इसका अब कंवारा रहिणा योग नहीं।

अजामल का बाप राज पण्डित था। राज पण्डित होने के कारण उस के लिए अजामल का विवाह करना कोई मुशकिल काम न था। उस ने जल्दी ही अजामल के लिए योग्य कन्या देख कर उसका विवाह कर दिया।

अजामल का विवाह हो गया। उस के घर सुन्दर गुणवन्ती तेजवान स्त्री आ गई। पर अजामल का मन अब भी चंचल ही रहा। वह घर की स्त्री से न त्रिप्त हुआ। वेश्या के द्वार पर फिर जाने लगा। परन्तु उस का वेश्या के पास जाना छिपा न रह सका। यह सब को पता चल ही गया। उसकी धर्म पत्नी ने बहुत ही यत्न कि वह उस के पास ही रहा करे। सोलह शिंगार भी किए, नाच और गीत से भी प्रसन्न करने का यत्न किया पर अजामल का मन पापी ही रहा। वेश्या की जूठ और शराब ने उसकी बुद्धी को भ्रष्ट कर दिया था। वह सतवंती नारी यत्न कर के हार गई।

अजामल का बाप परलोक को गमन कर गया। उस के पश्चात राजा ने अजामल को राज पण्डित बणा दिया। राज पण्डित बणने पर उसकी जिम्मेदारी और बढ़ गई। वह धरम, समाज और राज का आगू बण गया। दौलत बहुत आ गई। किसी बात की कमी न रही तब भी उस ने न सोचा। वह सोचता भी कैसे? पांच दोष उसके पीछे लग गए थे। गुरु की आज्ञा को भंग करना। झूठ बोलणा। जूठ खाणी और मदिरा पीणी। पांचवां महान दोष - वेश्या का गमन करना था।

उस ने उच्च पदवी मिलने पर भी वेश्या के पास जाणा न छोड़ा। शहिर में आम चरचा होने लगी। जो बात छिपी थी वह प्रगट हो गई प्रगट भी हुई सूर्य की तरह। उस का नया प्यार एक कला वन्ती वेश्या से हो गया। वह पापों की पुतली, माया रूप धारण कर बैठी थी।'

एक दिन अजामल को राजा ने आपणे पास बुलाया और पूछा - अजामल! 'आप राज पण्डित हैं।'

'हां महाराज!' अजामल ने कहा।

'आपके विरुद्ध एक दोष लगा है।'

'क्या दोष है ?'

'आप कला वन्ती वैश्या के पास जाते हैं। मदरा पीतें हैं रंगरलीयाँ मनाते हैं।'

'सत्य है महाराज, इस में झूठ नहीं। मैं कलावन्ती के पास जाता हूं मैं उस से प्यार करता हूं।

क्या यह नहीं मालुम कि कोई भी पण्डित कभी ऐसा कर्म नहीं कर सकता जिस से राज में बदनामी का कारण बणे और जिसका जनता पर बुरा असर पड़े ?

'यह भी पता है महाराज!'

'फिर कला वन्ती के पास क्यों जाते हो ? क्या तुम ने आपणी ही बदनामी आप नहीं सुनी ?'

सुणी है ! पर मैं मजबूर हुं। मैं कला वन्ती को छोड़ नहीं सकता। उस के रूप ने मोह लिया है।

अजामल और आगे बढ़ गया। वह 'निरलज' भी हो गया। क्योंकि जिस के पास निरलजता आ जाए उस के पास कुछ भी नहीं रहता। 'निरलजता' सभ से महान दोश यां पाप है।

www.9009.co.in

राजा सिआणा था। उसकी आयु अजामल के बाप जितनी थी। वह जाण गया कि उस का राज पण्डित पापों का भागी बण गया है। पाप इस को अच्छे लग रहे हैं। उस ने अजामल से कहा - अगर आप की बात सही है तो वह तुम्हें पति मान चुकी है तो उस को अपणे घर ले आओ। घर रहेगी तो लोगों को पता नहीं चलेगा। जितनी देर वह वहां पर रहेगी उतनी देर वेश्या है। करम करना भी स्थान की जाँच करता है। जगह पर ही हर चीज की अपणी शोभा होती है। आप भी राज-पण्डित है। राज पण्डित को शोभा नहीं देता कि वह वैश्या के बाजार में जाए।

मैं उस को घर नहीं ला सकता, न ही मैं उसको छोड़ सकता हूं। अजामल ने आपणा फैसला दे दिया।

'यह पक्का फैसला है?' राजा ने पूछा।

'जी हां ! पक्का फैसला !'

'सोच लो।'

'जी सोच लिया है !'

'देखो अजामल ! आज तो नहीं, अभी से तुम राज-पण्डित नहीं हो। खामीयां यह है। गुरु की आज्ञा को भंग करना, झूठ बोलणा। जूठ खाणी, वेश्या गमन, शराब पीनी और निरलजता से मंद-करमों से रुकने से मना करना। ऐसे दोषों के होते हुए आप राज पण्डित रहने के अधिकारी नहीं। आप को अब शहिर से बाहर रहना पड़ेगा। सारी जायदाद और राज-महिल जो है वह अब आपकी पत्नी और उस के बच्चे को दे दिया जायेगा। आज के बाद इस शहिर में न आना होगा। कला वन्ती को भी इस शहिर से बाहर निकाल दिया जाता है। यह हुकम है, कोई अपील नहीं न कोई वसीला जाओ !'

राजा के हुकम को सुण कर राज दरबारी और अहिलकार सभ

www.9009.co.in

घबरा गए, पर अजामल पर कोई असर ना हुआ। उस समय राजदूतों ने अजामल को धक्के मार कर बाहर निकाल दिया। उस को शहिर से बाहर निकालने का हुकम हो गया।

अजामल की पत्नी ने जब हुकम सुणा तो वह बहुत दुखी हुई। पर राजा का हुकम टालणा भी कठिन था। नगर वासी भी हैरान हुए। पर अजामल को कोई रोक न सका।

अजामल ने कलावन्ती को साथ लेकर शहिर से बाहर झोंपड़ी बना ली। कला वन्ती का सारा सामाण वहां गया। गरीबों और अछूतों मे रहने लगे। रात दिन भोग विलास करके खचत हो गए तो चार बच्चे हो गए। उन बच्चों के लिए अन्न कपड़े की जरुरत थी। राजा का हुकम था कि कोई मदद न करे। सभी उस को 'अजामल पापी' कहने लग पड़े थे और वह चिड़ीयों - पक्षी मार कर खाने लगे। नंगे रहणे लगे। हालात इत्ने माड़े हो गए कि वह पागलों की तरह खीझ कर बात करने लग पड़ा। सरीर रोगी हो गया। ऐसा रोगी कि बचने की उम्मीद कम हो गई। जब शरीर शरीर ऐसा हुआ उससे पहले सात पुत्र हो गए। सातवें पुत्र का नाम नारायण रखा। जैसे भाई गुरदास जी फुरमाते हैं :-

पतित अजामल पाप करि जाइ कलावतनी दे रहिआ ।।
गुर ते बेमुख होइकै पाप कमावै दुरमति दहिआ ।।
बिरथा जनमु गवाइअनु भवजल अंदर फिरदा वहिआ ।।
छिअ पुत जाऐ वेसवा पापां दा फल इछे लहिआ ।।
पुत उपन्ना सतवां नाऊं धरन ने चिति उमहिआ ।।
गुरू दुआरै जाइकै गुरमुखि नाउं नराइण कहिआ।

उस ने सातवें पुत्र का नाम नाराइण रख लिया। दुखी होने

लगा। वह पापों और दुखों का एक पुतला बन गया। वह सुबह जंगल को चला जाता और शाम को शिकार करके वापस आ जाता। कलावंती अब एक भारी ग्रहिस्थतन थी। सात बच्चों की माँ थी, अब रूप ढल गया था। वह दुःखी होने लगी।

स्त्री पुरुष का यह स्वाभ है, जब दुःख कष्ट तन को आए तो भगवान या नेकी याद आती है। कलावंती को अब पछतावा लगा कि उस ने एक उच ब्राह्मण का जीवन नष्ट किया और आपना भी। पापन बनी। अगर राजे से क्षमा मांग लेती तो इतना कष्ट ना पाती। झौंपड़ी के पास से कोई साधू संतों की तरफ देखती रहती।

एक दिन देवनेत के साथ समय बन गया कि दो साधू उस की झौंपड़ी पास ठहिर गए। वह महां पुरुष बहुत सिआने थे। भगवान रूप। मगर कलावंती के पास कुछ नहीं था, जो उनको खाने को देती। वह वैशनो साधू थे। अजामल शाम को घर आया। वह चिड़ीया और बटेरे, कबूतर आदि मार कर लाया तो कलावंती ने उस दिन उसको बनाने ना दिये। उसने कहा, हे पती देव ! पहिले ही पता नहीं किस कुकरम के बदले यह दशा हुई है। हमको आज मास नहीं बनाना चाहिए। साधू वैशनो हैं। हो सकता है कि कोई अच्छा वचन कर जाएं तो हमारे जीवन में कोई सुख का समय आ जाए। सुना है, साधू भगवान के भगत होते हैं।

अजामल - 'हे प्यारी ! बात तो आपकी ठीक है, पर हम क्या खाएं और इनको क्या देवें। महिमान हैं। घर आए अतिथी को भोजन ना देना भी तो घोर पाप है।

कलावंती -- यह बात तो ठीक है। इनको खाने के लिए क्या दें। हां कुछ दाने हैं। भुजे होए और गुड़ है। वह ही दे देवें। आप भी मुठ्ठी मुठ्ठी खा कर सबर संतोख से रात बिता लें। सुबह जो होगा

देखी जाएगी ।

अजामल--गल ठीक है। ऐसा ही करो ।

पति-पत्नी ने भुजे होए दाने और गुड़ साधूओं को खाने के लिए दिया। बेनती की। 'महाराज ! हमारे पास तो यही कुछ है। हम गरीब और पापी हैं। कृपा करो ! दया करो ! हे महाराज ! हमारे लिए भगवान के पास प्रार्थना करो !

भगवान रूप साधू ने वचन किया - 'हे अजामल ! हम ने त्रैकाल दृष्टिी के साथ हम सभ जान गए हैं । आप ब्राह्मण के पुत्र थे, वासना की अगनी ने आप की अकल सभ भसम कर दिती ठीक है, पर जल्दी ही आप की कल्यान होएगी। जो आप ने अपने पुत्र का नाम 'नारायण' रखा है यह भगवान की प्रेरना है। इस के साथ प्यार करा करो। नारायण ! नारायण ! पुकारो । एक दिन जरूर नारायण आप की पुकार सुन लेगा।

साधू वचन करके सुबह चलते बने। अजामल ने आपने पुत्र को उठा लिया और उस से प्यार करता हुआ कहने लगा। 'पुत्र नारायण ! आ बेटा नारायण ! रोटी खाओ नारायण ! दूध पिओ नारायण ! ऐसी बातें करने लगा। उसकी बातें उसके मन को शांति देने लगीं।

कुछ ऐसी प्रभु की लीला हुई। वह जो भी शिकार मार कर लाता वही बिक जाता था। उस को पैसे मिलने लगे और अन्न खाने को मिलने लगा। उसके दिन अब अच्छे बीतने लगे। वह झोंपड़ी में रह कर भी सुख महिसूस करने लगा।

काल महां बली है। काल की मार से कोई नहीं बचता। जो दिखाई देता है सब चलणहार है। सभ के कारज अधूरे ही रह जाते हैं । जब काल आता है । काल का भारी हाथ हर के सिर

ऊपर रखा जाता है। अजामल का भी अन्त काल आ गया। वह बीमार पढ़ गया और बीमारी भी उसको कष्ट देने वाली। कष्ट वाली बीमारी से दुःखी होने लगा। एक दिन ऐसा आया, जब आँखें बन्द करते ही जमदूत भी नजर आने लगे। नरकों की आग जलती हुई दिखाई देने लगी। वह बहुत भिआनक रूप में थी। उसकी दशा बहुत डरावनी थी। नरकों की झांकी देख कर अन्त काल नजदीक नजर आया देख कर उस ने बहूत ऊंची ऊंची पुकारा। 'नारायण आ! नारायण आ !

अजामल पापी ने आवाज नो आपणे पुत्र को दी पर पुत्र शब्द का इस्तेमाल न किया। सच्च ही उसका कल्यान हो गया। जैसे ही उसने 'नारायण' कहा वैसे ही धर्मराज के जमदूत भी पीछे हट गए। अचानक रोशनी हुई। नरसिंघे संख बजे। उधर आत्मा ने शरीर छोड़ा। उधर से फूलों का बबान आ गया। अजामल की रूह स्वर्गों में चली गई। नारायण कहने से पापी तर गया । इस प्रथाइ चौथी पातशाही का बचन है :-

अजामल प्रीति प्रति कीनी करि नाराइण बोलारे॥

मेरे ठाकुर के मनि भाइ भावणी जम कंकर मारि बिदारे॥

★

www.9009.co.in

१८. पिंगला की कथा

अजामलु पिंगुला लुभतु कुन्चरु गए हरि कै पासि ॥

(भगत रविदास)

उपरोकत तुक में भगत रविदास जी ने कथन किया है कि अजामल पिंगला और हाथी जैसे हरी प्रमात्मा के पास चले गए। हरी प्रमात्मा सभ भगतों को आसरा देता है। जो उसका नाम जपता है, उसको याद करता है प्रभू उसी को आपणी चरनीं लगाता है। क्योंकि आत्मा और प्रमात्मा में माया का विछोड़ा है। माया भेद करके ही वह प्रमात्मा से बिछड़ा है। जब माया पलड़ा दूर हो जाता है तो ज्ञान आ जाता है तो खुद ही आत्मा और प्रमात्मा से घुल मिल जाती है। बाहर क्यों रहिते हैं? विछोड़ा क्यों पैदा होता है? इसका उत्तर है कि उनको ज्ञान प्राप्त नहीं होता। ज्ञान क्यों नहीं होता? क्योंकि उसने गुरु धारण नहीं किया होता। गुरु पर भरोसा ना होणे का कारन है।

'इकस सतिगुरू बाहरे सभ आल जंजाला ॥'

सच्चे सतिगुरू के बिनां आल जंजाल माया के चमत्कारों में फसे रहते हैं। बेमुख यां सनमुख रहते हैं ऐसे पुरुषों का कभी कल्यान नहीं होता। वह बे-मुख होते हैं। उनका नेकी की और ध्यान नहीं होता जब नेकी, सच्च, धर्म, करम भगती की और ध्यान नहीं और वह डर नहीं रखते प्रमात्मा का, तब कैसे उनका पार उतारा हो सकता है? कभी नहीं होता चाहे कहीं घूमते रहें।

www.9009.co.in

गंग जमन गोदावरी कुलखेत सिधारे ॥
मथरा माइआ अजुधिआ काशी केदारे
गइआ पिराग सुरसती गोतमी दुआरे ॥
जप तप संजम होम जग सभ देव जुहारे ॥
अखीं परणं जे भवैं तिहु लोइ मझारे ॥
मूल न उतरै हतिआ बेमुख गुरद्वारे ॥

(भाई गुरदास)

जित्नी देर आत्मा पवित्र ना हो, उतनी देर धरम, करम पूजा पाठ और तीरथों पर जाणा लाभवंद नहीं होता। गुरु की शरन जाए।

पिगला की कथा आती है। वह एक वेश्या थी, रात दिन बुराई करती और उसी तरह का जीवन था जिस तरह भाई गुरदास जी फुरमाते हैं :-

नार भतारहुं बाहरी सुख सेज न चड़ीअै ॥
पुत न मंनै मापिआं कमजाती वड़ीअै ॥

पिंगला भर जवानी में थी, पर एक पति के बिनां वह कभी सुख और की सेज और नहीं सोई। उसके ग्राहक आते थे, वह भी अलग अलग स्वभाव के होते थे। कोई शराबी, कोई भंगी पोशती, पर उसे तो सब को जी आया कहना पढ़ता था। ऐसी दशा में धरमी राजा जनक की नगरी में रहती थी। जब वह बाहर को जाती थी तो ग्रहिस्तन उसकी और घूर घूर कर देखती। वह सदा उनसे घृणा करती थीं। उस के पास अत्यन्त धन होने के बावजूद भी भाईचारा, समाज और धार्मिक स्थानों पर उसका सत्कार न होता। उसको एक अछूत, एक कोड़ गिणा जाता। पर मंद-करमीं पुरुष उसको आंखों पर बिठलाते।

एक समय वह बाहर घूमने निकली। राजा की और से बनाए

www.9009.co.in

सरोवर के पास पहुंची तो वहां एक महात्मा नारी की उचिता और पति-ब्रता धर्म पर वखयान दे रहा था, सैंकड़े स्त्री पुरुष बैठे एक मन ध्यान लगा कर सुन रहे थे। उन्हों का ध्यान कथा भाव के साथ जुड़ा हुआ था।

महात्मा उपदेश कर रहा था - नारी का धर्म पति की सेवा करना है, वह भी एक मन हो कर और घर - गृहिस्थी को चलाना। क्योंकि घर गृहिस्थी और नारी जगत उत्पति का मूल है। नारी की सिरजना इसी लिये की गई है। मगर जेकर नारी एक पति की सेवा नहीं करती, एक के भरोसे पर नहीं रहती और पर-पुरुषों के पिछे भटकती फिरती है, तो वह नारी एक भूतनी बन जाती है, जो हर एक पुरुष के साथ लिपट कर उनका भी धर्म भ्रष्ट करती है। नारी को पतिब्रता रहना चाहिए।

ऐसा उपदेश जब हो रहा था तो पिंगला ने भी सुन लिया, ओह कभी मन्दिर, कथा कीरतन स्थान के पास कभी खड़ी नहीं होती थी, पर उस समय उसके मन में आ गई वह खड़ी हो गई और महात्मा की बातें वदान की तरह हृदय पर लगीं। वह खड़ी रही आगे उस के पांव ना चले। उस को ऐसे मलूम हूआ कि सच्ची बातों का उपदेश उसको दिया जा रहा था, वोह ही उपदेश सुन रही थी।

महात्मा जब उपदेश करके रुके तो वह आगे बड़ कर महात्मा के चरनों पर नमश्कार करके उसने निम्रता भाव के लहजे में बेनती की - 'महाराज! मैं एक वेसवा हां हर रात को तन बेचती और मूल्य लेती हूं, नाचती और गाती हूं, मदरा पान भी करती हूं। जो भी पुरुष आता है, उस के पास झूठ बोल कर कहती हूं, 'मैं तो तेरी हूं ! आप को ही प्यार करती हूं। और किसी को प्यार नहीं करती।' होता झूठ है, झूठ के साथ जूठ बी

www.9009.co.in

खाणी पढ़ती बताओ ऐसे कुकरम करने वालों का भी कभी पार उतारा हो सकता है ?

महात्मा ने पिंगला की बात को ध्यान से सुना। उसकी और देखा उसके चेहरे और उसकी आंखों और हृदय की बात जानने का विचार किया। उस समय उसको उत्तर दिया। 'हां देवी! तेरा भी पार उतारा हो सकता है। बस मन बदलने की जरूरत है। बुरे कामों से निकल कर ईश्नान करके अच्छे कपड़े पाने की जरूरत है। ऐसा कर लो तो भगवान मिहर करेगा। धन पदार्थ तो प्रमात्मा के हैं। यह खेड है जो होती रहती है। हर एक जीव आत्मा अमलों के कारण ही तो पवित्र है। वह जैसे वातावरण में से निकलती है वैसा रंग ले लेती है, और कोई बात नहीं।'

पिंगला कीचड़ में से निकलां गल गल फसी हूं।'

महात्मा - यत्न करने की जरूरत है। मन पर काबू पा सको तो।

पिंगला – जैसा आप बताएंगे वैसा ही करूंगी। आप को गुरु धारन करती हुं। 'हुकम करो।'

यह कह कर पिंगला ने महात्मा के चरन पकड़ लिए।

महात्मा ने उसकी पसीजी आत्मा की और देखा, देवी! एक बचन मानो तो तुम्हारा उधार हो सकता है।

पिंगला - 'आज्ञा करो महाराज!'

महात्मा - 'बचन का पालन करोगी?'

पिंगला - महाराज! जीवन तक आप की आज्ञा का पालन करूंगी, मेरा मन कह रहा है।

महात्मा - देख, तेरे जीवन का वातावरण ऐसा है, ग्रहिस्थ धरम करो। एक पति की पूजा करो। पति प्यार और श्रद्धा से तेरा पार उतारा हो जायेगा।

पिंगला - पति मेरा कोई नहीं, विवाह मेरे साथ कौन करेगा ? मैं कैसे तपस्या करुंगी ?

महात्मा - जो पुरुष आप के पास पहले आए, उस को पति मान ले और उनकी सेवा करते रहना और किसी के पास तन भेंट ना करना। उसी से आप की मुक्ति हो जाएगी।

पिंगला - आप ने मुझे ज्ञान दिया है, मेरे गुरु बने हैं, क्या मैं आपनी सारी दौलत आप को अरपन कर सकती हूं । सारी दौलत किस काम !

महात्मा - जो कुझ तेरे पास है, वह आप के पास रहे। धन पूंजी रख। जाओ आप की कल्यान होगा।

इस तरह उपदेश ले कर पिंगला आपने घर को आ गई। उस को ऐसे लगा जैसे उस का शरीर हल्का हल्का और दिल दिमाग हल्का। घर आई तो हर एक वस्तु उसको ओपरी और नई नई लगी उस शाम को उसने स्नान किया। नए वस्त्र पाए और त्यारी के साथ बैठ गई। महात्मा की बात पर अमल करना था, जो पुरुष पहले आए, जिस के साथ मेल हो, उसको आपना पति मान ले । उस के बगैर किसी और के नजदीक ना जाए ।

एक पुरुष आया वह जवान था और घर से भी सरदा पुजदा था उसके आने पर उसने घर के दरवाजे बंद कर लिये और उसको कहा-- 'देखो प्यारे ! मैं ने फैसला किया है, एक पुरुष के बगैर किसी और के नजदीक नहीं जाउंगी, तुम मेरा साथ दोगे तो मैं आपकी हो रहूंगी और आप मेरे, ऐसा ही करना होगा।'

'....ऐसा हो जाए तो और क्या चाहिए, मैं तो आप का प्रेमी हूं। जान देने को त्यार हूं।' पुरुष ने उत्तर दिया।

यह बात सुन कर पिंगला खुश हो गई और उस ने आपना तन और

मन उस मरद के हवाले कर दिया। उसके बाद किसी मरद के पास न गई, नाच गाणा सभ कुझ एक पुरुष के लिए हो गया। इस प्रकार कई साल बीत गए। लोग पिंगला की बैठक को भूल गए और वह एक ग्रहिस्तन बन गई, उस की रूची बदल गई। उसने मदरा पीनी छोड़ दी। वह धरम करम की और बढ़ी। प्यारा पति आता तो उस की सेवा करती और उसका दिया खाती। और किसी के हाथ का खाना जहिर समझती। कहते हैं इस तरह बारह साल बीत गए। वह एक पुरुष की दासी रही। उसकी भगती देख कर लोग हैरान हो गए उस के प्यारे ने विवाह न किया और वह मर गया। फिर जो पुरुष पहले आता उसी को पति मानती।....पर उसकी असल मनशा पूरी न हुई।

एक दिन विष्णु ने उसका इमत्हान लेने पर उसका कल्याण के लिए रास्ता ढूंढा। उसका धर्म देखने और महात्मा के बचनों पर कितना चली है, देखने आया भगवान विष्णु।

शाम हुई तो भगवान विष्णु बूडे ब्राह्मण का रूप धारण करके पिंगला की बैठक पर आ गया। पिंगला ने जी आया कहा। चरनों को धोया। सुख सांद पूछी, आदर से बिठाया। पहले उनके चरन दबाए। जब उसके मन की इच्छा पूर्ण करने का विचार आया तो वह बीमार हो गया। समझो उसको हैजा हो गया। टट्टीयां आने लगीं और दसतों का रूप धारण करके और ऊपर छलां भी। पिंगला सेवा करती रही। रात भर जरा भी आराम न किया। पर माथे पर वल न आया। एक पतिव्रता स्त्री की तरह खिड़े माथे सेवा करती रही। दिन चढ़ते ही वह ब्राह्मण मर गया। उसके मरने पर रोने लगी। बालार वाले बहुत हैरान हुए। किसी ने कुछ कहा। पर उस ने कोई बात न सुनी।

www.9009.co.in

उस ने अपने पास से ब्राह्मण की चिखा का प्रबन्ध किया। हाथ में सधौरा ले कर साथ ही सती होने के लिए त्यार हो गई। जब लोगों ने रोका तो भी ना रुकी। तब विष्णु ने अपना हठ छोड़ दिया। वह उस चिखा से उठ खड़ा हुआ। भाव यह कि ब्राह्मण जीवित हो गया लोग हैरान हुए। पिंगला खुश हो गई। उस समय वह ब्राह्मण विष्णु का रूप हो गया। संखों की धुन अपने आप प्रगट हुई। सभी लोग हाथ जोड़ कर खड़े हो गऐ। विष्णु ने पिंगला को कहा - 'धन्य है देवी! मांग लो जो मांगना है। तेरी भगती प्रवान हुई।

पिंगला विष्णु के चरनों में गिर पड़ी। उस ने हाथ जोड़ कर बेनती की कि महाराज! कोई इच्छा नहीं। बस पापन का कल्याण हो!'

यह सुन कर विष्णु जी बहुत खुश हुए और उन्होंने कहा - 'तथास्तु' तेरी इच्छा पूर्ण होगी। रहिती जिंदगी उस ने भगती में गुजारी और अन्त काल वह स्वर्गपुरी में गई।

इस कथा का संखेप भाव है कि जो भी मंद करमी जब किसी नेक पुरुष गुरु पीर के कहने लग कर आपणा जीवन बदल लेता है, उनका कल्याण होता है। जग में जस होता है।

★

www.9009.co.in

१६. माता यशोदा जी की कथा

प्रभू की माया का भेद किसी ने भी नहीं पाया। ऐसी बातें कई होती हैं जो मनुष्य का मन समझ नहीं सकता। जन्म जन्म के मेल हो जाते हैं। पूरबले जन्म का रहता लेख इस जन्म में निपटाया जाता है। पूरबले जन्म का करम अच्छा हो या माड़ा उसका फल वैसा प्राप्त होता है।

पवित्र दरिआ जमना के पार वसदी गोकल नगरी में नन्द रहता था। उस की पत्नी यशोदा थी। वह एक मामूली गवाले की पत्नी थी। गऊएं चार कर गुजारा करते थे। गऊओं के होने के कारन दूध घी खुला होता था। इस यशोदा माता को प्रभू ने ऐसा समा बखशा कि इस ने श्री कृष्ण जी को गोद खिडाया। पाला मखन के पेड़े दिए और अनेक प्रकार की बाल लीला की खेड देखती रही थी। उसका जीवन सफल हुआ था।

कथा इस प्रकार हुई कि यशोदा का पहिला पूरबला नाम सतरूपा था। उस जीवन में इस ने जंगल में बैठ कर घोर तपस्या की और विष्णु भगवान के दर्शनों की इच्छा धारण की थी। उस की तपस्या जब पूर्ण हुई तो भगवान ने दर्शन दिए तो 'सत रूपा' ने बेनती की कि हे प्रभू ! एक जन्म और मैं आपके दर्शन करना चाहती हूं। उस समय भगवान ने कहा था, अगले जन्म में कृष्ण रूप धारण करके आप की श्रद्धा पूरी करेंगे।

जब श्री कृष्ण जी का मथरा में जन्म हुआ तो उन के पिता वासदेव जी ने टोकरे में रख कर जमना पार कर के रातों

www.9009.co.in

रात गोकल में पहुंचा दिया था, क्योंकि उस का मामा कन्स उस को मार देने पर तुला हुआ था, उस ने पहले भी बच्चों को मरवा दिया था। क्योंकि उस को शक हो गया था कि जब मरूंगा तो भानजे से मरूंगा। वह पापी अपनी बहिन की जो भी संतान पैदा होती उसको मार देता। भगवान ने पापी कंस को मारने के लिए जगत के कल्यान के बदले आप अवतार लिया, नाम रखा श्री कृष्ण !" वासदेव जद भगवान कृष्ण जी को उठा कर जमनां से गुजरे तो जमना ने रास्ता दे दिया। भगवान यशोदा की गोद में चला गया। यशोदा ने मां बन खिडाया, पाला और जवान किया। इतना जवान कि अन्त कृष्ण जी ने यमना पार जाकर आपने मामा कंस को बालों से पकड़ कर मार दिया। वह नर्कों को गया और भगवान को पालने वाली माता यशोदा भगवान के चरनों में सदा के लिए अलोप हो गई।

माता यशोदा जगत के लिए यह उपदेश और सन्देशा छोड़ गई कि अगर कभी किसी का बच्चा पालणा पड़े तो वह अपने बच्चे की तरह लाड प्यार से पाले कभी ओपरा न समझे। पूरा प्यार दे। तो जरूर ही उसका कल्यान होगा। और मां का जन्म सफल होगा।

★

२० कुबिजां मालण की कथा

प्रेमा-भगती के जगत में 'कुबिजां' का नाम बड़ा सतकारा जाता है। कुबिजां मालण के प्यार के गीत बना कर कवी जन गाते हैं। गुरबाणी में भी यह आता है, कुबजां ओधरी अंगुसट धार' (बसन्त राग) आओ श्रद्धालू और भगत जनो ! आज

www.9009.co.in

आप को कुबजां की कथा सुनाता हूं। श्रद्धा और प्यार से स्त्री पुरुष इस की कथा सरवण करेगा। उस के हृदय और आत्मा में प्यार आयेगा।

कुबिजां एक दासी थी। वह राजा कंस के राज महल में और उस के बाग मे मालण का काम करती थी। सभी उस को 'कुबिजां मान कहि कर बुलाते थे। उसकी आयू वडेरी नहीं थी। और वह छोटी उमर से ही बहुत सुन्दर थी। पर भगवान की ऐसी लीला कि नक में कुब था। वह कुबी होकर चलती थी तभी उसका नाम कुबिजां था। उसकी अक्ल और सुन्दरता की हर कोई प्रशंसा करता था। जब कुब को देखता था तो भगवान को कोसता कि ऐसी सुन्दरता दे कर कज क्यों रखा। भगवान की लीला को कोई नहीं जानता। वह खेल था जो समय के साथ होना था।

जवान हो कर जब कृष्ण जी मथरा गए तो एक दिन भगवान श्री कृष्ण जी और कुबिजां का मेल हो गया। वह फूल और घिसा हुआ चन्दन ले कर राजा कन्स की और जा रही थी उसने जैसे ही कृष्ण जी के दर्शन किए तो मानो उस के पैरों में जंजीर पढ़ गई। उसके मोटे नरगस नैण कीले और चुंधिआए गए। उसके हृदय में एक मीठा जाबा आया। वह देखती रही। उसने एक फूल माला श्री कृष्ण जी के गले में डाल दी। और साथ ही चन्दन का टीका भी लगा दिया। टिका लगाते समय यह याद न रहा कि टिका राजा कंस को लगाना था। अगर राजा कंस को पता चला तो मरवा देगा। बड़ा जालम राजा था। उसने भगवान को चन्दन और तिलक लगा ही दिया।

भगवान श्री कृष्ण जी ने जब उसका प्यार देखा तो श्री कृष्ण जी आप दया के घर में आ गए। उन्होंने कुबिजां मालण की और निगाह

www.9009.co.in

भर कर देखा। उस कुब को देख कर उस के कुब को दूर करने का विचार आया। आप विष्णु अवतार महां-काल शक्तियों के मालक थे। मालण के एक पैर ते अंगूठा चरन का रख कर मोढे से पकड़ कर ऐसा खींचा कि वह एक दम सीधी हो गई। उस का कुब दूर हो गया। वह तो मानो गुम सी हो गई। श्री कृष्ण जी का जस करती हुई गाने लग पड़ी। और श्री कृष्ण जी के चरनों पर गिर कर उनके चरनों को चूमने लगी। उस ने प्यार रूप हो कर हाथ जोड़ कर श्री कृष्ण जी से बेनती करने लगी। 'हे प्रभू दासी को आपणे चरनों में रखो। आप तो भगवान हैं। मैं कहती हूं आप भगवान हैं।

हे मालण! धीरज रखो! समय आयेगा तो तेरा प्रेम प्रवान होगा। अभी जाओ! कंस को तिलक लगाने चली थी, सामग्री ले जाओ। यह कह कर भगवान आगे चले गए। मालण कंस दरबार में पहुंची। पर उस का मन तो भगवान के चरनों में ही था। उसको सीधी खड़ी लगर की तरह सुन्दर जवान देख कर हर एक ने पूछना चाहा पर उस ने भगवान का पता न बताया।

जब कंस की मृत्यु हो गई तो भगवान श्री कृष्ण जी आप मथरा, गोकल और बिंदरा बन के राजा बन गए तो उन्होंने कुबिजां को तारा दर्शन दिए। यह है मालण और भगवान श्री कृष्ण जी की कथा जो श्रद्धा से सुनेगा वह तर जायेगा। भगवान कल्याण और प्यार बख्शे।

www.9009.co.in

२१. बिदर भगत की कथा

आइआ सुणिआ बिदर दे बोले दुरयोधन होइ रुखा ।।
घरि असाडे छडि कै गोले दे घरि जाइ कि सुखा ।।
भीष्म द्रोणाकरण तजि सभा सींगार भले मानुखा ।।
झुग्गी जाइ वलाइओनु सभनां दे जीअ अंदर धुखा ।।
हस्स बोले भगवान जी सुणहो राजा हो सनमुखा ।।
तेरें भाउ न दिसई मेरे नाही अपदा दुखा ।।
भाउ जिवेवा बिदर दे होरी दे चित चाउ न चुखा ।।
गोबिन्द भाउ भगति दा भुखा ।। (भाई गुरदास)

जुगों से यह बात चली आ रही है कि हंकार और लालच की सदा दया धर्म और प्यार से टक्कर रही है। हंकारी और लालची पुरुष की सेवा उसकी अयोग आज्ञा का पालण वह करता है, जिस को जरुरत हो, 'गौं भुनावे जौं। पर जिस को कोई दुख नहीं, लालच नहीं, वह कभी भी हंकारी पुरुष की परवाह नहीं करता। ऐसे ही कथा बिदर भगत और श्री कृष्ण जी की है। श्री भगवान कृष्ण जी प्यार और श्रद्धा के भूखे थे। उनको राज बल, शान शौकत आदि की जरुरत नहीं थी। उनके पास सभ कुछ था। वह जिस धरती मथरा बिंदरा बन के राजा थे, वहां दिलों के भी राजा थे। भाई गुरदास जी ने कथा ब्यान की है !

एक दिन भगवान श्री कृष्ण जी दुर्योधन की राजधानी में गए। उस के शीश महिलों में रहिण की जगह यां उसके दरबारीयों और सैनापतियों के शाही ठाठ वाले महिलों में रहने की जगह वह एक दासी-पुत्र बिदर की झोंपड़ी में रात जा ठहरे। उस गरीब के पास एक सफ ही बैठने के लिए था और खाने के लिए उसने आलूणा

साग रखा हुआ था। वह भी तोड़ी में रिझ रहा था। भगवान श्री कृष्ण जी पहुंचे। उस गरीब की झोंपड़ी में रोशनी हो गई। उसके भाग जाग गए। उस ने चरन धो कर चरनामत लिया और रात सारी सेवा करता रहा। बचन सुनता रहा। जिसकी भगती करता था दर्शनों के लिए तड़पता था। वह प्रतख भगवान रूप बना कर उस को निहाल करते रहे। बिदर का साग उन्होंने बड़े चाव से खाया। ऐसे खाया जैसे छतीस प्रकार के भोजन खाते हैं। बिदर को भी नया ही स्वाद आया। उसका मन शांत हो गया। वह एक तरह से मुक्त हो गया। जन्म मरण कटिया गया। वह एक दासी पुत्र था। हंकारी दुर्योधन और दुसरे उन के भाई और दरबारी बिदर को अच्छा नहीं समझते थे। उनको राज हंकार था।

भगत बिदर के जन्म की कथा इस प्रकार है। बिदर जन्म करके दुर्योधन का चाचा लगता था। ध्रितराष्ट्, पांडव बिदर तीनों भाई बिआस के पुत्र थे। उन के जन्म की कथा इस प्रकार महां भारत में आती है।

राणी सतिआवंती के तीन पुत्र थे। बिआस, चित्रागाद और बचित्र बीर। पिछले दोनों पुत्र शादी शुदा थे सुन्दर स्त्रीयों के मालक थे। पर देवनेत से दोनों ही मर गए। उनकी दोनों राणीयां अम्बा और अम्बिका दोनों की विदवा हो गई। वह रुपवतीयां और जवान थीं। पर संतान हीण। राज तख्त के लिए संतान चाहिए थी।

एक दिन राणी सतिआवंती ने अपनी दोनों बहुओं को बिठा कर समझाया कि वह उसके बड़े पुत्र बिआस से सन्तान प्राप्त कर लें बिआस क्योंकि बड़ा और शक्ल सूरत से माड़ा था। इसी लिए दोनों ही उससे सन्तान प्राप्त नहीं करना चाहती थी पर राणी सत्यावन्ती के ज्यादा मजबूर करने पर उन्होंने एक एक पुत्र प्राप्त

www.9009.co.in

किया। अम्बा का पुत्र धृतराष्ट्र था जो जन्म से ही अन्धा था। और अम्बिका से पांडों का जन्म हुआ।

राणी अम्बिका बिआस की सूरत से नफरत करती थी। जब उसे और पुत्र प्राप्त करने के लिए उसकी सास सत्यावंती ने मजबूर किया तो आप बिआस के पास जाने की जगह उस ने बड़ी चालाकी से एक दासी को भेज दिया। उस दासी के पेट से जिस बच्चे ने जन्म लिया। उसका नाम बिदर रखा गया। दासी पुत्र होने के कारण बिदर का सत्कार कम था।

पांडो बड़ा राज पुत्र होने के कारण राजा बणा। पर तीरथों की यात्रा करने गया पांडव मर गया। उसकी मौत के बाद जो राज बिदर को मिलना चाहिए था वह उसे न मिला। क्योंकि बिदर एक दासी का पुत्र था। राज तख्त का अधिकारी धृतराष्ट्र बणा। इस प्रकार बिदर शहिर से बाहर आपणी पत्नी के साथ एक कखों की कुली में रहता था। राज्य की और से उस को इतनी घृणा हो गई कि वह राज खजाने से एक पैसा भी नहीं लेता था। आपणी किरत कर के ही गुजारा करता और धरती पर ही सोता। उस का मन प्रभू भगती में लगा, जिस के कारन भगवान श्री कृष्ण जी उस की झोंपड़ी में रात रहे।

भाई गुरदास जी फुरमाते हैं कि दुर्योधन को जब इस बात का पता चला कि यादव कुल मथरा का राजा श्री कृष्ण उन के महलों में रात रहने के बजाए उन के चाचा दासी पुत्र बिदर के घर में रहे हैं और अच्छे पदार्थो को खाने की जगह साग खाया है तो जब श्री कृष्ण जी बिदर के पास गए तो उसने कहा 'हे कृष्ण! हमारे घर राज भवन में रहने की जगह एक दासी पुत्र की झोंपड़ी में तुम क्यों जा कर रहे। अगर मेरे पास नहीं रहणा था तो मेरी सभा के शिंगार

www.9009.co.in

उत्तम पुरुष भीष्म, द्रोणाचार्य, करन आदि थे। उनके राज भवनों में जा कर रहना था। हमें यह बहुत बुरा लगा है कि आप उस एक दासी पुत्र के घर उसकी झोंपड़े में जाकर क्यों रात काटी। हमारे साथ क्या वैर विरोध हुआ है ?

दुर्योधन की यह बात सुन कर श्री भगवान कृष्ण जी हंस पड़े और उसकी ओर देखते हुए कहने लगे, 'हे दुर्योधन ! बिदर की झोंपड़ी तो पवित्र है। बिदर राजाओं का राजा है, क्योंकि उसकी आत्मा प्रेम भगती में डूबी है। भगवान प्रेम देखता है, पर दूसरी ओर आप के घरों में प्रेम भगती नहीं हंकार और हउमं राज भूख है, इस लिए मुझे बिदर का प्यार खींच कर ले गया। यह भी बात है कि मुझे ना कोई बिपता पड़ी है ना कोई दुख है जो मैं आपका आसरा लूंगा। एक बे-गरज आदमी को क्या जरूरत है कि राजाओं के महिलों में जा कर उन की खुशामद करें ? जो बिदर के घर चाव श्रद्धा और प्यार भावना है वह आप के पास नहीं और मेरी आत्मा प्यार की चाहवान है, क्योंकि पारब्रह्म परमेश्वर और जीव के बीच बस एक प्यार का सम्बन्ध है।

कबीर जी की जबानी श्री कृष्ण जी ने कहा, 'हे राजन ! बताओ कौन आप के घर में आएगा, क्योंकि आप के घर प्यार नहीं। जैसा बिदर के घर प्यार है वह मुझे अच्छा लगता है। आप तो आपणी उच्च पदवी को देख कर भरम का शिकार हुए हैं और प्रमातमा की महां-काल शक्ति को भुला बैठे हैं, क्योंकि आप को भगवान का ज्ञान नहीं। बस राज अभिमान है। इसी लिए बिदर आप से बहुत बड़ा है। आप के राज-भवन का दूध और बिदर के घर के पाणी को एक सामान समझता हूं। जो मैंने उसके घर साग खाया है खीर से अच्छा है और प्रभू के गुण गाते सारी रात बीती। बड़ा आनंद आया। अगर

www.9009.co.in

आप के पास होते तो राजा की निंदा, ईरखा आदि सुणनी थी। अब तो ठाकुर के गुण गाते हुए रात काट आए और ठाकुर के लिए छोटे बड़े जीवन सभ एक हैं। ऐसा उत्तर भगवान कृष्ण जी ने दिया। इस प्रथाइ मारू राग में कबीर जी फुरमाते हैं :-

राजन कउनु तुमारै आवै ।। ऐसो भाउ बिदर को देखिओ
ओहु गरीबु मोहि भावै ।।१।।रहाउ।। हसती देखि भरम ते
भूला स्री भगवानु न जानिआ ।। तुमरो दूध बिदर को पानो
अंम्रितु करि मैमानिआ ।।१।। खीर समानिसागुमं पाइआ
गुन गावतु रैनि बिहानी ।। कबीर को ठाकुरु अनद
बिनोदी जाति न काहू की मानी ।। (मारू कबीर जी)

इस कथा का भाव अरथ यह है कि प्रभू से प्यार करने वाले भगत जनो से प्रभू भी प्यार करता है और राज अभिमान की जगह प्रेम-भगती का दरजा ऊंचा है।

२२. द्रोपदी की कथा

द्रोपदी राजा दरुपद की पुत्री थी। इस को पाचों पांडवों ने स्वयम्बर में अर्जुन ने जीता था। इस का पहला नाम कृष्णा था। स्वयम्बर की कथा इस प्रकार है कि राजा दरुपद की प्रथम इच्छा थी कि वह आपणी पुत्री द्रोपदी का विवाह पांडव पुत्र अर्जुन से ही करे। क्योंकि पाण्डव की मौत के बाद राज ध्रतराष्ट्र को मिल गया था। और पाण्डव पुत्रों को राज से बाहर ब्राह्मणों के रूप में लुक छिप कर रहणा पड़ता था। ध्रतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन उन को मारने पर तुले हुए थे और राज्य नहीं देते थे। वह जंगलों में बस्तीयों में ब्राह्मणों के रूप में रहते थे।

राजा दरुपद ने आपणी राजधानी में द्रोपदी का स्वयम्बर

www.9009.co.in

रचा। उस स्वयम्बर में बड़े बड़े राजा देवता और ऋषी मुनी आए कि स्वयम्बर की खेड को जीत कर द्रोपदी को जीतेंगे। शरत यह थी कि ऊपर टंगी मछली की आंख में तीर मारना था। और निशाना धरती पर रखे तेल के कड़ाहे की और देख कर मछली के प्रतिबिम्ब से लेना था। मतलब यह कि ऊपर नहीं देखना था। यह शरत बहुत करड़ी थी। बड़े बड़े बहादर राजा शरत पूरी न कर सके। पांडवों का भाई दुर्योधन और उसके पुत्र भी गए हुए थे। उन में से किसी को भी सफलता न मिली।

उस स्वयम्बर में पांचों भाई पांडव साधुओं के भेस मे स्वयम्बर में बैठे थे। जब किसी ने बाजी न जीती तो आपणे बड़े भाई युधिष्टर का इशारा देख कर अर्जुन सभा में उस तीर कमान को लेकर उठे। सभा में बैठे हुए बड़े सूरबीर राजे और देवते उस पर हंसने लगे कि एक सन्यासी भला कैसे उस मछली की आंख में तीर मारेगा। जबकि और किसी को सफलता नहीं मिली। परन्तु अर्जुन ने कोई परवाह न की। कईयों ने कहा कि ब्राह्मण पुत्र जो खीर का थाल खा जाते हैं आज धनुष लेकर आ गए हैं। अर्जुन ने तेल के कड़ाहे की और देखा और ऐसा निशाना लिया कि तीर मछली की आंख में ही लगा और वह मछली चकर काटती हुई धरती पर आ गिरी। सारी सभा में हैरानी फैल गई। और राजा द्रुपद की और से जै जै कार हुई कि उसकी पुत्री के लिए योग्य वर मिल गया। जो इतना बली है कि तेल राहीं मछली की आँख में निशाना लगा सकता है। वह जरुरत पढ़ने पर दुष्टों से लड़ भी सकता है।

कृष्णा और द्रोपदी को भरी सभा में से जीत कर अर्जुन और उस के भाई आपणे साथ जंगल के घर में आ गए। क्योंकि वह तब ब्राह्मणों के भेस में गुप्त वास में रहते थे। और तब अरजन ने

www.9009.co.in

घर के दरवाजे आ कर आपणी मां कुन्ती को आवाज दी, मां दरवाजा खोलो और आकर देखो, हम तुम्हारे लिए कौन सी अनोखी चीज लाए हैं। माता कुन्ती का स्वभाव था कि चीज उसके पुत्र लाते थे वह उन को बांट कर खाने या वरतने के लिए आज्ञा दिया करती थी। पांडव आपणी माता की आज्ञा का पालन किया करते थे। कुन्ती ने आपणे नित के स्वभाव अनुसार कहि दिया बेटा जो कुझ लाए हो बांट के रख लो। उसे पता नहीं था कि उस के पुत्र ऐसी चीज लाए हैं जो बांटी नहीं जा सकती। कुन्ती ने जब दरवाजा खोल कर देखा कि एक रूपवती राज कन्या उस के पुत्रों के साथ खड़ी है तो वह बहुत हैरान हुई। पर क्योंकि बचन उस के मूंह से निकल चुका था। वह इस लिए कृष्णा का नाम बदल कर द्रोपदी रख दिया गया और वह पांच पांडवों की दासी बण कर रहने लगी।

धीरे धीरे राजा दरुपद को यह बात का पता चल गया कि उस की लड़की को स्वयम्बर में जीतने वाला ब्राह्मण पुत्र नहीं वह तो पांडव पुत्र अर्जुन है जो राज भाग छिन जाने के कारण ब्राह्मणों के भेस में दिन काटते हैं। उस ने अर्जुनकुन्ती और उस के भाईयों को अपने राज में बुलाकर द्रोपदी का विवाह किया। और दूसरे राजाओं के साथ मिल कर ध्रतराष्ट्र से कह कर आधा राज्य दिलाया। वह आपणी राजधानी हस्तिनापुर को राज बना कर राज करने लगे।

पांचों भाई बड़े महांबली थे, जिस कारन इन के राज की शोभा बहुत दूर तक होने लगी। और चक्रवरती बणने के लिए इन्होंने यज्ञ किया। राजसू यज्ञ के बाद उनकी वडिआई और भी बड़ गई और इन्होंने हस्तिनापुर में ऐस महिल बनवाया जो कि बहुत अनोखा था दुर्योधन उस महिल को देखने के लिए गया तो कहते हैं कि उस महिल में कई ऐसी वस्तुएं बणी थी जो कि देखने पाणी जैसा ही दिखलाई

www.9009.co.in

है। अस्ल में फर्श होता है और जहां फर्श होता है वहां पर पाणी प्रतीत होता है। देखते-२ दुर्योधन ऐसे स्थान में पहुंचा जहां असल पाणी था पर देखने को फरश लगता था। वह चलते हुए आपणे भाईयों सहित उस पाणी में गिर गया। द्रोपदी ने उन्हें देख कर हंसी उड़ाई और कहा कि अन्धे की औलाद आखिर अन्धी है।

यह बात दुर्योधन को बहुत बुरी लगी और उसने आपणे मन में यह निश्चय कर लिया कि वह द्रोपदी को जरुर एक दिन नीचा दिखाएगा वह आपणी राजधानी में लौट आया। उस ने पाण्डवों में बड़े भाई को आपणे महिल में जुआ खेलने का न्योता दिया। युद्धिष्टर बहुत धर्मी पुरुष था। इस लिए वह जुआ खेलना तो मान गया पर वह उस के अन्दर के बल छल को नहीं जानता था। दुर्योधन ने जुए में राज महल हाथी, घोड़े पांचों भाईयों का शरीर और द्रोपदी को जीत लिया। जिस समय द्रोपदी को जीता उस समय दुसासन को हुकम दिया कि उसे बालों से पकड़ कर द्रौपदी को खींच कर राज सभा में लाया जाए और नग्न किया जाए। क्योंकि दुर्योधन ने बदला लेना था। इस लिए उसने आपणे किसी गुरु पीर बजुर्ग और अन्धे बाप ध्रतराष्ट्र की की भी बात न मानी और दुस्सासन को हुकम दे दिया।

क्योंकि वह पांचों पांडव अपणा शरीर जुए में हार चुके थे। वह दास बन गए थे। इस लिए देश की मर्यादा अनुसार उनको बोलने का कोई अधिकार नहीं था। उनके होते ही द्रोपदी को सभा में लाया गया जिस के बारे भाई गुरदास जी लिखते हैं - अंदरि सभा दुसासनै मथे वाल द्रोपदी आंदी ॥

दूतां नो फुरमाया नंगी करो पंचाली बांदी ॥
पंजे पांडव देखके अउघट रुद्धी नार जिनां दी ॥
अखीं मीट धिआन धरि हा हा कृष्ण करे बिललांदी ॥

www.9009.co.in

कपड़ कोट उसारिअनु थके दूत न पार वसांदी ॥
हथ मरोड़नि सिर धुणनि पछोतान करन जाह जांदी ॥
घर आई ठाकुर मिले पैज रही बोले शरमांदी ॥
नाठ अनाथा बाण धुरां दी ॥ (भाई गुरदास जी)

भाई गुरदास जी के कहने के अनुसार दुशासन वालों से पकड़ कर द्रोपदी को सभा में ले आया। उस ने आपणे सेवकों को हुकम दिया कि नंगा करो और जो पांचों पांडवों की प्यारी थी उस के साथ यही होने लगा तो पांडव भी देखते रहे। उन की स्त्री दुख में फसी थी पर वह कुछ भी न कर सके। आपणे आप को हार कर दास बण चुके थे।

भाई गुरदास जी के कहे अनुसार द्रोपदी ने आंखें बन्द करके भगवान कृष्ण का ध्यान किया। बेनती की कि उसकी लाज इस सभा में रखी जाए। उस की भगती उसकी आत्मा की पुकार सुण कर दूर बैठे भगवान कृष्ण ने ऐसा माया का जाल बुणा कि जैसे जैसे दुशासन द्रोपदी की साड़ी खींचता रहा वैसे वैसे ही उस की साड़ी और बढ़ती गई। यहां तक कि वहां ढेर लग गए पर चीर खतम न हुआ। इस अलौकि करामात ने सभ का सिर नीचा कर दिया। और दुर्योधन और उसकी सभा के और लोग हैरान होकर डर गए। मन में शरमिंदा होने लगे कि यह भगवान की लीला अनोखी है। हो सकता है कि दुर्योधन और उस के भाईयों को किसी नई बिपता में डाले। भाई जी कहते हैं कि आखर दुर्योधन द्रोपदी को नंगी करने का ख्याल छोड़ दिया और उसको घर भेज दिया। जब वह घर आई तो आगे कृष्ण जी बैठे मुस्करा रहे थे। उन के चर्णों में पढ़ी और बेनती की कि 'हे भगवान! आप अनाथों को बचाने वाले और आपणे भगतों की सुरक्षा करने वाले हैं।

www.9009.co.in

ग्रन्थों में लिखा है कि एक बार द्रोपदी आपणी सहेलीयो के साथ नदी पर स्नान करने गई थी तो वहा दुरबासा ऋषी स्नान कर रहे थे। देवनेत से उनका कपड़ा दरिया में बहि गया। उनके पास और कोई वस्त्र नहीं था। इस लिए पानी से बाहर नहीं निकलते थे। राज कन्या द्रोपदी को अपणी मुश्कल बताई तो द्रोपदी ने अपणा वस्त्र फाड़ कर दुरबासा की और फेंका। इस से दुरबाशा मे प्रसन्न होकर वर दिया कि तेरा दान किया हुआ यह चीर किसी दिन तेरी पत रखेगा। तो इस अनुसार भी उसकी भगती पूरी हुई तो द्रोपदी की लाज रही।

द्रोपदी की कथा का भावार्थ है कि जो कोई प्रभू की भगती करता है, प्रभू मुश्कल समय उसकी सहायता करता है। द्रोपदी ने प्रभू की भगती का पालन किया। इस लिए मुश्कल समय मंदा करमा दुर्योधन आपणी इच्छा ना पूरी कर सका।

२३. राजा हरी चन्द (पहला)

सुख राजे हरी चन्द घर नार सुतारा लोचन राणी ॥
साध संगति मिलि गांवदे रातीं जाइ सुणे गुरबाणी ॥
पिछों राजा जागिआ अधी रात निखंड विहाणी ॥
राणी दिस न आवई मन विच वरत गई हैरानी ॥
होरतु राती उठ के चलिआ पिछै तरल जुआणी ॥
राणी पहुती संगती राजे खड़ी खड़ाऊं निसाणी
साध संगत आराधिआ जोड़ी जुड़ी खड़ाऊं पुराणी ॥
राजे डिठा चलित इह इह खड़ांव है चोज विडाणी ॥
साध संगति विटहु कुरबाणी ॥ (भाई गुरदास)

एक राजा हरी चन्द था। उस के घर जो राणी थी उस का

www.9009.co.in

नाम था त्रिलोचन राणी, उसको बचपन में कुछ नेक पुरूषों के बचन सुणने की लगन थी। छोटे से राज वाली धर्मण राणी विवाह के पश्चात भी पूजा पाठ में लगी रहा करती थी। राज भवन के नजदीक कोई भजन मण्डली आ गई। वह हरी कीर्तन करने लगी। सारी रात ही कीर्तन होता रहता था। राणी को जब पता चला तो वह भी उस सत्संग में जाने लगी। यह अब उसका नित नेम था। प्रमात्मा का नाम ही उस का जीवन आसरा था। वह निर्भयता से इस नेक राह पर जाया करती थी।

भाई गुरदास जी के बचन अनुसार एक दिन त्रिलोचन राणी जब सत्संग में गई तो बाद में राजा को जाग आ गई। राजा सत्संगी नहीं था। वह आपणे राज काज में रहिता और धरम करम की और ध्यान देने की जगह रंगरलीयां मनाता। ऐसा पुरुष सदा ही शकी स्वभाव का होता हैं। क्योंकि वह आप नेक नहीं होता त्रिलोचन राणी जित्नी नेक थी उत्नी ही रूपवती भी थी। भगवान ने उसको सभी सुख दिए थे। वह शांति से दिन काट रही थी।

जब राजा जागा तो क्या देखता है कि राणी की सेज खाली है। वह कहां गई ? राजा के मन में हैरानी हुई। उस ने उठ कर देखा पर उसे राणी कहीं भी न मिली। राज भवन के पहरेदारों से पूछा तो उन्होंने कुछ भी न बताया। क्योंकि जब राणी जाती थी तो उन को नींद आ जाया करती थी। वह उस समय राणी को नहीं देखते थे। यह भगवान की लीला थी।

राजा चुप रहा। उस ने आई हुई राणी को न पूछा। पर वह अगली रात को उसे नींद ना आई। वह जागता रहा और उस ने ताड़ रखी कि कब राणी उठ कर जाती है पर राणी आपने नेम के अनुसार सो गई। जब अम्रित समय सत्संग का समय आया ...भाव

www.9009.co.in

आधी रात बीती तो राणी उठी। स्नान किया, साधारण भगती भाव वाले वस्त्र पहने और आपणे सतिसंग में चल पड़ी।

राजा अस्ल में सोया नहीं था। वह तो ऐसे ही आंखें बन्द किए हुए था। जब तारा राणी चली तो राजा ने पीछा किया। राणी तो सतिसंग में जा बैठी, वहा पर हरी कीर्तन हो रहा था। स्वर्गी जीऊड़ों की तरह सभ अन्तर ध्यान होए हुए बिराजमान थे। परम शांती और प्यार का वातावरण था।

राजा हरी चन्द पहले तो कुछ देर खड़ा सोचता रहा, फिर राणी की एक खड़ाऊ उठा कर आपणे राज भवन में आ गया। आकर आराम से आपणी सेज पर सौ गया। उस को दीन दुनीआ का कोई ख्याल नहीं था। वह तो राज काज, रंग राग और माया का पुतला था सोया हुआ वह उस दिन कई सुपने देखता रहा।

सतिसंग समाप्त हुआ और भोग पढ़ गया। जब राणी बाहर आकर आपणी खड़ाऊं पाने लगी तो खड़ां एक थी। एक खड़ांऊ को देख कर राणी कुझ हैरान हुई कि यह कैसे हो गया। एक खड़ाऊ किस ने चोरी कर ली। उस समय सतिसंगीयों को भी पता चल गया। संगत ने अरदास की कि हे पारब्रह्म ! तेरा जस करते हुए राणी की खड़ा का चले जाणा भै का कारन हैं तेरा जस कैसे प्रगट होगा, कोई कौतक दिखलाओ। राणी ने राज भवन जाना है।

संगत ने ऐसी अरदास की कि उसी समय खड़ां के साथ वही जो पुराणी खड़ांऊ थी जुड़ गई। राणी तारां ने खड़ांऊ की जोड़ी पहनी और राज भवन में आ गई। जब वह आपणे कमरे में गई तो राजा ने पूछा, 'राणी ! आप की खड़ाउं कहां है ?

'हे नाथ ! मेरी खड़ांऊ मेरे पैरों में हैं। क्या बात है जो आज आप ने पूछने का कष्ट उठाया। तारा राणी ने उत्तर दिया।

www.9009.co.in

'कहां है ?' राजा ने पूछा।

'दासी के पैरों में !'

राजा हरी चन्द ने देखा दोनों खड़ाऊ राणी के पैरों में एक जैसी हैं एक जैसी घिसी हुई। उस को हैरानी हुई और उस ने जल्दी से उठा कर लाई हुई खड़ाऊ देखणी चाही पर वह खड़ाऊ वहां नहीं पड़ी थी। इस तरह के कौतक से राजा को बड़ी हैरानी हुई। राणी को पता चल गया कि राजा बाद में जाग गया होगा और शक पढ़ने पर मेरे पीछे लग गया होगा। पर सतिसंगत के कारन दासी की इज्जत रहि गई। पारब्रह्म परमेश्वर बड़ा दयालु और लीला करने वाला है। कोई भी उसका पारावार नहीं ले सकता। तब राणी ने प्रगट तौर पर पूछा, हे नाथ! अब तो आप के मन को भरोसा हो गया कि मैं आधी रात को उठ कर कहां जाती हुं। मैं प्रभू की भगती करती हूं। भगती ही मेरे जीवन का निशाना है। इस मायावादी जगत में और है भी क्या ? ...क्या अच्छा हो कि आप भी वहां सतिसंगत में जाया करें। सतिसंगत में बैठ कर थोड़ा सा तन मन को शांत कर लिया करो। राज काज तो होते ही रहते हैं।

★

www.9009.co.in

२४. सत्यावादी राजा हरी चन्द जी की कथा

तिनि हरी चंदि प्रिथमीपति राजै कागदि कीम न पाई ॥
अउगणु जाणै त पुन्न करै किउ किउ नेखासि बिकाई ॥
(प्रभाती मः १)

राजा हरी चन्द को सतिआवादी राजा कहा जाने लगा था। वह बहुत ही दानी पुरुष था। पुराणिक ग्रन्थों में भी उस की कथा आती है। उन मे लिखा है कि वह त्रिशंक का बेटा था। जो भी बचन करता था उस पर अमल किया करता था। सच, दान, करम, इशनान का पाबन्ध था। उस की भूल को देवते भी नहीं ढूंढ सकते थे। एक दिन उन के पास नारद मुनी आ गया। राजा ने उस की बहुत ही सेवा की। नारद उसकी नगरी में घूमा। उस ने देखा कि राज में सभी स्त्री पुरुष उसका जस करते हैं। कहीं भी राजा की निंदा न सुनी।

राजा हरी चन्द के राज भवन से निकल कर प्रभू के गुण गाता हुआ नारद इन्द्र लोक में जा पहुंचा। त्रिलोक में भी मुनी का सत्कार होता था। वह त्रैकाल दरशी था। पर मन आए तो कोई ना कोई ऐसी खेड रचने में भी उस्ताद था। कोई ऐसी बात कहनी जिस से दूसरे को ऐसा भ्रम हो कि बस वह जितनी देर दूसरे से नजिठ न ले, उतनी देर आराम से ना बैठे। ऐसा ही उस का वतीरा था।

इंद्र - 'हे मुनी जन!' जरा यह तो बताओ मात-लोक में कैसा वरतारा है। जीवों का, स्त्री पुरुष कैसे रहते हैं?

www.9009.co.in

नारद मुनी – मात लोक और धरम करम का प्रभाव पढ़ रहा है। पुन्न-दान होम यज्ञ होते हैं। स्त्री पुरुष खुशी से रहते हैं। कोई किसी को तंग नहीं करता। अन, जल, दूध, घी बेअंत हैं। वाशना का भी चोखा प्रभाव है। स्त्री पुरुषों का प्यार बढ़िया है। गऊओं की पालणा होती है। घास बहुत होता है। बनास्पति मोलदी है। ब्राह्मण बहुत सुख का जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

इन्द्र हे मुनी देव! ऐसा भला कैसे हो सकता है? ऐसा तो हो ही नहीं सकता। अगर कोई राजा भला हो। राजे के करमचारी भले हों। पर मात लोक के राजा भले नहीं हो सकते। कोई ना कोई कमी जरूर होती है।

नारद मुनी - ठीक है! मात-लोक के राजा हरी चन्द हैं। वह चक्रवरती राजा बण गया है। वह दान पुण्य करता है ब्राह्मणों को गऊएं देता और अगर कोई जरुरत मंद आए तो उस की जरुरत पूरी करता, सत्यावादी राजा है। वह कभी झूठ नहीं बोलता। होम-यज्ञ होते रहते हैं। राजा नेक और धर्मी होने पर परजा भी ऐसी है। 'हे इन्द्र एक बार उसकी नगरी में जाने पर स्वर्ग का भुलेखा पढ़ता है। वापस आने को जी नहीं चाहता। सर्व कला सम्पूर्ण है ऋधीयां सिधीयां उसके चरनों में हैं।

इस प्रकार नारद मुनी ने राजा हरी चन्द की उस्तत की तो इन्द्र पहले तो हैरान हुआ। फिर उस के अन्दर ईरखा जागी। उस को सदा ही यह ख्याल रहता था कि कोई उस से ज्यादा बली न हो। इन्द्र से बली वही हो सकता था, जो बहुत ज्यादा तपस्या करता, धरम करता, ऐसा करने वाला कोई विरला ही होता था। इन्द्र के पास देवी शक्तियां थी। वह मात-लोक के भगतों और धर्मी

www.9009.co.in

पुरुषों की भगती में विघन पाने का यत्न करता। उस ने आपणे मन में यह फैसला कर लिया कि वह जरुर परीक्षा लेगा। ऐसा हो नहीं सकता कोई इतना सत्यावादी बण जाऐ।

नारद चला गया। इन्द्र सोच में पढ़ गया। अभी वह सोच ही रहा था कि उस के महिल में विश्वामित्र आ गया। विश्वामित्र ने कई हजार साल तपस्या की थी तब वह मात-लोक से स्वर्ग लोक में पहुंचा था। वह बहुत प्रभावशाली था। उस ने जब इन्द्र की और देखा तो वह उस के चेहरे से ही मन की दशा को समझ गया। उसने पूछा!

'देवताओं के महांदेव! महाराज इंदर के चेहरे पर काला प्रकाश क्यों? चिंता के चिन्ह प्रकट होते हैं। ऐसा क्या मामला है जो आपके दुख का कारण है। कौन है जो महाराज के तख्त को हिला रहा है।

विश्वामित्र की यह बात सुन कर इन्द्र ने कहा - 'हे मुनी जन! अभी अभी नारद मुनी जी यहां आए थे। वह मात-लोक में भ्रमण करते हुए आए थे। उन्होंने बताया है कि मात-लोक का राजा हरी चन्द ऐसा है कि जिस को लोक जिसे सतियावादी कहते हैं। वह पुण्य दान और धर्म करम में बहुत आगे चला गया है।'

यह सुण कर विश्वामित्र मुस्कराया और उस ने कहा कि यह छोटी सी बात से क्यों घबरा रहे हो? जो चाहोगे हो जायेगा। आप के पास तो लाखों उपाय हैं। महाराज! आप की शक्ति तक किस की मजाल है कि पहूंच जाए। अपने दास को हुक करो, जो कहो हो सकता हं। आप इस चिंता को छोड़ो।

इन्द्र का डर दूर करने के लिए विश्वामित्र ने राजा हरी चन्द की परीक्षा लेने का फैसला कर लिया। और इन्द्र से आज्ञा ले कर मातलोक में आ गया। राज भवन में 'सिंघ पौड़' पर जा कर उस ने एक दरभान को कहा. राजा हरी चन्द से जाकर बोलो कि एक ब्राह्मण आप से मिलने को आया है।

द्वारपाल अन्दर गया, उस ने राजा हरी चन्द को खबर दी तो वह सिंहासन से उठा और ब्राह्मण का सतिकार करने के लिए उठ कर बाहर आ गया। बड़े सतिकार से जी आयां कहि कर उस को ऊंचे स्थान पर बैठा कर उनके चरनों को धो कर चरनामत लिया और दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की -

'हे मुनी जन! आप इस गरीब के घर में आए हैं। आज्ञा करो कि सेवक आप की क्या सेवा करे? किसी वस्तु की जरुरत हो तो दास हाजर है। बस आज्ञा करने की ढील है।

'हे राजन! मैं एक ब्राह्मण हूं। मेरे मन की यह इच्छा है। मैं चार महीने राज करूं। आप सतिआवादी हैं आप का जस त्रै-लोक में हो रहा है। क्या इस ब्राह्मण की यह इच्छा पूरन हो सकती है?

सतियावादी राजा हरी चन्द ने जब यह सुणा तो उस को चाव चढ़ गया। उसका रोम रोम खुश हो गया और उसने दोनों हाथ जोड़ कर बेनती की - जैसे आप की इच्छा है, वैसे ही होगा। आपणा राज मैं चार महीने के लिए दान करता हूं।

यह सुण कर विश्वामित्र का हृदय कांपा। उसको यह उमीद ही न थी कि कोई राज भी दान कर सकता है। राज्य को दान करने का भाव कि जीवन के सुखों का त्याग करना था। उसने राजा की और

www.9009.co.in

देखा, पर इन्द्र की इच्छा पूर्ण करने के लिए वह तगड़ा होकर बोला !

'चलो ठीक है। आप ने राज तो सारा दान कर दिया, पर कीती काहल है। मैं ब्राह्मण को दक्षिणा देणी तो जरुरी होती है, मर्यादा है

राजा हरी चन्द - सति है महाराज ! दक्षिणा देणी चाहिए। मैं अभी खजाने से मोहरें ला कर आप को दक्षिणा देता हूं।

विश्वामित्र - राज खजाना तो आप दान कर बंठे हैं। उस पर तो आपका कोई हक नहीं। राज की सभ वस्तुएं अब आप की नहीं रही। यहां तक कि आप के वस्त्र, गहिने, हीरे लाल आदि सभ राज के हैं। इन पर अब आपका कोई हक नहीं।

राजा हरी चन्द - ठीक है ! दास भूल गया था कि आप के दर्शनों की खुशी में कुछ भी याद नहीं रहा, फिर समय बखशें।

विश्वा मित्र - कितना समय ?

राजा हरी चन्द - बस एक महीना ! एक महीने में मैं आप की दक्षिणा दे दूंगा।

विश्वामित्र - चलो ठीक है। एक महीने तक मेरी दक्षिणा दी जाए नहीं तो बदनामी होगी कि राजा हरी चन्द सत्यावादी नहीं है ! यह भी आज्ञा है कि सुबह होने से पहले मेरे राज की हद से बाहर चले जाओ। राज में नहीं रह सकते। ऐसा करना होगा, यह जरुरी है।

राजा हरी चन्द ने राज के वस्त्र उतार दिए। बिल्कुल साधारन वस्त्र पहिन कर पुत्र और राणी को साथ ले कर राज की हद से बाहर हो गया। प्रजा रोती कुरलाती रहि गई। पर राजा हरी चन्द के माथे पर बिल्कुल ही वल न पढ़ा, न चिंता के चिन्ह प्रगट हुए। वह

www.9009.co.in

अडिग रहा। साधुओं की तरह तीनों राज्य की हद से बाहर बनारस कांशी नगरी की और चल पढ़े। रास्ते में भूख ने सताया तो कंद मूल खा कर गुजारा किया। राजा तो न डोला पर राणी और बच्चा तो घबरा गए। उनको बीच की बात का पता ना था।

चलते चलते राजा राणी कांशी नगरी में पहुंच गए। रास्ते में उन को बहुत कष्ट उठाने पढ़े। पांवों में छाले पढ़ गए। वह दुखी होकर पहूँचे पर दुख का अनुभव न किया।

राजा ही चन्द चूने की भठ्ठी पर मजदूरी करने लग पढ़ा। उसने शरीर प्यार न किया। जान प्यारी न की। मेहनत करके रोटी खानी अच्छी समझी। क्योंकि हर्थी कार करना धरम है। मांग कर खाणा पाप है। ऐसा वह करता है जो मेहनत पर भरोसा रखता है। राजा मेहनत कर के जो मजूरी लाता उस से खाने का आसरा हो जाता। पर ब्राह्मण की दक्षिणा के लिए पैसे इकठ्ठे ना हो पाते। इस प्रकार २५ दिन बीत गए। समझो बहुत ही कष्ट आ गया। क्योंकि विश्वा-मित्र और इन्द्र राजा को नीचा करना चाहते थे। वह सतिआवादी उसके अटल भरोसे को गिराना था।

ब्राह्मण के रूप में विश्वामित्र आ गए। और क्रोधवान होकर राजा हरी चन्द से बोले। 'हे हरी चन्द ! आप तो सतिआवादी हैं। आप का यह धर्म नहीं कि इस प्रकार करो कि धर्म की मर्यादा पूरी न करो। मेरी दक्षिणा दो।'

राजा हरी चन्द ने क्षमा मांगी। क्षमा मांगने के बाद उस ने फैसला किया कि वह आप और आपणी राणी राणी को बेच दे। जो मिलेगा वह ब्राह्मण को दे देगा पर यह बात न सुनेगा कि राजा हरी चन्द झूठे हैं। सतिआवादी था। यह सोच कर उस ने कांशी की गलीयों में होका दिया, कोई खरीद ले, कोई खरीद ले। हम बिकाऊ हैं। होका

www.9009.co.in

देते रहे। सुनण वाले लोग हैरान थे और कम बुद्धी वाले उनकी हंसी उड़ा रहे थे।

बाजार में कई लोगों ने उस की सहायता करनी चाही, पर राजा ने दान या सहायता लेनी प्रवान न की। अन्त में एक ब्राह्मण ने आपणी पण्ताणी के लिए दासी के तोर पर खरीद लिया और राजा को पैसे दे दिए। राणी ने पण्डितानी के लिए दो शर्तें रखीं। एक तो पराए मर्द से बोलणा नहीं। दूसरा किसी मर्द की जूठ न खाणी। पण्डिताणी ने प्रवान कर लिया। वह पुत्र को लेकर पण्डित के घर चली गई।

राणी के बिक जाने पर राजा को शहिर की श्मशान भूमी के रक्षक चण्डाल ने खरीद लिया। उसकी यह ड्यूटी लगी कि श्मशान भूमि में कर लिए बिना कोई मुरदा न जलने देणा और राखी करनी। ऐसा धन्दा उस को सोंपा गया। वह रात दिन वहां रहने को त्यार हो गया और ब्राह्मण को दक्षिणा पूरी कर दी। विश्वा-मित्र और इन्द्र का यह हौंसला ना पढ़ा कि कहें' राजा हरी चन्द झूठा है या वह बचन से फिर जाता है।

विश्वामित्र और इन्द्र जब हार गए तो उन्होंने आपणी हार को मानने से पहले राजा और राणी की और करडी परीक्षा लेनी चाही उन्होंने आपणी दैवी शक्ति से इस प्रकार राजा की परीक्षा ली।

राजा राणी के पुत्र का नाम रेहितास था। वह खेलता रहता ओर कभी कभी माता का हाथ बंटाता। उन्होंने उसे दैवी शक्ति से सांप से डसवाया। बच्चा मर गया। माता आपणे पुत्र की मौत को देख कर राणी व्याकुल हो उठी। उसका रोना धरती और आकाश में गूंजने लगा। राणी के मिन्नतें कर के आपणे पुत्र के कफन और उस

www.9009.co.in

के संस्कार के लिए पण्डित और पण्डिताणी से सहायता मांगी, पर इन्द्र और विश्वामित्र ने ऐसा उन के मन पर प्रभाव डाला कि उन्होंने न दो गज कपड़ा दिया और न ही कोई पैसा दिया। राणी ने आपणी धोती का आधा पलड़ा फाड़ कर पुत्र को लपेट लिया और श्मशान भूमी की और ले गई।

राज हरी चन्द ने कर लिए बिना राणी को श्मशान भूमी में न दाखल होने दिया और न ही आपणे पुत्र को जलाया। मालक की नौकरी में धोखा न किया। राणी रोती रही। वह बैठी बैठी ऐसी बेहोश हुई कि उसको होश न रही।

देवनेत के साथ एक और घटना घटी। वह यह कि चोरों ने कांशी के राजा के महिल से चोरी की। उन्होंने सुखना की थी कि अगर माल मिलेगा तो श्मशान भूमी के किसी मुरदे को चढ़ावा देंगे। आगे राणी बैठी थी। उस के पास मुरदा देख कर वह राणी के गले में हार डाल कर चले गए।

चोरी की पढ़ताल करते हुए सिपाही जब बाहर आए तो उन्होंने राणी के गले में वह हार पढ़ा देखा। उसी समय पकड़ लिया राणी ने रो रो कर बहुत कहा कि वह निर्दोष है पर किसी ने न सुणी। उसके पुत्र रोहितास को वहीं पर रख कर राणी को राजे के पास पेश किया राजे ने उसे कत्ल का हुकम दे दिया। कत्ल होने के लिए राणी फिर श्मशान भूमी में पहुच गई। उस को कत्ल भी राजा हरी चन्द नें करना था। जो चण्डाल का सेवक था।

विश्वामित्र ने भिआनक ही खेल रची थी। पुत्र रोहितास को मार दिया। राणी पर चोरी का दोष लगा कर कत्ल करवाने के लिए कत्लागाह में ले आया। कत्ल करने वाला भी राजा हरी चन्द था जिस ने आपणे राज में किसी को कत्ल न किया था। ऐसी लीला

और भिआनकता देख कर विष्णु और पारब्रह्म जैसे महां काल देवते भी घबरा गए पर राजा हरी चन्द ना डोला। वह आपणे फरज पर पूरा उतरा। उस ने राणी को त्यार होने के लिए कहा। तांकि वह उसे कत्ल करके राजा के हुकम की पालणा करे। उस समय कत्ल गाह और श्मशान भूमी में वह था या उस की प्यारी राणी और मरा हुआ पुत्र। बाकी सुनसान और इकलता थी।

'त्यार हो जा!' कहि कर राजा हरी चन्द ने तलवार वाला हाथ ऊपर उठाया। उस को ऊंचा करके जब वार करने लगा तो उस समय और ही कौतक वरत गया। उसी समय किसी अनडिठी शक्ति ने उस के हाथ पकड़ लिए और कहा 'धन्य है तू राजा हरीचन्द सत्यावादी! इस बोल के साथ ही उस के हाथ से तलवार नीचे गिर पढ़ी। देखता क्या है कि वह एक श्मशान भूमी में नहीं बलिक बाग में खड़ा है। जहां कई प्रकार के फूल खिले हैं। उस के वस्त्र भी चण्डालों वाले नहीं उस ने आंखें मल कर देखा तो सामने भगवान खड़े थे। विश्वामित्र और इन्द्र भी नजदीक खड़े थे। वह ब्राह्मण कहीं भी नजर न आ रहा था।

राजा हरी चन्द एक दम भगवान के चरनों में गिर पढ़ा। राणी ने भी आगे होकर सभ को प्रनाम किया। उस समय भगवान ने बचन किया - 'राजा हरी चन्द! सच्च ही सत्यावादी है। मांग जो कुछ भी मांगोगे वही मिलेगा।

इस के साथ ही विश्वामित्र ने सारी कथा सुना दी और राजा राणी के पुत्र रोहितक को हसते मुस्कराते हुए दोनों के पास पेश किया सारी कथा को सुण कर राजा हरी चन्द ने भगनान, इंद्र' विश्वामित्र को प्रनाम किया और कहा – आपणी बातों को तो आप ही जानें

www.9009.co.in

महाराज !

जब भगवान ने बहुत जोर दिया तो राजा हरी चन्द ने यह वर मांगा - 'महाराज ! यही इच्छा है - मैं सारी नगरी समेत स्वर्गपुरी को जाउं ।'

'तथा-अस्तु' कहि कर सभी देवते अलोप हो गए। राजा राणी और पुत्र तीनों अपणी नगरी में आ गए। परजा ने खुशी मनाई।

कहते हैं कि राजा कुछ समय राज्य करता रहा। एक समय ऐसा आया कि राजा सारी नगरी समेत बैकुण्ठ धाम को चल पढ़ा। जब वह बैकुण्ठ धाम को जा रहा था तो जानवर, पक्षी और पशु साथ थे। यह देख कर राजा को अभिमान हो गया। खोता हौंघा, राजा ही है, जिसकी नगरी भी बैकुण्ठ धाम को जा रही है। उस समय नगरी जाती जाती धरती के बैकुण्ठ बीच पुलाड़ में रुक गई। उस का नाम हरीचंद उरी है। गुरबाणी में आता है :-

हरिचंदउरी चित भ्रमु सखीऐ म्रिग त्रिसना द्रम छाइआ ।।
चंचलि संगि न चालती सखीऐ अंति तजि जावत माइआ ।।

(बिलावलु मः ५)

इस कथा का प्रमारग है किसी घड़ी भी सत्य को हाथ से नहीं छोड़ना चाहिए और ना हंकार करना चाहिए, उनके बेड़े पार होते हैं।

★

www.9009.co.in

२५. राजा उग्रसैन की कथा

इस पृथ्वी पर अनेकों धरमी राजे भी हुए हैं जिनका नाम आज तक बड़े सतिकार से लिया जाता है। उन का धरम उजागर है। ऐसे राजाओं में यदुबंसी राजा उग्रसैन भी हुआ है। उसका धरम करम बहुत ही प्रसिद्ध था। वह मथरा पुरी में राज करता था। जमना के दोनों किनारों पर राज था।

ऐसे धरमी राजा के घर सन्तान की कमी थी। बस एक ही पुत्र था। जिस का नाम कंस कहा जाता है। उसी कंस को पालता था। पर कनिया कोई न हुई। उलट उसके छोटे भाई देवक के घर सात कन्याओं ने जन्म लिया। उसका कोई पुत्र न हुआ। कन्यादान करने के लिए उस ने अपने भाई की बड़ी कन्या देवकी को आपणी लड़की बणा लिया। आप ही पाला और जवान किया। आम तौर पर सभ ने समझा कि राजा उग्रसैन की सन्तान कन्स और देवकी है। समय के चक्र से देवकी और कंस जवान हुए। राजा उग्रसैन को उनका विवाह करने का ख्याल आया।

देवकी की शादी वासदेव से कर दी गई। उसी छोटी बहिनें भी वासदेव के साथ विआह दी गई। क्योंकि वह नेक और धरमी पुरष प्रतीत हा। उसका जीवन बड़ा शुभ था।

पर कन्स का विवाह राजा जरासिंध की लड़की से हुआ। वह कोई अच्छा पुरुष नहीं था। उस में कई कमीयां थी। वह अधरमी और कुकरमी था लड़ता रहता। जैसा बाप वैसी ही उसकी कन्या थी। वह बहुत हंकारन और उपदर करने वाली थी। उस ने कन्स को भी नेक ना रहने दिया। धरमी राजा उग्रसैन की सन्तान में विघन पढ़

www.9009.co.in

गए, अपशगन होने लगे।

ग्रन्थों में लिखा है कि जब देवकी का विवाह वासदेव के साथ हुआ तो डोली चलने के समय भैण भाई मिलने लगे तो आकाश में एक भिआनक बिजली की गर्ज हुई लिशक पड़ी सब ने देखा तो हैरान और भै-भीत हुए, उसी समय कन्स के कानों में आवाज पड़ी - 'पापी कन्स ! तेरे पापों से प्रिथ्वी कांप उठी है। धरमी राजे उग्रसैन के राज में तेरे पापों की कथा है....तुझे मारने के लिये देवकी के गर्भ से आठवां बालक जन्म लेगा जो तुझे खत्म करेगा। तुम्हारे बाद फिर बाप उग्रसैन राज करेगा--!'

इस आकाशवानी को सुन कर कन्स ने डोली को चलने से रोक कर क्रोध से पागल होकर मिआन से तलवार निकाल ली। उस ने देवकी को मार देने का फैसला कर लिया, सभी ने उन को रोका मगर वह हूड़-मत और मन-मतिया किसी की सुनने वाला नहीं था। वह तो आप मन-आईयां करता था। उसी समय वासदेव आगे आया और उसने कहा, कोई फायदा नहीं देवकी को मार पाप सिर पर लेने का, जो भी बच्चा जन्म लिया करेगा, वह आप के पास भेज दिया जाया करेगा, आप उस को मरवा दिया करें।'

ऐसा वचन सुन कर मूरख और पापी आतमा कन्स ने तलवार को मियान में डाल लिया, देवकी और वासदेव को हुकम दिया कि वह उसी के महिल में रहें, आपने घर ना जाएं। ऐसा दोनों को करना ही पड़ा क्योंकि वह दोनों ही मजबूर थे, राजा कन्स के साथ मुकाबला करना कठिन था, वह दोनों वहां बंदियों की तरह रहने लगे।

इस दुरघटना का असर राजा उग्रसैन के हृदय पर बहुत पड़ा उस ने पिता होने के कारन पुत्र कन्स को बहुत बार समझाया, मगर उस ने एक ना सुनी, उलटा आपने पिता को बंदी करके उस ने

www.9009.co.in

कहा - 'बंदीखाने के अंधेरे में पड़े रहो ! तुम आपणे पुत्र के दुश्मन हो। जाओ तुम्हारा कभी भी छुटकारा नहीं होगा, बस बैठे रहो।'

धरमी राजा उग्रसैन की परजा ने जब सुणा तो हाहाकार मच गई परजा रोई कुरलाई और सोग रखा। पर दुष्ट राजा कन्स ने उलटा उनको तंग करना शुरु कर दिया।

उधर देवकी बहुत दुखी हुई। उसका जो भी बालक होता वही मार दिया जाता। वासदेव भी दुखी होता। इस तरह सात बच्चे मारे गए। उन सात बच्चों का दुख असहि था।

आठवां बच्चा भगवान का अवतार प्रगटिआ। पारब्रह्म भगवान की लीला अनोखी है। कौन जान सकता है। स्री कृष्ण के जन्म समय वासदेव को हिम्मत दी। उसने बच्चा रूप श्री कृष्ण जी को उठा लिया। और जमना किनारे जा खड़े हुए। जमना ठाठां मार रही थी। उसकी छलों का छोर पढ़ा हुआ था।

कुछ समय के लिए भयभीत हुआ। वह सोचणे लगा कहीं जमना में न बहि जाए। उस समय उसको अगंमी भाखिआ हुई। 'हे वासदेव! चलो! जमना मया तुझे रास्ता देगी। तेरे सिर पर तो भगवान है। जो महां काल का भी मालक है। चलो! यह सुण कर वासदेव आगे हुआ। सच्च ही जमना ने रास्ता दे दिया और वह गोकल नगरी में आ गया। लड़का यशोदा को दे आया और उसकी लड़की को ले आया। उसी तरह वापस आया तो जमना ने रास्ता दे दिया। वापस आ गया किसी को भी पता न चला कि वासदेव गया था। भगवान ने आपणे भगत को आप रख लिया। रातो रात सभी काम हो गए।

www.9009.co.in

सुबह हुई तो लड़की उठा कर वासदेव आपणे साले कन्स के पास चला गया। उस को कहा - हमारे घर इस कनियां ने जन्म लिया है। यह आठवीं है इसे न मारो। कन्या तो आप का खून नहीं कर सकती। यह सुण कर कंस क्रोध से बोला - क्यों नहीं ? कन्या भी तो एक दिन किसी की मौत का कारण बन सकती है। लाओ ! उस ने वासदेव के हाथ से कन्या को उठा लिया।

वह कन्या अस्ल में माया का रूप थी। जब कन्स उस का वध करने लगा तो उसी समय ही वह बिजली का रूप धारण कर के ऊपर चढ़ गई और हंस कर बोली - हे पापी कन्स ! तेरी मौत जरुर होगी। जिस ने तुझे मारना है, वह पल रहा है। जवान होकर तेरी खबर लेगा।' यह कह कर कन्या आकाश में अलोप हो गई।

पापी कन्स ने बहुत यत्न किया कि देवकी - सुत श्री कृष्ण का पता चले, पर उस को पता न चला। जवान होकर कंस से युद्ध किया उस को मार कर धरमी राजा उग्रसैन को बंदीखाने से मुक्त किया। फिर राज तख्त पर उसी को बिठाया। 'उग्रसैन कउ राज अभै भगतह जन दीओ।' उस को राज उसकी भगती के कारन मिला। कन्स के ससुर ने भी कई बार मथरा पर हमला किया पर उग्रसैन को हरा न सका। वह राज करता रहा और उसके बाद श्री कृष्ण जी मथरा के राजा बणे। यह कथा है - राजा उग्रसैन की। यह भगतों में गिणा गया है।

* * *

www.9009.co.in

२६. ऊधो की कथा

ऊधउ अकरुर बिदर गुण गावैं ॥

ऊधो - मथरा और गोकल धरती पर जन्म लेने वाला श्री कृष्ण जी की बाल सखा (मित्र) थी। आप इकट्ठे ही पले, खेले और जवान हुए थे। राज मिलने पर भी उधो का साथ न गया। वह बिदर की तरह भगत बण गया। आप ने श्री कृष्ण जी से भागवत पुराण सुणा। फिर बिदर जी को सुनाते रहे। जब भी कभी श्री कृष्ण जी और गोपीयों के बीच झगड़ा होता रहा तो आप ही समेटते रहे। श्री कृष्ण जी को अवतार मानते रहे। उन के भरोसे उन की निरमल आत्मा के कारण भगत माना जाता है और सतिकार से कलयुग में भी याद किया जाता है।

२७. अकरूर जी की कथा

कन्स बुरा था, पर उस का बाप और चाचा धरमी पुरुष थे। अकरुर कंस का चाचा था। उस का स्वभाव कन्स से उलट था। वह धरमी और प्रभु भगत था। प्रभू की ऐसी इच्छा हुई कि उसकी रोजी गुजारा पापी कन्स के साथ जुड़ गया, उसके दरबार में उसे काम करना पढ़ता था। वह हर रोज देखता कि कन्स कुराहे चलता था। उस के आप हुदरेपन और पापों के कारण हाहाकार मची रहती कोई भी धर्मी पुरुष कन्स को अच्छा नहीं कहता था। पर अकरुर क्योंकि धर्मी नेक और जती सती था। इस लिए उसको पाप नहीं लगता था। अकरूर तो खुद ही सत्य पुरुषों में गिना जाता था। कभी

कभी वह हंकारी कंस को समझाता पर उस को समझाने का इतना ही फल होता जितना कि पत्थर पर पाणी पाने से पत्थर पर होता है।

उधर कंस ने आपणे जसूसों और लालची बन्दों के जरीए पता चला लिया कि देवकी का पुत्र कृष्ण जीवित है। वह पल कर जवान हो गया है। वह डर रहा था कि वह अब मारा जाऐगा। इस लिए क्यों न देवकी के पुत्र को बुला कर मरवा दिया जाए। क्योंकि उसको श्री कृष्ण जी के भगवान होने का बिलकुल ज्ञान नहीं था। वह तो श्री कृष्ण जी को एक साधारण पुरुष ही समझता था। उसने एक दिन अक्रूर से कहा - सुना है कि गोकल में कृष्ण नाम का गवाला रहता है। वह बहुत बहादर है। धनुष-यज्ञ में उसको भी बुला कर लाओ। वहां पर मल भी इकट्ठे होंगे। गवाले गभरू भी आएं और खेलों में हिस्सा लें।

कन्स की यह बात को सुण कर अक्रूर की मन में तो चाव चढ़ गया, पर उसको कुछ डर सा प्रगट करते हुए और उस मूर्ख कंस को और हंकारी बनाने के लिए उस की उसतत करता हुआ बोला। हे राजन देखो ! आप का मुकाबला करने वाला धरती पर कोई नहीं, गवाले लड़के भला किस प्रकार मुकाबला करेंगे ? हां यह हो सकता है कि उन को बुलवा कर शुगल कर लो जीतना तो आपणे ही है।

मुकाबले का तो कोई नहीं चलो जरा गर्दन घुमा कर इस मेले का रंग देखेंगे। जरूर जाओ और कृष्ण को तो जरूर लाना। वह तो सुणा है कि किसी को टिकने नहीं देता। और गवालों की लड़कीयां उस पर लटू हुई फिरती हैं। जरा सब को भी यह पता चल जाएगा। कन्स ने चञ्चल मन से कहा और अक्रूर को स्पैशल गोकल भेजा।

www.9009.co.in

अकरुर ने सुणा था श्री कृष्ण जी विष्णु अवतार हैं। वह आप प्रभू रूप हैं। हाथी, नाग और कईयों के जीवन बन्धन काट कर के मुक्त कर चुके हैं जो दरशन कर लेता है, वही निहाल हो जाता हैं। वह मन ही मन में इस प्रकार कई दलीलें करता हुआ चल पढ़ा। रास्ते में मन ही मन सोचता रहा - 'की करेगा ? कैसे नमस्कार करके बात छेड़ेगा तो चरनों की धूड़ लेकर माथे लगायेगा । जाणी जान प्रमेश्वर हैं। क्या मालुम सारे भेत को जान कर नाराज हों कि मैं कंस से साज बाज करके आया हूं । पर क्योंकि भगवान पर श्रद्धा थी, इस लिए वह चल पढ़ा ।

उसकी आत्मा जागी । आत्मा की जाग ने नेत्रों में रोशनी कर दी इतनी तेज रोशनी जो अणु और प्रमाणु देख सकती थी। बिंदराबन की पवित्र धरती पर लगे कृष्ण पैर चिन्ह नजर आए। उस ने डण्डवत होकर नमस्कार किया और आगे बढ़ते गए। वह नन्द के घर पहुंच गए। घर में बलराम भी था भगवान कृष्ण भी। वह बैठे बातें कर रहे थे कि अकरुर ने जा कर नमस्कार किया। चरनों में गिर पढ़ा। भगवान ने उसे उठाया और पूछा - सुणाओ ! पिता जी, कैसे आना हुआ ? बड़े भाग हैं जो आए भगवान आपणे आतमिक बल से सब कुझ जाण गए।

अकरुर - हे भगवान ! आप तो जाणी जाण हे। आप से क्या छुपा हं कंस ने मेला लगाया है। उस ने बिंदराबन के जवान भी बुलाए हैं। कुश्ती होगी, और धनुष-यज्ञ होगा। मैं सन्देशा देने आया हूं ।

भगवान कृष्ण - बड़ी खुशी की बात हं। राजा कंस के बुलावे पर तो जरुर जाना चाहिए। हम त्यार हैं। आप के साथ ही चलते हैं।

www.9009.co.in

यह वचन करके भगवान् ने युगल ते बलराम को साथ लेकर मथरा जाने की त्यारी की । बहुत सारे गवाले त्यार हो गए एक बहुत बड़ा जलूस लेकर सभी चल पड़े, जमना किनारे आए। जमना ने जैसे ही भगवान् कृष्ण जी के चरन छुए तो जमना सुंगड़ गई। वह बहुत छोटी हो गई। इतनी छोटी हुई कि सभी पार हो गए।

जब भगवान् जमना पार हो गए तो अकरूर मन में पश्चाताप करने लगा कि उसने अच्छा नहीं किया । कंस और गवालों की दुश्मनी है। कहीं कंस पापी भगवान् कृष्ण और उनके भाईओं को ना मरवा दे, ऐसा सोच ही रहा था कि भगवान् कृष्ण उस के मन की बात जान गए और उसके सभी शंके दूर कर दिए।

मथरा में घोल हूआ, घोल में श्री कृष्ण और कंस का घोल हूआ। उस घोल में कंस मारा गया और उन के पिता उगरसैन को बंदीखाने से बाहर निकाला और राज सिंहासन पर बिठाया मथरा में पता चल गया कि यही भगवान् श्री कृष्ण देवकी-पुत्र है, जिस के हाथों कंस की मौत लिखी थी वह मर गया । उगरसैन ने श्री कृष्ण को भी पास ही रख लिया और राज पाट का सभी काम उन्हीं को सौंप दिया और आप भक्ति करने लगे। उसी समय भगवान श्री कृष्ण जी ने अकरूर को निहाल किया। उस का जन्म मरन काटा गया, वह भगतों में जाना जाने लगा ।

मगर जो कन्स के हमैती पुरुष थे, जिन को कन्स की रानी ने भड़काया था वह अकरूर पर दोष लगाने लगे कि कन्स को मरवाने वाला अकरूर है। वह लोग अकरूर की निंदा करने लगे। निंदा इतनी बढ़ गई कि अकरूर दुखी हो कर मथरा छोड़ कर चला गया। जैसे ही उस ने मथरा को छोड़ा, तबी मथरा में उपद्रव होने लग

www.9009.co.in

पड़े। जगह जगह दंगे फसाद होने लगे। काल पढ़ गया और लोग बहुत दुःखी होने लगे अकरुर के निंदकों का तो रहा ही कुछ ना वह तो वैसे ही बरबाद हो गए।

मथरा में नुकसान होने का कारन यह बताते हैं कि अकरूर के पास एक ऐसी मणी थी, जिस शहिर में वह रहे और वहां अमन और शांती रहती थी, मगर जिस के पास रहती थी, वह जल्दी मर जाता था। अकरुर के पास जब वह मणी आई तो उसने घोर तपस्या और भगती के प्रताप से मौत पर काबू पा लिया। वह प्रभू सिमरन सवास सवास करता रहता था, इस लिये काल को समय ही नहीं मिलता था कि वह अकरुर की जान लेता। उन्हों ने एक टांग पर खड़े होकर प्रभू की भगती की थी, वह मौत मड़ी का मालक बन गया था।

जब लोग बहुत दुःखी हुए तो वहां श्री कृष्ण जी के पास गए। भगवान् श्री कृष्ण जी ने कहा -- 'भला चाहते हो तो अकरुर की उस्तति करो और उसको वापस ले आओ। उनके आने से ही आपके सभी कष्ट दूर हो जायेंगे।

भगवान् की यह बात सुन कर सियाने पुरुष कांशी गए और भगत अकरूर को मथरा वापस ले आए। शहिर में अमन और सुख शांती हो गई। ऐसा हूआ भगत अकरुर के आने से। जो भी प्रभू का सिमरन करता है और मन को साफ रखता है, झूठ, निंदा और चुगली से बचता है, वह संसार मारग से पार हो जाता है, ऐसा ही प्रभू का खेल है। जीवन का निशाना प्रभू भक्ति है।

★

www.9009.co.in

२८. गजिन्द्र हाथी की कथा

ऐक निमख मन माहि अराधिओ पार उतारे ॥

(माझ म: ५)

सतिगुरू अरजन देव जी महाराज बाणी में फुरमाते हैं कि हाथी ने एक पल प्रभू को याद किया तो उसकी जान बच गई। प्रमेश्वर के नाम की ऐसी महिमा है। पशु पक्षी जो भी नाम सिमरन करता है उस का पार उतारा हो जाता है । गजपति (हाथी) दुःख-पीड़ा से वियाकुल था । उस की चीखों ने जब कुझ ना संवारा तो उस ने भगती की और प्रमात्मा की तरफ ध्यान किया। उसी समय प्रमात्मा आपनी शक्ति के साथ उस की सहायता पर आ गया। उस हाथी को तंदूए ने पकड़ रखा था और हाथी को पानी से बाहर नहीं आने देता था ।

हे जिज्ञासू जनो ! एक मन हो कर कथा सुनो, किस तरह हाथी के बंधन काटे गए। महां-भारत के अनुसार कथा इस तरह है - होता और ब्रह्मा दो भाई हुए हैं। वह दोनों भगती किया करते थे और इकट्ठे रहते थे। एक दिन दोनो मशवरा करके एक राजा के पास दक्षिणा लेने गए। यह मालूम नहीं क्यों ? किस कारन करके या सुभावक ही होता को दक्षिणा ज्यादा मिली और ब्रह्मा को कम ब्रह्मा ने सोचा मुझे कम मिली है तो भाई को ज्यादा, बराबर बराबर करनी चाहिए। उस ने जल्दी जल्दी दोनों दक्षिणा मिला कर एक जगह कर दी। दो हिस्से करके भाई को कहने लगा - 'उठा ले एक हिस्सा।'

होता - 'नहीं ! यह नहीं हो सकता, मैं तो उतना हिस्सा लूंगा जितना मुझे मिला है। दक्षिणां इकट्ठी क्यों की ?'

ब्रह्मा - ईर्खा क्यों करते हो ?

होता - ईरखा का लालच आप ने किया जब आप को दक्षिणा थोड़ी मिली तो आप ने एक जैसी कर दी। कितनी बुरी बात है। मेरा पूरा हिस्सा दो, लालची।

ब्रह्मा - मैं लालची हूं तो तुम तंदुए की तरह हो। जाओ मैं तुम्हें श्राप देता हूं। तुम गंडकी नदी में तंदुआ बणकर रहेगा लालची।

होता कम नहीं था उसने भगवत भगती की थी। उसने भी श्राप दे दिया - अगर मैं तंदुआ बनूंगा तो याद रख तू भी मस्त हाथी बनेगा और उसी नदी में जब पाणी पीने आयेगा तो मैं तुझे पकड़ कर गोतें देकर मारूंगा। फिर याद करेगा। ऐसे लालच को तूं कुल नाश करने का बीड़ा उठाया है, नीच जमाने का।'

यह कहता हुआ होता आपणा हिसा भी छोड़ गया और घर को आ गया। कुछ समय पश्चात दोनों भाई मर गऐ और अगला जन्म धारण किया। होता तंदुआ बणा और ब्रह्मा हाथी, दोनों गंडकी नदी के पास गए। वह नदी बहुत डूंगाई पर थी।

हे भगत जनो! देखो लालच कितना बुरा होता है। भाई भाई को लड़ा दिया। इतना मूर्ख बनाया कि दोनों का कुल बर्बाद हो गया। असल में हउमै (हंकार) और लालच बुद्धी को भ्रष्ट कर देता है। दुखी होते हैं लोग लालच के बंधे। ऐसी ही लालच की अपर अपार महिमा है। लालच कभी नहीं करना चाहिए।

हां - ब्रह्मा हाथी बणा, बहुत बड़ा हाथी और वह समझो कि सब हाथीयों का सरदार था, कोई हाथी उस से न अकड़ता। वह सब हथणीओं के झुण्ड को लेकर इधर-उधर घूमता रहता। जंगली राजा था। जैसे उस श्राप ने पूरा होणा था। एक दिन वह उस गंडकी नदी में ही चला गया। पाणी पिया, वह बहुत ही ठण्डा था, हाथी प्यासे

www.9009.co.in

थे। सब से आगे वही हाथी था। जो ब्रह्मा था वह जब पाणी पीने के लिए आगे बड़ा तो आगे उसका भाई तंदुए का रूप धारण करके बैठा था। उस ने ब्रह्मा का पैर पकड़ कर गहरे पाणी में खींचणा शुरु किया। वह आगे आगे गया, जब वह डूबने लगा तो हाथी ने चिलाना शुरू कर दिया। वह बीच पानी में बिनां डुबने से खड़ा हो गया। बस सिर और सूंड ही नंगी थी। ऐसा देख कर हाथी बहुत हैरान हुए, हथिनीयां चीकें मारने लगीं। पर उस को बाहर निकालने की किसी के पास समरथा न थी।

तंदुए ने ब्रह्मा से बदला लेना था। इस लिए वह जोर से उस हाथी को पकड़ कर बैठा रहा। हाथी बल वाला था। उस को भी ज्ञान हो गया कि पिछले जन्म का हिसाब बाकी है। वह भी यत्न करने लगा। वह पाणी में सिर ना डूबने देता। तंदुआ भी उस हाथी को डुबोने का यत्न करता रहा।

तंदुए और हाथी को लड़ते हुए कई हजार साल बीत गए। वह भूखा रहा। पाणी में वह क्या खाए। तंदुए की खुराक तो पाणी में होती है। हाथी कमजोर हो गया। वह डूबने लगा। उसी समय उस ने आपनी सूंड उठा कर आकाश की और देख भगवान को याद किया। उस ने इस प्रकार बेनती की - 'हे प्रभू। पहले मैं हाथी की जून में पढ़ा कृपा करो मैं पाणी में न डूबूं। अगर मरा तो जरूर किसी माड़ी जून में पड़ूंगा। मेरी अरदास सुणो प्रभू!

ब्रह्मा हाथी ने शुद्ध हृदय से पुकार की। उसी समय प्रमात्मा ने उसकी पुकार सुणी। भगवान आप नदी किनारे आए। सुदरशन चक्र से तंदुए की तारें काटी और हाथी को डूबने से बचाया। उस की हाथी की जून का त्याग किया। फिर भगत रूप में प्रगट किया। वह प्रभू का जस करने लगा, तंदुए का जन्म भी उसी समय बदल गया

www.9009.co.in

२९. सुदामा भगत की कथा

प्रभू के भगतों की कथाएं अनेक हैं, सुनते सुनते उमर बीत जाती है पर कथाएं समाप्त नहीं होती। श्री कृष्ण जी का मित्र भगत सुदामा जी हूए हैं। उनकी बाबत भाई गुरदास जी ने एक पउड़ी लिखी है।

बिप सुदामा दालदी बाल सखाई मित्र सदाऐ ॥
लागू होई बाहमणी मिल जगदीस दलिद्र गवाऐ ॥
चलिआ गिणदा गटीआं किउंकर जाईए कौण मिलाऐ ॥
पहुता नगर दुआरका सिंघ दुआर खलोता जाऐ ॥
दुरहुं देख डंडउत कर छड सिंघासण हरि जी आऐ ॥
पहिले दे परदखणा पैरीं पै के लै गल लाऐ ॥
चरणोदक लै पैर धोइ सिंघासण उधर बैठाऐ ॥
पुछे कुसल पिआर कथ गर सेवदी कथा सुणाऐ ॥
लै के तंदुल चबिओन विदा करै अगे पहुंचाऐ ॥
चार पदारथ सकुच पठाऐ ॥ ९ ॥ १० ॥

भाई गुरदास जी के कथन अनुसार सुदामा गोकल नगरी का ब्राह्मण था, मगर वह बहुत गरीब था, वह श्री कृष्ण जी के साथ एक पाठशाला में पढ़ा करता था। उस समय वह बच्चे थे, बचपन में कई बच्चों का आपस में बहुत प्यार हो जाता है, चाहे बच्चे गरीब हों या अमीर, अमीरी और गरीबी का वट बचपन में कम होता है। सभी विधयारथी या बच्चे शुद्ध हिृदया के साथ मित्र और भाई बने रहिते हैं।

सुदामा और कृष्ण जी की बड़ी प्रीत थी, वह सदा ही इक्ट्ठे रहिते जिस समय उन्हों का गुरू उन को किसी काम के लिए भेजता तो

www.9009.co.in

इक्ठे चले जाते । चाहे नगरी में ही जाना होता या किसी जंगल में लकड़ी लेने के लिये जाना होता, दोनों के प्यार की चरचा थी।

सुदामा जब पढ़ने के लिए जाता था तो उन की माता उन के कपड़े की कन्नी में थोड़े से भुज्जे हूए चने बांध दिया करती थी। सुदामा उन्हों को खा लेता, ऐसा ही होता रहा।

एक दिन गुरू ने दोनों को जंगल की तरफ भजा कि वह लकड़ीयां ले आएं। जंगल में गए तो बारिश आ गई। वह एक वरिक्ष के नीचे बैठ गए। बैठे बैठे सुदामे को याद आया कि उस के पास भुज्जे होए चने हैं, वोह ही खा लवे। वह भगवान से छुपा कर, बुकल में मूंह छुपा कर खाने लगा। उस को इस तरह देख कर श्री कृष्ण जी ने पूछा -- 'क्या खा रहा हैं ?'

सुदामे से उस समय झूठ बोला गया, उस ने कहा--'सरदी से दांत बज रहे हैं, खा तो कुछ नहीं रहा। मित्रा !'

उस समय सहिज सुभा ही श्री कृष्ण के मुखारबिंद से शब्द निकल गया। 'सुदामा ! तुम तो बड़े कंगाल हो, चनों के लिए आप ने झूठ बोला हैं '

बस यह कहिने की देर थी कि सुदामे के गले दलिदर और कंगाली पड़ गई, कगाल तो वह पहले ही था, मगर अब भगवान् ने वचन कर दिया। होया वचन सहज सुभा ही कोई जान बूझ कर नहीं कहा था। बस उस के गले कंगाली पड़ गई।

पाठशाला का समय खत्म हो गया, सुदामा आपने घर चला गया। शादी हुई, मां बाप मर गए तो बच्चे हो गए। कंगाली दिन-ब-दिन बड़ती गई, कोई फरक ना पड़ा। दिन खत्म होते गए। उस समय श्री कृष्ण जी राजे बन गए। उन्हों की महिमा बड़ गई। भगवान् रूप पूजे जाने लगे तो सुदामा बहुत खुश हो कर आपनी

www.9009.co.in

पत्नी को बताया करता था। हम दोनों का बहुत प्यार था।

उस की पत्नी कहने लगी, अगर आप के पक्के मित्र हैं तो आप उस के पास जाएं। हो सकता है कृपा और तरस खाकर कंगाली दूर कर दें।

आपणी पत्नी की यह बात सुण कर सुदामा ने कहा - जाने के लिए तो सोचता हूं पर जाऊं कैसे। श्री कृष्ण जी के द्वार पर जाने के लिए भी तो कुछ न कुछ चाहिए। आखर बचपन के मित्र हुए।

आखर उसकी पत्नी ने बहुत जोर लगाया तो एक दिन वह आपणे मित्र भगवान श्री कृष्ण की और चल पढ़ा। उसकी पत्नी ने कुछ चावल, तरचोली उसको बांध दिए। वह मन में ख्याल करता हुआ कि मित्र को कैसे मिलेगा ? क्या कहेगा ? द्वारका नगरी जा पहुंचा उस महिल के सदर दरवाजेके आगे जा खड़ा हूआ। जहां स्री कृष्ण जी का दरबार लगाया करता था, वह इन्साफ और न्याय करते थे। उस ने द्वारपाल को कांपते हुए कहा, मुझे राजा जी को मिलणा हैं।'

द्वारपाल - क्या नाम बताऊं।

सुदामा - उन को कहना सुदामा ब्राह्मण आया है, आप के बचपन का साथी।

द्वारपाल यह संदेशा ले कर अन्दर चला गया। उस ने स्री कृष्ण जी को सन्देशा दिया तो स्री कृष्ण जी एक दम सिंहासन से उठ कर बाहर को दोड़े और सुदामे से मिल कर उसे गले लगा लिया। उसका हाल चाल पूछा और बड़े सतिकार से आपणे सिंहासन पर बिठाया। और उनके पैर धोए। नजदीक बैठ कर मजाक के लहजे में कहा। जो कुछ मेरी भाबी ने भेजा है वह मुझे दो।

www.9009.co.in

यह कहि कर कपड़े से तरचौली खोल ली और फके मार कर चबाने लगे। चबाते हुए वर देते रहे, कहते रहे 'वाह वाह! कितना स्वादिष्ट है तरचौली! कितनी अच्छी है भाबी।'

सुदामा खुश हो गया। मित्र को आपणे पास रख कर उसकी बहुत सेवा की। सतिकार करके भेजा। न तो सुदामा ने भगवान् से कुछ मांगा और न ही भगवान ने कुछ दिया। सुदामा जैसे खाली हाथ ही दरबार में गया था वैसे ही घर खाली हाथ वापस आ गया। रास्ते में सोचता आया कि घर में पत्नी को क्या बताऊंगा। मित्र से क्या मांग मांग कर लाया।

सुदामा गोकल पहुंचा। वह आपणी गली की ओर गया तो उस को आपणा घर ही ना मिला। वह हैरान हुआ। उसके कच्चे घर कखों की छंन जो गऊ के लिए थी, कही पर दिखाई न दी। वह खड़ा होकर पूछणा ही चाहता था कि उस का लड़का आ गया। उस ने नए कपड़े पहने थे। 'पिता जी! आप तो बहुत देर लगा कर आए। ...द्वारका से आए। जिन को आप ने भेजा था वह यह मकान बना गए, सामान भी छोड़ गए और बहुत सारे रुपए दे गए। माता जी आपका ही इंतजार कर रहे हैं। आप आकर देखो कितना सुन्दर मकान बना हैं।

आपणे पुत्र से यह बात सुण कर और आपणे पक्के सुन्दर मकान की ओर देख कर वह जान गया 'सब उस भगवान का खेल है। उसने मुझे गोकल रखा और यहां यह लीला रचाता रहा। पर बिल्कुल जतलाया नहीं। मकान ऐसा आलीशान बना है इसके जैसा कोई मकान नहीं हो सकता। शायद विश्करमा जी आप आए थे। इस मकान को बनाने के लिए।

उसी दिन से वह भगती करने लग गया और वह भगतों में गिना जाने लगा।

www.9009.co.in

३०. राजा बलि की कथा

सिआणे पुरुष कहते हैं, पुरुष को तप करने पर राज्य मिलता है, पर राज प्राप्ति के बाद उस को नरक प्राप्त होता है, 'तपो राज ते राजों नरक' इस का मूल भाव अर्थ है कि राज प्राप्ति और मनुष्य हंकारी हो जाता है। हंकार साथ कुछ लालच भी आता है। बस फिर कोई बात नहीं सूझती। उस के करम ऐसे हो जाते हैं कि भगवान उस को फिर सीधे रास्ते पाने के लिए कोई कौतक रचाता है। ऐसा ऐसा जुगों से होता आया है। जैसे कि बलि राजा की कथा है। भाई गुरदास जी ने भी लिखा है :-

बलि राजा घरि आपणे अंदरि बैठा जग करावै ॥
बावन रूपी आया चारि बेद मुखि पाठ सुणावै ॥
राजे अंदरि सदिआ मंग सुआमी जो तुधु भावै ॥
अछल छलनि तुधु आइआ सुक्र प्रोहत कहि समझावै ॥
करों अढाई धरमि मंगि पिछहुं दे त्रिहु लोअ न मावै ॥
दो करवा करि तिंन लोअ बलि राजा लै मगर मिणावै ॥
बलि छलि आपु छलाइअणु होइ दिआलु मिलै गल लावै।
दिता राजु पताल दा होइ अधीनु भगति जसु गावै ॥
होइ दरवान महां सुखु पावै ॥

एक राजा बलि हुआ। उसके बाबा प्रहिलाद ने तप किया, अमर मिला। बलि का पिता विरोचन भी एक नेक पुरुष था। बलि बहुत दानी पुरुष था। कोई भी आता उस को खाली हाथ न भेजता। आपणे आप को राजा जनक या राजा हरीश चन्द्र कहलाता। उसने आपणे शहर में यज्ञ किये। दान किए। उसे हंकार हो गया मेरे जैसा कौन दानी होगा। ब्राह्मणों को रजा दिया है।

www.9009.co.in

प्रमात्मा ने देखा कि एक अच्छे भले आदमी बहुत हंकार हो गया है। इस का हंकार दूर करना चाहिए। तब विष्णु ने एक ब्राह्मण का रूप धारण करके, ठर्ह-२ करता हुआ, उस के दरबार में पहूंच गया। राजा ने सत्कार से कहा - 'हे स्वामी ! आज्ञा दो मैं आपकी इस समय क्या सेवा करूं ।

बावन - (छोटा ब्राह्मण रूप) भगवान बोला - 'हे राजन ! मैं तो एक गरीब ब्राह्मण हुं। मेरा कोई घर नहीं। बस एक इच्छा है कि आप कृपा कर के मुझे सिर्फ ढाई करमा धरती बख्शो। ताँकि मैं वहां बैठ कर प्रभू का जाप कर लिया करूं। और मैंने आप से क्या मांगना है ? मुझे बस यही चाहिए। आप के द्वार पर बैठा रहा करूं ।

यह सुण कर राजा हंसा। उस ने सम्बोधन करके कहा - 'हे ब्राह्मण तेरा कद तो छोटा है, पर बलि राजा को मजाक बहुत बड़ा करने आ गए हो। इस राज में खुले बन पड़े हैं। अनगिणत धरती पर लोगों ने आश्रम बनाएं हैं। क्या तुझे किसी ने बैठने न दिया होगा। मेरे राज्य में मेरी धरती पर तो हर आदमी को छूट है। वह आश्रम धरती को जोते। मैं किसी को कुछ भी नहीं कहता। अगर मांगना था तो गऊएं, अनाज, वस्त्र, हीरे मोती मांगते। यह क्या मांगा है। तुम ब्राह्मण हो अगर कोई और होते तो मरवा देता ।

बावन चुप रहा, वह खड़ा मुस्कराता ही रहा । राजा बलि बाते करता रहा ।

राजा बलि का मन्त्री बहुत सिआणा था। वह समझ गया कि यह कोई खेल है। प्रभू खुद ही कोई परीक्षा लेने आए हैं। उस ने राजा से कहा - 'हे राजन् - यह बावन ब्राह्मण जिस ने ढाई करमां जमीन की मांग की है असल में कोई विष्णु अवतार लगता है।

यह आपको छलने के लिए आया है। कोई अचरज खेल न करे।

www.9009.co.in

जरा सोझी से रहिणा चाहिए। इसकी बात नहीं मानणी चाहिए। क्षमा मांग लेनी ठीक।

पर बलि राजा को हंकार ने घेरा था, उसने एक न सुणी और कहा जाओ ढाई करमां धरती जहां से लेणी है, कब्जा कर लो। फिर कभी मज़ाक करने ना आना।

राजा बलि की यह बात सुण कर बावन अवतार दरबार में से बाहर हुआ। इत्ना शरीर बढ़ाया कि दो करमों में उस ने बलि राजा की धरती माप ली और आधी पूरी करने के लिए उस के सिर ऊपर पांव रखा। बलि राजा को होश आया पर वक्त निकल गया था। बलि को बावन ने पैर से धकेल कर पाताल में भेज दिया और कहा 'यहाँ राज कर।' यह कहि कर जब भगवान रूप बावन चला गया तो बलि ने कहा, 'मैं तो यहां राज करूंगा पर आप ने भी तो बचन दिया है कि द्वार के आगे रहोगे। अब बचन से ना फिरो और बैठो। इस बात में भगवान भी छलिया गया। बावन रूप धार कर बलि के द्वार के आगे बैठ कर, बलि पतालपुरी में भगती करने लगा।

★

३१. राजे भगतों की कथा

१. राजा प्रीछत - अरजन (पाण्डव) का पोतरा और अभिमन्यू का पुत्र था। महां भारत की लड़ाई के बाद यह राजा बणा। कलयुग में इस की चरचा हुई। पाण्डवों की औलाद का यह महान पुरुष था, हस्तिनापुर के राज सिंहासन पर बिठा कर पांच द्रोपती समेत हिमालय पर्वत की ओर चल पड़े। यह कई सौ साल राज

www.9009.co.in

करता रहा। इस का परजा को बहुत दुख हुआ। यह कलजुग का मोढी राजा था।

२. परूरवा :- (दूरबा परूरउ अंगरै गुरनानक जसु गाइओ ।।)

एक राजा हुआ। वह उरवशी अपसर पर मोहित हो गया। यह 'ऐल का पुत्र था। उरवशी के विछोड़े में ही तड़पता घूमता रहा। इस ने प्रभू भगती भी की है। इन के बीरज से उरवशी ने इन राजकुमारों को जन्म दिया था। आयू, अमावसू, विश्वास, सतायु, द्रिढायु हुए। राजा परूरवा बहुत महांबली हुए थे और उरवशी का नाटक काली दास ने लिखा है।

३. भगीरथ :- यह राजा दलीप का पुत्र था और राजा अंशमान का पोत्रा था। राजा अंशमान और राजा दलीप ने अरशों से गंगा को धरती पर लाने के लिए बहुत तपस्या की थी पर वह अधघाटे ही मर गए पर उन की इच्छा पूरी न हो सकी। भगीरथ ने घोर तप करके गंगा को अरशों से धरती पर लाए। शिवजी की जटाओं का आसरा ले कर गंगा आई। गंगा ने जाहनुव ऋषी का आश्रम और पूजा की सामग्री रोहड़ दी थी। उस ने गुस्से में आ कर गंगा को पी लिया था। शिव जी और भगीरथ ने फिर जाहनुव ऋषी को मनाया। उस से गंगा को स्वतन्त्र करवा कर धरती पर चलाया और भगीरथ ने अपने पितरों को पानी दिया, उन का कल्यान हुआ।

४. मानधाता :- सूरजवंशी राजा युवनाशू का पुत्र था। पर इस ने माँ के पेट से जन्म नहीं लिया। बल्कि राजा के पेट में से (मनुष्य के पेट में से) जन्म लिया। यह कथा संखेप तौर पर ऐसे है - राजा युवनाशु का कोई पुत्र पुत्री नहीं थे। उस ने ऋषी मुनी इकट्ठे किए और एक

www.9009.co.in

ऋषी के आश्रम में महान यज्ञ करवाया। यज्ञ के पश्चात महां ऋषीयों ने पाणी का घड़ा मंत्र कर रखा। जिस का जल युवनाधव की राणी को पीने के लिए दिया जाणा था। रात हुई सब सो गए। ऋषी मुनी भी सो गए तो राजा युवनाशव को प्यास लगी। उस ने उस मंत्रे हुए घड़े में से पाणी पी लिया। उस मंतरे जल के कारन राजा के पेट में बच्चा बण गया। पेट फाड़ कर बच्चा बाहर निकाला गया। उस बच्चे का नाम मान दाता था। मानदाता ने बिदरासती से विवाह किया। तीन पुत्र और पचास कन्याएं उत्पन्न हुई। पिछली उमर में इस ने प्रभू की भगती बहुत की थी। जिस कारण इस की शोभा हुई। यह भगतों में गिणा गया।

५. रुकमांगद :- (रूकमांगद करतूति राम जंपहु नित भाई ॥)

यह राजा एकादशी का वरत रखने वाला हुआ था। कहते हैं कि यह जती था। यह कभी सपने में भी पर स्त्री के नजदीक नहीं जाता था। आपणी स्त्री से बहुत ज्यादा प्यार करता था। एक बार एक अपसरा उस पर उलरी, पर इस धरमी राजे ने उस के प्यार और उसकी सुन्दरता को ठुकरा दिया। इकादशी के वरत का महातम दे कर अपसरा को अरशों में भेज दिया। उस दिन से एकादस का वरत शुरू हो गया। राजा सारी उमर एकादशी का वरत रखता रहा। उस का नाम सत्कार से लिया जाता हैं।

६. रावण :-

(इक लख पूत सवा लख नाती ॥

तिह रावण घर दीआ न बाती ॥)

रावण लंका का दैंत राजा था। इस की माता का नाम कोक या और पिता का नाम पुलसत्य था। यह तीन भाई थे। दूसरे दो भाई कुम्भ करन और बिभीखन थे, रावण सीता को उठा कर लंका में

ले गया। राम चन्द्र ज़ी ने चढ़ाई की। युद्ध हुआ और रावण मारा गया। रावण के दस सिर थे। वह बली और विद्वान था। इस ने चार वेदों का टीका किया। इस के लाख पुत्र और सवा लाख लड़कीयां थीं पर एक पाप के कारण सोने की लंका आप और सारी औलाद खत्म हो गए। उसका पाप था वह सीता को उठा लाया था।

७. अजै राजा :-

अजै सु रोवै भीखिआ खाइ ॥
अैसी दरगह मिलै सजाइ ॥ (मः १)

राजा अजय दसरथ दशरथ का बाप और स्री राम चन्द्र जी का बाबा था। इस ने एक साधू को घोड़ों की लिद का बुक दान किया था क्योंकि साधू ने उस से उस समय भिक्षा मांगी थी जब राजा घोड़ों के पास था और लिद ही वहां पर थी। गुस्से में आ कर यह किया। साधू ने श्राप दिया और लिद कई गुणां और बढ़ती गई। कहते हैं कि वह लिद का दिया हुआ दान उसी को खाना पढ़ा था। जब वह लिद खाया करता था तब बहुत रोया करता था। गुरू जी फरमाते हैं कि अजै राजा को जब लिद खानी पढ़ती थी, तब रोता था और कहता था कि किसी सन्त महात्मा से गुस्सा करना ठीक नहीं, दिया दान दरगाहे मिलता है।

८. बाबा आदम :- भगत कबीर जी ने भैरउ राग में बाबा आदम जी का जिकर किया है। "बाबा आदम कउ किछु नदरि दिखाई ॥ उनि भी भिसति घनेरी पाई ॥" ईसाई धरम की पुराणी पुस्तक अंजील दे बाबा आदम जी मुख पात्र हैं। अंजील अनुसार बाबा आदम जी की कथा है - खुदा ने पहले मनुष्य बनाया था। खुदा पहले शैतान को भी बणा बैठा था। मनुष्य बणा कर खुदा ने सभी फरिश्तों (देवताओं) को कहा कि आदम को सलाम करो।

पर शैतान ने सलाम न किया। अदन में स्वर्ग बना कर आदम ने जीवन साथन पहिली स्त्री माई हवा को अदन के स्वर्ग बाग में भेज दिया। खुदा ने ज्ञान फल (कणक) खाने से आदम और हवा को रोका पर शैतान ने एक दिन आदमी की गैर हाजरी में अकेली हवा को उकसाया। भुलेखे का शिकार बणा कर कहा कि खुदा ने जो काम की चीज है खाने वाली उस से तो रोक दिया है। ज्ञान फल खा कर देखो। चार कुण्ट की सोझी हो जायेगी। जरुर आदम को कहना और खाने के लिए प्रेरना। यह कह कर शैतान अलोप हो गया। हवा के दिल में धुखधुखी और इच्छा पैदा हो गई कि वह ज्ञान फल खा कर देखे। जब आदम और हवा ने ज्ञान फल खाने के लिए प्रेर लिया। आदम और हवा ने जब कणक खा ली तो उन को स्त्री पुरुष और काम-मोह लालच और शरम आदि का ज्ञान हो गया। उन को आपणे नंगे तन की सूझ पड़ी शर्म से एक दूसरे से दूर होकर छिप गए। तब इस बात का खुदा को पता चल गया। खुदा आप आया और दोनों को एक दूसरे के नजदीक करके समझाया। शैतान के कहने लगे हो, भूल की है। जाओ अब स्वर्ग में नहीं रह सकते। स्त्री-पुरुष बण कर रहो और औलाद पैदा करो। शैतान को सर्प जूनी का श्राप दे दिया। आदम और हवा के हजारों पुत्र हुए जिन से संसार की मनुख गिणती बढ़ी। खुदा का कहना ना मानने के कारण आदम गुनाहगार था। इस लिए उस की औलाद भी गुनाहगार है। उस का उधार सच है और सिमरन आसरे है।

६. अरुण पिंगला :- एक बल वाला पक्षी और भगवान गरड़ का भाई है। सूरज का रथवाही बणा हुआ है। पर यह पिंगला है। पिंगले होने के कारण इस के जन्म का **अधूरा-पन**

www.9009.co.in

है। बिनता को दो अण्डे हुए। बिनता के पति ने कहा कि हर अण्डा हजार साल से पहले न तोड़ना। पर बिनता ने अण्डा पांच सौ साल बाद तोड़ दिया। इस लिए अरुण का सरीर पूरा नहीं था भरा। पर गरुढ़ का अण्डा हजार साल बाद अपणे आप टूटा था। वह पूरा पक्षी बणा। पिछले जन्म के श्राप के कारण सूरज और गरुढ़ उस की कोई सहायता नहीं करते थे।

१०. इन्द्र रो पढ़ा :- (सहंसरदान दे इन्द्र रुआइआ)

इन्द्र देवताओं का बड़ा राजा था, पर अहलिआ से मंद करम करके उस के शरीर पर हजार भग हो गई थीं। वह कष्ट के कारण रोता रहा था। हजार भग का श्राप उस को अहलिया के पति गौतम ने दिया था। जैसे कि पहले गौतम और अहल्या की कथाओं में बताया गया है। इस से शिक्षा मिलती है कि पर-नारी की और ध्यान नहीं करना चाहिए।

ब्रह्मा और उसकी लड़की सरस्वती की कथा

चारे वेद वखाणदा चतुरमुखी होइ खरा सिआणा।।

लोका नो समझाइदा वेख सरसवती रूप लुभाणा।।

भाई गुरदास जी के कथन अनुसार कि चार वेदों को उचारन वाला (ब्रह्मा) बहुत सिआणा था। लोगों को समझाता था। पर अपनी बेटी की जवानी और सुन्दरता को देख कर बईमान हो गया था। उस दुख उठाना पढ़ा था।

ब्रह्मा की लड़की सरस्वती थी, सरसवती बहुत सुन्दर और जवान थी, एक दिन सुबह सरस्वती नदी से स्नान करके आई। सूरज की सुनहरी किरनों ने उस के कवारे गुलाबी चेहरे को और चमकाया हुआ था। सबब से ब्रह्मा जी खड़े खड़े उस की ही और देखने

लग पड़े। उन का दिल चलाएमान हो गया। उन के मन की इस दशा को जाण कर सिआणी सुरसवती ने आपणा मुख दूसरी और कर लिया। ब्रह्मा भी उसी और देखने लगा। इस प्रकार चारों और ही सुरसवती फिरी। ब्रह्मा के चार मुख हो गए। सुरसवती ऊपर उढ़ गई तो ब्रह्मा ने योग बल से तालू में आंखें लगा ली। वह किसी भी कीमत पर सुरसवती को आंखों से ओझल नहीं होने देना चाहता था। ऐसा देख कर शिवजी बहुत दुखी हुए। उन्होंने आगे बढ़ कर ब्रह्मा का जो पांचवां सिर (जो तालु में था) धड से अलग कर दिया और सुरसवती को भोग के पापों से बचा लिया।

करन की कथा :-

करन असल में पांच पाण्डवों की माता कुन्ती का ही बेटा था। पर माया के चक्र और कुन्ती की तपस्या के कारण पाण्डवों को इसका ज्ञान न था। क्योंकि जब करन का जन्म हुआ था तब कुन्ती अभी कंवारी ही थी। करन के जन्म की कथा इस प्रकार बताई जाती है। कुन्ती जब मां बाप के घर थी तो इस ने दुरबाशा ऋषी की सेवा की। ऋषी ने इस को कुछ मन्त्र (अहावन) बताए और कहा कि कोई मन्त्र पढ़ कर जिसकी इच्छा की पूरती की लोचना करो वही हो जायेगी। एक दिन कुन्ती सूरज देवता के दर्शन करने के लिए ऊपर राजमहल की छत पर गई। सूरज की किरनों और उस के बल प्रताप को देख कर उस के मन में आया कि सूरज देवता मेरे पास मनुष्य बन कर आएं तो देखूं वह कितने बलवान और सुन्दर हैं। यह विचार कर उसने दुरबाशा ऋषी के बताए हुए वह मंत्रो को पढ़ना शुरु किया। सूरज सुन्दर गभरू रूप में कुन्ती के पास आ खड़े हूए। यह देख कर कुन्ती त्रबक गई। भयभीत होकर प्रार्थना की कि सूरज अब वापस

www.9009.co.in

चले जाएं पर सूरज वापस न गया। उस ने कुन्ती के साथ भोग किया कंवारी कुन्ती गर्भवती हो गई। पर दूसरे मन्त्र पढ़ने के योग से उसका गर्भ प्रगट न हुआ। जब बालक ने जन्म लिया तो वह बालक को कुन्ती ने नदी में बहा दिया। बहता हुआ बालक कौरवों के रथवाही के हाथ आ गया। उस ने पाला और जवान किया। जो करन के नाम से मशहूर हुआ। महां भारत में इस ने कौरवों का साथ दिया। अन्त में आपणे भाई अरजन के हाथों मारा गया। तब कुन्ती ने ही पाण्डवों को बताया कि करन तुम्हारा भाई है।

समुन्द्र के खारा होने की कथा

यह आम सवाल है कि जिस समुन्द्र में से अमृत, कामधेन, लशमी, कलप ब्रिछ धनेतरि वैद आदिक कई तरह के बहूमुले पदारथ निकले वह खारा क्यों है? कहते हैं कि अगस्त मुनी ने क्रोधवान होकर एक बार सारे सागर का पाणी ढाई चुलीयों से पी लिया था। जब पानी पी लिया गया तो जितने जल जी थे वह तड़पे और पुकारने लगे कि क्या हो गया। वह किस के आसरे जियेंगे। प्रभू ने उसी समय अगसत को प्रेरना की कि पेट में कैद किए सागर को फिर पहले की तरह आजाद कर दे। भगवान के कहने पर अगसत ने पेशाब किया। इसी कारन सागर का जल खारा है।

कैसी दैंत :-

कैसी कंसी मथनु जिनी कीआ ॥ (गोंड नामदेव)

कैसी दैंत, राजा कंस के वस में था। पापी कंस ने जहां श्री कृष्ण जी को मारने के और अनेकों वसीले किए। उस कैसी दैंत को भी घोड़ा बना कर गोकल भेजा। पर श्री कृष्ण ने अपणे योग बल से कैसी दैंत को मार दिया। यहां पर नामदेम जी इशारा करते

ने हरि रूप स्री कृष्ण जिस ने केसी और कंस को (मखण) रिड़क-२ अथवा कोह कोह कर मारा था।

काली सांप :- गोकल के नजदीक ही जमना में एक गहरा कुण्ड था। उस कुण्ड में एक सौ फन वाधा सांप रहता था। उस को काली नाग भी कहा जाता था। गरढ भगवान से डरता हुआ वह उस कुण्ड में जा छिपा था। वह बहुत ही जहरीला था। जब वह फुंकारा मारता था या सांस लेता था तो कुण्ज का पानी खौलने लग जाता था। इस लिए उस कुण्ड का नाम 'काली कुण्ड' पढ़ गया था। उस का जल खराब हो गया था। कृष्ण ने एक दिन जान बूझ कर काली कुण्ड में छलांग लगा दी। नाग से लढ़ाई हुई। उस नाग के सौ फनों को पैरों से कुचल कर मल दिया। काली सांप बे-सुरत होकर हार गया था। स्री कृष्ण ने उन को कहा, 'जमना कुंड छड के किते होर थे तुर जाह।' काली सांप कुण्ड को छोड़ कर चला गया।

दुरबाशा ऋषी :- अतरे मुनी के बेटे थे। इन को शिवाँ का अवतार माना जाता हैं। जब यह जवान हुए तो औरव मुनी की सुपुत्री कदली से दुरबाशा का विवाह हो गया। इन में तमो गुण बहुत था। इस लिए यह बहुत क्रोधी थे। इन्होंने अनेकों को वर दिए और हजारों को श्राप दिए। शकुन्तला को भी इन्होंने ही श्राप दिया था कि दुखयंत तुम्हें भूल जाए। द्रोपदी को वर दिया था कि तुम्हारे परदे ढके रहें। और भी कथा कहानीयां हैं।

दुरबाशा ऋषी ने जब विवाह करवाया था तब इस ने यह प्रतिज्ञा की थी वह अपनी घर वाली की सौ भूलो को माफ कर देंगे। जब सौ से भी ज्यादा भूलें हो गई तो क्रोधवान होकर कंदली को भस्म कर दिया। औरव मुनी ने श्राप दे मिया। एक बार पिंडारक

www.9009.co.in

तीरथ पर तप करने गए तो वहाँ पर यादव बाल खेलने आया करते थे। वह बहुत मजाकीए थे। उन्होंने एक दिन दुरबाशा को मजाक किया। वह मजाक ऐसे था कि जमवन्ती के पुत्र सांब के पेट पर लोहे की बाटी बनी। स्त्रीयों जैसे वस्त्र पहना कर घुण्ड निकाला और दुरबाशा के पास ले गए। दुरबाशा से पूछने लगे, हे ऋषी जी! बताओ लड़की होगी या लड़का?'

दुरबाशा समझ गया कि यह मेरे साथ मज़ाक कर रहें हैं। तब उसने सहिज सुभा ही उत्तर दिया, 'लोहे का मसूल पैदा होगा जो यादवों की कुल को नष्ट करेगा!' यादवों को श्राप दे दिया। उस और इशारा है :-

दुरबाशा दे श्राप नाल यादव इह फल पाए॥

इस प्रकार दुरबासा के श्राप से यादवकी यह कुल नष्ट हो गई थी।

अठारह पुराण

गुरबाणी और गुरमति सहित में 'अठदस' या अठारां पुराणों का नाम बहुत बार आता है। जज्ञासूओं के ज्ञान हित अठारह पुराणों की सूची आगे दी जाती है :-

ब्रह्म पुराण। २. विष्णू पुराण। ३. वायू पुराण। ४. लिग पुराण। ५. पदम पुराण। ६. सकंद पुराण। ७. बावन पुराण। ८. मस्ताना। ९. बरार पुराण। १०. अग्नि पुराण। ११. भूरम पुरान। १२. गरड़ पुराण। १३. नारदीय। १४. भविषत पुराण। १५. ब्राह्मण देवरत पुराण। १६. मारकडे पुराण। १७. ब्रह्माण्ड पुराण। १८. श्री मद भागवत पुराण।

सहसबाहू और रावण :- सहसबाहू का असल नाम कांहत वीरयारजन था। यह कृतवीरज का पुत्र था। इस की हजार

www.9009.co.in

बाहीं थे। इस लिए सहस बाहु कहा जाता था। गुरु नानक जी फुरमाते हैं :-

सहस बाहु मधु कीट महिखासा ॥ हरणाखसु ले नखहु बिधासा ॥
दैंत संघारे बिनु भगति अभिआसा ॥ (गउड़ी मः १)

सहस-बाहू का राज नरबदा नदी के दोनों और था। एक दिन कहते हैं सहस बाहू नदी के बीच इश्नान कर रहा था कि हजार बाहें फैला कर इस नदी के जल को रोक लिया। जल इकट्ठा हो कर ऊचा होने लगा। पाणी ऊंचा हो कर नदी किनारे खेतों और जंगलों में फैलने लगा। एक वण में रावण भगती करता था। पाणी उस के नीचे चला गया। वह क्रोधवान हो कर उठा और सहस बाहू से युद्ध करने लग पड़ा। सहस-बाहू ने उस को जूड़ कर कैदी बणा लिया। ऐसे सहस बाहू ने जमदगनि को मारा था।

रक्त बीज

एक ऐसा दैंत था कि इस के लहु की जितनी बूंदें धरती पर गिरतीं उतने ही दैंत उत्पन्न हो जाते थे। कहते हैं कि राजा निसुंभ की लड़ाई दुर्गा से हुई तो रकतबीज उस समय सुंभ निसुंभ की और से सैनापति था। काली ने इस के लहू को पी कर इस की मौत की।

मधु कीट

यह दो दैंत थे। विष्णु भगवान ने इन को अपणे कानों की मैल से उत्पन्न किया था। जवान हो कर दोनों दैंत ब्रह्मा को खाने लगा। ब्रह्मा ने जान बचाने के लिए विष्णु की उसतति की उसे सोते से जगाया। विष्णु कई हजार सालों से सोया पड़ा था। ब्रह्मा के याद करने पर सोते हूए जागा। मधु और कीटब से पांच हजार साल विश्नु का घोर युद्ध हूआ। न विशणु हारा और न मधु कीटब ने

www.9009.co.in

हो दम छोड़ा। आखर महाँ माया ने दखल दिया। मोहनी रूप होकर उस ने मधु और कीटब को भरमा लिया। वह नरम हो गए। उन्होंने लड़ना छोड़ दिया। विष्णु ने कहा, हमारे साथ बहादरी से लड़ता रहा है, इस लिए जो चाहे हम से वर मांग लो।

'मुझे अपणा सिर दे दो' यह मांग विष्णु ने मध और कीटब से मांगी किए बचन के अनुसार दंतों को सिर देने पड़े। विष्णु ने अपने पट पर दोनों दंतों के सिर काट लिए। दंतों के सिर काटने पर जो लहू उस से निकला वह समुन्द्र के पाणी पर जम कर धरती बन गई यह धरती की जन्म कथा भी है।

महांदेव ने लड़का मारना

पाँडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवत देखिआ था ॥

मोदी के घर खाणा पाका वाका लड़का मारिआ था ॥

नामदेव जी पण्डित को मजाक करते थे कि हे पाण्डे तुम्हारा महां देव भी देखा है। वह सफेद बलद पर सवार था उस महांदेव ने आपणा लड़का ही मार दिया था लड़का मारने की वारता इस प्रकार है। एक दिन पारवती शिवजी महाराज की स्त्री अपने घर स्नान करने लगी तो तस ने आपणे लड़के को कहा बेटा अपने द्वार पर बैठ जा मैं स्नान कर लूं। कोई अन्दर न आए। लड़का आपणी माता का यह हुकम सुण कर बाहर द्वार के आगे बैठ गया। पारवती स्नान करने लग पड़ी। अभी उस ने स्नान पूरा भी नहीं किया था कि शिव जी महाराज बाहर से आ गए उस दिन उन्होंने भांग और धतूरा का नशा बहुत ज्यादा पिया हुआ था। आपणे आप की कोई होष न थी। जब वह अन्दर जाने लगे तो लड़के ने रोका - 'अन्दर न

जाओ माता जी इश्नान कर रहे हैं। पर घर का मालक शिवजी ना रुका और नशे की लोर में शिव जी को ध्यान न रहा कि यह उस का लड़का है इस लिए उस ने क्रोधवान होकर त्रिशूल से उस लड़के का सिर काट दिया। सिर तो शिवजी की रुंड माला में परोया गया और धड़ धरती पर गिर गया। शिवजी महाराज अन्दर चले गए। आगे अभी पारवती ने इशनान नहीं किया था। वह जल्दी से उठ कर वस्त्र पहनने लग गई। वस्त्र पहनते हुए ही शिवा जी से पूछा कि क्या तुम्हें किसी ने रोका नहीं ?'

'मुझे किस ने रोकना था ? शिवजी को कोई रोकने वाला है ? एक लड़के ने रोका था, मैंने उस का सिर काट दिया। भांग के नशे के लोर में बड़े हंकार से शिवजी ने पारवती को उत्तर दिया।

'पाप ! महां पाप ! वह तो आपका लड़का था। हाए मेरा प्यारा पुत्र ! कहती हुई पारवती रोने लग पढ़ी। पारवती का रोना सुणकर शिवा का नशा उतर गया। क्योंकि वह पारवती से बहुत प्रीत करते थे। पारवती ने तब उन को कहा कि आप जैसे भी हो वह उस का लड़का जीवित कर दें नहीं तो वह भी मर जायेगी। यह सुण कर शिव जी महाराज त्रिशूल पकड़ कर भूखे पेट ही फिर घर से बाहर निकल गए। दूर पर्वतों में घूमते रहे कि अब वह किसी पुरुष का सिर काट कर लड़के को जीवित करें क्योंकि जो सिर शिवां की रुंड माला में पहुंच जाता था वह दोबारा धड़ से न जुड़ता था। ढूंढते ढूंढते एक हाथी का बच्चा शिव जी को वहां पर मिल गया। शिवजी उस का सिर काट कर घर ले आए। घर लाकर लड़के के धड़ से जोड़ कर लड़के को सुरक्षित कर दिया। तब शिव जी ने लड़के का नाम **'गणेष' (गुण-ऐश) गुणों का राजा रखा।** भगत जी पण्डित

www.9009.co.in

को इस कथा की और इशारा करके समझाते हैं कि जो शिव जी भंग और धतूरा पी कर आपणे लड़के को मार सकता है और हाथी का मूंह देकर शकल से बेशकल करता है वह तेरा क्या भला करेगा। तुझे मार देगा, पूजा न कर, सति करतार का सिमरन कर।

बिंद्रावन - जमना के किनारे इलाका है। जो कभी हरा भरा था और बड़े भागों वाला जंगल था। यहाँ श्री कृष्ण जी ने गऊएं चराईं और गोपीयों से अनेक प्रकार की प्रीत-खेल किए हैं। इस बद का नाम बिंदराबन क्यों था? यह वारता ऐसे है कि बिंदराबन नाम की एक राज कन्या थी, कवारी उमर में उस ने एक बन में घोर तपस्या की। उस की तपस्या को देख कर भगवान उस पर बहुत मेहरबान हो गए और प्रगट होकर उसके साहमने आ खड़े हुए भगवान ने पूछा - 'देवी! किस इच्छा के लिए तप हो रहा है? कोई वर मांगो!' बिंद्रा ने यह सुण कर कहा, मेरी यही इच्छा है, प्रभू मेरे पति बनें। मैं चरन दासी बन कर सेवा करती रहूं। भगवान ने ऐसा ही किया। बिंद्रा को अपने साथ ही स्वर्गो में ले गए। उस दिन से इस बण का नाम बिंद्राबन पढ़ गया।

पारजात :- (पारजात गोपी लै आया।)

पारजात का अरथ है कलप ब्रिछ, जो स्वर्ग लोक में होता है। इन्द्र के बागों में यह वृक्ष बहुत थे। रुकमणी के कहने पर कि कलप वृक्ष उन के महिल के राज बाग में होना चाहिए। श्री कृष्ण जी ने यह वृक्ष इन्द्र से घोर युद्ध कर के इन्द्र लोक से उखाड़ कर द्वारका नगरी में आपणी प्यारी रुकमणी के बाग लगाया।

www.9009.co.in

३४. ब्रह्मा जी की कथा

नाभि कमल ते ब्रह्मा उपजे बेद पड़हि मुखि कंठ सवारि॥
ता को अंतु न जाई लखणा आवत जात रहै गुबारि॥
(गुजरी मः १)

भारत की पुरातन कथा अनुसार एक समय था जब सृष्टि और पूरन धुँधूकार था। कोई जीव जन्तु नहीं था। सागर ठाठें मारता था। सागर के सीने पर भगवान नारायण माया 'कमला' के साथ बिराजमान रहते थे। कमला उन के चरन दबाया करती थी।

एक दिन भगवान को ऐसा फुरना फुरिया कि सागर पर सृष्टि (धरती) होणी चाहिए और धरती पर जीव। इकल और सुणता का खातमा होना चाहिए। ऐसा करना ठीक है। उसी समय सागर की धुनी में से कमल का फूल पैदा हुआ। उस कमल फूल पर ब्रह्मा ने जन्म लिया। जब ब्रह्मा ने जन्म लिया तो आपणे चारों और जल ही जल को देख कर हैरान हुआ। उस को ऐसा ज्ञान हुआ कि वह सोचने लग पढ़ा कि उस का बाप कौण? कैसे आया?'

भगवान नारायण सुनी जा रहे थे पर माया के बल के कारण ब्रह्मा को कुछ नहीं दिखाई देता था। वह हैरान हो रहा था। पाणी पर चलता हुआ इधर उधर गया। पर कोई पता न चला कि वह किस से पूछे। वह क्यों आया है? क्या करेगा? उसको यहाँ किस ने भेजा है? वह फिर कमल फूल पर जा बैठा। तब वह सोचने लगा शायद इसी में से होकर ऊपर आया हूं और मेरे मूल का पता चल सकता है तो यहां ही क्यों न आगे जाऊं और पता चलाऊं। उस के हृदय में ऐसा ख्याल आते ही कमल में से उस को उस के पोलों पर उस की निगाह पड़ी। वह कमल की नाली में नीचे ही नीचे चलता

www.9009.co.in

गया। कोई हाथ न आई । कोई पता न चला। कई युग घबराया हुआ ढूंढता रहा।

इस प्रकार जब नीचे भी कोई पता न चला तो एक आवाज उसके कानों में पड़ी। ब्रह्मा ! ऊपर चले जाओ ! आपणे मूल को समझने का यत्न करो !"

यह आवाज कहाँ से आई, और हैरानी बढ़ गई, वह यह समझ गया कि कोई जरुर है पर कहां है यह दिखाई नहीं देता। वह कमल की नाल के सहारे ऊपर आ गया और फूल पर पदम-आसन लगा कर तप करता रहा। तप करते हुए कई युग बीत गए। तब जाकर उसे ज्ञान प्राप्त हुआ। फिर उस के लिए नारायण ने सृष्टि की रचना की और ब्रह्मा ने चार वेद कंठ किए। यह ब्रह्मा की जन्म कथा है।

३५. चन्द्रहास की कथा

हे जज्ञासू जनो - भगवान के प्यारे भगतो ! अब आप चन्द्रहांस की कथा सरवन करो। चन्द्रहांस की कथा में नेकी और बदी का घोल है। किसी को मारने वाले को भगवान मारता है, सतगुरु जी का हुकम है -

समु हं ब्रह्मु ब्रह्मु है पसरिआ मनी बीजिआ खावारे ॥
जिउ जन चन्द्रहांस दुखिआ धिृष्टबुधी अपुना घरु लूकी जागे ॥
(नट मः ४)

चन्द्रहांस दक्षिण देश, सागर के किनारे बसने वाली धरती के राजा मेधवी का इकलौता पुत्र था। कहते हैं उस समय द्वापर युग था। उस समय भी कई राजे आपस में लड़ते थे। राजा मेधवी के राज पर दूसरे राजा ने चढ़ाई कर दी। बहुत घोर युद्ध हुआ। उस युद्ध में मेधवी मारा गया। चन्द्रहास की माता आपणे पती के साथ सती हो गई। वह एक नेक पती-ब्रता स्त्री थी। लोग उसका जस

www.9009.co.in

करते थे, पर चन्द्रहांस बेचारा यतीम रह गया।

मेधवी राजा का वजीर दुश्मन से मिल गया। उस ने मेधवी राजा के पुत्र चन्द्रहांस को मरवाने की सलाह की पर चन्द्रहांस को पालने वाली दाई बहुत सिआणी नेक और वफादार थी। उस को पता चल गया। वह चन्द्रहांस को उठा कर कुन्तलपुर राज में चली गई। उस ने राज कुमार की जान बचा ली। उस के पास खाने को कुछ भी नहीं था। मिहनत मजदूरी कर के दिन कटते थे। चन्द्रहास एक यतीम और निथावां बाल बण गया।

चन्द्रहास का भगती करना

चन्द्रहांस आपणी सेवका से एक ठाकर द्वारे में रहने लगा। धीरे धीरे वह पल कर तकड़ा होता गया। यहां तक कि चलने फिरने लगा और बातें करता। आए गए से खेलता, दाई ठाकर द्वार में सेवा करती और उन को खाने के लिए अन्न और कपड़ा मिलता।

इस प्रकार कुछ साल बीत गए। चन्द्रहास बहुत सिआणा बालक निकला। पांच छः साल का हुआ तो वह ठाकुर पूजा करने लगा। दाई मां के साथ मन्दिर में पूजा करता और 'हरे कृष्ण! राधे श्याम का जाप करता।

एक दिन मन्दिर में बहुत से साधु आए। वह कुछ दिन वहां पर रहे और उन्होंने देखा कि चन्द्रहास बहुत लगन वाला था। उन्होंने एक मूरती कृष्ण की दी और झोले में डाल कर उस के साथ लटका दी। वह दिन में कई कई बार पूजा करता रहता। वह बहुत शुद्ध आत्मा से उस की पूजा किया करता था। ऐसा करने पर भगवान कृष्ण जी इत्ना खुश हुए कि उस को दर्शन दिए भगवान ने उस प्रकार रूप धारण करके हर रोज उस से खेलने लगे। भगवान बंसरी बजाते

www.9009.co.in

और बातें करते। भगवान के साक्षात दर्शन करके वह खुश हो जाता वह और ज्यादा हरी जस करता।

धृष्ट बुधी मन्त्री की कथा

कुन्तलपुर नामी छोटा सा राजा था, पर उसका राज बहुत नेक और धरमात्मा था। उस की एक कन्या थी, जिसकी अभी शादी नहीं हुई थी, उसका एक गुरु था ऋषी गालव। वह आपणे गुरु ऋषी गालव के पास बैठा रहता। भोजन करता और नीति के बचन सुणता हुआ दिन बिताता। राज काज कम किया करता था उस ने राज प्रबन्ध आपणे वजीर धृष्ट ऋषी बुधी के हवाले किया हुआ था। असल धृत बुद्धी ही वहाँ का राजा था। धृत बुधी के दो पुत्र थे। मदन और अमल और एक कन्या 'विखिआ' थी। मदन और अमल जवान हो चुके थे। राज प्रबन्ध में बाप का हाथ बंटाते। अमल खाण-पीण वाला और स्त्री प्रेमी था। वह तो राग रंग और नाच में मस्त रहता, पर मदन भगती वाला था। जहाँ राज-महल में बुरिआई का प्रवाह चलता था, वहां कभी कभी संत समागम भी हुआ करते थे। पर धृष्ट बुधी का अलग स्वभाव था। वह धन इकट्ठा करने में खोया रहता। उसकी एक ही इच्छा थी 'ताज के मालक बणने की, चाहे उस के पास बहुत जगीर थी, फिर भी उस की भूख नहीं मिटती थी। वह राज करने के सुपने लेता था।

मदन के यत्न से वजीर के घर एक दिन ब्रह्म भोज का प्रबन्ध किया गया। ब्राह्मणों और सन्तों के साथ वह सन्त मण्डल भी भोजन खाने के लिए आई जिस में चन्द्रहास थी। सन्त मण्डली की मुखी सन्त के पास चन्द्रहास बैठा भोजन खा रहा था, सबब से धृष्ट

www.9009.co.in

बुधी वहां पर आ गया। उस ने सन्तों से पूछा, 'और कोई सेवा' कुछ आए मुनी जी ? सन्तों ने उसको उत्तर तो कोई न दिया पर हंस पड़े। सन्तों को हंसता देख कर धृष्ट बुधी ने हंसने का कारन पूछा। हे मुनी जी आप क्यों हसे।

सन्त जी ने कहा, मैं इस लिए हसा हूं कि यह मेरे पास जो यतीम लड़का चन्द्रहास बैठा हुआ है कुदरत के रंग यह हैं कि यह इस राज्य का मालक है। इस राज का जवाई बणेगा। प्रमात्मा की बेअन्त लीला पर मुझे हंसी आ रही है। कि जिस ने राजा बणना है वह एक भगवान का भगत है।

सन्तों का यह बचन सुण कर धृष्ट बुधी वहां से खिसक गया। पर यह बात उसके दिल को खा गई। क्योंकि वह तो कुन्तलपुर और उसके अधीन राजा को अपणे कबजे में करना चाहता था। वह आस लगाए बैठा था कि राजा का पुत्र कोई नहीं है। लड़की को नीचे ऊपर करके मार देगा और राजा राणी वैसे ही मौत किनारे हैं। तब आपणे पुत्रों को राज तख्त पर बैठा दूंगा। सन्तों के इन बचनों ने उसके मन को धुख-धुखी लगा दी। वह सोचने लगा - 'सन्तों का कहा भी व्यर्थ नहीं जाता । शायद यह बचन सत्य ही हो जाएं। इस लड़के को अभी खत्म करवा देणा चाहिए। इस प्रकार अपणे मन में यह फैसला करके धृष्ट बुधी उस सन्त मण्डली से चला गया। उस ने जा कर राजदूतों और जल्लादों को बुलाकर सारी बात समझाई और लालच देना प्रवान किया जल्लादों को सन्त मण्डली के नजदीक लाकर चन्द्रहास को दिखा दिया । यह सारी कारवाई गुप्त रूप में ही हो। कोई एक अंग लाकर दिखा देगा तो मूंह मांगा ईनाम दिया जाएगा। उसको खत्म जरूर करना है। जल्लाद मान गए चन्द्रहास को देख लिया। यह धृष्ट बुधी का पाप करम था। असल में यह माया

www.9009.co.in

धारी अन्धा बोला होता है। वह दौलत और राज को लेने के लिए जीव हत्या करने से परहेज नहीं करता। चाहे उसकी जान चली जाए इस लिए जगत में सन्त लोक माया को पापों का मूल कहते हैं।

जलादों का चन्द्रहांस को जंगल में ले जाणा

चारों और छां छां करता जंगल था। उस जंगल में और वृक्षों के इलावा चन्दन के वृक्ष भी थे। सुगन्ध की लपटें आ रही थीं। वहां नखु मार और मनुष्य ख्याऊ जानवरों की कोई कमी नहीं थी। पक्षी भांत-२ की बोली बोल रहे थे। एक छोटी सी नदी बहि रही थी। जिसका निर्मल जल पक्षीयों और जानवरों के लिए मीठे दूध की धारा थी। उस जंगल पर कुदरत खुश और नाचती थी। बरकतें ही बरकतें बसती थी। उस रब के घर जल्लाद चन्द्रहास को उठा कर ले गए। सन्तों के डेरे से रात को उठा कर ले गए। पापीयों ने उसका मूंह बन्द कर लिया। आवाज न निकलने दी। उनका विचार था कि मार कर नदी में फंक देंगे। नहीं तो अपने लहु वाले हाथ धो लेंगे। पापी और कर्मी पाप करने से नहीं झिजकते। उन को मासूम बालक पर तरस न आया। निरदोष को मारने लगे। निर्दोष को जो मरवा रहा था। धृष्टबुधी वह कैसे सुख पाएगा।

चन्द्रहांस को पता चल गया कि जल्लाद उसको मार रहे हैं। उस मासूम बालक ने पूछा, 'यह तो बताओ कि मुझे क्यों मार रहे हो।' मैंने कौन सा बुरा काम किया है। जान से तो उस को मारा जाता है जिस ने चोरी की हो या खून किया हो।

जल्लाद - बच्चा हमारी तुमसे कोई दुश्मनी नहीं बिल्कुल तुझे

www.9009.co.in

धृष्ट बुधी मन्त्री मरवा रहा है, उस ने हमें भेजा है तो हम आए हैं। मालक का नमक खाते हैं, उस को हलाल करना है। हम ने तो आज्ञा का पालन कर रहे हैं।'

चन्द्रहांस - 'वह मुझे क्यों मरवा रहा है ? मैं ने उस का क्या बुरा किया है ?

जलाद - उसको किस ने यह शक डाला है कि तुम कुन्तलपुर राजा का जवाई और राजा बनेगा। इस लिए वह मरवा रहा है। क्योंकि वह कुन्तलपुर राज को आज सम्भालना चाहता है। अब हमने तुझे मार देणा है बातों का समय नहीं है।

चन्द्रहांस (निम्रता से) मुझे मार दो ! मैं तुम्हारे हाथ नहीं पकड़ सकता। पर एक बेनती करता हूं कि मरने से पहले मुझे ठाकुर जी की पूजा कर लेने दो। इससे तो आपको एतराज नहीं शायद भला हो जाए। भगवान मेरा कल्यान करेगा।

चन्द्रहास की यह बात जल्लादों ने मान ली। चन्द्रहास ने गल वाले झोले में से ठाकुर जी को निकाला और जंगल के फूल पते तोड़कर पूजा करने लगा। पूजा करता वैराग में आ गया। उस की मासूम आत्मा इस प्रकार प्रभू के आगे बेनती कर रही थी कि शायद उस के मनो-भावों का विचार था।

हे प्रभू भगवान ! दया करके मुझे बचा लो, जैसे द्रोपदी को पापीयों ने पकड़ कर दुष्ट दुर्योधन की सभा में ले आए थे। जैसे द्रोपदी की इज्जत बचाई थी, उसी प्रकार मेरी भी रक्षा करो।

हे प्यारे और सच्चे भगवान ! मैं आप से दान मांगता हूं। मुझ पर दया करो। मेरा तन मन आप के चरणों में लगा रहे। तुम ही मेरे मालक हो। हे प्रभू दया करो।

www.9009.co.in

चन्द्रहांस ने यह भजन गाया :-

हे प्रभू हे दीन दइआल।
मैं निरदोशा पकड़ बैठाइआ है जंगल वैशाल॥
प्रभू दस देह खां मैनूं, क्यों आइया मेरा काल।
किस जनम दा पाप इह लगड़ा, मैं मासुम हां बाल।
हे प्रभू दीन दिआल।
तेरे बिनां नहीं कोई है, मेरा तूं पिता प्रतिपाल।
हाथी दे तूं बंधन कटे, ओह गोकल कृष्ण गोपाल।
अजामल पापी तारन वाले, मेरा वी कर खिआल।
हे प्रभू हे दीन दिआल।

चन्द्रहांस ने भगवान के आगे यह प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना दरगाह से प्रवान हो गई। प्रभू ने जालमों के हृदय को तोला। उन के अन्दर दया को प्रवेश किया। उन्होंने आपस में ही फैसला किया कि इस बालक को मारना नहीं चाहिए। छोड़ दो। मासूम और निर्दोष बालक को मारने का बहुत पाप लगेगा। हम इस पाप के भागी क्यों बणें। उन्होंने चन्द्रहांस के पैरों की और देखा। एक पैर की छः उंगली थीं। छः उंगली बुरी होती हैं। उन्होंने छटी उंगली काट ली और वापस चले गए। वही उंगली धृष्ट बुधी को दिखाने की विउंत ही सोची।

जल्लाद चले गए। उस बैशाल जंगल में चन्द्रहांस अकेला बैठा रहा। उंगली कट जाने से लहु चलता और उसे दरद होती थी। फिर भी उस ने प्रभू अराधना न छोड़ी। अचानक ही पीड़ हट गई और लहु सूख गया। चन्द्रहास बैठा प्रभू के गुण गाता रहा। जंगल के पक्षी भी उस के साथ गाते थे।

www.9009.co.in

(राजा कुलिन्द्र से चन्द्रहांस का मेल)

साध पठाए आपि हरि तुम ते नाही दूरि ।।
नानक भ्रम भै मिटि गए रमण राम भरपूरि ।।

धृष्ट बुधी ने हंकार, ईरखा और लालच किया। यह तीनों रोग बहुत बुरे होते हैं। प्रभू ने उन के इन रोगों का खण्डन करना था और मासूम चन्द्रहांस को प्रतापी राजा बनाणा था। प्रभू ने दया करके राजा कुलिन्द्र को उधर ले आया। राजा कुलिन्दर चन्दलपुर का राजा था। यह बहुत नेक और न्याय वाला था। इस के घर कोई पुत्र न था। यह रोज शिकार खेला करता था। शिकार खेलता खेलता जंगल के उस हिस्से में पहुंच गया जहां चन्द्रहांस प्रभू के गुण गा रहा था। हरी कीरतन की धुन सुण कर राजा ऐसे खिचा नजदीक आया जैसे राग की मधुर सुर में मस्त होकर हिरन आता है। घोड़े से उतरा। दोनों हाथ जोड़े उस ने जाना शायद खुद भगवान ही मन की मौज में बैठा हो। राजा को देख कर चन्द्रहांस ने कीरतन करना बन्द कर दिया। और राजा की और देखा। वह देखना ही जन्म जन्म की प्रीत का जागणा था। राजा ने उसको गले लगा लिया। पुत्र तुम यहां क्यों बैठे हो? घर चलो। अचानक ही राजा के मुख से निकल गया। बालक का सुन्दर चेहरा उस के हृदय में बस गया। राजा ने उस का नाम पता और न उस के माता पिता के बारे में पूछा। घोड़े पर बैठा कर घर ले गया। उस की राणी मनमोहना बालक देख कर बहुत खुश हुई। उस ने गोद में ले कर पुत्र बणा लिया। अगले दिन सारे शहिर मे ढिंढोरा दिया गया कि राजा कुलिन्द्र एक लड़के को मुतबंना बणा रहा है। शाही दरबार लाकर मुतबंना बनाने की रसम को पूरा किया गया। सारे शहिर में दीपमाला हुई। खुशीयां

www.9009.co.in

नमाई गई। और भूखे नंगों के लिए लंगर भंडारे खोले गए। बेआसरा निथावाँ और यतीम चन्द्रहास प्रभू की किरपा से फिर प्रतापी टिका राजकुमार बण गया।

धृष्ट बुधी का चन्दन पुर आना और

चन्द्रहांस को पहचानना

राजा कुलिन्द्र ने चन्द्रहांस को पढ़ाना शुरु किया। थोड़े सालों में अच्छा पढ़ लिख गया। साथ ही अच्छी खुराक और बे-फिक्री के कारण तकड़ा जवान हो गया। युवराज था। पहले भी राजा का पुत्र था। इस लिए बांहों में बल और हृदय में अणख थी। उस ने सैणा लेकर छोटे छोटे रजवाड़ों को फतह कर के चन्दन पुर के राज को बड़ाना शुरु किया। थोड़े सालों में दुगना राज बढ़ गया। पापी आत्मा धृष्ट बुधी को भी पता चला कि चन्दन पुर के राजा ने जंगल में से एक लड़का लाकर मुतबना बनाया है। वह मुतबंने ने राज्य को बड़ा दिया है। वह बहुत बली और सुन्दर युवराज है। बहाने से वह चन्दनपुर आ गया। चन्दन पुर की रिआसत क्योंकि कुन्तलपुर के अधीन थी। उस को कर दिया करता था इस लिए राजा कुलिन्द्र ने धृष्टबुधी का बहुत सत्कार किया। जिस समय चन्द्रहांस धृष्टबुधी के सामने आया तो उसने उसे पहचानने का यत्न किया। पड़दे से पास बुलवा कर पूछ भी लिया कि तुम कभी कुण्तलपुर गया था। भोले चन्द्रहांस ने सत्य बता दिया कि सन्त मन्डली पास रहा करता था। यह सुण कर धृष्ट बुधी का पापी मन कांप उठा। वह मन ही मन सोचने लगा कि यह दुष्ट बालक जलादों से कैसे बच गया! मै अब इस को जरुर मरवा दूंगा। यह जीवित नही रहणा चाहिए।

इस के पश्चात धृष्ट बुधी राजा कुलिन्द्र के पास पहुंचा। उस को एकांत ले जाकर कहने लगा - 'हे राजन ! आप ने बहुत बड़ा पाप किया है। पाप करते समय कुन्तलपुर के राजा को पता नहीं दिया ! वह पाप या दोष यह है कि आवारा लड़का जंगल से पकड़कर मुतबंनां बना लिया, यह भी पता नहीं यह किस नीच जाती का बालक था। अब इस राज का मालक बणेगा। राजा कुन्तलपुर ने असल में मुझे गुप्त रूप से इस पड़ताल के लिए ही भेजा है। पर मैं आपका हितु हूं। मैं नहीं चाहता मेरे जरिए आप का दिल दुखी हो मैं यह भेद को गुप्त रखता हुं। आप इस युवराज को कुन्तलपुर भेजें। इस की नुहार अच्छी। यह देख कर राजा को भरोसा हो जाएगा कि शायद यह लड़का कोई राजकुमार ही था, युवराज सिआणा है। खुद ही समझा देगा। इस में कोई हरज नहीं।

कुलिन्द्र- जरुर भेज दीजिए ! मैंने तो आपणी और से जो कुछ किया सोच समझ कर राज और परजा के लाभ हित किया है। मेरी कोई कामना नहीं। युवराज लगता तो राजकुमार है।

धृष्ट बुधी ने कुलिन्दर से पूछकर चन्द्रहास को कुन्तलपुर जाने के लिए त्यार कर लिया। जवान निडर जो होते हैं वह डर फिकर हृदय में नहीं रखते। चन्द्रहांस ने निडरता से धृष्टबुधी को उत्तर दिया। पिता जी ! जहां भेजो जाने को त्यार हुं। मेरा ठाकुर मेरे साथ हैं मुझे कोई चिन्ता नहीं !'

कुटल आत्मा धृष्ट बुधी बोला - 'बेटा ! आपणे कुन्तल पुर राजा को मिलना है, पर पहले मेरे मदन को मिल कर। मदन फिर तुम्हें राजा जी के पास ले जायेगा। राजा जो जो पूछेंगे उन को योग उत्तर दे कर आ जाना। राजा की इच्छा आप से मिलने की है। यह कह कर धृष्टबुधी ने एक पत्रिका लिख कर दी ! साथ ही

www.9009.co.in

चन्द्रहांस को पका किया कि वह रास्ते में इस पत्रिका को खोल कर न पढ़े। पराई चिट्ठी को पढ़ना पाप है। चन्द्रहास चिट्ठी लेकर घोड़े पर सवार होकर चल पढ़ा।

(बिख्या से मेल और विवाह)

मनुष्य जो कुछ करना सोचता है वह कुछ भी नहीं होता। लालची मनुष्य तो एक रात में ही सारा नगर मार कर नगर की धन सम्पती हड़प करना चाहता है पर इस प्रकार होता नहीं। क्योंकि प्रभू की मरजी कुछ और होती है। होता वही है जो अकाल पुरख को मनजूर हो। जो आदमी के हाथ यह खेल हो तो बन्दर की तरह पता नहीं कितने घर रोज उजड़ें। धृष्ट बुधी चन्द्रहास को हर कीमत पर खत्म करना चाहता था। वह जबान से मीठा और आत्मा का कौड़ा और पापी था। उस ने गुप्त ढंग से पुत्र मदन को चिट्ठी लिखी कि इस गभरु को (बिख) दो तो मेरे हृदय में ठण्ड पड़ेगी। जवानी में मखमूर चन्द्रहास ने चिट्ठी नहीं पढ़ी और न ही खोला। घोड़े को दौड़ा कर कुन्तलपुर का पंध खत्म किया। अभी थोड़ा सा दिन रहता था कि कुन्तलपुर कें शाही बाग के पास पहुंचा। सरोवर के किनारे घोड़े को बांधा। थकावट उतारने के लिए संगमरमर कि सिला पर लेट गया। नींद आ गई तो सो गया।

उधर राजा की लड़की चंपक मालिनी और वजीर धृष्ट बुधी की लड़की 'बिखया' सखीयों सहित शाम को बाग की सैर करने आ निकलीं। चन्चल मन सुन्दर राज कुमारीयां हंसती खेलती उस सरोवर किनारे पहूंच गई। उन्होंने चन्द्रहांस को वहां पर सोए देखा मन ही मन कुछ ना कुछ सोचती हुई युवराज की और ही देखतीं रहीं। उन का दिल सोते हुए को जगाने का भी नहीं करता था राज

www.9009.co.in

कन्या तो आगे निकल गई, पर बिखया के पैर न हिले, वह चन्द्रहाँस को देख कर आंखों से उसकी सूरत पीती रही। राजकुमार के अधमीटे नदन उस को अच्छे लगते थे। देखते देखते उस की निगाह युवराज की पगड़ी में लगी चिट्ठी की ओर गई। चञ्चल मन बिखया ने धीरे से उसे निकाल लिया। उस को पढ़ा और पढ़कर हैरान हुई। वह चिट्ठी उस के बाप को भाई मदन को लिखी गई थी। उस में जो कुछ लिखा गया था वह बहुत ही बुरा था। उस ने उसे कई बार पढ़ा। उस में यह लिखा था कि मदन। इस को बिख दे देणी मेरी आतमा शान्त हो जायेगी। तेरा बाप धृष्ट बुधी।

बिखया सोचण लगी कि मेरे बाप का और इस सुन्दर युवराज का क्या बैर जो इसे मरवाना चाहता है। नही मैं इसे न मरने दूंगी। यह मेरा पती बणने योग्य है। मैं इस से विवाह करवाऊंगी। यह कहिकर बिखया ने आंखों से काजल निकाल कर चिठी का सुधार कर दिया। जहां बिख था उस को कर दिया बिखया। जहां चन्द्रहांस सोया था पगड़ी में वह चिठी लगा दी। अभी वह जाने ही लगी थी कि युवराज चन्द्रहांस की आँखें खुल गई। उस ने बिखया को देख लिया। देखते ही उठ कर बैठ गया। गौर से देखा। वह देखनी ऐसी थी कि असली प्यार की गठड़ी थी। जो सखत हो गई।

मैं पूछ सकती हूं कि राजकुमार कहां से आए हैं? बिखया ने शरमा कर पूछा।

चन्द्रपुर से आया हूं। यहां के वजीर के लड़के मदन से मिलना है। चन्द्रपुर राज का युवराज हूं और आप? चन्दरहांस ने उत्तर दिया और सवाल भी किया।

'मदन की बहिन बिखया।' यह कह कर बिखया वहां से दौड़ गई।

चन्द्रहांस देखता ही रहि गया।

चन्द्रहांस उठा, घोड़े पर सवार हुआ और राज महल की और गया। मदन से मिला। मदन को जब चन्द्रहांस ने पत्र दिया तो मदन खुशी से झूम उठा। उस ने बिखया बहिन की शादी की त्यारी उसी समय करनी शुरु कर दी। रातो रात ही सारा प्रबन्ध हो गया। अगले दिन ही चन्द्रहांस और बिखया की शादी हो गई। राज महल में खुशीयां करने लगे। होणी ने कुछ का कुछ कर दिया। मरने आए हुए चन्दरहांस की शादी हो गई।

चन्द्रहांस की जगह मदन की मौत

तीसरे दिन धृष्टबुधी कुण्तल पुर आ गया। अभी वह शहिर से बाहर ही था कि लोगों ने वधाई देनी शुरु कर दी कि आपकी सुपुत्री की शादी हो गई और आप न पहूंचे। वर भी बहुत अच्छा है। जब वह घर गया तो चन्दरहांस को घर का मालक बना हुआ देखा। रंगीले पलंघ पर मखमली बिस्तर पर बैठा बिखया से कलोल कर रहा था। उस ने धृष्ट बुधी को ससुर समझ कर माथा टेका। पापी आत्मा ने दिल की बात प्रकट न होने दी। किसी घर के आदमी को बुरा भला न कहा। पर चन्दरहांस को मारने की विउंत जरुर सोची यह न सोचा कि लड़की विदवा हो जाएगी। उस पर राजा बणने का भूत सवार था। सन्तों के बचन उसके कानों में गूंज रहे थे। उसका जवाई तो बण गया अब तो राजतिलक की ढील थी।

धृष्ट बुधी जलादों के पास गया। उन को कहा कि एक हजार मोहरें ईनाम मिलेंगी अगर एक आदमी को कत्ल कर दोगे। वह आदमी भवानी के मन्दिर में शाम को पूजा की सामग्री लेकर आएगा बिना कुछ पूछे ही उसे कत्ल कर देणा और आकर आपणा ईनाम

ले लेणा। जल्लादों ने पांच सौ मोहर पहले वसूल कर ली। भवानी के मन्दिर पहूंच कर उडीक करने लगे।

दूसरी और धृष्ट बुधी चन्द्रहांस को कहने लगा, 'पुत्र हमारी रीत है हमारा जवाई अकेला शाम को भवानी की पूजा करने के लिए उसके मन्दिर जाए। पहाड़ी और जंगल में मन्दिर हैं। आज सामग्री ले कर मन्दिर हो आओ। चन्द्रहांस को शक न हुआ। उस ने दोनों हाथ जोड़ कर उत्तर दिया, सत बचन जी। मैं शाम को मन्दिर जाऊंगा।

चन्द्रहास ने धृष्ट बुधी के बचनों को बिखया आगे भी परगट नहीं किया। सामग्री मंगवाकर भवानी मन्दिर को जाने की त्यारी की शाम होने में थोड़ा सा समय था कि राजमहल से चला। अभी थोड़ी दूर गया था कि उसका साला मदन उस को मिल गया। मदन ने नजदीक आ कर कहा - 'भाइआ जी! यह सामग्री मुझे दो। मैं भवानी के मन्दिर हो आऊं। आप को राजा साहिब ने बुलाया है। इस समय उनके पास पहूंच आओ। वह आपकी राह देख रहे हैं। कोई जरुरी काम हैं। यह कह कर मदन ने चन्द्रहास से वह सामग्री ले ली। और चन्द्रहास को राज महल की और भेज दिया। मदन भवानी के मन्दिर गया। देवी के मण्दिर मे सामग्री चढ़ाने लगा तो छिपे हुए जल्लादों ने जल्दी से निकल कर उस का सिर काट दिया। धड़ के चार टुकड़े कर दिए। टुकड़ों को मन्दिर से बाहर फेंक कर जल्लाद शहिर को चले गए। उन को खुशी हुई कि धृष्ट बुधी के पास जा कर पांच सौ मोहरें ईनाम की और वसूल करेंगे।

चन्द्रहांस का दूसरा विवाह

और धृष्ट बुधी का मरना

आगे का खेल वजीर जैसे जैसे चन्द्रहांस से गुप्त ढंग

www.9009.co.in

साथ दुश्मनी किए जा रहा था। वैसे वैसे ही चन्द्रहांस की किस्मत का सितारा चमक रहा था। चन्द्रहांस राजा के पास पहुंचा। राजा ने प्यार कर के हलीमी से कहा, पुत्र चन्द्रहांस! मुझे बहुत खुशी है कि भगवान ने तुझे आपणे आप ही हमारे शहिर में भेज दिया है मेरी बेटी जवान है। मुझे रात दिन उसी की चिन्ता थी कि इस के लिए कोई योग वर मिले। भगवान की किरपा से आप रिआसत में आ गए। मैंने पण्डित को बुलवा भेजा है। वजीर साहिब भी आ रहे हैं राजकुमारी से आप का विवाह किया जाता है। मैं क्योंकि बूढ़ा हुं। राज काज अब मुझसे नहीं होता। दूसरा मैं सन्यास धारण करना चाहता हूं। इस लिए राज तिलक भी आप को ही दिया जाएगा। कल से आप इस राज के मालक होंगे।

अभी राजा यह कह ही रहा था कि राजा का गुरू आ गया। गुरु जी के पीछे वजीर धृष्ट बुधी जी भी हलूणे खाते आ पहूंचे। चन्द्रहांस को राजा के पास बैठे देख कर हैरान हुए। उसके पैरों के नीचे जमीन निकल गई कि यह क्या बणा। मैंने तो इसको भवानी मन्दिर भेजा था मदन को दरबार में ना देख कर पापी के मन को धका लगा। उस ने चन्द्रहांस को पूछा - 'बेटा मदन कहां है ?'

'जी मदन तो भवानी के मन्दिर गया है, सामग्री ले कर उस ने मुझे यहां भेज दिया और आप चला गया। चन्द्रहांस का उत्तर था।

अरे ! भवानी के मन्दिर में मदन ! वजीर पूरी बात भी न कर सका वह उसी समय राजा की हजूरी से निकल गया। यह देख कर वहां सब लोग हैरान हो गए। कुदरत के रंग! उस की गैर हाजरी को किसी ने अनुभव न किया। चन्द्रहांस और चंपक मालिनी का विवाह वेदक रीति से कर के राजा के गुरु ने चन्द्रहांस को राज तिलक लगा दिया। खुशीयों के बाजे बजाए गए।

सुबह हुई, शहिर और राज में ढिंडोरा फिरा दिया कि आज से कुन्तलपुर ओर उस की सभी रिआसतों का राजा चन्दरहांस है। राजे ने उस को राजतिलक दे दिया है। आपणी पुत्री चम्पक मालनी की शादी चन्दरहांस सें कर दी है। बड़े राजा जी आज से सन्यासी हो कर जंगल को जा रहे हें।

यह ढिंडोरा शहिर में घूम रहा था कि राजा को खबर मिली कि मदन और धृष्ट बुधी भवानी के मन्दिर में कत्ल हुए पड़े हैं। यह सुनते ही चन्दरहांस बिखया और चम्पक मालनी के साथ भवानी मन्दिर गए। वहां पर उन दोनों का सचमुच ही खून हो गया था।

मदन को तो जल्लादों ने मार दिया था। धृष्टबुधी ने आत्महत्या कर ली थी। उन दोनों की मौत को देख कर चन्दरहांल उदास हो गया। उसने ख्याल किया कि यह मेरे ही कारण खून हुए हैं। इस पाप का भागी मैं हूं। मेरा जीना माड़ा और मरना अच्छा है। उसने कटार मिआन से खींची और आपणे कलेजे में मारनें लगा तो देवी ने प्रकट होकर उस के हाथ को पकड़ लिया। यह कौतक देख कर बिखया और चंपक हैरान हो गई और डर गई। देवी ने चन्दरहांस को गोद में ले कर मीठे शब्दों में कहा - पुत्र! आत्म हत्या करना योग नहीं, यह पापी तुझे मारना चाहता था। पर मर इस का पुत्र गया। जिस का दुख न सहिन कर सका। इस लिए आत्महत्या कर ली। जाओ और शांति से राज करो। चन्दनपुर, कुन्तलपुर पर यह राज तुझे दिया। तुम मेरे भगत हो और कुछ मांगना है तो मांग लो।

जगदम्बा देवी के यह बचन सुन कर चन्दरहांस खुश हो गया पर उस ने सोच कर दो वर मांगे। १. हे माता! मुझे एक वर यह दो कि मैं तेरा भगत रहूं। राज बल पाकर हंकार ना आए। मनुष्य

मात्र की सेवा करूं। प्रभू की भगती करां। तेरे भजन गाता रहूं। २. हे माता ! मेरे ससुर और साले को जैसे थे वैसे कर दो इनकी गुप्त ईरखा का मुझे कोई गुसा गिला नहीं है। फिर भी यह मेरे पूजनीक साक हैं। मेरे पिता और भाई समान हैं। इन दोनों का विछोड़ा मैं सहन नहीं कर सकता। यह आप मुझ पर दया करो। हे माता ! बालक तुम से यह वर मांगता है।

'अच्छा ! बेटा। ऐसा ही हो जाएगा, जाओ तुम्हारी मुराद पूरी हुई। यह कह कर जगदम्बा देवी अलोप हो गई। मदन के टुकड़े आपणे आप जुड़ गए। मदन और धृष्ट बुधी फिर जीवित हो गए। जीवित होते ही उन्होंने चन्द्रहांस, बिखया, चम्पक मालनी को देखा तो उन के आनन्द की कोई सीमा न रही। सभ को वारी वारी गले से लगाया। धृष्टबुधी ने चन्द्रहांस से क्षमा मांगी। फिर वह राज करने लगा।

३६. महां बली अरजन की कथा

महां-भारत की कथा में अरजन का नाम आता है। अरजन जैसा बली कोई नहीं हुआ। जहां वह बली था वहां प्रभू भगत भी था। उस ने घोर तपस्या कर के वर प्राप्त किए थे। अरजन की कथा सुणन वाले को डर नहीं लगता। वह निरभै होता है। इस लिए हे भगत जनो ! श्रद्धा से श्री अरजन भगत के दर्शन करो - कथा सरवन करो। बोलो महां बली अरजन की जै।

अरजन राजा पाण्डों का पांचवां पुत्र था। यह पांच भाई थे। इन को पांच पांडों कहा जाता है। युधिष्टर इन का बड़ा भाई

www.9009.co.in

और धरमी राजा जी जब अरजन ने द्रोपती को जीता। घर लेकर आए तो उनकी माता ने बिना देखे यह बचन कर दिया - 'बेटा! जो कुछ लाए हो बांट लो!' उस ने जाणा कोई खाणे वाली चीज लाए होंगे। ब्राह्मणों के भेस में रहते थे। क्योंकि उन के बाप की मृत्यु के पश्चात उन को राज प्राप्त नहीं हुआ था पर जब उन की माता कुन्ती ने देखा तो वह बहुत हैरान हुई, उस को पछतावा हुआ कि उस को ऐसा बचन नहीं कहना चाहिए था। पर जो बचन जो बचन हो गया वह वापस कैसे हो सकता था।

अब पाँचों भाइयों को यह चिंता लगी कि वह द्रोपती को कैसे रखें। असल हक तो अरजन का था, जो उस को जीत कर लाया था। उन्होंने नेम बनाया कि दो महीने बारह दिन द्रोपती एक के पास रहे जिसके पास हो दूसरा उस के पास न जाए। ना उस को बुलाए। अगर कोई इस मर्यादा को भंग करेगा उस को बारह साल बनवास काटना पड़ेगा। यह इस लिए किया गया कि पाँचों भाई कहीं लड़कर इस स्त्री से आपणी कुल नष्ट ना कर लें।

पाण्डवों को राज मिल गया, युधिष्टर राजा बणा तो वह हस्तिना पुर में रहने लगे। शानदार महिल बन गया और शाही ठाठ हो गया तब भी मर्यादा उस प्रकार कायम रही।

एक दिन अरजन से यह मर्यादा भंग हो गई। मर्यादा के भंग होने का कारण इस प्रकार बणा कि एक ब्राह्मण की गऊएं किसी ने उस से छीन लीं। वह आप मुकाबला न कर सका और अरजन के पास चला आया। उस ने अरजन से उस समय कहा जब अरजन का आराम का समय था। उस समय द्रोपती दो महीने बारह दिन के लिए उसके बड़े भाई युधिष्ठर के पास थी। जहां वह बैठे थे वहां से निकल कर अगले कमरे में अरजन के शस्त्र थे। उस समय अरजन बहुत बड़ी

www.9009.co.in

दोनों ओर फंस गया। एक ओर बड़ा भाई और द्रोपती का सवाल था। और दूसरी ओर परजा की रखवाली और ब्राह्मण की चोरी की समस्या थी वह राजा था अगर ना जाता तो उसकी इज्जत रहती। अगर अन्दर जाता था तो मर्यादा भंग होती थी। आखिर प्रजा भलाई के लिए अरजन ने कोई परवाह न की। वह अन्दर गया और शस्त्र उठा कर ले आया। और ब्राह्मण के साथ चल पढ़ा। उसकी गऊएं वापस लीं। चोरों को दण्ड दिया।

वहां से वापस आ कर अरजन ने आपणे बड़े भाई युधिष्टर को हाथ जोड़ कर बेनती की - मैंने किए वचन की उलंघणा की है, मुझे बारह साल का बनवास दिया जाए।

युधिष्टर - 'हे अरजन ! तुम से कोई मर्यादा भंग नहीं हुई। जब तुम हमारे पास से गुजरे थे तब तक हम प्रेम क्रीड़ा कर के भी अभोल बैठे थे। तुम आगे निकल गए। अपणी आंखें नीची रखीं, दूसरा द्रोपती दो महीने बारह दिन के लिए तुम्हारी भाबी है। बड़ी भाबी होने के कारण भी दोष नहीं लगता। तुम हमें प्यारे हो। बनवास को न जाओ और न ही हमने भेजना है।

अरजन - नहीं महाराज ! धरम का राज है, मैं पाण्डव पुत्र हूं। अगर हम ही मर्यादा का उलंघन कर के बनवास न जाएं और भूल जाएं ऐसे लिहाज में आ जाएं तो कल मर्यादा भंग करने का रिवाज ही प्रचलत हो जायेगा, फिर क्या होगा, ऐसा करना ही होगा।

युधिष्टर - हे राजन ! तुम्हारे मन में खोट नहीं थी। आप ने पर-उपकार के बदले मर्यादा को भंग किया। वह भी मजबूरी से यह सोच छोड़ दो। द्रोपदी की भी इच्छा नहीं कि तुम जाओ।

इस प्रकार बहुत बहिस होती रही, अंत में पाण्डव पुत्रों ने अर्जन को

www.9009.co.in

भेजा। बारह साल के लिए उस ने वस्त्र पहन लिए और आपणी राजधानी से हिमालय पर्वत की और चल पढ़ा। वह चलता चलता इन्द्र लोक की और बढ़ा। रास्ते में महांदेव बैठा था। उस ने अरजन के बल की परीक्षा करनी चाही। उस ने कहा 'अरजन मैं आप से युद्ध करना चाहता हूं।'

अरजन - क्यों करना है ?

महांदेव - मुझ से युद्ध किए बिनां तुम इन्द्र लोक में नहीं जा सकते। बल की परीक्षा होगी।

अरजन - 'परन्तु मैं आप से युद्ध क्यों करूं। न कोई बात न दूश्मनी। दूसरा इस युद्ध को देखेगा कौन? कौन साखी भरेगा? आप अकेले लड़ते रहे। यहां तो निरजन स्थान है।

महांदेव - वरण और सूरज देखेंगे।

अरजन युद्ध नहीं करना चाहता था। महांदेव ने जब जिद न छोड़ी तो अरजन और महांदेव का युद्ध शुरू हो गया। वरण और सूरज देखने लगे। वह दोनों दस दिन और दस रातें युद्ध करते रहे। जीत हार का फैसला न हो सका, स्री अरजन भी 'नर-अवतार' था। अन्त महांदेव ने युद्ध करना छोड़ दिया। उसने कहा - हे अरजन! तुम महांबली हो। सृष्टि पर आपका कोई भी मुकाबला नहीं कर सकेगा। और जो कुछ मांगना है मांग लो,

महांदेव की बात सुण कर अरजन खुश हो गया। उस को चाअ चढ़ गया कि उस को मांगने का मौका मिला है। तब अरजन ने बेनती की 'महाराज - शस्त्रों अस्त्रों के इस्तेमाल का ज्ञान चाहिए। ऐसा करने से कुछ कार्य रास हो जाएंगे।

उसी समय महांदेव ने यह बात मान ली और 'अमोध पशुपत' शस्त्र के धारन करने, खोलने बर्बाद करने का हुनर सभ महांदेव ने

www.9009.co.in

बता दिया। अरजन तो पहले ही बली था। वह फिर से निरभै हो गया वह महांदेव के साथ ही देव लोक में चल पढ़ा।

देव लोक के रास्ते में और भी कई बड़े देवते थे। जैसे यम, कुबेर वरण, गनपति आदि। सभी अरजन को खुशी खुशी मिले। सभ ने आपणी आपणी समरथा अनुसार कोई न कोई शक्ति जरुर बख्शी। अरजन शक्तियों का भण्डार बणता गया, सब के बाद इन्द्र से मिलना था। इन्द्र पहले ही जान गया था कि अरजन आ रहा है। उस ने आपणा रथ भेजा और आपणे दरबार में अरजन को सत्तकार से बैठा लिया। अरजन पांच साल तक देव लोक में रहा। सभी देवताओं ने अरजन का सत्कार किया।

अरजन जब देव लोक में था तब इन्द्र ने उसी तरह का खेल अरजन से खेलनी शुरू कर दी। जो वह और बड़े भगतों से तपस्वीयों से किया करते थे। वह आपणी रखी अपसराओं से लाभ उठाता था। उस ने अरजन के बल को कम करने के लिए उर्वशी को हुकम दिया कि वह अरजन का इमतिहान ले। वह अपने रंग रूप से उसका मन खींचे। क्योंकि वह बारह साल के लिए ब्रह्मचरज धारण करके देव लोक में घूम रहा था।

इन्द्र ने अपसरा उर्वशी से कहा - 'हे देव लोक की सुन्दरी! तेरे पास रूप है और काम देवता की शक्तियां, अरजन जती है। वह पर-स्त्री की और नहीं देखता। इस का अभिमान तोड़ो। जैसे हो वैसे करो।

उरवशी - जैसे मालक का हुकम वैसे हो जायेगा कोई फिकर वाली बात नहीं। आप के हुकम का इंतजार था। मन तो मेरा भी चलाएमान हो गया था, आप से डरती थी। अरजन महां-बली है। महां-देव से दस दिन तक युद्ध करता रहा है।

इन्द्र ने पहले तो माया का बल इस्तेमाल किया। चन्न-चानणी रात को रुत सुहावणी बणाई अरजन के मन पर रुत और जलवायु का असर डालने का यत्न किया। इतने में उर्वशी वहां पहुंच गई। वह लोक देव की अनुपम सुन्दरी थी जिस के पास जाती थी उसका धरम हिल जाता था। वही नसका सेवक बण जाता था।

पर अरजन महांबली जोधा था। उस ने आपणी दसों इंद्रीयों पर काबू पा लिया था। उर्वशी ने बहुत हार शिंगार किये। ठुमक ठुमक कर हाथी की चाल चलती हुई जोबन निखार कर जब अरजन के पास गई तो वह त्रबक कर आपणी सुख-आराम सेज से उठ खड़ा हुआ उस ने आपणी इन्द्रीयों पर काबू पा लिया। अरजन ने उर्वशी की और देखा। मन और शरीर में कामदेव को स्थान न दिया। उस को जागणे का मौका न दिया।

अरजन यह जाण गया था कि वह क्यों आई है। उस ने निम्रता से कहा, माता! आप ने कैसे दर्शन दिए हैं?' माता का शब्द जब अरजन की जबान से सुणा तो उर्वशी सिर से पांव तक कांप उठी। उस का नर्म कालजा धड़कने लगा। कुटल नीती और मंद वासना का उमाह मठा पढ़ गया। फिर भी हठ न छोड़ कर उरवशी ने हंस कर कहा इन्द्र जी महाराज के हुकम से आप की ही सेवा करने आई हुं। मुझे माता न कहो। मैं तो आप के गले का हार बणने के लिए आई हूं। मेरा तो अंग अं अंगड़ाई ले रहा है। हृदय तड़प रहा है। यह सुहावणी रात शीतथ चांद की चानणी. जरा आँख ऊपर कर के मेरी और देखो। मेरा जोबन!

'माता! मुझे पाप की और मत लगाओ। कभी तुम राजा परुरवा की धर्म पत्नी और भरत की माता रही हो मैं आप को माता समझता

www.9009.co.in

के बिनां और कुछ समझने की समरथा नहीं रखता। बस मैं यह चाहता हूं कि जल्द से जल्द यहाँ से चली जाओ नहीं तो...!' यह कहता हुआ अरजन क्रोधवान हो कर पलंघ से उठ खड़ा हुआ। उस की आंखों की लाली देख कर उरवशी भयभीत हो गई। वह जो सबक पड़ कर आई थी वह भूल गया। अरजन फिर शेर की तरह गरज कर बोला। माता! चली जाओ आंखों से दूर हो जाओ। बस मेरा कहणा अन्तिम कहना है।

उरवशी ताड़ गई कि अब अरजन या तो उस को श्राप दे देगा या आपणे बल से मारने का यत्न करेगा। वह पीछे हटी पर पीछे हटती हुई ने यह श्राप दे दिया कि 'अरजन! एक दिन ऐसा आएगा जब तुम स्त्री की तरह राज किसी दरबार में नाच करोगे। गीत भी गाओगे और नपुन्सक हो जाओगे।' यह श्राप दे कर उरवशी अरजन के महिल में से चली गई।

बली अरजन ने श्राप ले लिया पर धरम से न गिरा। पांच साल स्वर्ग में रहि कर आपणे राज की ओर चल पढ़ा क्योंकि बनवास के बारह साल खत्म होने को आ गए थे। उरवशी का दिया हुआ श्राप उस समय पूरा हुआ जब दूसरे बनवास समय पांच भाईओं और द्रोपती को तेरहवां साल गुप्त रूप में रहना पड़ा था। उस समय एक राजा की सभा में अरजन नाच करता और गाना वजाना सिखाता रहा। एक साल नपुन्सक रहा।

महां भारत के युद्ध में श्री कृष्ण जी ने अरजन को गीता के जरिए उपदेश किया। उपदेश के आसरे आप कौरवों से लड़े। जीत भी हासल की। आखर राज भाग छोड़ कर पांचों भाईयों और द्रोपती समेत स्वर्गों को चले गए। ऐसा महां बली अरजन था। उस की महिमा लिखी नहीं जा सकती।

www.9009.co.in

३७. भीष्म पितामा जी

"गंगेव पितामह चरण चित अंमृत रसिआ।"

तिस का प्रमारथ है कि गंगा जी का पुत्र पितामा प्रभू का ध्यान करके प्रभू के चरन कंवलों में आनन्द मई रस को माणता रहा। उस प्रभू भगती का फल अमृत था जिस अमृत आसरे वह कई दिन तीरों की सेज पर सोया रहा था। भगती के कारन उस ने आपणी मौत के समय को भी आगे पीछे कर दिया। ऐसा भगत भीष्म पितामा कौन था ? 'हे भगत जनो ! ध्यान से एक चित हो कर ऐसे बली पुरष की कथा सुणो।

शांतू कौरवों और पाण्डवों के वडे वडेरे थे। वह बहुत बली थे और वह गगा नाम की अपसरा पर मोहित हो गए। जब उन को काम रोग हो गया तो उन्होंने गंगा को विवाह करने के लिए सदा दिया। गंगा भी क्योंकि शांतू की जवानी पर मोहित थी, इस लिए उस (गंगा) ने शांतू के पास रहने के लिए हाँ तो कर दी परन्तु यह शरत भी रख दी की जिस दिन शांतू गंगा के पेट से जन्मे बच्चे का मुख देख लेगा उस दिन के बाद गंगा शांतू से अलग हो जाएगी। उस समय राजा ने यह शरत मान ली। शांतू गंगा देवी को आपणे रणवास में ले गया। वह कई साल गृहस्थ को भोगते रहे पर क्योंकि महाराज मात लोक का वासी था और गंगा इन्द्रलोक की अपसरा दोनों के स्वभाय और करम न मिले। पर अपसरा देवी गुणों के कारण शांतू से चालाक थी। वह सात बच्चों की माँ बणी हुई थी। देवी शक्ति से उस ने शांतू को इसका पता न लगने दिया कि उस के पांव भारी होते थे। वह राजा शांतू से काम-लीला

करने उपरंत जिस बच्चे को जन्म देती, उस को गंगा जल में फेंक आती इस तरह गंगा ने सात बच्चे जल प्रवाह कर दिये। मगर आठवें बच्चे के समय शांतू को पता चल गया कि गंगा बच्चे की मां बनने वाली है। शांतू ने बातों बातों में ही गंगा के आगे आपने मन की खुशी को प्रगट कर दिया कि वह एक राजकुमार का बाप बन रहा है। कीए प्रण के अनुसार गंगा बच्चे को जन्म दे कर इन्द्र लोक में चली गई तो फिर राजे शांतू के पास नहीं आई। गन्गा के उस आठवें बच्चे का नाम 'देव ब्रत' रखा। देवब्रत जवान हो गया। जैसे जैसे देवब्रत जवान होता गया वैसे वैसे शांतू बुढापे की तरफ बड़ता गया। उस को बुढापा आ गया, मगर उस हृदया और खून में से स्त्री भोग की वासना न गई। वह दसों इन्द्रियों पर काबू न पा सका। इन्द्रियों का गुलाम पुरष सदा तन मन पर कष्ट उठाता है। कई बार वह मृत्यु का भागी भी बनता है। परवार को वह दुखी करता है।

गंगा के अलोप हो जाने के पश्चात् उदास चित शांतू गंगा दरिया कनारे हर रोज नियम के साथ जाया करता था, गंगा में इस्नान से उस को शांती मिलती थी, उस को इस तरह मालूम होता था, जिस तरह सच्च मुच्च ही गंगा को मिल पढ़ा होता है। गंगा दरिया के उस घाट पर मलाहों के घर थे। एक मलाह की सुंदर कन्नयां 'सतियावादी थी, उस कंवल नैणी को देख कर शांतू मोहत हो गया। उस ने गरीब मलाह की बेटी समझ कर सतियावादी को पूछने लगा, 'क्या तुम मुझ से शादी करोगी!' लाजवंती की तरह कुमलाती हुई मलाह की बेटी ने सिर्फ इतना ही उत्तर दिया, 'मैं क्या कह सकती हूं मेरा पिता जाने।' यह सुन शांतू मलाह के पास गया तो सभी बात प्रगट कर दी, यह भी बता दिया कि वह राजा शांतू है। मलाह ने

उस के मन की इच्छा सुण कर कहा - हे राजन ! मैं आपणी कन्या आप के साथ बिआह देता हूं, पर एक शरत होगी कि जो बच्चा इस के पेट से जन्म लेगा वह ही युवराज बणेगा। उस को राज देना पड़ेगा अगर यह शरत मनजूर है तो सुबह ही कन्या दान कर देता हूं अगर मनजूर नहीं तो चले जाओ।

उस मलाह की यह बात सुण कर महाराजा शांतू का लहू बिलकुल ठण्डा हो गया। इस के दो कारन थे, एक तो यह कि उस का पुत्र देवब्रत बहुत बलवान और सिआणा था। दूसरा गंगा का पुत्र था जिस गंगा से उस ने कभी प्यार किया था। सोचों में गोते खाता हुआ शांतू राज भवन आ गया। पर सत्यावादी का चित्र उस की आंखों पर ही छाया रहा। वह बिरहों रोग से तड़पने लगा। दो चार दिन के पश्चात वह सख्त बीमार पढ़ गया। आपणे तन मन के रोग को महाराज न एक वजीर के आगे प्रगट कर दिया। यह भेत देवब्रत के कानों में भी जा पड़ा। देवब्रत तो सचमुच का ही देवता था। वह आपणे बाप से बहुत हित करता था। सारी वारता को सुण कर उस का तो लहू ही गरम हो गया। उस ने आपणे बाप के तन मन को लगे इस महां भिआनक रोग को दूर करने का फैसला किया कि वह आपणे बाप को दुखी नहीं होने देगा। कई दिन सोचता रहा और अन्त वह आपणे महिल से निकल कर अकेला देवब्रत मलाह के पास उसकी कन्या सत्यावादी के पास पहुंचा। उस ने दसा को बुला कर मलाह को कहा, कि आप आपणी कन्या का विवाह मेरे पिता महाराज शांतू के साथ कर दीजिए। मैं प्रण करता हु कि जमीन और आसमान को साक्षी रख कर प्रतिज्ञा करता हु कि मैं बाप के चलाने के बाद राजा नहीं बनूंगा यही ही नहीं बलिक सारी उमर शादी नहीं करूंगा। कुवारा रहि कर दिन कटांगा तांकि मेरी औलाद ना हो। तेरी बेटी को माता समझकर

www.9009.co.in

इस की सेवा करुंगा ! महाराज बीमार है उस की जान को खतरा है। इस लिए मेरी बेनती प्रवान कीजिए। देवब्रत की यह प्रतिज्ञा देख सुण कर मलाह खुश हो गया। उस ने आपणी कन्या की शादी शांतू से कर दी।

सत्यावादी और शांतू का विवाह हो गया और विवाह के बाद सारे रोग दूर हो गए। वह प्रसन्नचित रहणे लगे। खुशी की उन घड़ीयों में उस को पता चल गया कि उस के देवब्रत ने उस की खुशी के लिए आपणी सब खुशीयों का बलिदान किया है। वह सारी उमर कंवारा ही रहेगा। यह सुण कर शांतू खुश भी हुआ और उदास भी। देवब्रत को बुला कर बड़े सत्कार सें कहने लगा, बेटा देवब्रत ! तुमने मेरी खुशी अरोगता के बदले भीष्म प्रतिज्ञा की है। इस से तेरा नाम भीष्म प्रतिज्ञा होगा। बहुत लम्भी उमर पाओगे। जाओ तुझे मौत नहीं आ सकती। स्वर्ग को जाओगे। अपने बाप के इन बचनों पर देवब्रत ने सीस निवा दिया। उस दिन से देवब्रत को सभी 'भीष्म 'पितामा' कहने लग गए। क्योंकि उस ने भारी प्रतिज्ञा की थी। ऐसा कोई भी नहीं कर सकता था।

भीष्म पितामा के समय परसराम की गुडी चड़ी हुई थीं। भीष्म पितामा उस के पास अस्त्र शस्त्र विद्या सीखने के लिए चले गए। वह तीन साल तक परसराम के पास रहा। जब अच्छी तरह सभी शस्त्र अस्त्र चलाने सीख लिए तो भीष्म पितामा को दिल वाला और बहादर, सुन्दर गभरू देख कर परसराम ने कहा। भीष्म कांशीराम की राजकुमारी अम्बा से शादी कर लो यह मेरा बचन है।

पर उस ने उत्तर दिया 'हे गुरदेव ! मैंने शादी नहीं करनी है। क्योंकि शादी न करने का प्रण नें कर चुका हूं। यह कह कर उस ने

परसराम ने शांतू और सत्यावादी के विवाह की कथा सुणा दी। पर हंकारी परसराम ने अणसुणी कर दी। अन्त में बड़े हंकार से बोला. 'भीष्म! तुमने मुझे गुरु धारण किया। और गुरू की आज्ञा का पालन करना तो शिष्य के लिए बहुत जरूरी है। जाओ और कांशी राजपुत्री से विवाह करो या मुझ से युद्ध करो। तुझे उसी तरह ही मार देना चाहता हूं जैसे पहले मैं खत्रीयों के आहू उतारे हैं। मेरे कुहाड़े की जार को कोई नहीं सहन कर सकता। एक बार मैं खत्रीयों को मार चुका हूं।

भीष्म की इच्छा नहीं थी कि वह आपणे उस्ताद सें लड़ाई करे, पर उसको लड़ाई करनी पढ़ी। कौड़े बचन बोल बोल कर परसराम ने भीष्म को भी क्रोधित कर दिया। शस्त्र पकड़ कर दोनों लड़ने लगे परसराम को वर मिले थे। भीष्म पितामा सत्य और ब्रह्मचरज का उपासक था दोनों सूरमे एक जैसे बल वाले होने के कारण धरती डोल गई। चारों और हाहाका मच गई कि दोनों की लड़ाई का अन्त शायद बुरा निकले। कहीं देवते, राक्षस और मनुष्यों का इकट्ठा युद्ध न छिड़ जाए। जो सब को नष्ट कर देगा। २३ दिन लड़ते रहे। जीत हार किसी की भी न हो रही थी। यह देख कर इन्द्र नारद और विश्वामित्र और ऋषीयों मुनीओं को साथ लेकर युद्ध असथान पर पहुंचे तो दोनों की लड़ाई बन्द करवा दी सब ने परसराम को समझाया कि भीष्म की प्रतिज्ञा क़ायम रहने दो। इस को शादी के लिए मजबूर न करो। इस के धर्म की पालना का सवाल है। परसराम मान गया। दोनों आपणे आपणे घर चले गए।

शांतू की पत्नी सत्यावादी की गोद में से दो पुत्र हुए। एक का नाम चित्रांगद और दूसरे का नाम वचित्र बीरज था। दोनों जवान

हुए तो राजा शांतू परलोक गमन कर गया। सत्यावादी विधवा हो गई। राज दोनों भाईयों में बंट गया। भीष्म पितामा ने कोई दखल न दिया। एक साधू की तरह जीवन व्यतीत करते रहे। विधमाता ने सतिआवादी के पुत्रों की उमर बहुत कम लिखी थी। दोनों की शादी हुई। विवाह के कुछ दिनों पश्चात ही (चित्रांगद और वचित्रबीरज) परलोक गमन कर गए। पुत्रों की मौत का सदमा सतियावादी के नरम कालजे को बहुत गहरा लगा। कई दिन गशें खा खा कर बेसुरत होती रही। धीरे धीरे पुत्रों की जल्दी मौत का दुख दूर हूआ तो राज तख्त की चिन्ता लग गई। राज को अब किसके सपुर्द करे। भारत राज समाप्त हो रहा था। दो जवान बहूएं अलग रो रही थीं। उन्होंनें दुनीयां का कोई सुख नहीं देखा था। इस लिए इस मुशकिल में सतिआवादी ने भीष्म पितामा जी को पास बुलाया और बड़ी गंभीरता से कहने लगी 'बेटा भीष्म! भगवान को तो पता नहीं क्या सूझता है उस ने मेरे सुखों के खिड़े चमन को बर्बाद कर दिया। मेरा कोई आसरा नहीं रहा। शायद मेरे हंकार का फल मिला है! मैंने भूल की पुत्र के लिए राज मांगा। मेरे घर पुत्र हो गए और मर गए। प्यारे पती का राज समाप्त हो रहा है इसलिए आप कृपा करो। प्रतिज्ञा को तोड़ो। एक तो मेरी दोनों बहूओं को सम्भालो और पुत्रों के जोड़े पैदा करो। यह कोई अधरम नही तेरी भाभी है। दूसरा राज सिंहासन पर बिराजमान होवो। भारत राज कुल कायम रखनी चाहिए।

मत्रेई माता के बचन सुण कर भीष्म पितामा मुसकरा दिए। मुसकरा कर बोले, 'हे माता! देवव्रत को आपणी प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ सकता सूरज चांद और तारे बेशक आपणे असूलों को छोड़ जाएं पर मैं अपराध नहीं करना। ना राज की इच्छा है ना भोग की। प्रभु

का सिमरन करके जीवन के दिन काटता जा रहा हूं। हृदय शांत और सुखी है। यह उत्तर दे कर राज महिल में से निकल गया। सत्यावादी ने भीष्म को बहुत समझाया कहा कि उनकी बात मान जाए पर भीष्म जी धरमी जिऊड़े थे। धरम की खातर सभी सुखों का त्याग कर दिया था।

जब भीष्म जी सत्यावादी के कहने न लगे तब उन्होंने व्यास जी को विधवा राणीयों के बच्चे पैदा करने के लिए कहा, जिन से पाण्डव (पांच पाण्डवों का बाप) धृष्टराष्ट्र अन्धा (कौरवों का बाप) पैदा हुए।

जब कौरव और पाण्डव कुरक्षेत्र के मैदान में लड़ने के लिए आए तो भीष्म पितामा जी कौरवों की सेना के सेनापति थे। चाहे बूढ़े थे पर दस दिन तक भिआनक युद्ध लड़ते रहे। अरजन ने भीष्म के शरीर को तीरों से विंध दिया। बहुत तीर लग जाने पर वह घायल होकर धरती पर गिर गए। जब भीष्म जी धरती पर गिरे तो उनका शरीर पर न लगा, तीरो ने ऊपर उठा लिया। उन को जमीन पर गिरते देख कर हाहाकार मच गई। कौरवों की सेना में भगदड़ मच गई। परन्तु अरजन ने भीषम को धरती पर गिरा देख कर उन के पास गया। अरजन को देख कर भीषम ने कहा, बेटा! मेरा सिर नीचा है। यह ऊंचा रहणा चाहिए। सरहाने की जरुरत है। यह बचन को सुण कर अरजन ने भीषम के माथे पर तीन तीर चलाए। तीर दुसार पार निकल गए। सिर ऊंचा हो गया तीरों की सेज पर जख्मी पड़े भीषम जी को सिआणे जराही मलम पटी करने लगे तो उस ने रोक दिया। और यह बचस किया। मेरा जीवन समाप्त हो चुका है मेरा अन्त समय है। इसलिए मेरे शरीर में से तीर न निकालो और न कोई दवाई बंना। चार पांच दिनों में उतराइण आने वाली

है। मै उतराइण में प्रलोक चला जाऊंगा। भीषम जी के अन्तिम दर्शन करने के लिए धरम पुत्र युधिषटर जी कृषण समेत आए। उन से बचन बिलास करने के पश्चात उतराइण चढ़ने पर आत्मा पंज भूतक शरीर को छोड़ कर प्रलोक गमन कर गई। ऐसी ही भीषण पितामा की कथा है।

३८. गरुड़ की कथा

पुरातन समय में ऋषी कश्यप हुआ है। वह गृहस्थी था और उस की दो स्त्रीयां थी बिनता और कदर। कदरू के पेट में से सांप पैदा हुए थे। उन की गिणती कोई न थी। पर बिनत के कोई पुत्र पैदा नही होता था। वह बहुत दुखी था। उस ने आपणे पती के आगे दुःख प्रगट किया। दुखी दूसरी भी थी। कश्यप ने कहा तेरे यहां पुत्र तो हो सकता है। अगर यज्ञ किया जाए। बिनता ने कहा यज्ञ करो। यज्ञ का प्रबन्ध किया गया। इन्द्र जैसे देवता भी यज्ञ पर आए। उस यज्ञ के साल बाद बिनता के गरभ से दो पुत्र पैदा हुए जो आग और सूरज की तरह तेज वाले थे। एक का नाम गरुड़ और दूसरे का नाम अरुण रखा गया। जब जवान हुए तो गरूड़ कों विष्णु जी ने घोड़ा बणा लिया। उस पर सवारी करने लगे। गरूड़ सभ पक्षीयों से अधिक दौड़ता था। अरूण सूरज का रथवाही था। क्योंकि वह बहुत महांबली था। सूरज उस पर प्रसन्न रहता था।

अरुण और गरूड़ के बाद बिनता को चार पुत्र हुए। जिन के नाम इस प्रकार थे :- ताखरया, अरिसट नेमि, आरुनि और वाहण। यह

www.9009.co.in

छे पुत्र सिआणे ते बली सन, पर सर्पां कोलों इहनां नूं खतरा रहंदा सी। कदरू लोचदी वी सी कि बिनता दे पुत्र मार दित्ते जान, पर उस नूं कोई बहाना ते समां हथ नहीं सी आऊंदा। महांभारत विच कथा आऊंदी है कि बिनता ते कदरु इक दिन किसे गलों बहिस पईयां कि सूरज दा घोड़ा काला है जां चिटा। कदरु कहिंदी सी काला ते बिनता कहिंदी सी चिटा। चलाकी नाल कदरू ने चिटे घोड़े नूं काला साबत करके बिनता नूं दिखा दिता। शरत अनुसार बिनता पुत्रां समेत सौंकण दी गुलाम हो के चलन लगी। प्राधीन सुपने विच वी सुख नहीं पाऊंदा, फिर सौंकण दी प्राधीनगी तां वैसे ही माड़ी हुंदी है। बिनता बहुत दुखी होई, बिनता ने कदरु नूं पुछिआ कि किसे तरां मैं स्वतन्त्र हो सकदी हां। उस ने उतर दिता-'जे स्वरगां (इन्द्र लोक) विचों अमरत दा घोड़ा मंगवा के मैनूं दे देवें तां तूं सुतन्तर ते तेरे पुत्र वी सुतन्त्र हो जानगे, किउंकि मैं अमरत आपने पुत्रां सर्पां नूं पिला दिआंगी, उह अमर हो जाणगे, उहनां नूं कोई नहीं मार सकेगा।

सौंकण दी इस मंग नूं बिनता ने आपने पुत्र गरूड़ अगे प्रगट कीता। गरुड़ बली बोले-'हे माता। तेरे सुखां बदले मैं जान कुरबान करन नूं त्यार हां। अज ही इन्दर लोक पुजदा हां ते अमरत दा घोड़ा ले आऊंदा हां। इह किहड़ी औखी गल है।' इऊं माता नूं तसल्ली दे के गरूड़ इन्दर लोक चलिया गिआ। अमरत दे घोड़े नूं देवते भला किवें चुकण देंदे सन। गरुड़ ते इन्दर दी लड़ाई हो पई। कई दिन महां भयानक युद्ध लड़दे रहे। अन्त विच इन्द्र हार गिआ ते गरूड़ जित गिआ। गरूड़ दी बहादरी देख के इन्द्र हार ते खुश हो गया, खुशी विच आखण लगा-'कोई वर मंगणा है तों मंग लैं।' उस वेले गरुड़ ने इह वर मंगिया, 'इक मैं प्रभु विष्णु

www.9009.co.in

जी की सेवा करता रहूं और दूसरे सांप मेरी खुराक हो जावें!' गरुड़ की यह मांगों को सुनकर इन्द्र ने यही वर दे दिया। वर देने के पश्चात पुछिया, 'इक पासे तूं सपां नुं अमरत दे के अमर कर रिहा हैं दुसरे पासे कहिंदा हैं उह मेरी खुराक हो जान, इह की मामला है?' गरुड़ बोलिया-मैं अमरत दे के माता दे वचन नूं पालना है ते उहनां दी सौंकण कोलों स्वतन्तर करवाना है। जदों मेरा धरम पुरा हो जावेगा बेशक आप ने घोड़ा चुकवा लिआना। मै इस नूं की करना है। हां इंज करो। आदमी मेरे नाल भेजो। जदों मेरी माता इह अमरत दा घोड़ा मेरी मतरई माता कदरू दे हवाले करे तां उस वेले उह रखे उथों उठा के नस आन।

गरुड़ दी इस विऊंत नुं इन्द्र जी मन गए। उहनां ने उस वेले चार दुत गरुड़ दे पिछे मातलोक नु भेज दिते। गरुड़ अमरत दा घोड़ा ले के घर पुजा। आपनी मां दे हवाले कर के खुशीयां प्रापत कीतीयां। बिनता ने उहो घोड़ा जा के कदरू दे हवाले कर दिता ते कदरू ने घड़ा इक थां रख के बिनता नुं सुतन्रता बखश दिती।उधरों सपां दे घड़े दे कोल पुजन तों पहिलां पहिलां ही घोड़ा इन्द्र दे दुत चुक के तीर हो गए। कदरू दे कहिन ते सप अमरइ पीन लगे। उहनां नु घड़ा तां ना लभा, पर जिस थां घड़ा रखिआ होईया सी, थां नु जीभां नाल चटन लग पए। उहनां दीयां जीभां पाट गईयां। उस दिन तों सप दी नसली तौर ते जीभ पाटनी शुरु हो गई।

रमायण विच लिखिया है कि जदों श्री राम चन्द्र जी मेघनाद नाल युद्ध कर रहे सन तां मेघनाद ने देवी शक्ति बल नाल श्री राम चन्द्र नू सैना समेत नागां दी फाही नाल धरती ते सुट लिया। उस वेले नारद ते विष्णु ने गरुड़ नु भेजिया इसने जाकें सारे नाग खा लए ने श्री राम चन्द्र जी नु सैना समेत मरन तों बचाईया।

हिन्दु लोग गरुड़ को भगवान रूप ही मानते हैं। यह सब पक्षीयों का राजा और विष्णु का सेवादार है। इस के दर्शन करने बहुत अच्छे होते हैं।

३९. देवा पण्डा की अरदास

देवा पाहन तारीअले ॥ राम कहत जन कस न तरे ॥

(नामदेव जी)

भगत नामदेव जी कहते हैं कि अगर देवा को पत्थरों ने तार दिया था तो हे बन्दे अगर तुम राम का नाम सिमरन करते हो, कैसे न तरोगे ? पत्थर ने उस को कैसे तारा ? यह सारी कथा ध्यान लगा कर सुणो। देवा एक पुजारन था। उस को देवा पण्डा कहते थे। उदय पुर राज के शाही मन्दिर का वह पुजारी था। वह मन्दिर चतरभुज स्वामी का था। रोज सवेरे उठ कर मूरती को स्नान करवा कर गहने और वस्त्र पहना कर मूरती को विराजमान करवाता उदय पुर का राजा सदा मन्दिर में आता। पूजा पाठ करवाता और प्रशाद चढ़ाता था। चतुरभुज सवामी की मूरती के दरशन किए बिना भोजन नहीं खाता था।

देवनेत से एक दिन राजा समय पर उस मन्दिर न आ सका। पण्डे ने यह सोच कर कि अब राजा नहीं आएगा। देव मूरती के आगे रखी सामग्री को समेटा और जो सजरे फूलों की माला चतरभुज के गले में पड़ी हुई थी जिस को राजा के गले में डाला जाता था उस माला को देवा पण्डे ने आपणे गले में डाल लिया। फुल माला

गले में डाल कर मन्दिर से बाहर निकला। अभी मन्दिर का दरवाजा बंद कर रहा था कि राजा के रथ की आवाज कानों में पढ़ी देवा पंडा छबरा गया। वे ! आ गए ! कह कर पीछे को मुड़ा। मन्दिर का द्वार खोला। सारी सामग्री आपणे स्थान रखी। अगर कोई चीज कम ओर ज्यादा थी उसे तरतीबवार किया। फूलों की माला जो अपने गले में डाली थी उस को उतार कर फिर चतुरभुज के गले में डाल दी थी। इत्नी देर में राजा भी अन्दर आ गए। राजा जी ने अन्दर आते ही श्रद्धा, भगती, प्रेम और दिली उत्साह सें चतुरभुज सवामी जी को डंडवत होकर माथा टेका। पूजा की सामग्री चड़ाई, देवा पन्डा जी ने वेद मन्त्र पढ़कर पूजा की और राजा को अशीरवाद दिया अन्त में सवामी चतुरभुज के गले से माला उतार कर राजा के गले में डाल दी। उन फूलों की माला के साथ दो सफेद बाल दाहड़े के लगे थे। जैसे दाहडा स्वामी जी का था। राजा को शक हो गया कि शायद यह फूल माला देवते के गले में डालने से पहले देवा पडा ने आप गले में डाली हो। यह अनुभव करके राजा ने सरसरी तौर पर पूछा - पंडा जी ! क्या भगवान बूढे हो गए हैं ? उन का दाड़ा सफैद हो गया है ?

हां अन्न दाता ! भगवान सदा बूढे रहते हैं। पन्डा ने रागा को उतर दिया।

मैं तो समझता था कि भगवान पर काल का असर नहीं होता। वह सदा जवान रहते हैं। जवान नहीं बल्कि मासूम बालक की तरह उनकी दाड़ी आती ही नहीं। जैसे श्री कृष्ण जी महाराज के चित्र देखने में आते हैं। यह संसा लग गया।

यह स्वामी जतुरभुज जी जब भी सुबह को दर्शन देते हैं तों उस समय वह एक ऋषी की तरह बूड़े रूप में होते है। दूध सफेद

सफेद दाहड़ा हुंदा। मैं रोज दरशन करदा हां।' पंडा जी ने राजे अगे झूठ बोलिया, उस नू दरशन कदी नहीं सन होए। आपनी इक गलती उते पड़दा पाऊन वासते झुठ बोली जा रिहा सी। राजा ताड़ गया। पर उस ने किहा-'अच्छा! कल मैं दाहड़े समेत स्वामी जी दे दरशन करना चाहुंदा हां। तुसां उनां अगे विनै करनी उह मैनु दरशन देना। मैं धन्यवादी होवांगा।'

'बहुत अच्छा जी, इस तरहां ही हो जावेगा।' पंडा जी दा उतर सी।

राजा चलिया गया। राजे दे मन विच संसा ते करोध सी। उह अशांत मन नाल गया। मन ही मन फैसला कर बैठा कि जे सवेरे स्वामी जी दे दाहड़ा ना होईया तां उह पंडा नू सजाए मौत देवेगा।

उधर पण्डा जी घबरा गए उह सोचन लगे हून की बने, झुठ बोल तां लिया, झुठ बोलना बहुत सौखा है पर इस उते पड़दा पांदा महां कठन हैं। इक दिन जरूर नगा हो जांदा है। अर सदा सच्च रहिंदा है। उहदा हिरदा कम्ब उठिया। शरीर दा लहू जम गया। जीवन दी थां मौत नेड़े आई दिसन लगी। राजा जी दी नंगी ते लिशकदी तलवार उहदीयां अखां दे अगों नहीं सी हटदी।

मौत डन दे डर नाल भै भीत हो के चतुरभुज स्वामी दी मुरती अगे चौंकड़ा मार के बैठ गया। शुद्ध हिरदै नाल कमल पति दा ध्यान धर के अरदास बेनती करन लगा, 'हे प्रभु मैं भुलिया। मेथों भुल होई। मेरे पापी दा उद्धार कर। मैं राजा जी अगे झुठ बोल बैठा! आप जगत दे करता-हरता हो जिथे अगे ऐने अवतार धारे हन उथे इक चिटी दाहड़ी वाले वन के अवतार धार लवो। मैं राजा जी वलों सच्चा हो जावां। गरीब बरामण दी

www.9009.co.in

मौत हो गई तां किन्ना दोष होवेगा। लोक आप दी भगती करनों हट जानगे। नास्तकता जगत विच प्रधानता प्राप्त कर लवेगी। हे दयालु! किरपालु । दईया करो। मेहर करो, मैंनु डुबदे नु तार देउ, रख ला। चाली साल तेरी सेवा कीती है चालीआं सालां विच इक सुआल पाईआ है। मत चकर खा गई, भुल हो गई सुभावक ही कोई गिन मिथ के पाप नहीं कीता।' इस तरहा देवा पण्डा सारी रात अरदास बेनती करदा रिहा। उस ने ना कुछ खाधा न पीता। जा अगले दिन दा तड़कसार होईया तां देखदा है, सच्च मुच चिटा दाहड़ा चतुरभुज दी मुरती दे मुख उते आ गया। सुन्दर रेशम वरगे दूध-चिटे वाल सन। खुशी नाल उछल पिया दंडवत हो के कई वार प्रणाम कीता।वेद मन्त्र नु पड़ के उसतति कीती, मन्दिर दे टल वजाए आरती कीती भगवान दे दरशन हो गए।

सवेरे सवेरे राजा आईआ। जदों उस ने आऊंदियां ही लम्मा चिटा दाहड़ा वेखिआ तां उस नु शंका होई कि बराहमण ने उस नाल चलाकी खेडी है, फरजी वाल गुन्द के जां किसे होर चीज नाल चमड़ाए हन। शंके नु दूर करन बदले राजा अगे होईआ। वाल फड़ के खिचे। जदों दाहड़े दे वाल खिचे तां चतुरभुज दी मुरती मनुख देह (लहू मास) विच पलट गई। वालाँ दी खिच दी पीड़ा नु महिसुस कीता। मुरती ने नक चड़ाईया, राजे ने वाल होर जोर नाल खिचे, कुछ वाल पुटे गए। जिस था ते वाल पुटे गए उस थां तों लहू दी धारा निकल के राजा दे चिट्टे कपड़ियां उते पै गई। कपड़े रंगे गए। राजा शरमिन्दा ते भै भीत हो के त्रबक ते पिछले भार डिग पिया। होश आऊन ते आपनी भुल बखशाऊन वासते तरले भरीया अरदासा बेनतीयां करन लगा। अगों चतुरभुज मुरती ने आखिआ, 'हे राजन! अज तों उदै पुर दा राजा मेरे दरशन नहीं

कर सकता। जितनी देर राज कुमार रहे दरशनों को आए। राज तिलक के पश्चात जो दरशन करने आएगा वह जीवित नहीं रहेगा। यह बोल कर मूरती के चेहरे से दाड़ी अलोप हो गई। जैसी पत्थर की मूरती पहले थी वैसे ही रह गई। इस महान घटना की और इशारा कर के मनुष्य को प्रभू भगती करने झूठ बोलने से रोका।

पर सदीयों से धर्म प्रचार होने, देवताओं के चमत्कार आदि के बावजूद भी मनुष्य झूठ का त्याग नहीं करता। झूठ जीवन में अनेक उलझनें पैदा करता है। आपणे भाईओं मित्रों और समाज में उसको शर्मिदा होना पढ़ता है। एक झूठ के लिए कई झूठ बोलने पढ़ते हैं। फीका पढ़ जाता है। सतगुरु साहिब जी का भी हुकम हे :-

कूड़ निखुटे नानका ओड़क सचि रही ॥

झूठ जो है हवा के बादलों, आग के धुएं की तरह उढ़ जाता है और सत्य जैसे का तेसा कायम रहता है। जेसे सूरज, सूरज है उसके आगे आए बादल और धरती समय से दूर हो जाती है। पर सूरज कायम रहता है। आज के युग में झूठ प्रधान हो रहा है। जो कलजुग की निशानी है। दुखों का घर इसलिए कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए सत्य का ही आसरा लेना चाहिए।

★

www.9009.co.in

कबीर धिआइओ ऐक रंग ।। (बसन्त मः ५)

सतिगुर जी फुरमाते हैं कि भगत कबीर हुआ है, जिस ने एक वाहिगुरु को एक रूप में याद किया। समय के अन्धेरे, ब्राह्मण के जाल उस को प्रभू के नाम से दूर न कर सके।

भगत कबीर जी भारत देश के अन्दर पन्द्रवीं सदी के मध्य में महान भगत हुए हैं उन के समय लोधीयों का राज था और उस समय धरम की लहर चलती थी। हिन्दु समाज के प्रोहत ब्राह्मण सनातनी मत अनुसार जात, पात, गोत करम कांड, बुत पुजा में लगे रहे। लोगों के सच्चे धरम और एक ईश्वर का नहीं बताते थे। बलिक अंधेरे में रखते थे। तौंकि उन का आपणा हलवा मंडा चलता रहे। उन का आपणा जीवन और बच्चों का पेट पलता रहे। बुत पूजा बहुत थी।

उस समय ही हजरत मुहम्मद साहिब का चलाया हुआ इसलाम मति भारत में आ चुका था। मसीतें बण चुकी थीं और बांग दी जाती थी। क्योंकि इसलाम भी देवी देवताओं 'बुतों' के विरुद्ध थी। इस लिए साधू सन्त फकीर सभ भगती मारग की और वढे थे और एक ईश्वर की पूजा करते थे। जैसे कबीर जी का आपणा बचन है :-

कबीर पकरी टेक राम की तुरक रहे पहिचारी ।।

(आसा कबीर)

भगत कबीर जी की जन्म कथा

भगत कबीर जी बावत भाई गुरदास जी ने आपणी रचित वार में ऐसे फुरमाया है।

होई बरकत बनारस रहता रामा नंद गुसाईं ॥
सुबह सवेरे जाग कर जाता गंगा स्नान तक ॥
पहले जा कर लेट गया कबीर वहा ॥
पैरीं टुंब उठालिया बोलहु राम सिख समझाई ॥
जिऊं लोहा पारस छुहे चंदन वास निम महिकाई ॥
पशु परेतहुं देव कर पूरे सतिगुरु दी वडिआई ॥
अचरज नों अचरज मिलें विसमादे विसमाद मिलाई ॥
झरना झरदा निझरहु गुरमुखि बाणी अघड़ घड़ाई ॥
राम कबीरें भेद न भाई ॥ (भाई गुरदास जी)

भाई गुरदास जी फुरमाऊंदे हन कि बनारस शहिर विच इक तिआगी साधु 'रामानंद' रहिन्दा सी, ।जो बड़ा वडा भगत ते बराह्मण गिआनी सी । उसदा नेम सी कि उह अमरत वेले ऊठ के गंगा स्नान करन जाईआ करदा सी । गंगा स्नान करके प्रभु नु याद करदा सी। ऊह हनेरे विच जा रिहा सी कि उस दे पैर नु कुझ छोहिआ, देखिआ कबीर जुलाहिया अगे लमा पिया सी उस नु फड़ के रामा नन्द ने उठाईआ, किऊंकि रामा नन्द 'राम' दा नाम जपदा सी उस ने किहा-उठ भगता राम दा नाम लैं। कबीर उठ बैठा ते राम नाम दा जाप करन लगा ।

रामानन्द दीं छोह ने ऐसा कीता, जैसा पारस लोहे नु सवरन कर दिन्दा है। जिवें चन्दन दे रूख दे कोल निम वी सुगंधी वाली बन जांदी हैं। जो उहदी पशु बिरती सी उह देव बिरती विच बदल गई हैरानी विच हैरान बदल गई । विसमाद विच विसमाद। दसवें दवार सुरत जुड़ी ते बाणी दा प्रकाश होईआ राम ते कबीर इक हो गए। ऐसे महान भगत दी जन्म कथा इऊं हैं-हे भगत जनो !

जिज्ञआसूओ, राम प्यारियो, ब्रितीयाँ इकागर करके सरवन करो।

बनारस के पास गरीब जुलाहियों की अबादी थी। वह क्रित कमाई करके आपनी पालना करते थे। उन जुलाहों में दो नेक स्त्री-पुरुष थे, नीरू और नीमा। नीरू और उनकी धर्म पत्नी कपड़ा त्यार करने का काम करते थे। खड्डी लाई हुई थी। नीरू कपड़ा बुनता और नीमा ताना तना करती थी। इस प्रकार जीवन बतीत करते थे।

नीमा पर ईश्वर ने दया करी। अचानक उस की गोदी हरी भरी हो गई और सम्त १४५५ बि: में जेष्ठ की पूरनमाशी के दिन कबीर जी प्रगटे नीरू ने आपनी पहुंच से बड़ कर खुशी मनाई और उस ने अपने भाईचारे को भोजन छकाया। खुशी और मंगल होते रहे। आपनी क्रित करते रहे।

एक दिन एसा आया जद सारी बरादरी इक्ठी करके रोटी करी और बालक का नाम 'कबीर' रख दिया। कबीर नाम चाव के साथ रखा, जिस के भाव का तो शायद पता नहीं था। भगवान ने आपने भगत को ऊंचा करना था इस लिए नाम भी कबीर (वडा) रखा लिया। नाम रखा गया तो हंसता हुआ आपने इरद गिरद के लोगों हंसाता रहा और आसता आसता वध गया।

भगत का राखा आप प्रभू है। वह ही आपने सेवकों को पालता है। उस समय एसा चक्र चलाया हुआ था कि बनारस के आस पास के सभी गरीब लोक मुसलमान हो चुके थे। कबीर का पिता नीरु भी मुसलमान बन गया था। वह कोई मन करके नहीं बने थे, ना ही उन को धर्म का ज्ञान था, वह तो तलवार से डरते हुए थे, काज़ी और मौलवी बड़े शक्तीशाली बना दिये गए थे। नए बने मुसलमान कबी खुदा कहते कबी राम। मगर गरीब याद प्रमात्मा को करते रहते।

www.9009.co.in

ऐसी दशा में कबीर जी बालकों से खेलते हुए बड़े होते गए। उन की उमर आठ साल हो गई।

भगत जी का भगत प्रगट होणा

सिआणे कहते हैं सूलें जमतीयों के मूंह तीखे होते हैं जिन को प्रभू ने आपणी और लगाना हो, उसको जन्म से ही आपणी और लगा लिया करता है भगत प्रहिलाद ध्रुव आदिक बचपन से ही भगती की और लगे। जवान होकर उन को भगती का प्रकाश हुआ।

इसी प्रकार भगत कबीर ने जब होश सम्भाली, पांच छः साल का हुआ तो आपणे मां बाप के कामों में हाथ बंटाता हुआ उन को हंसता जीवन दान बखशता हुआ कई अनोखे ही कौतक करने लग पढ़ा। अकेले बैठ जाता हाथ जुड़ जाते और आंखें बन्द हो जाती थीं। वह बहुत देर बैठा रहता तो नीमा कई बार हैरान होती और कई बार डर जाती। वह औस पढ़ोस से पूछती 'बहिन मेरे कबीर को पता नहीं क्या हो जाता है, चुपचाप बैठ जाता है।'

जिस से बात करती वह यही कहता आप इस को किसी रमलीए या फकीर को दिखा दो। क्या पता कोई साया न चिमड़ी हो। क्योंकि इस प्रकार ऐसे रोगी ही बैठते हैं। बच्चा तो नहीं बैठ सकता। कहीं यह रोग न बढ़ जाए।

पढ़ोसीयों की बात सुण कर नीमा के पास आकर नीरु को कहती उसको डराती और वह घबराया हुआ जाकर सन्तों फकीरों के आगे बेनती करता। ज्योतिषयों से पूछता। वह उस को तसल्ली देकर घर भेज देते। तेरा बेटा बहुत बड़ा बणेगा। फिकर न करो।

उह घर मुड़ आउंदा, ऐसे तरां दिन लंघ गए। इक दिन ऐसा कौतक होईआ कि जुलाहे डरन लग पऐ कि जरूर रब दा बंदा हे। गल इह होई कि इक अन्नी माई सी उह तुर आई ते कबीर दा ध्यान पासे सी। उह अन्नी माई कबीर दे विच वजी। कबीर ने ध्यान कीता। बच्चा सी, किसे अनोखी वस्तु वल देख रिहा सी। माई को देख सुते सिद्ध उसदे मुखार बिन्द को बचन हो गया।

'माई! तुझे दिखता तां है, फिर अन्नी वांग मेरे विच किऊं वजी?'

'मैं तां अन्नी हां पुतर। जे दिसदा हुन्दा तां तेरे विच किऊं वजदी।'

इह आख के माई जिऊं ही तुरण लगी, उस के कदम पुटिया तां उस दीआ अखां झमकीआं तां रौशनी होर वधी दुंध वांग झोला जिहा पै के अखां खुल गईयां ते उसको साफ दिस पिया उसका तन मन खुशी नाल उछलिया उस ने पिछे मुड़ के पुछिया, 'दसो वे लोको। मैं हुने किस बालक नाल टकराई सी। उह तां कोई वली पीर जापदा है, मैं बारां साल तों अन्नी सां, मेरीयां अखां खुल गईयां मैंनु नजर आ गया।

कबीर जी पास खलोते माई वल वेखी जांदे सन। उह सुन कर हैरान होए ते आखन लगे-की गल माता जी। तुसीं वजे तां मेरे विच सी। की सट लगी जे? मैंनु माफ करोः मैं जान कर तो नही खलोता सी, तुसीं वज गए।'

कबीर जी मासुम बच्चे सन। उन को परमात्मा दीआं बरकत का ज्ञान प्रगट नहीं सी होईया वह तो आपने आप को कबीर नीरू का पुत्र ही जानते थे पर माई ने मासुम बाल रुप भगत कबीर जी के चरण फड़ लिए चरणां की धुड़ी लेकर मथे ते अखां को

www.9009.co.in

लाई तो वह के नेत्रां दीयां सारीयां कमजोरीयां जांदीयां रहीयां। उस ने बच्चे रूप कबीर जी ने चुक लिया। वली। 'वडा पीर....... मेरीयां अखां मैंनु मिल गईयां' कहिन्दी होई बोली गई।

लोक इकठे हो गए, कबीर दी माता नीमां वी आ पुजी। उस ने आ कर माई दे कुछड़ों आपना कबीर चुक लिया। माई ने सारीयां को आपनीयां अख? दी साखी सुनाई तो सारे सुनन वाले हेरान भी हुए तो बालक पर वी शरधा ले आए। उस दिन से कबीर को कोई बुरा शब्द न बोलता। सारे डरने लगे। कई माताओं आपने घर खड़ी हो कर सेवा करन लगीयां ते आपने बिमार बच्चों के मथे ला कर अरोग करन लगीयां। कबीर जी भगत प्रकट हो गए, पर नीरू और नीमा की इतना ज्ञान न हुआ फिर भी पुत्र होने कर के बहुत प्यार करते थे।

(कबीर जी ने बाणी उचारी)

कबीर जी के जीवन दीयां अनेकां साखीआं हन, सारीयां बिआन करनीयां कठन हन। आप वडे प्रतापी भगत सन। आप आठ साल के हुए तो नीरु को बरादरी ने कहा, आपां मुसलमान हुं। इसलाम की शरत अनुसार कबीर की सुनत कर दो। इस तरह से चार भाई तुम्हारे घर आएँगे। उन्हों को रोटी खिला देना साथ में तेरा जस होगा। अब तो भगवान की दया से आप का बेटा जवान होने लगा है।

बरादरी के भाईयों की यह बात सुन कर नीरु के मन में भी ध्यान आ गया और उस ने आपनी घर वाली के साथ सलाह कर के यह पक्का ही फैसला कर लिया कि वह कबीर जी की सुन्नत कर के जरूर शरत की मरयादा को पुरीयां करनगे और भाईयों को रोटी खिलाएंगे। उन्हों ने जोड़ी होई रकम सारी पुत्र की खुशी को

वार देनी मुनासब समझ ली और नठ-भज करके प्रबन्ध करने लगे, जब पुरे प्रबन्ध हो गए तो उन्हों ने मौलवी को बुलाईया। मौलवी आ बैठा और लगा समझाना। गुन दसन लगा कि इसलामी शराह अनुसार इस तरहा करना पड़ता है। मेल इकठा हो गया, देगां चड़ गईयां, चावल उबालने लगे। सभी ने नए नए कपड़े पहने थे और कबीर को भी नए कपड़े पहनाए गए।

पर कबीर सभ कुछ चुप-चाप तमाशा देखता रहा। उस ने अपने प्रभु परमात्मा की तरफ ध्यान किया तो परमात्मा ने अपनी शक्ति के साथ कबीर जी दी जबान से मौलवी को समझाने के लिए ज्ञान किया एक महाँ ऋषि की तरह अठ साल के कबीर जी ने बानी कही, जिस प्रभु परमात्मा की शक्ति और मानवता की एकता प्रकट थी आप ने वचन बोला -

हिन्दु तुरक कहां से आए किस ने राह चलाई ॥
दिल में सोच विचार कर भिशत दोजक किस पाई ॥१॥
काजी तैं कवन कतेब बखानी ॥
पड़त गुनत ऐसे सभ मारे किनहु खबरि न जानी ॥१॥रहाउ॥
शक्ति सनेहु करि सुन्नत करीआ मैं न बदउगा भाई ॥
जउ रे खुदाई मोहि तुरक करेगा आपन ही कटि जाई ॥२॥
सुन्नत कीए तुरकु जे होईगा अउरत का किआ करीए ॥
अरध सरीरी नारि न छोडै ताते हिन्दु ही रहीआ ॥३॥
छाडि कतेब राम भजु बउरे जुलम करत है भारी ॥
कबीरे पयरी टेक राम की तुरक रहे पचिहारी ॥

(आसा कबीर जी)

भगत कबीर जी ने मौलवी जां काजी को संबोधन कर के कहा 'हे काजी! आम तौर और तुम अन्धेरे में जा रहे हो। यह कभी ख्याल

कीता ई कि हिंदू या तुरक (मुसलमान) पहले कहां से आए ? भाव कि हजरत मुहंमम्द साहिब तो छेवीं सदी में हूए, ईसा जी पहली सदी में इसी तरह बाकी के धर्म बने, मगर इन्सान तो लाखों साल पहले होंद में आया चला आता है। किस ने पहले मत चलाया ? कौन नरकों को जाता था और कौन स्वर्गों को ? हे काजे ! जे कर प्रमात्मा को भाता तो में मुससमान होता तो पहले ही सुंनत हो जाती, आप की बात माने कि सुंनत करने से ही मुसलमान हो जाता है तो स्त्री अरध सरीरी मतलब कि जीवन का आधा हिस्सा है जेकर आधे हिस्से ने इस तरह रहना है तो क्यों ना हिंदू रहें। हे काजी ! अच्छा तो है, शराह के टंटे में ना पड़ तो भजन कर, कबीर ने तो राम का आसरा लिया है । और उसे कोई आसरा ना था, भक्ति ही कल्याण का साधन है।

आठ साल के बच्चे की यह बात सुन कर काजी के पांव उखड़ गए। वह बिट बिट देखने लगा, मगर हंकार और तुअस—का पड़दा होने के कारन वह अलाही भेद को जान सका। वोह गुस्से से बोला, ब्राह्मण ने कबीर को बिगाड़ दिया है । जरूर इस को हिन्दु बनाने के लिये शिक्षा दी है। सुना है, यह बैठता भी हिन्दु साधु सन्तों के पास है, काफर....!'

इस तरह बोल कर उस मे कबीर को बाहों पकड़ा। आपने पास ला कर कहा, 'सुनत करानी पड़ेगी।' इसलाम की शरह है।

बालक कबीर मुसकराया, मगर जबान से ना बोला। लोगों में चर्चा हो गई, सभी एक दूसरे की तरफ देखने लगे, उधर पुला जरदे त्यार हो रहे थे। उन्हों की खुशबू आ रही थी, खाने वाले की भूख वध रही थी। नीरू को भी कहते -- 'बच्चे को क्या शिक्षा दी हूई है, यह हिन्दु बालकों के साथ खेलता रह, तुम ने उसे रोका नहीं।'

www.9009.co.in

'हे भरावो ! मैं तो रोकता रहा, पर यह बालक कोई रब्बी पुरुष हैं, जो मेरे गरीब के घर आया। असल में ऐसा होता है कि कई वार मैं गल नही समझदा । वस तो बोलता वी अनोखा और गलाँ वी अनोखीयाँ करता हैं। कई बार ऐसी बातें कहता है, जो सच्ची हो जाती है। मैं क्या करूं गुस्से वी नहीं होता।'

बरादरी के मुखीयों ने आगे हो कर काज़ी को कहा -- 'देखो मीयाँ जी ! ज़बरदसती फड़ के इहनां दी सुनत कर दियो, आम बच्चे रोंदे कुरलाँदे ही तां सुनत कराउंदे हन, बच्चियों दी तरफ नहीं देखीदा, प्रवाह ना करो।'

काज़ी ने गल सुनी, गुस्सा उसको भी था, क्योंकि उस समय इसलाम राज धर्म था, बादशाह मदद करता था। गरीब की कोई सुनवाई नहीं होती थी। काज़ी थोड़ा आगे हूआ उस ने कबीर जी की बाँह फड़ी और झिड़क कर कहा--'सुनत करनी ही पवेगी।'

पैज भगतां दी सदा भगवान रखदा आया है । भगवान ने ऐसा खेल रचाया, जिस को देख कर सभी कबीर को भगवान--भगत मन्न गए।

भगवान की खेड यह थी कि भगवान ने आप प्रगट हो कर असल कबीर को गंगा किनारे भेज दिया और उस की छाया को वहां रहने दिया। काज़ी क्रोध से लाल पीला होता रहा और कबीर की छाया वहाँ मुसक्राती रही।

भोला काज़ी यह ख्याल करता रहा कि मसूम कबीर उस को मखौल करता है असल में कबीर उस समय गंगा कनारे जा कर खेलने लग पड़ा था, वह 'राम' की मौज में मसत था, उह बड़े क्रोध के साथ थपड़ मारने लगा तो उसका हथ खाली गया, वहां कोई नहीं छाया अलोप हो गई।

काज़ी ने अक्खां मलीयाँ उसने देखा तो पता चला कबीर वहाँ कोई नहीं मगर दूसरे लोगों को छाया दिखती रही एसी माया करती कि काज़ी को दिसे कोई ना, मगर सारी बरादरी देखे। काज़ी ने छोर मचा दिया और कहने लगा - 'पकड़ो ! कबीर किधर भाग गया है। बड़ा शरारती बालक है।'

यह सुन कर सभी लोग हंस पड़े, उन्हों में से एक ने ऊंची आवाज़ में कहा - 'वाह काज़ी जी ! कबीर तो आप के पास ही खड़ा है चिंता क्यों करते हो ?'

'काज़ी अन्धा तो नहीं हो गया ?' दूसरा बोला।

'नहीं पागल हो गया !' तीसरा बोला।

'नवां काज़ी बुलाओ' चौथी आवाज़ थी।

एसीयां भांत भांत दीयां आवाज़ां कस्सीयां गईयां। हे भगत जनो भगत दी लाज रखन वासते प्रभू ने आप माइया दा पसारा कीता। सभी जुलाहे काज़ी के खलाफ हो गए ते रौला पै गया, उधरों अन्धेरी आ गई काज़ी साहब आपने राह पये, लोग खान वालीयां नूं वसतूआं सम्भालने लगे। असल कबीर वी आ गया। उस दे हथ विच इक लकड़ी का डंडा था। कबीर राम दा प्यारा 'राम धुनि' गउंदा आउंदा सी।

कबीर जी का बीमार होना

अगले दिन कबीर मंजे उपर लेट गया। उह लेटिया होया पन्जां सतां मिटां पिछों बोल छडदा, 'ओ मेरे राम जी' नीमां ने जाता उस दा बालक कबीरा बीमार हो गया है। ओह वैद जी को बुला लिआई। वैद ब्राह्मण सी उस ने कबीर दी नबज न देखी क्योंकि छूहण ते भिटिया जांदा सी, ओहदा हिंदू धरम भ्रिष्ट हुंदा सी।

वह कुछ शकी सी।

नीमां के बताने पर भैंद आ गया आने के दो कारण थे। एक तो पैसे मिलने का लालच और दूसरा राज्य का डर था। क्योंकि नवाब ने हिन्दु वैदों को हुकम किया हुआ था कि मुसलमान के बताने पर उन के घर जा कर बिमार को देखें और इलाज करें। सो चारपाई के नजदीक हो कर वैद ने देखा। उसका चिरहा देख कर बातें सुन कर वैद ने नतीजा निकाला कि कबीर को शरीरक रोग कोई नहीं था। हां वह मानसिक रोगी जरूर था। वैद जी बोले-कबीर को कोई रोग नहीं। कहीं रात का नींदरा होगा और इसको आराम से सोने दो। यह सो कर उठेगा तो ठीक हो जाएगा।

कबीर बोला-'मैं रोगी नहीं हु' वैद जी! मेरी नबज तो देखो मेरा दिल धड़क रहा है। ऐसा लगता है कोई मुझे कुछ कह रहा है, समझ नहीं आती वैद जी। तुम्हीं देखो।'

वैद भरम में पड़ गया, कहने पर नबज न देखे तो राज्य का डर जो नबज देखे तो कपड़ों सहित स्नान करना पड़ता था डरते हुए ने कबीर की नबज देखनी शुरु कर दी। दस मिनट सजी खबी नाड़ी को टटोलता रहा, पर किसी रोग का उस को पता न लगा। वैद ने माथे पर गुस्से की झलक के साथ नीमां से कहा, 'ऐसे ही मेरे पास भागी गई। लड़के तेरे को तो कोई रोग नहीं यह तो ठीक है। मैं इसको क्या दवाई दु, बेकार तंग किया जा रहा है।

नीमां हथ जोड़ के घबराई हुई कहने लगी-'जी! कल का कुछ खाया पिया नहीं, चारपाई से उठ कर चलता नहीं। यदि मेरे कबीर कोई दुख न हो तो यह खेले, ऐसे क्यों सोया रह।

भोली नीमां! वैद बोला, मैं झुठ नहीं बोलता तेरे कबीर को कोई नहीं, यह बिल्कुल राजी है, चिंता न कर।

नीमां ने तो अभी कोई जवाब न दिया, पर कबीर जी आप ही बोल पड़े -

> कत नही मुलु कत लावउ ।। खोजत तन महि
> ठउर न पावउ ।। १।। लागी होई सु जानै पीर ।।
> राम भगत अनीआले तीर ।। १ ।। रहाउ ।। एक
> भाई देखउ सब नारी ।। किआ जानउ सह कएन
> प्यारी ।। २ ।। कहु कबीर जाकै मसतकि भागु ।।
> सभ परहरि ताकउ मिलै सुहागु ।। ३ ।। १२ ।।
>
> (गउड़ी कबीर जी की)

कबीर जी उतर देते हैं, वैदा! यदि आप को दुख हो तो जरूर तुम दूसरे का दुख भी ढूंढ लो। असल में जिस को पीड़ा हो वही जानता है, दूसरों के दुख को कौन जानता है। सुन वैदा! मुझे राम भगती के अनिआले तीर (मुड़वें कुंडीयों वाले वाल जो पुटियां तन को पाटते हैं) लगे हैं, मेरे शरीर का रोम रोम दुली हुआ है। मैं तो उस के प्यार में पागल हुं।

जैसे किसी राजे की बहुत सी सुन्दर स्त्रियां होती हैं किसे स्त्री को यह नहीं पता होता कि राजा कौन सी स्त्री से बहुत प्यार करता है क्योंकि सब को महसुस होता है कि वह सभी को एक ही नजर से प्यार करता है। वैसे मैं सोचता है कि वह कुदरत में रहने वाले आदमी, पक्षी, पशु, कीड़े मकौड़े सब उसी भगवान की रचना हैं कि वह किस से प्यार करता है। मगर आस सब को है।

यह तो मुकदर की बात है जो शुरु से कुदरत ने भगवान की वडिआई लिखी है तो जरूर वडिआई प्राप्त होगी। वह भी जो पिछले जन्म में कोई अच्छा काम किया है तो, जैसे सभी रानीयाँ

विचों आखर एक भागां वाली रानी को पटरानी कहा जाता है और उस के लड़के को युवराज बनाया जाता है। जो राजा मरने के पश्चात राज का अधकारी होता है। सो वैद जी राम नाम के तीरों ने मुझे घाइल कीता है, जे कोई पुड़ी पास है तां देह।'

माया नाल हित करन वाला वैद, आतमिक ज्ञान से कोरा पण्डत, छोटी उमर के बालक के मुख से बहु-मुले ज्ञान के वचन सुन कर निरा दंग ही ना होया, सगों उस दे हथ जुड़ गए। उस ने कबीर को प्रणाम कीता। ज़ुबानों कहा--'हे बालक ! आप कोई साधारन बालक नहीं, ईश्वर भगत हैं, मैं आप का इलाज नहीं कर सकता। जगत दे दुखीयां इलाज करया करांगा, तूं धरमी अवतार हैं।'

एह कह के वैद नीरू-नीमां दे घरों चला गया, पर दिल विच कबीर वासते श्रद्धा का भाव ज़रूर पैदा हो गया। उह राज आसरे जीवता था राम का प्यारा कबीर।

(कबीर जी ने गुरु धारन करना)

गुरू धारन करने का रवाज था, क्योंकि गुरू के बिना ज्ञान नहीं होता। गुरू का आखरी अर्थ है, अन्धेरे में रोशनी बखशन वाला। जिस तरह विद्या गुरू अखर दसदा है ते आतमिक गुरू आत्मा-प्रमात्मा दा ज्ञान कराता है। गुरबाणी में 'गुरू' की बहुत महानता बताई जाती है। आम अखौत वी है कि गुरू बिनां गत नहीं।

कहते हैं कि कबीर एक दिन भजन गाता हुआ, एक महां-पुरुष पास चला गया। उस के साथ वचन करता रहा, वचन करते हुए उस महां पुरुष ने पूछा - 'हे कबीर! तुसां दा गुरू कौन है ?'

'गुरु महाराज, मैं अजे तक गुरु तां नहीं कोई मनिया। मै

www.9009.co.in

तां राम दा भजन करदा हां। साधू सन्त फकीर के दर्शन करके गुण प्राप्त करदा हां। नाम सुनता और जस करता हूं।

कबीर जी का उत्तर था।

उस समय कबीर बाई तेई वर्ष का ज्वान था और शादी हुई थी, आप की धर्म-पत्नी का नाम 'लोई' था जिस को आम तौर पर 'भाई लोई' कहा जाता है। अनेकों चमत्कार लोग देख चुके थे और सतकार करते थे। लोई भी सोचने लग पड़ी थी कि हमारा पति कुझ सूझवान है। मगर सच्च ही कबीर ने कोई गुरू धारन नहीं किया था। शाइद उन को गुरू कोई मिला नहीं था, क्योंकि वह नीची जाति के थे, उस समय जात-पात का बहुत ख्याल होता था, गुरू ऊंची जाति के होते थे।

'हे भाई कबीरा ! गुरू धारन कर! निगुरा रहना ठीक नहीं।' यह कह कर बजुरग आपने रास्ते चले गया। पर कबीर जी को सोच पड़ गई कि वह किस को आपना गुरू धारन करे? गुरु बी तो कोई अच्छा प्रमात्मा का भगत ही होना चहिये। सो वह घर आया उस का मन खड्डी पर ना लगा। क्रित करदा होया मन ही मन में गुरू की तलाश करने लगा।

कांशी भारत का प्राचीन धारमिक शहर है। वेद काल तों इत्थे धर्म प्रचार होता रहा। गुरु बहुत थे, पर सभ तों वध भक्ति भाव दे चेले रामा नंद जी दे सन। उस मने होए बजुरग भक्ति भाव वाले और दयालु सुभाव दे सन। उन्हों की महिमां बहुत थी।

राम दे भगत कबीर ने मन ही मन में फैसला कर लिय कि उह रामा नन्द जी को ही आपना गुरु धारन करेगा। मगर रामा नन्द जी मानेंगे किस तरह? कबीर जी कई दिन यतन करते रहे

www.9009.co.in

कि रामा नंद जी दे दर्शन करन, मगर कोई मौका ना बनता रहा। उन्हों को कोई नजदीक ना जाने देता। एक दिन उस ने एक अनोखी विउंत सोची, जिस को भाई गुरदास जी ने आपनी वारों में बी लिखा हैं। उन्हों ने सोचा कि रामा नद जी इश्नान करने के लिये गंगा पर 'मणी करण घाट' पर जाया करते हैं, कबीर जी सुबह ही जागे और उस घाट के पउड़ पर जा लेटे।

कबीर जी घाट के पउड़ पर लेटे हुए उडीक करने लगे। उन्हों ने पाँवों की आवाज सुनी तो हुशयार हो गए। जयों ही रामा नंद जी ने पांव रखा तो पाँव कबीर जी के शरीर को लगा तो उहनां ने रामा नंद जी के चरणों की छोह प्राप्त कर लई। अजे कुझ बोले नहीं सन कि रामा नंद जी ने वचन कर दिता--

"'उठ भाई! राम कहो। सौण दा वेला नहीं। एस वेले सौणा ठीक नहीं-'कहो राम।' राम के राम कहु।'

'राम, राम, राम, राम' आखदे होए कबीर जी उठ खलोते ते रस्ते तों पासे हो गए। रामा नन्द जी गंगा इश्नान करन वासते अगे वधे ते गंगा इश्नान करन लग पए। भगत कबीर जी इक पैर ते खलोते होए 'राम, राम' दा जाप करदे रहे। रामा नंद जी जदों गंगा इश्नान करके वापस आए तां कबीर जी ने मुड़ रामा नंद जी को नमशकाक कीती ते आपने राह पया।

उस दिन तों कबीर जी आपना गुरु रामा नंद जी दसन लगे। समय इस तरह दे सन कि धरम दे नाँ उत्ते पाखण्ड दा बहुत जोर सी मुसलमान काजी ते ब्राह्मण लोक दोवें ही धरम दी आड़ विच लोकां नाल ठगी करदे सन। उहनां नाल कबीर जी दी सच्च उत्ते चरचा हो जांदी, कबीर जी चरचा विच सभ नूं नीवां कर दिंदे ते क्रित-विरत वी करदे।

धीरे धीरे कबीर जी भगती की तरफ चले और उन्हों ने भगवे वस्त्र पहन लिया तो बहुत चरचा हुई जात पात के घमंडीयों ने कबीर जी से उन के गुरू के बारे में पुछा तो उन्होंने बड़ी दलेरी के साथ कहा- 'मेरे गुरू रामानन्द जी हैं।'

इस तरह सारी कांशी में कबीर जी और श्री रामानंद जी के चेला-गुरू होने की खबर फैल गई। कई रामानंद जी से पुछने लगे 'कि कबीर जैसा जुलाहा आप ने कैसे शिष्य है?' रामानंद जी सुन कर चुप किए रहते थे।

(रामानंद जी के पास कबीर जी का पेश होना)

हर स्त्री पुरुष का सुभाव है कि जो भी किसी के साथ चरचा करता हुआ हार जाए तो फिर वह इरखा बहुत करता है। कबीर जी पैर पैर पर बराहमण संतों और काजीयों को सच्ची सच्ची बात बताने लगे तो उन्हों को और तो कोई बात न सुझी, निगुरा कह कह कर बदनाम करने लगे। उन्हों ने रामानंद जी से पुछा, 'कि कबीर जुलाहा आप का शिष्य है।

रामानंद जी ने हस कर कहा, 'मेरे शिष्यों में तो कोई नही है, बाकि मालुम नहीं अगर कोई हो। यां वह मन में हमें मान लिया हो।

उन्हें बुला कर पुछो, वह आप का नाम बदनान कर रहा है।' बराहमण का उतर था।

श्री रामानंद जी ने आपने शिष्य को बुला कर कबीर जी के पास भेजा और सन्देश दिया। 'कबीर जी जरूर आन।'

क्योंकि कबीर जी ने दिल से रामानंद जी को आपना गुरू माना था। सन्देश सुनते ही उठ पड़े और आ रामानंद जी को प्रणाम किया। मेरी किस्मत अच्छी है जो गुरू जी आप ने मुझे याद

www.9009.co.in

कीता। मैं बलहारे जांदा हां।' इह आख के कबीर जी ने श्री रामा नंद जी दे आश्रम दी मिटी लै के सिर मत्थे नूं लाई। "साधू दे चरनां दी धूड़ी जन्म जन्म दे रोग कटदी है।"

'हे कबीर इह ब्राह्मण आखदे हन कि तुसीं असां नूं आपने गुरू मनदे हो?' श्री राम नंद जी ने पूछा।

हाँ जी! इस विच की शक, आप मेरे गुरू हो। मैं आप जी दा शिश हां। मैं वी इहो आखदा हां। इह उत्तम कुल ब्राह्मण भला किस तरह झूठ बोल सकते हैं? महाराज मैंनूं खिमां बखशण।'

श्री रामा नंद जी--की करदे हो?

कबीर--कहत कबीर अवर नही कामा ॥
हमरे मन धन राम को नामा ॥

श्री रामा नंद--पर मेरा चेला बने किवें? ना मैं दीखिया दिती। ना कदी मिले।

कबीर जी - इह वी ठीक है, तुसाँ मैंनूं दीखिया नहीं दिती ते ना चेलियां विच बठाया, मगर आप मेरे गुरु जरूर हो। आप की कृप्पा से मैंनूं राम ने आपनी चरनीं लाया है। आप ने कहा था, उठ भाई कहो - 'राम!' मेरी आत्मा ने आवाज़ दिती सी--

किआ मांगउ किछु थिरु नाही ॥ राम नाम रखु मन माही ॥

(धनासरी कबीर जी)

श्री रामा नंद - 'पर इह खेड की है, कुछ पता वी लगे। यह तो ठीक है आप प्रभू के प्यारे। प्रभू के साथ आप का हित है। राम नाम का सिमरन करते हो, ज्ञानी पुरुष हो मगर आप मुझे गुरु किस तरह मानते हो।'

कबीर - हे गुरदेव, यह वारता इस प्रकार है, आप सुनो मैं बताता हूं, आप ने पिछों नआए अनुसार फैसला देना।

www.9009.co.in

श्री रामानंद - हाँ भाई कहो, सारी गल खोहल के ताँ दसो ताँकि कोई पता चले। देखो पण्डत लोक कैसे गुस्से विच हन।

'कबीर - हे गुरदेव ! इक पुरुष ने मैनूं आखया कि गुरू धारन करना चाहीए। गुरू बिनाँ गती नहीं हुंदी। मैं गुरू दी भाल विच फिरिया पर जाति जुलाहा होण करके कोई उत्तम जाति वाला मैनूं चेला बनाउण नूं त्यार नहीं सी। आखर प्रभु दी कृपा नाल फुरना फुरिया कि आप नूं गुरु धारन कीता जाए। मैं गंगा दे घाट ते पउड़ाँ ते जा लेटिया। आप दी चरन छोह प्राप्त कीती ताँ आप ने किहा सी राम के राम कहो! मैं राम किहा!'

कबीर जी दी ज़बानों सच्ची गल सुण के श्री रामा नंद जी गुसाईं सोचन लगे। उहनाँ दी आत्मा ने प्रेरना कीती, ज़बानों निकलया- 'ठीक है आप मेरे चेले हो।' उन्हां ने पंडताँ नूं संबोधन करके आखया, हे पण्डत जनो! कबीर जुलाहा नहीं कबीर राम प्यारा है। असाँ दा चेला है। ठीक आखदा है। राम दा नाम जपन वाला उत्तम पुरुष हुंदा है।

श्री रामा नंद जी गुसाईं दा इह फैसला सुनके कांशी दे पंडत हैरान होए। ओहनाँ नूं कोई गल ना आई, ताँ फोकी चरचा करन लग पए ताँ कबीर जी ने श्री रामानंद जी दे सनमुख हो के उचारया-

जब लगु जोति काइआ महि बरतै आपा पसू न बूझै॥
लालच करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै॥२॥
कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा॥
केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरना॥३॥२॥
जो जनु भाउ भगति कछु जानै ता कउ अचरजु काहो॥
जिउ जलु जल महि पैसि न निकसै तिउ ढुरि मिलिओ जुलाहो॥१॥

(धनासरी कबीर जी)

www.9009.co.in

पिछलीयां दो तुकां दा अरथ भाव है - हे पण्डत! तुसीं तां महां विद्यवान हो पण्डत ह, पर जिहड़ा थोड़ी बहुती प्रभू भक्ति नूं जानदा है, उस वासते एह गल समझनी कोई औखी नहीं कि प्रेमा-भक्ति ऐसी है, जेहड़ी कि इक वसतू नूं दूसरी वसतू नाल मेल करा दिंदी है। जैसे जल विच जल मिलके इक रूप हो जांदा है, तिवें राम प्यारे नाल मिलके जुलाहा वी आपना आप भुल गया है। हउमै दा त्याग हो गया है। राम तों बिना कुझ नहीं सुझदा। आवाज कंनां विच गूंजदी है।

राम सिमरि राम सिमरि राम सिमरि भाई ॥
राम नाम सिमरत बिनु बूडते अधिकाई ॥

(धनासरी कबीर जी)

ऐसे बचन सुणके पण्डत शरमिंदे होके रामानंद जी दे आश्रम विचों तुरदे होए। उहनां नूं कोई गल ना औहड़ी। उह झूठे ते पाखण्डी सन, सच्च अगे अड़ ना सके। आपने गुरू दी खुशी प्राप्त करके भगत कबीर जी ने इह वी तां आख दिता सी--

पंडीआ कवन कुमति तुम लागे ॥
बूडहुगे परवार सकल सिउ राम न जपहु अभागे ॥ रहाउ ॥

(मारू कबीर जी)

महां दानी कबीर जी

चारि पदारथ असट महा सिधि कामधेनु पारजात हरि हरि रुखु ॥
नानक सरनि गही सुख सागर जनम मरन फिरि गरभ न धुखु ॥

(टोडी महला ५)

सतिगुरू पंचम पातशा जी फुरमाउंदे हन -- जगत दे जीव चार पदारथां अठां रिधीयां सिधीयां, कामधेन गऊ, सवरगां दे

पारजात वृक्ष की इच्छा करते हैं क्योंकि यह पदारथ उतम गिने गए हैं! पर सतिगुरु जी कहते हैं जिन्होंने हरी का नाम जपा है, उन को पदारथों में भी नुकसान दहो हुआ और बल्कि साथ ही जनम भी खत्म हो गया, जो भगती की तरफ लगते हैं उन के पिछे माईया के पदारथ घुमते हैं।

नाम देव जी ने नाम की इतनी उसतति की है की पतित भी पवित्र हो जाते हैं -

कउन को कलंकु रहिउ राम नामु लेत ही ॥
पतित पवित भए रामु कहत ही ॥१॥रहाउ॥

सो राम नाम जपन वालों का ऐसा जस होता है। भगत कबीर जी का यश भी सारी कांशी में होन लगा। यहाँ तक कि अनेकां जरुरतमंद पुरष भी उन के पास जाते तो कुछ न कुछ प्राप्त कर के आते। आप महाँ दानी भी बन जाते थे। संत साधु आते तो भोजन खिलाते। कभी कभी दिल करता तो साधुओं को कपड़ा भी दान कर देते। राजे हरीश चन्द्र की तरह उन्हों ने परउपकार करना और हर वस्तु को प्रभु की वस्तु समझना ही अपना धर्म बना लिया था। कई पंडित कई बार कबीर जी की परीक्षा लेने आ जाते थे पर पारबरह्मण की कृपा के साथ उन्हों ने कोई कसर नहीं रहती थी।

कबीर जी मेहनत करते थे। कपड़े बुनते और फिर उस को बजार ले जाते। वहाँ कपड़ा दे कर वस्तुऐं ले कर आते। एक बार कपड़ा ले कर बजार गए। उस समय शायद परमातमा ने अपने भगत की परीक्षा लेनी थी। एक साधु को कबीर जी के आगे ही बजार में खड़ा कर दिया। वह साधु बहुत हो गरीब सा था। उस की शकल सुरत भी मरे जैसी थी, उस ने मिन्नत के साथ

www.9009.co.in

आखिआ-'हे भाई ! मुझे तन ढांपने के लिए वस्त्र चाहिए !

कबीर भगत ने उन की तरफ देखा । वह ठंड से कांपता जा रहा था। उन के मन में कृपा आ गई। कहिने लगे-'कौन सा वस्त्र आपको चाहिए।

साधु-सभी कपड़े धोती, कुड़ता, चादर आदि।

कबीर-सारा थान ले जाओ।

साधु-ऐसा हो तो फिर क्या चाहिए । भगवान आप का पड़दा रखे, मैं बहुत देर से नंगा चल रहा था।

कबीर-राम ने जो दिया है सब ले जाओ। राम का दिया ही पहनते हैं और जरूरतमंदों को दे देते हैं। राम ही सब दाता है।

कबीर ने सारा थान साधु के हवाले दिया और आप बजार की तरफ चल दिया। घर के लिए आटा, घी और गुड़ लेकर जाना था। चिंता करने लगे कि क्या करें ? किस चीज के साथ यह चीजें खरीदे। पैसे पास नहीं थे। 'अच्छा! जैसे भगवान की इच्छा' कह कर घर की ओर खाली हाथ चल पड़े। मन में 'राम नाम' जपते गए।

कबीर जी जब घर पहुंचे तो उन की माता ने कहा-'बेटा! तुम ने कपड़ा तो बहुत कम बुना था, पर चीजें घर बहुत ले के भेज दी। आटा, गुड़ और घी तो दो महीने नहीं खत्म होगा....कितनी कीमत में बेचा।

आपनी मां के मुंह से यह सुन कर कबीर जी हैरान हो गए। उन्हें घर में पहुंचते देर हो गई है और माता जी गुस्से से कह रहे हैं । ओर कोई बात नहीं । वह बिना कुछ कहे अन्दर चले गए तो घर में सच ही आटा, घी और गुड़ देख कर हैरान रह गए। उस समय उन को सुदामे और श्री कृष्ण जी की साखी याद आ गई। राजे बल और गरीब ब्रह्मण की कथा ध्यान कर के मन ही मन

www.9009.co.in

प्रसंन हो गए, तेरे रंगां नूं तूं ही जाणदा हैं !' यह कह कर राम का यश करने लग गए।

कबीर जी का साधूओं को भोजन खिलाना

कबीर जी अब एसी दशा में पुज गए जदों कि नाम सिमरन और साधू सन्तों की संगत के बिनां और किसी काम को हाथ ना लगाते। उन्हों ने भगवा भेख धारन कर लिया। गले में माला डाल ली और खड़तालें लें कर बिशनपदे या भजन गाने लगे। आप के जीवन का निशाना बन गया जिस तरह आप की बाणी है--

संतु मिलै किछु सुनीऐ कहीऐ ॥ मिलै असंत मसटि करि रहीऐ ॥१॥
बाबा बोलना किआ कहीऐ ॥ जैसे रामनाम रवि रहीऐ ॥१॥रहाउ॥
संतन सिउ बोले उपकारी ॥ मूरख सिउ बोले झख मारी ॥ २ ॥
बोलत बोलत बढहि बिकारा ॥ बिनु बोले किआ करे बीचारा ॥ ३ ॥
कहु कबीर छूछा घटु बोलै ॥ भरिआ होइ सु कबहु न डोले ॥

(रागु गोंड कबीर जी)

तिस का भाव अरथ - कबीर जी कहिते हैं। भाई ! जीवन का लाभ यही है कि जब कोई सन्त महात्मा गुणी ज्ञानी मिले तो उस के पास बैठ कर कुझ सुनते और सतझते रहें अगर कोई आप से ज्ञान वाला हो तो उस को कुझ ना कुझ बताईये अगर जेकर कोई बुरी संगत हो तो चुप रहिणा ठीक है। बोलन बाबत आप ने कहा, बोलना तो वोही अच्छा है जो उस प्रमातमा अन्तर आतमें से आपने नाम या यश का बोलना बुलाए तो उसे राम नाम में ही मसत रहिना ठीक है। सन्तां नाल मिलण ते उपकारी बणीदा है। भाव संत सेवा नेकी और धर्म करम बताते हैं अगर जे मूरख नाल बोखण लग पए तां सिर खपावण के बगैर कुझ भी प्राप्त नहीं

होता। इसी लिए बहुता बोलना ठीक नहीं । बहुत बोलने से विकार बढ़ते हैं परंतू साधू सन्तों के साथ चुप रहिना ठीक नहीं। आम मुहावरा है कि मूर्ख खाली घड़े की तरह बहुत बोलता है, जो ज्ञान रूपी जल के साथ भरा होता है वह कम बोलता है भाव कि ज्ञानी परुष उतावले नहीं होते धीरजवान होते हैं इस लिये संत साधू के साथ संगत करने का लाभ होता है।

ऐसे विचारों के कारन कबीर जी के पास गुणी, ज्ञानी और साधू महात्मा इस तरह आया करते जिस तरह उस का घर एक ठाकुर-द्वारा हो । कई बार ऐसी भीड़ जम जाती कि सारा सारा दिन सतसंग होता रहिता। एक दिन बहुत से बैरागी साधू कहीं से घूमते घांमते कबीर जी के दर्शन करने के लिये आ गए क्योंकि सारे कांशी शहिर में इस बात की चरचा थी कि कबीर नाम का जुलाहा विष्नू अवतार है और उन के मुखारबिंद से निकला हूआ हर एक वचन सदा सच्च होता है, जिस समय वह साधू सतसंग करके त्रिपत हुए तो कबीर जी ने उन साधूओं को भोजन के लिये पैसे और वस्त्र आदि दिये तो वह साधू कबीर जी का यश करते हुए जब कांशी में घूमे तो कांशी के ब्राह्मणों ने बहुत क्रोध किया। उन को क्रोध इस बात का था कि एक जुलाहा हो कर इतना यश कराए और नीच जाति से उठ कर पुन्न दान करे। यह ठीक नहीं कि ब्राह्मणों का धर्म और ब्राह्मणों की पूछा खत्म हो जाए। वोह लोग कांशी की गलीयों में कबीर जी की निंदा करने लगे। निंदा सुन कर कबीर के भगत बहुत गुस्से में आए तो उन्हों ने कबीर जी को कहा कि महाराज! कांशी के ब्राह्मण आप की निंद करते हैं जो सुनी नहीं जाती, तो कबीर जी ने निंदा प्रथाए इस तरह वचन किया--

www.9009.co.in

निंदउ निंदउ मोकउ लोगु निंदउ ॥
निंदा जन कउ खरी पिआरी ॥ निंदा बापु निंदा महतारी ॥१॥रहाउ॥
निंदा होइ त बैकुंठि जाईऐ ॥ नामु पदारथु मनहि बसाईऐ ॥
रिदै सुध जउ निंदा होइ ॥ हमरे कपरे निंदकु धोइ ॥१॥
निंदा करै सु हमरा मीतु ॥ निंदक माहि हमारा चीतु ॥
निंदकु सो जो निंदा होरै ॥ हमरा जीवनु निंदकु लोरै ॥२॥
निंदा हमरी प्रेम पिआरु ॥ निंदा हमरा करै उधारु ॥
जन कबीर कउ निंदा सारु ॥ निंदकु डूबा हम उतरे पारि ॥३॥२०॥

(गउड़ी कबीर जी)

तिसदा भाव अर्थ है कि हे मित्र जनो! लोक जो निंदा करदे हन उहनां नूं निंदा करन दिओ। क्यों भाई निंदा मैनूं बड़ी चंगी लगदी है। बेशक लोक निंदा करन। निंदा तां भगतां दी मां हुंदी है क्योंकि जिस दी निंदा होवे उस दे मन विच हंकार नहीं औंदा ते निंदा होण नाल बैकुन्ठ बाईदा है। क्योंकि अंत विच निंदा डुब जाएगी ते असीं पार चले जावांगे। भाव कि निंदा करन वाला सदा झूठ आसरे हुंदा है तां निंदक नूं मूंह दी खाणी पैंदी है।

इस तरां इक दिन ब्राह्मण इकठे हो के कबीर दे पास आए। उहनां दी इच्छा सी कि कबीर नूं ज़लील कीता जाए, भाव बहुत सारे ब्राह्मणां नूं गरीब जुलाहा भला किवें भोजन कराएगा। इह सलाह करके उह कबीर दे घर पुजे ते बड़े गुसे नाल बोले तूं जग्त दा जुलाहा होके ते बैरागी साधूआं नूं भोजन खवाके ब्राह्मणां दी निंदा कीती है सो सानूं भी पक्का भोजन करा ते दक्षणा देह।

कबीर जी इह सुणके मुसकराए ते बोले चंगा जे मेरे राम जी दी इहो इच्छा है तां एसा ही हो जावेगा। आओ बैठो तुसां नूं भोजन छकाया जावेगा। गरीबां नूं जो कुझ भगवान बखशदा है, उह ओहो

कुछ बाँटते जाने हैं। भगवान के घर किसी प्रकार की कमी नहीं। मेरा मोहन सदा मेरा ध्यान रखता है। बच्चों के पास गलतीयां होती हैं तो क्षमा करता है। तुम्हें घबराना नहीं चाहिए, न गुस्सा करना चाहिए तुम तो पुज्य बराहमण हो तुम्हारी सेवा करना तो हर जीव का हक है, आऊ। चरण धो लो और बैठो।

भगत कबीर की बातें सुन कर बराहमण एक तो हैरान हुआ, दूसरे खुश हुए कि कबीर जी के पास भोजन कराने के कोई साधन नहीं हैं और यह हमें बैठा रहा है। जरूर ही मजाक कर के निरादरी करेंगे। वह सभी बैठ गए।

उन को बैठे देख कर बराहमणों की भारी संख्या देख कर, माई लोई' कबीर जी दी धर्म पत्नि कुछ घबराई तो कबीर जी को बुलाकर कहने लगी-'इह तुम ने क्या किया ?'

कबीर-क्या बात ? इतनी घबराई है।

लोई-घबराऊं तो क्या करूं ? घर में तो कुछ नहीं है और आप ने इन को भोजन के बैठा लिया है।

कबीर-मैं नही बैठाया। मैं बैठाने वाला कौन हुं। यह तो सभी मेरे राम जी की महिमा है। उस ने कोई खेल रचाई है। अपनी खेल आप ही देखेगा, जाओ अन्दर और मैं सभी बराहमणों के हाथ धुलाता हुं।

लोई-'अगे की रखोगे ? खाली राम नाम।'

कबीर-'धन्य हो लोई जी ! धन्य हो जो आप ने सच्च कहा, राम नाम ही इन के आगे रखुंगा। सारा प्रताप तो राम नाम का है। साफ घड़े में मैंने मिठाई ला कर रखी थी। बेरागी साधु को भोजन करवाना था वह आने से पहले ही अलोप हो गए थे। वही इन को खिला देते हैं।

लोई - 'वाह् राम दे भगत !' यह कहि कर लोई अन्दर को चली गई। अन्दर गई तो अक्खां मल मल के देखदी होई हैरान थी। कबीर जी के राम ने ऐसी माया पसारी कि माई लोई को सारा अन्दर मठाई से भरा हुआ नज़र आया। चारपाई, फरश और हर जगह पर मठाई से भरे लगे लगाए थाल रखे हुए थे और हर एक वरक पर लिखा था - 'राम नाम !' माई लोई डर कर बाहर आ गई। खुशी से ज्यादा उन को हैरानी बहुत हुई।

माई लोई ने कबीर जी की बहुत महिमा देखी थी, फिर भी भुलेखे में आ जाया करती थी। माया का पड़दा पासे नहीं होता था, वोह झौला खा जाया करती थी।

कबीर जी ने आपने चेलों और श्रदालू पुरुषों को आवाज़ दी। आए और कहा - 'अंदर जाओ और थाल उठा कर ले आओ ! राम नाम का भोजन कराओ, ब्राह्मण भूखे और प्यासे हैं।

कबीर जी आप ब्राह्मणों की पंगत में खड़े रहे और उन्हों के श्रदालू अन्दरों थाल लया लया कर उन के आगे रखने लगे तो ब्राह्मण बहुत हैरान और शरमिंदा हुए। थालों के उपर पड़े वरकों पर लिखा था 'राम नाम' वोह घबरा गए।

कबीर जी आपने राम को याद करते हुए बिलावल राग में आपनें राम की महिमा गाइन करने लगे।

चरन कमल जा कै रिदै बसहि सो जनु किउ डोलै देव ॥
मानौ सभ सुख नउनिधि ताकै सहजि सहजि जसु बोलै देव ॥ रहाउ ॥
तब इह मति जउ सभ महि पेखै कुटल गांठि जब खोलै देव ॥
बारंबार माइआ ते अटकै लै नरजा मनु तोलै देव ॥
जह उहु जाइ तही सुखु पावै माइआ तासु न झोलै देव ॥
कहि कबीर मेरा मनु मानिआ राम प्रीति कीओ लै देव ॥

www.9009.co.in

ब्राह्मणों ने भोजन छक लिया। प्रसंन हो कर पेट भर कर भोजन किया। कबीर जी ने एक एक रुपया दक्षना बी दी जाने लगे ब्राह्मणों को बेनती करता रहा कि वह कक्षा करते जाएं। अनजान जेहा आदमी और गरीब जुलाहा हां । कबीर जी की भक्ति, राम भरोसा और निरमानता को देख कर ब्राह्मणों ने आगे से बदनाम करना छोड़ दिया। भगत कबीर जी का एक लड़का कमाल और लड़की कमाली थी। उन की पत्नी माई लोई बी भक्ति करने लग पड़ी। सभी इस तरह प्रभू पर भरोसा करते थे।

जै देउ नामा बिप सुदामा तिन कउ क्रिपा भई है अपार ॥
कहि कबीर तुम संमृथ दाते चारि पदारथ देत न बार ॥

(बिलावलु कबीर जी)

संसार असथिर है

जद लोग माली तौर पर तंग हों, जिस समय मनुष की माली हालत बुरी हो तो वह देवी देवतों का या रब्ब का प्यारा हो जाता है तां कि उस को सुख और शांती अगर राज के रास्ते प्राप्त नहीं होती तो किसी रब्बी शक्ति के रास्ते ही उन्हों पर मेहर हो जाए, लोग भटकते फिरते हैं। जिस तरह प्यासा मनुष पानी वाली जगह की तरफ श्रद्धा से देखता है, इसी तरह जिज्ञासू सुखी जीवन हासल करने के लिए चात्रिक की न्याईं उधर को भागता है जिस तरफ ईश्वर के भगत का डेरा होता है ताकि सुख प्राप्त हो।

कबीर अब आतमिक ज्ञान का शिश ही ना रहा । सगों और पण्डतों की तरह कांशी में ब्रह्म ज्ञानी बन गया । कई श्रदालू इन के शिश बन गए। हर रोज कबीर जी के पास साधू संतों भीड़ लगी रहती, ज्ञान चरचा होती रहती । कईयों के स्वाल

www.9009.co.in

खोहल के दसदे सन। जिस वी किसे जज्ञासु नूं कबीर जी ज्ञान किरन बखशदे उस नूं बाणी राहीं बखशदे। एसे करके कबीर दी बहुत सारी बाणी है जो उलझणां ते अटकां नूं दूर करन दा ढंग दसदी है, कबीर दी बाणी अन्धेरे विच चानण करदी है, जीवव बखशदी है, मुरदा रूहां नूं उमाह ते बल बखशदी है।

इक दिन जो जज्ञासु आए उहनां दे हृदय विच संसे दियां गंढां सन, उहनां ने कबीर जी अगे स्वाल कीता--

'हे कबीर! इह दसो कि मनुष दा इस जगत नाल की सबन्ध है। जीव नूं कलयुग विच की करना चाहीदा है। जीव जमां दे डंड तों किवें बचे, इह मारग बताईए। असां लोकां नूं कुझ नहीं सुझदा।

कबीर जी ने ओहनां नूं उत्तर इयों दिता--

ऐसो इहु संसारु पेखना रहनु न कोऊ पई है रे॥
सूधे सूधे रेगि चलहु तुम नतर कुधका दिवाई है रे॥ १॥ रहाउ॥

इस दा प्रमारथ इह है - ओ भाई राम जनो! जो इह संसार देखदे जो इस विच जिने जीन पशु, पन्छी, मनुष्य हन इह सदा नहीं रहणगे। औंदे ते तुरदे जांदे हन। की राजा की कंगला मौत दा भारी हथ सारियां दे दिलां दी धड़कन नूं बन्द कर लैंदा है। इस संसार विच जीव नूं सिधे राह चलणा चाहीदा है तां कि जम दा धक्का ना लगे। सिधे राह तों भाव है जीवन नूं चंगा बनाऊण वासते गुरू जां कोई महां पुरुष जो उपदेश करदा है उसदे उपदेशां उते अमल करना, ज्ञान सुणन जां चेते करन नाल जीव आतमा मुक्त नहीं हुंदी, ज्ञान नूं अमल विच लयाउणा जरूरी है।

बारे बूढे त ने भईआ सभ हू जमु लै जई है रे॥
मानसु बपुरा मूसा कीनो मीचु बिलईआ खई है रे॥१॥

www.9009.co.in

हे राम जनो ! बाल, बुढे, जुआन सारियां नूं जम ने लै जाणा है। मनुष चूहे दी निआई है अते होणी (मौत) बिली दी निआई। चूहे (मनुष) नूं होणी रूप बिली खाई जांदी है । प्रमात्मां ने इह बिली इस वासते छडी है कि संसार विच इक्कठ ना हो जावे। पिपल दे पतियां वांग पुराणे पत्ते सुक के झड़ जांदे ने उहनां दी थां नवें फुट पैंदे ने। मरना सच्च ते जीउणा झूठ है।

धनवंता अरु निरधन मनई ताकी कछू न कानी रे॥
राजा परजा सम करि मारै ऐसो कालु बडानी रे॥२॥

उह प्रमात्मा इस गलों बहुत चंगा है उह किसे नाल लिहाज़ नहीं करदा। अमीर ते गरीब नूं इक आंख नाल वेखदा है। उस नूं किसे मुछंदगी नहीं। उह राजे ते परजा दे मनुखां नूं इको समान मारदा है। इह काल (मौत) दी वडयाई है भाव कि भूमीए, राजे, सैनिक, धनाढ, कंगाल, अनपढ़ ते पढ़े लिखे सभ ने जरूर मरना है। सो जिज्ञासूओ ! मौत नूं अटल समझो।

हरि के सेवक जो हरि भाए तिन्की कथा निरारी रे॥
आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रहम संगारी रे॥ ३॥

'हे भाई राम जनो !' कबीर जी बोले, पर आम लोकां नालों हरी दे संतां, हरी भगतां दी मौत दा फरक है । दुनियां दी निगाह विच संत ते भगत वी मरदे हन दुनीयां संतां भगतां दियां पंज भूतक देहां नूं चुक के शमशान भूमी विच लिजा के अगन भेट करदी है। पर हरि दे संत मरदे नहीं। इह अमर हो जांदे ने पंज तत दे शरीर नूं ज़रूर बदलदे ने। आवागौण दे झं ट तों छुटकारा पा लैंदे हन क्योंकि पारब्रह्म दी शरन लगे होए हन। जो राम भगत हन उहनां नूं मौत कोलों भै नहीं औंदा उह तां सगों मौत नूं सददे हन, क्योंकि मरन तों (देह छडण) बिनां जीव ते प्रमात्मां नूं नहीं मिलणा।

कबीर - जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनंदु ॥
मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु ॥

राम जनो ! राम नाम का सिमरन करो, फिर मौत का डर नहीं रहेगा। आप मौत को आवाज मारेंगे, मगर मौत आपके नजदीक नहीं आएगी।

पुत्र कलत्र लछिमी माइआ इहै तजहु जीअ जानी रे॥
कहतु कबीर सुनहु रे संतहु मिलि है सारिंगपानी रे॥

हे राम जनो ! धीयां, पुत्र, स्त्री, माया, सभ को जीव ने छड जाना है। अगर आपने होते ही इन की तरफ से मोह कम करके भगवान् के साथ ब्रिती जोड़ ले तो कबीर जी की यह बात सच्च मानो कि हरी के साथ मिल जाओगे - भाव मुक्त हो जाओगे। हर स्वास के साथ राम नाम सिमरन करना चाहियें।

कबीर जी ने और फुरमाया है।

कासी ते धुनि उपजै धुनि कासी जाई॥
कासी फूटी पंडिता धुनि कहाँ समाई॥

(बिलावलु कबीर जी)

देखो हे भगत जनो ! घड़याल से आवाज़ पैदा होती है और उस में ही अलोप हो जाती है। जब कांशी (घड़याल) टूट जाता है तो अवाज़ उस के साथ ही खत्म हो जाती है। इसी तरह जगत थिर भी नहीं, मगर है भी। हर वस्तु बनती है। अंडज, जेरज, सेतज और उतभुज जो जीवों के ततों से उत्पन होने के कारन है,-वह जारी रहते हैं, जीव जन्म लेते और खत्म हो कर तत्वों के रूप में काइम रहते हैं।

सो हे भगत जनो ! तत्वों को कभी अमर नहीं मान्ना चाहिए, अमर तो आत्मा है, क्योंकि वह प्रमात्मा की अन्श है। माया का पसारा हो कर दिखता नहीं, अगर मिथया समझ कर माया

का त्याग करो । भाव ना समझें तो कुदरती है कि मन विसमाद में आ जाएगा । मन में ही सभी कारज होते हैं । सेवा ही जीवन का नशाना है, जगइ में ना कुझ आता दिखता है और ना जाता ।

आवत कछू न दीसई नह दीसै जात ॥
जह उपजै बिनसै तही जैसे पुरिवन पात ॥२॥
मिथिआ करि माइआ तजी सुख सहज बीचारि ॥
कहि कबीर सेवा करहु मन मंझि मुरारि ॥ (बिलावलु कबीर जी)

ज़ात पात और कबीर जी

गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥ १ ॥
कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥
बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥१॥रहाउ॥

भगत कबीर जी राम के उपाशक थे । उन का राजा दसर्थ का बेटा राम नहीं था, वोह राम जो घट घट में रम रहा है। आप कांशी में रहि कर भारती संसक्रिती के साथ प्यार करते थे और नितय-क्रम लग-पग हिंदू सन्तों जैसे करते थे । आप सुबह जाग कर गन्गा पर शनान करने जाया करते थे, और आते आते रास्ते में राम नाम का जाप करते आते थे ।

एक दिन सुबह ही शनान करने गए तो एक ब्राह्मण जो शनान करने आया था, कबीर जी को देख कर बुड़-बुड़ करने लग पड़ा कि उस का शनान ऐवें चला गया, नीच ज़ात का जुलाहा माथे लग गया ।

उस की बेसमझी और जात पात का वतीरा देख कर भगत जी को

www.9009.co.in

हासा आ गया ते ब्राह्मण नाल इस मामले ते फैसले करन ते तुल गए आप घाट उते खलोते रहे। जदों ब्राह्मण श्नान करके आया तां बोले 'पण्डत मुकंदा जी ! राम राम !

'है तेरी चंडाल दी ! तूं अजे वी किते गया मरिया नहीं।'

कबीर जी - 'महाराज जांदा किवें ! तुसीं श्नान करके जांदे तां हेठां गंगा विच श्नान करदा। की पता गंगा मईया सारी भिटी जांदी तां तुसीं लोक श्नान किवें करदे।' इक वार होर श्नान कर आओ।'

सयाल दे दिन सन। ब्राह्मण ठरिया होया दंदो-ड़िके लै रिहा सी, उह औखा सुखाला गया ते मुड़ श्नान करके आया, पर कबीर जी ओथे खलोते मुड़ उस दे मथे लगे। एने नूं होर पंडत आ गए रौला पै गया ते भीड़ हो गई। भीड़ नूं देख के ब्राह्मणां दे करोप कोलों भगत जी डरे नहीं डरदे वी किवें उहनां दा राखा राम सी, आपने राम उते भरोसा रखदे सन।

'कबीर ! इह तुसां वासते ठीक नहीं जो पंडतां दा धरम भ्रिष्ट करदे हो। चंगा है कि तुसीं बाहर किसे खूह ते श्नान कर लिया करो यां हेठां जा के शूदर घाट उते श्नान कर लिया करो, लड़ना झगड़ना ठीक नहीं।

इक सियाणे पंडत ने झगड़ा निबेड़न वासते आखया।

उस दी गल सुन के भगत कबीर जी हस पए ते उहना आखया--

गरभ वास महि कुलु नही जाती॥
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती॥१॥
कहु रे पंडित बामन कब होए॥
बामन कहि कहि जनमु मत खोए॥१॥रहाउ॥

हे ब्राह्मण देवता जी ! मां दे पेट विच जदों तूं सैं, ओदों तां

www.9009.co.in

ना कोई कुल सी ना जात - ब्रहमां दे बनाए होए सारे जीव जन्म लैंदे ने। भला इह तां दस कि ब्राह्मण कदों दे होए सी? कदों पहिल होई की शुरू तों ब्राह्मण बणा के भेजिया है? ऐसा नहीं है, ऐवें ब्राह्मण ब्राह्मण आखके, क्यों जन्म गवाउंदे हो? जन्म करके ना कोई शूदर हैं ना ब्राहमण। इह सभ संसार दे भुलेखे ते वंडां लोकां नूं लुटन वासते उतपंन कीतीयां होईयां हन।

कबीर जी दा इह बजन सुणके ब्राहमण चुप हो गए, पर मुकंद वी बड़ा झगड़लू सी, उस नूं वी पुठीयां सिधीयां बहिसां करदियां होयां पंजाह साल बीत गए सन। उह आखण लगा - देख क्यों पुठीयां गलां करदा हैं। लोकां नूं कुराहे पाउण दा की लाभ। मैं ब्राहमण हां मेरा बाप दादा ते नकड़ दादा ब्राहमण सन। मेरी मां ब्राहमणी सी। माता ब्राहमण ते बाप ब्राहमण होण ते मैं ब्राहमण हां।

कबीर हस पया - हस के उसदा मोढा फड़के बोलिया--

जे तूं ब्राहमणु ब्राहमणी जाइया॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ॥२॥
तुम कत ब्राहमण हम कत शूद॥
हम कत लेहू तुम कत दूध॥३॥

तिस दा भाव अरथ - जे तूं ब्राहमणी दे पेटों ब्राहमण जंमिआं हैं, तां तूं जन्म किसे होर राहों क्यों नहीं लिया? उस राह आया जिस राह आम लोक जन्म लैंदे हन। कबीर जी दा भाव है कि शूदर वैश, खत्री ते ब्राहमण सारे नौं महीने पूरे मां दे ग्रभ विच रहिंदे हन। प्रभू सभ नूं पालदा ते जदों नौं महीने पूरे हुंदे ने तां भगवान ने जो राह बच्चे दे बाहर आउण लई बणाया है उसे राह बाहर औंदा है। जे भगवान ने जाती दी वंड कीती हुंदी जां उच्चे ते नीवें पैदा

www.9009.co.in

कीये होते तो उच्ची जातों के जन्म के लिये कोई और रास्ता बनाया होता। जे कर कोई और रास्ता नहीं तो समझें कि सभी जीव एक जैसे हैं, कोई अछूत नहीं तो कोई सवर्न नहीं । परुष करमों के साथ ऊंचे और नीचे होते हैं। कबीर जी आप ही स्वाल करके उस को सम्बोधन करके कहते हैं - सुन मुकन्दे ! तुम किस तरह ब्राह्मण हो, तो मैं किस तरह शूदर हूं आप की नाड़ीयों में भी वही खून है जो मेरी नाड़ीयों में है, संसार के सभी मनुषों का खून, मास, हाड, केस, दांत और जीबा एक ही जैसे हैं।

कहु कबीर जो ब्रहम बीचारै ॥
से ब्राह्मण कहीअत है हमारै ॥४॥

जो प्रमात्मां का ख्याल करता है वही रब्बी ज्ञान का ज्ञानी है हम तो उसी को ब्राह्मण कहते हैं जो जन्म करके किसी को ब्राह्मण नहीं कहा जाता। जो विद्या पढ़ कर ब्रह्म को जाने, उस का सिमरन करे, उस की बनाई सृष्टी के जीवों को प्यार करे असल में वही ब्राह्मण है। छूत छात को मानने वाला पण्डत, यह ब्राह्मण नहीं भेखी लोग हैं, ठग हैं, जो भगवान् से ठगी करना नहीं छोड़ते ।

कबीर जी के इन वचनों का उत्तर मुकन्दे पण्डित के पास नहीं था। वह तः जन्म करके ब्राह्मण था। अकेले मुकन्दा पण्डित के पास ही नहीं बलिक संसार का स्त्री पुरुष इस अटल सच्चाई के उलट कोई दलील नहीं दे सकता। सभी जातों, गोतों, कुलों और मतों को काइम करने वाला पुरुष हैं। आपनी इच्छा के लिये यह काम किया। सच्चाई को सुन कर बनारस के ब्राह्मण कल्प गए, क्योंकि जो अन्धेरे की चादर तान कर वोह भोले भाले लोगों को लूट रहे थे, उस अंधेरे को कबीर जी उठा रहे थे। वह सभी शंके दूर करके क्रोड़ों मनुषों का पुनर

www.9009.co.in

जन्म करना चाहते थे, उन्हों ने पण्डितों को क्रोध के साथ सच सुनाया वह बहुत दुखी हो कर आपो आपने रास्ते चल पड़े ।

पण्डित फिर गंगा में स्नान करने के लिये चल पड़ा । भूले ब्राह्मण को रास्ते पर लाने के लिये कबीर के राम ने कबीर की सहायता की । जिस समय मुकंदा गंगा में स्नान करने लगा तो भगवान् ने माया के छल से कबीर को मुकन्दे के साथ स्नान करते हुए दरसाया । यह देख कर मुकंदा घबरा गया और हाथ पांव मारने लगा। जब मुकन्दे ने दूसरी तर्फ देखा तो उधर भी कबीर खड़ा हंस रहा था। जिधर को भी वोह देखे उधर ही कबीर । मुकन्दा हैरान हो कर घबरा गया, वह तरलीमछी होता हुआ जिस समय बाहर आने लगा तो उस का पांव फिसल गया तो वह सिर के भार गंगा में जा गिरा। उस समय कबीर रूप ब्राह्मण ने उस को बोच लिया और खड़ा करके कहा, 'मुकंद ! दिल के भरम छोड़ दे, हर एक मनुष मनुष है। ज़ात करके कोई शूदर नहीं। कबीर जी के चरनों पर गिर पड़ ।'

सच्च मुकंदे के मन पर ना बैठा वह क्रोध से लाल पीला हुआ घर की तरफ भागा। वह घर गया तो उस को पूजा पाठ और खाना पीना भूल गया, वोह कबीर जी को गाली नकालने लगा।

खैर, पण्डिताणी ने उन को कुछ धीरज बंधाई, सत्कार के साथ उसे बठाया और भोजन खाने की प्रेरना दी, वह उठ कर बैठ गया, जभ उठा, थाली उठा कर फैंक दी और चौंतरे से बाहर हो गया । वह कबीर जी को गालीं नकालने लगा । उन की यह दशा देख कर ब्राह्मणी हैरान ही ना हुई बल्कि डर गई । उस ने समझा कि उस के पति को सरसाम हो गया और पागल हो गया है । उस को बिपता

www.9009.co.in

पै गई। उह घाबर के पुछण लगी - 'की गल होई ? कबीर जी नूं क्यों गाहलां कढी जांदे हो उह तां प्रभू भगत है।'

'मेरे नाल बैठा रोटी खा रिहा सी नीच ज़ात मेरे नाल लगदा है।' मुकंदे इह आखया तां पण्डताणी दी तां खानियों गई। उह आखन लगी 'हे भगवान ! इह की माया वरती, इह पागल हो गया। मै बैठी सां' ना कबीर आया ना उस दा प्रछावां, मै इकली सां। इह की आखदे हो तुसां नूं वहिम पै गया।'

इह सुणके मुकंदा कपड़ियां तों बाहर हो गया ते बड़े क्रोध नाल आखण लगा--

'तैनूं नहीं दिसदा तूं अन्नी हैं। कबीर मेरे नाल बैठा खा रिहा सी, मेरे कोल खलोता हुण वी कबीर है, परछावें वांग मेरे नाल चंबड़ गया है ! मैं की करां शूदर कबीर ! चुड़ेल तूं नहीं जाणदी।'

पंडताणी - 'की तुसीं उहदे नाल लड़ पए सी।'

मुकन्दा - 'आहो ! उह सवेरे मथे लगा सी, इक वार नहीं कई वार।

पंडताणी - 'उस कोलों खिमा मंग लवो, उह हरी भगत है, प्रमात्मा उस दी सुणदा है।'

मुकन्दा - 'हैं इह की आखया ! ब्राहमण शूदर कोलों खिमा मंगे। ब्राहमण शूदर दी पैरीं पवे ? हे प्रभू ! कलयुग ! हनेर ! इह नहीं हो सकदा। मैं कबीर दा सिर पाड़ देणा है। हट जा परे, मैं ओहनूं मार दिआंगा। उह जादूगर नहीं, मेरे मन दा डर है। मेरीयां अक्खां (कबीर जी नूं) देख रहीयां हन। मैं मार दयांगा। यह शूदर है। ब्राह्मण नहीं बन सकदा।' इह

www.9009.co.in

कह कर मुकन्दा बाहर को चला गया और हाथ में वटा ले गया अनीखी ही बात हुई।

आगे आगे पण्डित मुकंदा और पिछे उस की स्त्री दोनों ही भागे जाते थे। स्त्री ने शोर मचाया 'पकड़ो! मेरा पति पागल हो गया है, पकड़ो पकड़ो किसी का खून कर दे गा, मैं अभागन क्या करूंगी। इस को पकड लो।'

स्त्री के शोर मचाने के कारन पण्डित मुकंदे के पिछे लोग भागने लगे। लोगों को पिछे आते देख कर मुकंदा और जोर से भागने लगा। भागते हुए धोती खुल गई उसको इकट्ठी करते हुए भी भागा गया शोर मच गया। 'मुकंदा पागल हो गया।' की अवाज हर उस मनुष्य जबान पर था जिस ने मुकन्दे को देखा था, लोग इकट्ठे हो गये और शोर बड़ गया।

कबीर जी स्नान करके अभी घर नहीं आए थे, अभी रास्ते में ही जा रहे थे कि मुकन्दे का उन्हों के साथ मिलाप हो गया। मकंदे ने हाथ में पत्थर पकड़ा हुआ था। कबीर जी को देखते ही जोर से वह पत्थर कबीर जी को मारा। पत्थर माथे में लगा, पत्थर टूट कर जमीन पर जा गिरा, मगर कबीर जी को चोट ना लगी, ना कोई दाग पड़ा। इस तरह लगा जिस तरह कोई फूल लगा हो, खून ना निकला। लोग देख कर हैरान हुए, पहले तो यह समझा, शायद कबीर जी गिर पड़ेंगे।

कबीर जी को क्रोध नहीं आया। वोह आपने सुभाव के अनुसार मुसकरा पए और बोले क्यों पण्डित जी! इतने क्रोधवान क्यों हो? यह बात कहने की देर थी कि मुकंदे का क्रोध हट गया, उसको ज्ञान हो गया। उसके कपाट खुल गए, उसकी जन्म जन्म की सोई आत्मा की कालख धोती गई। कुन्दर हो कर पण्डित मुकंदा कबीर जी के पांवों पर गिर पड़ा, पांव पकड़ लिये, लोग नजदीक पहुंच गए और चुप चाप

www.9009.co.in

देखने लगे क्या चमत्कार होता है ।

कबीर जी ने मुकंदे को चरनों से उठाया और कहा - 'मुकंदे ! उठ राम कहो । राम ने आप पर कृपा कीती है, राम की महमाँ के गुण गाइन करया कर ।'

उस को सम्बोधन करते हुए कबीर जी ने फुरमाइआ :-

हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे ।
तुम् तउ बेद पड़हु गाइत्री गोबिंद रिदै हमारे ।।१।।
मेरी जिहबा बिसनु नैन नाराइन हिरदै बसहि गोबिंदा,
जम दुआर जब पूछसि बवरे तब किआ कहसि मुकंदा ।।१।।रहाउ।।
हम गोरू तुम गुआर गुसाईं जनम जनम रखवारे ।।
कबहूं न पारि उतारि चराइहु कैसे खसम हमारे ।।
तूं बामुन मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना ।।
तुम् तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना ।। (आसा)

प्रमारथ - पण्डितो ! हमारे घर तो सूत्र की तानियाँ तनी जाती हैं । आप दो कुरतीयां सूतर गले में डाल कर कहते हो जनेऊ डाला हुआ है, आप तो सिरफ एक तंद ही पाई फिरते हो जो हम तानियाँ उठाई फिरते हैं ।

मेरी ज़बान तो प्रभू का नाम जपती है और आँखों में नाराइण बसता है । हे मुकंदे ! जब प्रमात्मां आप से पूछेगा तो बताओ आप क्या उत्तर देवेंगे ?

हम तो गंवार थे, तो आप हमारे राखे मालक बने रहे, मगर हज़ारों वर्षों से आप ने हमारा पारउतारा नी किया तुम तो ब्राह्मण हो, मैं कांशी का जुलाहा हां । मेरे ज्ञान को समझ । आप सदा राजों का ध्यान रखते हो और उन की तरफ देखते हो, मगर हमारा ध्यान प्रभू प्रमातमां की तरफ हैं । हम तो रात दिन उन से मांगते हैं ।

www.9009.co.in

इस तरह मुकंदे पण्डित को ज्ञान हुआ और वह राज़ी बाज़ी हो कर पण्डिताणी के साथ गया। आगे से कबीर जी का भगत बन गया। ऐसो राम की शक्ति।

--o--

बादशाह ने कबीर जी को सज़ा देनी

नरू मरै नरु कानि ना आवै ॥ पसू मरै दस दस काज सवारै॥ १॥ अपने करम की गति मै किआ जानउ ॥ मै किआ जानउ बाबा रे॥ १॥ रहाउ॥ हाड जले जैसे लकरी का तूला ॥ केस जले जैसे घास का पूला॥ २॥ कहु कबीर तब ही नरु जागै ॥ जम का डंडु मुंड महि लागै ॥ (गौंड कबीर जी)

गंगा पर स्नान का पुरब था। हज़ारों लोग जमां हुए थे और सैंकड़े महात्मा, संत महंत आए हुए थे। जगा जगा मन्डलीयां लगी हुई थीं। कोई आपने मति का उपदेश करता था और कोई किसी के साथ बहस कर रहा था। वेद-वेदांत के जानने वाले पुरुष आए थे। सरोते तो दर्शन यात्रा स्नान करके उपदेश सुनने के लिये बैठ जाते थे। इस तरह काफी भीड़ थी।

भगत कबीर जी भी गंगा स्नान करन गए, वहां ही बैठ गए। उन के श्रद्धालू उन्हों के पास आए और कहने लगे, 'कोई उपदेश करो। जीवन का लाभ सुनाओ।'

कबीर जी ने एक दिन पहले एक पुरुष के शरीर की अगन भेट होते देखा, जिस तरह वह जलती गई उस का सारा दृष्य उन्हों के नेत्रों के आगे रहा। वह बहुत ही प्रभावित हुए तो जिज्ञासूओं के

www.9009.co.in

आगे यही ज्ञान चरचा आरम्भ कर दी। आप ने लम्भी ज्ञान की बात शुरु की। आप ने देखा जो जीव जन्तु हैं, चार पाए पशु यह सभी मरते हैं क्योंकि पांच-भूतक शरीर को ईश्वर ने फिर ततों में मिलाना ही होता है।

पर कबीर जी सोचते ही रहे, अगर पशु और पक्षी मरते हैं तो उन का कोई ना कोई शरीरक अंग या उन की खाल संसार के काम आती है। जैसे चार पाए पशू, गऊ, बैल, मझ, झोटा, बकरा और छतरा, हिरन और शेक आदि इनकी खाल भी काम आर्ता है। जूता, मशकां आदि बणती हैं। पर जब नर मरता है तो यह किसी भी काम नहीं आता। उस का नजारा उन के ऊपर के शब्द में पेश किया है। आप ने फुरमाया है :-

हे भगत जन! नर-स्त्री पुरुष जब मरता है तो इस का शरीर काम नहीं आता। जो पशु मरता है तो दस काम संवारता है। पर जीव मरता है तो किसी के काम नहीं आता। कबीर जी कहते हैं - प्रमात्मा की गती को मैं की जानाँ। हे बाबा! यह तो अनोखा ही खेल रचा है। पुरुष को जब जलाते है तो उस के हड्ड ऐसे जल जाते हैं, जैसे लकड़ी का तूला जल जाता है। वाल ऐसे जलते हैं जैसे घास का ढेर का दथा होता है। कबीर जी ने जिज्ञासूओं और श्रोताओं को सम्बोधन करके कहा, हे सजनो! जीव आत्मा को उसी समय ही ज्ञान होता है जब उस के सिर पर जम का डण्डा पढ़ता है, भाव हिसाब पूछे जाते हैं। यहां रहि कर तो जीव सदा प्रमात्मा को भूला रहता है और हंकार में करम करता है। लालच, वासना हउमै जीव के हड्ड गालता है। जीव जगत में आता है तो आपा नहीं पहिचानता। असले से परे चला जाता है।

इस प्रकार ऐसे ज्ञान चर्चा हो रही थी कि ऊच जाती के पण्डित

www.9009.co.in

शोर मचाते आ गये कि देवताओं की नगरी कांशी गंगा में गरक हो जाएगी। उन्हों ने आकर कबीर जी को बड़े क्रोध में आकर कहा कि वह उठ कर चला जाए इस तरह पण्डितों का अपमान होता है।

कबीर जी के श्रद्धालु बहुत थे। इस बात पर झगड़ा हो गया। झगड़ा बड़ कर गाली गलोच के पिछे मार पीट तक पहुंच गई। उस लड़ाई में पण्डितों को मार पै गई। पण्डित भाग गए।

उस झगड़े का शोर सारी कांशी में मच गया। पण्डितों ने आपने साथ मुस्लमान काज़ीयों को मिला लिया, क्योंकि कबीर जी सभी मतों के पाखन्डों का खण्डन करते थे। वह तो कहते थे, खुदा और राम एक ही है और उस की अराधना करो। देवी देवते, मढ़ी मसान आदि की पूजा ना करो। कबीर जी से सभी दुःखी हो रहे थे। इस लिये उन्हों ने यह मशवरा किया कि नवाब को कह कर इस को मरवा ही क्यों ना दिया जाए। रोज रोज का झगड़ा खत्म हो जाएगा।

सबब नाल कांशी में दिली का बादशाह सकंदर लोधी आ गया। वह कुछ तुअसबी और परजा को खुश रखने वाला बादशाह था, उस में यह कमी थी कि वह लाई लग था और कानों का कच्चा था।

सभी पण्डित और शहिर के काजी उस पास गए और कबीर जी के खलाफ इतना झूठ बोला कि वोह क्रोध से लाल पीला हो गया और उस ने कहा, 'मैं अभी सम्बाल लेता हूं ! आप जाओ ! शहिर में अमन रहेगा।'

बादशाह ने कबीर जी की तरफ प्यादा भेज दिया और हुकम दिया कि उन को साथ ले कर आएं। प्याद घर गया तो आगे कबीर जी घर में ही थे। प्यादे ने बादशाही हुकम कबीर जी को सुनाया 'तुझे बादशाह बुलाता है बादशाह बहुत क्रोध में है जरूर चलें जिवें हो तिवें

www.9009.co.in

यह हुक्म सुनते ही कबीर जी उसी समय सिपाहियों के साथ चल पड़े। वह न डरे और न घबराए क्योंकि उन्हों को अपने राम का भरोसा था वह राम पर भरोसा रखता था। बहुत से लोग कबीर जी के साथ चल दिए। कई लोगों ने कहा बादशाह बहुत क्रोधी है कबीर को वह लोगों को मरवा देगा। कोई कहता कांशी से निकाल देगा। उन्हों की बात सुन कर कबीर जी सहिज सुभाव अपने राम को याद करके उन को कहते रहे, डरो मत-यह मेरे राम का हुक्म है, वह किसी अन्धेरे को दूर करना चाहता है।

फुरमानु तेरा सिरै ऊपरि फिरि न करत बीचार॥
तुही दरीया तुही करीआ तुझै ते निसतार॥ १॥
बंदे बंदगी इकतीआर॥ साहिबु रोसु धरउ कि
प्यारु॥ १॥ रहाउ॥ नामु तेरा आधारु मेरा
जिउ फुलु जई है नारि॥ कहि कबीर गुलाम घर
का जीआई भावै मारि। २॥१८॥६९॥

(गउड़ी कबीर जी)

इस का अर्थ है-हे प्रभो! जो तुम्हारी आज्ञा है, उस को मानने के लिए मैं त्यार हूं। आप ही तुम नदी हो और मलाह। बेड़ा ही आप और आप ही तुम ने पार करना है। मैं अज्ञानी पुरुष हू। तो सिरफ कहता है! आदमी को भक्ति करनी चाहिए सिरफ तुम्हारे नाम को, वह चाहे क्रोध करे जां खुश रहे। आदमी को उस का नाम जपना चाहिए। हे भगवान तुम्हें याद कर के इस तरह खुश हूं जैसे बच्चे का मन खुश होता है। मैं तेरा सेकक (नौकर) हूं जैसे आप का मन चाहे मारो या जिंदा रहनें दो। तुम्हारी वस्तु जो हुई अपनी वस्तु को आप ही तो सम्भालता है। लोगों और प्रमात्मा को सम्बोधन करके अपने मन को सम्बोधन करने लगे -

www.9009.co.in

मन रे छाडहु भरमु प्रगटु होइ नाचहु इआ माइआ के डांडे ॥
सूरु कि सनमुख रण ते डरपै सती कि सांचै डांडे ॥१॥
डगमग छाडि रे मन बउरा ॥ अब तउ जरे मरे सिधि पाईऐ
लीनो हाथि संधउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध माइआ के लीने
इआ बिधि जगतु बिगूता ॥ कहि कबीर राजा रामु न छोडउ
सगल ऊच ते ऊचा ॥ (गउड़ी कबीर जी)

तिस का भाव अर्थ - हे मना ! सारे संसे त्याग देह किसी किसम का भरम न कर अगर कोई स्त्री नाचने लगे तो घूंगट क्यों ? प्रगट होकर नाचना ठीक है, चाहे कोई दोशी ठहराया जाए राम नाम जप और नेक करम करी चलो, मगर किसी से डर भै ना खाओ। वह वीर नहीं जाना जाता जो लड़ाई के मैदान से डरता हो। उस स्त्री को कोई सती नहीं कह सकता, जो पति के मर जाने के पश्चात जान बचाने के लिये घर के बरतन सम्भालने लग पड़े, वस्तूओं की तरफ देखे। डरने का क्या कारन, जद संधउरा (नबेल) ही पकड़ लिया। अब तो जलके मरने से ही छुटकारा होगा। भाव जिस तरह सती होने के समय स्त्री हाथ में सन्धउरा पकड़ लेती है, फिर वह पिछे नहीं हटती जल कर मर जाती है, इसी तरह सच्चाई को प्रगट करते समय डरें क्यों ? यह सारी सृष्टी पांच दुशमनों - काम, करोध, लोभ, मोह और हंकार के कारन खराब हो चुकी है। तूं आपने राम को ना छोडना। राम के लिये तुझे कष्ट क्यों ना उठाने पड़ें, मगर राम राम जपते ही प्रहिलाद अमर हुआ था।

इस तरह आपनी आत्मा को बलवान करते हुए कबीर जी बादशाह सकंदर लोधी के साहमने जा खड़े हुए, उन्हों ने बादशाह को सलाम नहीं करी चुप चाप राम नाम का सिमरन करते रहे। बादशाह बड़ा तुअसबी था, उस ने जब देखा कि मुसलमान हो कर इस ने सलाम

www.9009.co.in

नहीं बुलाई दूसरा 'राम' का नाम लेता है। इस से बड़ा काफर कौण है यह तो मरवा देने के ही काबल है। इस को जीवित कैसे रखा जा सकता है। इस को दण्ड देना ही ठीक होगा। नहीं तो यह नए बणे मुसलमान बिगड़ जाएंगे।

बादशाह क्रोध से लाल पीला होकर कबीर को पूछने लगा 'कबीर तेरा नाम क्या है ?' 'हां जी !' कबीर ने उस को उत्तर दिया। 'कि यह ठीक है कि तूं हिन्दू धरम ते मुसलमानों के विरुद्ध प्रचार करता है ? ऐसी कविता रचता है, जो लोगों को गुमराह करती है। जो पुराणी रसमों और बड़ों के धरमों के विरुद्ध लोगों को भड़काती हैं। यह तेरे बारे शिकायत है। बाकी तुमने मुझे सलाम नहीं किया। यह तेरा ही हंकार है।'

कबीर - मैं किसी के विरुद्ध नहीं हूं। काजी और पंडितों की उन बातों के जरूर विरुद्ध हूं जो भोले लोगों को लूटने और धोखा देते हैं। उन पाखण्डों के विरुद्ध हुं चाहे पण्डित इसलाम का है या वह हिन्दू धरम का। लोगों के भले की बात करता हुं। सलाम तो नहीं किया मैं आपणे राम को आपणा पातशाह समझता हु। आपणे 'राम के बिनाँ मैं किसी के दबाव से सलाम नहीं कर सकता। मेरा राम जगत का पातशाह है।

बादशाह - 'तेरा मत क्या है ?

कबीर - 'दोहां मतों से निआरा राम का सिमरन करना और सब से प्यार करना। सभी राम के बनाए हैं। राम उन सब का राखा है। वही हर तरह की मदद करता है। मैं भी उस राम को याद करता रहता हुं।

बादशाह - तूं बहुत बिगड़ा हुआ है। मुसलमान होकर भी तूं 'राम' का नाम लेता है। पुराणे मतों के विरुद्ध हो। बादशाह को भी

www.9009.co.in

बादशाह नहीं मानता। राज के अमन के लिए एक खतरे का कारण है इस लिए तुझे पाणी में डुबो कर मारा जाएगा। जिस समय तुझे पाणी में डुबोणा होगा तब सारे शहिर के हिन्दु मुसलमान बुला कर पास खड़े करेंगे। यही मेरा हुकम है। तुम काफर हो, बागी हो। बादशाह के खिलाफ बगावत करने का दोष है।

बादशाह की जबान से उपरोकत हुकम सुण कर कबीर जी घबराए नहीं, डरे नहीं, बल्कि उन के चेहरे पर खुशी की लहिर दौड़ गई। उन्होंने आपणे राम को याद किया। उस का राम अंग संग रहता था। उस के राम ने उस की आतमा को मजबूत किया। उस का राम तो बादशाह को कौतक दिखा कर उस को शिक्षा देणी चाहता था। राम ने कबीर को प्रेरा और बादशाह को उत्तर दिया।

आपे पावकु आपे पवना ॥ जारै खसमु त राखै कवना ॥१॥
राम जपत तनु जरि की न जाइ ॥ राम नाम चितु रहिआ
समाइ ॥रहाउ॥ का को जरै काहि होइ हानि ॥ नटखट
खेलै सारिगपानि ॥२॥ कहु कबीर अखर दुखि भाखि ॥
होइगा खसमु त लेइगा राखि ॥३॥३३॥ (गउड़ी कबीर जी)

हे इस धरती के बादशाह! हह प्रमात्मा आप ही आग है और आप ही हवा है। अगर उस ने किसी को जलाना हो तो कोई रख नहीं सकता। जीव को मारना या जीवित रखना आदमी के वस में नहीं बल्कि उस शक्तिवान प्रमात्मा के हाथ है। जिन इनसानों को आपणे जीवन के अन्त का पता नहीं वह ऐसे उपराले करते हैं कि किसी को मारने या जलाने का। अगर राम सिमरन करते जल भी जाएं तो कोई हरज नहीं। आत्मा में राम का वास है ना कोई किसी को मारता है न कोई जलाता है न कोई रखता है यह तो उसी तरह है जैसे मदारी वटे से कई हेराफेरीआं करके तमाशा करता है, पर किसी को समझ

www.9009.co.in

नहीं पड़ती इस तरह प्रमात्मा खेल कर कर देखता और खुश होता है। कबीर जी कहते हैं - दो अक्षर 'रा...म' दा सिमरन कर - जो मरजी है कर ले अगर मेरा मालक [राम] होगा तो वह डूबने और जलने से बचा लेगा। वासते पाने का कोई फाइदा नहीं, 'हे बादशाह सकंदर ! करो जो मन में आए। बन्दा तो राम का है।'

प्रमात्मा पर कबीर का अटूल वश्वास देख कर बादशाह को खुश होना चाहिए था कि उस की परजा में ऐसे भक्ति, प्यार और एकता वाले मनुष्य हैं और प्रचार होता थो, मगर वह उलटी मत वाला बादशाह, जो नेकी की बंदी कराना चाहता था, क्रोध में आ गया। उस ने वस्त्रों से बाहर हो कर कहा, कबीर को संगलों से बांध कर गंगा के गहरे पानी में फेंक देवो ! आपने आप डूब कर मर जाएगा। हमारे राज में ऐसे पुरुष का चलना फिरना और बोलणा खतरे से खाली नहीं यह काफर और उजड है।

उस समय बादशाह की ज़बान से निकली हुई हर एक बात कानून होती थी, जिस कानून की कहीं अपील नहीं हो सकती थी। बगैर किसी सोच विचार के बादशाह ने कबीर जी को मौत-दंड का हुकम दे दिया। बादशाह के पास जो सरकारी परुष खड़े थे, उन्हों ने कोतवाल की तरफ इशारा किया । वह जल्दी से आगे आया और कबीर को पकड़ कर बाहर ले गया । कबीर को गृफतार किया गया। मौलवी काज़ी और पण्डित बहुत खुश थे । वह तालीयां मार मार कर हंसने लगे और मूंह जोड़ जोड़ कर बातें करते थे। मगर कबीर के श्रद्धालू और शहर के नेक आदमीयों के घरों में गम छा गया। वह हाहाकार करने लगे, जो बी सुनता गया, वह ही गंगा के कनारे की तरफ भागा जाता था। हमदरदीयों, मित्रों, दुश्मनों और तमाशबीनों की भीड़ लग गई। एक अनोखा ही नेकी और बदी का अखाड़ा रचा गया।

www.9009.co.in

वैसा ही जैसा कि कबी प्रहिलाद के समय था।

संगल मार कर कबीर को बांधा गया। हाथ और पांव कस कर बांध दिये गए। जलाद को आज्ञा दी, वह बांदे हुए हाथ पावों में बांस डाल कर कबीर को इस तरह उठा कर चले जैसे किसी मरे हुए ढोर को उठाते हैं, क्योंकि मुस्लमान कोतवाल कबीर जी की बेइज़ती करना चाहता था। उस को यह गुस्सा था कि मुस्मान होते हुए कबीर हिंदू धरम की तरफ क्यों बड़ी जाता है। चाहे खुदा, अल्ला, राम, भगवान, रब्ब, वाहिगुरु और अकाल पुरख उस सरब शक्तिमान प्रमात्मा के ही वखरे वखरे नाम हैं, मगर मुलाड़ मुस्लमान आगू और हाकम, मुस्लमान की ज़बान से 'राम नाम' का शब्द निकलना बहुत बुरा समझते थे।

कबीर को गंगा कनारे ले गए, हजारों ही लोग उन के साथ थे। देखने वाले गंगा के कनारे पर जमां हो गए थे। कहते हैं कि बादशाह सकन्दर लोधी बी देखने के लिये पहुंच गया। वह अकेला नहीं था उन के साथ उन की बेगमें बी थीं। वोह बी राम की शक्ति को देखने आई थीं। गंगा का नीर ठाठां मार रहा था। दस दस फुट ऊंचे कपर पड़ रहे थे। कपर नहीं शायद गंगा खुश हो कर उछल रही थी कि राम भगत उस की गोद में खेलने के लिये आ रहा था। राम भगत को गोद में खला कर वह आपना जीवन सुफल कर लवेगी। उस का तो अन्ग अन्ग अगम्मी खुशी से दवाना हो रहा था। वह तो उपर आ कर जल्दी से जल्दी कबीर के चरन छूहने के लिये उतावली थी, मगर मूरख लोग गंगा को चड़ा देख कर खुश थे कि जल्दी डूब कर कहीं बह जाएगा। कोई नहीं रहेगा कबीर का नाम लेने वाला।

सरकारी बेड़ा कनारे पर लाया गया। प्यादियां और जल्लादों

www.9009.co.in

ने कबीर को उठा कर (बड़ी बेड़ी) में रख दिया। बेड़े के रसे खोहल दिए गए। मलाहों ने चपु चलाए बेड़ा गंगा की चड़ाई की तरफ चला गया। भगवान की कुदरत सुखे आकाश की अन्धेरी और काली घटा आ गई। धरमी लोगों ने कहा मुगलों ऊपर भगवान का क्रोप हुआ है, वह अपने भगत की रक्षा करेगा। बेड़े को डुबोएगा मगर इस बात से ओर हैरानी हुई कि बादल और झखड़ आईआ और पांच मिन्ट में से आगे निकल गया। बेड़ा न डुबा न किनारे खड़ा साफ दिखाई देता रहा। जब बेड़ा गंगा के बीच चला गया, जहां पानी बहुत गहरा और तेज रफतार से चल रहा था, उस जगह पिलाले और जलादों ने कबीर को गंगा में फेंक दिया, गंगा में गिरते ही कबीर ने कहा हे राम तुम्हारा भरोसा! आप मेरे जीवन देने वाले हो कबीर जी ने पानी में तैरते हुए आकाश की तरफ देख कर अपने राम को याद किया-

आकासि गगनु पातालि गगनु है चहु दिसि गगनु रहाईले॥
आनद मुलू सदा पुरखोतमु घटु बिनसै गगनु न जाईले॥१॥
मोहि बैरागु॥ इहु जीउ आई कहा गईउ॥ १॥ रहाउ॥
पंच ततु मिलि काईआ कीनी ततु कहा ते कीनु रे॥
करम बध तुम जीऊ कहत हो करमहि किनि जीउ दीनु रे॥२॥
हरि महि तनु है तन महि है सरब निरन्तर सोई रे॥
कहि कबीर राम नामु न छोडउ सहजे होई सु होईरे॥(गौंड कबीरजी)

हे राम! आकाश के पिछे आकाश और पाताल पिछे पाताल, तुम की माईआ का पसारा ऐसा है जैसे आकाश और बादल आ जाते हैं पर जब बादल पिछे हों आकाश साफ उसी तरहा रहता है, वह नहीं जाता इस तरह परमात्मा अमर रहता है।

कबीर जी कहते हैं, मुझे आप का बैराग प्यारा हो गया

www.9009.co.in

है। यह जीव आ कर कहां जाएं? यह चोज अच्छा है कि पाँच तत मिला कर शरीर को बणाया है। यह तत कहां से लाए ? भाव तता दा करता भी तो आप ही हैं। करमों के कारण ही सब कुछ है, सब तुम की कृपा हैं । मेरा शरीर तुम में है और तुम्हारा शरीर मुझ में है। आप तो हर जगह प्रवेश करने और रखने वाले हो। इस लिए मैं तुम्हारा नाम तो नहीं छोड़ना चाहे कुछ हो। बादशाह मारे जां जिंदा रखे।

किनारे खड़े लोगों ने जब देखा नो उन्होंने शोर मचा दिया। बादशाह ने बहुत बुरा किया, भगत को पानी में डुबो दिया। बादशाही गरक हो जावेगी। अरे कबीर को मत डुबोना! भगवान! बचाना। पर जिस का राखा राम है, उस को कौन मारे? जैसे ही कबीर ने 'राम तेरा आसरा' कहा और शब्द बोला तो हाथ पांव के संगल अपने आप टुट गए। हाथ और पाँव आजाद हो गए। पानी में एक डुबकी लगाने के बाद कबीर जी गंगा के पानी उतपादन लग पड़े। चौंकड़ा लगा लिया 'राम। राम' का सिमरन करते हुए ऐसे बैठ गए, जैसे धरती ऊपर आसन लगा कर बैठे हुए हैं। पानी की छल का हुलारा भी नहीं पड़ता था, लोग देख देख कर हैरान होते जाते। कबीर के शरद्धालु 'धन्य कबीर। राम नाम। जै सीता राम' बोलने लगे।'

बेड़े के मलाह पिलाते और जलाद अन्धे हो गए। बेड़ा डुबने लगा। उन्होंने चिल्लाना शुरु कर दिया। कोई बचाए। कोई बचाए। का शोर मचाने लगे। कबीर ने कुछ कर दिया, हम को चोटें लग रही हैं, पर उन को बचाए कौन । किनारे खड़े हुओं को बेड़ा दिखाई ही नहीं दे रहा था। बेड़ा उलटा हो गया जलाद, मलाह और प्यादे डुब कर मर गए। गंगा का तेज जल बहा कर आगे ले गया, देखन

www.9009.co.in

बले भै-भीत हो गए।

दूसरे हाथ कबीर जी पानी की सतह के ऊपर चौंकड़ी मार कर बैठे थे वह राम की महिमा किए जा रहे थे।

गंग गुसाई नीरगहि गंभीर ॥ जंजीर बांधि करि खरे कबीर ॥१॥
रनु न डिगै तनु काहे कउ डराई ॥ चरण कमल चितु रहिउ समाई ॥
रहाउ॥गंगा की लहर मेरी जंजीर॥मृगशाला पर बैठे कबीर ॥२
॥कहि कबीर कोउ संग न साथ ॥ जल थल राखण है रघुनाथ ॥ (भैरउ)

धीरे धीरे पानी अपने आप ही उन को घाट की तरफ लेता आईआ जिस घाट पर रोज स्नान किया करते थे, उसी घाट पर ही आ गए। 'राम! तुम्हारा आसरा! कह कर पानी से निकल कर घाट की पत्थरीली पउड़ी पर खड़े हो गए। किनारे पर खड़े कबीर के शरद्धालु कबीर को देखते घाट की तरफ आ गए थे। घाट पर पहुंच कर जब उन्होंने कबीर जी को ठीक देखा तो खुशी से झुम उठे। कबीर जी को प्रणाम करने लगे। आगे आगे कबीर जी और पिछे लोग 'हरि नाम' का कीतन करते हुए शहर की ओर चल पड़े उन को रोकने वाला कोई न रहा, निंदकों के मुंह काले हुए।

परन्तु अपनी ओर से कबीर को गंगा में डुबो कर के बादशाह सिकन्दर लोधी अपने डेरे की ओर मुड़ रहा था। चुगल मौलवी और पंडित उस के साथ आ रहे थे। अभी वह डेरे भी नहीं पहुंचा कि उन को संदेश मिला की कबीर गुसांई तो डुबा नहीं। वह तो भगवान का कीतन करता हैआ काशी के बाजारों में अपना जलुस लिए घुम रहा है वह राम का रुप। संदेश देने वाले ने साथ में यह भी कहा 'हे बादशाह! कबीर जादुगर है। वह पानी नहीं डुब सकता। उस को आग में जलाओ! उस ने तो जादु से जलाद, मलाह और सिपाही भी बेड़े के साथ बहा दिया। उस की उसतति घटने की बजाह

बढ़ गई है। सारा शहर बादशाह सलामत को बुरा भला कह रहा है। कबीर अब और ऊंचे ऊंचे 'राम राम!' कहता है वह मौलवीओं काजीओं और सरकारी हाकमों को चिड़ाता है। चुगल की जबान से यह सुन कर बादशाह हैरान रह गया। वह सोचने लगा लोहे के संगलों से बंधा हुआ आदमी गंगा की लहरों में कैसे बच गया। यदि यह आदमी ऐसे बच सकता है तो एक दिन यह बादशाही भी उलटा सकता है, ऐसे आदमी को जरूर मार देना चाहिए।' उस ने वहां खड़े ही हुक्म दिया, 'कबीर को फिर एक बार मेरे सामने पेश किया जाए, मैं उस को मार दूंगा! खतम करूंगा, यह नहीं हो सकता, कबीर जिंदा रहे, एक जुलाहा भुलड़, बादशाह कबीर जी की इज्जत के खिलाफ बोलता गया।

सरकारी सिपाही भाग उठे। जिस ओर कबीर का पता चला ऊधर ही पहुंचे। एक चौक में कबीर जी को शब्द पड़ते घेर लिया। 'चलो। तुम को बादशाह सलामत बुलाते हैं। उन का सख्त हुक्म है। जलदी चलना होगा यह आप क्या कर रहे हैं।

'चलो भाई बादशाह के मन में जो आईआ है कर ले। ले चलो। कबीर बादशाह से डरता नहीं क्योंकि कबीर का पातशाह बड़ा है। मुझे अपने राम पर भरोसा है।

सिपाही कबीर जी को ले कर बादशाह की ओर चल पड़े।

कबीर जी को आग में फेंकना

हे भक्त आदमीओ। दुनियां के बादशाह केवल उन लोगों को डरा धमका सकते है जिन को दौलत से प्यार हो, क्योंकि वह मौत से डरते है। उन का मन नहीं करता कि वह जिंदा रहते ही दौलत को छोड़ दें। पुत्र, पुत्रीयां घर, स्त्री और उन की बजाय शरीर

www.9009.co.in

को प्यार करते थे। ऐसा प्यार उन को डराता है। पर जो जो लोग माईआ से पिछे हटते है। भक्त आदमी उन को बादशाहों का कोई डर नहीं होता. ऐसे राम भक्त कबीर जी थे. उन की अलग साखी सुना करो।

बादशाह के आदमी आए, उन्होंने फिर आ कर कबीर जी को घेर लिया. कबीर जी को दोबारा घिरा देख कर माई लोई, कमाल और कमाली के बिना बाकी के जुलाहे. कबीर के सब भक्त डर गए। उन्हों ने बादशाह के आदमीओं को समझाने की कोशिश की पर समझे कौन? आखर वह बादशाह की तरफ चल पड़े।

सभी इकठे हो कर बादशाह के पास बेनती करने लगे। उन्होंने कहा हे बादशाह! कबीर भगवान पसंद आदमी है। किसी का बिगाड़ता कुछ नहीं। लोग ऐसे ही बैर करते हैं। इन को छोड़ दिया जाए। हो सकता है भगवान के प्यारे को कष्ट देने से कोई मुशकिल आ जाए।'

यह सुन कर बादशाह पर असर न हुआ. वह हंकार में रहा और उस ने हुकम किया-'कबीर उतनी देर नहीं छोड़ा जाएगा जब तक वह 'राम का नाम लेना छोड़ कर मुस्लमान नहीं हो जाता। इस तरह वह एक धर्म में आ जाएगा। ज्यादा धर्मों में रहना ठीक नहीं यह हिन्दु और मुस्लमान दोनों को तंग करता है।

कबीर के सारे भक्त निराश हो गए. उन्होंने उम्मीद छोड़ दी कि बादशाह उन के कहने पर नहीं मानता। उन के मन राम जी के पास बेनतीयां करने लगे कि राम अपने भक्त की रक्षा करे। इस तरह सारे कांशी शहर में शोर मच गया। रौला पड़ गया दुश्मनी करने वाले ब्राह्मण खुश हो रहे थे। वह लोगों को कबीर जी के विरूद्ध और भी ज्यादा भड़काने लगे।

उधर. कबीर जी बादशाह के पेश हुए। कबीर जी निरभै थे

www.9009.co.in

उन्हों के चिहरे पर राम नाम की लाली थी। जिस समय बादशाह के जास जाकर खड़े हुए तो उन्हों ने फिर सलाम नहीं कही। यह देख कर बादशाह गुस्से में आ गया तो कबीर जी को कहने लगा--

'यह आप के लिये अच्छा नहीं कबीरा ! अब बी मेरा कहना मान 'राम' नाम छोड़ दे । सच्चा मुस्लमान बन, नहीं तो मैं बहुत बुरी करांगा, आप के सारे प्रवार को बेलन में दल दूंगा। तुमारे टुकड़े टुकड़े किये जाएंगे। पहले तो जादू के दाव पेच से बच गया हैं, अब आग में में जताया जायेंगा । जरा सोच ! तुम्हारा जन्म मुस्लमान के घर का है, मगर बना हिन्दू फिरता हैं ! शरम कर ! अब हम लिहाज नहींकरेंगे, बादशाही हुक्मों को जानता है कैसे सखत होते हैं।' मगर कबीर जी ने बानी राहीं उत्तर दिया--

कबीर जिह दर आवत जातिअहु हटकै नाही कोइ ॥
सो दरु कैसे छोडीऐ जो दरु ऐसा होइ ॥

जिस राम के दरबार अथवा दरवाजे पर आते कोई रोकता नहीं उस प्यारे के दर (दरवाजे या घर) को किस तरह छोड़ दूं वह तो सच्चा दर है।

कबीर कूकरु राम को मुतीआ मेरा नाउ ॥
गले हमारे जेवरी जह खिचै तह जाउ ॥

हे बादशाह ! कबीर तो राम का कुत्ता है मोती नाम है। राम ने मेरे गले में रसी डाली हुई है, जिधर खींचता है उधर ही मुड़ आता हूं मेरे वश की कोई बात नहीं राम का वफादार आदमी हूं ।

"कहि कबीर भै सागर तरन कउ मै सतिगुर ओट लइओ।"

कबीर जी कहते हैं डर रूपी समुन्द्र को पार करने के लिए मैं सच्चे ईश्वर का आसरा लिया है । इस तरह दलेरी के साथ कबीर जी बादशाह को सुनाई गए, उन्हों ने सच्चो सच्च कह देने का निसचा कया

www.9009.co.in

था जो होना था वह तो होकर रहना था, फिर डर किस बात का उन्हों ने कहा--

कबीर जोरु कीआ सो जुलमु है लेइ जबाबु खुदाइ ॥
दफतर लेखा नीकसै मारि मुहै मुहि खाइ ॥
कबीर लेखा देना सुहेला जउ दिल सूची होइ ॥
उसु साचे दीबान महि पला न पकरै कोइ ॥

(सलोक कबीर जी)

भाव अरथ - (बादशाह) अज जो धक्का करता है, वह जुलम बड़ा पाप करता है। खुदा भगवान के दफतर में उसके करमों का जब लेखा होगा तो पाप का पलड़ा भारी निकलेगा। जब पाप बहुत हुए तो उसके मूंह पर थपड़ पड़ेंगे। पापों का फल उस को भुगतना पड़ेगा, वार टल नहीं सकता।

यह भी समझो लेखा देना तो ही असान होता है, अगर दिल में सच्चाई हो, क्योंकि सच्चे प्रमात्मा की दरगाह में करमों के बगैर कोई सहाइता नहीं कर सकता। वहां कोई ज़मानती भी नहीं बनता, वहां तो नेक करम ही काम करते हैं।

इस तरह उत्तर देते हुए कबीर उच्ची उच्ची कहने लगा, 'राम ही राम है, भाई सारे राम ही राम है।'

कबीर लागी प्रीति सुजान सिउ बरजै लोगु अजानु ॥
तां सिउ तूटी किउ बनै जाके जीअ परान ॥

वाहवा ! प्यारे के साथ प्यार लगा, मगर मूरख लोग रोकते हैं। जेकर प्यारे से प्यार टूट गया तो मौत हो जाएगी।

सकन्दर लोधी हैरान हो गया कि एक मामूली जुलाहा दिल्ली के बादशाह से नहीं डरता। मौत से नहीं डरता। हच्छा में भी सकन्दर हां। ज़रूर इस को सिद्धे रासते पर लाउंगा। यह कैह कर उस ने हंकार किया, वह क्रोध से कांपा और आंखें लाल करके

www.9009.co.in

उस ने अहिलकारों को हुक्म दिया कि तुम लकड़ीयों को इक्ठ्ठा करो। उन्हीं लकड़ीयों में कबीर को बिठा कर जला डालो। पानी से तो बच गया अगनी से किस तरह बचेगा? हां आधी अकड़ी नीचे और आधी ऊपर रखना। पहरा सखत रखना, अगर इस बार भी यह बच गया तो याद रखना तुम्हारी जान नहीं बचेगी। तुम जान बूज कर कबीर को नहीं मारते।

इस तरह ताड़ना करके बादशाह तम्बू में चला गया, उस का दिल कांपने लग पड़ा था, मगर बादशाही हंकार उसको उलटे रासते पर चला रहा था, कसाईयों ने कबीर जी को बांध लिया और जंगल में ले गए।

बादशाह के नौकर कबीर जी को जंगल में ले गए। उसी तरह जैसे कभी राजे सलवान के कहने पर उसके पुत्र पूरन को जंगल की तरफ ले गए थे। अगनी में जलाये जाने का हुक्म सुन कर लोग बहुत भै-भीत हुए। अब तो ज़रूर ही कबीर जी नहीं बच सकते, बादशाह ज़ुलम कर रहा है, इस की बादशाही गरक जरूर होगी।'

सरकारी नौकरों ने जंगल में पहुंच कर बहुत सी लकड़ीयाँ इक्ठ्ठी करके, लकड़ों के ढेर पर कबीर जी को इस तरह रख दिया। उसी तरह जिस तरह 'राम जी' के हुक्म से सत धरम की प्रीखशा देने के वासते सीता जी कभी अगन-प्रीखया के समय हंसते हंसते चित में बैठ गई थी। नीचे और उपर लकड़ीयां रख दीं। जिस तरह कबीर जी, प्रलोक गमन कर गए थे। हज़ारों लोग इरद गिरद खड़े देख थे, सभी के दिल कांप रहे थे, आँखें रो रही थीं, मगर चुप चाप थे, बादशाही हुक्म होने के कारन कोई बोल नहीं सकता था, नंगी तलवारों का पेहरा था।

उन्हों ने चारों तरफ एक ही समय अगनी जलाई। सूखी लकड़ीयां

www.9009.co.in

थी मिटों में अगनी के भांबड़ बल उठे। देखने वाले कलयुग के लोगों ने ठण्डी सांस ली और कहा - 'आज कबीर मर गया, अब नहीं बचेगा !' मगर कबीर को वश्वास था कि जे उस के राम ने अजे नहीं मारना तो वह नहीं मरेगा, मारना और जीवत रखना राम के हाथ है।

वाह ! अगनी की लाटें निकलीं, सभी लकड़ीयां अगनी की लपेट में आ गई। सभी पहरेदार दो दो पैलीयां पिछे हो गए क्योंकि सेक दूर दूर तक जाता था। दूर से देखते रहे कि किस करामात से कबीर अगनी से निकल सकता है कि नहीं। तिन घण्टे अगनी जलती रही। तीन घण्टों के पश्चात सरकारी कर्मचारीयों को इस तरह प्रतीत होने लग पड़ा जिस तरह अब राख का ढेर ही रह गया है, उन को पूरा भरोसा हो गया कि इस बार कबीर जिंदा नहीं रहा, उस की हड्डीयां जल कर राख हो चुकी होंगी। अब पानी डाल कर चिखा को ठण्डा करके गंगा में फेंक देना चाहिए, उन्हों ने पानी की मशकें मंगवा कर चिता को ठण्डा किया, ठण्डियां करके जद फरोलिा गया तो नीचे से कबीर जी जिंदा निकले। उन के गले के वस्त्र भी ना जले और ना खड़ावें जलीं। वह उठ कर राम ! राम ! कहने लग पड़े। उन्हों ने सभी से पूछा, 'राम जनो ! आप को कोई कष्ट तो नहीं हुआ ? मेरा राम राखा।'

जिस तरह अगनी के सेक से सोना साफ हो जाता है तो डलकें मारता है, जिस तरह चिखा से निकल कर कबीर जी दुगने नूर नूर हो गए। उन्हों के चिहरे का प्रभाव देखा नहीं जाता था। वह सच्चमुच भगवान रूप हो गए थे। दोनों डन्डों में उन्हों के राम ने उन को हाथ दे कर रख लिया।

'कबीर जला नहीं, अगनी ने नहीं जलाया, वह सच्च मुच ही राम भगत है' इस तरह कांशी के हर वासी की ज़बानों आप मुहारे

www.9009.co.in

निकल रहे थे। हर एक जगह पर कबीर की शोभा हो रही थी, कबीर का प्रवार जो गम में बैठा था, वह खुश हो गया। माता लोई खुशी में फूली नहीं समाती थी। राम ने उस पति को बचा लिया था, कबीर का यश कांशी की गलीयों में गूंजने लगा, जो सुनता वह ही कबीर जी के दर्शन करने आता।

कांशी के कोतवाल और सरकारी अहिलकारों को सख्त हुक्म था, कि जिस तरह बी हो कबीर को जरूर मारना। अगर यह जीता रहा तो तुम्हें मार दिया जाएगा, हुक्म बी पूरा करना मुश्कम हो गया।

अगनी से निकले कबीर को उन्हों ने फिर पकड़ लिया। हाथ पावों को बेड़ीयां और हथकड़ीयां मार कर फिर कबीर को बांध लिया। वह मूर्ख समझे ना कि कबीर राम-अन्स है। यह अमर है, नहीं मरेगा। उन्हों ने मश्वरा किया कि बादशाह को बिना बताए ही हाथी के आगे डाल कर कबीर को मार दिया जाए। इस लिए मश्वरे को पूरा करने के लिए बेकरार हो गए। वह ना समझे जिस को अगनी ने नहीं जलाया वह किस तरह मरेगा।'

कबीर जी को हाथी के आगे फैंकना

धरमी पुरुष धर्म नहीं छोड़ता और बुरा बुरआई का त्याग नहीं करत। बुरा पश्चात बादशाही हंकार वाला, उस से बी बुरा माना गया है। बादशाही हंकार में अनेकों कुकर्म करी जाता है और जुलम करने से हटता नहीं, यहां तक कि मौत के कनारे तक पहुंच जाता है। इस सृष्टी पर अनेकों ऐसे बादशाह हुए हैं, जिन्हों ने सन्तों भगतों को कष्ट देकर आपने आप का सत्यानाश किया। अवतारों पैगम्बरों के साथ मन-मानी करते आए। ऐसे ही आदमी सकंदर लोधी के थे। जो भगत कबीर जी को मारने पर तुले हुए थे। अज्ञानी पुरुष

www.9009.co.in

प्रमात्मां की शक्तियों की तरफ से आंखें बंद कर लेते हैं। कबीर जी तो गाते फिरते थे--

कहत कबीर पंच को झगरा झगरत जनमु गवाइआ ।।
झूठी माइआ सभु जगु बांधिआ मै रमत सुखु पाइआ ।।
(आसा कबीर जी)

प्रंतू बादशाही के बे-समझ लोगों को वह कोई वर श्राप नहीं देते थे, वह कहते थे साकत पुरुष आपने कर्मों का फल कौड़ा खाता है । वह समझाने से नहीं समझता--

कहा सुआन कउ सिम्रिति सुनाए ।। कहा साकत पहि हरि गुन गाए ।। १ ।। राम राम राम रमे रमि रहीऐ ।। साकत सिउ भूलि नही कहीऐ ।। १ ।। रहाउ ।। कऊआ कहा कपूर चराए ।। कह बिसीअर कउ दूधु पीआए ।। २ ।। सत संगति मिलि बिबेक बुधि होई ।। पारसु परसि लोहा कंचनु सोई ।।३।। साकतु सुआनु सभु करे कराइआ ।। जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ।।४।। अंम्रितु लै लै नीमु सिंचाई ।। कहत कबीर उआ को सहजु न जाई ।।५।।२।।२०।। (आसा कबीर)

इस का भाव यह है कि हे पुरुषो ! साकत रब्ब के ज्ञान को ना समझन वाला पुरुष, नासतक को कुछ नहीं कहना चाहिए, उस ने कोई बात नहीं मन्नी ! उस की दशा काग जैसी है, जिस तरह कोई काग को कपूर खुलावे और सांप को दूध पलावे या अमृतजल निम को पाए तो निम मिठी नहीं होती, उन्हों को आतमक शक्ति का ज्ञान नहीं होता, ऐसे मूरख पुरुष को समझाने का क्या लाभ।

यह मश्वरा किया कि कबीर जी को मस्त हाथी के आगे फैंका जाए सो हाथी को लाया गया। महावत को बताया गया कि उस का हाथी

www.9009.co.in

कबीर जी को कुचल डाले। क्योंकि बादशाही हुक्म मार देने का था। कबीर जी ने आप इस प्रथाए शब्द उचारन किया है। आप जी फुरमाते हैं :--

गोंड कबीर ॥ भुजा बांधि भिला करि डारिओ ॥ हसती क्रोपि मूंड महि मारिओ ॥ हसति भागिकै चीसा मारै ॥ इआ मूरति कै हउ बलिहारै ॥१॥ आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोरु॥काजी बकिबो हसती तोरु ॥१॥ रहाउ ॥ रे महातम तुझु डारउ काटि ॥ इसहि तुरावहु घालहु साटि ॥ हसति न तोरै धरै धिआनु ॥ वाकै रिदै बसै भगवानु ॥ १ ॥ किआ अपराधु संत है कीना ॥ बांधि पोट कुंचर कउ दीना ॥ कुंचरु पोट लै लै नमसकारे ॥ बूझी नही काजी अंधिआरै ॥ ३ ॥ तीनि बारि पतीआ भरि लीना ॥ मन कठोरु अजहू न पतीना ॥ कहि कबीर हमरा गोबिंदु ॥ चउथे पद महि जन की जिंदु ॥ ४ ॥ १४ ॥

तिस का भाव अरथ--कबीर जी कहते हैं, हाकमों ने मेरे बाजूओं बांधा और गुछम-गुच्छा करके हाथी की सुंड के आगे फेंक दिया। उस समय हाथी बहुत गुस्से में था, परंतू जैसे ही कबीर जी गिरे तो हाथी उलटा चीखें मारने लग पड़ा, उस ने तो उन्हों से पूछना चाहा, 'ऐ मूरखो ! यह क्या करते हो ! इस मूरती कबीर जी से तो मैं बलहारे जाता हूं। ऐसे पुरुष को मेरे आगे फेंका, जो राम का भजन करता है ! वाह प्रमात्मा यह क्या खेड है ?'

कबीर जी कहते हैं, अनोखा कौतक था, हे मेरे ठाकुर जी आप की लीला अपर अपार है। काजी महावत को गुस्से होता था कि वह हाथी को आगे लाए। यहां तक कि महावत को बड़े क्रोध से कहता था तुझे मरवा दिया जाएगा, इस को आगे लाओ ताकि कबीर भगत को चर्णों के नीचे दला जाए । कबीर जीवत नहीं रहना चाहिए । मगर

महावत हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। उस ने कहा, हे काजी! देखते नहीं मैं कुण्डे मार रहा हूं। पर हाथी तो एक पैर आगे नहीं होता। मेरा क्या जोर? ऐसे लगता है कि इस के हृदय में भगवान बसता है। यह भी सवाल पैदा होता है कि बताओ कि इस ने कौन सा गुनाह किया है जो इसको पोटली में बांध कर हाथी के आगे फेंक दिया दिया देखते नहीं? अन्धे हो! यह हाथी तो इस को नमस्कार कर रहा है। मूरख काजी न समझा। वैसे भी वह अज्ञानी था। जिस ने तीन बार परख की पर उस का करड़ा मन अभी भी न माना। पर कबीर जी कहते हैं, हमारा तो गोबिंद चौथे पद में रहता है। किसी को भी दिखाई नहीं देता। और राखी हर किसी की करता है। बात ऐसे हुई कि कबीर को मारने की बजाए वह जंगल की ओर दौड़ गया। महावत को गिरा कर मार दिया। वह जंगल को ऐसा गया फिर न आया। उस ने राज सेवा छोड़ दी। हाथी जून से छुटकारा पाकर राम जी की मरजी से मुकत हो गया। काजी और हाकम हाथ मलते रह गए। उनके हाथ कुछ भी न आया।

काजी और मुलां, पण्डित सभ शरमिंदे हुए जो कबीर जी के दुश्मन थे। पर कबीर जी के श्रद्धालू तो ऊंची ऊंची बोल रहे थे। कबीर बड़ा भगत है। राम का भगत।

अहलकार बादशाह सकन्दर लोधी के पास पहुंचे। उन्हों ने कहा - 'हे बादशाह स्लामत! वह तो नहीं मरता। आग पानी और हाथी उस को मार नहीं सके। वह तो सच्च ही कोई खुदाई आदमी है। सारी कांशी में उस का यश होने लग पड़ा है कि ब्यान नहीं किया जाता, सभी लोग बादशाह की निंदा कर रहे हैं। काजीयों और पण्डतों को लोग लाहनतें पाते थे। मामला

www.9009.co.in

ऐसा है। बताओ अब क्या करें! हम तो बहुत दुखी हो गए हां। हमारे घर के बाल बच्चे सभी दुखी हैं। बीमार पड़ गए हैं।'

सकन्दर लोधी बादशाह सतिगुरु नानक देव जी को भी मिला था, प्रंतू हंकार से उस की मत मारी गई थी। वह जल्दी ही गुरू जी के वचनों को भूल गया था, मन-मानीयां करने लगा था। कबीर जी का अग्नि में ना सड़ने की वारता सुन कर उन की सोई हुई आत्मा जाग पड़ी। हाथी ने भी कबीर को नहीं मारा। इस बात से उस को ज्ञान हुआ, आँखें खुलीं। आपनी मूरखता पर पछताया, सारी बात को सुन कर उस ने अहलकारों को कहा, 'क्या कबीर को एक बार और बुला कर लया सकते हो मेरे पास?'

'जिस तरह बादशाह सलामत की आज्ञा हो।' नफरों ने उत्तर दिया था।

'अच्छा जाओ! उन को बुला कर लाओ, देखो! तंग नहीं करना। बुरा शब्द नहीं कहना, इज्जत के साथ लाना, देखो खुदा का बन्दा है।

जो गुस्से ना हूं। उन का सत्कार करते आएं। कहो बादशाह क्षमा मांगता है। जाओ! देर ना करो।'

बादशाह का फुरमान सुन कर नफर कबीर जी को ले आने के लिए भाग गये। पहले घर आए, कबीर जी में नहीं थे। फिर साधुओं के डेरों पर पहुंचे, परंतू वोह ना मिले, गंगा के कनारे पर पता चला उधर गए। जब नजदीक गए तो क्या देखते हैं कि कबीर जी चौंकड़ा लगा कर समाधी लगाए बैठे हैं। आतमा राम के चर्णों के साथ जुडी हुई है। नेत्र बंद है। दसवें द्वार पहुंचे हुए हैं। आपने राम जी का यश कर रहे हैं।

नफरों ने जा कर आवाजें लगाई। कबीर जी! कबीर जी!

पांचवी आवाज पर कबीर जी ने आंखें खोली। नफरों की तरफ देखा और बोले कुछ नहीं। नफरां ने बेनती कीती-महाराज ! बादशाह सकन्दर लोधी आप को याद करते हैं। वह आप से क्षमा मांगना चाहते हैं।

'याद क्यों करते हैं?' कबीर जी ने पूछा।

ओह बादशाह, हम राम के सेवक।'

'महाराज दर्शन के लिए।'

'वाह मेरे राम तेरी महिमा अपर अपार है। भुलों को राह दिखा देता है। मेरे दर्शन। एक कबीर जुलाहे के दरशन। यह तो भगवान राम ही जाने। अच्छा चलो भाई चलते हैं। मेरे भगवान राम की यही आज्ञा है।

कबीर जी शाही नफरों के बादशाह के डेरे पहुंचे, पर बादशाह आगे नंगे पांव स्वागत करने के लिए आया. उस ने झुक कर कबीर को सलाम किया। पहले तो आप सलाम करवाने के लिए कबीर को मौत का हुकम देता था अब आप कबीर जी के पांव लगा। बड़े आदर के साथ अपने तंबु में कबीर जी को ले गया। सत्कार के साथ बिठा कर दोनों हाथ जोड़ कर बेनतीयां की और गल्ली की क्षमा मांगी। कबीर जी ने उस को नेकी करने का उपदेश दिया। कबीर जी ने अपने सुभाव अनुसार उपदेश किया।

लंका सा कोटु समुंद सी खाई ॥ तिह रावन घर खबरि न
पाई ॥१॥ किया मागऊ किछु थिरु न रहाई ॥ देखत नैन
चलिउ जग जाई ॥१॥ रहाउ ॥ एकु लखु पूता सवा लखु
नाती ॥ तिह रावन घर दीआ न बाती ॥२॥

www.9009.co.in

चंदु सूरजु जा के तखत रसोई ॥ बैसंतरु जा के कपरे धोई ॥३॥
गुरमति रामै नामि बसाई ॥ असथिरु रहै न कतहू जाई ॥४॥
कहत कबीर सुनहु रे लोई ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई ॥

(आसा कबीर जी)

कबीर जी हंस कर बोले, 'हे दुनियां के बादशाह ! आप ने यह कहा है कि कबीर मांग ले जो कुछ मांगना चाहता है । आप के पास धर्ती है, दौलत है, सोना - चांदी है, परंतू जब हम ध्यान धर कर देखते हां तां नज़र पड़ता है कि यह माया है, जो इस थिर नहीं रहनी। ना राज थिर रहना है और ना दौलत, धर्ती पर कई आए, कई गए। आप का यह कहना भी कूड़ का है । क्या मलूम कितना समय रहना है ? और कोई बलवान राजा या बादशाह आ जाए, वह आप को धर कर आगे ले जाए ।

इस तरह बादशाह सकन्दर लोधी को उपदेश करते हुए उदाहरन देते हैं - 'हे बादशाह !' दुनियाँ में लंका का पातशाह हुआ है रावन। उस की लंका में इतना बड़ा किला था कि उस के इरद गिरद समुन्द्र जैसी खाई खोदी हुई थी, अर्थात उस को कोई फतह नहीं कर सकता था, मगर उस रावन के घर का आज कोई पता नहीं चलता।

'क्या मांगू कुछ रहने वाला नजर नहीं आता। देखते देखते ही सभ कुछ चले जा रहा है। सभ चले जा रहे हैं । उसी रावन के जिस की बात मैं कही है । उस के एक लाख पुत्र और सवा लाख पुत्रीयाँ थीं। परन्तू जब श्री राम चन्दर के साथ युद्ध हुआ तो उस के घर कोई दीवा-बती करने वाला कोई भी ना रहा । आप तो अभी छोटे बादशाह हो, उस रावन ने तपस्या के बल नाल ऐसी शक्ति प्राप्त की थी कि चन्द और सूरज उस की रसोई करते थे, आग कपड़े

धोती थी, भाव कुदरती शक्तियां भी उस के कहने पर चलती थी। देखो जब ऐसे लोग नहीं रहे तो और क्या रह जाएंगे। बेकार हंकार करना राम भक्तों को दुख देना, यह तो बादशाह को शोभा ही नहीं देता। जीवन की सच्चाई की जरूरत है। इसलिए हर एक को सुनकर समझ लेना चाहिए कि परमात्मा की भक्ति के बिना सब कुछ है। कुछ चमत्कार जरूर दिखाता है, पर आखर खेह की खेह है। क्या पता शुभ करम कारण आप को राज्य मिला है। आगे शुभ काम करो ताकि किसी काम जीवन आओ धर्म का राज्य हो। धर्म ही तो मनुष्य जीवन का निशाना है।

ऐसे उपदेश सुन कर बादशाह सकन्दर लोधी को कुछ होश आई। ज्ञान हुआ और कबीर जी का सतिकार करता हुआ कांशी से चला गया। कबीर जी के जस का डंका सारे बज गया। हर तरफ शोभा होने लगी नाम जपा जाने लगा।

कबीर जी का उपदेश

कबीर जी का जस कांशी शहर के घर घर पहुंच गया। कई गुरमुख संत फकीर और कई यात्रु दर्शन करने आ जाते। कबीर जी कई बार गंगा किनारे बैठ कर कथा उपदेश और वचन बिलास करते रहते और कई बार कोई न कोई जगिआसु सवाल कर देता और उस के वचन बिलास शुरू हो जाते। एक बार कबीर जी के पास एक साधु को लाए, जिस ने किसी की गठड़ी उठाई हुई थी उसमें कीमती सामान था। साधु को पकड़ कर लाने वालों ने बहुत शोर किया। साधु को मार देना चाहते थे कि इस ने पहनावे को बदनाम किया है। इस को ऐसा नहीं करना चाहिए।

कबीर जी ने सभी को शांत रहने के लिए कहा और उस

www.9009.co.in

साधू को बिठा कर धीर्ज से पूछा--

कबीर जी - क्यों भई पुरुषा यह वस्तूओं को आप ने उठाया है ?

साधू - हां जी ! मैं उठाई थी गठड़ी और... !

कबीर जी - क्यों उठाई ? क्या जरूरत थी किसी वस्तू की ?

साधू - नहीं जी ! जरूरत तो कोई नहीं थी ।

कबीर जी - फिर क्या कारन था गठड़ी के उठाने का ?

साधू - महाराज ! इस में सवरन की वस्तू थी और कुछ सवरन की मोहरें थीं। उस सवरन ने मेरे मन में लालच ले आया। बहुत यतन करने पर भी महाराज ! माया पिछा नहीं छोड़ती। घर को छोड़ा। स्त्री को छोड़ा, परंतू ऐसा हो जाता है। कभी सवरन मन को खींचता है, कभी रूप और कभी यश। समझ नहीं आती। लालच बेइज्जती भी बहुत कराता है । फिर भी मन अमोड़ गलती करता है। कुछ समझता नहीं ।

यह सुन कर कबीर जी की सुरत प्रभू चर्णों के साथ जुड़ गई, उन्हों ने उस साधू के पास बैठयों को उपदेश करने के लिए बाणी कही--

बिंदु ते जिनि पिंडु कीआ अगनि कुंड रहाइआ ॥ दस मास माता उदरि राखिआ बहुरि लागी माइआ ॥१॥ प्रानी काहे कउ लोभि लागे रतन जनमु खोइआ ॥ पूरब जनमि करम भूमि बीजु नाही बइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारिक ते बिरधि भइआ होना सो होइआ ॥ जा जमु आइ झोट पकरै तबहि काहे रोइआ ॥ २ ॥ जीवने की आस करहि जमु निहारै सासा ॥ बाजीगरी संसारु कबीरा चेति ढालि पासा ॥ ३ ॥ (आसा कबीर जी)

कबीर जी ने तिस का प्रमारथ भी आप ही बताया, हे साधू और श्रद्धालू जनो ! यह तो मनुष्य के लिए जीवन संघरश है कि ईश्वर ने जब शरीर बनाया, माता के गरभ अगन कुन्ड में

www.9009.co.in

रखा तो दस महीने बाद जन्म लेने के साथ ही माया की परछाईं डाल दी। माया परछाई बन कर ऐसी लगती है कि जी को दिखती नहीं। बस अन्दर अन्दर कहती जाती है-'यह मेरा, यह मैं! मेरी-मैं बड़ा!' इस माया से बचने के लिए, दूसरी तरफ है वाहेगुरु का नाम लेना, उस का सिमरन करके उस से बचना। पर मनुष्य को माया के पदारथ इतने स्वाद लगते हैं कि वह अपने कीमती जीवन को गवां बैठता है, पिछले जन्म में किये करमों के साथ जो नाम का बीजना है, वह नही बीजता। अर्थात अच्छे काम नहीं किए।

यह समझ करनी चाहिए कि बुढ़ापे में जब काल जा जमों ने सिर से पकड़ा तो क्या जवाब दोगे? फिर रोवोगे, पर रोने से बनता कुछ नहीं। मिन्नते करोगे पर कोई तरस नहीं करता।

उस समय आस तो जीवन की होगी, पर जम तो स्वास रोक लेंगे-हे भाई! यह समझ लो यह संसार तो बाजीगर की खेल को तरह है। चाहिए तो नाम सिमरन करके पासा बदल दिया जाए। यह चोरी यारी, सब माया के खेल हैं। इस से बचना चाहिए।

कबीर जी ने ओर हुक्म किया-
कबीर जपी तपी सन्यासी बहुत तीरथ फरमना ॥ लुंजित मुंजित मोनि जटा धर अन्ति तऊ मरना ॥ ताते सेवीअले राम ना ॥ रसना राम नामु हितु जा के कहा करै जमना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगम निरगम जोतिक जानहि बहु बहु बिआकरना ॥ तंतु मंत्रु सब अउखध जानहि अन्ति तऊ मरना ॥ २ ॥ राज भोग अरु छत्र सिंहासन बहु सुन्दरी रमना ॥ पान कपूर सुबासक चन्दन अन्ति तऊ मरना ॥ ३ ॥

बेदु पुरान सिंमृति सभ खोजे कहू न ऊबरना ॥ कहु कबीर इउ रामहि जंपउ मेटि जनम मरना ॥४॥५॥ (आसा कबीर जी)

हे भगत जनो ! देखो माया का अरथ है बदलना । माया थिर नहीं रहती । अगर आप माया के साथ प्यार करेंगे तो भूल गए । शरीर भी तो पन्ज भूतक माया का पसारा है । इस ने जरूर एक दिन खाक में मिलना है, जिस को हम दुनियाँ वाले मरना कहते हैं । मरना सभ ने है । अगर सभ ने मरना है तो हउमे हंकार मोह-माया वासना पिछे जन्म क्यों गवाए । कबीर जी ने फुरमाया है, बड़े बड़े जोगी, जपी तपी सन्यासी तीर्थों पर घूमने वाले साधू भी जो देखते हो, जो सरेवड़े, चुप रहने वाले लम्बी लम्बी जटों वाले इन्हों सभी ने मरना है । पहले मर गए बाकी मरते रहें गे । इस लिये ठीक तो यह है कि उस राम का सिमरत करें, जो रसना राम नाम जपती रहेगी तो जीवन के दुनिआवी तौर पर मरन और जन्म जिस का डर है कुझ नहीं करनगे । चाहे कोई शास्त्रों, वेदों, जोष्तों का जानू और व्याकरण का कितना गुरू हो, वह कभी भी अमर नहीं रहेगा । मन्त्र, जन्त्र करता हो, चाहे लुकमान हकीम तो धनंतर जैसे दवाईयों भी करता हो, फिर भी सभ ने मरना है ।

यह तो हुई जोगी या सन्तों की बात, आप समझें जो दुनियां के लोग हैं राजे महाराजे सिंघासन पर बैठते, सिर पर छत्र झूलते हों और सुन्दर नारीयां भोग के लिये बहुत हों उन्हों ने ऐश्वर्य बनाए हों, ऐसे लोग भी जो दखाई देते हैं, वह भी तो एक दिन मरते हैं । चाहे चन्दन, कपूर सुगंधीयां ला कर रखी हों । उन्हों ने भी मरना है । कबीर जी कहते हैं कि वेदों पुरानों और सिमृतियों सभ पढ़ कर देखी हैं, अमलों के बगैर कुझ नहीं । अमलों के नबेड़े हैं । भाई ज्ञान निरा अचछा नहीं । नाम का सिमरन करना ही ठीक है । सो

www.9009.co.in

भाई रात दिन सारे नाम का सिमरन करया करो । जमों का डर दूर हो जाएगा । माइया असर ना करेगी ।

कबीर जी ने कांशी का त्याग करना

बादशाह सकन्दर लोधी ने जब कबीर जी के चमत्कार देख लिए, ज्ञान सुना, जेहड़ा ज्ञान सारी मानव जाती के लिये था, हिंदू और मुस्लमान, शूदर और वैश जी भी गरीब थे, वह कबीर जी के श्रद्धालू बन्ने लगे । ऐसी दशा को देख कर काजी और पण्डित, उच्च कुल साधू सभ ईरखा करने लगे, उन्हों की ईरखा कारन कबीर जी ने मन में धारन कर लिया कि कांशी से बाहर कहीं डेरा लगाएं । डेरा भी ऐसी जगह पर जहां लोग कम हो जाएं । आपना नाम सिमरन का बचा रहे । ऐसी जगह पहुंच जाना चाहीए । सोचते सोचते उन्हों ने 'मगहर' जाने का मन बना लिया ।

मगहर ऐसा अस्थान था, जहाँ कोई रहता नहीं था । लोगों मन में यह बात थी कि मगहर में रहने वाले लोग गद्धे की जूनी में पड़ते हैं । हो सकता है, वहां पहले बुरे पुरुष रहते हों, या ऐसे पुरुष जी जूआ आदि खेडते हों, परंतू कबीर जी क्योंकि आत्मक तौर पर बहुत ऊंचे हो गए थे, वह तो सारी सृष्टी को प्रभू राम की किरत पवित्र समझते थे । इसी लिये आप ने फैसला कर लिया । आप के यह वचार थे--

कबीर तेरी झौपड़ी गल कटिअन के पास ।।
करनगे सो भरनगे तुम किउ भए उदास ।।

नबेड़ा तो कर्मों का होना है । जो खानगे गाजरां पेट उन्हों के पीड़, दूसरे को काहदी चिंता । सो उन्हों ने कांशी को त्याग देने का फैसला कर ही लिया ।

सो परिवार समेत कबीर जी मगहर चले गए। कबीर जी के शरद्ध लु भी वहां ही पहुंच गए। ज्ञान चर्चा होने लगी। भगती के प्रताप से बुरी जगह भी अच्छी बन गई रौनकें हो गई। जिस जगह पर रहने जां मरने से गधे की जून प्राप्त होती थी वहाँ मुकती सस्ते दाम मिलने लगी लोग रास्ता तय कर के आने लगे । सारी धरती परमात्मा की बनाई हुई सुची है! जन्म मरन, नेक, बूरे, नरक स्वर्ग का सम्बन्ध पुरुषों के करमों के साथ है। कांशी के लोग जो चोरी, ठगी, अत्याचार पाप करेंगे तो उसका भाव यह नहीं है कि उन्हों को परमात्मा सजा नहीं देगा। अबादी को बढ़ाने और लोगों को लुट कर खाने का तरीका था जो गरंथों द्वारा प्रकट किया था। कबीर के 'राम सिमरन प्रताप' ने मगहर को कांशी जैसा रौयकी अस्थान कर दिया।

कबीर गुसांई को अब हिन्दु मुस्लमान दोनों पूजने लगे, उस के शिष्यों में दोनों जातीयां थी, कबीर जी ने उपदेश देकर छोटी जातीओं को ऊपर उठाया।

कांशी छोड़ने के बारे कबीर ने आप वचन किया-

जिउ जल छोडि बाहरि भईउ मीना॥ पुरब जन्म हउ तप का हीना॥१॥अब कहुराम कवन गति मोरी॥ तजि ले बनारस मति भई थोरी ॥१॥ रहाउ॥ सगल जन्म शिवपुरी गवाया॥ मरती बार मगहरि उठि आया ॥२॥ बहुत बरस तपु कीआ काशी॥ मरनु भईया मगहर की बासी॥३॥कासी मगहर सम बीचारी॥ उछी भगति कैसे उतरसि पारी ॥४॥ कहु गुर गज सिव सभु को जानै॥ मुआ कबीरु रमत श्री रामै ॥५॥

उसका प्रमारथ-जिस तरह मछली पानी से दूर रह कर दुख पाती है मैं समझता हुं कि पिछले जन्म में तप नहीं किया जिस के कारण कांशी छोड़नी पड़ी है। हे राम अब मैंने कांशी छोड़ दी मेरी कैसे गती

www.9009.co.in

होगी अकल की कमी हो गई है सारा जन्म मैं कांशी में व्यतीत किया, आखरी समय मगहर आ गया हूं । ज्यादा तपस्या तो कांशी में की पर मरने के समय मगहर रहना पड़ा । कांशी और मगहर में कोई फरक नहीं । मुकती तो भक्ति ने देनी है, जैसी जैसी भक्ति वैसा वैसा फल होगा । हे रामानन्द जी श्री गणेश अन्तरयामी जानता है । कबीर जी बहुत देर मगहर रहते रहे ।

अन्न की महिमा

कबीर जी मगहर आ गए । वहां भी रौनकां शुरु हो गई और आ गए सतसंगी । ज्ञान-गोष्टी होनी शुरू हुई । सतसंग होता और मगहर ही एक परमात्मा का रूप धारण कर गया ।

कबीर जी हर आए संत महात्मा को भोजन जरूर खिलाईया करते थे । उन्हों का लंगर चलता रहता था । इस लिए हर आता प्रशाद खा कर और वचन सुनकर निहाल होता ।

एक दिन दो साधु आए । वह सतसंग में बैठे रहे और जब भोजन का समय हुआ तो कबीर जी ने उन्हों को भोजन के लिए निवेदन किया तो फिर उन्हों ने निवेदन किया-

'महाराज ! हम अन्न नहीं खाते । अन्न का त्याग किया हुआ है कभी दुध मिल जाए तो पी लेते हैं नहीं तो निराहार ही रहते हैं । ऐसा ही कुछ हिसाब बना लिया है । यह शरीर हमेशा वाशना की ओर ही भागता है । इस को काबु रखना ठीक है ।

यह सुन कर कबीर जी मुस्करा कर कहने लगे । इस अनाज को छोड़ने से मन पर काबु नहीं किया जा सकता । इस की बजाए और बढ़ौतरी होगी क्योंकि दुबारा दुध और दूसरी वस्तुओं की तरफ बढ़े गा उस की बढ़ौतरी लगाना है । यह तुम भुल कर रहे हो ।

www.9009.co.in

ऐसा नहीं करना चाहिए। अन्न तो जीवन का मूल है। जो अन्न नहीं खाता वह तो प्रमात्मा के उल्ट चलता है।

भगत जी की बात सुन कर साधु कुछ घबराए और उन्हीं ने ओर ध्यान भक्त जी की बात की ओर दिया। उन्हों के दिल कुछ धड़के, सूरत जागी कि वहिम से जीवन नहीं बनता, यह तो एक कमजोरी है। वह विचार कर ही रहे थे कि कबीर जी ने वचन किया-

धनु गुपाल धनु गुरदेव ॥ धनु अनादि भुखे कवलु टहकेव ॥ धनु उई संत जिन ऐसी जानी। तिन कउ मिलिबो सारिंग पानी ॥ १ ।आदि पुरख ते होई अनादि ॥ जपीऐ नामु अन्न कै सादि ॥१॥ रहाउ ॥ जपीऐ नामु जपीऐ अन्नु। अंभै कै संगि नीका वन्नु ॥ अन्नै बाहरि जो नर होवहि ॥ तीनि भवन महि अपनी खोवहि ॥२॥ छोडहि अन्नु करहि पाखंड ॥ ना सोहागनि ना उई रंड ॥ जग महि बकते दुधधारी ॥ गुपती खावहि वटि का सारी ॥३॥ अन्नै बिना न होई सुकालु ॥ तजिऐ अन्नि न मिलै गुपालु ॥ कहु कबीर हम ऐसे जानिआ ॥ धनु अनादि ठाकुर मनु मानिआ ॥४॥ (गौंड कबीर जी)

तिस का प्रमारथ-वह वाहिगुरु ते गुरदेव पिता धन्य है, जिस ने अन्न पैदा किया है और धन्य है अन्न जो दिल के कंवल को खेड़े में लाता है। भाव जब मनुष्य अन्न खा लेता है तो उस के दिल पर खेड़ा आ जाता है और मन प्रसन्न हो जाता है। संत जो अन्न छकते हैं और अन्न का त्याग नहीं करते, पर वाहिगुरु की भक्ति करते हैं, उन्हों को वाहिगुरु जरूर मिलेगा। अन्न का करता वाहिगुरु है। यदि भाई अन्न का त्याग करें तो भक्ति नहीं होती। अन्न के स्वाद के साथ ही तो नाम जपते रहते हैं। आप ऐसा क्यों करते हैं कि अन्न का त्याग

www.9009.co.in

किया है। अन्न का त्याग नहीं करना चाहिए। यह तो जीव को प्रफुलत रखता है। हे भाई यहां नाम को जपना है, वहां अन्न को भी जपना है, अन्न के जपने से पाणी का ख्याल कर लें । वह भी ठीक है। अन्न के साथ पानी का स्वाद होता है।

कबीर जी बड़ी दलेरी से कहने लगे अन्न के बगैर जो आदमी होता है वह तो समझें अपनी इज्जत खोह बैठता है । अन्न के बगैर स्त्री जैसे है, जिस का पति हो, पर वह उस को चाहती ना हो, वह न रण्डी न सुहागन होती है। ऐसा पुरुष पाखन्डी होता है, जो वरत करता है। कभी यह यत्न न करो कि अन्न को छोड़ दें।

बहुत से साधू ऐसे हैं कि जग में तो कहते हैं कि हम दूधाधारी हैं, मगर रात को चुपके से सभ कुछ खा लेते हैं। मरूंडे भी खाते रहते है, जिस में चावल होते हैं, अन्न के बिनां कोई सुख नहीं । अन्न छोड़ने से गोपाल नहीं मिलता । कबीर जी ऐसा तो जान लिया है कि ठाकुर जी धन्य हैं जिन्हों ने अन्न पैदा किया है। वाहिगुरू की कृपा है।

इस तरह साधूओं को ज्ञान हो गया और उन्हों भंडारे से भोजन खाया और तृप्त हुए। कबीर जी का यश करने लगे।

कबीर जी का चलाना

कहै कबीर एकै करि करना॥
गुरमुखि होइ बहुरि नही मरना॥
(गौंड कबीर जी)

कबीर जी प्रभू के भगत थे। प्रभू ने अपने भगत का यश गरवा कर अपने पास बुला लिय और प्रमात्मां की तरफ से जितना

www.9009.co.in

देर रहने का हुकम मिला था, वह सारा समाप्त हो गया। कबीर जी का चलाना करने लगे। सब जगह खबरें पहुंच गई कि कबीर जी त्यार हैं। इस फाणी जगत को छोड़ कर वह अपने राम के पास जा रहे हैं जिस राम को याद करते हुए उन की जीभा नहीं रुकती न ही थकती थी। कबीर जी ने कहा कि वह चलाना कर रहे हैं। इस बात पर झगड़ा होने लगा, लड़ाई का खतरा पैदा हो गया, हिन्दु कहने लगे कबीर हमारा है, यह हिन्दु है। हम संसकार करेंगे, क्रिया क्रम होगा। पर मुस्लमान कहने लगे कि कबीर मुस्लमान है। इन को धरती में दफना कर के इन की याद में एक शाही मकबरा बनाया जाएगा, इह वली हैं। हजरत मुहम्मद साहिब की बरकतों का इन के ऊपर बरखा पड़ी हुई है हम ऐसे वली को भला कैसे शराह से दूर रख सकते हैं। वह तो आप ही महान फकीर हैं, वली हैं, बिजली खां दिलेर हुआ घूम रहा था।

उधर राजा बीर सिंह हिन्दुओं का लीडर था और बिजली खां पठान आगुओं की अगवाई कर रहा था और उस का मुकाबला कर रहा था बीर सिंह।

कबीर जी एक बंद कोठड़ी में अकेले लेटे हुए थे उन की सुरत जुड़ी थी। कोठड़ी का दरवाजा बंद था, हिन्दु, मुस्लमानों की आवाज सुनकर अन्दर से आवाज आई झगड़ो मत आप दोनों ही हमें प्यारे हो भगवान रंग देखो! मेरे राम की लीला न्यारी है अच्छे कामों का फल अच्छा है! दोनों तरफ चुप हो गए 'दो चादरें और कंवल का फुल लाओ! हम आप का फैसला करेंगे।

सफैद चादरें मंगवा कर शिष्यों ने अन्दर पकड़ा दी। एक घण्टे के बाद 'राम राम' की आवाज आनी बन्द हो गई। लोगों ने जब

www.9009.co.in

कहा, 'बाई अन्दर देखो।' या कोठडी का दरवाजा खोला तो धर्मदास मुखी शिष्य राजा बीर सिंह और बिजली खाँ पठान अन्दर गए। अंदर देखा तो वह हैरानी के साथ गम में डूब गए। दोनों चादरें पड़ी हुई थीं, उन चादरों के नीचे कंवल फूल पड़े हुए थे, मगर कबीर जी की पाँच तत का शरीर अलोप था, एक दूसरे की तरफ देखते और 'राम नाम सत है! राम राम!' कहते हुए सभी बाहर आ गए। एक चादर बिजली खां पठान ने उठा ली और दूसरी राजा बीर सिंह ने। मुसलमानों वाली चादर का क्या बना? यह कुछ मालूम नहीं मगर हिंदुओं ने कांशी में कबीर जी की यादगार त्यार की, जो अभी तक काइम है। कबीर जी के जोती जोत समाने का समय १५७५ बिक्रमी है पर भक्ति के कारन अभी तक जीवत हैं। उन्हों के प्रथाए कबीर जी का अपना वचन है:

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु॥
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर॥५५॥

(सलोक कबीर जी)

भाव कबीर जी कहते हैं, मन ऐसा निरमल हुआ है जिस तरह गंगा का नीर है। वोही प्रमात्मा, जिस को लोग ढूंडते फिरते हैं, वह कबीर जी के पिछे पिछे फिरता था।

कबीर जी का वचन--

पाच नारद के मिटवे फूटे॥
कहु कबीर गुर किरपा छूटे॥

भगत रविदास जी

(जन्म और मां बाप)

भारत में जो भगती की लहिर चली थी, उस में भगत रविदास जी का बहुत ऊंचा स्थान हैं। महान महाँ पुरखों और ऐसे कहीऐ कि भगतों में बड़े भगत माने गए हैं। ऐसे भगत जिन की बाणी पढ़कर आज भी अनेकों जीव कल्याण के मारग पर चलते हैं। आओ आप को उन की कथा सरवन कराएं। ऐसे भगतों और अवतारों को जीवन साखीयां सुनते रहें तो जीवन में बहुत सारी अच्छी तबदीलीयाँ आ जाती हैं।

बड़े भगत रविदास जी का जन्म भी गंगा किनारे के महान पूजनीक शहिर कांशी (बनारस) में हुआ था। आप का पिता रघु चमड़े का काम करता और दुनीयां की कायम की जात चमार में से था। भगत जी की माता का नाम धुरबिनीआ था। वह एक मेहनती नेक मां थी। जो प्रभू प्रमात्मा पर भरोसा रखती थी। दोनों जीवों का जीवन सांझ भरा होने के कारण उनके पास अच्छे पैसे थे। वच्चे के जन्म की उनको बहुत खुशी हुई। उन्होंने खुशी मनाई और वाजे बजाए आपणी बिरादरी को रोटी खिलाई।

श्री रामानंद के दर्शन

कांशी में स्वामी रामा नन्द जी का बड़ा मान सत्कार था। आप आप गरीबों के गुरु माने जाते हैं। आप गरीबों के महलों नें चल पढ़ते। लोगों के दुख सुख पूछते हुए 'राम नाम' का सिमरन की और जीवों को लगाते।

भगत रविदास को प्रगट हुए अभी सिरफ पांच दिन ही हुए

www.9009.co.in

थे और वह दूध नहीं पीता और चलाई जाता था। उस का चलाना मां के दिल को दुःखी करता था । उस ने अपने पति रघू को कहा - 'जी किसी से पूछो ! बालक दूध नहीं पीता और चलाई जाता है, जिस तरह इस दुनियां में आना अच्छा नहीं लगा।'

'हो सकता है, इस लिये रोता हो कि भगवान् ने उस को गरीबों के घर भेज दिया हो। हम नीची जाति के चमार, चमड़े के साथ रात दिन घुलते हां।'

धरबिनीयां - ऐसी बातें ना करो । क्रित की बात है, हम किसी से बुरे हां ? आप जाओ और किसी से पूछो !'

अपनी धर्म पत्नी का कहा मान कर रघू घर से बाहर निकल कर अभी थूड़ी दूरी पर ही गया था कि आगे से स्वामी रामा नंद जी आते दखाई दिये। समय के अनुसार उस ने धरती पर मथा टेक कर श्री रामानंद जी का स्वागत किया।

स्वामी रामा नंद जी - सुना भगता, क्या बात है। शरीर तो अच्छा रहता है ?

रघू - महाराज ! आप की कृपा है राजी रहता हूं, मेरी आप से एक प्रार्थना है।

स्वामी रामा नंद जी - क्या प्रार्थना है ?

रघू महाराज ! हमारे घर एक बालक हुआ है, उस का नाम रवदास रखा है। वह जन्म से ही दूध नहीं पीता, बस चलाई जा रहा है। रात के समय जब उस का जन्म हुआ था, तो स्त्रीयों ने बताया था उस समय रोशनी हो गई थी। बालक बहुत सुन्दर है। मगर यही दुख है कि वह दूध नहीं पीता, दया करो, आप तो दयावान राम के प्यारे हो, मेरे बच्चे को देखो।

स्वामी रामा नंद जी - चल भगता, हम आज किसी जीव के

www.9009.co.in

दर्शन करने के लिये ही बे-चैन घूम रहा हूं । समझ में कुछ नहीं आता कौन मन को खींच रहा है ? हो सकता है, तुम्हारा बालक ही हो। चार रोज से दिल तड़प रहा है। कोई नज़र नहीं आता किसको मिलना है।

इस तरह कहते गुरू रामा नंद जी रघू के पिछे पिछे चल पड़े। रघू घर आया । रघू खुश था कि भगवान् आप उन्हों के घर में आए हैं। उस के भाग अच्छे हैं । स्वामी जी विहड़े में जा खड़े हुए तो रघू अपने अन्दर गया और अन्दर से बालक को उठा कर बाहर ले आया ।

स्वामी रामा नंद जी ने बालक को देखा। उस के चिहरे को देख कर उस के सिर पर हाथ रख कर आप मुहारे वचन करने लगे - 'हे बालक! रोना ठीक नहीं। पूरबले जन्म का फल है । वह प्राप्त हो गया। आगे सम्भल कर चलना। जेकर आगे सम्भल कर चलोगे तो मन की मुरादें पूरी हो जाएंगी।'

इस तरह वचन करके उन्हों ने 'राम! राम!' कहा तो बालक चलाने से हट गया। मुस्कराया। रामा नंद जी ने उस के सिर से हाथ उठा लिया और रघू से कहा, भगता ! इस को ले जाओ और इस की माता को कहो इस को दूध पलाए; पी लेगा।' इस तरह वचन करके रामानंद जी चले गए। उनके अपने मन की भटकना भी मिट गई ।

रघू बालक रविदास जी को अंदर ले गया। धुरबिनीयां को दिया तो रविदास जी ने दूध पी लिया । उस दिन से रविदास जी फिर कभी न रोये। हंसते रहे और जो भी आप के दर्शन करता, उस के कष्ट दूर हो जाते। यह सभी राम की कृपा थी।

भगत रविदास जी के पिछले जन्म की कथा

स्वामी रामा नंद जी जब रघू के महल्ले से बाहर आए ही थे

www.9009.co.in

कि स्वामी जी का शिष्य, जो रविदास जी को देखते समय पास खड़ा था, बोला - 'हे गुरदेव ! यह क्या कौतक है ?'

स्वामी रामा नंद जी - 'कैसा कौतक.....?'

शिष्य - एक तो आप सुबह सुबह नीच जातीओं के महल्ले में आए। दूसरा बालक को देख कर आप ने वचन किया, 'पूरबले जन्म का फल है। इस का क्या भाम अरथ है कुछ समझ नहीं आई ! राम जी का क्या हुकम है ?'

रामानंद जी गुसांई का यह नेम था कि वह आपणे चेलों को भुलेखे में नहीं थे रखते। उन के हर शंके को नविरत करते थे। वह आप त्रैकाल दर्शी थे। त्रैकाल दर्शी होने के कारण उन को सारा ज्ञान था। उन्होंने आपणे चेले को उत्तर दिया - 'हे बेटा ! यह जो बालक तकिआ हैं यह एक महात्मा और भगत होगा। पूरबले जन्म में इस ने एक भूल की थी, जिस कारण इस को चमारों के घर जन्म लेना पढ़ा। जीव को करम का फल जरूर मिलता है।

चेला - महाराजा ! इस ने कैसी भूल की है ?

रामानंद जी - यह एक ब्रह्मचारी और मेरा चेला था। यह रघु चमार के घर जन्म लिया और साल हुए मर गया था। इस का कल्याण होणा था, पर इसकी एक इच्छा और दूसरी भूल रही। इस को फिर जन्म धारन करना पढ़ा।

चेला - ऐसा ही तो मैं पूछ रहा हूं कि क्यों जन्म धारण करना पढ़ा आखर वह कैसी भूल थी ?

रामानन्द जी - यह ब्रह्मचारी भिक्षा लेने जाता था। और यह 'हरि नारायण कहता था। चुटकी चुटकी कई घरों से आटा लाता जिस से लंगर पकता था। जो भी साधु आता वही भोजन करता।

www.9009.co.in

हमारे डेरे के पास छोटू मल कोटू मल बाणीयां का घर था। वह सभ के सभ बहुंत नीच थे। उनका धन्दा ठीक नहीं था। वह हर प्रकार से गरीबों को लूटते थे। उस का गंदा विवहार देख कर लोग कानों पर हाथ रखते थे।

वह कम तोलते, धोखा करते, फरेब से माल थोड़ा देते और रकम ज्यादा लेते हैं। 'राम की कसम, प्रमात्मा की कसम!' कह कर भोले लोगों को ठगते जा रहे थे। पापों से माया बहुत इकट्ठी की है। अगर कभी पुन दान करते भी हैं तो नफे की खातर करते हैं। माया नागनी के पुजारी हैं। झूठ के प्रभाव कारण इन की बुद्धी मलीन हो चुकी है। घर की स्त्रीयाँ सतवंतीयां नहीं रहीं। वह पर पुरषों से मेल करती हैं ऐसे महाँ पापी पुरूषों के घर का आया सीधा खा कर सन्तों की बुधी भ्रष्ट हो जाती है। मन अशांत हो जाता है। प्रमात्मा के चरन कंवलों से ब्रिती नहीं जुड़ती थी।

एक दिन बारश थी, हमारा चेला ब्रह्मचारी सीधा माँगने के लिए गया। मन्दिर से निकलता ही बाणीए के घर के आगे जाकर पैर फिसल जाने के कारण गिर गया। चण्डाल बाणीए का लड़का खड़ा था, उस ने ब्रह्मचारी को उठोया आगे मांगने के लिए न जाने दिया। बलिक आपणे घर ही उतना सीधा दे दिया, जितना डेरे के लिए चाहिए था। ब्रह्मचारी सीधा लेकर डेरे आ गया। प्रसादि त्यार हुआ, जब छका तो मेरी सुरत राम से टूट गई। मेरा शरीर आलसी हो गया। नींद आने लगी, दिल पारे की तरह डोलने लगा। तब मैंने ब्रह्मचारी को बुला कर पूछा, आज सीधा कौन कौन से घरों से माँग कर लाए हो? ब्रह्मचारी ने उत्तर दिया, 'हे गुरु जी! बहुत सारे घरों से भिक्षा नहीं मांगी। बस साथ वाले बाणीए

के घर से लाया हुं क्योंकि उस के लड़के ने प्रार्थना की थी । दूसरा बारिश की वजह से घूमना कठिन था।

यह सुण कर हमें क्रोध आ गया। हम ने ब्रह्मचारी को श्राप दिया, कि जाओ नीच तुम्हारी सूरत नीची है। तुम चमारों से बुरे पुरूषों का सीधा हम को छका कर महां पाप किया है। इस का फल यह होगा कि तेरा जन्म चमारों के घर होगा। उन के घर राम नाम का सिमरन करके तुम्हारा फिर उधार होगा। इस श्राप के दसवें दिन के पश्चात ब्रह्मचारी चलाना कर गया। अब एक साल के बाद इस ने रघु चमार के घर जन्म लिया है। प्रमात्मा ने हम को सन्देशा भेजा है कि यह भ्रम का मारा दूध नहीं पीता। इस लिए कि पहले तो बुरे पुरूषों के घर सीधा मांगने पर यह जन्म मिला है अगर नीच जाती मां का दूध पी लिया तो पत नही कितने जन्म लेने पड़ेंगे। इस प्रकार बहुत ही घबराया और रोने लगा। चाहे यह बालक है पर आत्मा ऊंची है। ब्रह्मचारी है इस को ज्ञान नहीं कि पुरष जन्म करके अच्छा बुरा है हम इस का वहिम दूर करने के लिए आए हैं। अब यह दूध पीकर तकड़ा होगा। राम नाम का भजन करेगा और अब भी भजन कर रहा है। यह है उस के पूरबले जन्म की कथा।'

'चेला - 'धन्य हो गुरू जी! आप की गती आप ही जानते हें। हम तो भूलणहार जीव हें। माया हम को ठगती रहती है। कई घर ठगे जाते हैं। आप की कृपा दृष्टि रहनी चाहिए। आप का सिर पर हाथ हो तो जीव का कल्याण हो सकता है।

इस के आगे स्वामी रामानन्द जी ने आपणे चेलों को समझाया कि साधू को कभी एक घर से ज्यादा दिन भोजन नहीं खाना चाहिए।

जो खाए भी तो गरीब मेहनती की सूखी मिसी रोटी खा ले माया धारीयों का धन्न मेहनत का नहीं होता, वह ठगीयों का होता है। कितनों का खून पिया होता है रात दिन बुरे काम करने से माया इकठी होती है। यह पापों के बिना इकठी नहीं होती। वह राम जी को भी धोखा देते हैं।

रविदास जी ने भक्ति और किरत करनी

भगत भगत जग वजिआ चहुं चक्कां दे विच चमरेटा ॥
पाणा गन्डै राह विच कुला धरम ढोइ ढोर समेटा ॥
जिउ कर मैले चीथड़े हीरा लाल अमोल पलेटा ॥
चहुं वरनां उपदेशदा गिआन धिआन कर भगत सहेटा ॥
नावण आया संग मिल बानारस कर गंगा थेटा ॥
कढ कसीरा सउपिया रविदासे गंगा की भेटा ॥
लगा पुरब अभीच दा डिठा चलित अचरजु अमेटा ॥
लइआ कसीरा हथ कढ सूत इक जिउ ताणा पेटा ॥
भगत जना हरि मां पिओ बेटा ॥ (भाई गुरदास जी)

रविदास जी बालक उमर से निकल कर जवानी में पहुंचे तो घर के कामों में हाथ बटाने लगे, मगर ओपरा ओपरा और उपराम रहने लगे। उन्हों के उपराम रहने कारन घर वाले बहुत दुखी हुआ करन, परंतु कुछ कहने का हौंसला न पड़े, क्यों कि उन के चिहरे का प्रभाव ही कुछ ऐसा ही था। दूसरा वह सन्तों, साधुओं पास जाते थे। रामा नंद जी के डेरे में यां बैठे रहते 'राम नाम' का सिमरन करते रहते। उन्हों के ऐसा करने से घर के खयाल करने लग पड़े कि कहीं रविदास घर छोड़ कर कहीं भाग न जाए। उन्हों ने रविदास

www.9009.co.in

जी की शादी कर दी।

घर में पत्नी आने पर भी भगत जी कुछ काहले न पड़े, वह अपनी चाले चले जाने लगे। पत्नी कुछ अच्छे घर की नेक थी। वह उन्हों का सतकार करती, हुकम मानती और किरत करी जाती। इस तरह दिन बीतने लगे। भगत जी सुबह उठ कर इश्नान करके प्रभू का ध्यान धरते और हर समय प्रभू को न भुलाते। बस नाम का सिमरन करी जाते। घर के काम पिछे पड़ी जाते। मगर लोग देखने और सुनने आले कहते, 'भगत' हैं। पूरबले जन्म में अचछा काम किया है जो प्रभू से प्यार पड़ गया है। सच्च बोलना और दान करने का सुभाव बड़े लोगों जैसा बन गिया, अगर कोई जूता मांगता और कहता कि मेरे पास पैसे नहीं हैं तो उस को जूता मुफत ही दे देते।

मगर अज्ञानी पुरुष रविदास जी के मां बाप अन्दर के भेद को न समझे। वह ख्याल करते कि रविदास जी ला-प्रवाह और कृत-कमाई करने वाले नहीं। वह दुनआनी दृष्टी के साथ देखते थे। उन्हों का देखना उन्हों के लिए लाभवंद नहीं। ऐसा करते हुए एक दिन गरम हो गए और कहा--

'रविदास! यपना घर अड्डु कर, अड्डु चुला बना कर अड्डु ही किरत कर। अपनी किरत चाहे साभी उजाड़ दे, चाहे रख, मगर हमें दुखी न कर। हम यह सहिन नहीं कर सकते कि सभ कुछ दान ही करी जाएं अपनी पत्नी को ले कर वखरी झुगो बना ले।

यह सुन कर भगत रविदास जी ने कोई गुस्सा और गिला नहीं किया। उन्हों ने बड़ी धीरज के साथ उतर दिया, 'हे पिता जी! अगर आप की यही इच्छा है तो ऐसा ही करो। राम आप ही कंम करता है, जिस तरह राम जी की इच्छा होगी काम होते रहेंगे।

www.9009.co.in

चाहे रास्ते में बिठा दो या घर में जगह दे दो। क्या मालुम किस पूरबले जन्म के कारण फिर जन्म ले लिया है और आप का पुत्र कहलाया है आज से ही अलग हो जाते हैं। करके खाणी है।'

उसी दिन रविदास जी लकड़ीयां काट कर लाए। सरकड़ां और काने लाए और शाही राह पर आपणी छन डाल ली। उस की पत्नी बहुत हिम्मत वाली थी। उस ने जल्दी जल्दी सिरकीआँ बांधी और मिटी घटा डाल कर लिब पोच कर सुन्दर कुटीया बनाई। एक तरफ थड़ा बणा कर रविदास जी को अडा लगा दिया। दूसरी और खुला थड़ा बणाया। जिस पर आए गए बैठ जाया करते थे। आप उस देवी के अन्दर ही एक और आपणा अडा बणा लिया और जूते त्यार करके आए गए ग्राहकों की जूतीयां जोड़ कर वह अलग ही गुजारा करने लगे।

पन्डितों की दुश्मनी

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं॥ रिदै राम गोबिंद गुन सारं ।१॥ रहाउ॥ सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे संत जन करत नही पानं ॥ सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥ तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं ॥ भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं ॥२॥

(मलार बाणी रविदास जी)

भगत रविदास जी ने आप कहा - हे नगर वासीओ ! कोई मत भुलेखा खाओ, मेरी जात चमार है। राम नाम जपण की महिमा है कि लोग अच्छा समझने लग गए हैं। राम नाम ने उत्तम बणाया है। गंगा का जल पवित्र है। पर बे-समझ आदमी गंगा के जल से

www.9009.co.in

शराब निकालते हैं, उन को राक्षस पीते हैं, नेक पुरुष नहीं। इस तरह जन्म करके हम उत्तम थे, पर करम और विचार नीचे करके कभी माड़े हो गए। अब ख्याल ऊंचे हुए तो ऊंचे हो गए।

आगे आप ने उदाहरण दिया जैसे गंगा के पवित्र जल से मिल कर दूसरा जल भी अच्छा हो जाता है। ताड़ के पत्ते माड़े हैं, पर उस पर नाम लिखा जाए तो पूजनीक हो जाते हैं। उन को नमस्कार भी किया जाता है। ऐसे ही जन्म करके अगर कोई नीच घर में जन्मा है तो भगती करके ऊचा हो जाता है और उच्च कुल वाला बुरे करम करने वाला माड़ा हो जाता है। जैसे इन्द्र को श्राप मिल गया था।

भगवान ने आप कृपा की। भगत रविदास जी की और से मन्दिर सरां त्यार करवा ली। पूजा होने लगी और भगत जी सारीआं जातां नूं उपदेश करन लगे। तब कांशी के पण्डित बहुत तंग हुए। वह ईरखा करने लगे। ईरखा दे साड़ के कारण उन्होंने शोर मचाया कि रविदास एक चमार होण करके उच्च कुल वालों से पूजा करवाता और उन को चरनामत देता है। मोक्श का रास्ता बताता है। जो ब्राह्मण के बिना किसी को बताने का अधिकार नही। उस ने मन्दिर में देवताओं की मूर्तीयाँ क्यों रखी हूई हैं। इस प्रकार शोर मचा कर उन्होंने कांशी के लोगों को इकठ्ठा कर लिया। इकट्ठे होकर वह कांशी के नवाब के पास चले गए। उन्होंने मनूं सिमरती का आसरा लिया। और नवाब से कहा, शूदर देवताओं की पूजा नहीं कर सकता। देव दर्शन भी नहीं कर सकता। हनेर है धरम भ्रष्ट होता है।

पण्डितों का यह शोर सुण कर नवाब हैरान हुआ। वह नेक पुरुष थी। किसी भगत को कुछ नहीं सी कहिणा चाहता। उस ने

www.9009.co.in

पण्तिों को होंसला दिया और कहा - रविदास को बुला कर मैं फैसला दूंगा। आप घाबरो मत। गुस्से में न आओ। वह भी सुना है भगवान् का भगत है। भगवान की कृपा हर एक पर हो सकती है। मगर जितनी देर रविदास को पास न बुलाएं, उतनी देर इन्साफ नहीं हो सकता।

उसी समय आदमी भेज कर रविदास जी को बुलाया गया। वह खुशी खुशी आए। वह किसी से डरते नहीं थे। वह तो राम (प्रमेश्वर) के भगत थे।

नवाब बहुत समझदार और इनसाफ करने वाला आदमी था। वह मुस्लमान था, मगर बुत पूजा के खलाफ था। बुतों को निरजीव पत्थर की मूरतीयां समझता था, उस ने अनोखा ही स्वाल दोनों के आगे रखा रविदास जी को सम्बोधन करके कहा--

'भगत जी यह पण्डित आए हैं। इन का यह दाहवा है कि आप शूदर हो आप को देव-मूरती पूजने का कोई हक्क नहीं। मन्दर में देवताओं की मूरतीयां रखी हुई हैं। हम को तो कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करें। मगर एक सुझाव है कि गंगा के दूसरे कनारे पर देवताओं के बुत उठा कर रख देते हैं। आप ने परेमा भक्ति से उन्हों को अपने पास बुलाना। जिस के कहने पर यह आ जाएं, उस को पूजा का हक्क होगा, जिस के कहने पर न आए उस को हक्क नहीं होगा। पता चल जाएगा कि आप के भगवान को ब्राह्मण प्यारे हैं यां शूदर! कौन प्यारा है! क्या आप को यह फैसला प्रवान है ? रविदास जी ने वचन किया, मुझे तो यह फैसला प्रहान है। जिस तरह इच्छा हो करो! मेरा राम तो हर थां पर है। हर वस्तु में, हर बुत में राम की सभी प्यारे हैं। इन्हों का झगड़ा निरमूल है।'

पण्डितों से पूछा। उन्हों ने तो ललकारे मार कर आख दिया

हम को मनजूर है। हम अपने देवताओं को बुलाएंगे। देवते हमारे हैं। उन्हों को हंकार था। वह हउमे में फसे हुए दिवाने हुए घूमते थे। इस लिए कि उन्हें द्विद्या का हंकार था, जन्त्र मन्त्र जानते थे। वह मान गए। नवाब की इच्छा तमाशा देखने की थी। उस को वश्वास था पत्थर के बुत भला कैसे गन्गा पार से किस तरह आ सकते हैं। दोनों को झूठा करके देव पत्थर पूज छुड़ा दूंगा। क्योंकि स्लाम में बुत पूजा नहीं।

उस किये फैसले के अनुसार हुक्म दे कर रविदास के मन्दिर से सभी देव मूरतीयां उठाई गईं। उन्हों को चंदन की चौंकी पर बड़े सतकार के साथ गंगा के दूसरे कनारे पर रख दिया गया। पास कोई पुरुष न रहिने दिया। नवाब ने पहले पण्डितों को हुक्म दिया कि उन देवताओं को गंगा जल के उपर से इधर बुलाए।

'बुलाओ भाई! अगर देवते आप के हैं तो हुक्म माल कर इधर आ जाएंगे, पढ़ो मन्त्र!'

पण्डित लगे अवाजें मारने। दो घण्टे अवाजें मार कर थक गए, मगर पत्थर की जढ़ मूरतीयां किस तरह चल कर उनके पास आएं। उन्हों को बोल किस तरह सुनाई दें। जब अवाजें न सुनी तो उन (पंडतों) में से कईओं ने वेद मन्त्र, कईओं ने जादू टूने, जन्त्र मन्त्र पढ़ने और करने शुरू कर दिये। नवाब और लोग उस नराली लड़ाई को बड़ी मौज के साथ देख रहे थे। भीड बहुत थी। पूरा यत्न करके अपनी सभी शक्तिां और द्विद्यावां को परख कर पण्डितों ने हार मान ली। हार मानते समय कहा 'कलयुग में देव मूरतीयां न चेतना में आ सकती हैं और न भाखया दे सकती है। यह तो चुप और अहल रह कर ही नर-नरीयों की अरदासें सुन कर उन्हों की मनो कामनाएं पूरी कर सकती हैं। यह रब्बी भेद है।

www.9009.co.in

पण्डितों का यह उत्तर सुण कर नवाब हंस पढ़ा। उस ने हसते हुए भगत रविदास जी से कहा - 'राम भगत! यह लो अब तुम आपणे देवताओं को आपणे पास बुला लो। पण्डित तो नहीं बुला सके। वह प्रेमी कम लगते हैं। नवाब का यह मजाक भी था। 'जो हुकम' कहि कर रविदास जी चौकड़ा मार कर बैठ गए। ध्यान. भगवान के चरनों में जोड़ लिया। आंखें बंद कर लीं। आपणे राम को याद करते हुए आपणी उचारी बाणी का बिआन करने लगे। बड़ी श्रद्धा भावना से :-

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥ ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पार न सूझ ॥ १॥ सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥ रहाउ ॥ मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥ करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥२॥ जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥ प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥३॥१॥

हे भगवान्! मैं उसी तरह अनजान हूं जैसे कुएं में बहुत सारे डडू होते हैं पर कुएं की हद से परे का उन को कोई भी ज्ञान नहीं होता, ऐसे मेरा मन विष्य विकारों के जाल में घिरा हुआ है। इस में आजादी प्राप्त करने के लिए कोई नजदीक का किनारा नहीं इस का भाव कि जगत पदार्थों में मन ऐसा खप्त हुआ है कि उसका निकलना असम्भव है। हे सारे भवन सात दीपों सात पातालों के मालका। एक बार मुझे जरूर दर्शन दो। हे भगवान्। मेरी मत मलीन है, तेरा भेत नहीं पा सकता। मुझ पर मेहर करो तांकि मेरे भरम दूर हों और समझ पड़े। हे भगवान् तेरे गुणों का पारावार कोई

www.9009.co.in

नहीं पा सकता। बहूत बड़े जोगी और मुनी भी गती नहीं जान सकते पर मेरे पास प्रेम भगती के बिना कुछ नहीं। जात भी चमार हूं। मैं तो प्रेम का वासता डाल कर ही कहता हुं। हे भगवान्! आओ और दर्शन दो। आओ! मेरे पास आओ।

नवाब, काजी, पण्डितों और दर्शकों ने देवताओं पर निगाह रखी हुई थी। वह कौतक देखना चाहते थे। मुसलमान नवाब एक तीर से दो शिकार करना चाहते थे। एक दोनों धिरों का न्याय दूसरा अगर पत्थर के देवते न हिले तो ब्राह्मणों और हिन्दुओं को झूठा करेगा कि ऐसे इन बे-जान पत्थरों की पूजा करते हो यह तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकते। साथ ही भगत रविदास जी की शोभा बहुंत सुनी हुई थी, अनेकों करामातों की साखीयां रविदास के श्रद्धालुओं ने प्रचलत की हुई थीं। सभी देख रहे थे। बहुत ध्यान से देख रहे थे। वह तो भगत जी की परीक्षा ले रहे थे और ईश्वर भगती का मजाक उडा रहे थे। सारा शहिर ही गंगा किनारे पहुंच गया था। सभ की आंखें गंगा पार रखे बुतों पर थी। कई देखने के लिए आपणी बेड़ीयाँ आगे ले गए थे। नवाब के पास खड़े अहिलकार ने कहा - नवाब साहिब। वह देखो बुत हिल रहा है। देखो! देखो! नवाब ने उधर ध्यान किया उस ने देखा कि सचमुच ही देवते चल रहे थे। वह तो चौंकी समेत आ रहे थे सभी देख रहे थे। उस समय सारी कांशी के मन्दिरों की घण्टियां आपणे आप बज रही थीं। वातावरण गूंज उठा। और जय जयकार के नाअरे गूंजने लगे। पर पण्डितों के मापे मरने लगे। वह धरती में धंसते जा रहे थे। वह झूठे पाखण्डी निकले।

पर रविदास जी आपणी धुनि में मस्त प्यार और श्रद्धा के साथ आंख बन्द कर गाई जा रहे थे। उन्होंने दूसरा शब्द इस प्रकार

www.9009.co.in

गाइन किया था। उन्हों की सुरत तो भगवान के चरणों के साथ जुड़ी थी। वह कही जाते थे--

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ।।
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरन दीजै ।। १ ।। हउ बलि
बलि जाउ रमईआ कारने ।। कारन कवन अबोल ।। रहाउ ।।
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ।।
कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ
दरसनु देखे ।। २ ।। १ ।।

हे भगवान मेरे जैसा गरीब कोई नहीं। आप जैसा मेहरबान कोई नहीं। सभी बखशशां करन वाले हो। सभी जानते हं, और क्या परखना है ? मैं यह प्रार्थना करता हूं कि मेरा मन आप के चरनों से दूर ना हो। नहीं होगा। यह भी मुझे वश्वास है। मैं तो आप और आप की कुदरत से बलहार जाता हूं। फिर मेरे साथ क्यों नहीं बोलते। कई जन्म आप से मेल नहीं हुआ। वछोड़े से तड़पता रहा हूं, अब यह जन्म मैं ने आप के लेखे ला दिया हैं, भाव कि आप की भक्ति करते ही जीवन गुजारांगा। एक आप के दर्शन करने की आशा पर ही जीवन स्वास चल रहा है। आप के दर्शन किये को बहुत समय हो गया कृपा करके दर्सन देवो, आओ मेरे स्वामी--

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ।। नीच रूख
ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ।।१।। माधउ सत संगति
सरनि तुम्हारी ।। हम अउगन तुम उपकारी ।।१।।रहाउ।। तुम
मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ।। सत संगति
मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ।। २ ।। जाती ओछा
पाती ओछा ओछा जनमु हमारा।।राजा राम की सेव न कीनी
कहि रविदास चमारा ।।३।।३।। (आसा)

www.9009.co.in

हे भगवान् ! आप चंदन सरूप हो मैं हरिंड की तरह हूं, मगर फिर भी यह आस है कि आप के संग वास है। आप से प्यार है। आप की कृपा से नीचे वृक्ष भी ऊंचे हो गए हैं। मामूली चमार से भगत रविदास बने हां, सुगन्धी आ गई है। हे भगवान् आप के सन्तों की संगत करता हूं इस लिये कि सतसंगत में पहुंचने से आप की शर्न में जा पहुंचता है। मुझ में बहुत से औगुन (बुरे करम) हैं मगर आप बहुत उपकार करने वाले हो। हे भगवान् ! आप रंग बरंगे रेशन के गदेलों की तरह हो, हम कीड़े की तरह हैं जो रेशम को काटता है। फिर कीड़े का वास रेशम में होता है। इस तरह हम पर आप ने कृपा करी। मामूली सी जात-पात भी नहीं। रविदास चमार कहता है - हे भगवान् ! आप की सेवा नहीं कीती। भक्ति-भाव से कोरे हां कृपा करो, आप के दर्शन की इच्छा है।

भगत रविदास जी ने अपने राम को याद किया। याद किया सच्चे हृदय के साथ। राम सहाई हुआ, चन्दन चौंकी के समेत देव-मूरतीयां गंगा की छल के साथ भगत के पास गईं। कांशी के मन्दिरों के टल गूंजते गए। लोग जै जै करते गए और झूठे पण्डित लोगों में से निकल कर अपने घरों की तरफ भाग गए। नवाब हैरान था, उस को आई कि खुदा-प्रसती है क्या ? शुद्ध हृदय से करी अरदास बे-अरथ नहीं जाती।

भगत की उठे और सतकार के साथ चंदन की चौंकी उठा कर अपने मन्दिर की तरफ चल पड़े। उन्हों से हजारों झूठे ब्राह्मणों, कुल और जात अभमानीयों को मूंह की खानी पड़ी - राम सभ का राखा है। बोलो भगत रविदास जी की जै !

चड़ौत की राणी की कथा

साधु की जउ लेहि ओट ।। तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ।।
कहि रविदास जो जपै नामु ।। तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ।।
(बसंत)

सत्य है, भगत जी ठीक कहते हैं, जो साधू महात्मा की शरन आता है, उन का आसरा ले कर नाम जपता है, उस के सभी पाप धुल जाते हैं। जो प्राणी नाम जपता है उस के तो जन्म मरण के दुख भी काटे जाते हैं अथवा वह जन्म मरण में नहीं आता। ऐसा उपदेश भगत रविदास जी करते रहते हैं। उन की महिमा दिनों दिन दूर दूर जाने लगी। श्रद्धालू लोग दर्शन करने के लिए आते भगत जी के पास सतिसंग करते रहते।

कुछ सतिसंगी राजस्थान के किला चड़ौत से आए। वह जब वापस गए तो वहां की धरम लगन वाली राणी झाली ने भगत रविदास जी की महिमा सुणी। उन्होंने बताया, भगत जी को प्रतख दर्शन हुए हैं। भगवान उनके अंग संग रहता है। बात ऐसे थी कि भगत जी के प्रताप के सम्बन्ध में जो कुछ भी उन्होंने सुणा था, वह सुना दिया। राणी के मन में इच्छा हुई कि वह भगत जी के दर्शन करके आपणा जन्म सफल बनाए। वह तो सतसंगण थी। उस ने हुकम किया और राणे को मना लिया कि वह राणी को यात्रा करने की आज्ञा बख्श दे।

राणे ने आज्ञा दे दी। राणी झाली बहुत कुछ पूजा का सामान देने के लिए धन और लंगर के लिए रसदां ले कर चड़ौत से चल पढ़ी और चलती चलती कांशी नगर आ पहुंची। कांशी नगरी की महिमा सुणी थी। देवताओं के भगतों की नगरी और साथ ही ठग

www.9009.co.in

पण्डितों की नगरी। माया का लालच पन्डितों को बहुत था। वह आए गए के कपड़े उतारते थे।

राणी झाली हाथी पर सवार हो जब कांशी के पास पहुंची तो वहां राज-गुरु, राणा प्रोहित मिल गए। उन्होंने राणी के पती के वंश का नाप लिया और कहा - 'चलो धरमशाला में विश्राम करो जो धरम शाला चड़ौत की राणीयों की है जब आते हैं, वहीं ठहरते हैं। उसके बाद गंगा स्नान, पूजा, यज्ञ और पुन दान करने का योग प्रबन्ध किया जायेगा।

'हे पण्डितो! पहले मैंने उस मन्दिर जाणा है जहां भगत रविदास हैं।' राणी छाली ने प्रोहित को उतर दिया।

हैं! पहले चमार के मन्दिर! हरे राम! आप क्या बोल रहे हो? कुल रीती अनुसार सब से पहले आप ने गंगा के स्नान करना है तीरथ यात्रा पर आए हो। यह आपको किसी ने भुलेखे में डाल दिया है।

यह कह कर प्रोहितों ने बड़ा टिल लगाया कि वह राणी ने भगत रविदास के डेरे से मोड़ लें। पर न मोड़ सके। राणी ने आपणे सेवकों को हुकम दिया कि भगत रविदास जी का देहरा पूछ कर उधर को ले चलें।

कांशी का बच्चा बच्चा भगत रविदास जी के नाम से जाणू था। जब उन्होंने पूछा तो रविदास जी के श्रद्धालू उन को ले चले। भगत जी के उच्च मन्दिरों की और झाली चली गई। जब वह वहां पहुंची तो हरी नाम का कीरतन हो रहा था, देवताओं की मूर्तीयों के आगे आसन जमाए रविदास जी प्रभू गुण गा रहे थे। उन के श्रद्धालु पास बैठे खड़तालें बजा कर शब्द गायन कर रहे थे।

हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस॥

www.9009.co.in

ते नर दोजक जाहिंगे सति भाखै रविदास ।।

जल की भीति पवन का थंबा रक्त बूंद का गारा ।।
हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ।।१।।
प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ।। जैसे तरवर पंखि
बसेरा ।।१।। रहाउ ।। राखहु कंध उसारहु नीवां ।।
साढे तीनि हाथि तेरी सीवां ।।२।। बंके बाल पाग
सिरि डेरी ।। इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ।।३।।
ऊचे मंदर सुन्दर नारी ।। राम नाम बिनु बाजी
हारी ।।४।। मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा
जनमु हमारा ।। तुम सरनागति राजा राम चंद कहि
रविदास चमारा ।।५।।

तिस का प्रमारथ - भगत जी बताते हैं, भाई। इस सरीर पर जो मान करते हैं यह पाणी की दीवार है। (साँस) हवा का आसरा है। मास (माँ का रक्त और बाप का बीरज) का इस को गारा लगा हुआ है। हडीयां मांस और नाड़ीयों का यह पिंजरा है। इस के पिंजरे में पक्षी (जीव आत्मा) बस रहा है। भाई! इस जगत में कुझ तेरा मेरा नहीं, जैसे पक्षी शाम को आते और रुख पर बैठ जाते हैं सुबह होने पर उड़ जाते हैं। अगले दिन शायद किसी और वृक्ष पर जा बैठें। इस लिए वह उस रुख को कभी आपणा नहीं कहते। इस तरह जीव इस संसार में आता है और चला जाता है । ना आते हुए कुछ साथ लाता है। न ही जाते हुए कोई जगत की वस्तु को साथ लेकर जाता है। बल्कि उस को मिटी का शरीर भी छोड़ना पढ़ता है। इस शरीर के सुख के लिए डूंगी नीह रख कर मन्दिर और किले उसार रहा है। इसका क्या लाभ ? तेरे लिए तो साढे तीन

www.9009.co.in

हर स्थान ही काफी है। ओ मूरख पुरषा! सुन्दर वाल वाह कर पग्ग टेड़ी बांध कर आकड़ कर चलता हैं, मगर कभी यह नहीं सोचा था कि इस शरीर ने एक दिन मिट्टी का ढेर हो जाना है।...हे उच्चे मन्दिरों और शीश महिलों में रहने वालीओ सुन्दर और जोबन मतीओ मुटआरो! राम नाम के बिना जीवन बाजी हार जावेंगी। (यह बे-अर्थ उच्चे मन्दिर और सुन्दर नारीयों में तू प्रीति करी) हाए अफसोस! इश्वर के नाम बिना तू बाजी हार दिती। भाव मनुखा जन्म गवा लिया।

मेरी जात नींवी है, पंगतो वी नींवी है, जन्म भी चमारों के घर हुआ है, जिन्हों को शूदर और अछूत कहा जाता है। कोई नजदीक नहीं बैठने देता। फिर भी भगवान् बखश मेहर कर मैं आप की शरन आ गया हां, आप के बिना मेरा कोई नहीं।...हे जगत हरता करता ...राम जी!

भगत रविदास जी के पवित्र मुख से वाणी सुनते ही रानी के कपाट खुल गए, उस की आत्मा सुरजीत हो गई। उस ने मन ही मन में सोचा कि अच्छा हुआ, छोटी उमर में ही भगती मारग चली हूं। शाही मन्दिरों में राम नाम के बिना रहना बेअरथ है। राम सिमरन के लिए वह तड़पी। जब कीरतन हो गया तो राणी झाली रविदास जी के चरणों में गिर कर अरजोई करने लगी।

'हे प्रभू! हे नाथ! मुझ पर किरपा करो मुझे शरन लगा कर भगती मारग पर चलने का तरीका बताओ। मैं पापण ने मनुखा जन्म का मूल नहीं जाणिआ। जीवन के जितने दिन गवाए हैं बेअरथ गंवाए हैं। मुझे आपणी चेली बणाओ। मैं सेवा करूगीं, सिमरन करांगी! राम नाम पर राज और दुनिआवी सुख वार दूंगी। मैंने अभी तक किसी से नाम जपणे की जुगती नहीं सुणी। आपणा चरनामित बखशो।

www.9009.co.in

मेहर करो ! प्रभू भगती का दान बख्शो । यही अरज करती रही ।

राणी झाली की अरजोई प्रवान हो गई । रविदास जी ने उस को आपणी चेली बणा लिया । राणी तीरथ यात्रा के लिए जितना धन और कपड़ा लाई थी, वह सारा रविदास जी के चरणों पर रख कर माथा टेक दिया । आत्मा शांत हो गई । सारी भटकणा मिट गई, हरी नाम जपणे लगी । निरा जपणे ही ना लगी सगों खड़तालाँ छैने हाथ में लेकर रविदास जी की वाणी गाने लगी । स्त्री थी, गला रसीला था आत्मा में भगती का जोश था, वह जब बाणी गाती तो पक्षीयों को कील कर अस्मान से फैंकती । राम नाम सिमरन के बल ने सचमुच ही उसको कमली बणा दिया । सारे कांशी में चरचा शुरु हो गई कि चितौड़गढ़ नरेश की राणी झाली बाई रविदास जी की चेली बण गई है । हरि कीरतन करने में लग गई है । उस ने गरीबी भेस धारण कर लिया है । खड़तालें हाथ में ले ली हैं । उस ने हरि कीरतन में बैराग और प्रेमा भगती का बेअन्त प्रकाश होता ।

महीना हो गया राणी झाली बाई को कांशी में रहते हुए । उस ने गंगा स्नान भी किया । मन्दिर के दर्शन भी किए पर 'गुरू रूप' में रवि दास के बिनां किसी को श्रद्धा धारण न की । उस ने ब्राह्मणों की भी परवाह न की और सारी दौलत, जो पुण दान के लिए लाई थी, वह रविदास जी के लंगर में खरच कर दी । उस के मन को शांति आ गई वह राणी बण कर आई थी और संतनी बण कर आपणे राज की और चली गई । उस के चेहरे पर रबी भाव आ गया था जो भी दर्शन करता उस का मन शांत हो जाता ।

रास्ते में हर पड़ाअ पर हरी कीरतन की मंडलीया करती हुई चढ़ौत पहूंची । उस की दासीआँ, उस के नौकर, सभ श्रद्धालू

www.9009.co.in

भगत बन गए। कीरतन करने लगे। खड़तालें और साज खरीदे गए। रानी चतौड़ के इत्हासक किले में चली गई। उस ने अपने महिल का एक हिस्सा मन्दर रूप बना दिया। हर रोज सतिसंग होने लगा। हरी कीर्तन से महिल गूंजने लगे।

पापी आत्मा कांशी के ब्राह्मणों को बहुत दुख हुआ कि रानी झाली ने धन्न पदारथ उन्हों की भेट नहीं किये, एक चमार बन कर उस को सभ कुछ सौंप गई। वह इक्ठे हो कर राना चतौड़ गढ़ के पास पहुंचे। राने के साथ मुलाकात हुई तो पण्डितों ने तिउं कर रोना शुरू कीया-- 'महाराज! अन्धेर हो गया! राजे धरम और परजा के रखवाले होते हैं। धरम की मरयादा को अगर प्रतापी भारत के राजे तोड़ने लग गए तो धरम किस तरह बचेगा? हिंदु संसकृती का बेड़ा डूब जाएगा।'

'रोना 'मैं आप लोगों का मतलब नहीं समझ सका, सिद्धी बात कहो! टेढ़ी बातों से समझाने की जरूरत नहीं।'

पण्डित - 'महाराज सिद्धी बात तो कह हैं कि आप की रानी झाली बाई तीर्थ यात्रा को गई थी। कांशी के रहने वाले चमार रविदास को वह अपना गुरू धारन कर आई है। सभी तीरथों पर दान करने के लिये जो पदार्थ साथ लेकर गई थी वह इकेले चमार को ही भेंट कर आई है। यह अंधेर है, रानी ने एक तो पुरातन बज़ुरगों की चलाई मरयादा को भंग किया है, दूसरा ऊंची कुल की राजकुमारी और चतौड़ राजे की पटरानी होकर एक चमार को गुरू बनाना धर्म से मजाक है। ऐसी बात कभी नहीं हो सकती। चमार के लंगर से भोजन खाया और चरनामृत पी कर जन्म भ्रिष्ट कर बैठी है। इस के बदले रानी को प्रासचित करना चाहीए, नहीं तो कुल नाश होने का डर है। सभी देवते क्रोप हैं। हम कांशी के सभी द्विद्यावानों और गुरूओं

www.9009.co.in

वलों प्रतीनिध हो कर आए हैं। सभ बुरा मनाते है।

राणी झाली ने राणे को गुरु धारन करने की साखी नहीं थी सुणाई पण्डितों से यह बात सुण कर वह तड़प उठा। उस समय दीवानखाने में उठ कर राणी के महिल को गया। आगे राणी हरी कीरतन करने में मगन थी। वह रविदास जी का यह शब्द गायन कर रही थी और उस के चेहरे पर अनोखा ही नूर था। वह रब के साथ सुरत जोड़ी बैठी थी।

बेगम पुरा सहर को नाउ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ॥
ना तसवीस खिराजु न माल॥ खउफु न खता न तरसु
जवालु॥१॥ अब मोहि खूब वतन गह पाई॥ ऊहां खैरि सदा
मेरे भाई। रहाउ॥ काइमु दाइमु सदा पातिसाही॥ दोम
न सेम ऐक से आही॥ आबादानु सदा मसहूर॥ ऊहाँ गनी
बसहि मामूर॥२॥ तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै॥ महरम
महल न को अटकावै॥ कहि रविदास खलास चमारा॥
जो हम सहरी सो मीतु हमारा॥३॥२॥ (गउड़ी)

इस का प्रमारथ - भगवान के स्थान का नाम बेगम पुरा है। भाव कि वहां न कोई फिकर है न गम, कष्ट तो ना किसी को मामला देणा पढता है। कोई वहाँ डरता नहीं और न किसी को कोई दरद होता है सुख ही सुख है शांति का राज है।

अब मुझे अच्छे देश में घर मिला है वहां सातों खैरें हैं। वहां की पातशाही बदलती नहीं। वह उमर पातशाही है। पहला दूसरा और तीसरा पातशाह नहीं आता। प्रमात्मा की भगती वाले पूंजीपत वहां बहुत रहते है। उस शहिर में जैसे किसी को चाहे वैसे वह तुरे फिरे कोई रोक नहीं। जो प्रमात्मा के भेती हैं उन्हें

www.9009.co.in

के लिए खुल है।

रविदास जी ने तो सभी से मुक्ति का रास्ता ढूंडा हूं सभ को कहा, मेरे भाई हो।'

रानी ने शब्द पढ़ना बंद कीता। अरदास करी और कुदरती पिछे मुड़ कर देखा तो उस के पति दे राणा भी खड़े थे, वह उठ बैठी, पति के चरणों को हाथ लगाया और उन को तरफ देखा, पति के चेहरे के बदले रंग से उस को शंका हुई :-

'दासी से क्या भूल हुई है ?'

सुना है आप जिस समय कांशी गए थे, वहां रविदास चमार को अपना गुरू धारन किया है। क्या यह बात ठीक है ?' राणे ने रानी से पूछा।

'स्वामी जी ! जो कुछ आप ने सुना है, वह सभ ठीक है। भगत रविदास जी, इस समय सभ से बड़े भगत हैं। उन्हों का जस सभी कर रहे हैं। उन का कहा प्रमात्मा मानता है।'

रानी झाली बाई ने धीरज के साथ उत्तर दिया। वह निरभै थी। उस की आँखों के आगे भगत रविदास जी की तस्वीर थी।

'हे रानी ! यह बात तो बहुत बुरी हुई। मगर ऐसा होना नहीं चाहिए था।'

रानी - क्यों स्वामी जी ! क्या बुरा हुआ।

राणा - चाहे भगत है, परंतु है तो शूदर नीची जात से! आप राजपूत, कुल रीत तो परोहत अथवा ब्राह्मण को गुरु धारन करने की है। आप को ऐसा नहीं करना चाहिए था।

रानी - स्वामी ! भगवान के घर जात पात नहीं सोची जाती, भगवान् के रचे सभी जीव एक समान हैं।

राणा - आप को प्राशचित करना पड़ेगा, पण्डित कहते हैं

ऐसा करना ही होगा। राणी जी! परजा में शोर है।

राणी - 'नहीं, मैं प्रायश्चित नहीं करांगी। मैंने कोई माड़ा करम नहीं किया, सब मनुष्य भगवान के अंस हैं। राणा जी! यह पण्डित झूठे और लालची हैं। इन को दान नहीं मिला। रविदास बड़ा भगत है। प्रीक्षा में पास हुआ है। गंगा प र से पत्थर की मूर्ती उसी की गोद में आई थी। ब्राह्मणों पर भगवान् खुश नहीं थे। क्या हुआ रविदास का जन्म नीच जाति के घर में हुआ है। पर उस ने भगती कर के आपणे आप को सवरन बना लिया है। सोने को मैल नहीं लगती। वह चाहे गंदी नालीयों में पढ़ा रहे। हम ने सोने की डली की ओर देखना है। गंदगी की ओर नहीं देखणा। स्वामी जी! पण्डित आप को धोखे से ठगने आए हैं। लालची हैं, इन को रूपए दे दो। सोना दान करो। कांशी में भगवान पण्डितों के पास नहीं, मैं देख आई हाँ। वह तो बस रविदास गुरु के पास है। उन्होंने मुझे सच्ची भगती का मारग दिखाया भगवान के बहुत नजदीक किया। मेरा भगवान मुझे हर रोज दर्शन देता है। मैं रविदास जी की निंदा नहीं सुण सकती। जाओ। इन को बोल दो। लोगों को कहि दो कि राणी झाली रविदास चमार की चेली है। उस के आसरे भगवान के दर्शन करती है।

पिछले वाक राणी झाली ने क्रोध और जोश से कहे। उसका तन कांपने लगा। आंखों में चण्डी जैसी ज्वाला चमकी। बाहों में अकड़ा आ गया। राणी की सच्ची भगती के आगे राणा बोल न सका। नजर नीची कर ली। उस का गुस्सा शांत हो गया। दूसरा वह राणी से बहुत प्यार करता था। राणी के विरूद्ध होना उस के लिए आसान काम नहीं था। जितनी सुन्दर जवान, मिठ बोली थी उतनी पतिवरता थी। वह एक सतवती देवी सदा धरम थी।

www.9009.co.in

राना इक्ला पिछे मुड़ने लगा तो रानी ने कहा, 'ठहरो मैं भी साथ चलती हूं । मैं आप पण्डितों को बताती हूं कि वह कौन सा मूंह ले कर भगत रविदास जी की निंदा करते फिरते हैं.' उस समय रानी साथ चल पड़ी। राने के कहने पर भी ना रुकी। दोवों उस स्थान पर आ गए जहां पण्डित बैठे थे, झरोखे में खड़े होकर पड़दे के पिछे, रानी ने पण्डितों से कहा - पण्डितो ! क्या आप को यह दुख है कि मैं सारा धन्न पदारथ भगत रविदास जी के हवाले कर दिया और आप को दान न दिया?. . .आप को दक्षिना की माया चाहिये, नये वस्त्र ! और कुछ बताओ।'

'पण्डित - 'हां ठीक है ! हमे तो दान मिलना चाहिए, वह हम को मिल जाए।'

रानी - 'और तो कोई गुस्सा नहीं ? फिर आप खुश हो ?'

पण्डित - 'नहीं ! और हमें क्या गुस्मा हो सकता है । दान लेने का हमारा हक है सो हमें मिलना चाहिए । गुरू चाहे किसी को धारन करो।'

रानी - दो दो सौ सोने की मोहरें अकेले अकेले को मिल जाएंगी मगर यह सच्चो सच्च बताओ कि रविदास की गोद में देवते आए थे ?' . . .क्या यह सच्च है। जभ नवाब ने परीक्षा ली थी तो आप ने विरोधता !'

पण्डित - ठीक है रानी जी ! सभी बातें सच्ची हैं । देवते आए थे।

रानी - फिर वोह बड़ा भगत है। जो किसी से ईरखा नहीं करता, जाओ दान मिल जाता हैं। मेरा राना जितनी बात मेरी सुन सकता है, उतनी आप की नहीं सुनता। मेरा पति है। स्वामी है. . .हंकार नहीं करती - बात सच्ची है ।

www.9009.co.in

भगतों का राखा भगवान् है। अपने भगतों की लाज हर स्थान पर रखता है। उस समय पण्डितों को प्रतख रविदास जी के दर्शन हुए। उन्हों का चमतकारी चेहरा देख कर वह डर गए। झूठ न बोल सके। उन्हों ने राना जी से क्षमा मांग ली और कहा, 'हम तो माया के भूखे हैं।

राना ने सभी को सोना और नकद रुपए और वस्त्रों का दान कियो। उन को बड़े सतकार के साथ विदा किया और रानी झाली बाई पासों भगत रविदास जी का यश सुना । जो उन के जीवन की वह साखीआं सुनीं जो वह कोंशी से सुन कर गई थी।

रानी झाली ने राना साहिब को प्रेर कर रविदास जी का श्रद्धालू बना दिया। दोनों पति पत्नी ने फैसलो करके रविदास जी को चतौड़ में बुलाया। प्रेम और भक्ति के बांदे हुए रविदास जी सुनेहा मिलते ही चतौड़ को चल पड़े। उन के साथ कई भगत भी चल पड़े। रास्ते में अपने मिशन का प्रचार करते हुए भगत रविदास जी चतौड़ पहुंचे। राज महल का एक हिस्सा उन के (रविदास जी) लिये खाली करा दिया। पूजा की समगरी मंगवाई गई और भंडारे खोहल दिये गए। गरीबों में अन्न और कपड़ा बांटा गया।

भगत जी के राज महल में पहुंचने पर रानी ने सन्तों, पण्डितों और विद्वानों को बुला कर एक बड़ा यज्ञ करना चाहा । रानी की सलाह अमल में आ गई, यज्ञ का प्रबंध किया गया। शहिर में पण्डित जोत्षी विद्वानों और शहिर के पतवंतों को यज्ञ में बैठने और भोजन खाने का निमन्त्रण दिया गया। राना चतौड़ का निमन्त्रण भला शामल होने से इन्कार कौण करे ? यज्ञ वाले दिन सभ इक्ठे हो गए

www.9009.co.in

लाईने लग गई। जब प्रशाद बांटने लगे तो सन्तों और पण्डितों ने इस बात की विरोधता की। रविदास पंगत में क्यों बैठता है। यह चमार है। हम धर्म भ्रष्ट नहीं करवाएंगे। हमारे साथ न बैठो। हम उच्च कुल के है। उन के मन का भरम था।

सन्तों के कड़वे वचन रविदास जी ने भी सुण लिए, पर वह क्रोधित नहीं हुए। मुसकराते रहे । भगती के साथ रविदास जी लोगों का सुधार भी करते थे। उन्होंने राणी को पास बुला कर कहा :-

'हे राणी ! यह उच्च ब्राह्मण है। इन को भोजन कराओ। हमारा कोई नहीं। बाद में खा लेंगे।

ऐसे बचन सुण कर राणी झाली व्याकुल हो गई। उस के मन में आया कि वह सब को कानों से पकड़ पकड़ कर बाहर निकाल दे पर भगत जी ने समझाया। राणो और राणी मायूस होकर खड़े हो गए। आखर राणा ने पंगत में जा कर पण्डितों से कहा। 'भोजन खाओ! आपकी बात मान ली। गुरदेव आपके साथ नहीं बैठते।

मूरख जात के अभिमानी पण्डित भोजन करने लगे। वह हसते थे थे कि उन की बात मान ली गई। पर वह ऐसे मूरख थे कि जैसे भाई गुरदास जी ने बताया है, जो आपनी खेह उडा कर आपणे सिर पाते हैं :-

जिऊं हाथी दा नावणा बाहर निकल खेह उडावै ।।
जिऊं उठं दा खावणा परहर कणक जवाहां खावै ।।
कमलो दा कछोटड़ा कदे लक कदे सीस वलावे ।।
मूरख का किहु हथु न आवै ।।

मूरख आख तो बैठे पर जब भगवान का कौतक देखा तो

www.9009.co.in

डर गए। कई बे-समझ थे। उन्होंने शोर मचा दिया कि हमारे साथ बैठे हैं। बांटने वालों ने हंस कर कहा, महात्मा जी! प्रशाद खाओ! भरम छोड़ो डर और वहिम का कोई इलाज नहीं, छको। पर वह डर गए। बड़े छोटे सभी पण्डित बोल पड़े और सिआणों ने भगत जी की लीला समझी कि उन का जात अभिमान भगवान को नहीं अच्छा लगता। यह कौतक भगवान का है।

पण्डित हार गए। उन्होंने राणा जी के आगे बेनती की। 'महाराज 'महाराज! बुलाओ भगत जी को! आप पंगत में बैठें तब हो भोजन होगा। हम हारे। भगवान भगती और प्रेम भावना का भूखा है। वह जात पात का नहीं।

भगत रविदास जी साथ बैठ गए तब सभी ने मिल कर भोजन खाया। भोजन के पश्चात भगत जी ने सब को उपदेश दिया।

भगत जी ने ठाकर नदी में बहाए

चड़ीत के राणा चन्द्रहांस को तारते हुए भगत रविदास जी देश का रटन करते और तीरथों का स्नान करते हुए कांशी नगरी में आ गए। कांशी में एक हिन्दु राजा नागर मल भी था। वह मुगल सरकार के अधीन रहता था और आपणा राज करता था। तीरथों और धर्मों के ज्यादा मुकदमे उसी के पास जाते थे।

जब रविदास जी वापस कांशी आए तो आप का जस दुगना सवाया होने लगा। राजा नागर मल ने एक बहूत बड़ा यज्ञ किया। उस यज्ञ में भगत रविदास जी को भी बुलाया गया। जब आप आए तो आप के साथ श्रद्धालू और सेवक भी थे। जब वह यज्ञ में शामल होने लगे तो ब्राह्मणों ने शोर किया कि शूदर ब्राह्मणों में नहीं बैठने देने चाहिए। ऐसा करने से हमारा अपमान होता है।

www.9009.co.in

धरम भ्रष्ट होगा। रविदास चाहे भगती करता है, फिर भी जन्म कर के तो शूदर हैं।

यह सुण कर नागर मल कुछ सोच में पढ़ गया। वह न तो ब्राह्मणों को नाराज कर सकता था और न भगत रविदास जी को कहि सकते थे कि यज्ञ में शामल न हों। उन के पहुंचने पर लोगों ने माथे टेकने शुरु किए। माया के ढेर लग गए। ब्राह्मणों की और किसी ने भी न देखा। सारे ही निरास हो गए। ब्राह्मणों ने राजा नागर मल को जाकर कहा। उन्होंने राजा को क्रोध से कहा :-

हे राजन ! आप ने पुराणे शास्त्रों, सम्रितीयों ब्राह्मणों के ग्रन्थों का अपमान किया है। शूदर का क्या काम ? कलजुग आ पया। हम प्रशाद नहीं खाएंगे। हम चलते हैं।

असल में ब्राह्मण लालची थे। वह यज्ञ छोड़ कर जाना भी नहीं चाहते थे शोर ही मचा रहे थे। नागर मल ने धीरज और गम्भीरता से कहा - 'हे पण्डित जनो ! इस बात का कई बार फैंसला हो चुका है कि भगत रविदास एक ब्रह्म सरूप आत्मा है। जात पात का भ्रम न करो। अगर कोई भजन करता है वह पवित्र और उच्च कुल हो जाता है। करम प्रधान है, जात प्रधान नहीं। आओ ! भगत जी के पास चल कर ही फैंसला कर लेते हैं।'

यह कहि कर राजो ब्राह्मणों को साथ लेकर भगत रविदास जी के पास गए। अन्तरजामी भगत जी, जो घाट घाट के जानणहार थे, उन्होंने राजा के मन की भावना जान ली और कहा :-

'हे राजन ! हुकम करो, कैसे आए हो !' नागर मल ने कहा महाराज ब्राह्मण शंका करते हैं। इन की शंका नविरत करो !

रविदास जी - 'ब्राह्मण किस बात की शंका करते हैं ? इन को हम क्या कहते हैं, भला बता सकते हैं ?

www.9009.co.in

नागर मल - 'एक इन की शंका है कि आप जन्म करके शूदर हो, इस लिए पुराने शास्त्रों के अनुसार आप का यज्ञ में शामल होना ठीक नहीं, आप अलग बैठो ।

रविदास जी - दूसरी शंका क्या है ?

नागर मल - दूसरी शंका है कि आप एक तरफ तो एक ईश्वर की उपासना बताते हो और देवी देवते, ठाकुर, जन्जु आदिक को झूठा कहते हो, दूसरी तरफ यह सभी मरयादा करते भी हो । आप ने जन्जू भी डाला हुआ है । यह ब्राह्मणों जैसी ठगी है । ऐसे शंके हैं । इन का जवाब देना जरूरी है ।

रविदास जी यह सुन कर मुसकरा पड़े । उन्हों ने फुरमाया-- हम को यह समझ नहीं पड़ती ब्राह्मण लोग किस बात की ईरखा करते हैं ? प्रमात्मा सभ का करता है इस लिए उस की पूजा करते हां । यश करते हाँ । सख सागर से मिला, विष्णु को अरपिया, चंदन ठंडी वस्तु है, जो माथे पर लाया जाता है तो सीतलता करके मगर जंञू हम ने धागे का नहीं पाया, यह भुलेणा है जंञू तो जत और धरम का है । नेकी तो सेवा की निशानी है । ब्राह्मणों की मालकी नहीं ना जाइदाद । यह एक घुमण्ड है । सिरफ राज-भाग इन के अधीन रहा । इन की मरजी से किसी को ऊंचा और किसी को नीचा करार दे दिया, जरा सोचो राजन ! अगर हम कांशी में न जन्म लेते, कहीं बाहर से आते तो क्या मालूम होना था, हम कौन हां ! पन्ज तत का शरीर किसी का काला और किसी का गोरा । जात से शरीर का कोई सम्बंध नहीं । खतरी और ब्राह्मण भी काले हैं और कुकरम भी शूदरों से ज्यादा करते हैं । प्रमात्मा जिस बालक को जन्म देता है, उस के माथे पर जात-गोत नहीं लिखता । या तो पण्डित इस प्रथाइ कोई सबूत देवें ।

www.9009.co.in

भगत जी ने बाणी उचारी

खट् करम कुल संजुगतु है हरि भगति हृदय नाहि ।।
चरनार बिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ।।१।।
रे चित चेति चेत अचेत ।। काहे न बालमीकहि देख ।।
किस जातिते किह पदहिअमरिओ राम भगति बिसेख।।१।।रहाउ।।
सुआन सत्र अजातु सभ ते कृष्ण लावै हेतु ।।
लोग बपुरा किआ सरा है तीनि लोक प्रवेस ।।२।।
अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचर गए हरि कै पासि ।। ऐसे दुरमति
निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ।।३।। (केदारा रविदास जी)

हे राजन ! समझण वाली बात यह है कि प्रभू की भगती से बिना भाव दिलों प्रमात्मा से प्यार किए बगैर हैं। मनुष्य नीच है। चाहे छः तरह के करम क्यों न करता हो। और मनुष्य को चाहिए की ईश्वर की भगती करे। जन्म जात की और जाओ तो बालमीक बताओ कौन सी उच्च कुल में थी। जिसने श्री रामचन्द्र जी रामायण लिखी। राम नाम के सिमरन करके ही तो वह ऊंचा हुआ। एक पुरुष कुत्ते मारा करता था। पर क्योंकि श्री कृष्ण के चरनों का भोरा था । इस करके वह सतकारिया गया। पिंगला अजामल जैसे अनेकों सिमरन करने वाले तर गए। ईश्वर सभ का ऊचा स्थान बनाता है। सो हे राजन ! जब ऐसे पुरुष तर गए हैं तो आप क्यों घबराते हो ! अच्छा है ईश्वर भगती करना। यह ब्राह्मण और जात पात का ख्याल छोड़ देणा। कबीर जी का बचन याद करन जे ब्राह्मण उच्च कुल होते हैं तो इन का जन्म उन बच्चों की तरह न होता। जो शूदरों के बच्चे हैं।

भगत रविदास जी के ऐसे बचन सुण कर नागर मल को तसल्ली

www.9009.co.in

हो गई, पर ईरखा करने वाले ब्राह्मण बहस करते गए।

जंञू की बहिस हुई तो भगत जी ने चार जुगों के जंञूओं बाबत बताया। सतिजुग का जंञू सोने का था। त्रेते का चांदी का था। तांबे का जनेऊ दुआपर में हुआ और कलजुग में सिरफ सूतर का। बाकी रही ठाकरों की बात - मैं मूरती पूजक नहीं।

हे राजन! अगर आप कहते हैं तो गंगा की मूर्तीयां गंगा में बहा दी जाती हैं।

नागर मल - पर आपने यह रखी क्यों? यह क्या भेद है?

रविदास जी - यह एक भेद है आत्मक मण्डल का, भगती करने का वसीला। देखो तिस प्रथाई भगत जी ने शब्द उचारा :-

फल कारन फूली बनराइ ॥ फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥
गिआनै कारन करम अभिआस ॥ गिआनु भइआ तह करमह
नासु ॥३॥ घ्रित कारन दधि मथै सइआन ॥ जीवन मुकत
सदा निरबान ॥ कहि रविदास परम बैराग ॥ रिदै राम की
न जपसि अभाग ॥ (भैरउ रविदास जी)

हे राजन! आप सिआणे हो बनासपति की और देखो! पहले थूल लगते हैं, फूल के बाद जब फल की डोडी लग जाती है तो फूल झड़ जाते हैं। उन की जरुरत नहीं रहती। फल रहि जाता है। इसी तरह भगती का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पहले करम होता है। भाव भगवान की और ध्यान लगाने के लिए कोई न कोई भगवान का चिन्ह रखा जाता है। जब मन टिक जाता है तो वह मूरती अलग हो जाती है करम का नास हो जाता है। ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जैसे बच्चा पहले खिलौने से प्रीत करता है और खेलता है पर जब वह बड़ा हो जाता है उस को ज्ञान हो जाता है तो खिलौनो की जगह असल चीज से खेलने लग पड़ता है। घी निकालने के लिए दूध

अथवा दहीं को रिड़का जाता है। सो हे राजन! सोचने वाली बात है हम कोई मूर्ती पूजक नहीं। यह तो परम्परा ही चली आ रही है। एक मर्यादा थी कि मन्दिर में मूर्ती रखना, कल से सब गंगा में प्रवाह दी जाएंगी। और कोई शंका हो तो बताओ।

ईश्वर की कृपा से हर बात से भगत जी ने ब्राह्मणों को झूठा कर दिया। वह शरमिंदे हुए और रविदास जी यज्ञ में शामल हुए। उस दिन ही जब मन्दिर वापस आए तो हुकम दिया। सभी मूर्तीयां गंगा में प्रवाह दी और मन्दिर में कीरतन ही प्रधान कर दिया। आप दो बार सतिसंग करते और सतिसंग में वाहिगुरु का जस गाया जाता। भगत जी के दर्शन करने के लिए दूर दूर से संगतें आती।

मीरां बाई और भगत रविदास जी

उदयपुर के महाराणा सांगा की नूंह मीरां बाई हुई थी। इस मीरां बाई का नाम सारे भारत के मन्दिरों में गूंजता है। यह कृष्ण भगत हुई है। मीरां बाई के भजन गाए जाते हैं। इस के कृष्ण प्यार और भगती की फिल्में त्यार हुई हैं।

मीरां बाई जवानी में विधवा हो गई थी। आपणे बाप से आज्ञा ले कर तीरथ यात्रा करने के लिए आई। वह प्रभू की भगती के लिए कांशी पहुंची।

कांशी नगरी मन्दिरों और पण्डितों की नगरी है। हजारों यात्रू रोज आते हैं और मन्दिरों में गंगा किनारे रौणकें रहती हैं। ऐसी नगरी में मीरां बाई पहुंची, उस की एंक वफादार दासी साथ थी। जिसका नाम करमा बाई था।

यहां बता देणा ठीक है, चाहे अलग जगह भी मीरां बाई बाबत

लिखा है कि मीराँ बाई बचपन से ही श्री कृष्ण जी की भगत थी। वह विषणपदे पढ़ती और जवान होकर तो श्री कृष्ण जी के मन्दिर में देव-दासीयों की तरह नाचने लग पढ़ती थी। वह श्री कृष्ण जी के बिनां किसी की पूजा न करती। श्री कृष्ण जी को पारब्रह्म समझती। वह जब कांशी में पहूंची तो उस ने हर जगह पाखण्ड का ही प्रभाव देखा, विश्व मालक पारब्रह्म की अस्ल पूजा कम देखी। वह संतों महंतों के पास गई। उसने हर जगह ईश्वर का प्रकाश देखने का यत्न किया। उसको कहीं कुछ भी नजर न आया।

मीरां हरी की प्यारी थी। कृष्ण के बुत को उस ने मां के कहने पर स्वामी माना था। बस लड़ न छोड़ा। जब समझ पढ़ी शादी हुई तब पता चला दुनीयावी पती राणा साहिब है तो उस से दुनीयावी संबंध रखा। जिन स्त्री पुरुषों का शरीरक सम्बन्ध होता है। पर आतमा या रूह तो श्री कृष्ण भगवान के चरनों से जुड़ी रही! धीरे धीरे बुत परे हो गए। बस भगती रह गई। आतमा प्रभू प्रमातमा के भजन गाने लगी पाखण्ड से बहुंत दूर चली गई। कांशी के मन्दिरों में भगवान जस कम मिला। उसको तो ब्राह्मण जस ही नजर आया। माया की पूजो दिखाई दी और हृदय में शंके उत्पन्न हुए। व्याकुलता आई, पर जब रविदास जी के दर्शन किए तो आतमा से आवाज आई - 'यही सत्य है असल है! प्रभू की पूजा! मीरां जो भालती वही मिल गया।

मीरां ने हाथ जोड़ कर अरज की - 'हे स्वामी जी! यह शब्द अभी जबान से निकला ही था कि भगत रविदास जी ने रोक दिया। उन्होंने कहा, 'हे देवी! मैं तो एक नीच जात का आदमी हुं। आपके भले के लिए प्रभू से बेनती करते हैं कि जन्म जन्म का बिछड़ा कहीं मिल जाए यहां चोरासी के गेड़ में पढ़ा हुं। मुझे

'स्वामी' कहने का क्या लाभ । स्वामी तो वह मालक है, जो जगत का करता है । उस के आगे प्रार्थना करो--

भगत जी इस तरह शब्द पढ़ने लगे--

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु
किआ कीजै।। बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु
दीजै ।। १ ।। हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ।।
कारन कवन अबोल ।। रहाउ ।। बहुत जनम बिछुरे थे
माधउ इहु जनमु तुमारे लेखे ।। कहि रविदास आस
लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ।। धनासरी रविदास जी)

तिस का भाव अर्थ - हे करतार ! इस दुनीआं पर मेरे जैसा कोई गरीब नहीं और आप जैसा कोई दयालू नहीं । यह बात मानी है । आप के सुन्दर वचनों में मेरा मन लगा है। भरोसा कर बैठा हां । अब मन कहीं नहीं जाता ।

हे मेरे दातार ! मैं आप से बलहारे जाता हां । पर क्या कारन है कि आप हम से बोलते नहीं चुप रहते हो । है तां बात ठीक, हे प्रभू ! मैं कई जन्म और देर से आप पासों बिछड़ा हां। अब दर्शन की इच्छा करता हूं । इस लिए यह मनुखा जन्म आप के लेखे लगा दिया है। अथवा - मनुखा जन्म का भाव है कि प्रभू की भक्ति कीती जाए तो आशा है कि जीवन में सफलता होए । ऐसी करनी करें । इस से आगे उन्हों ने फुरमाया--

'हे देवी ! सभ का दाता राम है । उस राम के आगे बेनती करते रहें और उसी की भगती करें । करें भी ऐसी कि द्वैत भाव मिट जाए । मुझे स्वामी कहोगे - मैं तो आप उस को मालक मानता हुं तो आओ ! उन का जस करें --

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु

पूरि राखउ ॥ मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ
रसन अमृत राम नाम भाखउ ॥१॥ मेरी प्रीति गोबिंद
सिउ जिनि घटै ॥ मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥
१॥रहाउ॥साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु
भगति नही होइ तेरी ॥ कहै रविदासु इक बेनती हरि
नही होइ तेरी ॥ कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ
पैज राखहु राजा राम मेरी ॥२॥ (धनासरी रविदास जी)

चित में आठो पहिर सिमरन करते रहो। आंखों में प्रमात्मा का ही चित्र हुए और जो कान सुणन के लिए हैं, इन में आप के जस के बिनां कुछ और सुणाई न दे। ऐसा मन हो कि वह भौरे की तरह अमृत रूपी जस को ही प्राप्त करे, बस भगवान का नाम ही उचारा जाता रहे और किसी और मन न लगे।

यह भी बेनती है कि मेरी प्रीति और किसी तरफ भाव दौलत हउमै वाशना आदिक की और न लगे, बलिक वाहिगुरु का जस ही करती रहे यह भगती महिंगे मूल्य ली है। यहां रविदास जी का आपणे पिछले जन्म की और इशारा है। कैसे उन्हों ने पिछले जन्म भगती की। पर थोड़े से आलस करके दोबारा जन्म लेना पड़ा। फिर भगती करनी पढ़ी।

इस से आगे उन्होंने समझाया हे देवी! भगती होती है। अकेले नहीं साध संगत में, क्यों ? साध संगत के बिनां प्रेम की उत्पती नहीं होती। प्रेम ही तो मूल है भगती का। बस यही बेनती है कि वह भगवान्, जिन राजाओं के राजे है। पैज रखें। ऐसा ही कहिणा चाहिए।

मीरां बाई ने बचन सुणे तो हृदय को शांती आ गई। ऐसे ही तो महां-पुरष वह टोलती थी। उस समय मीरां बाई और करमा बाई

रविदास जी के मन्दिर में ही बैठीयां सन कि शाम हो गई । उस समय कांशी के मन्दिरों के घण्टे बजने लग पए। आरती का समय हो गया आरती होने लगी। मीरां बाई भी आरती दीपक जगा कर करिया करती थी, परंतु भगत रविदास जी की आरती सादे ढग से होती रही नजर पडी । दोनों हाथ जोड़ कर इक मन होकर भगत रविदास जी ने यह शब्द पढ़ दिया--

नामु तेरो आरती भजनु मुरारे ।। हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे।।१।।रहाउ।।नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ।। नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे।। १ ।। नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ।। नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ।। २।। नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ।। तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ।। ३ ।। दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे ।। कहै रविदासु नामु तेरो आरती सतिनामु है हरि भोग तुहारे ।।

(धनासरी रविदास जी)

हे भगवान् ! आरती, असल में तो आप का नाम ही तो आरती है। हे मुरदंत को मारने वाले प्रभु मुरारी जी ! स्नान भी आप के नाम या साध संगत की श्रद्धा रूपी धूड़ी है। यह आशा हो गई है कि हरी के नाम बिना जितने भी पसारे हैं, वह सभ झूठे हैं। सच्च कहीं नहीं, नाम ही सदा रहिन वाला है, और जो भी कुछ नजर आता है वह बिनसनहार है। अगर आसन को लईये, कुशा का होए या किसी और वस्तु का तो वह भी टूट कर खत्म हो जाने वाला है, सच्चा आसन तो आप का नाम ही है। चंदन रगड़न वाला

www.9009.co.in

पत्थर 'उरसा' भी तो आप का नाम है। केसरो भी नाम ही है। नाम ही अच्छा पवित्र जल है, चंदन पर उस को चड़ाना। इन शब्दों का सभी भाव है कि हे प्रभू! आरती करने का जितना सामान, आसन, पत्थर, चंदन और केसर आदि जो ठाकरों को लगाया जाता है, सभ आप की ही तो पैदा की हुई है। जिस समय वह आप को अरपन करते हां तो कौन सी वडिआई करते हां? यह तो सभ आप की दी है, इस लिये आप का नाम उत्तम है!

अब लें और वस्तुएं दीवा, उस की बती और तेल आदिक, वह भी मैं आप का नाम ही उत्तम समझता हूं, भाव कि आप के नाम का यश कर लेना ही ठीक है, बाकी झूठा पसारा है, असल में आप की शक्ति रूप सूरज चंद या अगनी, तेल, रूंई जो आप की किरत यां शक्ति है, उन के साथ सारे रोशनी होती है। दीपक जला कर मनुष हंकार करे कि मैं आप को रोशनी देता हां, यह झूठ है। हउमै है। इस लिये मैं तो कोई दीपक नहीं जलाता। असल में भगतों के घर में आप के नाम की रोशनी है। सारे जगत में रोशनी है। इक मन्दिर तो बात कुछ नहीं।

हे भगवान्! पण्डित तो कहता है, फुल्लों की माला चढाई जाए। इस लिए फुल्लों की माला आप के नाम की शक्ति से अठारां भार वनासपति जो आप धरती पर उतपंन करी है, पहले ही आप को चढी है। सभी फूल भौरयों ने जूठे करे हैं। देखो! आप की बखशशें आप को किस तरह भेंट चड़ावां। भाव कि फुल्लों का क्या लाभ, यह तो पाखण्ड है। असल में तो यह सभ आप का ही है। इस पाखण्ड से तो नाम जपना ही ठीक है। नाम जपते रहना चाहिए। अठारां पुरोन ६८ तीरथ यह सभ संसार पर वरत रहे हैं। बस आपना तो नाम है और सतिना का भोग लगाते हैं। इस से ज्यादा कुछ नहीं।

www.9009.co.in

मीरां बाई जिस खोज में थी, उस में उस को सफलता प्राप्त हो गई। उन्होंने बेनती की, हे प्रभू भगत! दासी को भी भगती करनी बताओ। आपणी शिष्या बनाओ। गुरु के बिना भगती नहीं हो सकती मैं तो सिमरन करती उस भगवान् के मन्दिरों में उस का जस करती ओर जब नाच करती हूं तो सब लोक मजाक करते हैं, कोई मुझे अमली कहते हैं और माड़ा समझते हैं।

यह सुण कर भगत जी बोले - 'हे मीरां! आप का जन्म तो राजा के घर हुआ। आप का इस तरह भगती करना लोगों के लिए मज़ाक हो सकता है, पर लोग तो अमीर को भगती करता देख कर मजाक करते हैं, इस लिए कि उन को ज्ञान नहीं, वह अन्धे हैं। माया के मोटे पड़दे की पट्टी उन की आंखों में बंधी रहती है। उन को तो बस दुनीयां के पदारथ, मान अपमान और लालच हऊमैं आदिकही दिखते हैं। उनको आत्मक मंडल का ज्ञान नहीं। जिस को ज्ञान न हो। उस की बात का गुस्सा नहीं करना चाहिए।

मीरां बाई - जैसे आप हुकम करोगे, वैसे ही करी चलूंगी, कृपा करो। सुसराल घर और मापे सभी इस बात खलाफ हैं, मगर आत्मा भक्ति के साथ जुड़ चुकी है।

रविदास जी ने मीरां बाई को उपदेश दिया। उस को भक्ति और सेवा की तरफ लगाया। वह उसी तरह भक्ति करने लगी।

भगत रविदास जी ने मेवाड़ जाणा

कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥ प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥ १ ॥ तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥ पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥ रहाउ ॥ संपति

www.9009.co.in

बिपति पटल माइआ धनु ॥ ता महि मगन होत न तेरो
जनु ॥ प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥ कहि रविदास
छूटिबो कवन गुन ॥

मीरां इस शब्द को हर घड़ी पढ़ा करती थी। क्योंकि इस शब्द का भाव उस के जीवन के साथ ढुकता था। मापे और सहुरे भक्ति छुड़ाने के लिये कहते थे, वह साधू भेख का त्याग करके मन्दिर में - राज भवन में ही पूजा करती रहे। देव दासीयां की तरह मन्दिर में लोगों के सममुख नाच करे। इस तरह राजपूती शान को दाग लगता था। उन्हों की समझ ऐसी थी पर मीरां कोई प्रवाह न करती। वह इस शब्द को पढ़ कर ही सुना देती।

इस का भाव अर्थ है, क्या हो जाएगा अगर इस शरीर के टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे? हे प्रभू आप का प्यार नहीं जाना चाहिए। जान का डर नहीं, डर तो है कि आप का प्यार ना जाए। यही आप के भगत को डर रहता है। आप के चरन कंवलों में मन लग गया है, भौरा बन कर भगती का रस ले रहा है। जाइदाद और माया के झगड़ों में आप का भगत नहीं पड़ता, आप का भगत तो प्यार की जंजीर से बांधा है। किसी तरह भी आप का सेवक प्यार बंधन से छूट सकता। बात क्या कि भगत जन भगती नहीं छोड़ता, चाहे उस को कितने कष्ट उठाने पड़ें। जिस तरह भगत प्रहिलाद को अनेक कष्ट और डर दिए गए मगर उस ने राम नाम का त्याग न किया। 'राम' ने ही उस की मदद की। उस को गरम थंम तों भी रख लिया। मीरां बाई और करमां बाई, रविदास जी पास कुछ समय सेवा करने और नाम सिमरन करने के पश्चात वह आपने शहर मेवाड़ को मुड़ आई रास्ते में सतसंग होते गए।

मेवाड़ पहुंच कर मीरां बाई बहुत ज्यादा भक्ति में रंगी गई

www.9009.co.in

वह दुनीयाँ के माया के पदार्थों को भूल गई। उस के भाई सोहरे घर के बन्दे इतने क्रोधवान हुए कि मारने पर तुल गए। एक दिन ऐसी भी हालत आ गई कि मीराँ की माता भी उस की दुश्मन हो गई। मां कभी सन्तान को नहीं मारती। पर मेवाड़ के शाही खानदान ने उसको इतना मजबूर किया कि उस ने जहिर का प्याला भरा और मीरां को बुला कर कहा - मीराँ यह ठाकरों का अमृत है पी लो। सोमनाथ के मन्दिर से आया है। पवित्र अमृत ! जो जन्म मरण काट देगा।

मीरां एक तो माँ पर भरोसा करती थी और दूसरा वह भगवान के नाम पर वारने जाती थी। उस ने जहिर का प्याला उठाया और गटा गट पी लिया। उस के दिल दिमाग पर कोई असर न हुआ। सगों सवाद लगा। उस के भगवान ने सच्च ही जहिर को अमृत बणा दिया। मीठा शरबत उस ने कहा - माता जी! अमृत तो बहुत ही अच्छा है। और भी है कि यही है ?

मीराँ बाई की माँ शरमिंदा हो गई। वह कुछ भी न कह सकी। बोल भी न सकी उस को शक हो गया कि मीराँ को तता लग गया है इस लिए वह कह रही है। उस के हृदय में ममता जागी। उस ने मीराँ को गले लगाया जफी में ले लिया और डडिया कर आया, मीरां! यह अमृत नहीं था जहिर था, तुझे मारने के लिए दिया था। तेरा वीर तेरा बाप अब तुझे जीवित नहीं देखना चाहते। इस लिए मुझ से जहिर दिवा दिया।

मीराँ बाई - 'माँ मुझे बाप और वीर मारना क्यों चाहते हैं ?

माँ - 'मीराँ एक तूं बड़ी भूल कर आई हो जो तूं रविदास चमार को गुरु धारण कर लिया। अच्छा था रामानंद गुसाँई या किसी भी पण्डित के चरनी लगती। यह क्या किया ?

www.9009.co.in

मीरां बाई - माता जी ! भगवान की दुनियां में सभी उनके बेटे हैं, सभी मनुष हैं उनके बनाए हुए। किरत करम करके कोई माया करके बड़ा है और कोई छोटा, आत्मा और खून हर एक का एक जैसा है । भगवान् की भक्ति तो कोई बुरी किरत नहीं नेक करम है।

माता जी ! मैं मरी क्यों नहीं ज़हिर तो अमृत बन गया। मेरा भगवान ही राखा है।

मां रोती रही, उसको बेटी के साथ प्यार था, परंतु मीरां बाई का खतरा न टला।

एक दिन करमां बाई ने कहा - 'हो सकता है, मामला ज्यादा बड़ जाए, गुरू रविदास जी को बुला लएं, उन के आने से मामला ठीक हो जाएगा बाहर बहुत चरचा है।'

यह सुन कर मीरां हंस पड़ी और प्रभू के यश में भजन गाने लग पड़ी, उस ने कह दिया कि जरूर बुला लें। भेज देवें सुनेहा अगर आ जाएं।

'मैं आप जाती हूं। करमां बाई का उत्तर था।

'अच्छा' कहि कर मीरां बाई भक्ति लोर में बिष्नपद गाने लगी, वह एक पल भी भगवान का यश करने से ना हटती।

दूसरे दिन रास्ते का प्रबंध करके करमां बाई कांशी नगरी की वल चल पड़ी, उसको आशा थी कि उसके कहने पर भगत जी आ जाएंगे।

करमां बाई भगत रविदास जी के डेरे पहुंच गई, उस ने भगत रविदास जी के आगे बेनती करी - 'महाराज ! कृपा करके आप मेवाड़ तक चलो। इक तां उधर जिज्ञासू दर्शन करना चाहते हैं और दूसरा मीरां बाई संकट में है।'

रविदास जी ने पूछा - 'मीरां बाई को कैसा संकट आ गया ? वह तो प्रभू की दासी है।'

www.9009.co.in

करमा बाई - 'महाराज ! मीरां का भाई चन्द्रभाग ही उन का वैरी बण गया है। मां ने जहिर दिया। मीरां आप के दर्शन करना करना चाहती है।'

आपणे भगतों की लाज रखणे वाले प्रभू ने रविदास जी को प्रेरना की तो वह मेवाड चल पड़े। रास्ते में आप कलजुगी जीवों को ऐसे उपदेश करते जाते थे :-

नाथ कछूअ न जानउ ॥ मनु माया कै हाथि बिकानउ ॥१॥
रहाउ ॥ तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥ हम कहीअत
कलिजुग के कामी ॥१॥ इन पंचन मेरो मनु जो बिगारिओ ॥
पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ । २॥ जत देखउ तत दुख की
रासी ॥ अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥३॥ गोतम नारि
उमापति स्वामी ॥ सीसु धरनि सहस भग गांमी ॥४॥ इन दूतन
खलु बधु करि मारिओ ॥ बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥२॥
कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥ बिनु रघुनाथ सरनि का की
लीजै ॥६॥१॥

इस शब्द में भगत रविदास जी ने आम साधारन पुरश की अवस्था ब्यान की है कि कैसे बेनती करता है - हे करतार! मैं तो कुछ नहीं जानता। न जप तप का ज्ञान है, आप तो जगत के मालिक हैं। हम कलजुग के वासना वादी आदमी हैं।

पांचों (काम, क्रोध आदि) ने मेरे मन को विगाड़ छोडा है। घड़ी घड़ी इन्हों ने हरि प्रमात्मा से दूर किया है। ज्ञान के नजदीक नहीं आने दिया। जिधर भी देखते हैं दुखों का ही राज है। अभी भी ज्ञान नहीं हूआ। आगे मसाल के तौर पर बताते हैं कि देखो हे इस दुनीयां के लोको! पाप करम करने वाले बड़े पुरष भी सजा से

न बचे। गोतम की स्त्री अहल्या और इन्दर की कथा, इन्दर बे-ईमान होया तो गोतम के श्राप से हजारों दुख उठाए, शरीर पर नशान पैदा हो गए। पंजों ने ऐसा दुखी किया किलज अभी तक बचार नहीं करता। भगत जी कहते हैं बिनाँ हरी भजन के, प्रमात्मां की शरन का कोई लाभ नहीं होता, ईश्वर की शरन लेनी ही ठीक है।

आप मेवाड़ की तरफ चल पड़े। कई सैंकड़े कोस का रास्ता था, रास्ते में जहां भी डेरा होता वहां ही सतसंग करके भक्ति की वरखा की जाती। दुखीए दुखाँ की बाबत पूछते। आत्मिक ज्ञानी और अभलाशी आत्मा बाबत। इस तरह ही सभ कुछ होता जाता। भगत की महिमां जगत में बहुत होती है।

इसी तरह रास्ते में एक दिन भगत रविदास जी अपने मालक प्रमात्मा के साथ बचन बलास करने लगे। भगत और प्रमात्मां के सम्बंध क्या होते हैं? किस तरह प्रमात्मां भगतों के वस हो जाता है, उस गल बात को जगत के आगे इस शब्द राहीं प्रगट किया—

जउ हम बाँधे मोहफास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥ अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे॥ १॥ माधवे जानत हहु जैसी तैसी॥ अब कहा करहुगे ऐसी॥ १॥ रहाउ॥ मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहुबानी खंड खंड करि भोजन कीनो तऊ न बिसरिओ पानी॥ २॥ आपन बपै नाही किसी को भावन को हरि राजा॥ मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा॥ ३॥ कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ कहीऐ॥ जा कारनि हम तुम अराधे सो दुखु अजहू सहीऐ॥४॥२॥ (सोरठि रविदास जी)

तिस का प्रमारथ भगत जी फुरमाते हैं, हे ईश्वर! जीव

हम जगत में आए तो आप ने मोह दीआं ढाहीआं नाल कस कर हम को बांध लिया। पर हम ने तुझे प्रेम रूप बन्धनों के कारण बांधा है। हम तो आप को याद करके बन्धनों से छूट गए, पर तुसीं अब आपणे छुटण दा प्रबन्ध करो।

हे वाहिगुरु! जैसे हमारा प्यार तुम से है, वह आप ही जाणते हैं। अब क्या कहोगे, यह प्यार टूटणे वाला नहीं। यह प्यार तो ऐसा है कि जैसे जल और मछली का प्यार होता है। शिकारी या मछली को खाने वाला जल में से पकड़ कर चीरता और टुकड़े टुकड़े करता है। बनाता है और खाता है। पर मछली पाणी को नहीं भूलती। खाने वाला पाणी पीता रहता है। ऐसे हमारा प्यार तुम से है।

हे वाहिगुरु! आप खास किसी के नहीं। जैसे हिन्दु ब्राह्मण कहते हैं कि भगती का हक सिरफ ब्राह्मण या उच्च जाति को है, नीवीं जाति का कोई भगत नहीं हो सकता। भगत जी कहते हैं कि आप किसी के खास नहीं हो। सगों हर एक को भगती करने का हक है। सारा जगत ऐसे मोह रूप परदे से ढका है। उस को ज्ञान नहीं होता। पर भगतों को दुख नहीं व्यापता। हे वाहिगुरु! आप की भगती ही हम को बढ़ती दिखाई देती है। हमने तुम्हें याद करने के लिए अनेकों कष्ट सहे। आज भी सहार रहे हैं। ऐसा तुम्हारा प्यार है। हे दाता मेहर करते रहो जिस तरह जीवों का कल्याण हो, मोह का पड़दा दूर करो। यह मोह रूप बन्धन और पड़दा ही दुखों का घर है।

एक जिज्ञासू के साथ एक धनाढ पुरष आया। वह किसी कारन डरने लग पढ़ा था। उस ने कई प्रकार के साधन किए थे, पर उस का डर दूर नहीं होता था। महां पुरषों के मेल

www.9009.co.in

कर के उस को यह ज्ञान हुआ कि जन्म मरन के कष्ट जीव सहारता है भगत जी का डेरा रास्ते में थी कि धनाढ ने भगत जी के आगे बेनती है। कि जन्म मरण का दुख कैसे दूर हो ? त्रैकाल दरशी भगत जी उस के मन की भावना को जांच गए और उन्होंने इस बाणी राहीं उपदेश दिया :-

दुलभ जनमु पुन्न फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै॥ राजे इन्द्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु कि लेखै ॥१॥ न बीचारिओ राजा राम को रसु॥ जिह रस अन रस बीसरि जाही ॥१॥ रहाउ ॥ जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही॥ इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥२॥ कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥ कहि रविदास उदासदास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥३॥ (सोरठि रविदास जी)

भगत रविदास जी का उपदेश

भगत जी के पास एक ब्राह्मण आया। आया तो वह जूता सिलाने के लिए। भगत जी ने देखा कि वह उच्च कुल, सुन्दर शरीर और नए कपड़ों का हंकार करता था। वह उन से दूर दूर रहे और डरे कि कहीं चमार नजदीक न आ जाए। चमड़े से घृणा करे। जब बोले तो बड़े रोअब से। उस समय एक दो रविदास जी के श्रद्धालू आ गए। उन्होंने नमस्कार किया और कहा, 'हे भगत जी ! आप की बहुत कृपा है, जो दुख दूर हो गए। मन शांत हो गया। हृदय की जलन मिट गई आप तो सदा ही प्रतख रूप हैं।

श्रद्धालू की जबान से यह बचन सुण कर उस ब्राह्मण को गुस्सा

लगा और वह बोला, कैसे नीच आदमी हैं आप लोग, एक जुतीयां गाँठने वाले का श्री राम चन्द्र जी के साथ मुकाबला करते हो। ऐसा कैसे हो सकता है। नीच पुरष बड़े छोते का ख्याल नहीं करते।'

ब्राह्मण की यह हंकार भरी बात सुन कर श्रद्धालुओं को कुछ गुसा लगा। उन्हों ने करड़ा उत्तर दिया तो भगत जी ने उन्हें बोलने से रोका और कहा, 'पंडत जी ठीक तो कहते हैं, मैं गरीब चमार भला राम जी के मुकाबले और कैसे हो सकता हूं! राम तो मेरा मालक है, जगत का करता धरता है। हरे राम राम राम।

भगत जी अपने राम से इकठे हो गए जोड़ा भी ठीक करते जाते थे। 'हत्थ कार की तरफ और दिल यार की तरफ - -!' वाह। कैसा जीवन था।

उस ब्रह्मण का ध्यान उधर पड़ा। उस ने जब देखा तो वह हैरान हो गया। उस की निगाह को ऐसा नजर आया, जैसे सचमुच ही धनुष-धारी श्री राम जी बैठे थे। वह भीलनी के बेर खा रहे थे, उसको जबान में एक दम अशचरजता से निकला, 'राम। हे राम।

भगत जी ने जोड़ा त्यार किया और कहा, लो पंडित जी। यह है आप का जोड़ा। पहन कर देखो। ओर तो नहीं करना।

ब्राह्मण की सुरत ठीक हुई। उस ने जोड़ा पांव में पहना। दो पैसे फैंक कर भाग गया। वह ब्रह्मण था और उसको हंकार था। उस के जाने के बाद उस के मन की दशा को अनुभव करके भगत जी ने ऐसे वचन किया -

तुझहि सुजंता कछु नाहि ।। पहिरावा देखे ऊभि जाहि ।।
गरभवती का नाही ठाउ ।। तेरी गरदनि ऊपर लवै काउ
।।१।। तू काई गरबहि बावली । जैसे भादउ खु्ंब राजु तू
तिस ते खरी उतावली ।। १ ।। रहाउ ।। जैसे कुरंक नही

पाइओ भेदु ॥ तनि सुगंध ढूढै प्रदेस ॥ अप तन का जो करे बीचारु ॥ तिसु नही जम कंकरु करे खुआरु ॥२॥ पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु ॥ ठाकुरु लेखा मगनहारु ॥ फेड़े का दुखु सहै जीउ ॥ पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ॥३॥ साधू की जउ लेहि ओट ॥ तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ॥ कहि रविदास जो जपै नामु ॥ तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ॥४॥

(बसंतु रविदास जी)

भगत जी के बचन का भाव अरथ यह है कि मेरी देह तुझे कुछ मालूम नहीं होता अपना पहिरावा और अपने आप को सुन्दर देख कर हंकार करी जा रही हैं, यह हंकार तो ठीक नहीं, हंकारी आत्मा को कहीं कोई जगह नहीं देता। आप की गरदन पर कौआ बोलता है -- भाव जम सिर पर खड़ा काल का हुकम सुनने को त्यार है।

वाह! पागल शरीर और आत्मा हंकार करती है, पर कभी देखा है भाद्रों के महीने में खुम्बें उगती हैं, उगने की जल्दी से नाश होने की की बहुत जल्दी होती है। भाव कि जीव खुम्ब जैसे हैं, मलूम नहीं कभ नाश हो जाना है। हंकार करने वाला जीव उस जंगल के हरन जैसा है, जिस ने इस भेद को नहीं जाना कि कस्तूरी तो उस के पास है, मगर ढूंढता बाहर फिरता है। क्योंकि सुगंधी जो बाहर से आती प्रतीत होती है। इस तरह जो अपने शरीर का विचार करे, यह क्या है ? कैसे आया ? कैसे करेगा ? तो उस पुरष को कभी जम खुआर नहीं करता। भाव वह नरकों का भागी नहीं बनता वह तो आप ही सुधर जाता है।

आम तौर पर जीव अपने शरीर का हंकार करता है तो वह साथ ही अपनी सुन्दर स्त्री, कमाऊ पुत्र या रिशतेदारों का हंकार कर लेता

है, पर यह नहीं जानता कि यह सब के सब साथ चलने वाले नहीं। सभी आपो आपणे करम के मालक हैं। प्रमात्मा ने लेखा अकेले अकेले से माँगना है, वह मंगणहार है। जो करम किए है, उस का फल भोगना है। मुड़ कर बताओ किस को आवाजें दोगे। 'पती जी! पती जी!' कहे किसी ने नहीं आना।

हे जीव सब से अच्छी बात है कि हंकार का त्याग करके अच्छे साधू सन्त का आसरा ले। साधू की संगत से तेरा हंकार मिट जाएगा, नाम सिमरन करने से पाप खन्डे जानगे, पाप भी वह जो क्रोड़ों हैं। भाई जो नाम जपता है, वही तर जाता है। नाम जपन वाले की न जात न गोत परखी जाती है।

वह ब्राह्मण तो चला गया मगर दूसरे श्रद्धालू पास बैठे थे। उन्हों ने भगत जी पासों ज्ञान उपदेश सुना। इस तरह रास्ते जाते बहुत पुरुष आ बैठते। कितनों यह विस्वाश था कि उन के दर्शन करने से ही सभी दुख दूर हो जाते हैं। लोग सुनते और देर देर तक जस ले जाते थे। कई बार स्वामी रामा नंद जी गुसाईं भी आते और रविदास जी के साथ बचन बलास करके चले जाते, परतू वह भेद न खोहलते वह बिद्ध हो चुके थे। शाम को रविदास जी भी काम खत्म करके उन के डेरे जा कर सतसंग सुनते थे।

नहावण आया संग मिल बानारस कर गंगा थेटा॥
कढ कसीरा सउपिआ रविदासै गंगा दी भेटा॥
लगा पुरब अभीच दा डिठा चलित अचरज अमेटा॥
लइआ कसीरा हथ कढ सूत इक जिउं ताणा पेटा॥
भगत जना हरि माँ पिउ बेटा॥

कांशी दे विच बड़ा भारी मेला था उस को अभीच का नछतर

www.9009.co.in

पुरब कहा जाता था। भाई गुरदास जी के उपरी कथन के अनुसार उस पुरब रप लोगों और श्रद्धालुओं के साथ रविदास जी भी गंगा स्नान करने के लिए उठ कर आ गए। उन के पास एक कसीरा (पैसा) था।

रविदास जी और उस की धरम पत्नी गंगा स्नान करने लगे। उस समय भीड़ बहुत थी। हजारों स्त्री पुरुष स्नान करते हुए आपणी आरथक दशा अनुसार पूजा करते और चढ़ावा चढ़ाते रहे थे। कुछ न कुछ गंगा की भेंट करना शुभ समझा जाता था।

रविदास जी ने कसीरा निकाला, पर साथ ही मन में यह इच्छा धारण की कि कसीरा फेंकना नहीं, अगर गंगा मइया शक्तिशाली है तो वह आपणा हाथ ऊंचा करके कसीरा पकड़े। गंगा मइया ने राम भगत के मन की इच्छा को जान लिया उस के कानों में ऐसी भाखिया हुई जिस से प्रगट हुआ कि हे रविदास! तेरा कसीरा प्रवान है। लोगों का सोना और मोहरें भी प्रवान नहीं। भगवान भगती भावना का भूखा है, उस को दौलतवंद अच्छे नहीं लगते।

रविदास जी ने कसीरा निकाला। हाथ में लेकर गंगा में गया। स्नान की डुबकी लगा कर उस ने गंगा को कसीरा पकड़ाने के लिए हाथ आगे बढ़ाया तो उधर गंगा की लहरों से हाथ निकला। वह हाथ गंगा का था। गंगा आपणी भेंट मांग रही थी। प्रसन्नता प्रगट कर रही थी। सभी लोगों ने उस हाथ को देखा। पण्डितों और बड़े सेठों ने, जो यज्ञ और भण्डारे करने आए थे। उन को गंगा के दर्शन न हुए। रविदास जी खुश हो कर नाचने लगे। उन के जीवन में एक हुलास आया।

उस समय कहते हैं कि बनारस के सभी मन्दिरों में घण्टे आपने आप बजने लग गए। घण्टियों की की घनघोर ने लोगो के दिलों को कंपा

www.9009.co.in

दिए, क्योंकि वह आप ही बजते जाते थे। भाई गुरदास जी कहते हैं, भगत की इज्जत भगवान ने रखी और ऐसे कहने लगे, जैसे कि बालक के कहने पर बाप लगता है। अर्थ यह कि बाप बालक की माँगें पूरी करता है।

उस दिन से भगत रविदास जी की भगती प्रगट हो गई। सारे ही उन्हों को भगत जी। भगत जी।' कह कर बुलाने और सतिकार करने लगे।

भगत रविदास और पारस

कहा भईयो जउ तनु भईवो छिनु छिनु ॥ प्रेमु जाई तउ
डरपै तेरो जनु ॥१॥ तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥ पान
करत पाइयो पाइयो रामईया धनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संपति
बिपति पटल माईया धनु ॥ ता महि मगन हो न तेरो
जनु ॥२॥ प्रेम की जेवरी बाधिउ तेरो जन ॥ कहि रविदास
छुटिबो कवन गुण ॥ ३ ॥ (आसा रविदास जी)

तिस का प्रमारथ-भगत रविदास जी भगती में लीन किरत करते हुए वाहिगुरु को कहते जाते थे-हे परमात्मा। बे-शक चाहे तन काटा जाए तेरा भगत नहीं डरता, पर प्यार न छुटे। मैं प्यार का हूँ। मेरा मन तो आप के चरण कंवल रुपी घर में पहुंच गया है। हे राम। तेरी भगती रुप पड़ता है, वह प्राप्त होने और जगत पर जो माईया रुपी पड़दा है, वह तेरे भगत उपर कोई असर नहीं करता। भाव माया से प्रेम नहीं करते। तुम्हारा भगत तो प्यार की डोर से बंधा हुआ है। भगत रविदास जी कहते हैं, ऐसी सोच है कि तुम्हारा भगत कैसे बचे इस दुनिया रुपी भव सागर से।

जब आप ऐसे विचारों में थे तो भगवान ने एक अनोखा ही कौतक किया। कहते हैं, एक साधु आईइा, खिआल किया जाता

www.9009.co.in

हैं वह असल में ईश्वर था। भगत की प्रीक्षा के लिए आया।

यह भी हो सकता है कि कोई दयावान साधू महात्मा ही होए, जिस ने रविदास भगत जी को गरीबी दूर करने की दिल में इच्छा करी होए।

वह साधू रविदास भगत जी पास आया। लम्बा सुफेद दाहड़ा, भगवा भेख, गले में माला थी, उस ने भगत को आसन दिया और वह बैठ गया, बैठा हुआ पूछने लगा - हे भगत! चाहे तू कृत करता हैं फिर भी तुझे नुकसान रैहता है। साध संगत भी आप करते हो। माया का किस तरह समय गुजरता है?'

रविदास जी - हे महाराज जी! जिस हालत में भगवान रखता है, उसी में रहना ठीक हैं। कृत करके खाते हाँ बहुत बनंद है, झुगी हो या शीश महिल दिन ही बिताने हैं। जित्ने स्वास राम ने बखशे हैं उत्ने भोग जाने हैं। उस के नाम का धन्न पास रह तो वह ही ठीक है।'

साधू - मैं आप के नाम की महिमा सुन कर आया हूं। मगर आप की माली हालत कमजोर देख कर ख्याल आया है कि आप की सेवा करूं। मेरे पास पारस है यह रख लो।

रविदास जी - पारस को क्या करते हैं?

साधू जी - पारस ऐस वस्तू है, अगर लोहे से शूह जाए तो लोहा सोना बन जाता है। वह सोना बाज़ार बेच कर पैसे लिये जाते हैं। जूते मरमत करते हो, इस से लाभ नहीं होता। पारस के साथ एक दिन में अमीर हो जाओगे।

रविदास जी - माया धारी तो अन्धा बोला होता है। माया की जरूरत नहीं, कृत ही बर्कत है।

साधू - 'देखो भगत जी! माया की हर एक मनुष को जरूरत है।

www.9009.co.in

माया के बड़े बड़े महिल, मन्दिर और किले बनाए जाते हैं। उन किलों मन्दिरों की शोभा बड़ती और जस होत है । बड़े भन्डारे किये जाते हैं। देखते नहीं कितने लोग माया इकठ्ठी करते हैं। कांशी क मण्डित तां देखो मारो मार करते धन्न इकठ्ठा करते हैं। बोलो ! राम भगत ! दयां पारस !'

भाधू ने गोल पत्थर की वटी नकाली, वह रविदास जी के आगे करी। उस को दखाया, मगर भगत तो प्रमात्मां के नाम सिमरन नाल ही प्रसंन थे। उस को उत्तर दिया - 'महाराज ! जितनी माया ज्यादा आती है, उतनी बुद्धी भ्रिष्ट होती है । हंकार आता है, शरीर में दोष बड़ते हैं । हम देखते हैं, उच्चे मन्दिरों के पुजारी हंकारी हैं । हवेलीयों वाले राजे हंकारी हैं । जिस तरफ नजर मारो आप को हंकार, लालच, वासना का हड़ बहता नजर आएगा । आप हम को इसी छन में ही राम नाम का सिमरन करने दें । घर वाली भी गरीबी दाअवे में ठीक है। राम की मेहर है ।'

भाधू रूप भगवान ने हठ किया। पारस उस के पास रख कर उस पासों उठ कर अपने रास्ते पड़े । उस के जाने के पश्चात भगत ने पारस उठा कर छत में रख दिया। छत में काने और बांस थे। उन्हों ने सोना बनना हो नहीं था। रविदास जी की धरम पत्नी यह बातें सुनती रही थी । साधू के चले जाने के पश्चात उस ने रविदास जी के पास आ कर पूछा।

स्वामी जी !.....साधू पारस, सोने, मन्दिरों की क्या बातें करता था ?'

रविदास जी - राम का नाम छुड़ाता और अमीरी देता था। कहता था सोना बना कर बेच, अमीर बन जा, मन्दिर और महिल बना।

पत्नी - सोना किस तरह बणना था ?

रविदास - सोना बणना था पारस के साथ। वह रख गिया मैं उठा कर छत में रख दिया है, हमारे किस काम? वह काम नहीं करना चाहीए, जो राम नाम से दूर करेगा। राम नाम ही तो सभ कुछ है।

कई साल पीछे वह साधू फिर आया। रविदास जी उस कखों की छन में बैठे थे और उसी तरह अपना काम करी जाते थे। कपड़े, बरतन, चमड़े और हथयारों में कोई फरक नहीं पड़ा था। हर जगह उसी तरह थे। उस ने पूछा, 'हे भगत! मैं आप को पारस दे गया था?'

रविदास - हां महाराज! आप मुझे पारस दे गए थे, वह उठा कर अमानत समझ कर छत में रख दिया है ले जाओ! वहाँ ही पड़ा है। एक काला पत्थर।

यह सुन कर साधू मन ही मन में बहुत खुश हुआ और उस ने पारस उठा लिया। पारस को पकड़ कर भगत की तरफ देख कर पूछा, भगत जी! आप की असल इच्छा क्या है?

रविदास जी ने साधू की तरफ देखा। सूई और आर हाथ से रख कर उन्हों ने बचन किया-

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे॥ हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे॥ रहाउ॥ हरि के नाम कबीर उजागर॥ जनम जनम के काटे कागर॥१॥ निमत नामदेउ दूध पीआइआ॥ तउ जग जनम संकट नही आइआ॥ २॥ जन रविदास राम रंगि राता॥ इउ गुरपरसादि नरक नही जाता॥ ३॥

(आसा रविदास जी)

रविदास जी का भक्ति की तरफ पक्का विस्वाश देख कर वह साधू उठ बैठा और पारस को हाथ में मलता हुआ बोला, 'ठीक है रविदास जी! कोई जन्म करके उच्चा नहीं होता, सगों करम करके उच्चा बनता है। आप का मन साफ है और भक्ति शुद्ध हृदय से कर

रहे हो ज़रूर कल्यान होएगी।'

इस तरह बचन करते हुए वह साधू वहाँ से अलोप हो गया। उसके अलोप होने को देख कर रविदास जी जान गए कि भगवान् आप आया था। उन्हों को पछतावा लगा कि जी भर कर दर्शन क्यों न कर लिए, उस दिन से भगत जो के रिद्धीयां सिद्धीयां आ गईं।

भगत रविदास जी के पक्के मनंदर बनने

तुम चंदन हम इरंड बापुरे सगि तुमारे बासा ।। नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ।। १ ।। माधउ सत संगति सरनि तुमारी ।। हम अउगन तुम उपकारी ।।१।। रहाउ ।। तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ।। सत संगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ।।२।। (आसा रविदास जी)

इस तरह अरदासां बेनतीआं करते हुए भगत रविदास जी अपनी किरत करी जाया करते थे कि भगवान ने इच्छा करी कि वह अपने भगत की शान ऊंची करे। उन्हों दे देख लिया था कि भगत माया को तो हाथ नहीं लाता था। वह सदा निरमानता और त्याग में रहते हैं। इस तरह कितने ही दिन व्यतीत हो गए। तो एक दिन भगवान ने कौतक रचना शुरू कर दिया। वह कौतक इस तरह हुआ।

रविदास जी ने छोटी सी लकड़ी की चौंकी पर देवता की पत्थर की मूरती रखी हुई थी, उस मूरती को सोहने कपड़े डाले हुए थे, नीचे आसन विछाइया था। रोज़ाना जंगल के बाग से फूल लया कर चढ़ाए जाते, दोनों समय पूजा होती। रविदास जी का नित करम यह था कि काफी रात रहते उठ कर झौंपड़ी को साफ करते, झाड़ू और पोचन करते, दोनों जी इस्नान करते। इस्नान करने के पश्चात देवते की मूरती का इस्नान कराया जाता और आसन साफ किया जाता, फिर

www.9009.co.in

पूजा शुरू होती। मूरती के आगे बैठे सूरज चड़ा देते, सारा दिन हाथ कार बल और दिल भगवान की तरफ जुड़ा रहता।

पारस वापस ले कर भगवान गायब होने के तीसरे दिन बाद या रविदास जी ने देवता के आसन को झाड़ा तो नीचे सोने की मोहरें निकली, वह मोहरें सोने की थी, उन्हों का छनकार और लिशकार मायाधारी के दिल को तो खुशी और मस्ती में मगन कर देता, पर रविदास की आत्मा पर कुछ असर न किया। उस ने ठीकरीयों की तरहां उठा कर एक तरफ रख दी। आप पूजा करने में मग्न हो गए। उन्हों ने मोहरों की तरफ ध्यान भी न किया। यह पहले जरूर पूछा कि वह मोहरें आई कहां से ?

यह कौतक एक दिन का नहीं था रोज सुबह जब भगत जी देवता का आसन साफ करते तो उन्हों को पांच मोहरें मिलती। उन्हों को उठा कर आले में रख देते। मोहरें बहुत ज्यादा इकठी हो गयी, भगत ने खर्च नहीं की। सोने को मिटी के बराबर समझा। भगवान ने जब देखा रविदास मोहरों को देख कर नहीं बदला तो रात को स्वप्न में आज्ञा दी - 'हे रविदास! इन्हों सोने की मोहरों को आले में न रखो, यह आप के खर्च के लिए हैं। तुम्हारा देवता - जिस की आप पुजा करते हैं तभी खुश रह सकता है यदि इन्हीं सोने की मोहरों से देवता के लिए मन्दिर बनवाओ, मुरती बड़ी और सुंदर रखें, आने वाले जिज्ञासुओं और श्रद्धालुओं के लिए सराय त्यार करें।

यह स्वप्न देख कर रविदास घबरा कर उठ खड़ा हुआ। उसकी नींद खुल गई। 'राम! राम! जीमा रटने लगी। अपनी जीवन साथी को हिला कर जगा लिया। स्वप्न में सुने! सारे वाक्य उसको सुना दिये। वह गुनवती अकलमंद थी। भगवान से डरने वाली थी। उस ने हाथ जोड़ कर सलाह दी - स्वामी जी। जैसे भगवान की इच्छा है

हमें ऐसा करना चाहिए। गुरु (रामा नन्द) जी को पूछ लेना चाहिए भगवान की कृपा है। स्वामी जी ! भगवान तूठे हैं। भगवान को नाराज नहीं करना चाहिए।

अच्छा ! जैसे भगवान की इच्छा है वैसे ही करुंगा।' रविदास ने उत्तर दिया।

सुबह हुई, एक सेठ जी आ हाजर हुआ। उन को मोहरें की थैलीयां रविदास जी के आगे रख कर माथा टेकिया। माथा टेकने के बाद दोनों हाथ जोड़ कर बेनती की-हे भगवान आप की दया से मेरे घर में बालक हुआ है। मैं बच्चे का मुख देखने को मछली की भांति तड़प रहा था। आप की शोभा सुनी थी, एक दिन आप की झोंपड़ी के आगे से निकलता हुआ मन ही मन में सुखनां सोची कि मेरे घर लड़का हुआ तो इस भक्त के लिए मन्दिर बनवा दूंगा। दस महीने बाद मेरी इच्छा पूरी हुई है। गुलाब के फुल जैसा बालक मेरे घर आया है। 'मैं यह धन बांध कर हाजर हुआ हूं। मेरी मन्नत पूरी करने के लिए बखशो ! आज्ञा करो।

रवीदास जी की झोंपड़ी के पास खाली जगह पड़ी थी, उसको खरीद कर मन्दिर बनने शुरु हो गए। एक देवते का मन्दिर त्यार हुआ और एक रवीदास जी और एक आने वाले साधुओं की रिहाईश के लिए शानदार मकान त्यार हुआ। संगमरमर की देव मूर्तीयां त्यार करवाई गई। बड़ी भूषण पहनाए गए। जो देव मुरती के दर्शन करता वह ही वाह वाह करता। रवीदास की पत्नी खुश और हैरानी में मगन थी। वह भी राम सिमरन करने लगी, उस का जीवन पलट गया। रवीदास के माता पिता खुश थे कि उन्चे खानदान के ब्रह्मण जैसे उन्हों के बेटे का सतिकार हो रहा था। इस तरह कौतक करते हुए आप जोति जोत समा गए। आप की भगती अपार है।

४२. भगत पीपा जी

सतिगुरू नानक देव जी महाराज के अवतार धारने से कोई ४३ वर्ष पहले गगनौर राजस्थान में राजा हुआ, उस का नाम पीपा था। अपने बाप की मृत्यु के पश्चात वह राज तख्त पर बैठा। वह जवान और सुन्दर राजकुमार था। वजीरों की खुलदिलयों कारन वह कुछ वाश्नावादी हो गया और उस ने अच्छी से अच्छी रानी के साथ शादी कराई। इस तरह उस की रुची बड़ती गई कोई बारां राजकुमारीयों के साथ शादीयाँ कर लीं। उन्हों में एक रानी जिस का नाम सीता था, वह बहुत सुन्दर थी, उस की सुन्दरता और उस के हाव भाव पर राजा इतना मोहत हो गया कि दीन दुनियां ही भूल गया। वह उस के साथ ही प्यार करता रहता। जिधर जाता उस को देखता रहता। वह भी राजे के साथ प्यार करती।

कहीं पीपा राजा था और राज काज के बिनां स्त्री रूप का चाहवान था, वहां देवी दुर्गा का भी उपाशक था। उस की पूजा करता रहता। दुर्गा की पूजा के कारन आपने राज भवन में कई साधू सन्तों और भगतों को बुला कर भजन सुनता और भजन कराया करता था। राज भवन में ज्ञान चर्चा होती हरती। उस समय रानीयां भी सुनती, साधू और ब्राह्मणों का बड़ा सतकार करती थीं, उन्हों का यह कार्य क्रम इस तरह चलता गया। यह कार्य क्रम इस लिये था कि उस वडे वडेरे ऐसा करते आ रहे थे और कभी पूजा के बिनां नहीं रहते थे। उन्हों ने राज भवन में एक सुन्दर मन्दिर त्यार करवा रखा था।

www.9009.co.in

उस समय भारत में वैष्णावों का बहुत जोर था। वह बुत पूजा के साथ साथ भक्ति भाव का उपदेश करते थे। शहिर में वैशनावां की एक मण्डली आई। राजे के सेवकों ने उन्हों का भजन सुना और राजे के पास आ कर बेनती कीती, महाराज! शहिर में वैष्णो भगत आए हैं, हरी भक्ति के गीत बड़े प्रेम और रसीली ज़बान से गीत गाइन करते है।

यह सुन कर राजा ने उन के दर्शन करने की इच्छा प्रगट की। उन्हों ने अपनी रानियों को कहा। रानी सीता बोली, 'हे महाराज! इस से और अच्छा क्या हो सकता है। ज़रूर चलो।'

राजा पीपा पूरी सलाह और त्यारी करके संत मंडलो के पास गया, उस ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना कीती कि 'हे भगत जनो! आप मेरे राज महिलों में चरन पाओ। तीबर इच्छा है कि कुछ भगवान महिमा सरवन करें और भोजन भंडारा करके आप की सेवा भी करें। कृपा करो बेनती प्रवान करो।'

संत मण्डली के मुखी ने अगों उत्तर दिया, हे राजन! अगर आप की यही इच्छा है तो ऐसा ही होगा। सारी मण्डली राज भवन में जाने के लिए त्यार है। भडारे और साधूओं के लिए आसन का प्रबंध करो।'

पीपा राजा था। उस ने तो हुकम ही करना था। सेवकों को हुकम दिया। सभी प्रबंध हो गए। एक बहुत खुली जगह पर फरश विछ गया और संत मण्डली के बैठने का प्रबंध किया। भोजन की त्यारी भी हो गई।

संत मन्डली ने ईश्वर की उपमा का जस किया। भजन गाए तो सुन कर पीपा जी बहुत प्रसन्न हुए। संत भी अनंद मंगला-चार

www.9009.co.in

करने लगे, मगर जिस समय संतों को यह पता चला कि राजा सिर्फ बुत पूज और वाशना वादी है, तो उन्हों को कुछ दुख हुआ । उन्हों ने राजे को हरी भक्ति की तरफ लाना चाहा । उन्हों ने प्रमात्मां के आगे शुद्ध हृदया से अरदास करी कि राजा दुर्गा की मूरती की जगह उन की महान शक्ति का पुजारी बन जाए ।

जैसे सतिगुरू जी का हुकम है--

हम ढाढी हरि प्रभ खसम के नित गावह हरि गुण छंता ॥
हरि कीरतनु करह हरि जसु सुणह तिसु कवला कंता ॥
हरि दाता सभु जगतु भिखारीआ मंगत जन जंता ॥
हरि देवहु दानु दइआल होइ विचि पाथर क्रिम जंता ॥
जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि धनवंता ॥

(सोरठि वार मः ३)

उन हरी भगतों की बेनती प्रभू प्रमात्मां ने सुनी । राजे पीपे को अपना भगत बनाने के लिए एक सुपना लिआंदा । उस सुपने की प्रेरना राजा पर बहुत हुई ।

राजे को सुपना आना

भगत मण्डली से उठ कर राजा पीपा अपने आराम करन वाले शीश महिल में चला गया । वह सीता के पास सो गया, जिस तरह वह पहले सोया करता था । उस का पलंघ मखमली था और उस पर कई प्रकार के फूल और खुशबो फेंकी थी । उस दीन दुनिर्या का ज्ञान नहीं था । उस रात राजा को एक सुपना आया । वह सुपना इस तरह था--

सुपने में राजा जिस तरह वह सीता रानी से प्रेम-करीड़ा कर रहा था । वह बड़ी मौज के साथ बैठे थे कि शीश महिल के दरवाजे

www.9009.co.in

अपने आप खुल गए, उन के खुलने से एक भयानक डरावनी शकल आगे बढ़ी, जैसे राजा ने सुना था कि दवैंत होते हैं और दवैंतों की शकल के बारे में सुना था वैसी ही शकल थी। वह डर गया और उस की जबान से निकला, 'दवैंत आया! दवैंत आया!' वह तो नरसिंह जैसा था। राजा के पास आ कर उस डरावनी शक्ति ने कहा - 'हे राजा! सुन लो! दुर्गा की पूजा न करना; नहीं तो तुम्हारी मौत हो जाए गी!' यह सन्देश दे कर वह शक्ति वापस चली गई और दरवाजे के पास जा कर गुम हो गई। उस के जाने के बाद राजा इतना डरा हुआ था कि उस को जाग आ गई। शरीर पसीनो पसीना हो गया और उस ने अपनी रानी सीता को उठाया, जो कि आराम से सुख की नींद सोई हुई थी।

हे रानी! उठो जरूर उठो!'

रानी उठी और उस ने हाथ जोड़ कर बेनती की, हे नाथ! क्या आज्ञा है?

पीपा - 'आउ दुर्गा के मन्दिर चलें!

सीता - इसमय पर! अभी तो रात भी आधी है और दूसरी बात स्नान?

पीपा - 'कुछ भी हो! अभी जाना है चलो। मेरा दिल धड़क रहा है। बहुत डरावन स्वप्न आया है।

पति - ब्रता सीता उठ खड़ी हुई। उस के साथ चल पड़ी और दोनों मन्दिर में पहुंचे। राजा पीपा ने जाते ही दुर्गा देवी के बुत के आगे अपना आप गिरा दिया तो आगे यह आवाज आ गई। 'मै पत्थर हूं - हरि भक्ति के लिए सन्तों के पीछे लगी। . . . दौड जाऊ।' ऐसी भाषा सुन कर राजा उठ कर बैठ गया। वह एक किस्म का डर गया था। उस ने सीता को अपने साथ लिया और वापस अपने अस्थान आ

www.9009.co.in

गया। संतों के साथ बातें करते हुए दिन निकल आया और सवेर हो गई तो स्नान करके पूजा की सामग्री ले कर संतों को मिलने के लिए त्यार हो गए।

संतों से मिलाप

संत उधरण दइआलं आसरं गोपाल कीरतनह ॥
निरमलं संत संगेण ओट नानक परमेसुरह ॥ १ ॥

स्वप्न में मिली भाषा से राजा के जीवन में एक भारी परिर्वतन ही आ गया वह तो मिन्नतें करने लग गया था। दुर्गा के मन्दिर का पुजारी आया उस ने बेनती की। राजा ने दुर्गा के मन्दिर जाने से इन्कार कर दिया और संतों की और चल पड़ा। जितनी जल्दी हो सका, उतनी जल्दी पहुंच गया और मुखी संत क पास जा बेनती की कि 'महाराज। मुझे हरि सिमरन का रास्ता दिखाओ। आप के दर्शन करने से मेरे मन में बैराग उत्पन्न हो गया है। रात के समय मुझे नींद नहीं आती, न ही दिन को चैन, कृपा करो। हे दाता मैं तो एक भिखारी हूं।

राजा की व्याकुलता देख कर सन्तों के मन में दया आ गई, वह कहने लगे - 'हे राजन। यह तो परमात्मा की बहुत कृपा है जो आप को ऐसा बैराग उत्पन्न हो गया। पर जिस ने बखशीश करनी हो, वह यहां नहीं वह तो कांशी में है, उस का नाम है गुरू रामा नंद गुसांई उन के पास जाओ।'

यह सुन कर राजा ने सीता के साथ त्यारी की। वह कांशी को चल पड़ा और उस का मन व्याकुलता से ऐसे बुलाए जा रहा था।

मेलि लैहू दइआल ढहि पए दुआरिआ ॥ रखि लेवहू
दीन दइआल भरमत बहु हारिआ ॥ भगतिवछलु तेरा

बिरदु हरि पतित उधारिआ ॥ तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ
मोहि सारिआ ॥ करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ ॥१६॥
(जैतसरी म: ५)

राजे पीपे की ऐसी अवस्था हो गई, वह अधीनता से इस तरह बेनतीयां करता जाने लगा--हे दाता ! कृपा कर मेल ले नमाना आप के द्वार पर ढह पड़ा हूं अब और कोई आसरा नहीं । मेहर करो, प्रभू ! हे दातार ! आप भगतों के रखनहार हे मालक ! आप का बिरद पतितों का उधार करना है । आप के बिनां कोई नहीं, आप दातार हो अपना हाथ दे कर रखो और भव-सागर तों पार करो ! मेहर करो दाता, आप के बिनां कोई भव-सागर से पार नहीं कर सकता।...... ऐसीयां व्याकुल आत्मावों बाबत सतिगुरू महाराज की बानी है ।

इस तरह व्याकुलता से प्रभू की तरफ ध्यान करता हुआ पीपा चल पड़ा । उस को ऐसी लगन लगी कि उस को सीता के तन का प्यार भी कम होता नज़र आने लगा । वह प्रभू के ध्यान में ही मगन कांशी पहुंच गया ।

त्रैकाल दर्शी स्वामी रामा नंद जी भी प्राताकाल गंगा स्नान करने जाते थे । जिस समय वह गंगा स्नान करके आ रहे थे तो उन्हों ने सुना कि गगनौर का राजा पीपा भगत कांशी में आया है और वह उन्हों को ही ढूंढता है । उन्हों नें यह भी देखा कि उन्हों के आश्रम के पास शाही ठाठ था । हाथी, घोड़े, गड्डे और तंबू लगे हुए थे । सेवक को पूछा तो उस ने भी यही कहा - महाराज ! गगनौर का राजा आया है ।'

स्वामी जी ने आश्रम के बाहर वाले फाटक को बंद करा दिया और आज्ञा करी कि 'दर्शन करने के लिए बिनां आज्ञा लिये कोई न

आवे।' ऐसी ताकीद कीती, उस पर अमल हो गया। राजा पीपा जिस समय दरशनों के लिए चला तो फाटक बंद और आगे जवाब से मिला 'गुरू की आज्ञा लेनी ज़रूरी है, ऐसा करना होएगा।'

आज्ञा प्राप्त करने के लिए सेवक गया। वह जब वापस आया तो उस ने सन्देश दिया। 'हे राजन! स्वामी जी आज्ञा करते हैं, हम गरीब हां, राजियों के साथ हमारा मेल क्या, अच्छा है कि वह किसी मन्दिर में जा कर लीला करन, राजियों के साथ हमारा मेल नहीं हो सकता।'

राजा पीपा बिह्वल हो चुका था, उस ने उसी समय हुकम किया, 'जो कुछ पास है, वह सभ बांट दिया जाए। हाथी, घोड़े, सामान मन्त्री वापस ले जाएं, तीन वस्त्रों में सीता और मैं रहूंगा।'

पीपा के कर्मचारीयों ने ऐसा ही किया, सीता और राजे के शरीर वाले वस्त्र ही रैह गए। हाथी, घोड़े और तंबू सभ वापस भेज दिये। धन्न पदारथ सभ गरीबों को बांट दिया, प्यार रखा प्रभू के साथ! व्याकुलता काइम रखी हृदया में, फाटक के आगे जा खड़ा हुआ। फिर बेनती कर भेजी। 'महाराज आप के दर्शन चाहीए, आत्मा बहुत व्याकुल हो रही है।'

स्वामी जी ने और परखना था कि कहीं ऐसे वैसे तो नहीं करता उन्हों ने कैह भेजा, 'बहुत जल्दी है तो कुएं में छलांग जा मारे। वहां जल्दी प्रमात्मां के दर्शन हो जाएंगे। सेवक ने इस तरह ही कहा, पीपा जी ने सुना।

पीपा भगत तो उस समय गुर-दर्शन करने के लिए इतना उतावला था कि वह अपने शरीर को चरवा सकता था। सुनते सार वह कोई कूआं ढूंढने के लिए भाग उठा, उस के पीछे उस की पति-ब्रता स्त्री सीता भी भागने लगी, वह कुएं में गिरेगा......कुए में गिरने

www.9009.co.in

से जल्दी दर्शन हो सकते हैं । इस तरह कहता हुआ वह भागा गया, शोर मच गया ।

उधर स्वामी रामा नंद जी ने अपनी आत्मक शक्ति से देखा कि पीपा जी को सच्च ही 'हरि' से प्यार हो गया है, भगत बनेगा, इस लिए उन्हों ने ऐसी माया वरताई कि पीपा जी को कुआं ही कोई न मिला, वह भागा फिरता रहा, रानी उस के पीछे, आस्ता आस्ता वह खड़ा हो गया । उन को स्वामी रामा नंद जी के भेजे हुए शिष्या मिले जो वहां पहुंच गए उन्हों ने जा सन्देश दिया--

हे राजन ! आप को गुरू जी याद कर रहे हैं !'

'गुरू जी बुला रहे हैं ! वाहवा मेरे धन्न भाग ! जो मुझे याद किया । मैं पापी पीपा ।' कहता हुआ, पीपा जी शिष्शों के साथ चल पड़े और गुरू रामा नंद जी पास आ पहुंचा । डंडवत हो कर चर्णों पर मत्था टेका । चरन पकड़ कर तरला किया, 'महाराज ! इस भवसागर से पार होने का साधन बताओ ! ईश्वर पूजा की तरफ लाओ ! मैं तो दुर्गा की मूरती का पुजारी रहा । पर नारी रूप ने मुझे अज्ञानता के टोए में धकेल दिया था ।'

'उठो ! राम नाम कहो ! उठो ! स्वामी रामा नंद जी ने हुकम कर दिया और बांहों पकड़ कर पीपा जी को उठाया, पीपा राम नाम का सिमरन करने लग पड़ा । स्वामी रामा ने अपने चरनों में लगा लिया ।

पीपा जी भगत बन गए

'देख भगता ! आज से राज का हंकार नहीं होना चाहिए, राज बे-शक कर, मगर हरी भजन करी जाना, साधू सन्तों की सेवा करनी, गरीब गुरबे को दुखी नहीं करना । ऐसा ही प्यार जतलाना

www.9009.co.in

जब परजा सुखी होगी, हम आप के पास आएंगे आप को कांशी आने की जरूरत नहीं । राम नाम का पला न छोड़ना। 'राम नाम' ही सभ कुछ है।

पीपा जी उठ बैठा। उस की सोई आतमा जाग पड़ी। रामा नंद जी दीखिया ले कर उस का शिश बन गया। पूरी शिक्षा ले कर अपने शहिर गगनौर की तरफ मुड़ आया। उस की काया बदल गई, सुभाव बदल गया और कर्म बदल गया। हाथ में माला और खड़तालें पकड़ लीं, हरी भगवान का जस करने लगा।

भगत पीपा जी अपने राज में आ पहुंचा । उन्हों ने भक्ति करने के साथ साधू सन्तों की सेवा करनी शुरू की। गरीब गुरबों के लिए लंगर लगवा दिये और कीरतन मंडलीयां काइम कर दीं । राज भाग का काम मन्त्रीयों पर छोड़ दिया। सीता जी के बिनां बाकी रानीयों को राज महिल में खरच दे कर भक्ति करने के लिए कहा। इस तरह उन्हों के भक्ति करने में कोई फरक न पड़ा।

मगर वह गुर-दर्शन के लिए व्याकुल होने लगे। उन्हों की व्याकुलता जोरों पर हो गई। तो एक दिन रामा नंद जी ने कांशी में बैठे ही उन्हों के मन की बात जान ली। उन्हों ने हुकम दिया कि वह गगनौर का दौरा करेंगे। उन्हों के हुकम पर उसी समय अमल हो गया। वह कांशी से चल पड़े और उन्हों के साथ कई शिश चल पड़े । चंगा जथा बना कर वह गगनौर पहुंच गए।

खबरें पहुंच गईं कि गुरू रामा नंद जी आ रहे हैं। राजे भगत पीपे और उसकी पत्नी को चाव चड़ गए। वह बहुत ही प्रसन्न चित हो कर मंगलाचार और स्वागत करने लगे। उन्हों के स्वागत का ढंग भी अनोखा हुआ । कीरतन मन्डली त्यार कीती गई। भंडारे देने का प्रबंध किया गया। शहिर को सजाया गया और लोगों को कहा गया

www.9009.co.in

कि वह गुरदेव का स्वागत करें, दर्शन करें, क्योंकि गुरमुखों, महात्मावों के दर्शन करने से कल्यान होती है--ऐसे महात्मां के दर्शन दुरलभ होते हैं। बड़े भाग हों तो दर्शन होते हैं । जिस तरह सतिगुरू जी फुरमाते हैं-

वडे भागि भेटे गुरदेवा ॥ कोटि पराध मिटे हरि सेवा ॥१॥
चरन कमल जा का मनु रापै ॥ सोग अगनि तिसु जन न
बिआपै ॥२॥ सागरु तरिआ साधू संगे ॥ निरभउ नामु जपहु
हरि रंगे ॥३॥ पर धन दोख किछु पापु न फेड़े ॥ जम जंदारु न
आवै नेड़े ॥४॥ त्रिसना अगनि प्रभि आपि बुझाई ॥ नानक उधरे
प्रभ सरणाई ॥५॥ (धनासरी मः ५)

तिसका प्रमार्थ - जिन वडभागी पुरषों ने रोशनी करन वाले गुरू की सेवा कीती है उन्हों के सभी पाप कटे गए। जिन गुरमुखों का मन प्रभू चरन कमलों के प्यार में रंगा है, उन पुरषों को सोग की अग नहीं सताती, भाव संसार सागर को साधू संगत के साथ ही तरा जा सकता है, इसी लिए कहते हैं कि वह प्रमात्मा जो निरभउ है, उस के नाम का सिमरन करो। प्रभू नाम सिमरन के साथ जिन्हों ने पराया धन्न चुराया है, जिन्हों ने बुरे करम किये हैं उन्हों के पास जम नहीं आता। क्योंकि वाहिगुरू ने मेहर करके त्रिशना की अग मठ्ठी कर दी है। गुरू की शरन आने के कारन उन्हों का पार-उतारा हो गया है । ऐसे हैं गुरू दर्शन जो वडे भागों के साथ प्राप्त होते हैं।

दो तीन कोह आगे जा कर राजा अपने गुरदेव को जा मिला उस ने बेनती करके अपने गुरदेव को पालकी में बठाया और बड़े सतकार के साथ राजभवन में ले गया। चरनांमृत पीआ. सेवा करके पीपा निहाल होया। कीरतन होता रहा, कई दिन हरि जस होया तो

स्वामी रामा नंद जी ने जाने की इच्छा प्रगट की और पीपा ने बड़ी निरमानता से इस तरह बेनती कीती--

हे प्रभू! बेनती है कि इस राज भाग से मन उचाट हो गया है। यह राज-भाग हउमै और भै का कारन है। इस का त्याग करके आप के साथ जाना चाहता हूं। आत्मा प्रमात्मा के साथ कभी जुड़े। हुकम करो।

'हे राजन! यह देख लो, सन्यास धारना कष्टों में पड़ना है। बहुत भयानक कष्ट उठाने पड़ते हैं। भूख-नंग के साथ मुकाबला करना पड़ता है। जंगलों में नंग पांव चलना पड़ता है। सुबह उठ कर सीतल जल से स्नान करना होता है। ऐसी ही किरत है, हउमै का त्याग करना पड़ता है। प्रभू कई बार प्रीक्षा करता है। प्रीक्षा भी अनोखे तरीके से होती है। या तो ऐसा मन करता है तो चल पड़ो साथ।

पीपा गुरदेव के चरनों पर मथा टेक कर राज भवन में गया, कीमती वस्त्र उतार दिये और कफनी त्यार करवा कर गले में डाल लिया, बैरागी साधू बन गया। उस ने रानीयां और रानीयों की सन्तान को राज-भाग सौंप दिया। छोटी रानी सीता के हठ करने पर उसको बैरागन बना कर साथ ले गया। वैष्नव सन्यासीयों में नारी को दूर रहने की आज्ञा होती है, मगर स्वामी रामानंद जी सीता जी की पति-भक्ति और प्रभू प्यार देख कर उस को रोक न सके। वह साथ ही चली और वह अपने राज से बाहर हो गए। साधू मण्डली के साथ फिरने लगे।

भगत पीपा को भगवान कृष्ण जी के दर्शन

साधू मण्डली के साथ घूमते घुमाते हुए भगत जी द्वारका नगरी पहुंच गए। वहां पहुंच कर स्वामी रामानंद जी तो अपने आश्रम कांशी

www.9009.co.in

की तरफ परत आए, मगर पीपा जी सहचरनीं सीता के साथ वहां ही रहे। भगवान कृष्ण जी के दर्शन करने हेत विआकुल हो कर इधर उधर फिर कर कठन तपस्या करने लगे। ध्यान धर कर बैठ जाते। उन्हों को कोई जो बात कहता, वह उसे सच्च मान जाते। मगर उस के साथ जब कोई ठग्गी या धोखा होने लगता तो आप ही प्रमात्मा उस की रक्षा आप करता। भगत जी तो दुनियां की बातों से दूर चले गए थे।

कथा करने वाले एक पण्डित ने कहा, 'भगवान कृष्ण जी द्वारका नगरी में रहते हैं। वहां कोई भक्ति वाला ही पहुंच सकता है। उन्हों ने दूसरी द्वारका नगरी बसाई है। वह नगरी जल के नीचे है।'

यह कथा सुनने के पश्चात भगत के मन पर गहरा असर हो गया, वह तो भगवान के दरशनों के लिए तलमलाने लगा। एक दिन जमना किनारे बैठे थे। सीता जी उन के साथ थी। उन्हों के पास एक तिलक-धारी पण्डित बैठा था। उस को पूछा--

'हे प्रभू सेवक पण्डित जी! भला यह तो बताओ कि भगवान कृष्ण जी जिस द्वारका नगरी में रहते है, वह कहां है?'

उस पण्डित ने भगत जी की तरफ देखा और समझा कि यह कोई अज्ञानी पुरष है, जो ऐसी बातें करता है। उस ने गुस्से के साथ कह दिया 'पानी में।'

'पानी में' यह कहने की देर थी, बिनां किसी विचार और झिजक के भगत जी ने पानी में छलांग लगा दी। उस के पीछे ही उस की पति-ब्रता स्त्री ने छलांग लगा दी और दोनों ही पानी में अलोप हो गए।

देखने वालों ने उस ब्राह्मण को बहुत फिट-लाहनत करी और

www.9009.co.in

वह भी पछताने लगा कि उस पासों घोर पाप हुआ है, मगर वह अब क्या कर सकता था । वह डर का मारा वहां से उठ कर चला गया ।

उधर अपने भगतों का राखा आप भगवान ! विष्णु ने उसी समय (कृष्ण) रूप धारन करके अपने सेवकों को बचा लिया। जल में ही माया बल के साथ द्वारका नगरी वसा ली और दर्शन दिए। खुले दर्शन करके भगत पीपा और उन्हों की पत्नी सीता निहाल हो गए। जन्म मरन के बन्धनो से आज़ाद हुए, ऐसा आनंद नगरी में प्राप्त हुआ कि वहां से मुड़ना कठन हो गया, बेनती कीती, 'हे प्रभू ! कृपा करो अपने चरन कंवलों में नवास बखशो ।'

यह खेड समय के साथ होगी। अभी भगतों को मात लोक में रहना होगा । भगवान कृष्ण जी ने बचन कर दिया ।

प्रभू जी ने अपनी नशानी मुन्दरी दी। श्री रुकमनी जी ने सीता को साहड़ी दी। दोनों नशानीआं लेने के पश्चात प्रभू के दरबार से विदा हो आए। देवते जल से बाहर कर गए। मगर प्रभू से बिछड़ कर भगत जी उसी तरह तड़पे जिस तरह पानी से दूर मछली तड़दती है। वस्त्रों समेत पानी से निकलते देख कर लोग बहुत हैरान हुए ।

कई लोगों ने पूछा 'भगत जी ! आप तो डूब गए थे ?'

भगत जी ने कहा - 'नहीं भाई डूबे नहीं थे, हम तो प्रभू के दर्शनों को गए थे, सो दर्शन कर आए हां ।'

जब लोगों को पूरी वारता का पता चला तो पीपा जी की मैहमा सारी द्वारका नगरी में सुगंधी की तरह खिलर गई।

सीता सहचरी की रक्षा

लोग लाई लग और अन्ध वशवासी होते हैं ! जब एक ने

www.9009.co.in

बताया कि पीपा और उन की पत्नी सीता प्रभू दर्शन करके आए तो प्रभू की दी हुई नशानीयां भी साथ लाए तो सारा शहिर पीपा जी के दर्शनों को आने लग पड़ा। कई तो प्रभू रूप समझ कर पूजा करने लगे। पीपा जी को यह बात अच्छी न लगी। वह सीता के साथ जंगल को चले गए, ता कि इकांत में प्रभू भक्ति कर सकें। लोग तो हरि नाम सिमरन का भी समय नहीं देते थे। वह घने जंगल को जा रहे थे कि एक पठान रास्ते में मिला, वह पठान कपटी और बईमान था, स्त्री रूप का शकारी था। वह दोनों भगतों के पीछे लग गया। थोड़ी दूरी पर जाने से सीता को प्यास लगी। वह एक कुदरती बहते जल के नाले से पानी पीने लग पड़ी। भगत जी प्रभू के नाम सिमरन में मगन आगे निकल गए। उन की और सीता की काफी दूरी हो गई। पठान ने पानी पीती सीता को आन दबाया, उस को उठा कर जंगल में एक तरफ ले गया। जो प्रभू के होते हैं प्रभू उन का होता है, पठान के काबू आई सीता ने प्रभू को याद किया। शेर का रूप धारन करके प्रभू जी जल्दी से आ गए, सती सीता की इज्जत बचा ली। पठान को कोई पाप करम न करने दिया और अपनी नौंदरों के साथ पठान का पेट पाड़ कर उस को नरकों की तरफ भेज दिया, जब पठान मर गया तो शेर जिधर से आया था उधर को चला गया। सीता अभी वहां ही खड़ी थी कि वही प्रभू फिर एक बूड़े सन्यासी का रूप धारन करके उस पास आ गए। उन्हों ने आते ही कहा--

'बेटी सीता ! आंप का पति पीपा भगत खड़ा आप की इन्तजार कर रहा है। चलो मेरे साथ तुझे मैं उन के पास छोड़ आऊं।'

सीता उस सन्यासी के साथ चल पड़ी, वह भगत पीपा जी के पास छोड़ कर आप अलोप हो गया। जिस समय सन्यासी आंखों से अलोप हो गया तो सीता को पता चला, 'ओहो ! यह तो प्रभू जी थे,

www.9009.co.in

दर्शन दे गए। मैं चर्णों पर न गिरी।' उसी समय 'राम! राम!' का सिमरन करने लग पड़ी।

ठग साधू और सीता जी

सीता सहचरी एक तो कुदरती सुन्दर और जवान थी, दूसरा प्रभू भक्ति और पतिब्रता होने के कारन सुन्द्रता को और चार चांद लगे थे, भक्ति हीन पुरष जब उस को देख लेता, तब उस की सुन्द्रता पर मोहत हो जाता था। वह दिल हाथ से गंवा कर अपनी बुरी नीयत से उन्हों के पीछे लग जाता। एक दिन चार बुरे आदमियों ने सीता जी का सत भंग करने का फैसला किया। उन्हों ने साधूवों जैसे वस्त्र खरीद लिए और नकली साधू बन गए। कई दिन भगत पीपा जी के साथ घूमते रहे, एक दिन ऐसा मौका बना कि एक मन्दिर में रात रहने का समय मिल गया। उस मन्दिर में दो कमरे थे।

मन्दिर खाली था। नजदीक अबादी की जगह घना जंगल था, जब से सन्यास धारन किया था भगत पीपा जी और सती सीता एक बिस्तर पर नहीं सोते थे। उस दिन भगत ने सती सीता को अकेली कमरे में सोने के लिए कहा और आप साधूवों के साथ दूसरे कमरे में सो गया। शायद भगवान ने ठगों का नकाब उठाना था, इसी लिए उसको वखरे कमरे में सोने के लिए कहा। चारों भेखीयों ने मता पकाइया कि अकेले अकेले साथ के कमरे में जाकर सती सीता जी का सत भंग करें। जब काफी रात हो गई तो जहां सती सीता जी सोई हुई थी तो वह दबे दबे पाव आगे गया। वह यही समझता रहा कि न तो पीपा जी को पता चला है न सीता जी को। उन की कामना

पूरी होने में अब कोई कसर नहीं रहेगी। आखर सीता है तो एक स्त्री थी, पुरष के बल आगे उस का जोर क्या चलता है। उस कमरे अन्दर जाकर वह पांमर टोलने लगा सीता कहां है क्योंकि बहुत अन्देरा था। दबे पांव हाथों से टोलता हुआ जब वह आसन पर पहुंचा, उस ने जल्दी से सती सीता को दबाने का यत्न किया। बाजू फैला कर वहां गिर पड़ा। जब हाथों से टटोला तो उस का त्राह निकल गया। डर कर वह जल्दी से उछल कर पिछले पावों गिर पड़ा। टोलने पर उस को पता चला कि कोमल तन वाली सुंदर नारी बिसतर पर नहीं, वहां तीखे वालों वाली शेरनी है उस के कान हैं, दांत हैं और वह भबक ले कर पड़ी। गिरता गिरता वह पांमर बाहर निकल आया, डर से उस का दिल उस के बस में ना रहा। उस को हांपता देख कर दूसरे बाहर चले आए। उस को दूर लिजा कर पूछने लगे मामला क्या है ? उस ने कहा ! 'सीता का तो पता नहीं कहां है, परंतु उस की जगह एक शेरनी लेटी हुई है। वह मुझे पाड़ देने लगी थी, मालूम नहीं किस समय की अछाई की हुई मेरे आगे आई है, जो जान बच गई।

शुदाई ! सीता ही होगी ! ऐवें डर गया, डरते ने तुझे यह महसूस कराया है कि वह शेरनी है। चलो ज़रा चल कर देखें, मैं कख जलाता हूं। धूणी से अग ले कर उन्हों ने कख जलाए। उन्हों ने जलते हुए कखों के साथ कमरे में रोशनी करके देखा तो सचमुच शेरनी सोई हुई है। उस की सूरत डरावनी थी। डर कर चारों पीछे हट गए। अग वाले कख हाथ से गिर पड़े। उन में से एक ने जा कर भगत पीपा जी को जगा दिया। उस की समाधी खुलने पर उस को बताया, 'भगत जी अन्धेर हो गया। सीता तो साथ की कोठड़ी में नहीं है, उस के आसन पर शेरनी है। या तो सीता

www.9009.co.in

किधरे चली गई हैं या शेरनी ने उन को खा लिया है। कोई पता नहीं चलता माया क्या वरती है।

पापी पुरषों से यह वारता सुन कर पीपा जी हंस पड़े। वह हंसते हुए बोले, 'सीता तो शाइद कमरे में ही होगी, मगर आप के मन और आंखें और हो चुकी हैं। इस लिए आप के दिलों पर पापों का असर है। आप को कुछ और ही दिखता है। चलो मैं आप के साथ चल कर देखता हूं।

भगत पीपा जी उठे, उठ कर उन्हों ने साथ की कोठड़ी में सीता जी को आवाज दी 'सहचरी जी।'

'जीओ भगत जी! आगे से उत्तर आया।

'बाहर आओ!' साधू जन आप के दर्शन करना चाहते हैं।

सीता बिस्त्र से उठ कर बाहर आ गई। चारों ठग साधू बहुत शरमिंदा हुए। उन्हों को कोई बात न आई। वह चुप रहे। सूरज निकलने से पहले ही वह सभी दुष्ट (ठग साधू) पीपा जी का साथ छोड़ कर कहीं चले गए। प्रभू ने सीता की रक्षा करी। सभ का राखा आप सिरजनहार है।

जब सुबह हुई तो पांबर नज़र न आए तो भगत जी ने सीता को कहा - 'मैं बेनती करता हूं अब भी राज मेहलों में चले जाओ! देखो कितने खतरों का साहमना करना पड़ता है। कई पापी मन आप के रूप पर गिर पड़ते हैं। कलयुग का वरतारा ऐसा है। आप के रूप पर मस्त होते हैं, यह लोग पाखण्डी हैं और मनों पर काबू नहीं। आप अपने राज महल में चले जाओ और सुख शांती से रहो।

ऐसे बचन सुन कर पति-ब्रता सीता जी ने हाथ जोड़ कर कहा-- हे प्रभू! ज़रा यह ख्याल करो कि अगर आप के होते हुए, आप के चरनों में अगर मेरी रक्षा नहीं हो सकती तो राज भवन में तो

www.9009.co.in

रानीयों को सदा खतरे रहते हैं । नारी को पति प्रमेश्वर के चरनों में सुख है, चाहे कोई दुःखी हो या सुखी में कहीं नहीं जाओं गी। जो बुरी नीयत से देखते हैं, पापों के भागी वह बनते हैं । मेरी रक्षा प्रमात्मा आप करेगा ।'

'अच्छा ! आप की इच्छा !' यह आख कर पीपा जी प्रभू के साथ मन जोड़ बैठे। वह साधू चुप चाप ही निकल गए। उन्हों को पता चल गया था कि सीता जी का राखा भगवान आप ही है ।

सूरज मल सैन को उपदेश

कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥
काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ॥ १ ॥
काइआ बहुखण्ड खोजत नव निधि पाई ।। ना किछु
आइबो ना किछु जाइबो राम की दुहाई॥१॥रहाउ॥
जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥
पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥२॥

(धनासरी पीपा जी)

भगत पीपा जी जिस समय उपदेश किया करते थे तो बानी भी उचारा करते थे । आप की बानी राजस्थान के लोक-साहित में मिलती है । मगर श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी में एक शब्द है । इस का भाव अर्थ यह है :-

हे भगत भगत जनों ! यह जो शरीर है, यह ही प्रभू है, भाव शरीर में जो आत्मा है, वह ही तो प्रमात्मा है। साधू सन्तों का घर भी शरीर है। पण्डित देवतों की पूजा करता है, पूजा की समग्री सभ शरीर में है। सभ कुछ तन में है। इस में से ढूंढो । सतिगुरू की कृपा होए। इस तन से सभ कुछ प्राप्त होता है ।

www.9009.co.in

ऐसे उपदेश करते हुए भगत पीपा जी देश में घूमते रहे । यहां भी किसी को पता चलता कि पीपा राज छोड़ कर भगत हुआ है तो दर्शन करने बहुत लोग आते। बड़े बड़े राजे और सरदार अमीर लोग उपदेश सुनते। आप एक नरंकार का उपदेश देते और बुत पूजा का खण्डन करते ।

आप महां त्यागी थे। एक बार आप एक रयासत की राजधानी में पहुंचे। ठाकर द्वारे डेरा था, आप स्नान करने सरोवर पर पहुंचे तो वहाँ एक बेरी नीचे गागर पड़ी थी। उस से आवाज आई, मेरा कोई बंधन काटे। गागर से आजाद करे।'

'उफ! माया! भगत जी ने देख कर कहा, भगतों की दुश्मन।' आख कर चले आए और सीता जी को सारी वारता सुनाई, 'सोने की मोहरें पड़ी हैं।'

'हे स्वामी जी ! अच्छा किया आप ने। उधर न जाना सोने की मोहरें किस काम !'

उन्हों की गल बात पास बैठे चोरों ने सुन ली। उन्हों ने आपस में फैसला किया कि चलो हम गागर उठा लाएं। वह चले गए, मगर जब गागर को हाथ डाला तो वहाँ सांप फुकें मारता हुआ दिखाई दिया, डर के कारन दूर हो गए ।

यह देख कर उन को गुस्सा आया । एक ने कहा - 'साधू को जरूर हमारा पता चल गया होगा कि हम चोर हैं । उस के साथ खूबसूरत स्त्री है। वह हम को धोखे से मरवाना चाहता है। चलो यह गागर उठा कर ले चलें और उस के पास रख देवें । सांप निकलेगा और उस को मार डालेगा । स्त्री को हम भगा कर ले जाएंगे। एक चोर की बात सभी ने मान ली।

चोरों ने गागर का मूंह बांद कर उस को उठाया और ठाकर द्वारे

लिजा कर अहिस्ता से भगत पीपा जी सरहाने रख कर चले गए। भगत उठा गागर देखी तो हैरान हुए, मगर उस के पश्चात उसी तरह आवाज़ आई, 'क्या कोई मेरे बंधन काटेगा ? मैं संतों की दुश्मन नहीं, दासी हां !'

भगत जी ने गागर से गागर निकाल कर साधूओं को दो भण्डारे कर दिये। खाली गागर ठाकर द्वारे में रख दी। उन भण्डारों के साथ धन्न धन्न होने लग पड़ी, लोग भगत पीपा जी का जस करने लगे।

उस नगरी के राजे सूरज मल सैन को उपदेश दे कर भक्ति मारग की तरफ लगाया। आप १३६ वर्ष की आयू भोग कर इस संसार से कूच कर गए। पिछली आयू में आप पूरन ब्रह्म ज्ञानी हो गए थे। संसार में आप का नाम भक्ति करके अमर है। बोलो भगतों की जै, सतिनाम वाहिगुरू और राम नाम का महान प्रताप।

४३. श्री सैण जी

हे जिज्ञासू जनों ! भगतों की महिमां का अंत नहीं आता, हज़ारों हैं जिन्हों ने प्रभू प्रमातमां का नाम जप कर भक्ति करके संसार में जस पाया है। ऐसे भगतों में एक 'सैण' भगत भी हुआ है। वह जाती करके नाई था और उस की बाणी का शब्द भी है।

धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥ वारने जाओ कमला पती ॥ १ ॥ मंगला हरि मंगला ॥ नित मंगलु राजा राम राइ को ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतमु दीअरा निरमल बाती ॥ तुहंी निरंजनु कमला पाती ॥ २ ॥

www.9009.co.in

रामा भक्ति रामा नंदु जानै ।। पूरन परमानंदु बखानै ।।३।।
मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ।। सैनु भणै भजु परमानंदु ।।४।।२।।

तिस का प्रमार्थ - भगत जी कहते हैं, हम कमलापति (विष्णु भगवान) से बलहार जाते हां। मंगला चरन उपमा है, सदा उस राम राए ईश्वर की किस की सभी सृजना है। अच्छे दीपक और निरबल वटी है, हे भगवान ! सम कुछ तुम ही हो। भाव सूरज और दीपक वाले मालक हो। राम की भक्ति को रामानंद ही जानता है। क्योंकि वह पूरन प्रमानंद का भेद बताता है। भगवान की मूरती की तरफ देख कर, भक्ति करके परम आत्मा और प्रमात्मा का भजन करो! ताकि सुख का साधन मिले। ईश्वर भक्ति यही है। (यह शब्द) आरती के समय पढ़ा जाता है। प्रमात्मा की उस्तति है।

इस भगत प्रथाए भाई गुरदास जी इस तरह लिखते हैं :-

सुन प्रताप कबीर का दूसरा सिख होआ सैण नाई ।।
प्रेम भक्ति रातीं करे भलके राज द्वारै जाई ।।
आए संत पराहुणे कीरतन होआ रैण सबाई ।।
छड.न सकै संत जन राज दुआरि न सेव कमाई ।।
सैण रूप हरि होइ के आया राणे नों रीझाई ।।
राणै दूरहूं सद के गलहुं कवाइ खोल पैनाई ।।
वस कीता हउ तुध अज बोलै राजा सुणै लोकाई ।।
प्रगट करै भगतां वडिआई ।।

उस समय भक्ति करने की लहिर चली थी, कांशी अते और शहिरों में भगत मण्डलीयां बन गई थीं। भगत जन इक्ट्ठे बैठ कर सतिसंग करा करते थे। भगत कबीर का नाम सुन कर दूसरा सिख सैण नाई होया। वह राजे पास नौकर था। सुबह जाकर मुठी चापी, मालश करता था। सुबह जाकर सेवा पूरी करनी पड़ती था।

www.9009.co.in

एक दिन संत आ गए रैंण-सबाई (सारी रात का कीरतन) होना था। सैन जी ऐसे भजन में मन लगा कर बैठे कि राजे के पास जाने का ध्यान ही न रहा। प्रभू प्रमात्मा के चर्णों के साथ ध्यान जुड़ा रहा। संत कीरतन करते रहे।

उधर राजे ने सोए हुए उठना था और उसकी सेवा होनी थी। अपने भगत की इज्जत काइम रखने के लिए भगतों के राखे प्रेम के खीचे भगवान को सैन जी का रूप धारन करके राजे के पास आना पड़ा। भगवान ने राजे की सेवा ऐसी मन लगा कर की कि राजा खुश हो गया और गले से हार उतार कर सैन जी के भुलेखे भगवान को दे दिया। भगवान जी मुसकाए और हार ले लिया और अपनी माया शक्ति के साथ वह सैन जी के गले में जा डाला, मगर उन को पता न चला। ऐसी खेड करी भगतों के प्रेम में प्रभू ऐसा बांधा जाता है। वस हो कर फिर कहीं नहीं जाता।

सुबह हुई, दिन चड़ आया। सुरत आई तो ख्याल आया कि राजे के महिल में नहीं गया, राजा नराज होगा। चल पड़ा आगे राजा बाधव गढ़ (रीवा अपने महिल में टहिल रहा था। उस ने स्नान कर लिया और नए वस्त्र पहिन लिए थे। सैन डर के मारे कुछ गमगीन हुआ पहुंचा, तो राजे ने पूछा, 'सैन! अब फिर क्यों आया, क्या और किसी वस्तु की जरूरत है? आज की सेवा तो बहुत ही अच्छी थी।'

सैन ने ख्याल किया कि राजा गुस्से के साथ ऊपर से हंस कर कैह रहा है। असल में यह नराज है। उस ने कांपते हुए बेनती करी, 'महाराज! क्षमा करना मैं आ नहीं सका भगत जन आ गए थे, कीरतन

www.9009.co.in

होता रहा। कीरतन सुनने में मन जुड़ा रहा। मैं क्षमा चाहता हूं, गरीब सेवादार हूं।

यह बात सुन कर राजा हैरान हुआ। उस ने कहा, आज तुझे क्या हो गया है। कैसी बातें करता है, मेरे पास वकत पर आया, सोए को उठाया, नौंह काटे, मालश करी, स्नान कराया, कपड़े पहनाए और मैं खुश हो कर अपना हार उतार कर दिया - वह हार आज तुम्हारे गले में पड़ा है।

भगत सैन ने गले पर हाथ मारा तो सच्च ही गले में सोने के मनकों वाली माला पड़ी हुई थी और उस को पता न चला। उस समय उस को ज्ञान हुआ और प्रभू की उसतत करके राजे को कहिने लगा - 'सच्च हे राजन ! मैं नहीं आया। मैं जिस की भक्ति कर रहा था उस ने आप आ कर मेरा काम किया। यह माला आप ने भगवान के गले में डाली, भगवान ने अपनी शक्ति के साथ मेरे में डाल दी। यह तो प्रभू के चोज हैं।'

यह सुन कर राजा और भी हैरान हुआ उस को भी ज्ञान हो गया और उस ने श्री सैन जी के चर्णों पर हाथ लगा कर कहा - 'भगत जी ! आप को आज से राज की तरफ से खर्च मिला करेगा - आप अब बैठ कर भक्ति करा करें।'

ऐसा हुआ भगत सैन नाई। कबीर जी और रविदास जी की तरह आप की महिमा बहुत है। जो नाम जपता है वह तर जाता है। जैसे सतिगुर साहिब फुरमाते हैं, नाम जपने वालों की महिमा बहुत हुआ करती है।

हउमै जलते जलि मुए भ्रमि आए दूजै भाइ ॥ पूरै सतिगुरि
राखि लीए आपणै पंनै पाइ ॥ इहु जगु जलता नदरी

www.9009.co.in

आइआ गुर कै सबदि सुभाइ ।। सबदि रते से सीतल भए नानक सचु कमाइ ।।१।। (सलोक मः ३)

सफलिओ सतिगुरु सेविआ धंनु जनमु परवाणु ।। जिन सतिगुरु जीवदिआ मुइआ न विसरै सेई पुरख सुजाण ।। कुलु उधारे आपणा सो जनु होवै परवाणु गुरमुखि मुए जीवदे परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि ।। नानक मुए न आखीअहि जि गुर कै सबदि समाहि ।।२।। (मः ३)

★

४४. भगत गुरु रामानंद जी

पवित्र गंगा के किनारे कांशी नगरी है, जिस को बनारस भी कहा जाता है। इस नगरी में पंद्रवीं सदी में कभी घर घर लोग रामानंद जी को याद करते थे । आप एक महान व्यक्ति हुए हैं। वैष्नव मत के आगू और जोगी थे ।

उस साल की लिखतों और हिंदी महान कोश की लिखत अनुसार आप का जन्म प्रयाग (वर्तमान अलाहबाद) में एक ब्राह्मण पुरष भूरीरी करमां के घर संमत १४२३ विक्रमी को माता सुशीला जी के गर्भ से पैदा हुए। उस समय भारत में तुरक अथवा अरब देशों के मुसलमान आ चुके थे और इस्लाम धरम के प्रचार के साथ साथ भारत गुलाम हो चुका था। लोगों की जीवन मरयादा एक खिचड़ी हुई पडी थी।

स्वामी रामानंद जी का पहला नाम राम दत था । पांच वर्ष तक घर में रहे और जनेऊ की रसम पूरी करने के पश्चात उन्हों को कांशी ले गए, वहां विद्या पढ़ाई जाए। कांशी ही विद्या का घर था।

रामदत अपने विद्या गुरू पासों अक्षर और व्याकरन पड़ते थे कि एक दिन बाहर गया। एक बाग में घूमते घुमाते को राघवा नंद जी के साथ मेल हो गया, राघवा नंद जी बड़े जोगी, ज्योतिष विद्या के गुरू थे। उन्हों ने जैसे ही रामदत को पास बुलाया और देखा तो बोले, 'भगवान् की लीला असचर्ज है। यह बालक कितना सुंदर होनहार है, मगर यह कुछ दिनों को इस की मृतयु हो जाएगी। माता पिता के लिए यह दुख का कारन बनेगा। आयू बहुत कम ले कर आया है।'

यह बचन किया और आगे चले गए। रामा नंद अपने विद्या गुरू के पास गया। उस को डडोलिक हो कर कहा - 'हे गुरदेव! स्वामी राघवा नंद जी मिले थे। उन्हों ने बचन किया हैं, मेरी आयू बहुत कम हैं। थोड़े दिनों को मेरी मृतयु हो जानी है। इस लिए गुरदेव में विद्या नहीं पढ़नी। क्या लाभ पढ़ने का?

राम दत के विद्या गुरू ने जब यह बात सुनी तो राघवा नंद का नाम सुना तो वह भी घबरा गया। उस ने उपर से राम दात को धीरज देते हुआ कहा, 'कोई बात नहीं, उन्हों का भाव होगा बचपन गया और जवानी आई। आओ चल कर पूछते हैं। फिकर मत करो भगवान ठीक करेगा।

वह राम दत को साथ ले कर राघवा नंद के पास पहुंचे। उस ने जो कुछ बाग में कहा था, वोह ही राम दत के विद्या गुरू को कंह दिया। उस का यह बचन सुन कर राम दत के विद्या गुरू ने बेनती करी-- 'महाराज! कौन सा यतन किया जाए जो इस बालक की आयु लम्बी हो जाए, कोई यतन बताओ!'

'इस बालक की आयु लम्बी हो सकती है, अगर योग-अभयास हो।' राघवा नंद का उत्तर था।

'फिर आप इस बालक को अपना शिश बनाईए और इस की

आयु लम्बी करें । होनहार बालक है।' राम दत के विद्या गुरू ने बेनती कीरी ।

स्वामी राघवा नंद ने राम दत को अपना शिश बना लिया और नाम रखा, 'रामा नंद'। उस को योग अभयास कराना शुरू किया। योग अभयास करते करते और श्वास दसवें द्वार चड़ाते और उतारते रामा नंद जी' की आयु बड़ गई वह जोगी हो गए और राघवा नंद जी पश्चात 'रुमान जी' वैष्णव सम्प्रदाइ के मुखी बन गए । आप का ऐसा प्रताप बड़ा कि मशहूर गुरू, जपी तपी, करामाती प्रगट हुए। भगत रविदास जी आदिक आप के शिश बने ।

स्वामी रामा नंद जी ने देश के सभी तीर्थों की यात्रा करी और भक्ति मारग का उपदेश दिया। आप एक महान परुष और ब्रह्मज्ञानी हुए। आप का एक शब्द इस तरह है :--

कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥ मेरा चितु न चलै मनु भइओ पंगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक दिवस मन भई उमंग ॥ घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ॥ पूजन चाली ब्रह्म ठाइ ॥ सो ब्रह्मु बताइओ गुर मन ही माहि ॥१॥ जहा जाईऐ तह जल पखान ॥ तू पूरि रहिओ है सभ समान ॥ बेद पुरान सभ देखे जोइ ॥ ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ ॥ २ ॥ सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥ जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥ रामानंद सुआमी रमत ब्रह्म ॥ गुर का सबदु काटै कोटि करम ॥३॥१॥

भाव - अब कहाँ जाना है? घर में ही रंग लग गया है । मेरा मन अब भटकता नहीं पिंगला हो गया है, भाव टिक गया है। एक दिन मन में यह उमंग पैदा हुई कि किसी मन्दिर में ठाकुर की पूजा

www.9009.co.in

करें। चंदन और अतर आदिक त्यार किये। पूजा करने चले तो वह ब्रह्म गुरू ने मन में ही बता दिया । अब जिस तीर्थ पर जाते हां वहां जल और ठाकुर द्वारे ही मिलते हैं। हे ईश्वर आप तो सरब शक्तिमान हैं। वेदों और पुरानों को पढ़ा है। उन्हों से पता चलता है कि ईश्वर हर स्थान पर है । बाहर तो तब जाएं अगर वह अन्दर न होए। हे सतिगुरू! हम तो आप से बलिहार जाते हैं, जिन्हों ने सभी फिरक और भरम दूर कर दिये हैं। रामा नंद अब ब्रह्म को याद करता है। गुरू के शब्द ने मेरे करम नाश कर दिये हैं।

(भगत दर्शन)

★

45. धन्ना भगत जी

सतिगुरू नानक देव जी के अवतार धारने से कोई ५३ वर्ष पहले बंबई के पास धुआन गांव में धंने भगत का जन्म एक जट घराने में हुआ था। आप के माता पिता खेती का काम करके और पशू पाल कर गुजारा करते थे, वह बहुत ही गरीब थे । जिस समय धंना थोड़ा बड़ा हुआ, तो उन्हों ने इस को पशू चराने लगा दिया। वह रोज पशू चराने बाहर खेतों में ले जाइया करता था। मेहनत करता गरीब के लिए सभ कुछ था।

गांव के बाहर एक कच्चे तालाब के कनारे एक ठाकर द्वारा था। उस में बहुत सी ठाकरों की मूरतीआं रखी हुई थीं। उन मूरतीयों की पूजा होती थी । लोग सुबह जा कर मथा टेकते और झड़ावा झड़ाते थे। असल में गांव के ब्राह्मण के लिए उस की

www.9009.co.in

रोटी का प्रबंध था। वह रोटी खाई जाता था।

उस पण्डित को ठाकरों की पूजा करते और स्नान कराते और घण्टा बजाते हुए हर रोज धन्ना भगत देखता, वह बालक मन ही मन में सोचता कि यह कौतक क्या है। उसकी बुद्धी घट होने के कारन उस को ज्ञान ज्यादा नहीं था। एक दिन उस के मन में आई देखूं क्या है? वह खड़ा खड़ा देखता रहा। इस तरह उस को देखते देखते कितने दिन बीत गए । एक दिन उस ने पण्डित को पूछ ही लिया यह क्या मामला है तां जो पण्डित ने बताया, जिस तरह आगे हुई उस को भाई गुरदास जी ने इस तरह बताया--

बाहमण पूजे देवते धंना गऊ चरावण जावै ॥ धंने
डिठा चलित इह पुछै बाहमण आख सुणावै ॥ ठाकुर
की सेवा करै जो इच्छै सोई फलु पावै ॥ धंना करदा
जोदड़ी मै भी देह इक जो तुध भावै ॥ पथर इक
लपेट कर दे धंनै नो गैल छुडावे ॥ ठाकुर नो नावाल
कै छाहि रोटी लै भोग चढ़ावै ॥ हथ जोड़ मिनत करै पैरीं पै
पै बहुत मनावै॥ हउ भी मूंह न जुठालसां तूं रुठा मैं
किहु न सुखावै॥ गोसाईं परतख होइ रोटी खाहि
छाहि मुहि लावै ॥ भोला भाउ गोबिद मिलावै ॥

(भाई गुरदास जी)

भाव कि ब्राह्मण ठाकरों की पूजा करता था और वहां धना गऊएं चारा करता था। धन्ने ने ब्राह्मणों की यह खेड देखी, और ब्राह्मणों को पूछा। पण्डित जी! यह क्या मामला है। आप इन मूर्तीयों के आगे बैठ कर क्या कर रहे हैं। ब्राह्मण ने उत्तर दिया। भाई यह तो ब्राह्मणों की सेवा है। जो सेवा करेगा उसकी मनोकामना पूरी हो जाती है। धन्ने ने कहा। यह ठाकर मुझको भी दे दो।

www.9009.co.in

धन्ने को गले लाउन बदले कपड़े में लपेट कर एक पत्थर दे दिया। (घर जा कर) धन्ने ने उस पत्थर को ठाकुर समझ कर उस को स्नान करवाया और लस्सी रोटी आगे रख कर भोग लगाने के लिए कहा। ठाकुर रोटी न खाए तो धन्ना हाथ जोड़ कर मनाने लगा। मिन्नतें की। धन्ने ने भी कसम खाई कि ठाकुर जी अगर आप नहीं खाएंगे तो मैं भी सुचे मूंह ही रहुंगा। उस का यह प्रण देख कर प्रभू प्रगट हुए। प्रभू ने रोटी खाई, लस्सी पी और धन्ने भगत को दर्शन दिए भोलेपन में पूजा करने और धने का का मन साफ था। उस ने श्रद्धा से पत्थर से भगवान को पा लिया।

धंने भगत की पूरी साखी इस प्रकार है। जब धंने भगत को लगन लगी, उस समय उस के मां बाप वृध हो चुके थे और वह अकेला गभरू था। उस ने ख्याल किया कि अगर ठाकुर की पूजा करने से सचमुच ही ठाकर जी प्रसंन हो जाएं तो घर की जरुरतें सभी पूरीं कर लूंगा। गरीबी चली जाए। सुख का सांस आए और जरूरत की चीजें भी मिल जाएं। ऐसा करने से वह प्रसंन हो जाएगा। जीवन के चार दिन वह सुख से काट लेगा। मां बाप ने गरीबी काटी। अब वह भी गरीब रहे। ऐसा करना तो ठीक नहीं। आपणे मन में ऐसे विचार करके उसने झिजक झिजक कर आखिर यह फैंसला कर ही लिया कि जरूर पण्डित को मिल कर बेनती करेगा। लोग भी कहते हैं कि प्रभू देता है। अगर ठीक है तो दे। ऐसा करना होगा।

आखर एक दिन सुबह ही घर से उठ कर धन्ना ठाकुर जी के द्वारे चला गया। आगे पण्डित जी पूजा कर रहे थे। जब पूजा करके हटे तो धन्ने ने हाथ जोड़ कर कहा - 'पण्डित जी! मुझे पहले यह तो बताओ कि आप जिन की पूजा करते हैं यह क्या देते हैं? इनके पास

www.9009.co.in

कौन सी शक्ति हं।'

धन्ने ! इन की पूजा करने से सभ कुछ मिलता है। यह हमारे देवते हे, भगवान हैं ! जो मांगो वही देते हैं। जब यह प्रसन्न हो जाएं तो पौं बारां !'

'कृपा कर के एक ठाकर मुझे भी दे दो। मैं भी इनकी पूजा किया करांगां। जब ठाकर प्रसन्न हो जाया करेंगे तो कुछ मांग लूंगा। मैं बहुत गरीब हुं।'

'तेरे पास ठाकर प्रसन्न नहीं होंगे।'

'क्यों पण्डित जी ?' धन्ने ने हैरान होकर पूछा।

'तुझ को बोल जो दिया, एक तो तुम जट्ट हो। जिन को अक्ल नहीं होती पूजा करने की। ना ही जट्ट को ठाकर रखने का हक है। तुम अनपढ़ हो, विदया हीन पुरुष पशु का जन्म होता है। तीसरा मंदर के बिना ठाकर न कहीं रहते हैं न ही प्रसन्न होते हैं। इसलिए तुम जिद्द न करो। आपणे खेतों की देख भाल कर। ब्राह्मण का धर्म है पूजा पाठ करना। तुम्हारा काम है अनाज पैदा करना। भाई, तुम लोग हल चलाते और रम्ब से गोडी करते ही अच्छे लगते हो। पूजा की और ध्यान न करो, पछताओगे।

ब्राह्मण ने इधर उधर की कहि कर बहुत समझाने का यत्न किया पर धन्ना न माना। वह आपणी ही जिद्द पर अढ़ा रहा। पण्डित कमजोर सा था। धन्ना चढ़ती जवानी का गभरू था। पण्डित को फिक्र हुआ कि कहीं पिटाई न कर दे, इस लिए पण्डित ने डरते हूए धन्ने को कहा - 'अच्छा धन्ने ! जिद्द करते हो तो मैं तुम्हें भी एक ठाकर दे देता हुं। यह कहि कर ब्राह्मण ने धन्ने को टालणे के लिए ही ठाकर पत्थर सालगराम जो मन्दिर में फालतु पढ़ा था उठा कर धन्ने को दे दिया। उस को पूजा पाठ करने की विधी भी बतला दी।

www.9009.co.in

पूरा भरोसे से करना। मन लगा कर यह भी कहि दिया।

धन्ना चादर में लपेट कर ठाकर को घर ले गया। अन्दर रख दिया उसी समय तरखाण की और गया। एक लकड़ी की चौंकी बणवाई। उस चौंकी को धो कर उस के ऊपर ठाकुर को टिका दिया।

रात धन्ने को नींद न आई। वह मन ही मन में गिटीआं गिणता रहा। कि सुबह उठ कर के वह कैसे ठाकरों को प्रसन्न करेगा। अगर ठाकुर प्रसन्न हो भी जाएंगे तो वह उन से क्या मांगेगा। घर में कौन कौन सी चीज की जरुरत है। अगर जरुरतें ज्यादा होंगी तो पहले क्या चाहिए। यही दलीलें सोच कर रात निकल गई। कुकड़ ने बांग दी तो बिस्तर से उठ बैठा। पहले आप स्नान किया। फिर ठाकरों को स्नान करवाया। जब स्नान हो गए तो काफी देर तक हाथ जोड़ कर ठाकुर के आगे बैठा रहा। विदया हीन था। पूजा पाठ तो कोई आता नहीं था। इस लिए वह चुप करके बैठा रहा। पर श्रद्धा से उस को आत्मा से आवाज आ रही थी। ठाकुर बहुत अच्छे हैं। यह तो सारे जगत के हरता करता हैं। मुझ को सुख दो। मैंने तो आपको भोग लगाना है।

धन्ना अकेला था, घर के काम उस को आप करने पढ़ते थे। ठाकर को स्नान करवा कर उन के आगे भगती भाव से बैठ कर दिन चड़े उठा। लस्सी रिड़की, रोटी पकाई जो मक्खन निकाला वह एक कटोरी में डाल कर रख लिया। थाली में रोटी रख कर लस्सी छन्ने में डाल कर धन्ने ने ठाकर के आगे अरदास की कि 'हे प्रभू जी! आकर भोग लगावो। मुझ गरीब के पास रोटी, लस्सी और मक्खन ही है। मै गरीब आदमी हां जब और चीजें दोगे तो वह चीजें भी आपको परोस कर रखा करूंगा। खाओ! ठाकर जी! ऐसा बोल कर वह बैठा देखता रहा। अब पत्थर भोजन कैसे करे? ब्राह्मण तो ठाकुर

के भोग का बहाना बना कर सारी सामग्री घर ले जाता था। एक बुरकी पत्थर के मुख को लगानी और थाल उठा कर घर को चले जाणा। धन्ने को इन चलाकीयों का पता नहीं था। वह तो ब्राह्मणों के बचनों को सत्य समझता था।

दो घण्टे ही गए, ठाकुर ने धन्ने का प्रशाद न खाया। तब धन्ना बहुत हैरान हुआ। वह विहबल होकर कहने लगा। कि 'हे प्रभू! क्या जट्ट का प्रशाद आप नहीं खाते? यह सुच्चा है। मैंने तो स्नान करके बनाया है। अगर लस्सी और मक्खन अच्छा नहीं लगता तो मैं और क्या लाऊं। दादा तो इतनी देर नहीं लगाता था। उसका प्रशाद तो झटपट खा जाया करते थे। प्रभू कृपा करो। हां यह भी पक्का ही समझो! अगर आज आप ने प्रशाद न खाया तो मैं भी कभी नहीं खाऊंगा। मर जाऊंगा पर आपको खिलाए बिना नहीं खाऊंगा। मैं वचन देता हूं। मैं जट्ट हां, कभी जिद्द नहीं छोडांगा। अगर मेरा धरम है ब्राह्मणों से खाना तो आपका धरम है मै जिद्द के बदले कुरबान हो जाणा। प्रशाद छको नहीं तो मैं धरना लगा कर बैठ जाता हूं। यह कहि कर धन्ने ने चौकड़ी मार ली और ठाकुर की और देखता हुआ बैठ गया।

प्रभू ने सोचा अब तो मुझे पत्थर में से प्रगट होना ही पड़ेगा। धन्ने की आतमा निरमल है। यह वल छल नहीं जानता। इस का पक्का भरोसा बण गया है कि ठाकुर भोजन खाते हैं। अब किसी के समझास नहीं समझेगा। यह मेरा सच्चा भगत है। इस की लस्सी पीनी पड़ेगी। अगर पत्थर के आगे जट्ट मर गया तो संसार मेरी भक्ति छोड़ देगा। धन्ना देखता रहा। उस की आंखें ठाकुर जी पर ही जमी हुई थी। एक घण्टा और बीतने पर तब धन्ना क्या देखता है कि अचानक ही श्री कृष्ण रूप भगवान जी धन्ने की रोटी मक्खन

www.9009.co.in

साथ खा रहे हैं और लस्सी पी रहे हैं। धन्ना खुशी से उछल पड़ा। मेरे प्रभू ! आ गए ! भोजन खाने लग गए। मेरे प्रभू।' धन्ने की सारी लस्सी पी गए। रोटी और मक्खन खा लिया। थोड़ा थोड़ा सीत प्रशाद रहने दिया। रोटी खा कर भगवान जी बोले ! धन्ने कुछ मांग। मैं तुम पर खुश हूं मांगो।'

धन्ने ने हाथ जोड़ कर बाणी राहीं बेनती की :-

गोपाल तेरा आरता ॥
जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥१॥ रहाउ ॥
दालि सीधा मागउ घीउ ॥ हमरा खुशी करै नित जीउ ॥
पनीआ छादनु नीका ॥ अनाजु मागउ सत सी का ॥१॥
गऊ भैस मगउ लावेरी ॥ इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥
घर की गीहनि चंगी ॥ जनु धंना लेवै मंगी ॥२॥ (धनासरी)

प्रमारथ - 'हे प्रभू ! मैं तेरी वडिआई करता हूं । क्योंकि जो भी तेरी आरती उस्तत करते हैं तूं उन के कामों को संवार देता है। मुझे कुछ मांगने के लिए कहा है। मैं तो जरुरत की चीजें ही मांगता हूं। आटा दाल और घी दो। मैं प्रसन्न हुंगा अगर जूती कपड़ा और अनाज सात भातों का, गऊ या मझ लवेरी, सवारी करने के लिए घोड़ी घर की देख भाल करने के लिए एक सुन्दर नारी मुझे दो। यह सभी चीजें मिल जाएं तो मेरे काम बनते हैं।

धन्ना जी के यह बचन सुण कर प्रभू हंस पड़े। हंसते हुए ही बोले। यह सभी चीजें तुम्हें मिल जाएंगी।

भगवान् - और कुछ।

और क्या बताउं और क्या मांगूं। हाँ जब भी मैं बुलाऊं तभी दर्शन देना। अगर कोई जरुरत होगी तो बताउंगा। वचन दो कि मेरे याद करने पर जरूर दर्शन दिया करोगे ?

अच्छा तेरी यह बात मानता हुं । भगवान ने कहा।

'हे प्रभू ! अगर मेरी यह बात मानते हो तो धन्ना आज से आप का सेवक हुआ। सारी उमर भगती में ही व्यतीत करेगा। आप के नाम के बिनां और किसी का नाम नहीं लेगा। धन्ना यही कहता गया। खुशी से वह दीवाना हो गया था। उसकी आंखें बन्द हो गई थीं। जब उस ने आंखें खोह्ली तो प्रभू जी अलोप हो चुके थे। वह पत्थर का सालगराम उस के साहमने पड़ा था। खुशी से उठा। बर्तन उठा लिए बर्तन में जो सीत प्रशाद बचा था उसे खा लिया और निहाल हो गया उस प्रशाद को खाने से धन्ने को तीनों लोकों का ज्ञान प्राप्त हो गया। वह प्रभू के गीत गाने लगा। ऐसी नाम खुमारी चढ़ी कि उस के चेहरे का रंग और का और हो गगा। दिसदा जगत धन्ने को बहुत सुन्दर लगा।

प्रभू के प्रगट होने के कुछ दिन पश्चात धन्ने के घर सब कुझ आ गया। एक अच्छे अमीर के घर उसकी शादी हो गई। पत्नी आई तो दाज में घोड़ी, गऊ लवेरी और कपड़े आदि बहुत आए। बाहर फसल भी बहुत हुई। उस की अनबीजी जमीन पर भी फसल उग आई। धन्ना प्रभू की वडिआई करने लगा। लोग धन्ने की महिमा वर्णन करने लगे। सभी कहते धन्ना भगत हो गया। उस के दर्शन कर के लोग निहाल होने लगे।

धन्ने को किसी ने कहा कि चाहे प्रभू तेरे कहने लगता है फिर भी गुरु धारन करना चाहिए। जब उस पुरुष से धन्ने ने पूछा कि किस को गुरु धारण करना चाहिए तो उस ने स्वामी रामानन्द जी का नाम लिया। कुदरती स्वामी रामानंद जी उधर से आ निकले। धन्ने ने साधू समाज की सेवा करने के पश्चात दीक्षा के लिए उन से बेनती की, स्वामी रामा नंद जी ने धन्ने की बेनती को प्रवान किया। गुरु दीक्षा दे कर धन्ने को आपणा चेला बणा लिया। धन्ना किरत करता

www.9009.co.in

हुआ 'राम नाम का सिमरन करने लगा। मौज में आकर कई बार धन्ना प्रेम पाती राहीं भगवान को आपणे पास बुला लेता और उस से काम करवाता।

एक दिन एक चित होकर भगवान को याद किया और मन में मौज आई कि भगवान उस की गऊओं का चरवाल बणे। भगतों के मन की प्रमात्मा जानता है। उस समय भगत को काम था और गऊएं चर रही थीं। अचानक एक बालक के रूप में भगवान जी प्रगट हुए और उसको कहने लगे। 'हे भक्ता! तेरी भक्ति का समय है। घर साधू आए हैं। उन की सेवा करो गऊएं मैं चराता हूं। भक्त धन्ने ने उस बालक की और देखा। उस की शकल सूरत अनोखी थी। पहले तो भक्त झिजका कि कोई गऊएं हिक कर न ले जाए। पर बाद में उस ने भरोसा कर के कहा। कि क्या मालुम भगवान् की ही लीला है। यह सोच कर वह घर की और चला गया। उस के घर में सचमुच ही बहुत साधू आए हुए थे और उन साधूओं के साथ वही बालक बीच में बैठा हुआ था जिस को भक्त जूह में अभी छोड़ कर आया था। वह हैरान हुआ और चरनीं लग गया।

'भगता! गऊएं तां चार रहे हां। यह भी मन में इच्छा धारण की है। भगवान कुएं पर तुम्हारी गाढ़ी को धक्का दे। सो ऐसा हो होगा यह कह कर भगवान अलोप हो गया। धन्ना जी जब कुएं पर गए तो आगे उस के बलद जोते थे खूह बहि रहा था और भगवान बालक रूप में बैठे गाढ़ी हांक रहे थे। भगत धन्ना यह देख कर भगवान का जस करने लग पढ़ा।

★

www.9009.co.in

भगत नामदेव जी

नामा छींबा आखीऐ गुरमुखि भाइ भगति लिवलाई ॥
खत्री ब्राह्मण देहुरे उत्तम जाति करन वडिआई ॥
नामा पकड़ उठालिआ बहि पिछवाड़े हरि गुण गाई ॥
भगत वछल आखाइंदा फेर देहुरा पैज रखाई ॥
दरगह माण निमाणिआं साधसगति सतिगुर सरणाई ॥
उतम पदवी नीच जाति चारे वरन पए पग आई ॥
जिउं नीवाण नीर चल जाई ॥४॥

भाई गुरदास जी फुरमाते हैं - कि एक नामदेव नाम का भगत हुआ है। वह जात का छींबा था और उस ने प्रेमा भगती से लिव जोड़ ली एक दिन उत्तम जाति के बन्दे खत्री और ब्राह्मण एक मन्दिर में जा कर प्रभू का जस गा रहे थे कि नामां भी उन में बैठ कर जस करने लग पढ़ा। जब उत्तम जाती वालों ने देखा कि भगती करता है तो उस को पकड़ कर संगत से उठा दिया। वह देहुरे मन्दिर के पिछले पास जाकर भगवान का जस करने लग पढ़ा। ऐसा खेल भगवान ने रचा देहुरे का मूंह फेर दिया। वह उस और हो गया तो उच्च जात वाले बहुत हैरान हुए। क्योंकि दरगाह में निमाणों को माण मिलता है। नींवी जात वालों को उत्तम पदवी भगवान् देता है। उसी तरह प्रभू का प्यार नीवों की और जाता है। जैसे नीर नीची जगह बहता है ऊचाई की और नहीं जाता।

मां बाप और बचपन

जिस नामदेव बाबत भाई गुरदास जी ने लिखा और उनका जस

www.9009.co.in

किया है, इस भगत नामदेव जी की बाणी भी गुरु ग्रन्थ साहिब में है। आप का जन्म गांव नरसी ब्राह्मणी जिला सतार सूबा बम्बई में कतक सुदी ११ संमत १३२७ बिक्रमी को हुआ। आप की माता का नाम गोनाबाई और पिता का नाम सेठी और छींबा जात थी। वह कपड़े धोते और छापते थे। सेठी बहुत ही नेक पुरुष था। वह सत्य बोलता और किरत करता। बाप नेक होने पर उसका पुत्र भी नेक निकला। वह भी साधू संगतों के पास बैठता। भगती और बचन सुना करता था।

उन के गांव में एक देवतें का मन्दिर था, जिसे विरोभा देव का मन्दिर कहा जाता था। उस मन्दिर में देवते रखे थे। वहां जाकर बैठते और भजन करते थे। वह भजन गाने बैठते तो वह भी भजन गाने लग पड़ते। वह बच्चों को इकट्ठे करके गाने लगता और भजन गवाता। सभी उस को शुभ बालक कहते थे। वह वैरागी और साधु स्वभाव हो गया था। कोई कार विहार ना करता। वह सदा बैठा रहता और कभी कबार काम करता हुआ भी राम जस गाने लग जाता।

'नामदेव !' एक दिन उसके बाप ने कहा, 'बेटा कोई काम किया करो, काम करने के बिनां हम लोगों का गुजारा नहीं हो हो सकता। किरत करके खाणा है, घर चलाना है। तुम्हारी शादी हो चुकी है।'

शादी तो आपने कर दी ! नामदेव बोला पर मेरा मन तो भगवान की भगती में लगा है। क्या करूं, जब मन नहीं लगता भगवान आवाजें मारता रहता है। नामदेव ने उत्तर दिया।

'बेटा ! भगती भी करो, भगती करनी गलत नहीं। रोजी भी कमानी है। वह भी कमाओ करो। भगवान रोजी में

www.9009.co.in

बरकत पाऐगा ।

नामदेव जी का विवाह छोटी उमर में हुआ और उसकी धरम पत्नी का नाम राजाबाई था। नामदेव तो धरम किरत, भगती ही करने को लोचता था । मन रोके नहीं रुकता था। पर इसकी स्त्री ने उस को पाठशाला से हटा दिया उसको वपार में लगाया। पर वह सफल न हुआ।

ठाकरों को दूध पिलाना

एक दिन नामदेव के पिता ने उस को कहा, बेटा ! मैं दो तीन दिन के लिए बाहर जा रहा हूं। आपणे मन्दिर जो ठाकरों की सेवा मैं करता हूं, वह तुमने करनी। स्नान करके जा कर ठाकरों को स्नान कराना। मन्दिर को साफ करना और ठाकरों को दूध चढ़ाना। जैसे सारी मर्यादा मैं पूरी करता हूं वैसे तुम करना। देखणा अगहिली या आलस मत करना। ठाकर नाराज न हो जाएं।

'बहुत अच्छा पिता जी, जो आज्ञा, ऐसे ही ठाकर पूजा होगी। कोई चिंता न करो।' नामदेव जी ने उत्तर दिया और अपने पिता को विदा किया।

अगले दिन नामदेव जी अमृत समय उठे। स्नान किया धूफ जलाया और ठाकरों के आगे दूध का कटोरा भर कर रखा, हाथ जोड़ कर बैठ गया और देखने लगा। ठाकर जी कैसे दूध पीते। वह देखता रहा। पर ठाकरों ने दूध न पिया।

ठाकर ने दूध कहां पीना था। वह तो पत्थर की मूर्ति

थे। उन के मूंह् में चिमचा दूध लगाया जाता और बाकी का पण्डित पी जाते थे। नामदेव जी को इस ठगी का ज्ञान न था। वह तो समझते थे कि ठाकर सारा दूध पी जाते हैं। तब उन्होंने बेनती करनी शुरु की - 'हे भगवान! मैं तो छोटा सा सेवक दूध लेकर आया हूं। पी लो यह दुध सुच्चा है।

अखीर भगत ने बहुत विह्वलता से इस प्रकार ठाकरों से बेनती करनी आरम्भ की :-

दूध कटोरै गडवै पानी ॥ कपल गाइ नामै दुहि आनी
॥१॥ दूधु पीउ गोबिंदे राइ ॥ दूध पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥
नाही त घर को बापु रिसाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सोइन कटोरी
अम्रित भरी ॥ लै नामै हरि आगै धरी ॥२॥

'हे प्रभू! दूध का कटोरा (छंना) और पाणी का गड़वा आप के पास रखा हुआ है। यह दूध मैंने कपला गाए का चो कर लाया हूं। हे मेरे गोबिंद दूध पी लो तो मेरा मन शांत हो जाएगा नहीं तो घर में पिता जी नाराज होंगे। सोने की कटोरी रखी है जरुर पिओ। मैंने कोई पाप नहीं किया। मेरे बाप से रोज दूध पी लेते हो तो मुझसे क्यों नहीं पीते। हे प्रभू कृपा करो। दया करो। पहले ही पिता जी मुझे बुरा और निकम्मा समझते हैं। अगर दूध न पिया तो मेरी खैर नहीं। पिता जी घर से ही मुझे निकाल देंगे। हे भगवान!

जो काम नामदेव जी के पिता सारी उमर न कर सके। ठाकर से ठगी की। न शुद्ध हृदय से प्रार्थना की न ठाकर ने दूध पिया। जैसे ब्राह्मण चिमचे से दूध ठाकर जी के मूह से छूह कर पीछे कर लिया करते थे वैसे ही नामदेव के पिता जी भी किया करते थे। पर मासूम आतमा नाम देव जी को तो इस

का पता नहीं था। वह ठाकुर जी के आगे बैठा मिन्नतें करता रहा। भगवान भगती का खिचा हुआ आ गया। पत्थर की मूरती से हंसा। उन को नामदेव जी ने आपणी बाणी द्वारा ऐसे बताया है :-

ऐकु भगतु मेरे हृदय बसै ।। नामे देखि नराइनु हसै ।।३।।

एक (नामद्देव) जी भगत उन के हृदय में बसा, नामे को देख कर भगवान हंस पढ़ा। दोनों हाथ आगे बढ़ाए और दूध पी लिया। दूध पी कर मूरती वैसी की वैसी हो गई।

दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ ।।
नामे हरि का दरसनु भइआ ।।४।।

दूध पिला कर नामदेव जी घर चले गए। ऐसे उन को प्रभू ने दर्शन दिए। यह नामदेव की भगती मारग में पहिली जीत थी। उसकी बेनती सुनी गई और आतमा और की और हो गई। प्रभू का लड़ मिल गया। इस साखी प्रथाऐ भाई गुरदास जी ने यह उचारा है :-

कंम किते पिउ चलिआ नामदेव नो आख सिधाया ।। ठाकर दी सेवा करीं दुध पिआवण कहि समझाया ।। नामदेव इशनान कर कपल गाइ दुहिकै लै आया ।। ठाकर नो नहावालि कै चरनोदक लै तिलक चड़ाया । हथ जोड़ बिनती करे दुध पीअहु जी गोबिन्द राया ।। निहचउ कर आराधिआ होइ दयाल दरस दिखलाया ।। भरी कटोरी नामदेव लै ठाकुर नों दुध पीआया ।। गाइ मुई जीवालीअनु नामदेव दा छपर छाया ।। फेर देहुरा रखिओनु चार वरन लै पैरीं पाया ।। भगत जनां दा करे कराया ।।

शुद्ध हिरदे से की उस की अरदास ऐसी परवान हुई उन के पास शक्ति आ गई। वह भक्ति भाव वाले हो गए और जो वचन मुंस से निकालते वही सत्य होते। आप के पिता आए जब उन्होंने सुना कि नामदेव ने पत्थर के ठाकरों में जान डाल दी उस को दुध पिलाईया और खुश हुआ उस ने समझा उस का परिवार सफल हो गया उसनें जा कर ठाकरों के मन्दिर में बेनतीयां की। नामदेव जी का नगर में नाम होने लगा। नामदेव जी ठाकरों के पास बैठे हुए उन्हों का गायन कीए जाते घर के कामों का त्याग कर दिया।

पुंडर पुर में बीठुल के चरणों में

नगर नरसी बराह्मण के नजदीक ही पुडर पुर थी, वहां मन्दिर थे। उन मन्दिरों में मेले लगते थे। हर सपती और हर बोधनी एकादसी को बहुत इकठ होता था। बहुत सारीयां भगत मंडलीयां दूर दूर से आती भजन करती। नामदेव जी 'बारकरी भगत मंडली' के साथ मिल कर पुन्डर पुर गए। यह चन्दन भागा नदी के किनारे है। जिस को गंगा की तरह दक्षिण में पुज्य नदी समझा जाता है। एक पण्डलीक भक्त हुआ है। वह पांड रंग बिठल राय भगवान का उपासक था। वहां तिलोकेसर चकरपाणि भगवान की मुरती थी, जो एक टांग पर भार ईंट पर खड़े हुए थे। उस का नाम बिठल रखा हुआ था-जिस के अर्थ हैं-भगवान ! हर काम भगवान की दया से होता था और उस की पुजा होती थी।

भक्त नामदेव जी ने पुन्डरपुर का जस सुना हुआ था। जब वहां की भगती और सभा को आंखों से देखा वहीं रह पड़े

www.9009.co.in

उन्होंने ने फैसला किया कि 'बीठुल राय' की पूजा करते हुए ही जीवन व्यतीत करेंगे। चार दिन मेले ते कीर्तन होता रिहा। अनंद लेते रहे सच्चे प्यार के कारण भगवान के दर्शन करते रहे। बहुत सारे लोगों को पता लग गया कि नरसी ब्राह्मण नगर वाले नामदेव जी ऐसे हैं जिन्हों को भगवान ने दर्शन दिए थे।

नामदेव जी एक दिन बीठुल जी के आगे समाधी लगा करबैठे कि बीठुल जी के पैर हिला दिए। प्रेम की जंजीर केसाथ जकड़ा हुआ बीठुल स्वर्ग के सिंहासन को छोड़कर नामदेव जी के सामने आ खड़ा हुआ उसने वचन किया 'भक्त ! तुम्हारा इच्छा क्या है, तुम रात, दिन मुझे आराम से नहीं बैठने देता। याद क्या करता रहता है' नामदेवजी ने हाथ जोड़कर बेनती की, हे दाता मैं क्या बताऊं मेरें पास कुछ नहीं रहा। आप ने दर्शन दे कर अपना बना लिया है। आंखों में, दिल में आप रहते हो। 'प्रणवै नाम देउ लागी प्रीति ।। गोबिंदु बसै हमार चीति ।।' वस दी गल नहीं। दर्शन को मन करता है।

भक्त की बिनती, उस की मिन्नत सुनकर भगवान की कृपा से घर में आए। उन्होंने स्पष्ट दर्शन देते हुए वचन किया, 'हे नामदेव ! तेरी भक्ति मन्जुर ! जब याद करो गे दरशंन होंगें, तेरें काम पूरन होंगे। मन की उमीदें पूरी होंगी। यदि तुम प्रभु के हो तो प्रभु आपका हो गया है।

यह वचन करके भगवान बीठुल जी अलोप हो गए नामदेव भक्ति में लगा रहा। कहते हैं, ऐसा मस्त हुआ, विस्माद और बैराग की दुनियां में गया कि उसको कोई भी होश न रही। कितने दिन बैठा प्रभु के गीत गाता रहा।

www.9009.co.in

नामदेव जी ने तीर्थों की यात्रा करनी

'घट घट पूरन बगहम हैं गुरमुख वेखालै ।।'

भक्तों को भक्त प्यारे होते हैं संतों को संत आदमी अच्छे लगते हैं। नामदेव की महिमा होने लगी उन्हों के पास संत साधु आते और दर्शन करने के साथ गोष्ट करते।

महाराष्टर में एक मशहुर संत श्री ज्ञानेश्वर थे। वह भी भक्ति भाव वाले और अतिमक और भगवान ज्ञान के ज्ञाता थे। उन की दिव्य दृष्टि बड़ी दूर की थी। उन्होंने जब नामदेव के दर्शन किए तो कहा-नामदेव। हम तीर्थो के दर्शन को जा रहा हुं आओ हमारे साथ चलो !

यह वचन सुन कर नामदेव जी ने बेनती की-'महाराज। इच्छा तो है, पर बीठुल जी के दर्शन को मन करता है। कोई पेश नहीं जाने देते। चले गए तो दर्शन कैसे होंगे।

यह सुनकर महात्मा पुरुष बोले-'नामदेव ! यह एक गलती है-माया का परदा हे। इतना कुछ करने और माया का परदा दूर नहीं हुआ। तेरा बीठुल सरब शक्तिवान है। जैसे जड़ एक और पत्ते फुल अलग ऐसा भेद है।

यह वचन करके महापुरुश्र ने नामदेव को ज्ञान उपदेश किया माया से भरम का परदा दूर किया वचन किया-'बीठुल (भगवान) हर जगह होने के साथ २ उस के जब प्रकाश के दर्शन करते हैं तो मन प्रसन्न होता है। तीर्थो पर गए ज्ञान में बढ़ोती और महांपुरुश्र के दरशन होते हैं। कई संत मंडलीयां मिलती हैं। आओ ! आप का बीठुल हर जगहा रहता दिखाएं।'

जैसे आज्ञा महाराज ! आप ने ही इज्जत रखना। यह

बचन करके नामदेव जी के साथ चलने को त्यार हो पड़े ।

संत ज्ञानेश्वर जी की संत मंडली नामदेव जी को साथ ले कर महां राष्टर में तीरथों के दरशन करने लगे। मध्य-भारत में घुमते हुए त्रिबेणी, कांशी और हरिद्वार आदि तीरथों के दरशन किए। संत मंडलीयों के साथ ज्ञान चर्चा हुई और सत्य ही अनेक संत मंडीयों के दर्शन हुए। नामदेव जी के मन का भरम दूर हो गया। उन्हों का बीठुल हर जगहा चलता हुआ नजर आया। मन मान गया, प्रसन्न हो गए। भगवान के दर्शन होने लगे।

मरो गाय जीवत की

संत ज्ञानेश्वर जी की संत मंडली के साथ उीरथों की यात्रा फरते हुए श्री नामदेव जी मथरा बृन्दाबन ने दिल्ली(हसतानपुर) आ गए।

बृन्दाबन में जब नामदेव जी ने भगवान कृष्ण जी के मन्दिर में भगवान के दरशन किए तांकि उन्हों को श्री कृष्ण जी के रुप की जगह बीठुल जी के दरशन हुए। एक महीना बृन्दाबन में ही संत मंडली टिकी और दरशन होते रहे।

दिल्ली के जमना घाट पर संत मंडली ने डेरा जमा दिया और भजन कीतन होने लगे। शहर के हिन्दु और सुफी मुस्लमान संतों के दरशनों को आते। गली गली श्री नामदेव जी की करामातों का जब शहर वासीओं को पता लग गया तो शहर वाले जोर शोर से आने लगे। बहुत शोभा हुई, नामदेव जी का जस होने लगा।

उस समय दिल्ली में तुरकों का राज्य था। मुहम्मद बिन तुगलक दिल्ली का बादशाह था। यह बादशाह इस्लाम का

प्रचारक हिंदू धर्म और हिंदूओं से ही ईरखा करता था । इस को मालूम हुआ है कि एक नामदेव हिंदू दक्षण की तरफ से आया है। उसको भगवान ने कई बार दर्शन दिये हैं । वह करामाती और शक्ति वाला है। उन से जो मांगते हैं, वह ही प्राप्त कर रहे। यह सुन कर बादशाह ने प्यादा भेज कर नामदेव जी को किले में बुला लिया।

नामदेव जी का बादशाह पास जाना था कि हिंदूओं में गमी की लहर दौड़ गई। उन्हों ने ख्याल किया हो सकता है कि बादशाह नामदेव जी को मरवा ही ना दे, क्योंकर बहुत तअसबी था। वह हिंदुओं पर जुलम बहुत करता था। हिंदू इक्ठे होकर बादशाह पास गए । उन्हों ने बादशाह के पास बेनती करी, 'बादशाह स्लामत! नामदेव जी को छोड़ दिया जाए । उन्हों के तोल बराबर सोना हम से ले लो ।' बादशाह ना माना। सभी नराश होकर वापस आ गए और ज्ञानेशवर जी के पास जाकर बेनती करी, महाराज! आपने शिश को बचाओ! यवन बादशाह अच्छी नीयत का नहीं। ईरखावादी है।

'हे भगत जनो! नामदेव जी का राखा उस का भगवान बीठुल है। चिंता न करो! बादशाह ने बीठुल को नहीं बनाया, बीठुल ने बादशाह को पैदा किया, जो अपने मालक से मुकाबला करता है, वह कभी जीत नहीं सकता, भगवान् क्या खेड करता है। फिकर ना करें, भगवान् का नाम जपो।'

संत जी के यह वचन सुन कर श्रद्धालूओं को शांति आई।

बादशाह ने नामदेव जी से कहा, 'सुना है कि तुम बहुत करामाती हो, खुदा आप का कहा मानता है। अगर यह बात सच्ची हैतो अपने भगवान से कहो वह मरी गऊ को जीवत करे।'

www.9009.co.in

बादशाह की यह बात सुण नामदेव जी ने बचन किया-

सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ।। देखउ राम तुमारे कामा ।। नामा सुलताने बाधिला ।। देखउ तेरा हरि बीठुला ।।१।।रहाउ।। बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ।। नातरि गरदनि मारउ ठाइ ।। (भैरउ)

भाव - सुलतान (बादशाह ने पूछा - 'सुण नामदेव ! तेरे राम के मैं कौतक देखना चाहता हूं । नामदेव को सुलतान ने बांध लिया । कहने लगा तेरा हरि भगवान देखता है। इस समय मरी हुई गऊ जीवित करे नहीं तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग किया जाएगा ।

नामदेव जी ने बचन किया - 'बादशाह ! भगवान का शरीक कोई नहीं । अगर भगवान ने गऊ को मारा है तो मैं कौन हूं उस को जीवित करने वाला । ? वह तो भगवान की इच्छा से ही जीवित हो सकती है ।

बादशाह - मैंने सुणा है तुमने बहुत सी करामातों को दिखलाया है पत्थर की मूर्ती को आदमी की तरह दूध पिलाता रहा है । क्या यह सत्य है ?

नामदेव - मुझे तो मालुम नहीं करामात किस को कहते हैं। मैं तो यह जाणता हूं कि प्रभू का सिमरन करना अच्छा है। सन्त मंडलीयों के साथ हरी कीरतन करता और सुनता हूं । अगर भगवान कोई भी कौतक करता है तो वह भगवान की लीला है। आप ने बुलाया आ गया । भेज दोगे तो चला जाऊंगा ।

बादशाह - हम कुछ नहीं सुणना चाहते। बताओ गऊ को जीवित करोगे कि नहीं । ज्यादा बातें करने की दरबार में आज्ञा नहीं । एक टक बात बताओ ।

नामदेव - मैं कुछ नहीं जाणता, मेरा बीठुल जाणे, जैसे भी उस को भाए वैसे ही होगा । आप परजा पर जुल्म करते हो । जिस ने

बादशाह बणाया है, उस को याद नहीं करते।

यह सुण कर बादशाह क्रोधित हो गया। उस ने वजीरों की और देखा, फिर नामदेव जी को कहा - 'अच्छा एक पहिर का समय दिया जाता है। उस समय तक गऊ को जीवित कर दो। नहीं तो सब के साहमने कत्ल कर दिए जाओगे। हाथी के पैरों में फेंक कर दलमल दिए जाओगे। यही मेरा हुकम है। लोगों को धोखा देते हो। यह कहि कर बादशाह महलों को चला गया।

नामदेव जी कैद थे। हाथ बंधे हुए थे। सिपाहियों के पहरे में उनको बैठाया हुआ था। सत घड़ीयाँ बीत गई पर गऊ न हिली। वह उसी तरह मृत पड़ी रही। अनोखा कौतक था। लोग हैरान थे अगर गऊ न उठी तो नामदेव जी को बादशाह जरूर मार देगा। लोग भगवान के आगे अरदास कर रहे थे।

बादशाह घर गया तो उसको सूल होणा शुरु हो गया। वह पल में इतना तंग हुआ कि उस के बचने की कोई उम्मीद न रही। शाही हकीम दौड़ धूप करने लगे।

बादशाह की आँख के आगे नामदेव जी का चित्र ही था। कभी-२ उनका चित्र दूसरी और होता तो भिआनक सूरतें ही नजर आती। वह विलकने लगा - बचाओ ! मुझे बचाओ !'

बादशाह के सिआणे वजीर ने कहा - बादशाह सलामत राजी हो सकता है, शायद नामदेव जी को पकड़ने के कारण खुदा नाराज हो गया होगा। जान बदले उस को छोड़ देना चाहिए। वह खुदाई बन्दा है, हो सकता है खुदा नाराज हो गया हो।

यह बात बादशाह के मन को लगी। उस ने उसी समय हुकम दिया कि नामदेव को छोड़ दो।

हुकम हुआ, पर उधर और ही खेल हो चुका था। उस के

www.9009.co.in

पुरुषों ने देखा, देर हो रही थी तो उन्हों ने बादशाह के पहले हुकम अनुसार नामदेव को उठा कर हाथी के आगे फैंक दिया। हाथी पहले तो घबराया, उसने रब्बी पुरुष को देखा। एक बार उठा कर फैंका। उस बाबत नामदेव जी आप बताते हैं--

करै गजिंद सुंड की चोट ।। नामा उबरै हरि की ओट ।।

उस समय वजीर वहां पहुंच गया, उस ने जलादों को बादशाह का हुकम सुनाया और नामदेव जी के हाथ पांव खोहल दिये गए, उधर गऊ भी उठ बैठी। लोग और वज़ीर हैरान थे।

नामदेव जी ने बादशाह को उपदेश दिया, उस का दुख दूर किया। उस के बारे में भगत नामदेव जी की अपनी बानी का यह पूरा शब्द है--

सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ।। देखउ राम तुम्‍हारे कामा ।। १ ।।
नामा सुलतान बाधिला ।। देखउ तेरा हरि बीठुला ।। १ ।।
रहाउ ।। बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ।। ना तरु गरदनि मारउ
ठांइ ।।२।। बादिसाह ऐसी किउ होइ ।। बिसमिल कीआ ना
जीवै कोइ ।। ३ ।। मेरा कीआ कछू न होइ ।। करि है रामु
होइ है सोइ ।।४।। बादिसाहु चड़िओ अहंकारि ।। गज हसती
दीनो चमकारि ।। ५ ।। रुदनु करै नामे की माइ ।। छोडि
राम की न भजहि खुदाइ ।। ६ ।। न हउ तेरा पूंगड़ा न तू
मेरी माइ ।। पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ ।। ७ ।। करै गजिंदु
सुंड की चोट ।। नामा उबरै हरि की ओट ।।८।। काजी मुलां
करहि सलामु ।। इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु ।।९।। बादिसाह
बेनती सुनेहु ।। नामे सर भरि सोना लेहु ।। १० ।। मालु लेउ
तउ दोजकि परउ ।। दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ।। ११ ।।
पावउ बेड़ी हाथहु ताल ।। नामा गावै गुन गोपाल ।। १२ ।।

गंग जमुन जउ उलटी बहै ॥ तउ नामा हरि करता रहै ॥१३॥
सात घड़ी जब बीती सुणी॥अजहु न आइओ त्रिभवण धणी॥१४॥
पाखंतण बाज बजाइला ॥ गरुड़ चड़े गोबिंद आइला ॥१५॥
अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥ गरुड़ चड़े आए गोपाल ॥१६॥
(भैरउ नामदेव जी)

देहुरा फिरने की कथा

संत मंडली के साथ विचरते हुए नामदेव जी कपलधारा मंदर में चले गए । वहां मन्दिर में पूजा हो रही थी। आपने भगवान बीठुल के दर्शन करने के लिये वह भी वहां बैठ गए। क्योंकि प्रभू के बिनां किसी और तरफ ध्यान नहीं था। प्रभू के साथ प्यार था जिस तरह फुरमाते हैं--

जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥ त्रिखावंत जल सेती काज ॥ जैसी मूड़ कुटंब पराइण ॥ ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥१॥ नामे प्रीत्ति नाराइण लागी ॥ सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥१॥ रहाउ ॥ जैसी पर पुरखा रत नारी ॥ लोभी नरु धन का हितकारी ॥ कामी पुरख कामनी पिआरी ॥ ऐसी नामे प्रीति मुरारी ॥२॥ साई प्रीति जि आपे लाए॥ गुर परसादी दुबिधा जाए ॥ कबहु न तूटसि रहिआ समाइ ॥ नामे चितु लाइआ सचि नाइ ॥३॥ जैसी प्रीति बारिक अरु माता ॥ ऐसा हरि सेती मनु राता ॥ प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति ॥ गोबिदु बसै हमारै चीति ॥ ४ ॥

तिसका'प्रमार्थ--नामदेव जी फुरमाते हैं, मेरी आत्मा को ऐसी प्रीति है जैसी कि भुखे की अन्न से, प्यासे की पानी से, ऐसी नामदेव की प्रीति भगवान से है । उस प्रीति के लगने से सुभावक ही आप बैरागी हो गए हैं। आप आगे फुरमाते

www.9009.co.in

है, जैसी किसे पुरष की पराई नारी से प्री होती है। लालची दौलत से प्यार करता है। पर यह वह प्रीति है, जो आप ही लाता है। गुरु की कृपा से सारे भरम जाते रहते हैं। जैसे बच्चे और मां का प्यार होता है वैसे मेरी और हरी की है। अन्त में कहते हैं कि हरि परमात्मा हमारे मन में रहता है।

बात क्या आप मन्दिर में जा बैठे और प्रमात्मा का जस करने लगे। मन्दिर पुजारी को पता लगा कि दक्षिण से आया यह नामदेव भगत जाति से छींबा है। छींबा जाति को उस समय नीच समझते थे ब्राह्मण लोग। उन्हों ने नामदेव जी के पास आ कर उन्हों से पूछा-आप जन्म से छींबे हो।

नामदेव जी- हां भाई। ऐसा ही कहते हैं।

पण्डित-'फिर आप यहां से उठ बैठो। इस मन्दिर में उन्चे कुल वाले पुरष ही पूजा कर सकते हैं।

नामदेव जी-'वह लोग कौन ?'

पण्डित-'ब्राह्मण और क्षत्री आदि।'

नामदेव जी-'यह आप की गलती है। हर प्राणी एक जैसा ही है। जन्म से कोई आदमी अच्छा या बुरा नहीं होता। अच्छा या बुरा तो करमों से होता है। जो कोई जैसा करम करता है वैसा ही वह बनता है। भगवान के लिए सब नर नारी उसी प्रकार प्यारे हे जैसे एक बाप के लिए सारे पुत्र प्यारे होते हैं, चाहे कोई कम काम करता है चाहे कोई ज्यादा। प्रभु तो सब का है।

पर पण्डितों ने एक बात न मानी, उन्हों ने भगत नामदेव जी को पकड़ कर उठा दिया।

भगत नामदेव जी उठ पड़े। खड़े होकर सीढ़ीयां उतरते हुए वह अपने मालिक बीठुल को याद करते हुए। उन्हो ने अपनी बाणी

www.9009.co.in

में बताया है कि किस तरह अपने मालक बीठुल जी को याद किया और बेनती करी, लोग चाहे बुरा कहें, मन्दिरों से उठा देने पर आप ने नहीं उठाना। आप ने भगत को नहीं उठाना।

मोकउ तूं न बिसारि तूं न बिसारि तूं न बिसारे रामीईआ।।१।।रहाउ।।
आलावंती इहु भ्रमु जोहै मुझ ऊपरि सभ कपिला।।
सूदु सूदु करि मारि उठाइओ कहाकरउ बाप बीठुला ।।१।।
मूए हूए जउ मुक्ति देहुगे मुक्ति न जानै कोइला।।
ए पंडीआ मोकउ ढेढ कहत तेरी पैज पिछंउडी होइला।। (मलार)

हे प्रभू! मुझे न छोड़ना ! तूं ना छोड़ना ! हे दाता! मन्दिर वालों को शंका है कि मैं नीच हां । नीच करके उन्हों ने मुझे मार पीट कर मन्दिर से नकाल दिया है। अब बताओ दाता! मुझ को क्या करना चाहिए, हे प्रभू ! क्या कहते हो! मरे को मुक्त करोगे ? वह मुक्ति किस काम उस को किस ने देखना है । यह ब्राह्मण मुझ को छींबा कहते हैं, अगर आप ने कोई नज़ारा न दखाया तो निंदा होगी । लोग भक्ति नहीं करेंगे। हे दयाल! कृपाल! सभी तेरा जस करते हैं। अपनी बाहों का बल दिखाओ।

हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ ।। भगति करत नामा पकरि उठाइआ।।१।।हीनडी जाति मेरी जादि मराइआ।।छीपे के जनमि काहे को आइआ ।। रहाउ ।। लै कमली चलिओ पलटाइ ।। देहुरै पाछै बैठा जाइ ।।२।। जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै ।। भगत जना देहुरा फिरै।। ३ ।। ६ ।।

भाव - हे प्रभू! खुशी खुशी हसदा होया आप के मन्दिर में आया था, तेरे भक्ति करते को पण्डितों ने पकड़ कर उठा दिया है। हे श्री कृष्ण जी! मेरी जात नीवीं है। मैं छींबियों में क्यों जन्मा।

कंबली (भूरी) मोढे पर रख कर नामदेव चल पड़ा। ठाकुर

www.9009.co.in

द्वारे के पछवाड़े जा बैठा। जैसे जैसे नामा हरी के गुन गाई जाता था, वैसे वैसे पण्डितों का ठाकुर द्वारा फिरता जाता था। जैसे भुचाल आता है, वैसे मंदर लरज पड़ा। सभ ने जाना सचमुच भुचाल आ गया। कई जल्दी से छलांग लगा कर मन्दिर की कुर्सी से नीचे उत्तर आए। कांपता हुआ और सरकदा सरकदा ठाकर द्वारा घूम गया। जैसे किसी ने घुमाया होता है। नीचे पहीए लगाए होते हैं। यहां नामदेव बैठा भक्ति करी जाता था, वहां जा खड़ा हुआ पर नामदेव जी आंखें बंद करके शब्द पढ़ी गए। हथले छैनों की आवाज वायू-मंडल में गूंज पा रही थी। धरती डोली जाती थी। ब्राह्मणों में दो पण्डित सिआने थे। वह नामदेव जी के चर्णों पर जा पड़े कहीं मंदर और शहिर ही गरक ना हो जाए। उन्हों ने नामदेव के चरन दबा लए। बेनती करी, 'प्रभू के प्यारे! समाधी खोलो ! हमारी भूल बखशो ! हम पापी ! निंदक ! पांड़े क्षमा करो, दया करो छोटे बच्चों पर !' उन की बेनतीयों ने नामदेव जी की समाधी खोहल दी। जब आंखें ऊंची करके देखा तो ठाकुर द्वारे का मूंह नामदेव की तरफ था। उसने खड़े हो कर डंडवत प्रनाम किया। प्रमात्मा की उसत्ती करी। भगत नामदेव जी को पकड़ कर बाहर करने वाले पण्डित बहुत शर्मिंदा हुए उन को धरती वेहल नहीं देती थी। फिर भी वह अभिमानी नामदेव जी के चर्णों न लगे। मंदर से बाहर चले गए।

नामदेव जी ने बिगारी बनना

भगवान के कौतक अनोखे और असचरज होते हैं। वह दाता कई बार नराले चोज़ ही करता है। हे भगत जनो ! सुनो ! श्री नामदेव जी जिस समय तीर्थों की यात्रा कर रहे थे तो एक ऐसे

शहिर जा निकले जहां पठाणों को राज था। पठाण हाकम होने कारन बड़े हंकारी थे। वह जिस हिंदू को देखते उस को बेगारी बना लेते थे उन को न किसी का डर था, वह ऐसे ही थें।

नामदेव जी मन की मौज से अकेले ही एक तरफ को चल पड़े। संत मन्डली से बिछड़ गए। बाजार में जा रहे थे तो एक पठान मिला वह हंकारी पठान था। उसने मिलते ही बड़े आकड़ से कहा, 'यह बोझ को उठा कर ले चलो, बेकार चल रहा हैं।

नामदेव जी ने कोई उजर न किया। उन्हों ने बोज सिर पर उठा लिया और चल पए। आगे आगे पठान चला जा रहा था, पीछे पीछे नामदेव जी। नामदेव जी को इस तरह प्रतीत हुआ जिस तरह उनको बोझ चुकाने वाला पठान नहीं, जैसे उन का बीठुल हो। अपने बीठुल का जस करने लगे। शब्द उचरान किया

हउ यारां हले यारां खुसिखबरी ॥ बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ ॥ नीकी तेरी बिगारी आले तेरी नाउ॥१॥रहाउ॥ कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी॥ द्वारिका नगरी रासि बुगोंई॥१॥ खूबु तेरी पगरी मीठें तेरे बोल ॥ द्वारिका नगरी के मगोल ॥२॥ चदी हजार आलम एकन खानां ॥ हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां ॥३॥ असपति गजपति नरह नरिंद ॥ नाम के स्वामी मीर मुकंद ॥४॥ (तिलंग)

भाव--हे मित्र, हे सजन, आपनी प्रसंनता की खबर देवो, खुश हो? मैं तेथों कुरबान जाता हूं। तेरी वगार बड़ी चंगी है। तेरा नाम बड़ा वडा (आली) है। कुजा आमद--किथों आए ? कुजा रफती--कहां गया था? कुजा मेरवी--किधर चला हें? यह द्वारका नगरी है यहां सच बताओ मुगल गाहलीं नकाल रहा था

नामदेव जी उस को कहते हैं-तेरी पगड़ी कितनी सुन्दर है। तुम्हारे बोल मीठे हैं। दवारका में मुगल कहां? तुम तो हरि का रुप हो। तुम असि पति = घोड़ों का मालक सुरज हैं। तुम ही गज पति = हाथीओं का मालक इन्द्र हैं॥ नरहि नरिंद = आदमीओं का राजा ब्राह्मा और तुम मेरा सरदार मुकन्द (मुकती देने वाला) है।

सुखे कुएं में पानी

पंजाब के तीर्थों की यात्रा कर के भगत मण्ठली ने पिछे वापस आना था। इन की सलाह बनी कि देश के रेतले हिस्से से वापस हुआ जाए ताकि इस इलाके के जीवों में भी हरि नाम का प्रचार किया जाए चलती चलती संत मन्डली बीकानेर में पहुंची। रापपुताने में से होते हुए इन्हों ने अजमेर को जाना था। बीकानेर में 'कैलारत जी' अलथान पर पहुंचे तो उन्हों को प्यास लगी, पर रेत के मारुथलों में पानी कहीं न था। सुरज की गर्मी से आसमात, वायु मण्डल और धरती एक जलता हुआ अंगार बना हुओ था, सारी सन्त मण्डली प्यास से मरने लगी। योग के बल से ज्ञानेश्वर ने देखा कि दो सौ गज की दूरी पर कुओं तो हर पर पानी सुखा हुआ है। उस ने सन्त मण्डली सें कहा कि भगवान का आसरा ले कर थोड़ा रास्ता ओर चलो फिर शायद पानी मिल जाए। उन साधुओं नें हौसला किया। भगवान का सिमरन करते हुए सुखे कुएं के पास पहुंचे। कुआं खण्डर हो चुका था, सारा घास उगा हुआ था। ज्ञानेश्वर ने कहा, 'प्रभु के प्यारिओ! मैं बर्तन ले कर नीचे जाता हुं और पानी लाता हुं। सन्तों को पानी चाहिए था, उन्होंने मनजूरी देते देर न लगाई। ज्ञानेश्वर जी करमण्डल ले कर नीचे गए। योग विदिया के बल से धरती पर पहुंचे और पानी आदि पीने के बाद सन्तों के लिएकरमंडल

भर कर ले आए सारे सन्तों ने पानी पिया। जब नामदेव जी पानी पीने के लिए कहा तो भगत जी ने उत्तर दिया, 'मेरी राखी मेरा बीठुल करता है। जो उस को मेरी जरुरत है तो वह कुएं में से पानी ऊपर करेगा, नहीं तो पानी नहीं पीऊंगा मरना मनजूर है।

यह कह कर भगत जी कुएं के किनारे धरना मार के बैठ गए। बीठुल का नाम जपना शुरु कर दिया। कोई आधे घंटे पश्चात कड़क हुई। संता ने कुएं में देखा कि मिटी का गड़ जो कुएं में बंधा हुआ थी, वह अपने आप टुट गया। धीरे धीरे सारी मिट्टी गायब हो गई। कुएं में से सीतल साफ और ठंडा जल देख कर सभी ने खुशीयां मनाई और बहुत प्रसन्न हो कर नामदेव जी को आवाजें दी। उन्हों की आवाजें सुन कर पुछा, 'मेरे बीठुल ने जल भेज दिया। मेरी बेनती सुन ली।'

उठो और करमंडल वहा कर सीतल जल बाहर निकला और पीता! ऐसी शक्ति और भक्ति देख कर सारी संत-मंडली नामदेव जी के चरणों के ऊपर गिर पड़ी और नामदेव जी आप ऐसे प्रभु का भजन करने लगे -

महि लागती ताला बेली॥ बछरे बिनु गाई अकेली॥ १॥
पानीआ बिनु मीनु तलफै॥ ऐसे राम नामा बिनु बापरो
नामा॥१॥रहाउ॥जैसे गाई का बाछा छुटला॥थनु चोखता
माखनु घुटला॥२॥ नामदेउ नाराईनु पाईया॥ गुरू भेंटत
अलखु लखाईया॥३॥ जैसे बिखै हेत पर नारी॥ऐसे नामे
प्रीति मुरारी॥४॥जैसे ताप ते निरमल घामा॥ तैसे राम
नामा बिनु बापुरो नामा॥५॥४॥ (गौंड)

बीठुल के चरणों में

तीरथ यात्रा कर के भगत नामदेव जी फिर पुंडर पुर पहुंच

www.9009.co.in

गए। पुंडर पुर पहुंचते ही वह आपने भगवान बीठुल जी के चरनों में पहुंचे। चरनों पर मथा टेक कर बिनती जोड़ कर पुकार पुकार कर कहिने लगे - 'हे मेरे बीठुल ! आप के चरनों के बिनां मेरा मन कहीं नहीं लगता। मुझे शांती प्राप्त नही हुई, चाहे हर जगह आप का रूप नजर आता रहा । आह ! यहाँ आकर तो मन शांत हो गया है।

अणमड़िआ मदलु बाजै ।। बिनु सावण घनहर गाजै ।।
बादल बिनु बरखा होई ।। जउ ततु बिचारै कोई ।।१।।

हे भगवान ! यहां आ कर तो दसवें द्वार में सुरत ऐसी जुड़ी है कि आज बिनां किसी साज के - जिस तरह अनमढ़ी ढोलक बजे--साज बजने की लै उत्पत हो रही है। सावन रुत के बिना ही प्रेम रूपी बादल गरजने लग पड़े और नाम, शांती और प्रभू प्यार की वरखा होने लगी है। बस समझो तत को बिचार कर आनंद मंगल में पहुंच गया हूं भटकना मिट गई, भरम-भेद खत्म हो गए । वशालता आ गई सुरत पुज गई दसवें द्वार ।

मोकउ मिलिओ राम सनेही ।। जिह मिलिऐ देह सुदेही ।।१।। रहाउ ।।
मिलि पारस कंचनु होइआ ।। मुख मनसा रतनु परोइआ ।।

हे बीठुल जी आप का मित्र मिला और उस ने मुझे आप का मित्र बना दिया। राम ही राम! राम रूप मित्र के मिलने से मेरा यह शरीर सुफल हो गया। अगर शरीर राम का सिमरन न करता - आप के चर्णों में आता तो मालूम नहीं इस के साथ क्या होता - अब तो इस तरह हुआ जिस तरह पारस के साथ मिल कर लोहा भी सोना बन जाता हैं। पारस रूप आप थे। मुख में नाम रूपी मनी है। अर्थात प्रभू जस के बिना--

निज भाउ भइआ भ्रमु भागा ।। गुर पूछे मनु पतीआगा ।।१।।

www.9009.co.in

जल भीतरि कुंभ समानिआ ॥ सभ रामु ऐकु करि जानिआ ॥
गुर चेले है मनु मानिआ ॥ जन नामै ततु पछानिआ ॥३॥

हे प्रभू ! आप का प्यार आया तो भरम का नास हो गया। गुरु के पूछने से मन मान गया। अब तो उस घड़े वाली बात है जैसे पाणी भरने के लिए घड़ा ले जाईए। घड़ा हाथ से छूट जाने पर पाणी से भर कर पाणी में ही डूब कर एक रूप हो गया। मेरी आत्मा को जो माया ने पकड़ा था, माया का हाथ खिसक गया और आत्मा आप के प्यार में डूब गई। बस अब मन मान लिया है कि एक राम ही सभी जगह बसता है। गुरु और चेले में भेत नहीं रहा। तत वीचारन करके इस भेत को नामदेव जी कहते हैं, हमने पा लिया है।

इस प्रकार नामदेव जी आपणे बीठुल आगे यह बचन करते रहे। अरपास बेनतीयां करते हुए कहते रहे, 'हे प्रभू आपणे चरनों में निवास बख्श। मेहर कर !'

तीरथ यात्रा करते हुए वापरीयों घटनाओं का पता पुण्डर पुर के लोगों को चल गया। सभी लोग हर रोज सुबह आ कर नामदेव जी के दर्शन करके निहाल हो गए और 'भगत भगत जग वजिआ।' जो दर्शन करता, उसी के काम रास आ जाते, मन के भरम दूर होते और तन के रोग खत्म होते। दर्शन करने से गरीबी दूर होती और नामदेव जी का जस चारों और फैल गया। ऐसी प्रभू की कृपा हुई।

नामदेव जी का नयां घर

पुण्डर पुर के नजदीक चन्द्र भगा नदी बहती है। उस नदी के किनारे नामदेव जी जा बैठते। ईश्वर भक्ति में लग जाते। आपणे मालक प्यारे प्रमात्मा को याद करते। एक दिन लिव जोड़ी बैठे थे

www.9009.co.in

कि किसी ने जाकर कहा, 'हे नामदेव जी! आप के घर को आग लग गई है। सारा घर जल गया। जल्दी चलो।

आग लग गई। आग लगाई लगाने वाले ने। मेरा घर कैसे हुआ यह तो उस का था। जला दिया उस ने आप। मैं क्या कहुं। नामदेव जी ने उत्तर दिया।

फिर भी जोर देने पर भगत जी उठ कर आए और आ कर जलते कखों के घर को देखते रहे। मन में ऐसा खयाल आया कि लोगों ने जो घर की वस्तुओं को बचा कर रखा हुआ था उन को उठा उठा कर आग में फैंकने लग गए और मूंह से यह कहने लगे 'हे प्रभू! यह जो चीजें लोगों ने बचाई हैं। इन को भी अपणे साथ ले जाओ। मैं इन का क्या करुंगा। अगर घर नहीं रहा तो यह चीजें मैं कहां रखूंगा, ले जाओ!

भगत जी का यह कौतक देख कर लोग बहुत हैरान हुए और उन को रोकने का यत्न करने लगे। पर भगत जी न रुके। वह चीजें फैंकते गए। उस को भगवान के साक्षात दर्शन हो रहे थे। भगवान ने भगत से कहा, हे नामदेव! इस आग में भी तुम्हें बस मेरा ही सरूप दिखाई देता है।

'हे प्रभू! यह आग भी तो आपकी ही बणाई हुई है। आप ही तो जला रहे हैं और आपका ही सारा खेल है। मेरा कुछ नहीं। सब कुछ आपका ही है।

इस प्रकार भगत और भगवान के बीच बात होती रही। और उस भगत की सारी वस्तुएं नहीं जलीं थी कि अचानक आपणे आप आग मदम हो गई और बुझ गई। और उस रात भगत जी एक वृक्ष के नीचे सो गए।

सुबह हुई तो लोग यह देख कर हैरान हो गए कि नामदेव का घर

www.9009.co.in

नयां बणा हुआ था। रातों रात बण गया। ऐसी छंन बणी कि उस जैसी कहीं भी देखी न थी। सफाई थी और लकड़ी बहुत ही प्रेम के साथ तछ तछ कर लगाई गई थीं। सभ से अनोखी बात यह थी कि घर का सारा सामान भी नयाँ आ गया था। जले हुए का नाम निशान भी न रहा।

लोगों ने जैसे आकर भगत नामदेव जी से पूछा - उन्होंने आपणे एक शब्द में इस प्रकार सारी वारता बिआन की है :-

पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो ॥
तोपहि दुगणी मजूरी दैहउ मोकउ बेढी देहु बताई हो ॥१॥
री बाई बेढी देनु न जाई ॥ देखु बेढी रहिओ समाई ॥ हमारे
बेढी प्राण अधारा ॥रहाउ॥
बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो ॥ लोग कुटंब
सभहु ते तोरै तउ आपण बेढी आवै हो ॥२॥ ऐसो बेढी बरनि
न साकउ सभ अंतर सभ ठांई हो ॥ गूंगै महा अमृत रसु
चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥३॥ बेढी को गुण सुनि री
बाई जलधि बांधि ध्रू थापिओ हो ॥ नामे के सुआमी सीअ बहोरी
लंक भभीखण आपिओ हो ॥४॥२।

भाव :- नामदेव जी की गुआंढणें पूछती हैं कि हे नामदेव बताओ तो सही यह छन तुम ने किस से बणवाई है ? अगर कभी हम को तरखाण का पता दो तो दुगणी मजदूरी देंगे।

नामदेव जी उत्तर देते है, 'हे बहिण ! वह कारीगर बिलकुल नहीं दिया जाता। वह तो हर जगह समाया है। मेरा तो वह प्राणों का आसरा है। हां अगर कोई उस कारीगर से मजदूरी पर काम करवाए प्रेम मजदूरी है। सभी परिवारों रिश्तेदारों और मित्रों से अलग हो तो वह कारीगर मिलता है। इस जैसा कारीगर (बेढी) को मैं

www.9009.co.in

बिआन नहीं कर सकता। वह हर जगह वापरिआ है। जिस प्रकार गूंगा पुरुष किसी रस के स्वाद को नहीं बता सकता। वैसे मैं उस के गुणों को बिआन नहीं कर सकता। उस कारीगर ने सारे जगत को एक पत्थर पर रखा है। सागर पर उस का राज है। तारे आकाश और धरती बनस्पती उस के हुकम में है। जैसे राम चन्द्र ने लंका पर चढ़ाई कर के प्यारी सीता को पाया और लंका में रावण को मार कर विभीषण को दे दिया। वैसे भगवान ने नामदेव जी पर कृपा की है। हे लोको ! यह सभ प्रभू का खेल है। उस ने ऐसी खेड की है, मैं क्या बताऊं ?

यह कौतक को देख कर लोग असलों भगत जी के चरणों में गिर पड़े कि भगत जी और भगवान में अब कोई भी फरक नहीं रहि गया है। जो प्रभू की भगती शुद्ध हृदय से करता है उस के कारज रास आते हैं और प्रभू उस की आप देख भाल करता है। 'हे श्रद्धालू जनो !' भगत जी ने लोगों को उपदेश दिया - 'प्रभू बीठुल का नाम जपो उस पर भरोसा रखो। वह आप के सभी कारज रास करेगा। राम नाम में ऐसी बरकतें हैं।'

भगत नामदेव जी का प्रलोक गमन

प्रमात्मा की ऐसी लीला है, जो कोई जन्म लेता है, अन्त को उस की देह बिनस जाती है। आत्मा चोला छोड़ जाती है। आप के गुरदेव गिआन देव जी प्रलोक गमन कर गए तो आप कुझ उपराम रहने लगे। दो बार तीरथ यात्रा की और साधू सन्तों से भरम नविरत करते रहे। जैसे जैसे ही आपकी आयू बड़ी होती गई वैसे वैसे आपका जस बढ़ता गया। आप ने दक्षिण में बहुत प्रचार किया।

www.9009.co.in

आखरी दिनों में आप पंजाब आ गए। उस समय पंजाब में सूफी फकीरों और सुलतानीयों का बहुत प्रचार था। पठानों का राज था। हिन्दु धरम कमजोर हो गया था। बारों में बाबा फरीद जी का प्रचार था। जंगली लोग धड़ा धड़ मुस्लमान बणते जा रहे थे। नामदेव जी पंजाब में घूमे। लोगों को ईश्वर भक्ति की और लगाया और आप ने बाणी उचारी। जो बाणी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में भी मिलती है। बहुत सारी बाणी दक्षिण और महाराष्ट्र में भी गाई जाती है। जिला गुरदास पुर गांव घमाण में भी आप की बहुत सी यादें हैं।

अन्त में ८० साल की आयू में १४०७ बिक्रमी को आप प्रलोक गमन कर गए। आप की बाणी पढ़ने से मन को शांती मिलती है और भगती की और मन लगता है। हे भगत जनो! यह भी शिक्षा मिलती है कि प्रमात्मा ने सभी जीवों को एक सा जन्म दिया है। माया की कमी या जीवन के धन्धों के कारण लोगों पर कई चलाक पुरषों ने ऐसी मर्यादा बणा कर ऊच नीच का वितकरा डाल दिया उस वितकरे ने करोड़ों प्राणीयों को नीचा दिखाया। पर जो भगती करता है वह नीचा होते हुए भी पूजा जाता है।

प्रमात्मा भगतों से बहुत प्यार करता है। भगती ही भगवान को अच्छी लगती है। भगती रहित ऊंचा जीवन शूदर का जीवन है। भगवान राम जी ने भीलणी के बेर खा कर उस को निवाजिआ। उसी भीलणी ने जिसे पंपासर के ऋषी नीच जाती की समझ कर उस को जल नहीं पीने देते थे पर जब जल में कीड़े पढ़ गए थे तो भीलणी के पैर डालने से ही पंपासर का जल फिर पवित्र हुआ था। कभी किसी को नीचा न जाणो सभी स्त्री पुरुष ईश्वर की संतान हैं। नाम का सिमरन करो।

भगत जै देव जी

प्रेम भगति जै देउ करि गीत गोबिंद सहज धुनि गावै ।।
लील्हा चलित बखाणदा अंतरजामी ठाकुर भावै ।।
अखर इक न आवड़ै पुस्तक बंनि संधिआ करि आवै ।।
गुण निधान घर आइ कै भगत रूप लिख लेख बणावै ।।
अखर पड़ि प्रतीत करि होइ विस्माद न अंग समावै ।।
वेखे जाइ उजाड़ विच बिरख इक असचरज सुहावै ।।
गीत गोबिंद संपूरनो पतु पतु लिखिआ अंत न आवै ।।
भगत हेत प्रगास करि होइ दइआल मिलै गल लावै ।।
संत अनंत न भेत गणावै ।। (भाई गुरदास जी)

भाई गुरदास जी ने जैंदेव भगत जी का जस इस प्रकार गाया है। यह भगत बंगाल में हुआ है और आप का जन्म गांव केंदली जिला बीर भूम (बंगाल) में हुआ। आप के माता पिता गरीब थे । माता बाम देवी थी और पिता भोज देव थे। वह जाति करके ब्राह्मण थे। गरीबी होने के साथ साथ आप के पास सिआणप थी। इस लिए जैंदेव जी को उन्होंने पाठशाला में बंगला और संस्कृत पढ़ने के लिए भेज दिया। गियारवीं सदी में बंगाल में हिन्दु राज था। संस्कृत आम ही पढ़ाई जाती थी। एक ब्राह्मण के पुत्र के लिए संस्कृत पढ़नी आम जरूरी थी। संस्कृत पढ़ने के साथ आप राग भी सीखते रहे और आप महारे गीत गाने लग पढ़ा करते थे।

जैंदेव जी की विद्या पूरी भी नहीं हुई थी कि उस के माता जी और पिता जी का देहांत हो गया। उन चलाने का जैदेव के मन

पर बहुत असर हुआ। दुख को सहि न सकते हुए वैराग मई लहजे के गीत रच रच कर गाते फिरा करन उन के गीतों को सुण सुण कर लोग भी वैराग में आ जाया करते थे।

जैदेव विद्या पढ़ता गया और घर की पूंजी या रिश्तेदारों की सहायता मिलती गई। पढ़ाई से मन उचाट न किया। इस प्रकार उस के दिन बीतते गए। वह पाठशाला जाता रहा।

जैदेव जी का पहिला चमत्कार

सिआणे कहते हैं, चमत्कारी बालकों या भगतों की भगती की निशानीयां पहले ही प्रगट हो जाती हैं। उन के जीवन में कोई न कोई ऐसी घटना वापरदी है कि उन के महां-पुरख होने का लोगों को पता चल जाता है। लोग श्रद्धा रखते हैं।

ऐसी ही अनोखी चमत्कारी घटना जैदेव जी के जीवन में भी वापरी जब आप अभी साधारण बालकों की तरह ही थे। जवान हो चुके थे। पर दुनीयां के वलछल का ज्ञान नहीं था। वह हर एक की बात को सच्च मान जाते थे और आगे कोई किन्तु नहीं करते थे।

भगत जैदेव जी के नगर केंदली का एक निरंजन ब्राह्मण था। वह बहुत चालाक और झूठा आदमी था। हर एक से वह धोखा करता रहता। उस ने देखा जैदेव साधारण बालक है। वह जंदेव के नजदीक नजदीक होता गया। एक दिन बुरा सा मूंह बणा कर कहने लगा। 'जैदेव! तुम्हारे मां बाप कितने ही अच्छे थे। भले मानस, नेक और सच बोलने वाले थे। वह जिस से बचन करते वह जरूर पूरा करते। उन्हों ने मुझ से कुछ रुपए लिए थे पर वह रुपए दिए बिना ही प्रलोक को सिधार गए। उन के प्रलोक चले जाने का मुझ को अफसोस है. पर

अब मैंने सोचा है कि अगर कागज पर हस्ताक्षर कर दो तो मकान दे कर बाप का करजा उतर जायेगा। बाप का करजा देना एक लायक पुत्र के लिए ठीक है।

निरंजन ने ऐसे मीठे बचन बोले कि जयदेव उस की चालाकी को ना समझ सका। उस ने हस्ताक्षर करने के लिए हां कर दी। उसकी हां देख कर उसी समय निरंजन ने कागज निकाला जो उस ने पहले हो छिपा कर रखा हुआ था। कागज निकाल कर उस के आगे रख दिया। भगत ने हस्ताक्षर कर दिए।

निरंजन किए गए हस्ताक्षर को देख कर खुश हो गया। कागज को पकड़ कर जयदेव को शाबाश दे रहा था कि उसकी लड़की दौड़ती आई और उस ने रोते हुए कहा - 'बापू! घर को आग लग गई, घर जल गया।'

निरंजन घर की ओर दौड़ा। घर के पास गया तो सारे घर को भांबड़ से लांस और कखां, लकड़ी का घर जल रहा था। आग जोरों पर थी। वह आग बुझाने और घर का सामान बचाने के लिए आगे बढ़ा। तब जैदेव से लिखवाया कागज आग में गिर पढ़ा और सवाह हो गया उस को पता न चला।

सारा गांव इकट्ठा हो गया। निरंजन का घर जलता जा रहा था। आग बुझाए न बुझती थी। लोग देख देख कर हैरान हो रहे थे। तब जयदेव वहां पहुंच गया। उस के वहां आते ही आग बिल्कुल ठण्डी हो गई। आग बुझने पर धूंआ भी न हुआ। यह कौतक देख कर लोग बहुत हैरान हो गए।

निरंजन को ज्ञान हो गया कि यह उस के पाप कर्म का फल था जो उसने झूठ बोल कर जैदेव ब्रह्मण का पक्का घर लेना चाहा। उस की आत्मा ने उस को बहुत लाहनतें डालीं वह जयदेव जी के

www.9009.co.in

पाँव पढ़ गया। रो रो कर कहने लगा, 'भगत...भगवान भगत मुझे बख्शो ! मेरे पाप का फल मुझे बख्शो।

निरंजन इस प्रकार रोता कुरलाता रहा। जंदेव ने उस को हौंसला दिया। प्यार से यही कहा - 'भगवान जाणता है।

सारे नगर वासीयों को निरंजन की करतूत का पता चल गया। वह जंदेव जी पर श्रद्धा ले आए। सेवा करने लगे। निरंजन भी उनका सेवक हो गया।

जयदेव राज कवी

सदीयों से बंगाल रंगीलीयों का देश है। राग, नाच, कविता और भगती से छलकते दिल बंगाल में बसते हैं। वहां रागी, नाचे और कवी का बहुत सत्कार होता है। राजे भी रचना करते आए हैं। जंदेव चढ़ती जवानी में था जब वह सिआणा कवी और गीतकार बण गया उस के चेहरे पर लाली भखती थी। सुन्दर और सुडौल शरीर था। ऊपर उस ने भगवीं धोती बांध ली। भगवीं धोती से वह एक वैरागी साधू लगने लगा आपणी रचित कविता को गाता हुआ घूमने लगा। जिधर वह जाता उधर ही लोगों की भीड़ जाती।

उस समय बंगाल का राजा लछमन सैन था। उस ने जैदेव की बहुत उपमा सुणी। उस ने हुकम किया कि जहां भी वह (जे देव) हो उस को यहां लाया जाए। लछमण सैन के आदमी जैदेव को लेकर लछमण के दरबार में ले गए। राजा ने जै देव को राज कवी बणा लिया और उस का वहां बहुत सतकार किया। चाहे पहले ही उसके पास विद्वान थे। वह भी उन के साथ ही रहने लगा। पर उस ने साधू भेस का त्याग नहीं किया। वह उसी भेस में सुख से वहां पर रहता रहा। उस की शान बढ़ गई। कपड़े कीमती मिल गए पर वह भी साधू

www.9009.co.in

बिरती में फरक न आया। राज दरबार मे रहते हुए भी आप ने संस्कृत साहित में सारा वाधा किया और गीत रचे।

तीरथ यात्रा पर भगवान के दर्शन

राज दरबार में रहि कर जयदेव वैरागी हो गया। वह अब तो पक्षीयों की तरह खुले आसमान में उड़ना चाहता था। राजा के दरबार में कैदीयों की तरह रहना उस को अच्छा न लगा। एक दिन चुपचाप ही वह शहिर से बाहर चला गया, ऐसा गया कि फिर ना परता। किधर जाणा था ? यह कोई पता नहीं। हाँ वह चलता ही गया। रात भी दिन भी हृदय पर श्री कृष्ण और राधा का चित्र आंखों में वही मूर्तीयां रही। जुबान पर उन के ही नाम थे। पक्षी, पशु और पुरष सारी बनासपती श्री राधा कृष्ण उसतति में ही रुझी प्रतीत होती थी। जैदेव की आत्मा ने आवाज दी। चलो तुम जगन नाथ पुरी में चलो। वहां तुम्हारी उडीक है। वहां आसमान है। रात को निरमल आकाश के नीचे हंसते तारों को देख कर कुदरत के गुण गाता। एक दिन वह गीत गाता हुआ गर्मी में चलता ही गया। वह रास्ता था बिखड़ा और पहाड़ी पाणी दूर था। उसको प्यास लगी कोई परवाह न की। वह चलता ही गया पर्वतों की ऊंची चड़ाई और गर्मी ने उस को बौंदल कर दिया। वह गश खाकर धरती पर ही गिर पड़ा। उसी समय भगवान आया, श्री कृष्ण मुरारी। घट घट की जाणने वाला सरब विआपी गोपाल और दयाल उसी समय भगत के पास आया। भगवान ने बालक का रूप धार कर भगत को दूध की गढ़वी पिलाई। बेसुरत पड़े हुए जै देव के मूंह में दूध गया और उसे होश आई। रहता दूध गढ़वी को डीक लगा कर पी लिया। मौत से

बचाने वाले बालक की और देखा। वह बस आठ या दस साल का गवालों का लड़का ही प्रतीत होता था। उस के कपड़े तो फटे और पुराणे थे। पर उस का मुखड़ा चांद जैसा था। जैदेव को जब अच्छी तरह होश आ गई तो उस बालक ने पूछा, 'काका! तुम किस के बेटे हो ? कहां से आए हो ?

'जी! उधर देखो ना वह झोंपड़ी दिखाई देती है वहां का रहने वाला हुं। बालक ने उत्तर दिया और साथ ही उंगली से इशारा किया जैदेव उधर देखने लग पढ़ा। उसको कोई झोंपड़ी न नजर आई। वह फिर बालक से पूछने वाला था कि कौन सी झोंपड़ी की और इशारा किया है उस को बालक भी नजर न आया। वह अलोप हो गया। भगवान आप आया था आपणे सिदकी भगत को दूध पिला कर चला गया। वह दुखीयों और प्रेमीयों का आसरा है। जैदेव कुरला उठा।

'ओ प्रभू! हे गोकल रत्न दिआलू! आए और दर्शन दे कर चले गए ? उधर झोंपड़ी का इशारा कर के इधरों चले गए। 'वाह मेरे चोजी प्रीतमा मोहन मुरली मनोहर की गुण गावां तेरे। 'प्रभू! श्री कृष्ण जी को याद करते हुए भगत आगे चलने की बजाए वहीं बैठकर भगवान जस में गीत गाने लग पढ़ा। पक्षी और कुदरत उस के प्रेम-मई गीत सुणने लगे।

जै देव की पदमावती से शादी

भगत जैदेव जी पुरी पहूंच गए। उन्हों ने किसी मन्दिर में डेरे ना लगाए बलकि बाहर सड़क पर बैठ कर प्रभू के गीत भजन गाने लगे। उन का गला रसीला था। हृदय में प्यार था और आँखों आगे भगवान की तस्वीर थी। जो भी उन के भजन सुणता वह ही वहीं पर कीलिआ जाता। और बैठकर दर्शन करता और भजन सुणता। सुन्दर

www.9009.co.in

था। चेहरे पर भगती की रंगत थी।

प्रभू की ऐसी कृपा हुई कि उस को हर रोज दोनों समय कोई न कोई भोजन खिला जाता। माईयों दूध और फल चढ़ा जातीं। उनकी श्रद्धा बढ़ती गई। लोग सतकार करते गए।

एक दिन अनोखा ही खेल प्रभू ने रच दिया। पुरी के रहने वाले सुदेव ब्राह्मण को जैंदेव जी के दर्शनों की और भेजा। वह महीने बाद पुरी में आया। तो उस ने सुणा एक ब्राह्मण पुत्र अती सुन्दर बंगाल से आया है और भजन गाता है। वह भी सुणने लग पढ़ा। ऐसा आनंद आया कि कि वह बैठा रहा। जब उठा तो घर गया। घर से भोजन त्यार करवा कर ले आया और छकाया। बचन बिलास करके कहा :- आप तो ऊंची कुल के रत्न हैं। भगवान ने कृपा करके आपणी भगती की और लगा लिया।

'ऐसा क्या है ?' जंदेव जी ने उत्तर दिया। वह बहुत कम ही बोला करता था। मतलब का बचन करता। भगवान का नाम उस के तन मन में एक सार हो गया।

सुदेव ने तीन दिन दोनों समय भोजन खिलाता रहा और दर्शन करके चला जाता रहा। वह घर पहुंचा। उस को एक जवान लड़की पदमावती नजर आई। वह कन्या विवाह योग्य थी। उस रात वह सोचता रहा। इस कन्या के हाथ पीले करने हैं। विवाह के योग्य है। क्यों न इस की शादी भगत से कर दूं। सुन्दर, जवान और प्रभू भगत और क्या चाहिए। इस विचार ने रात भर उस को सोने न दिया। मन मे यही विचार आता रहा शादी कर दो जंदेव जो के साथ! सुन्दर जवान है! भगत है....इस से अच्छा और कौन हो सकता है ? सुदेव वकत न गंवाना।

उस का मन जैदेव से ही जुड़ गया। वह सुबह सुबह ही उठ कर

www.9009.co.in

गया। जैदेव जी आपणे आसण पर बैठे हुए भजन गा रहे थे। उन्होंने जा कर कहा - 'भगत जी ! बेनती है।'

'जी ! जै देव ने उनकी और देख कर पूछा।

'मेरी बेनती है कि मैं एक संकल्प कर चुका हूं। मेरी कन्या पदमावती जवान है। वह विवाह के योग्य हो गई है। धरम शास्त्र का कहना है कि अगर कन्या विवाह के योग्य हो जाए तो उसकी शादी कर देणी ठीक है।'

'आप उस की शादी कर दें, आप तो सिआणे हैं। ऐसी बातों का हमको तो ज्ञान नहीं। आप लोग अच्छी तरह जाणते हैं। यह भगत जैदेव जी का उत्तर था।

'पर मैं संकल्प कर चुका हूं कि मेरी कन्या की शादी का वर आप ही हो सकते हैं। मैं आप से उस की शादी करना चाहता हूं। आप की चरन दासी बणे।'

सुदेव के यह बचन सुण कर जैदेव जी हैरान हुए। उन्होंने सुदेव की और देखा। 'हे भगता ! मैं एक साधू हो गया हां। घर नहीं घाट नहीं। मैं शादी कर के आप की कन्या को कैसे सुखी रख सकता हूं। ऐसा ख्याल करना ठीक नहीं।'

'पर मैं संकल्प कर चुका हूं। एक ब्राह्मण का संकल्प भी टल नहीं सकता। आप को मेरी बेनती प्रवान करनी ही पड़ेगी।' यह कहि कर सुदेव घर को चला गया।

अगले दिन सुदेव वापस आ गया। उस के साथ उस की बड़ी कन्या पदमावती थी। उस जैसी सुन्दर कन्या सारी पुरी नगरी में भी नहीं थी। भोजन छका कर सुदेव ने फिर बात छेड़ दी और कन्या को कहा, 'पुत्री इन के चरणों पर प्रणाम करो!' कन्या ने ऐसा ही किया। सुदेव ने मलो मली पदमा वती का विवाह जैदेव जी से कर दिया।

www.9009.co.in

भगवान की यह इच्छा पर जयदेव जी खुद हैरान थे। 'प्रभू की कैसी लीला है।' कहि कर भजन गाने लग पड़े।

जै देव जी का आपणे गांव मुड़ना

भगत जै देव जी भगवान की लीला पर हैरान थे। पहले घर से भेजा तीरथ की और फिर तीरथ पर ग्रहिस्ती बणा दिया। सुन्दर पदमावती बख्श दी। जिस ब्राह्मण कन्या को देवते पुजारी और अमीर विवाह करने की इच्छा रखते थे, वह जैदेव जी को बिना कुछ खर्च करने के दान हो गई। सुदेव भी प्रसन्न हो गया। वह भगत जी को घर ले गया और कुछ दिनों पश्चात भगत जी के मन आया कि वह आपने नगर आ बसे।

भगत जी चल पड़े मंजलो मंजली आपणे गांव पहुंचे। उन के गांव जाने के बाद गांव वासीयों को उनके दर्शन हुए तो वह प्रसन्न हुए हैरानी इस बात की हुई कि पदमावती मिल गई। उस के बाप के घर में फिर रौनक आ गई।

भगत जी का घर निरंजन के पास था। उस ने उसी समय कहा कि मैं खाली कर देता हूं आप रहो मैं झोंपड़ी डाल कर रह लूंगा आप तो ब्रह्म रूप है।

'नहीं पण्डित जी!' भगत जी ने निरंजन को कहा, इतने बड़े मकान में मैं अकेला रहूंगा? एक तरफ आप रहें एक और मैं रहता हूं रौणक बणी रहे।

निरंजन अब पहला निरंजन नहीं था। उस का मन साफ हो चुका था। चोरी, धोखा, फरेब छोड़ कर भगवान का भजन करता था। किसी को बुरा न कहता था। गाँव वाले भी अच्छा जानते थे। वह कई बार कहा करता था कि मेरे मन में लालच आया कि पक्का

मकान लेने के लिए भगत जै देव जी के आगे झूठ बोला। भगवान सुण रहा था उस ने उसी समय मेरे घर को आग लगा दी और घर को जला दिया। नेक पुरुष से कभी धोखा न करो। भगवान सजा देता है, नुकसान होता है।'

जैदेव जी गांव रहने लग पड़े। उन की उपजीवका की चिंता तो भगवान को ही थी। पदमावती आपणे पती को देवता जाण कर उन की सेवा करने लगी और जो मिलता, वह खा लेती। वह भी अब प्रभू का नाम सिमरन करने लगी। जो कोई दर्शन करने आता वह ही भगत जी को कुछ न कुछ भेंट कर जाता भगत जी तो बस गीत-गोबिंद गाते रहते।

गीत गोबिंद की रचना

भगत जैदेव जी संस्कृत पड़े थे। वेद मन्त्र और उपनिशदों के मन्त्र महां-भारत और बालमीक की रामायण के श्लोक इतने याद थे कि वह महीना गाते रहते खत्म न होते। पर उन्होंने आप संस्कृत में गीत रचे, जो संस्कृत साहित की महान रचना है।

भगत जैदेव जी का ग्रन्थ 'गीत गोबिंद' कृष्ण भगती का महान ग्रन्थ है और इस की रचना एक महीना या साल में नही हुई बलिक कई सालों में हुई है और आपणे नगर में बिराज कर गीत गोबिंद की रचना करते रहे। पर रचना करने का आरम्भ जगन नाथ पुरी ही हुआ था। उस बारे में कहा जाता है कि एक दिन भगत जी का भगवान कृष्ण जी की याद में मन लगा हुआ था, मन तो बिंद्राबन की कुन्ज गलीयों में घूम रहा था। कुदरती उन की आंखों के आगे एक झांकी आपणे आप आ गई। एक अनोखी झांकी जिस को भगत जी कभी न भूले।

भगत जी नदी किनारे एक बड़े वृक्ष के साथ लग कर खड़े थे। उन की आंखों के साहमने श्री कृष्ण जी दूर खड़े बंसरी बजा रहे थे। दूर से राधा आपणी सखीयों के साथ नाचती हुई आईं। वह गीत गाती और नाचती नाचती श्री कृष्ण जी से मिली तो उस कौतक को देख कर जैदेव की जबान से एक श्लोक सुते सिध निकल गया। वह श्लोक गीत गोबिंद का आरम्भक चरन बणा और रचना शुरू हुई।

भगत जैदेव जी का कीरतन सुणन और दर्शन करने आए लोग हर रोज कुझ न कुझ भेटा कर जाते थे। उस से भगत जी के घर का गुजारा हो जाया करता था। अन्न बहुत था। आपकी धर्म पत्नी पदमावती भी बहुत नेक और मेहनती स्वभाव की थी। वह पती सेवा करती हुई उसी में सुख सतोख से रहती जो कुछ भी उस को खाने पीणे को मिलता खुश रहती।

भगत जैदेव जी सुबह ही बाहर को चले जाते। उन के नगर के नजदीक ही निरमल जल की नदी बहती थी। उस के किनारे बहुत ऊंचे वृक्ष थे। वह छांव में नीचे बैठ कर आप गीत गोबिंद उचारते रहते। भोजन के समय पदमावती भोजन ले जाती और खिला कर वापस आ जाती।

एक दिन पदमावती भोजन ले कर गई। आप जब श्री कृष्ण जी की उस्तति में गीत उचार रहे थे तो आप ने एक छद की रचना की। तीन चरन पर चौथा चरन न औड़िआ। उधर से पदमावती ने आकर कहा -

'स्वामी जी भोजन करने के लिए स्नान कर आओ।'

'पदमो!' भगत जी बोले, छंद की रचना की है। पर चौथा चरन पूरा नही होता। उस को पूरा करके छकदा हां।

www.9009.co.in

पदमावती - हे स्वामी जी ! आप जाकर स्नान करो ! भोजन छको, फिर बिरती लगा कर बैठोगे तो जरूर चरन पूरा हो जाएगा। इस में भगवान की कुछ ऐसी इच्छा होगी, जिस कारण नहीं औडता।

भगत जैदेव जी - 'अच्छा पदमे ! तुम्हारा बचन भी मान लेता हूं। मेरे भगवान की शायद यही इच्छा हो।

वह आसण से उठ कर नदी की और चले गए। पर तब पदमावती बहुत हैरान हुई जब वह रास्ते से वापस आए और कहते हैं 'पदमो लाओ गीत-गोबिंद पूरा करें !'

'आप रास्ते से ही वापस आ गए। ग्रन्थ पकड़ाते हुए पदमावती ने कहा -

बिनां उत्तर दिए ही जैदेव जी चरन लिखने लग पड़े और पूरा कर दिया।

जब चरन पूरा हो गया तो उन्होंने पदमावती की और देख कर कहा - 'हे पदमे ! लाओ भोजन भी कर लें, बाद में स्नान कर लेंगे। आज कुछ ऐसी इच्छा है।

पदमावती ने एक पत्तल पर भोजन परोस दिया। जैदेव जी ने प्रेम से भोजन खाया और हाथ धो कर रता परे हुए और पदमावती उन जूठे पतलों पर आप भोजन करने लगी। वह पती के जूठे पतल पर भोजन करती थी। और वह भी बाद में। अभी बुरकी नहीं थी डाली कि जैदेव जी आए और देख कर कहने लगे।

'हे पदमे ! क्या बात है आज भोजन पहले खा लिया मुझे उडीका भी नहीं। मैं स्नान करके आ रहा हूं। आज कुछ देर लग गई। शायद भगवान की यही इच्छा है।'

पदमावती ने बुरकी अभी होंठों पर भी नहीं लगाई थी। उस के

www.9009.co.in

हाथ से बुरकी गिर गई और हैरानी से देखती हुई कांपते होंठों से बोली - 'अगर आप अब नहीं आए थे तो आप का रूप धारण कर के कौण आया था आप के छंद का चौथा करन पूरा हुआ। भोजन खाया कहीं सीता की तरह मेरे साथ धोखा तो नहीं होने लगा था?'

इस के बाद पदमावती ने सारी वारता कहि सुणाई। भगत जी ने ग्रन्थ का हिस्सा ले कर उठाया। जब देखा तो यह छन्द तो बिल्कुल मुकमल हुआ।

सथल कमल गंजनं मम रिदय रंजनं जनि तर तिरंग पर
भागमु॥ भन सम्रिण करवाणि चरन द्वय सरस लस
दलकत करागमू॥ समर गरल खंडनं सम शिरसि खंडनं
देह मों पट पदम मुराटरमू॥

सारी वारता सुण कर और यह छंद पूरा हुआ देख कर भगत जंदेव जाण गया कि भगवान श्री कृष्ण जी ने उस की सहायता की है। पदमावती से भोजन खाया है। उस ने भगवान का सीत प्रशाद खा लिया। प्रसन्न हो कर उस दिन घर आ गए।

गीत गोबिन्द पुरी के मन्दिर में भेजना

भगवान श्री कृष्ण जी के दर्शन देने पर जल्दी ही गीत गोबिंद का ग्रन्थ सम्पूरन हो गया। जब ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ तो उस की एक और लिखत (नकल) त्यार की। सुन्दर कपड़े में बांध कर वह पदमावती समेत पुरी के मन्दिर में गए और एक गीत उस ने गाया। गीत सारे गाने के पश्चात वह गन्थ भगवान के चरनों में रख दिया। उस के गीत लोगों को इतने अच्छे लगे कि हर कोई याद करके गाने लगा। भगत जैं देव जी के नाम की बहुत ही चर्चा हुई।

उस समय जगन नाथ पुरी का राजा ब्राह्मण था। वह आपणे आप

को कवी और महां विद्वान मानता था। उस ने जब गीत गोबिंद की शोभा सुणी तो उस के अन्दर ईरखा की आग जल उठी। उस ने मन ही मन फैसला कर लिया कि वह गीत गोबिन्द जैसा ही एक ग्रन्थ लिखेगा और आपणे ग्रन्थ का प्रचार करवाएगा, क्योंकि उसके पास माया बहुत थी। माया आसरे मूरख भी पण्डित समझा जाता है। जगत में माया का हर जगह ही प्रताप है। 'कउन बड़ा माया वडिआई' वाली बात है जगत ते।

उस राजा को माया का मान हो गया और गीत-गोबिंद ग्रन्थ को त्यार किया। ग्रन्थ त्यार होने पर ब्राह्मणों को बुलवा कर कहने लगा कि देखो गीत ग्रन्थ की रचना की है। इस के गीतों को प्रचारो। बहुत सा धन दूंगा। पर ब्राह्मण यह पाप करना नहीं चाहते थे कि असली गीत ग्रन्थ की जगह नकली का प्रचार करन। उन्होंने राजा को उत्तर दिया - 'हे राजन ! यह नहीं हो सकता कि हम आपणे आप तुम्हारे ग्रन्थ का प्रचार करें। यह तो हो सकता है कि यह दोनों ही ग्रन्थों को श्री कृष्ण जी की हजूरी में रख देते हैं। वह जिस ग्रन्थ को प्रवान कर लेंगे उसी का प्रचार होगा। पण्डितों की इस सलाह को भी मान गया। चलो इसी प्रकार हो सही। सुबह ही दोनों ग्रन्थ मन्दिर में चढ़ाए जाएं। आपणे आप पता चल जायगा किस ग्रन्थ को भगवान चाहता है।

सारे शहिर मे यह खबर फैल गई कि राजा और श्री जै देव जी के गीत गोबिंद ग्रन्थों का मुकाबला होगा। लोग यह सुण कर प्रभू कौतक को देखने के लिए आ गए। राजा वजीरों समेत हंकार में मस्त हो गया। उस को यह माण था कि उस का गीत गोबिंद ग्रन्थ अच्छा है। दोनों ग्रन्थ श्री पुरषोतम जी की मूरती के आगे रखे गए।

सभी लोग मन्दिर से बाहर हो गए, पुजारी पण्डित ने मूरती के आगे अरदास की - 'हे भगवान्! यह दो ग्रन्थ आप के चरनों में रखे जाते हैं इन में से जिस ग्रन्थ को आप प्रवान करते हैं उस को आपणे पास रख लो और दूसरे को मन्दिर से बाहर फैंक दो। 'हे प्रभू! यह फैसला आप ही कर सकते हैं। ऐसी प्रार्थना करके मुख पुजारी भी आ गया। अन्दर सिरफ रहे ग्रन्थ और भगवान की मूरती। मन्दिर के पुजारी राजा और शहिर के साधारण लोग भी बड़ी तीव्र इच्छा से देख रहे थे कि भगवान जी किस के हक में फैसला करते हैं। और किस को मान बखशते हैं। भगवान की लीला भगवान जाने। मनुष्य क्या जाण सकता है। बाहर खड़े लोगों को ऐसे मालुम हुआ कि मन्दिर में कोई आदमी फिरता और चीजों को उलट पुलट करता है। उस हिलजुल के कुछ समय पश्चात एक ग्रन्थ पटाक करके मन्दिर की बरुहों से बाहर फरश पर आ गया। उस के पन्ने बिखर गए। एक ग्रन्थ के बाहर आ जाने पर लोगों ने खुशी में भगवान पुरषोतम के नाअरे लगाए। मुखी पुजारी ने आगे हो कर पढ़ा हुआ ग्रन्थ उठा कर देखा। उस ने पुकारा, भगवान् के भगतो! सुण लो! भगवान ने राजा के ग्रन्थ गीत गोबिंद को बाहर फैंक दिया है और जैदेव जी के ग्रन्थ को प्रवान कर लिया है। राजा के ग्रन्थ को प्रवान नहीं किया। अब जैदेव जी के ग्रन्थ के गीत गाए जाएंगे। लोग खुश हो गए पर राजा शरमिंदा हो गया।

उस को धरती विहल नहीं थी देती, लोग वहाँ भी उस को शरमिंदा करने लग पड़े। उस ने आपणा ग्रन्थ उठा लिया। वजीरों पण्डितों दूसरे जाणू लोगों से आंख बचा समुन्द्र की और चल पढ़ा। उस ने फैसला किया कि वह मर जायेगा। मरने की इच्छा से वह समुन्द्र के किनारे पर पहूंचा। समुन्द्र में वह छलांग लगाने लगा तो

www.9009.co.in

भगवान की और से बचन आया - 'हे राजन ! आतम-घात करके दूजा पाप न करो। पहला पाप तो ईरखा कारण किया है। तुम्हारे ग्रन्थ को इस लिए प्रवान नही किया गया कि लिखते समय तुम्हारी आत्मा में श्रद्धा नहीं थी। ईरखा की आग से जलते मन से तुसां यह रचना रची है। हंकार को त्यागो, मूर्खता को छोडो। जाओ कुछ श्लोक श्री जैदेव के ग्रन्थ में लिख दो। प्रवान हो जाएंगे, तेरा नाम भी अमर हो जाएगा यह ग्रन्थ पूरे का पूरा समुन्द्र की भेंटा कर दो। यह आवाज सुण कर राजा के मन को कुझ शांति आई। उस ने आपणा ग्रन्थ समुन्द्र में फेंक दिया और समुन्द्र के किनारे दौड़ कर सीधा ही मन्दिर में आ गया। मन्दिर की मूर्ती के साहमने दंडवत खड़े होकर भगवान से क्षमा मांगने लगा। आगे से ईरखा न करने की सौगन्ध खा ली। साथ यह भी प्रण कर लिया कि जैं देव जी के ग्रन्थ गीत गोबिंद में से वह यह गीत जरुर मन्दिर में आ कर पढ़ा करेगा। राजा इसी प्रकार ही करने लगा। इस बात ने जैं देव जी की शोभा को और बढ़ा दिया। राजा ने जैंदेव जी को बहुत धन दिया।

भगत जी का लुटना

जब जगन नाथ पुरी में से भगत जैंदेव जी चले तो राजा ने उन को बहुत सारा धन दिया। और बड़े सत्कार से विदा किया। लोग भी दूर तक छोड़ने आए और प्रभू के गुण गाते आए।

भगत जी पदमावती के साथ जब जंगलों से निकल रहे थे तो उन को रास्ते में खतरनाक डाकू मिल गए। उन डाकूओं ने चाहें यह देख भी लिया था कि एक ब्राह्मण आ रहा है पर उन्होंने पदमावती की सुन्दरता और रुपयों की पोटली ने डाकूओं के मन को बेईमान किया उन में से एक ने कहा कि 'हे पण्डित जी ? जो कुछ तुम्हारे पास है वह

हमारे हवाले करो। अगर उरा परा किया तो खैर नहीं।'

मैं एक ब्राह्मण हूं। भगवान पुरखोतम के दरशनों से आ रहा हूं, मेरे पास यह मोहरें और रुपये हैं - ले लो। यह धन्न आप की जरूरत शायद पूरी कर देगा।'

यह कहि कर जै देव जी ने सारा धन्न धरती पर ढेरी कर दिया जब आगे चलने लगा तो पदमावती को बाजू से पकड़ लिया और कहा, 'यह भी धन्न है यह भी नहीं जाएगी।' इस पर जै देव जी ने मिनत कीती, मगर मूरख डाकूओं ने एक न सुनी और उस को उठा कूएं में फैंक दिया। पदमावती को साथ ले कर भाग गए और जाते समय धन्न भी साथ ले गए। मगर भगवान ने अनोखा ही कौतक रचा दिया। कमजोर की दौलत और भगत की धरमात्मा पत्नी को दुखों कष्टों में डाल कर शायद प्रीक्षा लेनी चाही।

जिस तरह पूरन भगत को कुएं में उस के पिता ने गिरा दिया था, उसी तरह मूरख डाकूओं ने महान विद्यावान और ब्रह्म सरूप भगत को कुएं में फैंक दिया। कुआं उजड़ा और थोड़े पाणी वाला था। भगत न डूबा और 'राधे शाम! राधे शाम!' जोर जोर से बोलता रहा।

जब भगत इस तरह अपने भगवान को याद कर रहा था, तो उस समय एक नेक राजा लछमण सैन उधर आ निकला। उस ने आवाज सुनी तो रुक गया। उस के सेवकों ने भी सुना, आवाज आ रही थी, 'राधे शाम! हरे राम राधे शाम!' वह भी लै और मस्ती में आ कर गाने लगा।

'हे बोलने वाले! यह बताओ आप कौन हैं?' राजे ने आगे हो कर आवाज दी।

www.9009.co.in

'मेरा नाम जै देव है। मैं एक पुरुष हां। मुझे भगवान के आदमी कुएं में फैंक गए हैं। डरने वाली बात नहीं। मैं तो प्रभू का नाम ले रहा हुं। उसका जवाब आया।

उसी समय राजा ने रस्सा फंकवाया और भगतों को कहा कि वह इस रस्से की गोल गांठ बणा कर आपणे पैरों में अढ़ा लें। साथ ही रस्से को पकड लें। उस को ऊपर उठाया जाएगा। भगत ने कहा डोल के बिना नहीं आ सकता। मेरी बांहों को चोटें आई हैं।

राजा ने डोल कुएं में फंका तो भगत जी को बाहर निकाला। जब बाहर आए तो उन्होंने सारी वारता कहि सुणाई। राजा सुण कर के हैरान हुआ और भगत की टूटी बाहों को देखकर उस को बहुत दुख हुआ। वह ख्याल करता रहा कि भगत जी लिखेंगे कैसे ?

राजा लछमन सैन ने भगत जैदेव को साथ लिया आपणी राजधानी में ले आया। भगत जी को पदमावती का बहुत ख्याल था। पर धीरज यही था कि सब का रखवाला तो भगवान ही है। जो भगवान की इच्छा हैं वही हो जाता है।

राजा ने पुन दान करने के साथ एक यज्ञ किया। उस यज्ञ का यह फल मिला कि जैदेव की दोनों बांहें ठीक हो गई वह हरी जस लिखने लगा। दूसरी और यज्ञ पर आए साधू भेस में चोर भी पकड़े गए और पदमावती का पता चल गया। वह आपणे गांव केंदल थी।

उस को भी राजा ने आपणे पास बुला लिया। पदमा आपणे पती से आकर मिली।

भगत जै देव जी का अंतकाल

राजा के पास भगत जी बहुत देर रहे और हरी नाम का कीर्तन ही किया करते थे। आपका बहुत जस होता था, कथा होती भगत जी

जो बचन करते थे, वह पूरा हो जाता था। इस प्रकार काल बीत गया एक दिन जैदेव जी ने राजा से कहा - 'हे राजन! मेरी इच्छा है कि नगर की और जाऊं। अब हमें आज्ञा दो। आप प्रभू का नाम सिमरी जाओ। किसी भी प्रकार की कमी नहीं आयेगी। भगवान आप की सहायता करेगा।

चाहे राजा की इच्छा नहीं थी कि भगत जी उन से कहीं दूर चले जाएं, वह चाहते थे कि उन के पास ही रहें, राजा के मन को शांती प्राप्त हो गई थी, फिर भी भगत जी की इच्छा के विरुद्ध न चल सके। बहुत सारा दरब दे कर राजा ने सत्कार से भेजा और साथ आपणे आदमी राखी को भेजे जो भगत को केंदल पहुंचा गए।

आपणे नगर में आकर भगत जी भगवान का जस करते रहे। गंगा उन के घर से दूर बहती थी, पर भगत जी की ऐसी महिमा हुई कि हुड़ से गंगा नजदीक आ गई।

केंदल नगर में रहते हुए भगत जी की आयू बहुत वडेरी हो गई। उन का अन्तकाल आ गया। और एक दिन भोजन करते हुए ही आप जोती जोत समा गए उन का जोती जोत समाणा सुण कर पदमावती भी चलाणा कर गई। दोनों की आतमाएं स्वर्गपुरी को चली गई। जय जय कार होती रही।

उन के नगर में उन की समाधी है, गंगा किनारे और गंगा का नाम जं दई गंगा है', माघी की संग्राद को यहां पर मेला लगता है और लोग स्नान कर के मोक्ष प्राप्त करते जा रहे हैं। 'राधे श्याम' और गती - गोबिद की धुनीआं गाई जाती है - धन्न धन्न भगत जयदेव जी की ॥

४८. भगत त्रिलोचन जी

यह भगत जी भी दक्षण देश की तरफ हुए हे और भगत नामदेव जी के गुर भाई वंश जाती से थे और ज्ञान देव (ज्ञानेशर) जी के शिश थे, उन्हों से दीखिया प्राप्त की थी । दक्षण में आप की प्रसिद्धता भी भगत नामदेव जी की तरह बहुत हुई और जीवन कल्यान का उपदेश करते रहे । आप को बड़े जिगयासू भगतों में माना गया । आप बाबत भाई गुरदास जी इस तरह उचारन करते हैं :-

दरशन देखण नामदेव भलके उठ त्रिलोचन आवै ॥
भगत करन मिल दो जणे नामदेव हरि चलत सुणावै ॥
मेरी भी कर बेनती दरशन देखाँ जे तिस भावै ॥
ससके ठाकुर बोलिआ नामदेउ नो कहि समझावै ॥
हथ न आवै भेट सों तुस त्रिलोचन मुहि गल लावै ॥
हउं अधीन हां भगत दे पहुंच न हंघां भगती दावै ॥
होइ विचोला आण मिलावै ॥ (भाई गुरदास जी)

भगत नामदेव जी और त्रलोचन का आपस में बड़ा प्यार था। भगत नाम जी के पास सिरफ नाम की बरकत थी, मगर त्रलोचन के पास दौलत बेअंत थी । वह नाम सिमरन करने के साथ आए गए भगतों की सेवा करा करता था। भोजन खलाता और वस्त्र ले दया करता था । एक दिन त्रलोचन जी उठ कर नामदेव जी के दरशन करने चले गए । दोनों भगत मिले। दरशन किये, बचन

www.9009.co.in

बिलास हुए तो भगत नामदेव जी ने भगवान का जस, उन की कीरती और दर्शन देण बाबत कुझ वारतें सुणा दीं। वारताओं को सुण भगत त्रिलोचन जी के मन में आया वह भी दर्शन करें। उन्होंने नामदेव जी के आगे बेनती की कि मेरी भी इच्छा है कि मुझे भी प्रभू के दर्शन हों तो अच्छा है।

त्रिलोचन जी की जुबान से ऐसी बेनती सुण कर भगत नामदेव जी ने बचन किया कि उन को पूछ लेते है। अगर प्रभू की इच्छा हुई तो जरूर दर्शन हो जाएंगे। दर्शन देने वाले पर बात है।

भाई गुरदास जी बचन करते है कि नामदेव ने बेनती की। नामदेव जी की बेनती सुणकर भगवान हंस कर बोले, पुण्य दान करने, भेटों पर हम नहीं रीझते। तेरी भगती और प्रेम भावना पर रीझे हैं। तेरे कहने पर दर्शन दे देते हैं। जो भगवान का हुकम था, नामदेव जी को कहा सो त्रिलोचन को सुणा दिया। 'श्रद्धा भावना रख - पुन दान कर एक दिन जरूर दर्शन हो जाएंगे।

यह सुण कर त्रिलोचन जी प्रसन्न हो गए।

त्रिलोचन जी की सन्तान नहीं थी, दोनों जीव थे। सन्तों का आना जाना उनके घर बहुत था। इस लिए उन को और उनकी धरम पत्नी को रब का प्यार था और आप काम करना पड़ता था। उन्होंने सलाह की कि अगर कोई नौकर मिल जाए तो सन्तों की टहिल सेवा अच्छी हो जाया करे। बर्तन साफ न हों तो कुवेले कई बार सन्त भूखे ही चले जाते हैं। वह न जाएं। नौकर रख लेने की सलाह उन्होंने पक्की बणा ली।

एक दिन त्रिलोचन जी बाजार में जा रहे थे तो आप को वहां पर एक गरीबड़ा सा पुरुष मिल गया। उस का चेहरा अरोग था। आंखों में चमक और तेजी थी, परन्तु कपड़े बहुत फटे हुए थे उस को देखकर

त्रिलोचन जी ने झिजक कर पूछा - 'क्यों वीर! तुम मेरे पास नौकर रहणा चाहते हो?'

वह - हां जी! मैं तो नौकरी ही ढूंढ रहा था। पर मेरी शरत को कोई भी नहीं मानता। इसलिए मुझे रखता कोई नहीं। अगर शरत मानो तो नौकरी कर लूंगा।

त्रिलोचन जी - 'तुम्हारी शरत क्या है?

पुरष - 'जी शरत मेरी मामूली है। मैं रोटी और कपड़े के बदले नौकरी करता हूं। नकद रुपया कोई नहीं मांगता। पर तुम्हारे घर का कोई जी आपस में आंढ गुआंढ मेरी रोटी बदले किसी से कोई बात न करे। यह तो बिल्कुल न कहा जाए कि मैं रोटीयां कितनी खाता हूं। या थोड़ी कम जो कहोगे वही करांगा मैं सभी काम जानता हूं। रात दिन जागता भी रहा तो कोई बात नहीं। अगर आपको यह शरत मनजूर है तो चलता हूं। जिस दिन मेरे काम को नौलिया गया उस दिन मैं नौकरी छोड़ दूंगा। मैं तो एक बात जाणता हूं कि घर जाकर सलाह कर लो।

भगत त्रिलोचन जी ने उस की शरत मनजूर कर ली। यह जो टहिलूआ भगत जी के साथ चला असल में 'हरि जी' (भगवान) आप थे। नामदेव जी के कहने पर त्रिलोचन को दर्शन देने के लिए आए थे। भगवान नै आपणा नाम त्रिलोचन को अन्तरजामी बताया। अंतर्यामी घर आ गया। घर के सभी काम उस को सौंप दिए गए। पर काम सौंपने से पहले त्रिलोचन जी ने आपणी पत्नी से कहा। 'देखो जी! इस टहिलूए को एक तो मंदा शब्द नहीं कहना। दूसरा यह जितनी भी रोटी खाए उतनी ही देणी होगी चाहे तीन चार सेर अनाज खा जाए। खाना खाने से नहीं टोकना। न ही किसी को बताना अगर बताओगे तो उस को दुख होगा।

www.9009.co.in

सन्त आते जाते रहे, टहिलूआ अंतरजामी आए गए की सेवा बहुत रीझ से करता रहा। सन्त बहुत प्रसन्न होकर जाते, साथ ही कहते यह टहिलूआ तो भगत रूप है बड़ा गुरमख है। सब इस प्रकार महिमा करते ही जाते। त्रिलोचन जी की वडिआई सारे शहिर और बाहर होने लगी। इस प्रकार सेवा करते करते कई साल बीत गए। साल के बाद की बात है कि एक दिन त्रिलोचन जी की सुपतनी एक गवांढण के पास जा बैठी। स्त्री जाती का आम स्वभाव है कि वह बातें बहुत करती है। कई भेत वाली बातों को भी गुप्त नहीं रख सकतीं। कई बार एक स्त्री दूसरी स्त्री को खामखाह जिद्द कर के तंग करेगी कि वह मन की बात बताए।

इस स्वभाव के कारण त्रिलोचन की बीवी गुआंढण के पास बैठी थी तब गुआंढण ने उस को पूछा बहिन! सच्ची बात बताओ, तुम उदास क्यों रहती हो? चाहे उमर बहुत हो गई है, फिर भी चेहरे पर इतनी लाली क्यों रहती है। हंस हंस कर बातें और बचन बिलास कर रही थी। अब क्या हो गया है? अब तो तुम्हारा रंग भी हल्दी जैसा पीला हो रहा है। दुख क्या है?

त्रिलोचन की भोली स्त्री को यह पता नहीं था कि सन्तों की सेवा करने वाला उन के घर में भगवान ही है। वह तो आम मनुष्य समझती रही, आपणी और से पड़दे से उस पुरुष (अन्तर्यामी) से छुप कर उस गुआंढण से बातें करने लगी। पर वह तो अन्तर्यामी थी। वह तो घट घट की जानणहार थी, त्रिलोचन जी की पत्नी गुआंढण को कहने लगी। बहिन जी क्या बताऊं एक तो दिनो दिन बुढापा आने लगा है। दूसरा सन्तों के आने की गिणती भी तो बहुत ही बढ़ गई है। आटा पीस पीस कर पकाना पढ़ता है। वह मैं पीसती हूं। तीसरा

जो टैहलूआ ए'न !' बात करती करती वह रुक गई। उस की गवांढण ने कहा, 'रुक क्यों गई ? बताओ न आपणे दिल का हाल दुख कम होता है, कहो।'

भगत जी की पत्नी - 'बात यह है कि उन्हों ने (त्रलोचन जी) बहुत पक्की की हुई है कि किसी के पास यह बात न करनी, मगर मैं भैन समझ कर तुझे बताती हूं। आप ने आगे किसी से बात न करना जरूर पक्की करती हूं। बात यह है कि जो टैहलूआ रखा है न, पता नहीं उस का पेट है या टोआ, वह तृपत होता ही नहीं, तीन चार सेर अन तो उस के लिए चाहीए, मैं तो पकाती पकाती अक्क गई हूं। भगत जी उस को कहिते कुछ नहीं, मैं तो बहुत तंग हूं, उपर से बुढ़ापा आ रहा है। वह घर को उजाड़ी जा रहे हैं। अगर पास चार छिलड़ न रहे तो कल खावेंगे क्या ? जब नैण प्राण जवाब दे गए तो बिनां पैसे के जानती हो कोई सुरत नहीं पूछता। रात दिने सेवा सेवा पुकारते रहते हैं।'

'यह तो भगत जी (त्रिलोचन जी) भूल करते हैं ऐसे सेवक को नहीं रखना चाहीए' गवांढण ने कहा। उस को घर से निकाल देवो ? और सेवक रख लो। यह कौन सी बात है।

त्रिलोचन की पत्नी इस तरह बातें करती और रोने रोती हुई गवांढण के पास बहुत समय बैठी रही, दाल बनाने को अंधेरा हो गया, उस का ख्याल था कि टैहलूआ बना रखेगा। मगर टैहलूआ अंतरजामी था। उस ने सारी गल बात दूर बैठे ही सुन ली। उस ने जिस समय आपणी निंदा सुणी तो उसी समय आपणी भूरी उठा कर घर से निकल गया। घर सुन्ञा छोड़ गया, दरबाजे खुले थे, वह अलोप होकर आपणे असली रूप में हो गया। गवांढण के पासों उठ कर जब वह घर आई

www.9009.co.in

तो देख कर हैरान हुई कि घर बूहे खुले हैं पर टहिलूआ कोई नहीं। वह घर से बाहर नहीं जाता था। आवाजें लगाई घर के अन्दर बाहर देखा, पर कोई न दिखाई दिया। रात को त्रिलोचन जी आए उन्होंने भी आकर पूछा कि 'अन्तर्यामी कहां चला गया। पर उस को कोई तसल्ली बखश जवाब न मिला। त्रिलोचन जी जाण गए कि उस की स्त्री से जरूर कोई भूल हो गई है। अन्तर्यामी की निंदा कर बैठी होगी जिस कारण वह चला गया।

कई दिन त्रिलोचन जी उस टहिलूए को ढूंढते ही रहे। न तो वह मिला और न मिलना था। एक दिन उन को सोते हुए भाखिआ मिली 'त्रिलोचन! तेरा टहिलूआ अंतर्यामी सचमुच ही अन्तर्यामी भगवान था। तुझे दर्शन देने आया था। पर पछाण नहीं की तेरी पत्नी ने गल गवा दिती। नामदेव जी ने सिफारिश कीती।'

इस भाख्या को सुण कर नामदेव जी तड़प उठे। बहुत पछतावा लग गया। घर वाली को कहने लगे, तूंने बहुत बुरा किया टहिलूआ बण कर भगवान घर आया, पर दो सेर आटे बदले घर से निकाल दिया। यह सभ कुझ उसका ही है। उस की माया वरत रहे हैं। यह तेरा लालची और नारी मन उस प्रभू के भेत को नहीं समझ सका। खोटे भाग!'

त्रिलोचन जी की स्त्री यह सुण कर और विलाप करने लगी कि भगवान सारी उमर उन से नाराज रहा। हम दोनों को सन्तान भी न दी जो बुढापे में हमारी सहायता करती। अब जो नौकर रखा तो अब वह भी न रहा। मैं ही चन्दरी हां। विधाता ने तो मेरे ही लेख माड़े लिखे हैं। मैं तो अभागण हां। मेरा जीणा भी किस काम। प्रभू ही रूठ गया। भगवान, भगवान! ऐसे वह ऊंचा ऊंचा विरलाप करती हुई प्रभू को बुलाने लगी। 'मुझे सन्तान न बखशी - अगर संतान दी होती

www.9009.co.in

तो आज मुझ से यह भूल न होती। भगवान सभ....'

यह सब सुण कर भगत त्रिलोचन जी ने आपणी पत्नी को समझाने का यत्न किया। वह भाव उन की बाणी में इस प्रकार मिलता है, आप फुरमाते हैं :-

नाराइण निंदसि काइ भली गवारी ॥ दक्रितु सक्रितु थारो करमु री ॥१॥रहाउ॥ संकरा मसतकि बसता सुरसरी इसनान रे॥ कुल जन मधे मिलि सारग पान रे॥ करम करि कलंकु मफीटसि री ॥१। बिस्व का दीपकु स्वामी ताचे रे सुआरथी पंखी राइ गरुड़ ताचे बाधवा॥ करम करि अरुण पिंगुला री ॥२॥ अनिक पतिक हरता त्रिभवण नाथु ॥२॥ तीरथि तीरथि भ्रमता लहै न पारु री॥ करम करि कपाल मफीटसि री ॥३॥ अम्रित ससीअ धेन लछिमी कलपतर सिखरि सनागर नदी चे नाथं॥ करम करि खारु मफीटसि री ॥४॥ दाधी ले लंका, गड़ु उपाड़ी ले रावण बणु सलि बिशलि आणि तोखी ले हरी ॥ करम करि कछउटी मफीटसि री ॥५॥ पूरबलो क्रित करमु न मिटै री घर गेहणि ताचे मोहि जापीअले राम चे नामं॥ बदति त्रिलोचन राम जी ॥६॥ (धनासरी)

तिसदा प्रमारथ - हे भली लोक! ईश्वर पर दोश न लगाओ। दोश आपणे कर्मों का ही है। हम जो बुरे भले करम करते हैं उन का फल पाते हैं। चन्द्रमा शिव के माथे में है। हर रोज गंगा में स्नान करता है। उसी चन्द्रमा की कुल में श्री कृष्ण जी हुए हैं। पर चन्द्रमा ने इन्द्र की मदद की। जो कामी होकर गौतम की स्त्री को पकड़ बैठा। उस को गौतम ने श्राप दे दिया। तब से अब तक चन्द्रमा का कलंक नहीं मिट सका। सूरज की और देखो! वह दुनीयां को रोशनी देता है। दिए समान है, अरुण रथवाही है। अरुण का भाई

www.9009.co.in

गरुड़ है गरुड़ को पक्षीयों का बादशाह माना जाता है। अरुण ने बौंडे पांव तोड़ कर सीख पर भंवाया था, जिस का नतीजा यह हुआ कि अरुण पिंगला हो गया, शिव जी की तरफ देख, वह कितनों के पापों हरता है, मगर आप तीरथों पर भटकता फिरता है। सुरसती पर ब्रह्मा मोहत हो गया। शिव जी ने यह पाप समझ कर ब्रह्मा का सीस काट दिया, जिस से शिव को ब्रह्म हतया लगी। ब्रह्मा का सीस उस के हाथ की तली के साथ चिबड़ गया। इस को हाथ से उतारने के लिए शिवजी को कपाल मोचन तीरथ पर जाना पड़ा, हे भागवाने! समुन्द्र की तरफ देखो! कितना टेड़ा और गहरा है। इसी समुन्द्र से अमृत, चंद्रमा, कमला, लक्ष्मी, कपल विरक्ष, धनंतर वैद आदिक वस्तुएं निकलीं, सभी समुन्द्र से मिलती हैं, यह उन्हों का पति है। मगर देख लो कर्मों का फल खारा है। सो राम का सिमरन करो जाओ, जो भगवान करता है, ठीक करता है। आपणे कर्मों का फल है कर्मों की किरत जीव खाते हैं।

जै चंद को उपदेश

एक जै चंद सन्नयासी था, वह जात का ब्राह्मण था। वह संनयासी तो बन गया, मगर उस की मनो-बिरती ठीक न हुई। उस के पास लालच, हंकार, ईरखा और काम क्रोध की अगनी, इन बुरआईयों का अन्त न किया। वह एक दिन त्रिलोचन जी से दान लेने के लिए आ गया। भगत जी ने उस का सुधार करने के लिए उस को उपदेश करना शुरू किया। भगत जी ने बाणी राहीं फुरमाया -

अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥ हिरदै
कमलु घटि ब्रहमु न चीन्हा काहे भइआ संनिआसी ॥१॥ भरमे
भूली रे जै चंदा ॥ नही नहीं चीन्हिआ परमानंदा ॥१॥रहाउ॥

www.9009.co.in

घरि घरि खाइआ पिंडु बधाइआ खिंथा मुन्दा माइआ ॥
भूमि मसाण की भसम लगाई गुर बिनु ततु न पाइआ ॥२॥
काइ जपहु रे काइ तपहु रे काइ बिलोवहु पाणी ॥ लख
चउरासीह जिनि उपाई सो सिमरहु निरबाणी ॥ ३ ॥ काइ
कमंडलु कापड़ीआ रे अठसठि काइ फिराही ॥ बदति
त्रिलोचनु सुनु रे प्राणी कण बिनु गाहु कि पाही ॥ ४ ॥
(गूजरी)

उपरोकत शब्द का अरथ भाव इस तरह है--

हे संनयासी पुरष, आप ने संनयास तो धारन कर लिया है मगर आपणी आत्मा को निरमल करने का यतन नहीं किया। बाहरला भेख है । संनयासी तो हुआ मगर आत्मा मलीन है । इस को निरमल करने का यतन नहीं किया - भाव मोह माया वास्ना का त्याग नहीं किया। हे जैं चंद ! संनयासी हो गया मगर कमल रूप हृदे को ब्रह्म की रोशनी से चमकाइया नहीं । भरम में लगा रहा और ब्रह्म को नहीं जाना। वचन नहीं किया। यह भला किधर का सन्यासीपुणा है यह घर घर मांगता फिरता और शरीर को बढ़ा लिया पेट पाल लिया। झोली मुन्दरां सभ का आसरा माया को जाणा। धरती उठा कर मसाणों की राख मल ली। पर गुरु धारण करके ज्ञान का विचार न किया। ज्ञान ही तो जीवन है। आप का जप उसी तरह है जैसे कोई सुबह पाणी रिड़की जाए और उस में से निकले कुछ भी नहीं। पाणी रिड़कने से क्या निकलना है। अच्छा तो है उस मालक का नाम अजपा जाप करो, क्योंकि उस ने चुरासी लाख जून को उत्पन्न किया है। वह जगत का मालक है। बिनां वाहिगुरु के नाम सिमरन के ६८ तीरथों पर करमंडल पकड़कर चले फिरना भला

किधर का साधू पुणा है।

भगत त्रिलोचन जी कहते हैं - हे जै चन्द सन्यासी ! तुम्हारा तीर्थों पर फिरना इस प्रकार है जैसे कोई पुरष नाड़ को पकड़ कर दानों की आस करे। दाने तो सिटे में होते हैं। नाड़ में दाणे नहीं होते। इस लिए आप का सन्यास असल सन्यास नहीं। यह तो पाखण्ड है।

भगत जी का सच्चा उपदेश सुण कर जै चन्द सन्यासी के कपाट खुल गए। वह भगत जी के चरनों में गिर कर बोला, 'हे भगत जी ! आप सत्य बोल रहे हैं। मैं दिलों सन्यासी नहीं बणा। अब मुझे ज्ञान हो गया है। आपणी चरनी लगाओ और सीधे रास्ते डालो।'

भगत जी ने उस सन्यासी जै चन्द को भगती मार्ग की और लगाया वह दिल से सन्यासी बणा और त्यागी बण कर नाम सिमरन से आत्मा को पवित्र करने लगा।

इस प्रकार भगत त्रिलोचन जी भूले हुए जगत जीवों को उपदेश करते हरी नाम का जाप जपाते हुए, इस संसार से अलोप हो गए। उन के बचनों ने आज उन का नाम अमर रखा है। प्रभू की भगती करने वाले लोग सदा प्रभू चरनों में रहते और जगत के लिए रोशन मुनारा होते हैं।

★

भगत सूरदास जी

भगत सूरदास जी बिक्रमी सम्मत की सौलवीं सदी के अन्त में एक महान कवी हुए हैं, जिन्होंने कृष्ण भगती में दीवाना हो कर महां-कावि 'सूर सागर' की रचना की। आप एक गरीब पण्डित के पुत्र थे और सन् १५४० बिक्रमी में आप का जन्म हुआ था। ऐसे लगता है कि आप आगरे के नजदीक हुए हैं। हिन्दी साहित्य में आप का अच्छा नाम था।

आप का जन्म से असली नाम मदन मोहन था। जन्म से ही सूरदास (अन्धे) नहीं थे। जवानी तक आप की आँखें ठीक रहीं और विद्या पढ़ी विद्या के साथ साथ राग सिखिआ प्रक्रिती की और आप का गला लचकदार बणाया गया था और शरीर करके बहुत सुन्दर सरूप थे। बचपन से ही विद्या पढ़नी शुरु कर दी और चेतन बुधी करके आप को सफलता हुई। चाहे कि घर को गरीबी कोई पेश नहीं थी जाने देती।

भारत में मुस्लमानी राज आ जाने के कारण फारसी पढाई जाने लग गई थी संस्कृत और फारसी पढ़ना ही उच्च विद्या पढ़ना समझा जाता था।

मदन मोहन ने भी दोनों इलम पड़े और राग आसरे नई नई कविताएं और गीत बणा बणा कर पड़ने लगा। उस के गले की लचक रसीला बोल, जवानी आंखों की चमक हर राह जाते को मोहने लगीं वह सत्कारिआ और पिआरिआ जाणे लगा हे भगत जनो ! जब किसी पुरुष के पास गुण ज्ञान आ जाए। फिर उस को किसी बात की कमी नहीं रहती। गुण भी तो प्रभू की एक बखशश हैं, जिस पर प्रभू दिआल

हो उस को ही ऐसी बख्शिश वरदान होती है। मदन मोहन कविताएं गा कर सुनाता तो लोग प्रेम से सुणते और उस को माया, कपड़ा और उत्तम वस्तुएं भी दे देते। इस प्रकार मदन मोहन की चर्चा और जस होने लगा। दिन बीतते गए। मदन मोहन कवी के नाम से गिणा जाने लगा।

सूरदास बणना

मदन मोहन एक सुन्दर और जवान था। वह हर रोज ही सरोवर किनारे जा बैठता और गीत लिखता रहता। एक दिन ऐसा कौतक हुआ, जिस ने उस के मन को मोह लिया। वह कौतक यह था कि सरोवर के किनारे पर एक सुन्दर नार भर जवान गुलाब की पतीआं जैसा उस का तन था। पतली धोती बांध कर वह सरोवर पर कपड़े धो रही थी। उस समय मदन मोहन का ध्यान उस और चला गया। जैसे कि आंखों का काम है सुन्दर वस्तुओं को देखणा। सुन्दरत हर किसी को खींचती है।

उस त्रिआ की सुन्दरता ने मदन मोहन को ऐसा खींचा कि वह अब कविता लिखनों रुक गया और मन ब्रिती इकागर करके उसकी और देखने लगा। उसे ऐसा लगता था कि जैसे जमना किनारे राधा स्नान करके किनारे बैठी हुई वस्त्र साफ करने के बहाने मोहन मुरली वाले को उडीक रही थी वह देखता गया।

उस भागशाली रूपवती ने भी मदन मोहन की और देखा। कुछ शरमाई और उठ कर नजदीक होकर कहने लगी - आप मदन मोहन हैं? 'हाँ, में मदन मोहन कवी हुं। गीत लिखता हुं। गीत गाता हूं यहाँ गीत लिखने आया और आपकी और देखा।

'क्यों ?'

www.9009.co.in

'क्योंकि आप का रूप सुन्दर लगा। आप !'

'क्या मैं बहुत सुन्दर हुं ?'

'सोहणी, बहुत सुन्दर - राधा प्रतीत हो रही हो। जमना किनारे मान-सरोवर किनारे अपसरा - जो जीवन बखशे। मेरी आंखों की और देख सकोगे।

'हां देख रही हां !'

'क्या दिखाई दे रहा है ?'

'मुझे आपणा चेहरा आप के नैणों में दिखाई दे रहा है। मदन मोहन ने कहा। कल भी आओगी ?

'आ जाऊंगी। जरूर आ जाऊंगी। ऐसा कहि कर वह पीछे मुड़ी और सरोवर में स्नान करके घर को चली गई।

अगले दिन वह आई। मदन मोहन ने उसकी सुन्दरता पर कविता लिखी, गाई और ई। वह भी प्यार करने लग गई प्यार का सिलसला इतना बढ़ा कि बदनामी का कारन बण गया।

मदन मोहन का बाप नाराज हुआ तो वह घर से निकल गया और बाहर मन्दिर मं आया, फिर भी मन न पतीजिआ, वह चलता चलता मथरा आ गया। बिंदराबन इस तरह घूमता रहा। मन में बेचैनी रही। वह नारी सुन्दरता को न भूला।

एक दिन मदन मोहन एक मन्दिर में गया। मन्दिर में एक सुन्दर स्त्री जो ब्याही हुई थी, उस के चेहरे की पदमनी सूरत को देखकर मदन मोहन का मन मोहिआ गया। वह मन्दिर में से निकल कर घर को गई तो वह उसके पीछे पीछे चल पढ़ा। वह चलता चलता उस के घर के आगे जा खडा हुआ। जब वह अन्दर चली गई तो उसने बूहा खड़काया और उस का पती बाहर आया। उस ने मदन मोहन को

www.9009.co.in

देखा संतों वाली सूरत बोला बताओ महात्मा जी !

मदन मोहन - 'अभी जो आई है, वह आप की भी कुछ लगती होगी ।'

घर वाला - 'हां महात्मा जी ! हुकम करो क्या बात हुई ?

मदन मोहन - हुआ कुछ नहीं बात यह है कि मैं आप से एक बेनती करना चाहता हूं !

घर वाला - आओ ! अंदर आओ बैठो, सेवा बताओ, जो कहोगे वह ही किया जाएगा । सभ आप महात्मां पुरषों की तो माया है ।

मदन मोहन उस के घर चला गया । अंदर जा बैठा तो उस की पत्नी को बुलाया । वह आ कर बैठ गई तो मदन मोहन ने कहा - 'हे भगत जनो ! दो सलाईयां गरम करके ले आओ । भगवान आप का भला करेगा ।

वह जोड़ी समझ न सकी कि मामला क्या है । स्त्री सलाईयां गरम करके लै आई । मदन मोहन ने सलाईआं को पकड़ लिया और मन को कही गया, 'देख लै ! रज कर देख ले ! फिर नहीं देखना !' यह कह कर सलाईओं को आंखों में चोभ लीया और सूरदास बन गया ।

वह पति पत्नी दोनों हैरान और दुःखी हुए । उन्हों ने एक महीना घर में रख कर सेवा करी । आंखों के जखम ठीक हुए तो फिर सूरदास बन कर मदन मोहन वहां से चल पड़ा ।

★

बादशाही करोप

सूरदास गीत गाने लगा । वह इतना मशहूर हो गया कि दिली के

बादशास पास भी उस की शोभा जा पहुंची। अहिलकारों के जरीए बादशाह के दरबार में बुला लिया। उस के गीत सुन कर वह इतना खुश हुआ कि सूरदास को एक कसबे का हाकम बना दिया, मगर ईरखा करने वालों ने बादशाह के पास चुगली करके मुड़ बुला लिआ और जेहल में नजरबंद कर दिया। जेहल में सूरदास रहता था। उस ने जेहल के दरोगे को पूछा, उस का नाम क्या है तो उस ने बताया कि मेरा नाम 'तिमर' यह सुन कर सूरदास बहुत हैरान हुआ। कवी था, ख्यालों की उडारी में सोचा, 'तिमर. . . .मेरीआं अखां नहीं मेरा जीवन तिमर (अन्धेरे) में, बंदी खाना तिमर (अन्धेरा) और रखवाला भी तिमर (अन्धेरा)!' उस ने एक गीत की रचना की और उस गीत को बार बार गाने लगा।

वह गीत बादशाह ने सुना तो खुश हो कर अजाद कर दिया, मगर सूरदास दिली जेहल से निकल कर मथरा की तरफ चला गया। रास्ते में कुआं था, उस में गिरा, परंतु बच गया और मथरा बिंद्राबन पहुंच गया। वहाँ भगवान कृष्ण का जस गाने लगा।

सूर सागर की रचना

सूरदास भगवान कृष्ण की नगरी में पहुंचा। अनुभवी प्रकाश से उस की आंखों के आगे श्री कृष्ण लीला आई। उस ने स्वामी 'बलभाचारज' जी को गुरु माना और कहना मान कर 'गऊ घाट' बैठ कर श्रीमद भागवत को भाषा कविता में उचारना शुरू किया। एक आदमी लिखने वाला रखा। वह बोली जाता और लिखने वाला लिखी गया। आप ने (सूरदास ने) पच्हंतर हजार चरन लिखे थे तो आप का दिहांत हो गया। सूर-सागर आप की एक अटल याद है।

आप की बाणी का एक शब्द है--

www.9009.co.in

हरि के संग बसे हरि लोक ॥ तनु मनु अरपि सरबसु सभु
अरपिओ अनद सहज धुनि झोक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसनु
पेखिभए निरबिखई पाए है सगले थोक ॥ आन बसतु सिउ
काजु न कछूऐ सुन्दर बदन अलोक ॥ १ ॥ सिआम सुन्दर
तजि आन जु चाहत जिउ कुसटी तनि जोक ॥ सूरदास
मनु प्रभि हथि लीनो इहु परलोक ॥२॥ (सारंग)

प्रमार्थ - प्रमात्मां के भगत प्रमात्मां के साथ ही रहते है। उन्हों ने तो आपणा सभ कुछ हरी को अरपन कर दिया है । वह सदा सहिज प्यार और सदीवी खुशी मानते रहते हैं। भगवान के दर्शनों ने उन्हों को ऐसा संजम वाला बना दिया है कि उन्हों ने इन्द्रीयों पर काबू पा लिया हैं, जिस का फल यह हुआ कि भगवान ने उन्हों को सभी पदारथ दिये हैं। जिस समय प्रभू का खेड़े वाला मुखड़ा देखते हैं तो किसी के दीदार की जरूरत नहीं रहती। प्रमात्मा को छोड़ कर लोग और किसी तरफ भागे फिरते हैं, वह आपणे तन मन को नाश करते हैं। सूरदास जी कहिते हैं मैं तो उन का हूं और वह मेरे हैं । भगत प्रभू के होते हैं ।

★

५०. भगत परमा नंद जी

तैं नर किआ पुरानु सुनि कीना ॥ अनपावनी भगति नही
उपजी भूखै दानु न दीना ॥१॥ रहाउ ॥ कामु न बिसरिओ
क्रोधु न बिसरिओ लोभु न छूटिओ देवा॥ परनिंदा मुख ते
नही छूटी निफल भई सेवा ॥ १ ॥ बाट पारि घरु मूसि

www.9009.co.in

बिरानो पेटु भरै अप्राधी ॥ जिहि परलोक जाइ अप
कीरति सोई अबिदिआ साधी ॥२॥ हिंसा तउ मन ते
नही छूटी जीअ दइआ नही पाली ॥ परमानंद साध
संगति मिलि कथा पुनीत न चाली ॥३॥१॥६॥ (सारंग)

भाव - हे मनुख ! पुराणों (इतिहास) की कथा सुण कर तुमने क्या किया। यह कथा कहनीयां सुणीआं नासवंत भगती है। अमर और सच्ची भगती तो तुझ में आई नहीं। फड़ां मारता रहा पर किसी भूखे को कमाई में से दान तो कभी किया नहीं। लिंग वासना, क्रोध, लोभ और पराई निंदा तो छोड़ी नहीं यही तो बड़ी बिमारीयां हैं। सो जो थोड़ी बहुत भगती तुमने की भी वह भी व्यर्थ ही गई है। हे पुरष ! तं राह मारता रहा, सन्नें लगाई, जिंदरे तोड़े, इन कामों ने प्रलोक में तेरी निंदा और निरादरी करवाई। यह सभी तेरे करम मूरखों वाले हैं। शिकार खेलना भी नहीं छोड़ा। जीव हत्या भी करता रहा। कभी पक्षीयों पर भी दया नहीं की। परमानंद जी कहते हैं कि सतसंगति में जा कर हरी जस नहीं सुणा, तो बताओ तेरा कल्याण किस तरह होगा ?

आप बड़े ही अतीत, ज्ञानी, हरि भगत और कवि हुए हैं। आप ने बहुत सारा समय बिंद्राबन में गुजारा। आप बम्बई की और के रहने वाले थे। गांव बारसी जिला शोलापुर में आप का जन्म हुआ था। आप का समय १६०६ बिक्रमी के आस पास का है जब भगती लहिर जोरों पर चल रही थी। श्री गुरु नानक देव जी, कबीर, रामानंद, नामदेव जी आदिक भगत हरि जस का प्रचार कर रहे थे। इन के लिखे यह ग्रन्थ मिलते हैं :- परमानंद सागर, परमादास पद, दान लीला और धरूअ चरित्र।

५१. भगत बेणी जी

भगतों की दुनियां निराली है। प्रभू भक्ति करने वालों की गिणती नहीं हो सकती। इस जगत में अनेकों महां पुरष पैदा हुए हैं, जिन्हों ने प्रभू नाम के सहारे जीवन व्यतीत किया और वह इस जगत में अमर हो गए, जद कि और लोग जो मायाधारी थे, मारे गए और उन्हों का बना भी कुछ न। ऐसे पुरषों में भगत बेणी जी भी हुए हैं। आप का अस्ली नाम ब्रह्म भाट बेणी था। आप का जन्म सम्वत १६७० बिक्रमी में 'असनी' गांव में हुआ। जाती के ब्राह्मण थे, मगर गरीब इतने कि जीवन से उदास हो गए थे। रात दिन यही सोचते रहते थे कि मानव जीवन का अत कर लेंण, अगले जीवन का क्या पता कैसा होए। हो सकता है कि अगर यह जन्म दुखी है तो अगले जन्म में सुखी हो जाएंगे। ऐसी ही दलीलें करा करते थे, क्योंकि भुखे बच्चों का रोना चिलाना न देखा जाता। हर रोज पत्नी झगड़ा करती। वह ऐसे नाय-घाटे के दुखों से तंग आ गया और वह हर रोज मन ही मन में कलेश करने लगा।

वह उदास चित हो कर घर से चल पड़ा। अचानक रास्ते में एक महां पुरष मिल गया। उस के साथ बचन बिलास हुए तो उस ने पूछा, 'हे बेणी ! किधर चले हो ?'

बेणी - महाराज क्या बताओं घर में गरीबी बहुत है, इस नंग भुख की दशा ने दुखी किया है। समझ नहीं आती क्या करूं - यही दिल में आता है कि मर ही जाउं। पत्नी और बच्चे भूख के साथ मर जाएंगे। ऐसा सोच कर बाहर चला हूं।

महां पुरष - मरने से दुख दूर नहीं होते। आतमघात करेंगा तो आत्मा दुखी होगी, नरकों का भागी बनेगा। मिहनत कर, जे कर

www.9009.co.in

होर मिहनत नहीं करनी तो प्रभू भगती की ही मिहनत करया कर। जो भगती करता है, प्रमात्मा उस की सभी कामनाएं पूरीयां करता है। जीवों की चिंता प्रमात्मा को है । करम गती है, करमों का फल भोगना पड़ता है। किसी जन्म में ऐसा करम हुआ है, जो यह दुखों के दिन देखने पड़े हूं । अब तो प्रभू की भक्ति करो तां जरूर ही भला होगा।

उस महां पुरष का उपदेश बेणी को बहुत अच्छा लगा। मन पर असर हुआ तो जंगल की तरफ चला गया। वह जा कर प्रभू की भक्ति करने लगा। इस तरह कुछ दिन बतीत हो गए, भाई गुरदास जी ने यह शब्द उचारा है--

गुरमुखि बेणी भगति करि जाइ इकांत बहै लिव लावै ॥
करम करै अधिआतमी होरतु किसे न अलख लखावै ॥ घरि
आइआ तां पुछीऐ राज दुआरि गइआ आलावै ॥ घरि सभ
वथू मंगीअनि वलु छलु करिकै झटलंघावै॥ वडा सांग वरतदा
उहु इह मन परमेसर धिआवै ॥ पैंज सवारे भगत दी राजा
होइ कै घरि चलि आवै ॥ देइ दिलासा तुसि कै अणगणती
खरची पहुचावै ॥ ओथहु आइआ भगत पासि होइ दइआल
हेतु उपजावै ॥ भगत जना जैकार करावै ॥ (भाई गुरदास जी)

तिस का प्रमारथ इस तरह है - महां पुरष के कहे अनुसार बेणी बाहर इकांत में समाधी लगा कर भगती करने के लिए मन इकागर कर लैंदा मगर भगती को गुपत रखने लग पड़ा। किसी को उस ने नहीं बताया था, जब वह घर आता तो पत्नी पूछती कहां से आए हो ?'

राज दरबार में कथा करता हूं । जब कथा खत्म होगी भोग पड़ेगा तो जरूर ही राजा दक्षणा देवेगा । वह धन्न पदारथ बहुत

www.9009.co.in

होगा जरूरतें पूरी हो जाएंगी।

यह सुन कर बेणी जी की पत्नी क्रोध के साथ वस्त्रों से बाहर हो गई। उस ने कहा - 'चूले में पड़े तुम्हारा राजा ! कथा का क्या पता कब भोग पवेगा। आप मुझे राशन ला कर देना, नहीं तो आज घर न आना।

आपणी पत्नी के इस तरह के कड़वे वचन सुन कर बेणी चुप चाप जंगल को चला गया। भक्ति में जा लगा। ऐसी सुरती प्रभू के साथ जुड़ी कि सभ कुछ भूल गया। पत्नी का रोना याद न आया। भुख नंग और आपणी भूख याद न रही। प्रमात्मा को करी गया।

उधर अन्तरजामी प्रभू ने सच ही भगत की भगती सुन ली। आपणे सेवक की इज्जत रखने के लिए आपणे नाम की महिमा प्रगट करने के लिए उन्हों ने राजे का रूप धारन किया और राशन के गडे भरे। धन्न लादा और जा कर बेणी की पत्नी को पूछा - 'ब्रह्म भट बेणी का घर यही है ?

बेणी की पत्नी - जी यही है। मालूम नहीं किधर गया है ?

प्रमात्मा ने राजे के अहलकार के रूप में कहा, 'वह राज दरबार में कथा करते हैं। राशन भेजा है। अन्न है, वस्त्र, मीठा, घी सम्भाल लो। कथा पूरी होने पर बहुत कुछ मिलेगा।

बेणी की पत्नी को लाज आई कि वह झूठ नहीं कहिते थे, सच्च ही राजे के दरबार में जाते थे, ऐवें ही गुसे किया। उस ने सारा समान रख लिया और खुश हो कर बेणी जी को याद करने लगी, यह भी आख दिया, 'जी ! सुबह कुछ खफा हो कर गए थे। उन्हों को जल्दी घर भेज देना।

प्रभू यह लीला देख कर प्रसन्न हो गए और सीधे बेणी जी के पास

www.9009.co.in

पहूंच उन को जा कर सुरत में लाए और कहा - होश करो तुम्हारी भगती प्रवान ! जाओ तुम्हारी सभी जरूरतें पूरी हुई। किसी बात की कमी नहीं रह गई। बेणी जी ने दर्शन किए। बचन सुणे पर जब वह आगे बढ़ कर नमस्कार करने लगा तो प्रभू जी आपणी माया शक्ति से अलोप हो गए।

सारा कौतक देख कर भगत बेणी भगती करने से उठा और खुशी से गदगद हो कर घर की ओर दौड़ने लगा। जब वह घर आया तो उस की पत्नी उस को खुश हो कर मिली। चरनीं हाथ लगाया। 'मुझे क्षमा करना महाराज ! मैं तो भूल गई भूख ने तंग किया था। अयोग बातें मूंह से निकल गई। मुझ को क्षमा कर दो। आप तो सभ जाणी जाण हो। राजा का आदमी सब कुझ दे गया। अब किसी बात की कमी नहीं। प्रभू ने बात सुण ली।

बेणी यह सुण कर प्रसन्न हो गया कि यह सभ कुझ प्रभू भगती का फल है, जो माया आई और साथ ही घर की माया (स्त्री) भी खुश हो गई।

बेणी जी ने भगती किए जाने का मन बणा लिया और उघिआ भगत बणा। उन की बाणी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में भी है। आपकी बाणी का शब्द सुणो :-

तनि चंदनु मसतकि पाती ॥ रिद अंतरि कर तल काती ॥
ठग दिसटि बगा लिवलागा ॥ देखि बैसनो प्रान मुख भागा ॥१॥
कलि भगवत बंद चिरांमं ॥ क्रूर द्रिसटि रता निस बादं ॥
१॥रहाउ॥ नितप्रति इसनानु सरीरं ॥ दुइ धोती करम मुखि
खीरं ॥ रिदै छुरी संधिआनी ॥पर दरबु हिरन की बानी ॥२॥
नाचसि चितु अकरमं ॥ ऐ लंपटि नाच अधरमं ॥३॥

आसणु तुलसी माला ॥ कर ऊजल तिलकु कपाला ॥ रिदै कूड़ु कंठि रुद्राखं ॥४॥ रे लंपट क्रिसनु अभाखं ॥ जिनि आतम ततु न चीन्हिआ ॥ सभ फोकट धरम अबीनिआ ॥ कहु बेणी गुरमुखि धिआवै ॥ बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥५॥१॥

(प्रभाती)

तिसदा प्रमारथ - उपदेश देते हैं, पण्डित को कहते हैं कि 'हे पंडित जरा सुणो। तुम्हारे हृदय में प्रभू भगती भी है।....तभी तो ब्राह्मण भूखे मरते हैं। भगती नहीं करते। पाखण्ड करते हैं। आप फुरमाते हैं हे पण्डित तन को चन्दन से और माथे को चन्दन के पत्ते लगा कर सीतल रखते हो पर कभी सोचा है कि तुम्हारे हृदय में तो छुरी है। भाव खोट है। हर एक से धोखा करने पर तुले और बगले की तरह ठगी की समाधी लगा कर बैठता है कि कोई शक न करे जब दाअ लगे, तब सब कुझ खा पी जाए। ऊपर से तो विष्णु ही दिखाई देता है। जैसे जान नहीं होती और रात को सुरत कुत्ते की तरह हो जाती है। पाप करम की ओर दौड़े फिरते हुए काम क्रोध की और जाता है। स्त्री का गुलाम बणता है। चोरी करता है खाता है दो धोतीयां रखता स्नान करता है, जबान से मीठे बोल बोलता है। आपणे मन में बेईमानी, पराया धन्न लूटने और उठाने की आदत है। आपका जीवन कैसा है ?

वाह रे पण्डित! द्वारका, कांशी आदि जा कर तन पर कष्ट उठाऊंदा, पत्थर की पूजा करता हुआ पत्थर रूप ही बण गया है पर लाभ कुछ नहीं। लोगों से माया लेने और ठगी करने के लिए नाचता है, गाता है और कई प्रकार की लीला करता है। वाह तेरे पाखण्ड कभी मृगशाला बिछा कर बैठ गया, कभी तुलसी की माला, चंदन का तिलक, जबान से जाप, पर कभी यह नहीं सोचा कि हृदय

www.9009.co.in

किधर को दौड़ता है। ख्याल तो नारी भोग की और दोड़ते हैं। हे पण्डित। यह पाखण्ड हैं। ज्ञान की जरूरत है। जरुरत है प्रभू को शुद्ध हृदय से याद किया जाए। मन की वासना रोकी जाए तो प्रभू प्रमात्मा से मेल होता है।

ऐसा उपदेश देने लग गए। प्रमात्मा ने ऐसा भाग लगाया कि उन के घर में किसी चीज को कोई कमी न रही। वह भजन बंदगी करते रहे। आज उन के नगर असनी में उन की याद मनाई जाती है। प्रभू को जो याद करते हैं, लोग उन को याद करते हैं। ऐसी नाम की महिमा है। हे जिज्ञासू जनो! भगती करो। नाम का सिमरन करो तांकि कलयुग में कल्याण होगा।

★

५२. भगत भीखण जी

बलिहारे जाईऐ शहीदों के सिरताज, ब्रह्म गिआनी आप प्रमेश्वर सतिगुरू अरजन देव जी के, जिन्होंने हर एक महां पुरखों और प्रमेशर भगत का सत्कार किया। हिन्दू मुसलमान के सतिकार से उन का भी सतिकार किया। जिन को ब्राह्मण समाज नीचा समझता था। मानव की जात का सतिकार किया।

भीखण जी मुसलमान फकीर थे। आप का सम्बन्ध सूफीआ से था। वह मशहूर फकीर सयद पीर इब्राम के चेले थे। आप का जन्म गांव काकोरी जिला लखनऊ में १५वीं बिक्रमी के पिछलेरे अध में हुआ और एक महान फकीर या तपस्वी भगत हुए हैं।

जब सतिगुरु जी गुरू ग्रन्थ साहिब जी रचना कर रहे थे तब भगत भीखण जी की बाणी भी प्राप्त हुई। दो शब्द श्री गुरू ग्रंथ साहिब में लिखवाए। बाणी बहुत वैराग वाली और कल्याण मारग

www.9009.co.in

तरफ लाने वाली है। नीचे आप का एक शब्द दिया जाता है, ताकि जिज्ञयासू जन लाभ उठाएं।

भीखन जी का दिहांत १६३१ बि: में हुआ माना जाता है। आप का शब्द सर्वन करो।

नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥ रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥ १ ॥ राम राइ होहि बैद बनवारी ॥ अपने संतह लेहु उबारी ॥१॥ रहाउ ॥ माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही ॥ ऐसी बेदन उपजि खरी भई वा का अउखधु नाही ॥ २ ॥ हरि का नामु अमृत जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा ॥ गुर परसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुआरा ॥ ३ ॥ १ ॥

मनुष के सरीरक तीन जन्म होते हैं – बचपन, कशोर उमर और बुढापा। जीवन पहली दोनों उमरों में नेकी की तरथ नहीं दौड़ता, सगों बदी की तरफ मलो-मली भागता है। मगर जब बुढेपे के दिन आते हैं तो पछतावा करता है। भगत जी इस शब्द में बुढेपे का लछण और जीवन का पछतावा बयान करते हैं। आप फुरमाते हैं बुढेपा आया, आंखों से पानी बहता है, शरीर कमजोर हो गया और वाल दूध जैसे सफेद हो गए हैं। बुढेपे की ऐसी सूरत बण गई है। बोलण लगता हूं तो गले में बलगम आ जाती है। बोल नहीं होता उस समय प्रभू का नाम लेना चाहता है। मगर बताओ इस दशा में क्या करे? बस! बेनती करने जोगा ही रैह जाता है। वह कहिता है - 'हे प्रभू! आप ही वैद बणो। मेरा रोग दूर करो। आपणी शक्ति के साथ मेरा उधार करो, मुझ से तो कुछ नहीं हो सकता। मथे में दरद है शरीर में कांबा आ गया, हृदे में दरद है।'

www.9009.co.in

भगत जी आप उत्तर देते हैं - ऐसे रोगों की दवाई दुनिया से नहीं मिलती। इलाज है - हरी नाम ! प्रभू का नाम सिमरना परंतु गुरु की कृपा से ही मन भगती की तरफ लगता है। और किसी तरह नहीं लगता। जब गुरु की कृपा से मन भजन की तरफ लग जाए तो आप ही मोख प्राप्त हो जाती है।

बात की कि बुढापे के समय तो भगती पछतावा ही रैह जाता है-- असल में भगती करने का समय तो सदा ही है। बचपन से भगती की तरफ वधना चाहीए। भगती ही ऊंचा करती है।

★

५३. बाबा शेख फरीद जी

देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर॥
अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूरि॥ ६॥

(सलोक फरीद)

बाबा शेख फरीद जी का जन्म

जिला मुलतान में 'पाक पटन' एक धारमिक अस्थान है, बाबा फरीद जी की गदी है। उन की गदी पर बैठने वाले को 'फरीद' ही कहा जाता है। सतिगुरु नानक देव जी के समय बाबा फरीद ब्रह्म था। मगर जिस फरीद जी की कथा करने लगे हैं उन का पूरा नाम शेख फरीद मसऊद शकर गंज था। आप के पिता मशहूर सूफी थे और नाम था शेख जमान सुलेमान और माता का नाम अरीअम था।

फरीद जी के वडे वडेरे सुलतान महिमूद गजनवी के साथ सम्बंध रखते थे। इस तरह कहिए कि आप का पिता सुलतान महिमूद गजनवी

www.9009.co.in

का भतीजा लगता था। सुलेमान गजनवी से चलकर हिंद में आ गया था। यह पहले लाहौर आ कर बैठा। वहाँ सूफी मत का प्रचार करके हिन्दु फकीरों को मुसलमान फकीर बणाया। सूफी फकीरों का जीवन ऊंचा होने के कारण इसलाम का प्रचार होने लगा।

सुलेमान का फकीरी दायरा कायम हो गया। आप लाहौर से उठ कर जंगली इलाके मलक की और चले गए और अन्त उन्होंने पाक पटन में आपणा स्थान कायम कर लिया। वहां ही बाबा फरीद शकर गंज ने जन्म लिया। आप का समय सतिगुरू नानक देव जी के समय से पांच सौ साल पहले का ख्याल किया जाता हैं। आप ऐसे भगती वाले पुरुष हुए हैं कि आप की महिमा बहुत हुई। आप जी के जीवन की बहुत साखीयां हैं। कुछ न कुछ गुरमुखों के लाभ हित लिखी जाती हैं। क्योंकि आप की बाणी ज्यादा गुरु ग्रन्थ साहिब में दरज की गई। आप की बाणी बड़े सतिकार से पड़ी जाती है और वैरागमई है।

बाबा फरीद शकरगंज का जन्म सम्वत् ११७२ ई. में गांव खोतवाल जिला मुलतान में हूआ। जब भारत पर पछम की और से अरब के लोग हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर के आते थे तो भोली भाली जनता को लूट कर चले जाते या राज करते थे। इस्लाम भारत में पैर टिकाने लग पढ़ा था। भगती लहिर का आरम्भ हो रहा था।

बाबा फरीद जी की माता बडी पक्की धर्मात्मा इस्लामी तालीम की जाणू और सुच्चे हृदय वाली और ईमानदार थी। उस की सिख्या का असर फरीद जी पर बचपन में ही बहुत पढ़ा। आप बारह साल से पहले ही कुरान मजीद पढ़ गए कहते हैं कि जबानी रट लिया और धारमिक परपक्क हो गए।

एक दिन बाबा फरीद जी की माता ने तपस्या बाबत बताया तो

www.9009.co.in

आप ने सलाह बणा ली कि जवान हो कर वह घोर तपस्या करेंगे। जवान हुए, होश सभाली तो घर से तपस्या करने के लिए चल पड़े।

पहली घोर तपस्या

पाकपटन के चौगिरदे उस काल में भारी जंगल हुआ करता था। इस इलाके को नीली बार कहा जाता था। बार के जंगल में वण, करीर, किकर टाहली आदिक बहुत वृक्ष होते थे। किशोर उमर में ही शकरगंज जी ने यह फैसला कर लिया कि वह घोर तपस्या करेंगे और इस ख्याल के परेरे हुए घर से निकल गए। बारह साल जंगल में काटे। बाल बढ़ गए तो जुड़ गए। प्रभू का सिमरन करते रहते। गरमी और सर्दी में रहि वण की पीलू करीरां के डोले, थोहर का पक्का फल आदि खा लेते। कई बार दरखतों के पत्ते भी खा लेते। इस प्रकार तपस्या करते को बारह साल हो गए तो सोचा कि हो सकता है बारह साल बाद भगती पूरी हो गई हो। बारह साल का छिला कमा लिया।

बाबा शकर गंज घर को चल पढ़ा। वह चलने लगा, रास्ते में चिड़ीयां आई। उन की और खड़े हो कर देखने लग गए। मन में हंकार आया। हउमै था, भक्ति की परख का ध्यान आ गया। जो आना नहीं चाहिए था। उन्होंने चिढ़ीयों से कहा, 'मर जाओ! सचमुच चिढ़ीयां मर गई। 'उड जाओ।' सचमुच ही वह उड़ गई। खुश हो गया और जाण गया कि भक्ति पूरी हो गई। तपस्या से रिधीआं सिधीआं मिल गई। अब क्या फिक्र। अच्छा हो गया।

हउमै का सिर नीचा

बाबा शकरगंज फरीद जी जंगल में से निकल कर एक गांव

www.9009.co.in

पास आए। प्यास लगी थी, प्यास कम करने के लिए कुएं की ओर हुए कुएं पर एक स्त्री पाणी निकालती थी, पर पाणी का डोल निकालकर उलटा देती थी। बाबा फरीद ने आगे होकर उस को कहा, बीबी मुझे पाणी पिलाओ। मैं फकीर दूर से आया हूं।'

पर उस ने एक ना सुणी। वह पाणी के डोल निकालती और फंक देती। फरीद जी देखते रहे। अखीर वह क्रोधित होकर बोले, मैं कब से बोल रहा हुं। पाणी फंकती जा रही हो मुझे पिलाओ। जमीन पर पाणी फंकने से तुम्हें क्या लाभ ?

जरा ठहरो, अभी पाणी पिलाती हूं। मेरी बहिन का घर जल रहा है, आग बुझा रही हूं। उस स्त्री ने उसको उत्तर दिया और वह पाणी फंकती गई।

यह सुण कर बाबा फरीद जी बहुत हैरान हुए। उन को पाणी पीने ख्याल हट गया, उन को बस मकान जलने का ख्याल आ गया। पूछने ही वाला था कि स्त्री ने कहा - मेरी बहिन का घर यहां से बीस कोह पर है!' आग बुझ रही है। जरा ठहिर जाओ। काहले पैणा ठीक नहीं है। यहां चिड़यां नहीं जिनको कहोगे, कि 'मर जाओ' वह मर जाएंगी और कहोगे उड जाओ तो उड़ जाएंगी। यहां पर यह नहीं।

यह सुण कर बाबा फरीद जी की प्यास बिल्कुल ही मिट गई। वह हैरान हुए और पूछा मुझे चाहे पाणी न पिलाओ पर बताओ यह शक्ति जाणने और आग बुझाने की कहां से प्राप्त की ?

उस स्त्री ने पाणी फंकना बंद कर दिया। और बाबा जी को सम्बोधन करते हुए कहने लगी, सेवा और पती प्रेम करती हुं। यही मेरी तपस्या है। हउमै नहीं करना, भला आप ने तो परख कीती,

प्रभू की परख - मन में शक किया । ऐसा हरगिज नहीं करना चाहीए था ।'

उस ने बाबा जी को पानी पिलाया और फरीद जी का ध्यान पासे हुआ तो क्या देखते हैं कि वह कुआं खाली है । न डोल, न भौणी और न वह औरत । अकेले बाबा फरीद जी खड़े थे । हैरान हुए और समझे यह सभी खेड प्रमात्मा ने रची है उन की हउमै को दूर करने के लिए यह सभ माया जाल था । आंखें नीचे करके आपणे नगर पाक पटन को आ गए । जब घर आए तो मां मिली प्यार दिया बिठाया और आदर दिया ।

मां ने देखा पुतर के वाल जुड़े हैं । मां को तरस आया, वह वाल सवारने लगी तो फरीद जी ने पीड़ मनाई । उस समय मां की जबानों सहजि सुभा निकल गया - 'पुत्र ! जिन वरक्षों के पते तोड़ तोड़ कर रिहा ऐ, उन को पीड़ नहीं होती थी ? वाल जुड़े हैं तो पीड़ होती है । इसी तरह दूसरों को दुख दईए तो पीड़ होती है । अच्छा तो है किसी को न देणा । इस तों शिक्षा लेनी चाहिए बेटा ! जैसा रूह और शरीर आपणा है, वैसा ही दिल और शरीर दूसरों का समझो । दरद-पीड़ होती है, पक्षी, पशू, मनुष और वनासपति सभ में जान है । बेटा ! सभी खुदा के बनाए हैं ।

मां की बातें सुन सुन कर बाबा फरीद जी को कुएं वाली घटना भी याद आ गई । और उस को ज्ञान होया कि उस ने अभी भगती नहीं कीती । जो कीती सी वह चिड़ियों की परख करके गवा लई । अच्छा है फिर भगती करां । इसी विचार में वह कई दिन घूमता रहा और उदास चित रहा । पछतावा करता रहा ।

दूसरी बार तपस्या धारण करनी

फरीदा रोटी मेरी काठ दी लावणु मेरी भुख ॥
जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख ॥ २८ ॥

बाबा फरीद जी ने दूसरी बार फिर घर छोड़ दिया। आप जंगलों को चले गए और घोर तपस्या करने लगे। खाणा छोड़ दिया और वह वण की पीलू या कोई फल मूंह पाऊंदे। वह भी धरती पर गिरा हुआ। किसी वृक्ष से पत्ता भी न तोड़ते। उन को ज्ञान हुआ था। निरमाणता ही रब को भाती है। इस प्रकार कई साल बीत गए और उन का शरीर कमजोर होने लगा। धीरे धीरे हालत माड़ी हो गई। रब्ब के दर्शन की मन में इच्छा थी। पर रब्ब के दीदार नहीं होते थे। उस समय की सखीरक मानसिक अवस्था को बाबा जी ने आप भी बिआन किया है :-

सलोक :- कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥
ऐ दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥९१॥

भाव यह कि शरीर इतना सूख गया था कि बस करंग ही नजर आने लगा। जब आप लेटते तो मास खोरें जानवर और पक्षी ऐसे प्रतीत करतै जैसे आप जान हीन हैं। आप उन को कहते, मांस तो रब्ब का प्यार ही खा गया। पर भागों की बात अभी दीदारे नहीं हुए। प्रमेशर नहीं बहुड़िया। ऐसी विधाता की बिध है। कई साल बीत गए हैं।

इस प्रकार अनेकों साल भगती करते रहे और फिर पाक पटन आ गए। प्रभू के दर्शन भी एक दो बार हुए। मन को तसल्ली तो हुई पर पूरनता प्राप्त न हुई। निरमाणता, निरवैरता, निरभयता गईयां, नया शौक उत्पन्न हुआ कि मुरशद के बिना मन को तसल्ली

www.9009.co.in

नहीं हो सकती। मुरशद (गुरू) धारण करना चाहिए।

मुरशद का धारण करना

आज से सौ साल पहले और दस हजार साल पहले-लख साल पहले मुरशद अथवा गुरु की जरूरत रही है। पंजाब में तो मुहावरा है, गुरु बिनां गत नहीं। आज भी गुरु या उस्ताद धारना पढ़ता है तब ही किसी के गुण की समझ पढ़ती है। आतमक जगत में कल्याण प्राप्ति के लिए तो गुरु धारण करना जरुरी है। सिख धरम में दस गुरू हैं और गुरबाणी गुरु है। भाव गुरु ग्रन्थ साहिब की बाणी सुणनी, पढ़नी उस पर अमल करना और उसके आगे सिर झुकाना। गुरु देह-धारी होता था। आज सिख धरम में देह धारी गुरु की मनौत कोई नहीं है।

बाबा फरीद जी मुरशद ढूंढने के लिए बार में से चल पड़े और अजमेर पहुंचे। उस समय अजमेर में सूफी फकीर बड़े करनीं वाले थे। उन का नाम चिसती साहिब था।

आप अजमेर हजरत चिशती साहिब के डेरे पहूंच गए और उन को मुरशद मान कर सेवा करने लगे। सेवा और श्रद्धा ही भगती का बड़ा गुण है। यह ही करम जाणो। हे जिज्ञासू जनो ? जिन्हों ने सेवा नहीं की, किसी पर श्रद्धा नहीं रखी, वह समझो कुछ प्राप्त नहीं कर सकते। प्राप्ति के लिए सेवा और श्रद्धा ही दो गुण हैं। आप डट कर सेवा करते रहे।

सर्दी के दिन थे। सेवा यह मिली थी कि गरम पाणी कर के दो बार मुरशद को स्नान करवाना। आप ही आग जलानी और आप ही पाणी गरम करना। देवनेत से ऐसा सबब बण गया कि सारा दिन बारिश होती रही। बारिश भी ऐसी कि परलो की निआई थी। राखवीं आग के धूएं सभी बुझ गऐ। फरीद जी को फिकर लगा कि वह

सुबह आग कहा से लोगे। उस समय डबीयां नहीं होती थीं। आग सम्भाल कर रखणी पढ़ती थी।

बाबा फरीद जी डेरे से चले। वर्षा हो रही थी और बाजार में चिकड़ था। उन्होंने वर्षा और चिकड़ की कोई परवाह ना की। बुकल में टिंड ले कर कम्बल की बुकल मार कर चल पड़े। आग कहीं नजर न आई। बाजार में देखा कि वेशया की बैठक में आग जल रहीं थी। बाबा फरीद जी निरभंता से अन्दर दाखल हुए।

वासना और कुकरमों की आग से जली हुई वेशया ने देखा काले चोले वाला ऊंचा लम्बा सांई उस की बैठक में आया, उस के तो धन्य भाग। वह मन ही मन में कुछ और सोचती रही उसका सोचना फरीद जी के उल्ट था।

बाबा फरीद जी ने जा कर उस से कहा - 'माता जी! आग चाहिए खुदा का भाणा बारश हो रही है। वली मुरशद चिसती जी का धंआं ठण्डा हो गया। सुबह तडके आग की जरूरत है। यह समझो कि आग न मिली तो स्नान कैसे हो और आप भगती कैसे करेंगे। यह जरुरी है आग मिले। कृपा करो।

यह सुण कर मंद भागण और कुकरमण वेशया हंस पढ़ी। पीर जी के धूएं के लिए आग की जरूरत है। यह तो ठीक है पर मुझे भी तो जरूरत है।

बाबा फरीद जी - माता जी आपको किस चीज की जरूरत है?

वेश्या - सांई लोक मुझे आप की जरूरत है।

बाबा फरीद जी - मेरी जरूरत क्यों है?

वेश्या - आपका शरीर बहुत सुन्दर है। आंखें मुझे प्यारी लगती हैं। एक शरत पर आग मिल सकती है।

बाबा फरीद जी - किस शरत पर?

वेश्या - आपणे शरीर का कोई अंग दे जा, और नहीं तो एक आंख का डेला देना पड़ेगा।

बाबा फरीद जी - डेला ले लो। माता जी, मुझे कोई इन्कार नहीं मगर अगनी जरूर मिल जाए।

लिखा है कि बाबा फरीद जी की आँख वेश्या निकालने को त्यार हो गई। उस ने तेज चाकू लिया। लाया, मगर उस का हौंसला न पड़ा, धका लगा पीछे गिर पड़ी। मगर जखम हो गया। वेश्या ने वेश्या ने कपड़ा फाड़ कर पट्टी बांध दी और फरीद जी को आग दे दी क्षमा मांगी। उस का कलेजा कांपन लग गया। तब उस के जीवन में पल्टा आया।

बाबा फरीद जी आग टिंड में डाल कर डेरे आ गए। रास्ते में वह तिलकने से भी बचते रहे।

नेम अनुसार उन्होंने तड़के उठ कर आग जलाई। आग जलाई और पाणी गर्म किया। मुरशद को स्नान करवाया और जब वह कपड़े डाल चुके तो जानी जान मुरशद ने बाबा फरीद जी को कहा - फरीद आंख पर पट्टी क्यों बांधी है?'

'आप जानी जान हैं, मैं क्या बताऊं?' फरीद जी ने हाथ जोड कर उत्तर दिया। वह झूठ नहीं बोलणा चाहते थे। और सच्च कहने से झिजकते थे।

'पटी खोल दो!' मुरशद ने हुकम दिया।

फरीद जी ने जब पट्टी खोली तो आँख पर जख्म नहीं था। जख्म मिल गया था और आंख वैसी की वैसी ही थी। मुरशद ने बचन कर दिया, 'फरीद आप की सेवा प्रवान हुई, तपस्या पूरी हुई, हंकार ना करना। निरमाणता धारण करनी, खुदा को न भूलना आपणे आप की परख द करनी। जाओ! रिधीयां सिधीयां सभी बरकतें आप

www.9009.co.in

के साथ रहेंगी। आपणे घर जा कर खुदा की महिमा गाओ। भूले लोगों को रास्ता दिखलाओ। दुखीयों के दुःख काटो।'

हजरत चिशती साहिब प्रसन्न होते हुए वर बखशते गए और बाबा फरीद जी उन के चरन पकड़ कर सुनते गए। मुरशद ने सेवा, त्याग, और श्रद्धा के बदले बाबा फरीद जी को सब अजमतें बखश दीं। सभी अजमतें प्राप्त कर के चरनों पर माथा टेक कर वापस पाक पटन को आ गए।

पाकपटन में उपदेश और गद्दी

बाबा फरीद जी आपणे घर पाक पटन आ गए और पीर बण कर उपदेश करने लगे। आप ने वहां पर सारी बार और जंगलों में इस्लाम का प्रचार किया। नेकी सच्च और निरमाणता का प्रकाश हुआ आप की गद्दी चल पड़ी और जो भी उस गद्दी पर बैठता उसका नाम फरीद रखा जाता। इस प्रकार गुरु नानक जी का समय आया तो इब्राहिम ब्रह्म फरीद जी की गद्दी पर बिराजमान थे। अभी भी यह गद्दी एक करामाती गद्दी मानी जाती है।

फकीर शकर गंज और फरीद इब्राहिम की उचारी हुई बाणी मिलती है। श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी में आप की बाणी के श्लोक हैं। जिन को सलोक फरीद जी कहा जाता है। सारी बाणी कल्याण कारी है। उपदेश देती है। नीचे इनकी बाणी व्याख्या सहित दी गई है :-

भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु॥
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु॥२५॥
फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ॥
गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाइ॥२६॥

www.9009.co.in

फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखिओ मांझा दुधु ॥
सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु ॥२७॥

फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ॥
जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख ॥२८॥

रुखी सुखी खाइकै ठंढा पाणी पीउ ॥
फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ॥२९॥

अजु न सुती कंत सिउ अंगु मुड़े मुड़ि जाइ ॥
जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि विहाइ ॥३०॥

साहुरै ढोई न लहै पेईऐ नाही थाउ ॥
पिरु वातड़ी न पुछई धन सोहागणि नाउ ॥३१॥

साहुरै पेईऐ कंत की कंतु अगंमु अथाहु ॥
नानक सो सोहागणि जु भावै बेपरवाह ॥३२॥

नाती धोती संबही सुती आइ नचिंदु ॥
फरीदा रही सु बेड़ी हिंङु दी गई कथूरी गंधु ॥३३॥

जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥
फरीदा किती जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥३४॥

फरीदा चिंत खटोला वाणु दुखु बिरहि विछावण लेफु ॥
एहु हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेखु ॥३५॥

बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ॥
फरीदा जितु तनि बिरहु न उपजै सो तनु जाणु मसानु ॥३६॥

फरीदा ए विसु गंदला धरीआं खंडु लिवाड़ि ॥
इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि ॥३७॥

फरीदा चारि गवाइआ हंढि कै चारि गवाइआ संमि ॥
लेखा रबु मंगेसीआ तू आंहो केर्हे कंमि ॥३८॥

www.9009.co.in

भगत सदना जी

मनुष्य के जीवन में तो सदा तबदीलीयां आती ही रहती हैं। वह तबदीलीयां किसी न किसी घटना पर होती हैं और जीवन बदल कर रख देती हैं। भगत सधना कसाई था, पर वह भगत बण गया। आपकी कथा सरवन करें।

भगत सधना जी के माँ बाप के नाम का पता कहीं नहीं मिलता। करम कसाई का था। नगर सेवान (हैंदराबाद सिंध) में आप का जन्म हुआ और उसी नगर में ही रहते रहे। बचपन से ही सन्तों फकीरों और महाँ पुरखों के पास बैठ कर ज्ञान चरचा सुणने की श्रद्धा थी, आप मूरती पूजक थे। इन को कहीं से सालगराम पत्थर मिल गया था उस को मांस तोने वाला पत्थर बणा लिया। जिस से लोग बुरा मानते पर लोगों को इस बात का पता नहीं था कि सधना जी सालगराम को देवता करके पूजते और उस के आसरे ही वह आपणा मांस का कार विहार करते थे। वह तो सालगराम से लाभ ही उठाते थे वह ही जीवन आसरा था।

हिन्दू सन्तों में बहुत चरचा हो रही थी कि सधना कसाई सालग-राम से मांस क्यों तोलता है। एक दिन एक सन्त सधना जी की दुकान पर गया और बेनती की कि 'हे सधने! यह काला पत्थर मुझे दे दो। मैं इस की पूजा किया करूंगा। यह सालगराम है, तुम कोई और ही पत्थर रख लो। यह तुम्हारे लिए पत्थर है।'

सधना जाण गया कि यह सालगराम ले जाना चाहता है। उस ने बिना झिजक सालगराम उठा कर पकड़ा दिया। सालगराम ले कर

आपणे डेरे को चला गिया। डेरे पहुंच कर उस ने सालगराम को इस्नान कराया धूप जलाई, चंदन का तिलक लगाया और फूल चढ़ाए। पूजा की और रात होने पर सों गया। जब साधू सोया हुआ था, तब उस को सुपना आया और सालगराम ने भाखया दी, 'तुम ने यह बहुत बुरा किया है, सधने के पास मैं बहुत खुश था क्योंकि वह मेरी पूजा करता था, सच्चे हृदय के साथ वह मेरा हो चुका था। प्रेम करता है मैं पूजा और सतकार का भूखा नहीं, सगों प्रेम का भूखा हूं, वह मास तोलता हुआ भी मुझे याद करता था, मुझे उस के पास छोड़ आओ!' यह वचन सुन कर संत की नींद खुल गई। वह सोचता और किये करम पर पछताता रहा, दिन हुआ तो सधने के पास वापस गया। उस को कहिने लगा, सधना जी! आपणा सालगराम वापस लो! यह आप के पास ही ठीक है। धन्न हो आप जिन को प्रमेशवर याद करता है।

'क्यों संत जी?' सधने ने पूछा तो संत ने उस को सुपने की सारी बात आख सुनाई। उस बात को सुन कर सधन के मन में और ज्यादा चाव और प्रेम उत्पन हो गया। वह प्रभू भगती करने लग पड़ा। उसी सालगराम के साथ मास तोलदा और उस की पूजा भी करता। मन में सिमरन करता रहिता।

सधना जी का मास बेचने का काम छोड़ना

एक दिन की बात है, रात के समय एक शाहूकार सधना जी के पास बकरे का मास लेने के लिए आ गया। उस ने कहा कि इस समय मास नहीं क्योंकि जो बकरा बनाया था, वह खतम हो गया था, शाहूकार लिहाज वाला आदमी था, सधना उस को मोड़ वी नहीं सी सकता। इस लिए सधने ने जीउंदे बकरे के 'कोफते' काट कर शाहुकार

को देने चाहे। जब सधना छुरी पकड़ कर बकरे के नजदीक गया तो बकरा हंस पड़ा। हस कर कहने लगा, 'हे सधना! जगों बाहरी करन लगे जे' यह सुण कर सधना जी बहुत हैरान हुए कि यह जानवर बोल रहा है। उसी समय सधना के हाथ से छुरी जमीन पर गिर गई सधना जी ने बकरे को पूछा, 'हे बकरे! यह बताओ नई भाजी क्या में चढ़ाने लगा हुं। मेरा करम है तुझे मार कर बेचना।'

बकरा बोला, 'सुण! पहले यह सिलसिला चला आ रहा है कि कभी में बकरा और तुम कसाई और कभी में कसाई और तुम बकरा। इस जन्म में तुम मेरे जीवित शरीर का एक अंग काटकर शाहूकार को देने लगे हो। यह नई भाजी है। कल को मैं भी तुम्हारे साथ ऐसा ही तो करूंगा। क्योंकि हम करम के एक दूसरे के साथी हैं। आहणा धरम बण चुका है। एक दूसरे का मांस बेचणा है।'

बकरे की भाख्या ने सधने को ज्ञान करवा दिया। उस दिन तो उस ने शाहूकार को साफ जवाब दे दिया और अगली सुबह मांस का धन्दा ही छोड़ दिया। वह भजन करने लगा।

खून जिम्में लगना

भगत सधना जी को जब पूरन ज्ञान हो गया कि प्रभू का नाम जपने में ही भला है तो वह पुरखोतम जी के दर्शनों के लिए जगत नाथ पुरी की यात्रा के लिए सिंध में से चल पढ़ा। जगननाथ पुरी शहिर पहुंचने से एक पड़ाअ पहले ही उस को रात पढ़ गई। उस ने सोचा कि ग्रहिसती के घर से भोजन मांग कर खा लूं और रात कहीं काट लूं। फिर आगे चलूंगा। एक घर के द्वार के आगे खड़े हो उस ने आवाज दी। उस घर में दो ही जीव रहते हैं। वही स्त्री की उमर बीस बाईस साल की थी। वह बहुत सुन्दर और जवान थी। उस

www.9009.co.in

का पती कोझा और रोगी था। उस सुन्दरी ने जब सधना जी को देखा तां आगे बुला लिया, बड़ी निम्रता और प्रेम-मई लहिजे में बोली, 'अन्दर आईए ! गृह पवित्र करें, धन्न भाग हमारे जो आप आए हो ! भगवान् आए हो। भोजन छको, बिसत्र और चारपाई लेकर आराम करो। मैं सेवा कर लवां।'

उस की यह श्रद्धा देख कर सधना जी उस के वेहड़े में पहुंच गए और चारपाई पर बैठ गए। उस सुन्दर स्त्री ने बड़े चाव और श्रद्धा के साथ भोजन त्यार किया। भोजन त्यार करके सधना जी के चरन धुलाए और चौंतरे में बिठा कर भोजन छकाया। जितना समय सधना जी भोजन करते रहे। उतना समय वह स्त्री पंखा झलती रही, उसी तरह जैसे पती को स्त्री पखा झलती है, साथ साथ प्रेम भरी मीठी मीठी बातों से पूछती रही कि सधना जी कब आए हैं और कहां जा रहे हैं और क्यों साधू बने हैं।

जब भोजन कर चुके तो उस सुन्दरी ने सधना जी को अच्छा बिसत्र बिछा कर रात काटने के लिए बेनती करी। उस बेनती को सधना जी ने प्रवान कर लिया। प्रभू नाम का सिमरन करता हुआ भगत सौं गया। जब आधी रात का समय हुआ तो वह मुटयार शंगार करके सधना जी की चारपाई पर आ गई। उस के हृदय में काम वास्ना थी। काम ने उसे के खून को उबाल दिया था। वह अन्धी हुई हुई थी। उस का यह पागलों वाला वतीरा देख कर सधना जी ने कहा, भैण ! आप मेरे पासों जाएं ! हर स्त्री को पतीब्रता रहना चाहीए। मैं तो पहले ही पापों के कारन दर बदर फिरता हूं मुझे और पापों का भागी क बना। जाह ! आप मेरी भैन हो !'

उस स्त्री की उलटी मत वासना के मन्द कारन उस ने उलटा सोचा था। उस ने ख्याल किया कि शाइद संत उस के पती पासों

डरता है। वह पीछे मुड़ और दस मिण्ट पश्चात आपणे पती का सिर काट कर सधना जी के पास आई। सधना जी को आपणे पती का सिर दिखा कर बोली - 'हे प्यारे! अगर तुम्हें मेरे पती का भय था तो यह लो उस का सिर, मैं उस को पती नहीं मानती थी, मेरे माँ बाप ने मलो मली मेरा विवाह कर दिया। वह निकम्मा था, रोगी था, इस को तो मरना ही चाहीदा सी। मैं आप को पती मानती हुं। मुझे आपणी बना कर मुझ से प्यार करो। मेरी जवानी को लूटो। छोड़ो शरम मैं आपके साथ संतनी बनाँगी। जीवन मे भोग ही तो सभ कुझ है।'

सधना जी उन की सभी बातें सुणते रहे। जब वह आपणे मन आई बकवास कर चुकी तो वह गुस्से से बोले, 'चंडालण! पापण! तुम ने महान पाप किया है। इस पाप का फल तुम्हें नरक भोगणा पड़ेगा। मैं पाप करने के लिए त्यार नहीं। मै तेरे घर से अभी चला हुं। तुम जहिर की गंदल हो, नागन हो, जिस ने आपणे पती का खून कर दिया वह पराए मरद से कैसे प्यार करेगी। धिक्कार है ऐसे प्यार को जिस के ढंक का कोई ईलाज नहीं। सधना जी क्रोध से आपे से बाहर हो गए।

वह इतना कहते हुए उठने लगे तो उन को उठता हुआ देख कर वह महां पापण हत्यारी कूक उठी। 'अरे मेरे पती को मार कर मेरे साथ पाप करना चाहता है। तुम सन्त नहीं खूनी हो। अरे लोगो मैं लुटी गई। दौड़ो! दौड़ो! मेरे प्यारे पती का खून इस सन्त ने कर दिया। पकड़ो दौड़ने लगा है। उस पापण का यह छोर देख कर के सधना जी हैरान जरूर हुए, पर घबराए नहीं। उन्होंने कहा कि देखा जाएगा भगवान क्या करता है। शायद मेरे किसी पाप का फल रहि गया है जो मैं इस कलजोगण के घर रात काटने के लिए आ गया। यह प्रभू की खेड है।

www.9009.co.in

उस स्त्री का छोर सुण कर लोग इकट्ठा हो गए। उस की बात सुण कर लोगों ने सधना जी को घेर लिया और पकड़ कर हाकम के पास पेश कर दिया। हाकम एहो जिहा था, कि उस ने झट पट सधना जी के हाथ काट देने का हुकम दे दिया। उस समय सधना जी ने प्रभू को बेनती की :-

न्रिप कंनिआ के कारनै इकु भइआ भेख धारी ॥
कामारथी सुआरथी वा की पैज सवारी ॥१॥
तव गुण कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै ॥
सिंघ सरन कत जाईऐ जउ जंबुकु गासै ॥१॥ रहाउ ॥
ऐक बूंद जल कारने चात्रिकु दुखु पावै ॥
प्रान गऐ सागरु मिलै फुनि कामि न आवै ॥२॥
प्रान जु थाके थिरु नही कैसे बिरमावउ ॥
बूडि मूऐ नउका मिलै कहु काहि चढावउ ॥३॥
मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मेरा ॥
तउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा ॥४॥

(बिलावलु)

भाव - हे भगवान! राज कन्या को विआहने के लिए एक तरखाण ने विषणु रूप धार लिया था, वह कथा ऐसे थी कि एक राज कन्या ने प्रण किया कि वह विषणूं बिनां किसी से शादी नहीं करेगी, एक तरखाण ने किसी तप के बल से विषणूं रूप तो धारण कर लिया पर उसके पास विष्णु जी वाली शक्ति नहीं थी। पर जरूरत पढ़ने पर उस ने अरदास की तो उस के पास शक्ति आ गई।

'हे प्रभू! उस कामी और खुदगरज आदमी की भी लाज रखी मेरी

www.9009.co.in

इज्जत क्यों नहीं बचाता? हे जगत पालक! हे भगवान्! तुम्हारी क्या वडिआई है कि तेरी कृपा से मेरे करम नहीं नष्ट हों। उस मनुष्य शेर को आपणा उस्ताद क्यों मानना है अगर गीदड़ों ने ही घेर लेना है। जल की एक बूंद के बदले पपीहा कूकता है। अगर वह त्रिहाया मर जाए और मरे को समुन्द्र में फेंक दिया जाए तो उसका क्या लाभ? प्रभू मेरे नैण प्राण काम नहीं करते। दिल धड़क रहा है। मैं इन को कैसे आसरा दूं? हे भगवान! डूब गए पुरुष के लिए बेड़ी किस काम? मैं तेरा हूं। इस समय मेरी लाज रखो। मेरे पिछले कर्मों को बखश दो। हे दाता! मेहर करो।

हाकम का हुकम और लोगों के छोर मचाने पर भगत सधना जी को खूनी मान लिया गया और उस के हाथ काट देने का हुकम हाकम ने वापस न लिया और उस के हाथ काट दिये। हाथ काटे गए तो प्रमात्मा ने हाकम को यह भाखिया दी कि असल कातल सधना नहीं नारी है।

उस की एक गुआंढण जिस ने यह कौतक देखो था, उस को प्रमात्मा ने प्रेरना दी और वह छोर मचाने लगी, सन्त को ऐसे ही मरवा दिया, चैंचलहारी ने सारा कारा तो आप किया है। असली खूनी यही है। लोग उस को पकड़ कर ले गए और हाकम के आगे पेश किया। हाकम ने उस स्त्री को धरती में दफना कर मरवा दिया। भगत सधना जी बिनां हाथों के घूमते रहे और भगती करते रहे। रिधीयां सिधआं मिलीं। आप की समाध सरहिंद में है।

★

www.9009.co.in

५५. बलवंड और सता

बलवंड और सता दोनों सके भाई थे। जात के मरासी और गुरू अरजन देव जी के समय उन्हों की हजूरी में कीरतन किया करते थे। रागों के जानने के कारन अच्छे रबाबी बन गए थे। उन्हों की कीरती अच्छी थी और गुरू घर में अच्छा मान प्राप्त था।

सता की लड़की जवान हुई तो उस का विवाह रचा, गुरू के रबाबी होने के कारन उन्हों ने मशवरा किया कि शादी बड़ी धूम धाम के साथ शादी करेंगे, मगर उन्हों के पास इतना धन्न न था, जो अच्छा दाज दे सकें और आए महमानों को अच्छा से अच्छा भोजन दे सकें। सता ने आपणे भाई बलवंड से मशवरा करके मन में यह सोचा कि वह सतिगुरू जी के आगे प्रारथना करेंगे कि सतिगुरु जी एक दिन का चड़ावा उन को दे देवें वह चड़ावा क्योंकि ज्यादा होगा तो हमारे सभी काम पूरे हो जाएंगे।

दोनों भाई सतिगुरु जी के पास गए तो बेनती की, 'महाराज ! असां लड़की की शादी करनी है मगर शादी का खरच पूरा करने के लिए आप कृपा करके आज का चड़ावा हमें दे देवें।'

रबाबीओं की यह बात सुन कर सतिगुरु जी मुसका पड़े और बचन किया ! 'राए कन्नयां की शादी की चिंता न करो। गुरू घर के कीरतनीए होने के कारन आप को कोई घाटा नहीं आएगा। लोड़ अनुसार आप को माया मिल जाएगी।

मगर सता और बलवंड सतिगुरु जी के बचनों का भाव अरथ न

www.9009.co.in

समझ सके क्योंकि उन्हों के मन में लालच आ गया था। सतिगुरू जी उन के मन की बदली दशा को समझ गए थे। इस लिए हउमै की अगन से बचाना चाहते थे, मगर रबाबी न बच सके और उन्हों ने जिद न छडी। अन्त सतिगुरु जी ने बचन कर दिया, 'अच्छा जो चढ़ावा कल चड़े आप ने लै जाना और उस ने में कन्नियाँ की शादी कर लेना।'

अमृत वेले सता और बलवंडे ने कीरतन करना शुरु कीया। मगर उन की बिरती कीरतन की तरफ से हट कर चढ़ावे की तरफ लग गई। जो भी सिख जाँ गुरू घर का श्रधालू आ कर मथा टेकदा तो दोनों भाईयों नजर उसके चढ़ावे की तरफ लग जाती। इस तरह कीरतन में रस न रहा, ताल की इकसुरता टुट गई और लैअ कांपने लगी, गुरबाणी में भी कई भुलाँ होन लगीयाँ, बे-रसी छा गई।

उन्हों के कीरतन की बेरसी और संगत के कम आने की वजा करके कुदरत की तरफों ऐसा समय बनया कि एक सौ रुपए से ज्यादा चढ़ावा न चड़ा घट चढ़ावा देख कर दोनों भाईयों के सिर में पानी जेहा पड़ गया।

वह कुछ गुसे और हैरानी के साथ बोले 'महाराज चढ़ावा बहुत घट चड़ा है, इस वासते हमारी और सहायता करो इतने से शादी नहीं हो सकती।

यह सुन कर पंचम पातशाह मुसकराए तो वचन किया 'भाई आप ने चढ़त का फैसला किया था सो चढ़त आप लै जाओ। कंनिया के भाग में जो कुछ होगा सो उस को मिल जाएगा। कंनिआं की चिंता न करो पर आपणा बचन पालो।

उस समय दोनों भाइयों की मत सो मारी गई और उन को किसी बात की समझ ही न आई। मन में हंकार था कि वह कीरतनीए

हैं। अगर कीरतन न करेंगे तो गुरु का दरबार कैसे लगेगा। सत्गुरु महाराज जी की शक्ति का अनुभव भी भूल गया और हंकार कर के घर बैठने का फैसला कर लिया।

अगली सुबह आसा की वार का कीरतन होणा था पर दोनों ही रबाबी हाजर न हुए और घर में ही पलंघ पर लेटे रहे। दरबार में संगत उडीक करने लगी। सत्गुरु जी भी आपणे समय अनुसार दरबार में हाजर हुऐ और तख्त पर बिराजे और रबाबीओं को दरबार में हाजर हुआ न देख कर एक सिख को कहा कि वह उन दोनों को बुला कर लाए। श्रद्धालू सिख दौड़ कर गया। और दोनों भाईयों को जा कर कहा, 'श्रीमान् जी ! सच्चे पातशाह आप को याद कर रहे हैं आप चल कर कीरतन करो।'

यह सुण सते दे सतीं कपड़ीं आग लग गई और पागलों की तरह गुस्से से बोले, हम ने कोई कीरतन करने नहीं जाना। अगर हमने चढ़त के लिए कहा तो मसंदों राहीं चढ़त रोक दी गई। हमारे साथ वित्करा किया है। इस लिए आज से हम कीरतन नहीं करेंगे। किसी और सोढी या बेदी के आगे कीतन कर के उस को गुरु बणा सकते हैं। गुरु बनाणा या ना बनाणा हमारे हाथ वस हैं।'

यह जवाब सुण कर सिख वापस आ गया और उस ने सभी बातें सत्गुरु महाराज जी के आगे प्रगट कर दीं।

दया और सागर सच्चे पातशाह नाराज न हुए बल्कि भाई गुरदास जी को यह कहि कर भेजा कि वह रबाबीओं को सत्कार से दरबार में ले आएं। उन की कन्या की शादी उसी तरह धूम धाम से हो जाएगी जैसी वह ख्याल करते हैं।

भाई गुरदास जी सत्ता और बलवन्त के घर पहुंचे, बड़ी निम्रता से दौनों को समझाने का यत्न किया। पर रबाबीयों का गुसा ठंडा

न हुआ। भाई बलवंड ने बड़े गुस्से और मूरखता के साथ यह जवाब दिया, 'जाओ आप कीरतन कर लवो। गुरू जे इतनी शक्ति रखता है तो वह आप कीरतन करे। हम आगे से गुरू दरबार में कीरतन नहीं करेंगे।' भाई गुरदास जी ने फिर भी गुस्सा नहीं किया, फिर भी बलवंड और सता को समझा कर उन के मन को शांत करने का यतन किया मगर उन का मन शांत न हुआ। दोनों भाई जिद करके बैठे रहे मगर गुरु दरबार में हाज़र न हुए।

श्री गुरु अरजन देव जी महाराज आप सिंघासन से उठ कर रबाबीओं के घर पहुंचे। संगत भी साथ जाना चाहती थी, पर सतिगुरु जी ने भाई गुरदास जी के बिना किसी और को साथ न लिया, दीन दुनियां के वाली सता और बलवंड के घर पहुचे तो सबब से दरवाजा खुला था। साहिब विहड़े में चले गए। आगे दोनों भाई चारपाई पर बैठे थे। उन्हों ने इतना ढीठ-पुना किया कि न उठ कर श्री सतिगुरु अरजन देव जी को नमशकार की और न ही जी आइयां कहा मगर आंखें नीची करके बैठे रहे। सतिगुरु जी ने निम्रता से बचन किया 'चलो भाई गुरु घर में कीरतन करो और सतिगुरु नानक देव जी की खुशीयां प्राप्त करो। गुरु घर के साथ गुस्सा करना ठीक नहीं गुरबाणी संगत को सुनानी है। कन्या की शादी के लिए आप को माया मिल जाएगी।'

राये बलवंड बहुत गुस्से वाला साबत हुआ, उस ने अगों बड़े हंकार के साथ कहा, 'हम ने नहीं जाना। हम ने आप को गुरु बनाने का यतन किया, मगर आप ने हमारे साथ धोखा करके भेटा न चड़ने दी, जिस से जी चाहे कीरतन करवा लें। हम किसी और सोढी के पास चले जावेंगे। श्री गुरु नानक देव जी से लेकर गुरु रामदास जी तक हम ही गुरू बनाते आए हां, अगर हम न कीरतन करते तो

www.9009.co.in

किस ने गुरु मानणा था।'

श्री गुरु अरजन देव जी ने अब ऐसे बोल सुणे तो बड़े सतिगुरां की निंदा सुणी तब सहि न सके और गुस्से में आ कर बचन कर दिया सतिआ और बलवण्डे तुसीं फिट गए हो यह फिटेवां आप को तंग करेगा। यह बचन करके गुरु जी आपणे दरबार आ गये।

दरबार में आ कर गुरु जी ने आपणी आतमक शक्ति का एक महान चमत्कार दिखलाया। वह चमत्कार इस प्रकार था कि उन्होंने आकर वहां हुकम कर दिया कि आज से गुरू घर के सिख आप कीरतन किया करेंगे। साज वजाएंगे और ऐसे हंकारी मरासीयों की कभी जरूरत नहीं रहेगी। यह बचन करके सतिगुरू जी ने दो सिखों को इशारा किया कि वह साज पकड़ कर कीरतन करें। सिखों ने साज लेकर राग गाया। ऐसा चमत्कार हुआ कि गंधरब रागीयों की तरह कीरतन का रस बझ गया और सच ही रबाबीओं की जरूरत न रही।

सत्ता और बलवन्ते को कोहड़ होणा

सतिगुरू जी के वापस आने के पश्चात सत्ता और बलवण्ड को सच ही कोहड़ हो गया, वह जिधर को निकलते लोग उन के दर्शन न करते और आपणा द्वार बन्द कर लेते क्योंकि वह सतिगुरां जी के फिटकारे हुए थे। धीरे-२ रोग बढ़ गया। जोड़ा हूआ धन्न समाप्त हो गया और गुरू निंदकों को किसी सोढी या बेदी ने मूंह न लगाया। दिनों दिन दशा खराब होने लगी और दुख पाने लगे।

दुखी हो कर दोनों भाई चाहते थे कि सतिगुरू जी उन दोनों की भूल बखश दें पर वह सतिगुरां के हजूर किसी तरह भी जा नहीं सकते और गुरु जी ने हुकम दिया था कि जो भी कोई इन दोनों की फरियाद

करेगा उन्हों का मूंह काला कर दिया जाएगा। कोई डरता सतिगुरां के सनमुख हो कर बेनती नहीं करता। सभी डरते थे कि सतिगुरु जी शाइद उन को भी श्राप न दे देवें।

दोनों भाई आपणे कोठियां पर खलो के आपणे मूंह पर आप चपेडां मारदे सन और कीती भुल पर रो रो कर पछतावा करते थे। वह कूक कर कहते, 'कोई हमारी बौहड़ी सुने गुरू जी के पास ले चले हम पापी और महां कोहड़ी हां। साडी फरयाद सुनी जाए' मगर कोई हां न करदा जो उन की फरयाद सुनता।

राए बलवंड को याद आया कि लाहौर में भाई लद्धा परउकारी है। दुख तकलीफ उठाते हुए पैदल चल कर दोनों भाई लाहौर पहुंचे। भाई लद्धा जी पास जा कर उन्हों ने इस तरह वरलाप करके कहा भाई लद्धा जी आप परउकारी महां पुरख हो यह तो आप ने सुन ही लिया है कि हम ने सतिगुरु पंचम पातशाह जी के हजूर निंदा के बचन बोले हंकार और लालच ने मत मार दी थी। हम अन्धे और बोले हो गए थे। सतिगुरां के बचन अनुसार हमें कोहड़ हो गया है, हम बहुत दुखी हां कृपा करो और सतिगुरु पासों भुल बखशा देवें।' इस तरह बेनती करते हुए रोते और पीटते गए तब भाई लद्धा परउकारी के मन में दया आ गई। उन्हों ने बचन किया अब आप जाएं मैं कल सतिगुरां के दरबार में आप हाजर हो जावांगा, आप के लिए क्षमां की भीख मांगूंगा, आस है कि सतिगुरु जी मेहर के घर में आएंगे।

सता और बलवंड भाई लद्धा जी से कुछ उमीद के बचन सुन कर उस का जस करते हुए आपणे घर को मुड़ आए।

भाई लद्धा जी लाहौर में सतिगुरु जी के श्रद्धालू सिखों में थे, आप बड़े परउपकारी दया धरम वाले और नाम के रसीए

थे, जिस करके हर कोई दुखीया उन्हों के पास जाता और बेनती करता था। उन्हों को जिस समय पता चला कि सता बलवंत की जो सफारश करेगा उस को बदनाम होना पड़ेगा, उस की बदनामी होगी क्योंकि सतिगुरु का हुकम है जो कोई सते और बलवंड की सफारश करेगा उस का मूंह काला करके गधे पर बठा कर फेरा जाएगा। पर-उपकारी भाई लद्धा जी ने आप ही नशर होने का वसीला बना लिया, एक गधा मंगवा कर उस को टाकीओं की लगाम पाई उपर फटी हुई गोदड़ी डाल कर उस उपर आप बैठ गए, आपणे मूंह और पीठ पर कालों लगा ली और लोगों के लिए एक मजाक बन गए, आप लाहौर से अमृतसर की तरफ चल पड़े।

भाई लद्धा जी एक महान परउपकारी गुरसिख थे, और आपणा करके भी किसी का भला करते थे। धीरे धीरे चलते हुए वह अमृतसर पहुच गए। सतिगुरु जी को पहले ही पता चल गया था, तो सतिगुरु जी आगे हो कर मिले और हंस कर बचन किया--

'....भाई लद्धा जी ! यह कैसा सांग बनाया है ?'

'महाराज ! जिस तरह आप की आज्ञा !' भाई लद्धा जी का उत्तर था।

'महाराज ! सता और बलवंड कोहड़ी हो गए हैं कुरला रहे हैं, आप का जस करनगे, भुल अनुभव करते हैं, क्षमा करो ! बच्चे भुलते रहते हैं, मापे क्षमा करते रहते हैं। मेहर करो ! फिर भी गुरू घर के कीरतनीए है।' इस तरह भाई लद्धा जी ने बेनती कीती।

सतिगुरु जी ने भाई लद्धा जी को गधे से नीचे उतारा, और मूंह हथ धुलाया और वर दिया, 'भाई लद्धा परउपकारी' यह भी बचन कर दिया. 'अच्छा ! जिस तरह उन्हों ने सतिगुरु (गुरु नानक देव जी और बाकी के पांचों गुरु साहिबों की) निंदा करी थी, तिवें जस करन

वह जिवें जिवें जस करते जाएंगे तिवें तिवें उन का कोहड़ हटता जाएगा।

सतिगुरु जी का यह हुकम सता और बलवंड को जा सुनाया, उन्हों ने गुरू जस करना शुरू किया। गुरू जस बाणी के रूप में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में दरज है, आओ दर्शन करो--

रामकली की वार राए बलवंडि तथा सतै डूमि आखी

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥
दे गुना सति भैण भराव है पारंगति दानु पड़ीवदै ॥
नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीवदै ॥
लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अमृतु पीवदै ॥
मति गुर आतम देवदी खड़गिजोरि पराकुइ जीअदै ॥
गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥
सहि टिका दितोसु जीवदै ॥ १ ॥

लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥
जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥
झुलै सु छतु निरंजनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ ॥
करहि जि गुर फुरमाइआ सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥
लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥
खरचे दिति खसंम दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥
होवै सिफति खसंम दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ ॥
तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ ॥
सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु हटीऐ ॥
पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कंन् मुरटीऐ ॥

www.9009.co.in

दिलि खोटै आकी फिरन्हि बंन्हि भारु उचाइन्हि छटीऐ ॥
जिनि आखी सोई करे जिनि कीती तिनै थटीऐ ॥
कउणु हारे किनि उवटीऐ ॥२॥

जिनि कीती सो मंनणा को सालु जिवाहे साली ॥
धरम राइ है देवता लै गला करे दलाली ॥
सतिगुरु आखे सचा करे सा बात होवै दरहाली ॥
गुर अंगद दी दोही फिरी सचु करतै बंधि बहाली ॥
नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥
दरु सेवे उमति खड़ी मसकलै होइ जंगाली ॥
दरि दरवेसु खसंम दै नाइ सचै बाणी लाली ॥
बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पताली ॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥
गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥
पए कबूलु खसंम नालि जां घाल मरदी घाली ॥
माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥३॥

होरिंओ गंग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु ॥
नानक ईसरि जग नाथि उचहदी वैण विरि किओनु ॥
माधाणा परबतु करि नेत्रि बासकु सबदि रिड़किओनु ॥
चउदह रतन निकालिअनु करि आवागउणु चिलकिओनु ।
कुदरति अहि वेखालीअनु जिणि ऐवड पिड ठिणकिओनु ।
लहणे धरिओनु छत्र सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु ।
जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु ॥
सिखां पुत्रां घोखि कै सभ उमति वेखहु जि किओनु ॥
जा सुधोसु तां लहणा टिकिओनु ॥४॥

फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥ जपु तपु

संजमु नालि तुधु होरु मुचु गरूरु ॥ लब विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥ वरिऐ दरगह गुरू की कुदरती नूरु ॥ जितु सु हाथ न लभई तूं ओहु ठरूरु ॥ नउनिधि नामु निधानु है तुधु विचि भरपूरु ॥ निंदा तेरी जो करे सो वंञै ॥ नेड़ै दिसै मात लोक तुधु सुझै दूरु ॥ फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥५॥

सो टिका सो बैहणा सोइ दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥ जिनि बासकु नेत्रै घतिआ करि नेही ताणु ॥ जिनि समुन्दु विरोलिआ करि मेरु मधाणु ॥ चउदह रतन निकालिअनु कीतोन चानाणु ॥ घोड़ा कीतो सहज दा जतु कीओ पलाणु ॥ धणखु चड़ाइओ सत दा जस हुंदा बाणु ॥ कलि विचि धू अधारु सा चड़िआ रैभाणु ॥ सतहु खेतु जमाइओ सतहु छावाणु ॥ नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥ चारे कुंडां सुझीओसु मन महि सबद परवाणु ॥ आवागउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु अउतरिआ अउतारु लै सो पुरखु सुजाणु ॥ झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जानु ॥ किआ सालाही सचे पातिसाह जा तू सुघड़ु सुजाणु ॥ दानु जि सतिगुर भावसी सो सते दाणु ॥ नानक हंदा छत्र सिरि उमति हैराणु ॥ सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥६॥

धंनु धंनु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥ पूरी होई करामाति आपि सिरजणहारै धारिणा ॥ सिखी अतै संगती पारब्रहमु करि नमसकारिआ ॥

अटलु अथाहु अतोलु तू तेरा अंतु न पारावारिआ ॥
जिनी तूं सेविआ भाउ करि से तुधु पारि उतारिआ ॥
लबु लोभु कामु क्रोधु मोहु मारि कढे तुधु सपरवारिआ॥
धंनु सु तेरा थानु है सचु तेरा पैसकारिआ ॥
नानकु तू लहणा तू है गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥
गुरु डिठा तां मनु साधारिआ ॥ ७ ॥

चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥
आपीनै आपु साजिओनु आपे ही थंमि खलोआ ॥
आपे पटी कलम आपि आपि लिखणहारा होआ ॥
सभ उमति आवण जावणी आपे ही नवा निरोआ ॥
तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुर का खिवै चंदोआ ॥
उगवणहु ते आथमणहु चहु चकी कीअनु लोआ ॥
जिन्ही गुरू न सेविओ मनमुखा भइआ मोआ ॥
दूणी चउणी करामाति सचे का सचा ढोआ ॥
चारे जागे चहु जुगी पंचाइण आपे होआ ॥ ८ ॥ १ ॥

इस तरह सता और बलवंड ने जिस समय गुरू महाराज की उस्तत करी तो उन्हों का कोहड़ हट गया। भोग पाया अमृत सरोवर में अस्नान किया तो नवें नरोए हो गए। वह फिर दरबार में कीरतन करने लगे।

मगर सतिगुरु जी ने हुकम कर दिया कि आगे से सभी सिख राग और साज विद्या को सीखा करेंगे और गुरु घर में हर कोई श्रद्धालू कीरतन कर सकता है। रबाबीओं की अजरेदारी को खत्म कर दिया, वह इस लीए कि कोई नहोरा दे कर कीरतन करनों आकी न होये। अगर रागी या रबाबी न भी मिले तोभी कीरतन होता रहे।

www.9009.co.in

५६. बाबा सुन्दर दास जी

जब कोई प्राणी चलाणा करता है उस के नमित रखे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के पाठ का भोग पाने के पश्चात 'रामकली राग की सद्द' का भी पाठ किया जाता है। गुर-मर्यादा में यह मर्यादा बण गई है। वह सद्द बाबा सुन्दर दास जी की रचना है। सतिगुरू अमरदास जी महाराज जी के जोती जोत समाते समय का वैराग और दृष्य पेश किया गया है।

सद्द के उचारन वाले गुरमुख पिआरे, गुरु घर के श्रद्धालू बाबा सुन्दर जी थे। आप सीस राम जी के सपुत्र और सतिगुरू अमरदास जी के पड़पोते थे। आप ने गोइंदवाल में बहुत भगती की। गुरु का जस करते रहे।

बाबा सुन्दर दास जी का मिलाप सतिगुरू अरजन देव जी महाराज से उस समय हुआ जब सतिगुरु जी बाबा मोहन जी से गुरबाणी की पोथीआँ प्राप्त करने के लिए गोइंदवाल पहूंचे थे। उन के साथ बाबा बुढा जी और श्रद्धालू सिख भी थे। उस समय बाबा सुन्दर दास जी ने बचन बिलास में महाराज जी के आगे प्रगट कर दिया कि उन्होंने एक 'सद्द' लिखी है। महाराज जी ने सुणी। सुण कर इतने प्रसन्न हूए कि 'सद्द' उन से ले कर आपने पास रख ली, जब 'गुरु ग्रन्थ' जी की बीड़ त्यार की तो भाई गुरदास जी से लिखवा दी। उस सद्द के कारन बाबा सुन्दर जी भगतों में गिणे गए और अमर हो गए हैं। जो भी सद्द को सुणता या सद्द का पाठ करता है, उस के मन को शांती प्राप्त होती हं। उस के मरने जमने के बंधन और चक्कर काटे जाते हैं। कल्यान बखशण वाली है।

www.9009.co.in

५७. बारां तीरथों की कथा

जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥
जे ओहु कूप तटा देवावै ॥
करै निंद सभ बिरथा जावै ॥ १ ॥
(गौंड रविदास जी)

भगत रविदास जी फुरमाते हैं, बारां रीरथों पर जा कर पूजा करने वाला जे निंदा करता है तो उस का फल सभी बिरथा जाता है। निंदा करना ठीक नहीं। गुरू घर में निंदा को बहुत ही बुरा माना जाता है।

मगर सभ से जरूरी अरथ जो है, वह यह कि १२ तीरथ हैं जिन की पूजा होती है। पुराणों के अनुसार उन १२ तीरथों की कथा।

यह जो बारां तीरथ हैं, उन तीरथों पर भगवान शंकर जी 'लिंग' रूप में बिराजमान हैं और उन की पूजा होती है। सभी लिंग सिल मूरतीमान हैं। इन तीरथों की यात्रा होती है। मेले लगते हैं और श्रद्धालू लोगों की श्रद्धा पूरन होती है। भगत जनों की ज्ञात के लिए उन बारां तीरथों की कथा सरवन करवाते हां। अगर कोई मन चित लगा कर कथा सुने या करेगा, उन की सभी आस-मुरादें पूरी होंगी। मगर यह शरत भी साथ है कि वह कभी किसी की निंदा न करे। अगर जस नहीं करता तो निंदा भी न करे। चुप रहना ही ठीक है। हे जिज्ञासू जनो ! आओ कथा सरवन करो--

www.9009.co.in

घुसमेश्वर मन्दिर

दक्षिण देश में हैदराबाद मुस्लमानी रियासत है। आज कल वह आंधरा प्रदेश की राजधानी है। उस के शहिर दौलतबाद के नजदीक यह तीरथ है। इस तीरथ की महानता बहुत है और भगवान शंकर-जोती सरूप यहां बिराजमान हैं। इस तीरथ की कथा इस प्रकार है :-

दौलताबाद देवगिरी पर्वतों का इलाका है। इस नगर में तालाब बणा हुआ था। उस तालाब को बड़ा कर घुसमेश्वर तीरथ या मन्दिर है। इस तीरथ के प्रकट होने की कथा इस प्रकार लिखी है। इस नगर का ब्राह्मण सुधरमा था। उस की पत्नी का नाम सुदेहा था। वह बड़ी रूपवती थी, पर उस की कोई सन्तान ना थी। वह इस कमी को लेकर बड़ी दुखी थी। उस ने आपणे पती सुधरमे से कहा - स्वामी जी आप और शादी करवा लो।'

सुधरमा - मैं और शादी बिल्कुल नहीं करवाऊंगी। अगर भगवान ने पुत्र देणा होगा तो तुम्हारी कोख से ही देगा। शादी करने के बाद तुम दुखी हो जाओगी।

सुदेही - मैं कोई दुखी नहीं होवांगी। जब हमारे यहां बच्चा खेलेगा तो मैं खुश हो जाऊंगी।

इस प्रकार पती पत्नी में काफी चरचा होती रही। देवनेत से ऐसा संजोग बणा कि सुधरमा की नई शादी हो गई। उस की नई पत्नी का नाम 'घुसमा' था। वह जवान उमर, सुन्दर और शिव शंकर भगवान की पूजा किया करती थी। उस ने पेके घर यह नेम बणाया हुआ था कि १०१ शिवलिंग मिट्टी के बणा कर जल में तार दिया करती थी। यह नेम अब भी उस का अटल था वह सुबह

www.9009.co.in

उठती और भगवान का नाम लेती हुई शिवलिंग बणा बणा कर जल में प्रवाह दिया करती थी।

घुसमा स्वभाव की बहुत उत्तम थी। वह किसी की न निंदा करती और न किसी से झगड़ती। जो कुछ पती से खाने को मिलता वही खा कर भगवान का शुक्र करती। उस का जितना रूप था उतना ही भगती भाव वाला स्वभाव था।

भगवान की ऐसी कृपा हुई कि घुसमा की कुख को भाग लग गया। दस महीने बीतने पर पुत्र ने जन्म लिया। उस का पुत्र देख कर सुदेहा को बहुंत खुशी हुई। वह बच्चे को आपणा पुत्र समझ कर प्यार करती और पालती रही दिन बीतते गए।

पुत्र जवान हो गया तो उसकी शादी की। जब शादी हो गई तो सुदेहा के मन में ईरखा आ गई। उसको एक तो सौंकण साड़ा हो गया और दूसरा आपणे आप पर क्रोध आया। उस की उमर ढल गई थी औ बुढापे ने गलबा पा लिया था। वह सोचने लगी, आज घुसमा कितनी खुश है। उसका पुत्र जो है। वह जवान है। पती उसकी काफीं कदर करता है। मैं बूढ़ी हो गई। अब मेरे बच्चान नहीं हो सकता। क्या मैं औंतरी मरांगी ? और घुसमा सौंतरी। इसकी नूंह आई कल को पोतरे होंगे। यह कैसे हो सकता है ?'

सुदेहा के मन को आग लग गई। उस ने धरम छोड़ दिया। ईरखा बढ़ कर वरण बणी। उस के अन्दर से देवी भाव उढ़ गए और चंडाल भाव आ गए। उस ने घुसमा के पुत्र का सिर काट कर धड़ से सिर दोनों ही उस तालाब में फेंक दिए जिस तालाब में घुसमा शिवलिंग तारा करती थी। आप सुदेहा फिर आ कर सौं गई। सुधरमे और घुसमा को पता न चला वह सोए रहे।

सुबह हुई, घुसमा उठी। बेटे को जगाने गई तो बेटे की चारपाई खाली थी, मगर बिसतर लहू से लाल हुआ पड़ा था। सुधरमा जोर जोर से रोने लगा, सुदेहा भी रोने में शामल हो गई, मेरा बेटा! आख आख कर वैण पाने लगी, मगर घुसमा न रोई, उस ने माटी के शिवलिंग बनाए, तलाब पर गई। शिवलिंग तार कर यां आप इस्नान करने लगी तो पानी में खड़ाक होया यां देखा तो उस का बेटा सरोवर से इस तरह बाहर निकला जिस तरह वह इस्नान करता हुआ टुबी मार कर फिर ऊपर आया हो, 'जै शिव शम्भू !' उस के होंठों पर था, घुसमा ने भाग कर बेटे को पकड़ लिआ। प्यार किया और फिर पूछा--

बेटा! यह क्या भगवान की माया? आप तो...!

घुसमा पूरी बात न कर सकी। वह मां थी इस लिए उस के मूंह से मर गया शब्द न निकला, वह कोई और बात पूछती।

उस के बेटे ने कहा - मासी ने मुझे काट कर सरोवर में फैंक दिया मगर शिव शंकर भगवान ने मुझे बचा लिआ है।

घुसमा भगवान शंकर का जस करने लग पड़ी तो उसी समय भगवान प्रगट होए घुसमा की भगती और हौंसले पर भगवान बहुत खुश होये और कहने लगे, 'घुसमा! आप की सौंकन को मार देते हां। उस पापन को डंड जरूर मिलना चाहिए।'

'नहीं भगवान! ऐसा न करना। उस को रंज आया होगा। आप ने ही तो गोदी में सन्तान नहीं दी। यह जानते हुए भी कि एक स्त्री पति प्यार के साथ सन्तान को कितना चाहती है। सन्तान के बदले कष्ट उठाती है। भगवान!'

घुसमा के इस निरवैरता वाले सुभाव को देख कर भगवान बहुत खुश होए और आपणी शक्ति से सुदेहा को बेटा ढूंढने के बहाने

तलाब के कनारे बुला लिया और वर दे कर उस की आयु उनीस बीस वर्ष की जवान कर दी । आपणे आप को जवान हुई देख कर उस ने भगवान शंकर के चरनों पर मथा टेक कर कहा, 'हे भगवान ! मुझे जवान क्यों किया ?'

भगवान - सुदेहा ! तुझे इस लिए जवान किया है कि दो बेटों को जन्म देवें। तेरी मां बणने की भूख दूर हो जाए ! तेरी इच्छा पूरन होएगी। सुधरमा भी आप को नजर आया करेगा।

इस के पश्चात घुसमा ने बेनती करी, 'हे भगवान ! अच्छा तो है कि आप यहाँ जोती लिंग सरूप में रहें तो आप के दर्शन कर लिया करां और कलयुगी जीव भी आप की पूजा करके जीवन-कल्यान और दुनिआवी सुख और लोड़ाँ प्राप्त कर लिया करनगे।' उस दी बेनती भगवान ने प्रवान कर लई । तब से उस अस्थान पर भगवान शंकर जोती लिंग सरूप में रहते हैं और तीरथ का नाम घुसमा के नाम पर घुसमेश्वर प्रसिद्ध हुआ भाव कि घुसमा का वडा प्रमेश्वर है उस की कल्याण करन वाला। मेले लगते और पूजा पाठ होते हैं भगत जन यात्रा करते हैं।

२. नागेश्वर और लंकेश्वर

यह तीरथ दोनों दुआरका - गोतम दुआरका और बेट दुआरका के बीच में है। इस की पूजा बहुत होती है। शिव पुराण के मुताबक इस की कथा इस तरह बताई जाती है, एक वैश सुप्रीया शिव जी महाराज का भगत था। वह रात दिन शिव भक्ति में लगा रहता। एक दिन उस को दूर जाना पड़ा। रास्ते में भियाणक जंगल था और दैंतों का पहरा। दरिया पार करके जाना था।

बेड़े में बैठ कर जिस समय दरिया पार होने लगे तो साभी यात्रूओं को दैंतों ने आ घेरा। उन दैंतों को देख कर यात्रू डर गए और वह

www.9009.co.in

यात्रीयों को आपणे जंगल में ले गया। उस ने हुकम दिया, 'कोई शिव, प्रमात्मा या देवताओं की पूजा न करे।' पर सुप्रीआ ने शिव पूजा न छोड़ी। जब मारने लगे तो उस समय शिव शंकर प्रगट हुए। आपणे भगत की लाज रखी और ऐसा शस्त्र दिया कि सुप्रीआ ने सारे दैंतों को मार दिया। सभी यात्रीयों की जानें बच गई और दोबारा सुप्रीआ ने भगवान शंकर के आगे बेनती की कि 'हे भगवान्! आप जोती लिंग सरूप यहाँ बिराजो तो जो जगत के जीवों का कल्याण होता रहे। सभी आप की भगती करेंगे। मैं आप के बखशे जीवन पर सेवा करांगी।

सुप्रीआँ की बेनती भगवान शिव शंकर ने प्रवान कर ली और उस स्थान पर बिराजे। वह स्थान तीरथ बण गया।

३. सेंतबंद रामेश्वर

इस जोती सरूप लिंग को रामेश्वर तीरथ भी कहा जाता है और यह तीरथ दक्षिण हिंद सागर रास कुमारी के किनारे है, जहां लंका को रास्ता जाता है। श्री रामचन्द्रकी यादगार है। यहां ही भगवान राम जी ने शिव शंकर को याद किया था। उन के कहने पर ही 'जोती सरूप लिंग' बणे और महान तीरथ है।

४. श्री मलाकरजन तीरथ

यह तीरथ कृष्णा नदी के किनारे पर (मद्रास) में है। इस की पूजा दखण के मद्रासी लोग बहुत करते हैं। वह लोग इस तीरथ की यात्रा करने से दो लाभ मिले समझते हैं। एक तो मन को शांती दूसरा आपणे मां बाप का सतिकार। शिव जी के दो पुत्र थे गणेष ते कारतिक। यह दोनों ही एक बार इस बात से झगड़ पड़े कि पहले

www.9009.co.in

विवाह कौण करे और विवाह करना था बुधी और सिधी से। दोनों बहुत सुन्दर कन्या थीं। उन के रूप की चरचा थी। रूपवान सुन्दरीयों को कारतक विआना चाहता था वह आप सुन्दर था। गणेष का मूंह हाथी का होने के कारण वह अकलमद तो था, पर इतना सुन्दर नही था। लड़ाई बढ़ती गई तो जब लड़ कर मरने लगे तो शिव जी बीच आ गए। उन्होंने दोनों को कहा कि वह धरती का चक्र लगाने के लिए जाएं, जो पहले आ जायेगा, वह ही बुधी और सिधी से विवाह करवा लेगा। दोनों भाईयों ने यह शरत मान ली और कारतक दौड़ उठा। पर गणेष न दौड़ा और उस ने सोचा कि ग्न्थों में लिखा हुआ है कि रूदर खंड में वह पुरष जो मां बाप की सात प्रक्रमा कर ले तो संसार का चक्र काटने का फल उस को मिल जाता है। उस ने यह चालाकी की। मां बाप को बैठा कर सात प्रक्रमा ले ली और धरती के चक्र का फल प्राप्त कर लिया।

यह देख कर पारवती और शिवजी ने गणेष का विवाह बुधी और सिधी से कर दिया। दूसरी और कारतक अकेला ही धरती का चक्र लगाता रहा और कई साल बीत गए। पर पारवती और शिवजी ने उस को समझाया कि तुम्हारे दौड़ने भजने का अब कोई फल नहीं, क्योंकि तूं बाजी हार गया है। तब वह गुस्से में आया पर फिर भी दौड़ता गया पर आगे नारद ने कारतक को समझाया कि वह न दौड़े क्योंकि वह शरत हार चुका है। यह सुण कर कारतक को गुस्सा आया और सैल पर्वत पर पहुंच कर समाधी लगा कर बैठ गया और यह प्रतिज्ञा की कि वह आपणे मां बाप के दर्शन नहीं करेगा।

पर जब भगवान शिव को पता चला तो वह कारतक के पास गया तो वहां पर भगवान शिव - शंकर जी प्रगट हुए। कारतक को रोका

www.9009.co.in

उस सिला का नाम मलकारजन जोती लिंग तीरथ है। इस तीरथ पर बहुत लोग जाते और श्रद्धा रखते हैं।

५. सोमनाथ

यह मन्दिर काठी आवाड़ (गुजरात) में एक महान विशाल और पूजनीक मन्दिर है। इस मन्दिर को अमीर देख कर दसवीं सदी में महिमूद गज़नवी ने लूटा था और कई करोड़ के हीरे जवाहरात ले गया। यह मन्दिर भी शिव जोती सरूप लिंग मन्दिर है और इस की कथा पुराणों में इस प्रकार लिखी है। दखश प्रजापती की सताईस लड़कीया थीं। उस ने उन सताईस की सताईस ही चन्द्रमा से विआह दी। चन्द्रमा ने उन में से रोहणी को प्रवान किया। बाकी की प्रवान न हुई तो उन्होंने आपणे बाप से इस बात का गिला किया। उस को इस बात का बहुत दुख हुआ। उस ने चन्द्रमा को श्राप दिया कि तुझे खई रोग हो तब ऋषी के श्राप देने पर चन्द्रमा को सचमुच ही खई रोग हो गया। उस में जो शीतन किरनें थी वह गरमा गई। जिस कारन लोक प्रलोक में तंगी महिसूस की गई। तब देवते घबरा गए और बड़े देव ब्रह्मा के पास गए। उन से मिल कर पूछा कि चन्द्रमा का खई रोग कैसे दूर होगा। उन को दखश प्रजापति ने श्राप दे दिया है।

ब्रह्मा जी तीन काल का ज्ञान रखने वाले थे। उन्होंने दिव्य दृष्टि से देख कर उत्तर दिया - 'हे देवताओ ! चन्द्रमा के लिए अब यही ठीक है कि वह प्रभास तीरथ पर जा कर तपस्या करे और महां मृतओ महां-मन्त्र का जाप करवाए वह जाप दस करोड़ होणा चाहिए। चन्द्रमा ने इस प्रकार छः महीने घोर तपस्या की, आखिर भगवान शंकर ने दर्शन दिए। उन्होंने चन्द्रमा को अमर होने का

वर तो दे दिया मगर साथ ही कहा कि पंद्रां दिन बड़ता और पंद्रां दिन घटता रहा करेंगा और जिस दिन पूरा होवेंगा उस दिन तुझे पूरन सीतल किरनां मिल जाया करेंगी । उस समय चन्द्रमा और देवतों ने भगवान शंकर के आगे बेनती कीती कि वह धरती के जीवों के लिए चोती लिंग रूप सोमनाथ के अस्थान पर बिराजमान हों । इस मन्दिर की पूजा बहुत है ।

६. श्री महां कलेश्वर

यह तीरथ शिरपा नदी के कनारे पर है । इस की कथा भी इस तरह लिखी है कि यहां शिव शंकर का भगत ब्रह्म रहता था। उस के चार लड़के थे । उन की उपमा चारों तरफ फैली तो शिवजी की उपमा को सुन कर दूखण दैंत गुस्से में आया तो उस ने दैंतों के साथ मिल कर ब्राह्मण पर चडाई कर दी। उस दैंत को रोकने के लिए महां शंकर प्रगट हुए दैंत को मारा और ब्राह्मण को बचाया, इस जोती स्थान को महां काल या महां कलेश्वर कहा जाता है ।

७. केदार नाथ बदरी नाथ

यह दोनों तीरथ कैलाश प्रबत की चोटी पर बरफानी इलाके में है । इन दोनों तीरथों की पूजा बहुत होती हैं। यहां नर और नराइण ने घोर तपस्या की थी । भगवान ने प्रगट हो कर दर्शन दिये थे और शिला रूप में आपणी महां काल शक्ति को शिव शंकर यहां छोड़ गए ।

८. भीम शंकर

यह तीरथ आसाम देश में है । दरिया ब्रह्म पुतर दरिया की पहाड़ीयों में है, पुराण कथा इस तरह बताई जाती है कि एक

राजा था, वह राजभाग छोड़ कर शिवशंकर की भगती करने लगा।

उस पहाड़ी इलाके में एक भियाणक दैंत भीमा रहता था, वह शिव भगतों को जीने नहीं देता था उन्हों के साथ दुश्मनी रखता। वह दैंत राजे कामरूपेश्वर के पास आया और उस ने कहा, 'बताओ किस की पूजा करते हो।' राजे ने उस को उत्तर दिया, मैं शिव शंकर की पूजा करता हूं और न किसी से डरता हुं और न जानता हूं। यह सुन कर भीमा क्रोधवान हुआ और उस ने राजे को मारना चाहा, मगर शिव शंकर ने प्रगट हो कर भीमें दैंत को मार दिया और उस स्थान पर आपणा जोती सरूप छोड़ा। इस का नाम भीम शकर लिंग है।

९. ओअंकारेश्वर जी

यह मन्दिर ओअंकार नाथ की भगती के कारन काइम हुआ और नरबदा नदी के कनारे है। इस की शोभा पूजा भी बेअंत है।

१०. श्री विशेश्वर जी

यह जोती लिंग बनारस में है, बनारस कांशी को भी कहा जाता है। कहिते हैं कि यह नगरी अटल और असथिर रहने वाली है। किसी तूफान और परलो का इस पर कोई असर नहीं होता। शिव जी इस नगरी पर बहुत परसंन हैं। जिस समय कोई परलो आती है तो शिव जी आपणे त्रशूल पर उठा कर इस नगरी को बचा लेते हैं। इस स्थान पर विष्णु जी ने घोर तपस्या कीती। सृष्टी की उत्पती भी इस स्थान पर ही नाभ कमल से ब्रह्मा पैदा हुआ था। और भी बहुत सी इस नगरी की महिमा है, जिस तरह कोई पुरष इस नगरी में चलाना करे वह सीधा स्वर्गों को जाता है। जम इस को कुछ नहीं कहिते, क्योंकि शिव जी महाराज

www.9009.co.in

यहां बिराजमान हैं।

११. त्रियंबकेश्वर

यह तीरथ गुदावरी नदी के किनारे हैं। दक्षिण में गुदावरी उतरी हिंद की गंगा की तरह पूजा होती है। कहते हैं गोतम रिखी ने घोर तपस्या करके गुदावरी नदी को धरती के उपर ले आए थे। इस की महिमा बहुत बड़ गई। शिव जी महाराज प्रगट हुए तो गोतम को साक्षात दर्शन दिये। गोदावरी और गोतम ने बेनती करी कि शिव शंकर जोती सरूप में यहाँ रहें ताकि कलयुगी जीवों का उधार हो सके। गोदावरी के उदगम स्थान के पास त्रियंबकेश्वर जोती लिंग के सरूप में बिराजमान है।

१२. वैद्य नाथ

यह जोती लिंग ई. आई. रेलवे आसी छीह सटेशन के पास हैं। इस इलाके को पुराणे समय में मंथाल देश भी कहा जाता था। इस लिंग के प्रगट होने की कथा इस तरह बताई जाती है-- लंका के राजा रावण ने हिमालीया के बरफानी घर में कठन तपस्या कीती। भगवान शंकर न रीझे। आखर तपस्या की नौबत यहाँ तक पहुंच गई कि रावण ने आपणे दसों सिरों को काट कर शिवलिंग पर चढ़ाने की सलाह कर ली। सलाह करने के बाअद जलदी ही एक सिर काटा। उस के छोटे छोटे टुकड़े करके और शिवलिंग पर चढ़ा दिये। इस तरह नौं सिर काट कर चढ़ा दिये। जब दसवां सिर काटने लगा तो भगवान शंकर जी प्रगट हुए और उस को दसवां सिर काटने से रोक लिया। रावण के नौवें सिर जैसे थे वैसे ही उस के धड़ के साथ जोड़ दिए। उस को भगवान शंकर ने कहा - कोई वर मांग ले

www.9009.co.in

यह सुन कर रावण बहुत खुश हुआ और बहुत से वर मांगे परंतु यह भी वर मांग लिया कि इस शिवलिंग में जोती सरुप होकर बिराजो तो मैं इस लिंग को लंका में ले जाउं । शिव शंकर ने उस की प्रारथना कबूल कर ली मगर यह शरत लगाई कि रावण लंका तक शिवलिंग को धरती पर न रखे धरती पर रखेगा तो इस की शक्ति दूर हो जावेगी । शंकर की आज्ञा पाकर रावण शिवलिंग को उठा कर लंका की तरफ भाग उठा । भगवान शिव शंकर ने आपणी जोती शिवलिंग में स्थपात तो कर दी, मगर वह खुश नहीं थे, कि रावण उस शक्ति को लंका में ले जावे । क्योंकि रावण दैंत था, वह मनुखता का भला नहीं कर सकता था, उस का मन हंकारी था, वह चाहता था कि शक्ति हासल करके खुद ब्रह्मा बने तो मन मानीयां करे । भगवान शंकर ने नवां ही बहाना बना कर रावण से आपणी शक्ति वापस ले ली । वह बहाना यह था कि रावण जिस समय 'चिता-भूमि' स्थान पर पहुचा तो उस को पेशाब ने बहुत जोर डाला । शिवलिंग उठा कर पशाब नहीं कर सकता था । जेकर धरती पर रखे तो शिवलिंग धरती के साथ जुड़ जाना था । वह आगे नहीं जा सकता था, वह खड़ा हो गया तो उस ने चारों तरफ देखा, एक चरवाहा उसको गऊओं को चराता हुआ नजर आया । उसको पास बुला कद कहने लगा, 'हे लड़के! अगर तुम इस शिला को उठा रखें तो मैं पशाब कर लूं यह शिला भगवान शिव शंकर की पूजनीक जोती है इस लिए इस को धरती पर रखणा योग नहीं ।' रावण का यह बचन सुन कर लड़का मान गया और उसने शिव लिंग को उठा लिया । भगवान शंकर ने ऐसी खेड रची कि शिवलिंग लड़के को बहुत भारा प्रतीत हुआ तो उधर रावण का पशाब लंबेरा कर दिया । उस को पशाब करते हुए काफी समय लग गया, लड़के को जब भार लगा तो उसकी जान तंग हुई तो उसने शिवलिंग

को धरती पर रख दिया। उस समय शिवलिंग धरती में गडिया गया। रावण पेशाब कर के उठा। हाथ साफ कर के जब उठाने लगा तो शिवलिंग उस से उठाया न गया। रावण बहुत ज्यादा बली था, वह बड़ा हैरान हो गया कि छोटी सी सिला जिस को वह बड़ी आसानी से उठाया करता था अब उस से न तो हिलती ही है न ही उठती है। आखर वह जब आपणा सारा जोर लगा चुका तो निराश हो कर चलने लगा। चलते हुए ने शिवलिंग सिला में आपणा अंगूठा दबा दिया। उस दब से काफी डूघ पढ़ गया। जो आज तक कायम है। सिला वहाँ पर ही रही। रावण लंका चला गया। रावण के जाने के पश्चात देवते आए और उन्होंने जोती लिंग सरूप भगवान शंकर की पूजा की।

हे जिज्ञासू जनो ! इस सभी तीरथ स्थानों की यात्रा करने का महातम तब ही मिल सकता है जब कोई स्त्री पुरुष इन तीरथों से वापस आ कर किसी की निंदा न करे। चोरी यारी का त्याग कर के हरी नाम का सिमरन करे। पहले समय में जो इन तीरथों की यात्रा करना चाहता थ' वह गृहस्त और घर का त्याग कर के सन्यास धारण कर लेता। मोह, माया ममता और लालच मान अपमान सब का त्याग करके हरी चरनों से लिव जोड़ लेता था। वह फिर तीरथों की यात्रा करने के पश्चात किसी न किसी तीरथ पर ही आपणी समाधी लगा कर बैठ जाता। और वहां पर ही प्राणों का त्याग कर के हरि के द्वार बिराजता।

★

www.9009.co.in

राजा जनमेजे को कोहड़ होना और हटना

राजा जनमेजा के मती बरजि बिआसि पड़ाइआ ॥
तिनि् करि जग अठारह घाए किरत न चलै चलाइआ ॥४॥
(प्रभाती म: १)

महाँ भारत की लड़ाई के पश्चात राजा जनमेजा प्रतापी राजा हुआ है। सतिगुरू नानक देव जी बचन करते हैं कि जनमेजे को बिआस ऋषी ने पढ़ाया। कथा करवाई और १८ पुराणों की कथा सुणने वाले, यज्ञ करने वाले को भी कोहड़ हो गया। जो लिखत है वह मिट नहीं सकती। उस ने महां-भारत की कथा सरवन की तो उस का कोहड़ हट गया।

राजा जनमेजे का स्वभाव था कि वह हर बात पर शंका करता था और शंका के कारण ही उस के नाक पर कोहड़ रहि गया। नहीं तो वह भी ठीक हो जाणा था।

बिआस जादव कुल की कथा कर रहा था। कथा सुणते हुए राजा जनमेजे ने कथा पर शक करके पूछा - हे मुनी! मेरा शंका है, अगर कृष्ण जी खुद भगवान थे तो उन के होते पांचों पाण्डवों को क्यों दुख उठाने पड़े? आप वह जरासिंध से क्यों खाते रहे? यह क्या भेत है? इस बाबत आप विस्तार से रोशनी डालें। ज्ञानी भी कई बार अन्धेरे की और ले जाता है।

बिआस बहुत ज्ञानी और सिआणा पण्डित और त्रैकाल दर्शी था। वह मन की और जन्मों की बातें जाणता था। उस ने राजा को देखा और कहा, 'हे राजन! यह ठीक है श्री कृष्ण जी आप खुद प्रमेश्वर

www.9009.co.in

थे, यह भी ठीक है कि वह पांचों पाण्डवों की सहायता करते थे। द्रोपती की लाज उन्होंने रखी थी पर होणी हो कर रहनी है, जो कर्म रेखा है वह मिटती नहीं। भावी को रोकने वाला कोई नही। भावी कई बार खुद अवतारों पर भी वापरती है वह टलती नहीं।

जनमेजा - मैं यह समझता हुं कि मनुख को जो भी ज्ञान हो, वह कभी भूल नहीं सकता। अगर मैं देखूं आगे कुआं है उस में गिर कर डूब जाऊंगा, मैं कभी कुएं के नजदीक नहीं जाऊंगा। आग को पकड़ने के लिए सिआणा पुरुष कभी हाथ नहीं बड़ाता। मैं कहता हुं कि अगर श्री कृष्ण जी पाण्डवों को उन के भविखत जीवन बारे बता देते तो उनसे इतनी भूलें नहीं होणी थीं। मनुष्य फिर भी पशुओं से ज्यादा सूझ बूझ रखता है।

यह सुण कर बिआस हंस पड़ा। उस ने एक बार राजा के मस्तक की और देखा ओर कहने लगा, 'हे राजन! सुण तेरे भविखत जीवन के बारे में तुम्हें बताता हूं। तेरी मौत कोहड़ से होगी। बहुद दुखी होकर मरोगे। एस समय मैं भी कुझ नहीं कर सकता पर अगर मौत टलेगी तो भरोसा करने से।

जनमेजा (हैरान हो कर) 'मुझे कोहड़ क्यों होगा? मैंने क्या पाप किया है? यह आप क्या कहि रह हैं?

बिआस (हंस कर) - पाप किया नहीं करोगे। तेरे करम में यही तो लिखा है। ज्ञान करवाने पर नहीं समझोगे, ऐसा समय भी तुम पर आ जायेगा।

जनमेजा - यह कभी भी नहीं हो सकता कि मुझे मेरे जीवन पर खतरों का ज्ञान हो जाए और मैं फिर भी भूल करां। मैं कभी भूल नहीं कर सकता।

बिआस - आप का यह कहना भी तो भूल ही है। मनुष्य को कभी

www.9009.co.in

किसी बात का हंकार नहीं करना चाहीए। हंकार बुरा है प्रमात्मा को भी अच्छा नहीं लगता।'

जनमेजा - मैं तो हंकार नहीं करता। मैं तो मामूली आपणी समझ की बात करता हूं कि अगर मुझे आपणे जीवन के बारे में पता चल जाए तो मैं खतरों के मोड़ से जरूर बचने का यतन करूंगा।

बियास - 'सुण राजन ! एक समय ऐसा आएगा 'आप एक सुन्दर राजकुमारी को पहले दासी बनाओगे, फिर उस दासी की सुन्दरता और जवानी पर मोहत हो कर अनविआहिआं ही उस को रानी बना लेंगे। दूसरी रानीयों को भूल जाओगे, उस के साथ प्यार करोगे। एक दिन घोड़ी पर सवार हो कर शकार खेलने जाओगे, तालाब के कनारे घोड़ी बांध कर सौं जावोगे। जब आप सोए होंगे तो पाणी से एक घोड़ा निकलेगा, उस घोड़े से आप की घोड़ी मिल जाएगी। घोड़ी के मिल जाने के पश्चात घोड़ा फिर तालाब में ही अलोप हो जाएगा। दिन पा कर घोड़ी सुएगी, उस घोड़ी के गरभ से सिआम रंग का घोड़ा पैदा होगा उस घोड़े को आप बड़े प्यार के साथ पालोगे। जब घोड़ा जवान होगा तो आप असमेध यज्ञ करेंगे उस यज्ञ समें दासी रानी आप के पास आएगी, उस ने हलके वस्त्र पहिने होंगे। वह सभा में नंगी हो जाएगी। उस को देख कर ब्राह्मण लड़के हंस पड़ेंगे। आप क्रोध में आकर ब्राह्मणों को मार डालेंगे। ब्राह्मण हतिया के कारन आप के शरीर को कोहड़ हो जाएगा। उस कोहड़ को हटाने के लिए आप को यज्ञ करना पड़ेगा। महांभारत की कथा सुनोगे। कथा सुनते सुनते एक समय ऐसा आएगा कि जब आप नाक झड़ा कर कथा पर किंतू करोगे। उस किंतू के कारन आप के नाक पर कोहड़ रैह जाएगा उस कोहड़ से आप की मृतयु होगी। यह भावी अट्टल है होणी हो कर रहेगी चाहे आप लख यतन करो।'

जनमेजा - 'मैं आप पासों सभ कुछ सुन लिया है । न मैं दासी के साथ प्यार करांगा न घोड़ी पर चड़ कर दक्षिण की तरफ शिकार को जावांगा। जेकर जावांगा तो पाणी किनारे घोड़ी नहीं बांदूंगा। जेकर यज्ञ करूंगा तो दासी रानी को पास नहीं बालूंगा। अगर आ भी जाए तो उनके नंगी होने पर मैं क्रोध नहीं करांगा और न क्रोध में आ कर ब्राह्मणों को मारूंगा। अगर सभ कुझ हो जाए तो कथा सुनते समय कथा पर किंतू नहीं करांगा और न नाक झड़ाउंगा, क्योंकि मुझे ज्ञान हो गया है यह मोड़ खतरे वाले हैं इन से बचूंगा।'

बिआस - 'मैं भी यही चाहता हूं, आप बचो, मगर बचणा औखा है। अच्छा जो भगवान् को भावे।'

कुझ समय बीत गया । बिआस जी कथा करके चले गए। राजे जनमेजे के जीवन में खतरे वाले मोड़ आने शुरू हो गए। भावी ने राजे को भुला ही दिया कि बिआस ने उस को किसी खतरे का ज्ञान कराया था।

जनमेजा जितना समझदार था, उतना ही कामी था, उस को पता चला कि कांशी के राजे की दो सुन्दर राजकुमारीयां हैं । उन के रूप शोभा सुण कर राजे ने कांशी नरेश पर हमला कर दिया। राजे को जिस समय लड़ाई के कारन का पता चला तो उस ने झट सुलह कर ली, आपणी दोनों राजकुमारीयों की राजे के साथ शादी कर दी। उन राजकुमारीओं के साथ एक दासी आई। वह बहुत सुन्दर और जवान थी। राजा उस के रूप पर मोहत हो गया, वह दासी के साथ प्यार करने लग पड़ा। जो बातें बिआस ने बताई थीं उन्हों में से पहली बात पूरी हो गई। राजे ने दासी अनविआही को राणीओं से पटराणी बणा दिया।

इसी भाव को ले कर गुरू जी ने फुरमाइओ, 'रोवै जनमेजा खोइ

www.9009.co.in

गइआ। एकी कारणि पापी भइआ।'

जनमेजा रोने लगा कि उस को यह मालूम नहीं होता कि वह क्यों पापी हुआ है ? किस तरह पापी हुआ ? आगे कथा इस तरह है--

राज महलों में दासी का बोल बाला हो गया। वह रानीयों से अच्छा से अच्छा पहनिने लगी। वह काम को हाथ न लगाती मगर रानीआं उस की सेवा करने लगीं। दासी रोजाना रात को राजे की सेजा पर सोने लगी, वह राजकुमारीयां दासीयों की तरह हो गईं, उन दुख सुख को कोई न फोलता, वह छुटड़ हो गईआं।

राजे के वजीर ने सुदागरों से सुन्दर घोड़ी खरीद लई, घोड़ी नहीं वह होनी थी जो घोड़ी का रूप धार कर राजे के शहिर में आई। वजीर ने राजे को घोड़ी दिखलाई और कहा कि एक बार इस पर चढ़ कर जरुर शकार खेलने जावो, यह हवा की तरह तेज चलती है। पानी का बरतन भर कर इस पर रख देवें तो वह भी डुलता। ऐसी तेज चलने वाली घोड़ी कभी न देखी सुनी। राजा वजीर की बातों में आ गया। घोड़ी उपर चड़ कर अकेला ही शिकार को चला गया। सुबहा का शिकार के पीछे लगा, दुपहिर हो गई शिकार हाथ न आया' सूरज की गरमी राजे को व्याकुल करने लगी। वह व्याकुलता को दूर करने के लिए एक जल के किनारे बोहड़ के नीचे राजा घोड़ी से उतर आया। घोड़ी को बोहड़ के तनों से बांध दिया, लंमे पन्ध के सफर के साथ राजा थक गया था, वह लेट गया, लेटते लेटते उस को नींद आ गई, राजा सौं गया, उस के सोते सार ही सचमुच जल से कोतल घोड़ा निकला। वह धीरे धीरे चल कर घोड़ी के पास आ गया, घोड़ी उस को देख कर डरी नहीं। भुड़की नहीं सगों उस के साथ

लगी। लाड करते-२ घोड़ा घोड़ी के ऊपर चढ़ गया। घोड़ी लग गई। बाद में घोड़ा पाणी में छिप गया। वह बाहर न आया जैसे कोई फरिश्ता या आदमी शक्ति वाला था। दुपहिर को राजा की नींद खुली तो वह आपणे राज महिल में आ गया। दिन पूरे होने पर घोड़ी ने शियाम रंग का वछेरा दिया। राजा ने उसे असमेध यज्ञ के लिए खुला छोड़ा। किसी ने उसको रस्सा न डाला। राजे जनमेजे को खुशी हुई कि वह चक्रवरती राजा बण गया है। सब और उसकी महिमा हो रही थी। उस ने असमेध यज्ञ की त्यारी करनी शुरु कर दी।

जब राजा असमेध यज्ञ की पूजा करने सभा में बैठा था तो उस की दासी राणी आई, जो उस को बहुत प्यारी थी। उस ने हल्के वस्त्र पहने थे। वह उठ कर जाने लगी तो हवा के बले से राणी के वस्त्र ऊपर हो गए। वह नग्न हो गई तो ब्राह्मण हंसने लगे। दासी राणी शरम से कुमला कर बैठ गई। ब्राह्मणों पर राजा को बहुत क्रोध आया। राजा ने हुकम दिया सभी ब्राह्मणों को कत्ल कर दिया जाए।

राजा जनमेजा ब्यास ऋषी के भविखत के वाक भूल गया और यज्ञ पर आए सभी ब्राह्मण कत्ल करवा दिए। ब्राह्मणों के कत्ल से राजा को ब्रह्म हत्या लग गई। वह कोहड़ा हो गया। राजा दुखी हुआ। राजा को क्रोध ने पागल किया था। राजा ने सभी वैद्य हकीम बुलाए पर वह रोग श्राप का था ठीक न हुआ। मुनी बिआस देव जी को बुलाया गया। मुनी ने राजा से कहा - 'हे राजन यह करमगत है। ऐसा होना था हो गया अब आपकी मृत्यु तो शायद इसी रोग से होगी।

www.9009.co.in

यह सुण कर राजा निराश हो गया। पर बिआस ने उस को भरोसा दिलाया कि अगर वह 'महां-भारत' की कथा मन चित लगा कर सुणे तो उस का कोहड़ हट सकता है। राजा ने यह बात मान ली और महां-भारत की कथा करवाने का यत्न किया। महां-भारत की कथा आरम्भ हुई।

'महां-भारत की कथा सुणाओ।' बिआस जी ने बेनती मनज़ूर कर ली और राजे को 'महां-भारत' की कथा सुणाने लगा।

'हे राजन! इस देश में एक सूरजबंसी राजा भरत हुआ है। यह बहुत बड़ा प्रतापी राजा था। उस राजे के नाम पर इस देश का नाम 'भारत खंड' या 'भारत देश' रखा गया है। इसी कुल में राजा 'रघु' भी हूआ था। यह श्री राम चन्द्र जी की कुल थी। रघु कुल में राजा 'यदु' हूआ। उस यदु की औलाद में राजा संतनु हूआ है। उस संतनु ने देव कंनिआ गंगा से शादी की। उस देव कंनिआ ने यह शर्त रखी थी कि राजा संतनु उस के पैदा हूए किसी भी बच्चे का मूंह नहीं देखेगा। अगर देखेगा तो गंगा अलोप हो जाएगी। गंगा के पेट से छः पुत्रों ने जन्म लिया। जैसे जैसे वह पैदा होते गए वैसे वैसे गंगा उन को जल प्रवाह करके खत्म करती रही।

राजा संतनु को समझ आ गई कि पुत्र तो हर एक को अच्छे लगते हैं। पुत्र जगत में पुरष का निशान होता है। गंगा की गोद में से जब सातवां पुत्र पैदा हुआ तो राजा ने उस पुत्र को नदी में प्रवाने न दिया। उस को पकड़ कर पालना शुरु कर दिया पर गंगा तो सचमुच गंगा नदी में अलोप हो गई। राजा संतनु को गंगा विछोड़े ने बहूत दुखी किया। वह रोज सुबह गंगा के किनारे जाकर गंगा का जाप जपता रहता इस प्रकार बिआज जी राजा जनमेजे को कथा

www.9009.co.in

सुनाते गए और वह 'सत बचन' 'जी हां' शब्दों में हुंगारा देता रहा। वह सचमुच एक मन चित हो कर कथा सुण रहा था। यहां तक कि कथा सुणने से उस के तन कोहड़ के ज़खम सूखने शुरु हो गए और जलन भी कम होने लगी।

'जिस पुत्र को संतनु ने पाला।' बिआस जी कथा को सुनाते ही गए। उस का नाम भीष्म था क्योंकि उस ने भीषम प्रतिज्ञा की थी सारी उमर शादी न करवाने और जती रहने का प्रण कर लिया था। वह इस लिए कि राजा संतनु हर रोज गंगा पर जाया करता था, वहां मलाह की लड़की सत्यावती भी जाया करती थी। उस से राजा को प्यार हो गया। जब उस ने विवाह के लिए कहा तो उस लड़की और उस के बाप ने यह शर्त रख दी - 'हे राजन! शादी तो हो सकती है अगर दो शर्तें मानो - एक शर्त यह कि आप का पहिला लड़का सारी उमर कवारा रहे। दूसरी आप के मरने के बाद राजगद्दी पर सिर्फ सत्यावती की कुखों पैदा हुए लड़कों में से कोई लड़का ही बैठेगा। राजा यह शर्त सुण कर घबरा गया। पर जब भीषम को इस का पता चला तो उस ने दोनों शरतें मान ली और राजा संतनु का दूसरा विवाह सत्यावती से हो गया। राणी सत्यावती के घर दो पुत्र हुए। चित्रांगद और बचित्र बीरज दोनों का बिआह हो गया। पर उन दोनों की मृत्यू हो गई। इन की औलाद भी न हुई। जिस समय सत्यावती जोजन गंधारी) ने देखा कि उस का पोत्रा कोई नहीं और राज भाग किसी और के पास चला जायेगा तो उस ने सौंकण के पुत्र भीषम से मिल कर कहा - 'हे बेटा! मेरी एक बात मानो। यह सुण कर भीषम ने कहा। कौन सी बात?

तुम्हारे दोनों भाइ मर गए हैं। तुम्हारी भाबीयां अम्बिका और

अंबालिका दोनों पुत्रहीन हैं। वह अभी जवान हैं, तुम उन को पुत्रदान बख्शो तांकि बाप का नाम रहे, वंश खत्म न हो।

गंधारी की यह बात सुण कर भीष्म उदास भी हुआ और भीष्म बोला, 'हे माता! इस बारे तो आप मुझसे पहले प्रतिज्ञा ले चुके हैं। किसी कीमत पर प्रतिज्ञा भंग नहीं करनी। मैं तो ब्रह्मचरज धारण कर चुका हूं।'

गंधारी उदास होकर चली आई, तब याद आया संतनु के साथ शादी होने से पहले (गंधारी सत्यावादी ने बेड़ी में परासर से भोग किया था। जिसका फल वह कुआरी गर्भवती हो गई थी और जिस से पेट में लड़का पैदा हुआ था। वह बिआस था। वह पुत्र के पास गई और यही बात कही। वह मान गया। बिआस ने आकर गंधारी की नूंहें अंबका और अंबालिका के पास रहा। अंबका से धृतराष्ट्र पैदा हुआ जो अंधा था जिसका अंधे होने का कारण यह था कि अंबका बिआस को अच्छा नहीं समझती थी। वह बिआस की सूरत नहीं देखना चाहती थी। इसलिए भोग के समय आंखें बन्द कर लीं थी। जिसके कारण धृतराष्ट्र अन्धा ही पैदा हुआ। अंबालिका से लड़का हुआ था जिसका नाम पंडू था बिआस ने भोग के लिए फिर अंबका को पास बुलाया। वह तो बिआस को न चाहती थी इस लिए वह बिआस के पास न गई पर आपणी दासी को बिआस के पास भेज दिया। दासी के पेट से बिदर पैदा हुआ। जिस बिदर को सदा दासी सुत कहा जाता रहा।

धृतराष्ट्र, पंडू और बिदर की पालना भीष्म ने की। तीनों को शस्त्र विद्या सिखाई गई। जब वह जवान हुए तो धृतराष्ट्र

www.9009.co.in

का विवाह गंधारी से हुआ और पंडू का कुन्ती और मादरी से किया। धृतराष्ट्र के घर सौ पुत्र और एक कन्या ने जन्म लिया। धृतराष्ट्र का बड़ा पुत्र दुर्योधन था। पंडू के पांच पुत्र थे यह सभी कुन्ती के थे। इन पांचों के नाम युधिष्टर, अरजन, भीम, नकुल और सहदेव। इन पांचों भाईयों को पांडो और धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों को कौरव कहा जाता था। राजा पांडू तीरथ पर मादरी के साथ भोग करने के कारण मर गया। उस के मरने पर राजगद्दी पर अन्धा धृतराष्ट्र बैठा। पांडो मासूम बच्चे थे। जब वह सब जवान हुए तो धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन ने पांचों भाईयों को मार देने की सलाह की। तांकि वह राज का हिस्सा न मांगे। लाख के मन्दिर में जलाने का यत्न किया पर वह सुरंग बना कर बच गए। कई साल साधूओं के भेम में घूमते हुए राजा दरुपद की नगरी चले गए वहां उसकी कन्या कृष्णा (द्रोपती) का स्वयंबर था। उस में अर्जून ने द्रोपती को जीत लिया। कुन्ती के बचन के अनुसार पांजों भाईयों ने उस से विवाह किया दरुपद और क़ष्ण के समझाने पर धृतराष्ट्र ने आधा राज्य पाण्डवों को दिया। राजधानी इन्द्रप्रस्थ में पांण्डवों ने असमेध यज्ञ रचा। उस यज्ञ में दुर्योधन और उस के भाई भी गए। पाण्डवों ने एक ऐसा महल त्यार किया हुआ था जो माया जाल था। जहां पाणी मालुम होता था वहां फर्श था। जहां पर फर्श मालुम होता था वहां पर पाणी था। उस महिल को देखता हूआ दुर्योधन धोखा खा गया वह फर्श को पाणी समझ पाणी के सरोवर में गिर गया। द्रोपती सहेलीयों समेत देख रही थी। उस ने अपने हंकार में आ कर के हंस कर ऊंची आवाज में कहा। कि देखो यह अन्धे की औलाद

अन्धी' यह वाक दुर्योधन ने सुण लिया। सुन कर उसके मन को आग लग गई। उस ने मन ही मन फैसला कर लिया कि मैं बाप का बेटा नहीं अगर द्रोपती तुझे अलफ नंगी करके भरी सभा में आपणी जांघों पर ना बैठाऊं। यह सोच कर वह आपणे महिल वापस आ गया। पाण्डवों का घर समाप्त हो गया।

कथा के इस हिस्से में पहुंचने पर राजा जनमैजे के आधे शरीर का कोहड़ हट गया। उस का आधा शरीर कुन्दन की तरह साफ हो गया वह मन ही मन खुश हुआ। उस की सभी राणीयां देख देख कर खुश हो रहीं थी।

बिआस एक चित हो कर कथा करता गया। दुर्योधन बहुत ही चालाक था। शकुनी की सहायता से उस ने युधिष्ठर को बुलवा कर जूआ खेल कर धोखे से जुए में सारा राज भाग जीत लिया। यहां तक कि पांचों पाण्डव और द्रोपती को भी जीत लिया। जब द्रोपती जीत ली तो दुस्सासन को भेज कर द्रोपती को राज सभा में मंगवाया। दुस्सासन द्रोपती को केसों से पकड़ कर सभा में ले आया। दुष्ट उस को नंगी करने लगे तो श्री कृष्ण जी ने द्रोपती की लाज रखी। वह नंगी न हो सकी। साड़ी के अंबार लग गए। पाण्डवों को बारह साल का बनवास भोगना पढ़ा। तेरवें साल उन्होंने राज का आधा भाग मांगा तो दुर्योधन ने इंकार कर दिया।

श्री कृष्ण जी ने समझौता करवाने का बहुत यत्न किया पर उसकी सारी की सारी कोशिशें निसफल हो गई और महां-भारत का युद्ध हुआ। उस युद्ध में दुर्योधन और उस के भाई मारे गए। दुस्सासन को मार के उस युद्ध में भीम ने लहू की ढाई चुलीयां पी। उस लड़ाई में भीम ने ऐसे कौतक किए जो आश्चर्ज जनक थे। उस ने दुश्मन के हाथीओं को टांगों से पकड़ कर घुमा कर ऐसा ऊपर फैंका कि अभी

तक आकाश में घूम रहे हैं। नीचे नहीं आए।

यहां तक कथा पहुंची तो राजा जनमेजा हैरान हुआ कि उस के शरीर को शांती आ गई। शीतलता के साथ ही शरीर कुन्दन जैसा हो गया। उस के मन को खुशी हुई। पर नाक पर थोड़ा सा कोहड़ रहि गया। उस के रहने का कारण राजा ने पूछा तो बिआस ने कहा - 'हे राजन! आप को तो पहले ही कहा था कि कथा पर ना किन्तु नही करना। अगर ऐसा करोगे तो कोहड़ नहीं हटेगा। जब कथा यहाँ आई थी भीम ने हाथी ऊपर फैंके तो आप ने नाक चढ़ा कर शक किया। इसलिए यह ठीक नहीं होगा।

कथा का भोग पढ़ा पर राजा जनमेजे का नाक का कोहड़ रहि गया इस लिए 'हे जिज्ञासू जनों! जब कथा सरवन करिए तो कभी किन्तू न करें। अगर किन्तू करना हो तो उस ग्रन्थ की कथा सरवन नहीं करनी चाहिए।

★

जरासिंध को मारने की कथा

राजा बिहदरथ की दो राणीयां थी। दोनों राणीयों के घर पुत्र हुए एक पुत्र अच्छा था पर दूसरी राणी का पुत्र दो ढांगा थे। एक ओर टांग एक बांह और आधा सिर दूसरी ओर भी इसी प्रकार। ऐसा जन्मा देख कर दाई ने बाहर फैंक दिया।

जरा नाम की दैंतनी आई। उस ने दोनों हिस्से पकड़ कर जोड़कर एक किए और आवाज दी। इन में जान पड़ जाए तब रोने और हंसने

www.9009.co.in

लग पड़ें, उस दैंत पर इस बोल पर वह बच्चा जी पढ़ा और वह उठा कर घर ले गई। उस का नाम जरासिंध रखा, वह दैंत के पास पलता रहा। एक दिन ऐसा आया कि उस ने दैंतों की सैना को इकठ्ठा करके मगध देश को जीत लिया। और वहां का राजा बण गया उस की बहादरी और राज की धुमां पैं गईयां तो एक दिन वह राजा कंस का ससुर बणा।

राजा कन्स जब आपणे भनेवें श्री कृष्ण भगवान के हाथों मारा गया तो कंस की जगह् कृष्ण ने उग्रसैन को राज दिया और आपणे जवाई का बदला लेने के लिए जरासिंध ने उग्रसैन के राज पर आक्रमण कर दिया इस प्रकार जरासिंध ने कोई अठारह हमले मथरा और उग्रसैन के राज पर किए। न कृष्ण ही उस को मार सका और न ही कृष्ण की शक्ति को जरासिंध से नुकसान पहुंचा। और आपस में भिआनक दुश्मनी हो गई।

पांडवों ने जब असमेध जग का घोड़ा छोड़ा तो जरासिंध ने उस घोड़े को पकड़ कर बांध लिया। घोड़े को पकड़ने का मतलब था कि जरासिंध पांडवों को चक्रवरती होना प्रवान नहीं करता। अगर उन्हें प्रवान कराना है तो लड़ाई लड़ कर देखें।

असमेध जग के घोड़े को जब पकड़ा सुणा तो अरजन ने भीम और कृष्ण को साथ लेकर मगध देश पर हमला किया।

राजधानी गिरीबरज में भिआनक युद्ध हुआ। दौनों और की फौजें लड़ती रहीं, अन्त जरासिंध और भीम के बीच आपस में युद्ध होणा शुरु हुआ। भीम और अर्जून से जरासिंध न मरता देख कर श्री कृष्ण ने दोनों को इशारा किया, साथ ही काने को चीर कर भीमसैन को समझाया कि जरासिंध को चीर दें।

भीम ने जरासिंध को सजे पट पर पैर रख कर खबे को ऊपर

www.9009.co.in

किया तो उस के जोड़ खुल गए, वह देंतनी का पाला हुआ जरासिंध मर गया। गुरू महाराज का वचन है :-

जरासिंध कालजमुन संघारे ॥

(गउड़ी मः १)

★

श्री कृष्ण जी ने हाथी को मारना

राजा कंस चाहे कृष्ण जी का मामा था, मगर वह सदा श्री कृष्ण जी को मरवाने का यतन करता रहा, क्योंकि उस को आकाश वाणी हुई थी कि तूं अपने भानजे के हाथों मरना है।

कंस को मलूम था कि मुझे मारने वाला कृष्ण गवालियों के साथ रैंहता है, उस ने गवालियों के बालकों को मथरा पुरी में बुलाया, एक कुशती होनी थी, तो कृष्ण अकरूर, बलदेव और गवाले लड़कों के साथ मथरा गया मगर कंस ने कुवलीया नाम का हाथी अखाड़े के आगे खड़ा कर रखा था ताकि वह श्री कृष्ण जी को मार देगा।

जिस समय श्री कृष्ण जी हाथी के पास गए तो उन्हों ने महावत को कहा कि वह हाथी को पीछे कर ले, मगर महावत ने हाथी को पीछे ना किया तो श्री कृष्ण जी उस की सुन्ड पर मुक्कीयां मारी जाने लगे क्योंकि भगवान् श्री कृष्ण जी अवतार थे, इस लिए उन्हों की मुक्कीयों की मार हाथी न सहार सका और न हाथी सुन्ड के साथ कृष्ण जी को उठा सका। श्री कृष्ण जी ने ऐसे दाओ पेच हाथी के साथ खेडे कि वह धरती पर गिर कर मर गया। कृष्ण और बलदेव अखाड़े में पहुंच गए और कंस को मारा। श्री गुरू रामदास जी

www.9009.co.in

कुवलीया हाथी बाबत फुरमाते हैं :-

'कुवलीया पीड़ु आपि मराइदा पिआरा
करि बालक रूपि पचाहा ॥२॥' (सोरठि मः ४)

★

60. श्री कृष्ण और चंडूर का घोल

आपि अखाड़ा पाइदा पिआरा करि वेखै आपि चोजाहा ॥
करि बालक रूप उपाइदा पिआरा चंडूर कंसु केसु माराहा ॥
(सोरठि मः ४)

श्री कृष्ण जी और बलदेव जी जिस समय अखाड़े में खड़े थे तो कंस का पहलवान चंडूर आगे हो कर मजाक करने लगा, उस ने कहा - राजे का हुकम है कि मैं और आप घोल करें । महाराज बहुत खुश होंगे ।

चंडूर बहुत बड़ी आयु का था और उस के मुकाबले में कृष्ण जी और बलदेव जी बच्चे मलूम होते थे। 'हम हानियों के साथ कुशती करेंगे' श्री कृष्ण जी ने उत्तर दिया, मगर चंडूर हंकार में था और कंस की साजिश में शामल था।

'आप बच्चे थोड़े हो, हाथी को आप ने मारा। आओ, नखरे न करो घोल करें !' इस तरह चंडूर अखाड़े में वंगारने लगा।

चंडूर के साथ श्री कृष्ण जी ने घोल शुरू कर दिया, चंडूर का ख्याल था कि वह श्री कृष्ण जी को उठा कर मारेगा, मगर जिस समय वह घुलने लगा तो श्री कृष्ण जी उस को उस से बड़े पहलवान नजर आने लगे तो लोगों को बालक। घोल होता होता घसुंन मुक्की का दंगल शुरू हो गया। स्त्री पक्ष श्री कृष्ण जी के साथ हमदरदी

www.9009.co.in

करने लगे, घोल होता रहा। आखर ऐसी नौबत आई कि चंडूर आगे आगे चल पड़ा। कंस और उस के आदमी बहुत हैरान हुए। उन्हों ने चंडूर को कहा, हौंसला कर! बालक के आगे न लग! इस को उठा कर मार दे। यह क्या है तेरे आगे!' मगर चंडूर ने बोलने वालों को कोई उत्तर न दिया। वह डर गया, जो भी चोट उस को लगे वह ही भयानक होती। चंडूर को ठिबी मार कर धरती पर गरा दिया और पहले उस की छाती पर बैठा। फिर उस पर ऐसा बोझ डाला कि वह बौंदल गया। फिर बौंदले हुए को श्री कृष्ण जी ने उठा लिया और अखाड़े में घुमाया, देखने वाले हैरान हो गए और शाबाश देने लगे।

जो समझदार थे, उन्हों ने जरूर यह सोचा होगा कि शाईद यह वही बली होगा कि जिस के हाथों राजा कंस की मृतयु होनी है जो बड़ा पापी है। श्री कृष्ण जी ने चंडूर को उठा कर धरती पर फैंका। उस की हड्डीयां टूट गईं और उस की मृतयु हो गई। उस को मृतयु ने कंस के अखाड़े को उजाड दिया। गवाल लड़कों ने एक एक को पकड़ कर मारा और श्री कृष्ण जी ने कंस को मार दिया। श्री कृष्ण जी सच्चे थे, इस लिए उन की रक्षा प्रमात्मा आप करता था।

★

61. चंद्रावली के छलने की कथा

जुज महि जोरु छली चंद्रावलि कान कृष्न जादमु भइआ ॥

(आसा म: १)

यह बात मशहूर है कि श्री कृष्ण जी के चौगिरदे तिन सौ सठ गोपीयां थीं। उन गोपीयों में ज्यादा से ज्यादा सुन्दरीयां थीं। नाचती

और गाती, रासों में काम करतीं । मगर सभ से ज्यादा प्यारी 'राधा' थी ।

उन गोपीयों में एक गवाले की लड़की चंद्रावली थी। वह बहुत नाचती और गाती थी, मगर वह सदा श्री कृष्ण जी से दूर रहने का यतन करती । कितने यतन करने पर भी वह श्री कृष्ण जी उस को अपने पास न ला सका। भगवान अपनी माया से अनोखी लीला करा करते थे। दुनियां के लोग माया के चकर को नहीं समझ सकते थे। तिन सौ सठ गोपीयों के होते हुए भी माया रहत भगवान श्री कृष्ण जी जती-सती और ब्रह्मज्ञानी थे, जगत के लोग माया के रहस को नहीं समझते थे ।

चंद्रावली भगवान से दूर दूर रही। वह डरा करती थी। मगर थोड़े दिनों के बाहद उस की शादी हो गई तो वह सुसराल को चली गई। उस के सुसराल चले जाने के बाहद भगवान श्री कृष्ण जी ने अपनी माया का चमत्कार दखाना चाहा, क्योंकि स्त्री भी माया का एक अन्श है ।

श्री कृष्ण जी ने अपनी माया के बल से अपना शरीर बदल लिया । देखने वाले को वह स्त्री प्रतीत होने लगे। उसी तरह जेवर और स्त्री लबास हो गया । वह स्त्री की तरह और स्त्री की अवाज में चंद्रावल के सुसराल के घर चले गए। अपना नाम कांता रख लिया ।

'भैण चंद्रावली !' कांता रूप भगवान जी ने कहा ।

चंद्रावली पहचान न सकी। उस ने सिर से लेकर पांव तक देखा और हैरान हो कर, मगर प्यार से, कहने लगी, मैं आप को पहचान नहीं सकी । आप मेरी भैण किस तरह ? मेरी तो सकी भैण कोई नहीं, मैं तो अकेली माता पिता की बेटी हूं ।

'बहिन चन्द्रवली ! मैं तेरी भूआ की लड़की हां, छोटी होती का ही विवाह हो गया। हम आपस में मिल नहीं सकी। अब मैं तुम्हें मिलने के लिए आई हूं।'

चंद्रावली कोई उतर न दे सकी, उस को मानणा पढ़ा कि शायद कांता उस की सहेली या बहिन होगी। उस समय चन्द्रावली का पती कहीं बाहर गया था, उस की सास घर में थी, सास को मासी कहि कर माथा टेक दिया। बातें करती रही।

चन्द्रावली नदी से पाणी लेने गई तो कांता ने मथरा-बिंद्राबन, राधा-कृष्ण लीला आदि की साखीयां सुनाई और बातें करनी शुरू कर दीं। वह बहुत खुश हो गई थी। पर चन्द्रावली हैरान थी कि कांता सभी बातें कैसे जाणती थीं। कांता रूप भगवान ने कहा - चन्द्रावली बहिन तुम तो भगवान के चरनीं नहीं लगीं। परे परे ही रही। कितनी अच्छी है मुरली मनोहर !'

भगवान माया शक्ति से आपणी बातें आप ही करता रहा। वह सुणती गई। मुस्कराती गई पर उस ने कुछ भी उत्तार न दिया। भगवान ने माया शक्ति से उस के दिल दिमाग पर ऐसा चक्र लगाया कि उस को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह बिंदराबन में जमना किनारे थी और वह गोपीयों के साथ नाचती थी। गागर एक और रख कर वह नाचने लग पढ़ी। भगवान जी मुरली बजाने लग पड़े। वह नाचती और गाती रही। ऐसे कितनी देर हो गई। फिर घर आ गई।

देर से आई देख कर उसकी सास ने पूछा। चन्द्रावली इतनी देर करके क्यों आई ?'

'मां जी ! बहिन से बातें करने लग गई। देर से मिली है न, और कोई बात नहीं।

www.9009.co.in

कांता रूप भगवान ने चन्द्रावली के साथ बैठ कर रोटी खाई। या रात पद्दी तो जोर दिया कि दोनों बहनें इकट्ठीयां एक बिस्त्र पर सोएंगी। चंद्रावली की सास ने कहि दिया कि क्या हरज है। दोनों एक बिस्त्र पर सो जाओ, कभी कभार आई हो।

चन्द्रावली की सास को कोई पता न था कि उन के घर में भगवान आए हैं और वह आपणी माया का चमत्कार कर रहे हैं। वह तो आप चन्द्रावली का अभिमान तोड़ने के लिए आए थे। उस ने एक बार गोपीयों के पूछने पर अभिमान से कहा था 'मुरली-मनोहर' आप के साथ रहता होगा मेरे साथ नहीं, मैंने तो उन को नजदीक भी नहीं आने देणा।' आज भगवान आए हैं। उन का रहस रूपी माया शक्ति को आदमी क्या जाने।

कांता के रूप में भगवान चन्द्रवली के साथ सो गए। जब सोए तो चन्द्रावली को ऐसे लगा कि जैसे उस के साथ सोने वाली स्त्री नहीं बल्कि स्त्री रूप मरद है, उस को जफी मे लिया तो वह जफी मरदानी थी। वह त्रबकी और उस ने पूछा -

'सच्च बताओ मेरे साथ धोखा करने वाला कौण है ?'

'मैं तुम्हारा बाल सखा कृष्ण काहन !' भगवान ने उत्तर दिया और उस समय उनका शरीर मरदाना हो गया। चन्द्रावली ने घबरा कर धीरे से कहा - तुसां हनेर मारिआ। मेरी सास, रात, गहणे छनकेंगे। आप....?'

उस समय भगवान कृष्ण ने वह रात छः महीने की कर दी और उस की सास को बोला कर दिया। इस प्रकार भगवान श्री कृष्ण जी ने चंद्रावली को छला।

यादव कुल का कृष्ण हुआ है, जिस ने द्वापर में

माया शक्ति से चंद्रावली को छलिआ था। पर वह भी अवतार है। उस के अवतार होने की भी महिमा है।

★

६२. देवी के तीरथ थापण की साखी

अठसठि तीरथ देवी थापे पुरी लगै बाणी॥

(वार माझ)

भारत वर्ष धर्मों और प्रमात्मा के भगतों का देश है। यह तीरथों की दुनीआं है। कई हजार तीरथ और ३३ करोड़ देवताओं के मन्दिर (जैसे रघू मन्दिर जम्मू में) है पर अठासठ तीरथ मशहूर हैं। गुरबाणी में आता है कि इन तीरथों को पारवती की बेनती पर भगवान शिव जी ने थापिआ था। उन तीरथों पर पुरब लगते हैं। भगवान की ऐसी आश्चर्य लीला और कथा है।

६८ तीरथों के थापण की कथा पुराणों में आती है और लिखा है कि एक बार शिव जी और पारवती जी ने मात लोक सारा घूम कर देखा। मातलोक में लोग दुखी ही नजर आए। किसी को ईरखा, काम, क्रोध, लोभ, मोह हंकार लालच और भूख आदिक ताप मनुष्य को आराम नहीं लेने देते थे। दुखी पुरुष और भविखत को सोच कर पारवती ने भगवान शिव जी को पूछा - 'हे भगवान जी! यह बताओ मातलोक के जीवों का उद्धार कैसे हो सकता है? यह तो माया के जाल में फसे हुए सुते सिध अनेकों तरह के पाप किए जा रहे हैं। अगर इस तरह के कुकरम करते रहे तो धर्म राज के नर्कों में जगह नहीं रहेगी उस को कोई और जगह भालणी पड़ेगी। नरक बड़ा करना पड़ेगा। आखर यह क्या भेत है?

भगवान् शिव जी उस समय मौज में थे। उन्हों ने अक धतूरा खाया हुआ था। नशे का दौर था पारबती की तरफ प्रेम भरी नजर से देख कर बोले - 'प्यारी ! तुझे मातलोक की चिंता क्यों ? मात लोग के जीवों के चिंता करने के लिए मैं ब्रह्मा आदिक देवते बनाए हैं। सृष्टी में पाप और पुन्न दोनों हैं बुरे और अच्छे जीव हैं । ऐसी बातों की तरफ ध्यान करना तेरा काम नहीं । बस आप का काम तो मेरे चरन घुटने।

'मात लोक के जीवों को देख कर ख्याल आ ही जाता है।'

मात लोक के जीवों के उधार के लिए धरती पर दस करोड़ तीरथ हैं । उन तीरथों की यात्रा करने वाला जीव दुखों से मुकत हो जाता है।

यह सुन कर पारबती हैरान हो गई, वह असचरजता के साथ पूछने लगी, हे भगवान ! जरा सोचो ! मात लोक के जीवों की आयु कलजुग में बहुत कम है। माया का खलार बहुत है। छोटी सी आयु में वह भला उन दस करोड़ तीरथों की यात्रा और इस्नान किस तरह कर सकेंगे ? दस करोड़ तीरथों पर पैदल चल कर जाने के लिए कितना समय लगता है, यह सोचा है या भंग के नशे में तो नहीं बोली जाते, कलजुग के स्त्री पुरष तो थोड़े तीरथों पर ही पहुंच सकते थे। उन तीरथों की बाबत बताओ ।

'प्यारी' बात तो आप की कुछ ठीक प्रतीत होती है। दस करोड़ तीरथों पर कलजुग का जीव नहीं दहुंच सकेगा। अगर वह तीरथों पर न पहुंचे तो उस की कल्याण नहीं होगी । अच्छा मैं सोचता हूं कि इस बात का कौण सा साधन हो सकता है, हां जेकर आप कोई साधन बताओ ।'

'पारबती ! स्वामी जी ! मैं तो समझती हूं कि दस करोड़

www.9009.co.in

तीरथों में से कुछ तीरथ चुण लिए जाएं । इन तीरथों की यात्रा में कलजुगी जीव जलदी कर ले। यह हो सकता है।'

शिव जी - 'यह ठीक है फिर आप यत्न कर । योग शक्ति से सभी तीरथों की यात्रा करके बताओ इन में कौन कौन से अच्छे तीरथ हैं जिन्हों के इस्नान करके दस करोड़ तीरथों के इस्नान हो जाएं। यह चोण करके जगत जीवों को बताओ ।

पारबती देवी ने यह बात मनजूर कर ली। उस ने शिव पासों योग शक्ति प्राप्त करके थोड़े समय में दस करोड़ तीरथों की यात्रा की। उन्हों से अच्छे तीरथ चुणे जो गिणती में ६८ थे। इन तीरथों पर इस्नान करने वाला दुख सुख से मुकत हो जाता है ।

१. मुकन्दा । २. गंगा । ३. नरबदा । ४. घणी । ५. सवेचर । ६. सिंधू । ७. सोवीरा । ८. कोदेरी । ९. कपला । १०. पारा । ११. पुण्आं १२. देव नदी । १३. हंस वेगा । १४. संस पादा । १५. सहंसी । १६. शकौशकी । १७. लोक कंपिओ । १८. चरमनवती । १९. महश्वरी । २०. सपूंनिआं । २१. सुपदमनी । २२. भद्रा वेणा । २३. बेणा । २४. सुरणू । २५. सुरथा । २६. मनोरथा । २७. हेला । २८. पुलिदका । २९. सुपरीचा ३०. नारली । ३१. जुआला । ३२. उदसंक्रमा । ३३ः चक्रका । ३४. मनोरथ देवया । ३५. देव दराची । ३६. वीमवाहनी । ३७. गंभीरा । ३८. लिंगा । ३९. सूचकला । ४०. कपिंजला । ४१. काला । ४२. सुआहा । ४३. हुतासनी । ४४. पुशकर । ४५. प्रयाग । ४६. सुपुत्रका । ४७. सुभद्रा । ४८. हेमगरभा । ४९. परासरी । ५०. अघाहा । ५१. लकमेहा । ५२. बीरबाहा । ५३. महां तरन । ५४. डंडक । ५५. नैमखयारन । ५६. आवती । ५७. प्रभास । ५८. बवारावपी । ५९. वारा नसी । ६०. अरघ दीरघा । ६१. कांती । ६२. माया । ६३.

www.9009.co.in

नरारहन। ६४. असवोहमा। ६५. ब्रह्म खेतर। ६६. कालिंजर। ६७. कलेश्वर। ६८. महेश्वर।

यह तीरथ मिथ कर देवी पारबती ने कहा - 'हे भगवान जी! आप की सेवा और शक्ति के मुताबिक मैं कह सकती हूं और वर देती हूं जो इन ६८ अठासठ तीरथों की यात्रा और स्नान करेगा उस को दस करोड़ तीरथों के स्नान का फल प्राप्त होगा। इन तीरथों की सथापना की तरफ ही इशारा करके 'गुरू' जी ने कहा है-- कि अठसठ (६८) तीरथ देवी थापे हैं। एक जगह पर और आता है-- 'जितने तीरथ देवी थापे सभ तितने लोचहि धूरि साधू की ताई।।' जितने तीरथ पारबती देवी ने थापे हैं वह सभी तीरथ बेसबरी के साथ अच्छे साधूओं की धूड़ी लोचते हैं।

★

६३. भाई मेहरू जी की साखी

चलण हुकमि रजाइ गुरमुखि जाणिआ॥ गुरमुख पंथ चलाइ चलण भाणिआ ॥ सिदक सबूरी पाइ कर शुकराणिआ॥ गुरमुख अलख लखाइ चोज विडाणिआ॥ वरतन बाल सुभाइ आदि वखाणिआ॥ साध संगत लिवलाइ सच्च सुहाणिआ॥ जीवन मुकति कराइ सबद सिञाणिआ॥ गुरमुख आपि गवाइ आप पछाणिआ॥

(भाई गुरदास जी)

भाई गुरदास जी आपणी बाणी में गुरमुख पुरष के लक्षण बताते हैं। गुरमुख पुरष वह है जिस ने प्रमात्मा के हुकम अथवा

भाणे में चलना प्रवान कर लिया । गुरमुख को चलने के लिए जो रास्ता बताया जाए उसी रास्ते आप चले तो औरों को चलना बताए सिदक-सबूरी में रहे। गुरमुख जन प्रमात्मा के भेद को जान जाता है। साध संगत में पहुच कर सच्चे का ध्यान करते हैं, जीवन मुकत हो जाते हैं। गुरमुख पुरष आपणे आप की पहिचान कर लेता है। गुरमुख गुरू के बचनों पर चलता है।

ऐसे गुरमुखों की अनेकों ही साखीआं हैं, जो गुरमुख जन पहले मनमतीए थे, फिर वह गुरू चरनों के साथ जुड़ कर वडभागी बने। ऐसे पुरषों में भाई मेहरू जी भी हुए हैं। वह पहले चोर थे और चोरी करके आपणा जीवन बतीत करते थे। उन का माता पिता नहीं था। वह बचपन में ही यतीम बण गए थे और बुरे करमों में खचत हो गए। बुरे करमों में खचत रहते हुए बहुत समय बतीत हो गया।

एक दिन संगत के साथ श्री सतिगुरू अमरदास जी के चरनों में पहुंच गया। गोइन्दवाल में रह कर सतिगुरु जी का उपदेश सुना, सेवा होती देखी तो उस को कुछ ज्ञान हुआ कि वह जो कुछ पीछे करता रहा वह बुरा था। कई महीने गुरू जी की सेवा करता हुआ नाम बाणी सुनता रहा।

कुछ समय के बाअद वह वापस आया तो वापस घर आकर उन को हर एक वस्तु ओपरी और बुरी लगने लगी। उस के पास भैंस चोरी की थी, उसको चोरी कीए चार पांच वर्ष हो गए थे। उस भैंस की दो झोटीयां दी थीं। वह भैंस नसल करके अच्छी थी और झोटीयां भी अच्छी थीं उस ने भैंस चोई मगर उस को दूध पीने का हौंसला न पड़ा।

यह चोरी की भैंस है, चोरी करना पाप है। नरकों का भागी होना है। मेहरू सोची गया तो आखर उस ने दूध न पीता। उस के

www.9009.co.in

घर चोरी के बर्तन थे चोरी का राशन था। शराब थी। सब उस ने घर से बाहर रख कर लोगों को बांटना शुरु कर दिया।

सुबह हुई तो उस मझ को खोल कर साथ कटीआं हिकीआं और उस गांव की और ले तुरे। जिस गांव से चोरी करके लाया था। वह भाई नौध के घर गया। कटीयाँ समेत मझ उस के घर के अन्दर लाया मझ खुरली पर आ खड़ी हुई तो भाई नौध ने जब आपणी मझ देखी तो हैरान हुआ। उस ने घर वाली को आवाज दी। वह अन्दर से बाहर निकली तो वह भी मझ को देख कर हैरान हो गई।

भाई नौध जी का ध्यान मेहरू की और गया। दोनों जीअ आगे बड़े तो मेहरू ने दोनों को नमस्कार किया और निम्रता से बोला - हे माता और पिता! आपने इस बालक को आप क्षमा करना। बड़ा पापी है बालक! भूल हुई। आप की लवेरी मझ में कभी खोल कर ले गया था, उस समय मूरख और अज्ञानी था। अब मुझ पर सतिगुरू जी ने मेहर कर दी है। मुझ को ज्ञान हो गया है। मैंने इस मझ को चोया नहीं। आप इसे सम्भालो यह लो रुपया जो दूध पिया है।

यह बोलते हुए भाई मेहरु ने चांदी के रुपए उन दोनों के आगे ढेरी कर दिए। भाई नौध और उसकी पत्नी बड़े हैरान हुए। उन्होंने पूछा भाई तूं है कौन?' भाई मेहरू ने आपणी सारी कथा सुणाई और अंत में कहा - 'सभ सतिगुरू महाराज की कृपा है। उन्होंमे मोड लिया। बुरे काम मुझ से छुड़ा लिए।

भाई नौध और उस की पत्नी ने भाई मेहरु को प्रशाद छकाया। और दोनों भी उस के साथ ही सतिगुरु जी के पास गोइंदवाल गए। गुरु चरनों से प्रीत लगाई। भाई मेहरु जी एक अच्छे गुरसिख हुए। और वह सिखी का प्रचार भी करते रहे। सतिगुरू जी की मेहर से चोर से गुरसिख बण गऐ।

६४. श्री अमृतसर दा इत्हास

अमृतसर, जलन्धर शहिर के रेलवे स्टेशन पछमोतर बिआस नदी का रेलवे पुल पार करने पर तेतीस मील पर ब्यास स्टेशन मिलता हैं। ब्यास नदी हिमालय के दखण कांगड़ा जिला में से निकल कर आई है। २९० मील चलने के बाद हरीके पतन के पास सतलुज नदी में जा मिलती हैं। महां-भारत (बनपरब १३०वां अध्याय) इस में लिखा है कि बशिष्ट मुनी पुत्र के शोक में व्याकुल हो कर बिआस नदी पर पृथ्वी में गिर गए। और बिपासे होकर उठे थे। इस कारण इस का नाम बिपासा (बिआसा) हैं।

महां भारत (अनुसासन परब पंजीवां अध्याय) बताता हैं कि बिआसा नदी में स्नान करने पर मनुष्य पापों से छूट जाता हैं। (ऐसा पवित्र जल हैं) बिआस स्टेशन से २६ मील, जालन्धर शहिर से ४९ मील, लाहौर से ३३ मील, कलकते से १२३२ मील, बम्बई से १२६० मील, कराची से ८७६ मील और बटाला से २४ मील पर अमृतसर स्टेशन हैं।

पंजाब की बिआस और रावी दोनों नदीयों के अन्दर (३१ अंस, ३७ कला, १५ विकला उत्तर अख्यांस और ७४ अंस ५५ पुरब देसांतर विखे) श्री गुरू रामदास जी महाराज का बसाया श्री अमृतसर सुन्दर नगर बसता हैं।

तीसरे श्री गुरू जी ने आरम्भ संमत १६२० में टक लगवाया था। उसी जगह सत्गुरू जी ने सम्वत् १६२१ में तुग सुलतान विंड, गुमटाला आदि गांवों के बीच तालाब खुदवाया। यही ताल श्री गुरू अरजन देव जी ने सम्वत् १६४५ में पूरा किया।

www.9009.co.in

अर्थात तीसरे गुरु जी की आज्ञा से सम्वत् १६३१ में गांव बणा। इस गांव का नाम 'गुरु का चक्क' रखा गया। आपणे रहने के लिए भी मकान बणाऐ जो कि आज कल 'गुरु के महिल' नाम से प्रसिद्ध फिर इस की चढ़ती और 'दुख भंजनी बेरी' के पास सम्वत् १६३४ में ताल पुटवाया जो उस समय अधूरा ही रहि गया। पांचवें श्री सतिगुरु जी ने गद्दी पर बैठ कर इस ताल की खुदाई आरम्भ की और किरती वपारी लोग प्रेम से बुला कर बसाए। शहिर आबाद किया फिर इस का नाम 'रामदासपुरा' रखा गया। सम्वत् १६४३ में सरोवर को पका करना शुरु किया और इस का नाम अमृतसर प्रसिद्ध हो गया। इस ताल की लम्बाई ५०० फुट चौड़ाई ४९० फुट और डूंघाई १७ फुट है। फिर १ माघ १६४५ को ताल के मध्य में श्री हरिमंदिर की नींह रखी और इस को पूरा कर के श्री गुरु ग्रन्थ साहिब मध्य में सथापन किए। हरिमंदर साहिब की प्रकरमा चौड़ी २५ फुट और हर एक बाही पांच सौ फुट है। दर्शनी दरवाजे से हरिमंदर तक पुल २४० फुट लम्बा और २१ फुट चौड़ा है। जिस के नीचे ३७ सुरगद्वारीयां हैं। पुल के चारों और २० लालटैंनां सुनिहरीयां चोठीयां वालीआं हैं। मध्य की लम्बाई पश्चिम की और पूरब तक ५५ फुट से कुछ कम और चौढाई लगभग ३५ फुट की है। पुल का फर्श सफेद संगमरमर का सुन्दर बणा हुआ है। इत्यादि रंग रंग के नगीने आदि के साथ जड़ी हुई ईमारत है। जिस की लागत और कारीगरी का अंत नहीं आ सकता। यह मन्दिर और स्थान बड़ा पवित्र है और इस के स्नान दर्शन का महान पुण्य है।

यथा :-

जिन श्री हरि मंदर देख लयो, जगनाथ दिदार कीया न कीया ॥

जिन कीन सनान सुधासर में तिन गंग शनान कीया न कीया ॥

www.9009.co.in

जिन लीन सुआद त्रिहावल को, तिन आबिहयात पीया न पीया ॥
इक बातन से जोऊ बेमुख हैं नर, सो भव माहि जीया न जीया ॥

संन १८६७ की मनुष्य गणना समय अमृतसर में १३६७६६ मनुष्य हुए थे। जिन में से १८७८६ मनुष्य और ५७६८० स्त्रीयां थी। इन में से ६३३६६ मुसलमान, ५६६५२ हिन्दू, १५२०१ सिख, ८४८ ईसाई, १४३ जैन, ५ पारसी और एक और था। मनुष्य गणना अनुसार यह भारत में से १६वां और पंजाब में तीसरा शहिर है। रेलवे स्टेशन से आधा मील दक्षिन की और अमृतसर शहिर हैं।

शहिर के बीच अमृतसर नाम का ताल है। जिस के नाम पर शहिर का नाम अमृतसर प्रसिद्ध है। महाराजा रणजीत सिंह जी ने सम्वत् १८५६ में इस शहिर पर कब्जा किया। उन्होंने इस को सोने आदि से हरिमंदर भूशत किया। अमृतसर सरोवर में जल हंसली के जरिए पड़ता था जो बाबा प्रीतम दास जी और बाबा संतोख दास जी के राहीं संमत १८३८ में गांव गांव दवारा रावी से लाए थे। अब यह सम्वत् १६२३ में बारी दुआब वाली नहिर में से लेकर हंसली के जरिए तालाब में डाला जाता है। और हंसली सारी पक्की कर दी गई है। यह सन्त गुरमुख सिंह जी के उदयोग द्वारा ही यह कारज हुआ है। और यह ताल (सरोवर) ४५७ फुट लम्बा और इतना ही चौड़ा है। जिस के चारों और प्रकरमा संगमरमर और काले अथवा भूरे पत्थर कें चौकंने (टलां) काट काट कर बणाया हुआ हैं। सरोवर के चारों और प्रकरमा खुली कर के बरामदे बणा दिए गए हैं। करीब ही निकल साहिब द्वारा निरमत कमेटी का घण्टा घर है जो सन् १८७० में बणा था। उस की जगह दर्शनी दरवाजा बणा दिया गया है। प्रकरमा के पास तक जूता नहीं जा सकता, ना

www.9009.co.in

कोई स्नान करके तेड़ का कपड़ा ही ताल में निचोड़ सकता है। न कुरली कर सकता है। सरोवर के मध्य में श्री दरबार साहिब जी का मन्दिर शोभा दे रहा है। (अमृतसर शहिर में और भी अनेकों गुरद्वारे हैं जिनका वेरवा मेरे बणाए अमृतसर में देख सकते हैं ।

श्री दरबार साहिब में मेले तो कई लगते हैं। गुरों के गुरपुरब सभी धूमधाम से मनाए जाते हैं। एक वैसाखी का, दूसरा दीवाली का, तीसरा प्रलोक झांकी का, जो नित प्रातःकाल नजारा दृष्टि आता है। वह वास्तव में प्रलोक झांकी है। उस समय प्रेमीयों के मन आनन्द भगती में मगन होते हुए श्री गुरु जी के चरनों में जुड़े हुए होते हैं किसी ने सच्च ही कहा है :-

चल मन ! सुण आशा दी वार ।।
होए निरमल कर शनान सर देखो गुर दरवार ।।
कर डंडंत सगल अघ खंड लेहु पीर करमा चार ।।
पुषप प्रसाद प्रीत युत लैकर श्री गुरू ग्रन्थ निहार ।।
ब्रह्म महूरत वाक कथा सुण, सुख युत दिवस गुजार ।।
धरम क्रितकर मधुर बचन रच कलि मैं इह तप सार ।।
दान सनान सत के दरसन इह अमोल फल चार ।।
बुद्धि मृगिंद बाग चंदन तरु मिलत न बारं बार ।।

अमृतसर की पवित्रता

सुणा जाता है कि यहां पिछले जमाने में रावी नदी पर बिआस नदी इस स्थान के नजदीक बहते थे। जहाँ अब दरबार साहिब है वहां एक ढाब स्वच्छ पाणी की भरी और आस पास घणा जंगल था। इस का नजारा अनोखा और अजिहा होता था कि मुरदे दिल को दर्शन मात्र और सुरजीत करणहारां थी।

इसी कारण यहाँ पर बहुत बड़ी रौणक थी। ऋषी, मुनी, साधू

संत यहाँ आकर प्रमात्मा के ध्यान मग्न हो गए। अर्थात भजन बंदगी करते रहा करते थे। वेद बिआस यहां ही पैदा हुआ। क्योंकि परासर मुनी इसी जगह निवास रखता था।

रामासवमेध में से वृतांत मिलता है कि ब्रह्म ऋषी बालमीक भी यहाँ ही रहता था। इस स्थान पर सीता जो सतवंती ने आपणे बनवास के दिन इसी ऋषी के सहारे काटे (व्यतीत किए) थे। और यहां ही लव कुश दोनों पुत्र पैदा हुए थे। जो कि बालमीक ऋषी की कृपा से हर एक विद्या में उच्च श्रेणी के चतुर गिणे जाते थे।

अन्त लव ने आपणे बाहूबल द्वारा लाहौर और कुशू ने कसूर बांध कर आपणा राज्य कायम किया।

इधर इस पवित्र स्थान को प्रगट श्री गुरू नानक देव जी ने किया। इस से पहले इस की पवित्रता और इस का महातम किसी ऋषी मुनी को समरण नहीं आया। बस ढाब का पाणी पी कर ठडी वृक्ष छाया के नीचे घड़ी आराम कर के और जंगली फल फूल खा कर चले जाया करते थे।

अमृतसर नाम पढ़ने के कारन

एक बार श्री गुरु नानक देव जी महाराज, सुलतान पुर लोधी को जा रहे थे तो जहाँ अब हरिमन्दिर साहिब है, उस समय यहाँ एक जल से भरपूर पूरब की और ढाब थी। अत्यन्त रमणीक स्थान देख कर बैठ गए। और श्री गुरु जी ने बचन किया कि :-

पाकी नाई पाक थान

१. अकस्मात ऐसे सुलतान विंड ग्राम का वसनीक, सुलताना जट्ट खीर ले कर आण हाजर हुआ। हिस्से आई खीर जब मरदाने ने

www.9009.co.in

खाधी तो उंगलीयां चाटता हुआ बोलता है - महाराज ! यह तो अमृत रूप भोजन है। श्री गुरू जी ने प्रसन्न हो कर कहा - भाई हमेशा ही अजिहा ¿अमृत बांटा जाया करेगा।

और प्रसंग

२. एक बार श्री गुरू नानक देव जी महाराज तलवंडीओं गंगा जी की तरफ जा रहे थे तो रास्ते में यहाँ आ ठहिरे जहां अब श्री दरबार साहिब जी का मन्दिर है, अर संधिया समय शब्द उचारन किया जिस को मरदाने राग द्वारा पढ़ा--

प्रभाती महला १ ॥

अम्रितु नीरु गिआनि मन मजनु अठसठि तीरथ संगि गहे ॥
गुर उपदेसि जवाहर माणिक सेवे सिखु सो खोजि लहै ॥ गुर
समानि तीरथु नही कोइ ॥ सरु संतोखु तासु गुरु होइ ॥१॥
रहाउ ॥ गुरु दरीआउ सदा जलु निरमलु मिलिआ दुरमति
मैलु हरै ॥ सतिगुरि पाइऐ पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै ॥
२॥ रता सचि नामि तल हीअलु सो गुरु परमलु कहीऐ ॥
जाकी वासु बनासपति सउरै तासु चरण लिव रहीऐ ॥ ३ ॥
गुरमुखि जीअ प्रान उपजहि गुरमुखि सिव घरि जाईऐ ॥
गुरमुखि नानक सचि समाईऐ गुरमुखि निज पदु पाईऐ ॥४॥

इस प्रकार जब शब्द समाप्त हुआ तो श्री गुरू जी जल रूप हो गए, दृष्टि न आए, तो भाई बाला और मरदाना बहुत हैरान और प्रेशान हुए इधर उधर देखते हैं। इतने में भाई बाले ने कहा -

भाई मरदानिआँ ! हम साथ रहि कर देख कर आए हैं जहाँ

---

0 सो यह अब सच्च है निताप्रति कड़ाह प्रशाद वरतदा है। संगतें प्रसन्न हो कर छकती हैं।

www.9009.co.in

कहीं किसी को दुख तकलीफ हुई, वहाँ टका रख कर अरदास पर ही फल प्राप्त होता फुरमाते रहे थे।

इस लिए हम भी अरदास करें अर जिस समय टका खोजिया तो पास है नहीं। इतने में मशवरा किया कि एक पैसा आपके सिर का मुल और एक पैसा बाले कहा मेरे सिर का मुल। दोनों सिर गिरवी रख कर अरदास की तो सतिगुरू जी प्रगट हो गए। सो यह सभ इस स्थान का प्रभाव है अर फुरमाया कि यहां कागहु हंस होया करेंगे और मन बाँछत फल प्राप्त होंगे।

३. सम्वत् १६०६ बिक्रमी को गुरू अमरदास जी महाराज संगतों के साथ घुमते घुमाते गुरु अंगद देव जी महाराज से यहाँ की उपमां सुन कर यहाँ आए, और एस कचे तालाब पर जो इस समय 'ढाब' करके प्रसिद्ध था, बैठ कर दुनियांदारों को अरथात संसारी जीवों को कई प्रकार का उपदेश दे कर क्रितारथ करते थे। गुरू अंगद देव जी के अन्गूठं में जो सदा दरद रहा करती थी, इस को दूर करने के लिए जो जड़ी बूटी खोजने से मिली थी उस का नाम अमृती था। जिसके लगाने से गुरू जी को आराम आ गया था। इस लिए भी इस स्थान का नाम प्रसिद्ध हुआ।

४. श्री गुरू अमरदास जी को आपणे श्री सतिगुरां की और से इस स्थान के पवित्र होने का महातम सुण कर पक्का "विश्वास हो

"बोलै गुरू तहां आदि कीनो तप संभू मन, तप को प्रभावत मै बेअंत कला धर है। न्रिप जो इखवाक तिन कीनो पुन तहां यग हवनके थान सो प्रमानो मोदकर है। कह्यो गुरु अंगद जी सुनयो सिख अमर ने तहां अशनान की सुइछा फुरी वर है। समो औ समाज पाइ रचेंगे तहां ही सर, जहां अब दीसत प्रतछ सुधासर है।

www.9009.co.in

गया था, इस लिए आप यहां एक कसबा बसाने के आहर में लग गए थे, क्योंकि गुरु रामदास जी सोढी का घर जो लाहौर शहिर महल्ला सोढीओं में था, वह जालम काजीओं ने आपणे कबजे में कर लिया और गांव गोइन्दवाल में तिन पुतरों और बीबी भानी के रहिने के लिए जगहा थोड़ी देख, कुछ रौनक न देख कर यहां एक नवां कसबा बसाने की तजवीज सोची, अन्त जमींदारों से जमीन खरीद कर हाड़ वदी इकादशी सम्वत् १६९१ बिक्रमी को रामदासपुरे की नींह रख दी, जो पश्चात 'अमृतसर' मशहूर हुआ। इस के बिनां कई और मकान भी बनवाए जो गुरां के नाम से प्रसिद्ध हैं ।

५. लोगों में मशहूर है कि गुरु रामदास जी ने आपने सतिगुरु अमरदास जी के नाम पर इस तालाब का नाम 'अमृतसर' रखा, जो इस के पश्चात अमृतसर के नाम प्रसिद्ध हो गया । इस तालाब को पवित्र समझ कर गुरु रामदास जी महाराज हमेशाँ सुबह के समय बेर के नीचे (जो दुख-भंजनी साहिब वाली जगह पर लगी हुई है) सूरज निकलन तक स्नान ध्यान करके ईश्वर के भजन में मगन रहा करते थे, फिर महिलों में जाते और लंगर वरता कर संगतों को धरम उपदेश करते थे, सम्वत् १६३३ बिक्रमी को सरोवर की खुदाई अरंभ होई। अकबर बादशाह ने गुरु अमरदास जी की उपमां सुनी तो फिरता फिराता दरशनों के लिए आन हाजर हुआ, सतिगुरां के लंगर स प्रशाद छक कर अनंर हो गया, एक सौ मोहर भेंट की जो सतिगुरां ने उसी समय गरीबों को बांट दी ।

इस पर बादशाह बहुत खुश हुआ तो उस ने सतिगुरां से बेनती की कि लंगर के लिए कोई सेवा टहिल बताई जाए, तो सतिगुरां ने बचन किया कि बादशाहों का काम आपणी प्रजा का पालण होता है, इस समय काल के कष्ट से लोग भुखे मर रहे हैं, अगर कुछ हो सकता है तो

www.9009.co.in

इन की सहायता करो, जिस पर बादशाह ने एक वर्ष का लगान (मामला) माफ कर दिया। जिस करके गुरू साहिबों की दूर दूर तक कीरती फैल गई तो बहुत से आप के सेवक बन गए, जिस करके बहुत सा रुपया लंगर में भेटा आनी शुरू हो गई।

गुरू रामदास जी तो हमेशां यहां रहा करते थे, मगर गुरू अमरदास जी महाराज बीबी भानी जी और श्री गुरू रामदास जी को देखने के लिए कभी कभी यहाँ आया करते थे। उस समय इस जगह पर हर प्रकार के मेवेदार और जंगली फल फुलों के वृक्ष होने के कारन यह जगह बहुत सुन्दर और रमणीक थी, सम्वत् १६३४ बिक्रमी को गुरू अमरदास जी महाराज के सेवक भाई सालो, चंदरभान, रूप राम और गौरा जी आदि सिखों ने ७२ कौमों के लोग पट्टी, कसूर और कलानौर आदि स्थानों से ला कर यहां बसाए थे, जो अब तक गुरु के महिलों के आस पास आबाद हैं।

जिस समय यह कसबा बसने लग गया तो फिर दूर दूर से लोग आ कर खुद-बखुद आ कर बसने लग पड़े। तब इस जगह का नाम 'गुरु का चक' प्रसिद्ध हो गया। दफतरों में भी यही नाम है। अभी सरोवर और गुरु का बाजार बन ही रहे थे, इतने में अकसमात सावण वदी ३ सम्वत् १६३८ बिक्रमी को श्री गुरु रामदास जी महाराज गोइंदवाल में जा कर जोती जोत समा गए।

इन्हों के पश्चात श्री गुरु अरजन देव जी महाराज गद्दी पर बैठे। इन्हों ने चक की खूब वसों की। पहलां गुरु बजार के मकान पके बनवाए और एक दरवाजा चक का बनवाया जो इस समय 'दरशनी डिउड़ी' करके अब तक प्रसिद्ध है। मगर इस काम में जितनी मुशकलें गुरु साहिब को पेश आईं, वह सब इन के बड़े भाई पृथी चन्द करके ही आईं। उस ने शहिर के तीरयों को

www.9009.co.in

को उजाड़ने में कोई कसर न छोड़ी। हमेशां कोई न कोई झगड़ा खड़ा कर देता पर ईश्वर की इच्छा को कोई रोक न सका। सत्य है कि -

आपे ही प्रभू राखता भगतन की आनि ।।
जो जो चितवहि साध जन सो लेता मानि ।।
(बिलावलु मः ५)

जब इस तरह भी पिरथी चन्द आपणें काम में असफल रहा तो इस ने गाँव 'हेहर' (जो इस को सुलही खां सूबा लाहौर की राहीं अकबर बादशाह से जगीर में मिला हुआ था) में एक सरोवर इस प्रकार का बणवाया और आपणे आप को गुरू कर के प्रसिद्ध करने लगा। परन्तु गुरवाक -

कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सच रही ।।

के अनुसार 'हेहर' की प्रसिद्धी न हुई। बहुत ही यत्न करने पर भी वह ताल "सूखा ही रहा। इस के बिनां आपणे आदमीयों द्वारा गुरु साहिब की बदनामी करने के लिए कई प्रकार के झूठे ढकोंसले घड़ने आरम्भ कर दिए। दीवान चन्दू लाल शाही खत्री से मिल कर 'जो गुरू साहिबों से रिश्तेदारी बारे वैर रखता था। गुरु साहिबां को बड़े कष्ट और दुख दिए। जिन को लिखते हुए शरीर कांप उठता है। इन नीच और अयोग और निरदई कामों में अकसर मसन्द लोक इस के सहायक बने रहे और कई सालों तक गुरु साहिब की कार भेट की आमदनी आप ही छकछका जाते रहे। क्योंकि सारा लेन देन अर्थात घर का खजाना और बाहर की आमदनी प्रिथी चन्द के ही हाथ वस में रहती थी। जिस का फल अन्त यह हुआ कि एक बहुत भारी रकम के सतिगुरू जी करजाई हो गए। पर फिर भी लंगर जैसे जैसा ही चलता रहा।

"अब इस में उल्लू घर किए बैठे हैं।

www.9009.co.in

जब पृथवी चंद को इस पर भी सबर न आया तो मसन्दों के साथ मिल कर हर किसी को लंगर में प्रशाद छकने की प्रेरना करने लगा फिर लोग बेथौहे)पंगत में आ कर बड़ बैठन तो भी यह वाक सफल हुआ कि--

निखुटि न जाई मूलि अतुल भंडारिआ ॥

(वार गउड़ी सलोक ६)

मगर इस का यह ख्याल था कि अक्क कर आपे लंगर बद करनगे फिर इन की बदनामी होगी। परंतु श्री गुरू अरजन देव जी महाराज बड़े दयालू और धरम की मूरत थे। इन्हों ने आपणे घर का बहुत सा समान बेच दिया, मगर लंगर को बंद न होने दिया। सगों गरीब गुरबा अमीर फकीर सभी को हर समय भोजन मिले। लोग धन्न धन्न करन, जस बड़ता जाए। मगर श्री गुरू जी ने तकलीफ को किसी के आगे प्रगट न किया, गुरू साहिब के पवित्र ख्यालों तथा नेक नीयती का फल यह हुआ कि भाई गुरदास जी, जो आप जी के मामा जी थे, ने सभ हाल मालूम किया अर बाबा बुड्ढा जी, भाई सन्धू जी आदि के साथ मिल कर मसन्दों और पृथीचंद की करतूत को सभ संगतों में प्रगट किया। यह सुन कर संगतां हैरान प्रेशान हुई चरनों पर गिर पढ़ीं। फिर पहले की तरह आगे से भी बड़ कर कार भेट चढ़त चढ़ावा चड़ने लग पड़ा अर श्री गुरू जी ने श्री अमृतसर अर संतोखसर की खुदाई शुरू कर दी।

सम्वत् १६४० बिक्रमी में श्री गुरू अरजन देव जी महाराज ने सरोवर के विचकार हरी मन्दिर बणवाया, यहाँ बैठ कर श्री गुरू

)जेहा कि अब आम रिवाज पड़ गया है कि गुरद्वारा धर्मशाला को गरेही क्रिती अर चंगे नामवर आदमी भी उठ भागते हैं अर पंगत में बैठते हैं। हालाँ कि लंगर अभियागतां गरीब गुरबों के लिए होते थे।

www.9009.co.in

अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी महाराज संगतों को उपदेश कीया करते थे, वहां आने जाने के लिए एक पुल बनवाना आरंभ किया पश्चात १६४५-४६ बिक्रमी को सतिगुरां ने श्री रामसर, सन्तोखसर बनवाए, जिन की उपमां में सतिगुरां ने हेठ लिखे शब्द उचारन किए जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दरज हैं जिहा कि--

राग सोरठि महला ५ ॥

रामदास सरोवर नाते ॥ सभ उतरे पाप कमाते ॥

और शहिर की उपमा में

डिठे सभे थाउ नही तुधु जेहिआ ॥

इस के बगैर कुछ कुएं लगवाए जो अब तक गुरां के नाम से प्रसिद्ध हैं। चाहे इस शहिर की वसों उपमा योग है, मगर जो बात 'दरबार साहिब' में है, इस की मिसाल कहीं नहीं मिलती। इस की जितनी उपमा की जाए थोड़ी है, क्योंकि यहां हर समय भजन, पाठ, पुन्न दान, कथा कीरतन होता ही रहिता है । अगर इस को 'सवरग' कहा जाए तो कोई झूठ नहीं।

अगर फरदोश बरूए जिमी असत ॥
हमीं असत, हमीं असत हमीं असत ॥

अर्थात् अगर धरती पर कोई स्वर्ग है तो वह यही है, यही है, यही। बहुती उपमा करने से किताब बड़ी होने का डर है, इस लिए प्रेमी जनों के लिए कुछ कारन लिखे जाते हैं :-

१. इस तरह का मन्दिर दुनीया के तख्ते पर नहीं जो इत्नी कीमत का हो, यां इत्नी सिफत 'महिमां' वाला नहीं होगा।

२. जितना सफाई का यहां ख्याल रखा जाता है, और कहीं नहीं।

३. यहां के अनमतां लोगों को बुरी दृष्टि के साथ नहीं,

www.9009.co.in

देखा जाता। चाहे किसी धरम का आदमी हो। कोई रोक टोक नहीं, दर्शन कर सकता है।

४. इस दरबार से अमीर गरीब दोनों एक जैसा लाभ प्राप्त करते हैं। और मन्दिर नियत समय खोले जाते हैं पर यह हर समय खुला रहता है। केवल ३-४ घण्टे रात को सफाई के कारन बंद कर दिया जाता है।

५. हरिमन्दिर साहिब के खुलने के समय आदमी और स्त्रीयाँ गुरबाणी का पाठ करते हुए रात के एक बजे से आने लग पढ़ते हैं। कोई पहरेदार इन को रोक नहीं सकता और इस समय से ले कर फिर रात तक रौणक ही रहती है।

प्रातःकाल ढाई बजे से किवाड़ खुलते हैं तो अन्दर आणा जाणा शुरू हो जाता है। वारी वारी शब्द कीरतन करने वाले रागी सिंघ दिन भर बलकि रात के १० बजे तक कीरतन लगातार करते रहते हैं यही सचखंड है जैसा कि :-

अमृतसर पर यथा कबित

हांसी गई भूल यमदूतन उदासी भई
पाप की कलासी न तलासी करैं डर के।
सत्य अटासी जहा धरम की घटा सी दान,
पुन्न की छटासी शोक नासी दीन तर के।
जलवा कवि खासी धुनि वेद की प्रकासी कहा,
नारी कमलासी रूपवासी मैनसर के।
कासी की ना चाह अबिनासी ह्वै मवासी रहैं,
दासी कर राखी मोखवासी सुधासर के।

६. इस पवित्र स्थान की जाहरा करामात यह है कि और कहीं भी इस तरह की महिमा वाला मन्दिर नहीं क्योंकि बहुत लोगों ने

www.9009.co.in

बणवाए पर बेरौणके रहे। अन्त उजड़ गऐ। जैसा कि -

१. फतह सिंह घड़ियालीए ने गलवाली दरवाजे के बाहर ऐसा ही मन्दिर बणवाया। वह सूखे तालाब के नाम पर अन्त को मलिया-मेट हो गया।

२. अकबर बादशाह के खवाजा शमशेर खां ने बटाले बणवाया पर वह बेरौणका रहा।

३. बटाला के नजदीक अचल गांव में ऐसा ही मन्दिर बणा पर वह भी सूना है।

४. प्रिथी चन्द ने गांव हेहर में मन्दिर बणवाया। उस में उल्लू के आहलने ही हैं।

५. हरन मुनारा जिला शेखूपुरा में, उस में एक रात भी प्राणी नहीं ठहिर सकता।

६. बाग किरपा राम चौपड़ा, जो वजीराबाद में बणा शां शां करता है।

७. दुख निवारन तहिसील तरन तारन में है। वहां पर कोई भी नहीं जाता।

८. नेपाल के काठमण्डू शहिर में ऐसे नमूने का है। हम ने तो वहां खुद जा कर देखा पर खाली पढ़ा है। इस प्रकार और भी होंगे पर रौणक कहीं भी नहीं देखी। इस हरिमन्दिर साहिब की नकल के और भी चाहे कई मन्दिर होंगे पर सचखण्ड यही है।

९. कोई चाहे कितना ही उदास और चिंतातुर हो पर श्री दरबार साहिब जाते हो सब चिंता फिकर दूर हो जाते हैं।

१०. श्री दरबार साहिब जी की प्रतिष्टा इतनी हं कि चाहे गवर्नर साहिब बहादुर या वायसराए साहिब बहादुर भी क्यों न हो। जूता उतार कर जाणा पढ़ता है। जूता प्रकरमां में नहीं ले जा सकते।

www.9009.co.in

और न ही शराब पी कर अन्दर जा सकता है। अमीर गरीब सभ को पांव धो कर अन्दर जाना पढ़ता है।

११. हुनाले में ठण्डे जल और सरदीयों में अगनी की अन्गीठीयां जगह जगह पर रखी जाती हैं। जमीन पर बोरे सतरंगी कम्बल आदि बिछाए जाते हैं। तां जो संगतों के चरनों को ठण्ड न लगे। यहां कई लोग गरीब बिमार लोगों को मुफत दवाई देते हैं। कई धनाढ श्री दरबार साहिब में आपणे हाथों से झाड़ू देते हैं।

१२. दीप माला और बैसाखी को हजारों साधू सन्तों में अनाज बांटा जाता है। धन्नी लोग आपणे हाथों से अनाज बांटते हैं।

१३. और तीर्थों से यहां के स्त्री पुरष, गरीब दुःखी और बिमार साधूओं की बहुत सेवा करते हैं।

१४. भूल गए और साथ से बिछड़ गए साथी श्री दरबार साहिब की प्रक्रमा में मिल जाते हैं।

१५. इस स्थान की शोभा केवल बाहरली ही नहीं परंतु कुदरती नूर है अर जब तक यह पृथवी अट्टल रहेगी तब तक इस दरबार की शोभा दिनो दिन बढ़ती ही जाएगी। यहां और मन्दिरों की तरह बुरे ख्याल लाने वाले दृष्यि नंगी तसवीरें आदि नजारे नहीं जिन को देख कर पुरष का मन बुरी तरफ चला जाए, जिहा कि जगन नाथ के मन्दिर या नैपाली मन्दिरों में होता है, मगर श्री दरबार साहिब की सुन्दर रचना की बराबरी नहीं कर सकते। श्री दरबार साहिब में दिन रात इतनी भीड़ रहती है कि किसी समय अन्दर दर्शन करन दिन दिहार पर नहीं जा सकता।

मुकदी बात यह है कि पंजाब में और न सारी दुनियां में यह शहिर कांशी, द्वारका, मक्का मदीना आदि से भी कई दरजे बढ़ा हुआ है क्योंकि इस तरीके का संसार में कोई और मन्दिर नहीं है, इस

www.9009.co.in

की सिफत कलम और जबान द्वारा कभी भी नहीं हो सकती। जिस ने एक बार दर्शन कर लिए हैं फिर सारी उमर इस की शोभा को दिल से नहीं भुला सकता। लोग इस को कलप वृक्ष और कामधेन आदि की तुलना देते हैं और कोई झूठ नहीं सचमुच ही बैकुण्ठ है।

बैकुण्ठ नगर जहां संत वासा ।। (सूही महला ५)

शहिर का हवाल

महाराज" रणजीत सिंह साहिब शेरे पंजाब ने श्री अमृतसर को सम्वत् १८६१ बिक्रमी में फतहि किया था। इस शहिर की तहिसील को महाराजा साहिब ने सम्वत् १८७८ बिक्रमी में मारफत गणेशदास अफसर अमारत बणवाणा आरम्भ किया, जो कटड़ा महां सिंह से मिस्त्री मुहम्मद यार खां की तजवीज से बणनी आरम्भ हुई। फिर फिर यह काम सरदार देसा सिंह मजीठीए ने किया। फिर १८८१ को यह काम सरदार लहिणा सिंह सुपुत्र स. देसा सिंह के सुपुरद हूआ उस के बाद यहां के एक शाहूकार रामानन्द 'जिस को महाराज साहब बाबा कहा करते थे' के मरने पर इस की घर वाली से सात लाख रुपया वसूल हुआ जो इसी इमारत पर खर्च किया गया।

पक्का कोट ते	धूड़ कोट जिस पर तोप चल सकती थी
५८२०००० रुपऐ	११८०००
	कुल ७००००० रुपऐ

सम्वत् १८७८ से सम्वत् १८९५ बिक्रमी तक महाराज साहिब की जिंदगी तक इस इमारत का काम चलता रहा। फिर सम्वत् १८९६ में महाराजा शेर सिंह के गद्दी ते बैठण ते फिर शुरु हुई जिस ते-

'महाराजा रणजीत सिंह का जन्म १८३७ ई. में गुजरांवाला में हुआ'

www.9009.co.in

पका कोट ५७०४६०), १२ दरवाजे ७२००)

१२ जोड़ी तख्ते, १२ दरवाजे १८००)

७ तख्ते लकड़ के धूड़ कोट १०००)

कुल खरचा लागत ६७०४६०)

महाराजा रणजीत सिंह के वकत का ६३३०००) रुपए

कुल जोड़ १२४०४६०) बारह लाख चालीस हजार चार सौ साठ

धूड़ कोट की पक्की कंध का चढ़ा २ गज

'धूड़ कोट कच्ची की लम्बाई चुतरफी ८७३४ गज

चौड़ाई १० गज

इस प्रकार सारी फजील त्यार हुई। जिस में २०-२० बुरज हर एक दरवाजे के विचकाहे त्यार किए गए जो सारे ४० थे। सम्वत् १९२२ में सरकार अंग्रेजों के राज समय इस धूड़कोट ते फसील को ढा कर इस मिटी और इंटों को बेच दिया और इस की जगह पक्की कंध डेढ गज चौढ़ी १२ गज ऊंची शहिर के चारों ओर सम्वत् १९४१ में त्यार करवाई गई और पहले दरवाजों में बहुत सारे दरवाजे ढाह दिए। जिस का नमूना राम बाग वाला दरवाजा अब तक है। खाई को इस में मिटी डाल कर पूर दिया गया और जमीन के बराबर कर दी गई। जिस पर खेती बाड़ी और बगीचे लग गए। फसील के साथ साथ शहिर की रक्षा के लिए कुछ पुलिस को चौकीयां भी बनाई गई अब कुछ दरवाजों के बाहर बाग बगीचे भी लग रहे हैं। अबादीआं फटा फट बढ़ रही हैं। रंग ढंग दिनों दिन बदलता जा रहा है जो सभ सतिगुरू की महिमा की बात है।

'इस के बिनां धूड़कोट १० गज चौड़ा, ६ गज ऊंचा। २ अमारती १२ गज।

www.9009.co.in

बाबा अट्टल साहिब

बाबा अट्टल साहिब छेवें श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी महाराज के चौथे सुपुत्र थे, इन्हों ने मोहण खत्री को जिंदा किया जो कि मर गया था। यह करामात 'शक्ति' को देख कर श्री गुरू जी ने एक मिआन में दो तलवारें नहीं समा सकतीं' कहा । इतना सुनते ही बाबा अट्टल साहिब तुरंत वापस लौट आए । अर उस समय आप की आयू ६ वर्ष की थी। यहां बाबा जी का देहुरा है, यह स्थान उस समय जंगल था, यहां लेट कर शरीर को त्याग कर गुरपुरी में जा बिराजे।

यह अचम्बा बात सुन कर गुरु जी बहुत असचर्ज में आए और आ कर अनेकों वरदान दिये और कहा यह गुरू घर में ठाणेदार माने जाएंगे। शहिर में सभ से ऊंचा मन्दिर इन का ही होगा। जो इस मन्दिर की पूजा सेवा करेगा वह मन बांछत फल प्राप्त करेगा, उस की सेवा गुरु घर में प्रवान होगी । गरीब गुरबों को यहां हर समय भोजन मिला गरेगा, सो लोग गाथा प्रसिद्ध है।

'बाबा अट्टल पक्कीयां पकाईयां घल'

पहले इस स्थान पर छोटा सा देहुरा 'समाधी' मन्दिर बना था। फिर संगत ने सम्वत् १८०७ में चन्दा इकट्ठा करके रामगड़ीए सरदारों की मारफत थड़ा त्यार किया । इस की तीन मन्जलें और आठ गुठें त्यार हुई ।

पश्चात सम्वत् १८७८ में शेरे-पंजाब ने मारफत सरदार देसा सिंह ६ मंजलों 'छतों' बणवाईयां उपरली छत का गुम्बज सोने का बनवाया इस की तीन छतों तक इक-मंजल की हर एक गुठ में दो दो दरीचे हैं और चौथी पंजवीं छत में दरीचों के इलावा एक एक बुखारचे का वाधा किया गया है ।

यह इमारत मुनारे की तरह बनाई गई है जो १२५ फुट मुरब्बा गोल

www.9009.co.in

गोल हर एक पासा उनी फुट और ऊंचाई १५० फुट है, जिस में ३ छतें छोटी और ६ छतें बड़ी हैं । सोने के कलस को पाकर सारी ११ छतें होती हैं। चाहे इस की इमारत ईंट चुने की ही बनी है, मगर पकिआई और मजबूती में पत्थ से बड़ कर मजबूत है। धन्न बाबा साहिब !

गुरु के बाग का हाल

बाबे साहिब की तरथ से आते ही जिस स्थान पर बगीचा है, उस का नाम गुरू का बाग है ।

पहले यहाँ बेर, बोहड़ और पीपल आदि के घने वृक्ष होते थे। उन की घनी छां हेठ बैठ कर कई दफा गुरू अरजन साहिब जी अनंद होआ करते थे, अर संगतों को उपदेश सुनाया करते थे, यहां एक कूआँ इस बाग में और दूसरा बाबा अट्टल जी के पास है। यह दोनों कूएं शहिर बसने से पहले सुलतान विंड के जिमींदारों ने आपणे खेतों में लगवाए हुए थे। बाग वाले कूएं के पास पण्डित भगत सिंह निरमला शिष्या भाई मनी सिंह रहा करता था और श्रद्धा सिंह साधु इन का शिष्या भिक्षा माँग कर लंगर को चलाता और संगत को कथा सुनाया करता था ।

सच्च है कि - देवे को रोटी भली, लेवे को हरिनाम ॥

कहते हैं कि उस का लंगर कभी ठण्डा नहीं होता था। हर समय लोह-तवा-तपदा अरथात गरम रहता था। सिख सरदार लूट मार का हिस्सा भी कुछ लंगर में देकर सहायता करते रहते थे । इस का शिष्य सरूप सिंह १२ वर्षों तक इस तरह भिक्षा माँग कर लंगर की सेवा करता रहा, जिस को इस सेवा के बदले सिद्धी प्राप्त हो गई अरथात वह सिद्ध महात्मा हो गए ।

पठाणों की चढ़ाई के समय चाहे वह मकान बिल्कुल टूट फूट

www.9009.co.in

गया था पर भाई साहिब सिंह, रण सिंह (जिन का बुंगा प्रकरमा में बणा हुआ है) निरमले साधू उसी जगह बैठे रहे। चाहे सिख सरदारों ने इन को जागीर आदि का लालच दिया पर इन्होंने लालच की प्रवाह तक न की। जगह न छोड़ बलिक त्यागी बणे रहे। भाई सद्द सिंह (जिस ने कांशी में चेतन मठ्ठ एक संगत बणवाई है) भाई मान सिंह [जिन्हों ने थानेसर के बाहर कले पर मकान बणवाया है दूसरे मान सिंह ने [फूल पराची पर] और इन के चेले भाई गुलाब सिंह जिस ने अध्यातम रामायण आदि बहुत सारी पुस्तकों की रचना की है। पण्डित निहाल सिंह जी टीका जपुजी साहिब, संस्कृत के करता आदि सभ इसी मण्डली में हूए हैं। यह सभी एक मुठ थे।

महाराज रणजीत सिंह के समय गि. सन्त सिंह ने, जो अन्दरखाने इन से विरोध रखता था, जोर डाल कर अंत इन से बाग छीन लिया और गुरद्वारे के नाम करवा दिया। जहां १८७२ सं. में आम के बूटे लगा कर इसको बिलकुल बाग की शकल में बदल दिया।

इस बाग में जहां श्री गुरु अरजन साहिब जी बैठा करते थे अब वहां पर संगमरमर का मंजी साहिब और बंगला बहुत सुन्दर बणा

नोट :- ऊपरी हाल वाला भाई मुक्ता सिंह जी यह कौलसर में रहते थे, ११३ साल उमर भोग कर सं: १९४२ में प्रलोकवास हूआ।

२. भाई हजूरी जो सम्वत् १९३४ में १२६ साल की उमर भोग कर मृत्यू हो गई।

३. भाई सम्पूर्ण सिंह जी सोढी के चेले मोहरसिंह जी योगीराज यह बिबेकसर निवास रखते थे। १४५ साल की आयू भोग कर इनकी मृत्यू हो गई।

इन सब से करता ने यह हवाल सुणकर लिखे हैं। इन सब की उमर विद्वान डाक्टरों ने तसदीक की थी।

[तवारीख अमृतसर]

www.9009.co.in

हुआ है, वहां टुकड़ी का मेला लगता है और अब हर इतवार को जोड़ मेला होता है। मंझी साहिब के चढ़ती और ७ फवारे सफेद संगमरमर के बणे हुए हैं। जहां बैठ कर अकसर महात्मा ज्ञान चर्चा किया करते थे। लहिंदी और एक तीन दरी या मुसाफरखाना है जहां कथा और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का पाठ होता रहता है। ¿अब इस के साथ सम्वत् १९८४ बिक्रमी को दरबार साहिब जाने के लिए एक बहुत बड़ा रास्ता¿ निकला है जो १९२१ में दरबार साहिब की चढ़त से त्यार हुआ है। मंजी साहिब की दखन बाही में एक कुआं सम्वत् १९२१ में खुदवाया गया। इस से आगे दखण की और एक बंगला संगमरमर और संग लाल दौनों १९१५ में रामबाग से पट कर डिप्टी कोपर साहिब ने यहां लगाए थे। और एक चबूतरा बड़ा जिस की पौड़ीयां पर लाल पत्थर का बंगाल बणा हुआ है और बीच में एक फवारा लगा हूआ है यहां लगाया था। फवारे के नजदीक एक पत्थर की चादर पर निर्मल जल पढ़ता दिखाई देता है जो बड़ा सुन्दर लगता है। थड़े साहिब की दखन की बाही शहीद साहिबों की मंजी और एक फवारा संगमरमर का बणाया गया है। जहां हर एक चांदनी पंचमी को मेला भरता है। इस की चढ़ती और बारांदारी लाल संगमरमर की और एक हौज जिस मे फवारे हैं। रामबाग से ला कर लाए है।

¿अब यहाँ की अदला बदली में जमीन आसमान का फरक है। साहमने सराए 'श्री गुरु राम दास निवास' औ गुरू नानक निवास दिखाई दे रहे हैं। पाणी कला द्वारा ऊपर जाता है। संगमरमर का कारखाना उरे आ गया है। बड़े दरवाजे में कमेटी का दफतर है, डीलडौल अच्छी है। ¿ यह राह निरमलिआं के बुन्गे में से निकला है।

www.9009.co.in

पर एक हौज और बारांदरी लाल संगमरमर की महाराजा रणजीत सिंह की समाध के साहमने है। (जिसको महाराजा शेर सिंह ने १८९६ सम्वत् में बणवाया था। यहां से निकल कर बाबा अट्टल को रास्ता जाता है) यहां पर कुआं है जिस को १९३० सम्वत् में कोटू मल खत्री ने त्यार करवाया था। अब यहां का पहला रास्ता बन्द हो कर नया रास्ता निकल आया है।

सन्धया को यहां हर रोज मेला लगा रहता है। जगह जगह साधू सन्त, पण्डित, महात्मा, गुणी और ज्ञानी कथा कीरतन और उपदेश सुणाते रहते है। इस के चार दरवाजे हैं। जो दो बाबा अट्टल साहिब और दो दरबार साहिब की और हैं।

महाराजा रणजीत सिंह जी ने सम्वत् १८८७ बिक्रमी में श्री हरिमन्दिर साहिब की सेवा करवाई। सोना लगवाया और प्रक्रमा में संगमरमर लगवाया। सिख राज समय जहां बुन्गे बणे वहां शहिर में भी वाधा हुआ। बाबा अट्टल कटड़ा करम सिंह और बिबेकसर की और वसों बढ़ी। सब से ज्यादा वसों तो बुन्गों, अखाड़ों धरमशाला और डेरियों की हुई, क्योंकि तीरथ था।

सम्वत् १८२२ के बाद बने सारे पुराने बुन्गे १९३५ से १९६० ई० तक तोड़ दिए और श्री मान सन्त बाबा गुरमुख सिंह जी पटियाले वाले और श्री मान सन्त भूरी वाले जी के यत्नों से नई सकीम अनुसार कोई तीन करोड़ रूपए खरच हो कर अमृत सरोवर के चारों और आलीशान बुन्गे त्यार हो रहे हैं। अब सभी बुन्गे किसी की निजी मलकीअत नहीं बल्कि महाराज जी की मलकीअत हैं और सिख संगतों के आराम करने के लिए हैं। जिस कारण श्री दरबार साहिब की शोभा बढ़ गई है।

www.9009.co.in

श्री अमृतसर की आज वसों सात लाख के लगभग हो गई हैं। कालज, स्कूल, मन्दिर, धार्मिक स्थानों के इलावा कई सौ कारखाने हैं। गुरू की नगरी की शोभा दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है। सतिगुरू महाराज की अपार किरपा है।

★

६५. भाई तिलकू जी की साखी

ऐसा जोगी वडभागी भेटै माइआ के बंधन काटै ॥
सेवा पूज करउ तिसु मूरति की नानकु तिसु पग चाटै ॥५॥
(गउड़ी मः ५)

सतिगुरू अरजन देव जी महाराज फुरमाते हैं कि जोगी वह हीं सच्चा जोगी है और उसी जोगी को मिलो जो माया के बन्धन काटे। जो बन्धन काटने वाला जोगी है ऐसे पुरष अथवा ज्ञानी की सेवा और पूजा होने के बिना ही उस के चरनों को हाथ लगाना चाहिए और उन चरनों की पूजा करनी चाहिए। सतिगुरू जी बहुत उस्तत करते हैं।

पर पाखण्डी जोगी और सन्त आदिक जो सिरफ भेखधारी हैं उन के चरनों पर माथा टेकने से वरजिआ है। आज कल भेख के पीछे बहुत लगते हैं। सच्च को नहीं जाणते। ऐसे सच्च को परखने और गुरमति पर चलने वाले भाई तिलकू जी हुए हैं जो बहुत महां-पुरख थे।

भाई तिलकू जी गढ़ शंकर के वसनीक और पंचम पातशाह जी के सिख थे। उन का नेम था कि रात दिन हर घड़ी मूल मन्त्र का पाठ करते रहते थे। वह कभी किसी को माड़ा बचन नहीं थे

www.9009.co.in

कहते, सच्च के पैरोकार और कार विहार के पूरे थे । गुरू महाराज के बगैर किसी के चरनों पर सिर नहीं झुकाते थे। धर्म की किरत करके रोटी खाते थे। देना लेना किसी का कुछ नहीं था, ऐसी उन्हों पर वाहिगुरू की अपार कृपा थी।

गढ़ शंकर में एक जोगी रहता था । एक सौ दस वर्ष की आयु हो जाने पर और भारी तपस्या करने पर भी उस के मन से हंकार नहीं गया था, वह अभिमानी हो गया और आपणी शोभा कराता था। लोगों को पीछे लगा कर आपणा जस सुनता।

उस ने आपणे जीते जी एक बहुत बड़ा भण्डारा किया। जिस समय भण्डारा त्यार हो गया तो उस ने सारे नगर और बाहरे में ढंडोरा पिटवा दिया कि जो कोई स्त्री पुरष और बच्चा, बुढ़ा, जवान भण्डारे से भोजन खाएगा, उस को दो साल के लिए स्वर्ग प्राप्त होगा, उस को भगवान् के दर्शन होंगे।

उस जोगी का यह सन्देश सुन कर नगर के लोग बाल बच्चों समेत आ कर भण्डारे से भोजन खाया और जोगी का जस किया। जब सभी भोजन खा चुके तो जोगी ने आपणे मुखी चेले को कहा--

'यह मालूम करो कोई स्त्री पुरष भण्डारे में आने से रहि तो नहीं गया। अगर रहि गया है तो उस को भी बुलाओ'

जोगी का ऐसा बचन सुन कर उसके मुखी चेले ने शहिर में सेवक भेजे। उन्हों ने पता किया और कहा - 'महाराज! भाई तिलकू नहीं आया, बाकी तो सभी भोजन खा गए हैं। वह कहिता है मुझे स्वर्ग की जरूरत नहीं वह नहीं आता।'

जोगी ने उस की तरफ फिर आदमी भेजे और कहा, उस को कहो कि तुझे दस साल के लिए स्वर्ग मिलेगा आ जाओ। मेरा भण्डारा सम्पूरन हो। हुकम सुन कर भाई तिलकू के पास गए और उसको दस

www.9009.co.in

साल बाबत बताया तो वह हंस पढ़ा। इतने सस्ते स्वर्गी जीवन को देने वाले जोगी के दर्शन करना ही पाप है। मुझको स्वर्ग नहीं चाहिए मेरे जीवन को स्वर्ग लेने देने वाला मेरा सतिगुरू है। मैं तो उस की ओट रख बैठा हां। जाओ जोगी को बता दो।

चेले हार कर चले गए और जोगी को जा बताया। जोगी सुण कर आपे से बाहर हो गया। क्रोध से बोला। उसने कहा- 'मैं देखूंग कि उसका गुरू कौन है? उसकी कितनी शक्ति है? अभी वह आएगा और पैर पकड़ेगा। तिलकू तिलक कर ही रहेगा।

यह कहता हुआ जोगी लाल पीला हो गया और आसण से उठ बैठा उसके हृदय में हंकार और वैर भावना आ गई। वैर भावना ने जोगी की सारी तपस्या और भगती कमजोर कर दी। जोगी को आपणे जोग बल पर बड़ा मान था। उस ने समाधी लगाई जोग बल से भूत-प्रेत, बीर बुलाए और उन को आज्ञा की कि- 'जाओ तिलकू को तंग करो, वह मेरे भण्डारे में आए।'

जोगी की आज्ञा लेकर बीर और भूत-प्रेत, भाई तिलकू के घर गए, पहले तो हनेरी की तरह उस के घर के दरवाजे खुले और बंद हो गए। धरती डोली तो तिलकू के मुख से निकला- 'सतिनाम सति करतार!' और हवा रुक गई। फिर भाई तिलकू मूल मन्त्र का पाठ करने लग पढ़ा। जैसे जैसे वह पाठ करता गया वैसे वैसे सारे खतरे दूर हो गए।

जोगी के सारे भूत ओर बीर उस के पास गए। उन्होंने हाथ जोड़ कर मंदे हाल जोगी के आगे बेनती की-

हे मालक! हमारी कोई पेश नहीं जाती। उस की राखी तो हमारे से भी कोई महान शक्तिशाली आदमी कर रहे हैं उनकी और से चपेड़ें और धक्के मिलते हैं। घुल घुल कर ढावे हो आए हां। वह

तिलकू कोई कलाम पढ़ी जाता हैं। हम चले, हम सेवा नहीं कर सकते। यह कह कर सारी बद-रूहें चली गईं। जोगी की सुरती ठीक न रह सकी। वह बद-रूहों को काबू न रख सका, वह सभी की सभी चली गई।

जोगी निराश कर समाधी से उस बैठा और भाई तिलकू के पास गया और उस के घर का दरवाजा खड़काया। आवाज दी - 'भाई तिलकू जी दरवाजा खोहलो' जोगी आप के दर्शन करने आया है।

यह शब्द सुन कर भाई तिलकू जी उठे उन्हों ने दरवाजा खोहला तो देखा जोगी बाहर खड़ा था। उस के पीछे उस के शिष्या थे और कुछ शहिर के लोग।

'भाई जी! आप यह बताओ कि आप का गुरू कौन है?' जोगी ने पूछा।

भाई तिलकू जी - मेरा गुरू, सतिगुरू नानक देव जी है?' जिन्हों ने पांचों चोरों को मारने की शिक्षा दी है।

जोगी - मन्त्र कौन सा पढ़ते हो?

भाई तिलकू - 'तति करतार १ ओं सतिनामु करता पुरखु ....।' भाई जी ने मूल मन्त्र का पाठ शुरु कर दिया। 'यह मन्त्र कल्यानकारी है। आप की तरह साल दो साल मुक्ति नीलाम नहीं की जाती। यह आप की गलती समझो। इस लिए मैं नहीं गया, मेरा गुरु तो पार उतारा करता है।'

भाई तिलकू जी के बचनों का असर जोगी के मन पर बहुत पड़ा अंत भाई तिलकू जोगी को साथ ले कर सतिगुरु जी की हजूरी में पहुंचा। सतिगुरु जी ने जोगी को उपदेश दे कर भगती भाव के सच्चे मारग की तरफ चलाया।

★

www.9009.co.in

६६. भाई समुन्दा जी की कथा

अनदिनु सिमरहु तासु कउ जो अंति सहाई होइ ॥
इह बिखिआ दिनचारि छिअ छाडि चलिओ सभु कोइ ॥

(पउड़ी)

का जो मात पिता सुत धीआ ॥ ग्रिह बनिता कछु संगि न लीआ ॥
ऐसी संचि जु बिनसत नाही ॥ पति सेती अपुनै घरि जाही ॥
साध संगि कलि कीरतनु गाइआ ॥ नानक तेते बहुरि न आइआ ॥१५॥

(गउड़ी)

प्रमारथ - उस प्रमात्मा को रात दिन सिमरो जो अन्त समय सहाई होता है। यह जो माया से पैदा की हुई खुशीयाँ विशे विकार आदि यह साथ कभी भी नहीं जाती है । यह तो थोड़ें दिन है। मां, बाप, स्त्री, लड़की, पुत्र यह साथ नहीं जाते। ऐसा धन्न इकठ्ठा करना चाहिए जो साथ चले, वह वाहिगुरू का सिमरन है। वाहिगुरू सिमरन के बिनां कोई शै साथ नहीं जाती। जिस पुरष ने सतिसंग में बैठ कर हरी कीरतन गाया और वाहिगुरू का सिमरन किया है गुरु जी कहते वह वापस जन्म में कभी नहीं आता है। उस का तो जन्म मरन कट जाता है। वह मुकत हो जाता है। ऐसे नाम सिमरन वाले गुर सिखों सेवकों में भाई समुन्दा गुरु जी का सिख बणा था। सिख बनने से पहले उस का जीवन माया वादी था। वह धन्न इकठ्ठा करता, स्त्री से प्यार करता। स्त्री के लिए कपड़े गहने और उसकी खुशीयों का सामान ले कर आता, लड़की लड़कों से मोह था। कभी किसी तीरथ पर न जाते। प्रमात्मा है कि नहीं? यह सवाल उस के मन में कभी आया भी न था। अगर कहीं चार छिलड़ गवाच जाते तो उस की आत्मा दुखी होती। वह दो दो दिन रोटी न खाता। माया इकठ्ठी

करनी उस के जीवन का निशाना थी। माया के बदले अगर कोई जान माँगता तो जान भी देने को त्यार हो जाता है।

एक दिन वह भुलेखे से गुरमुखों की संगत में बैठ गया। एक ज्ञानी ने उपरोकत शब्द पढ़ा और साथ ही शब्द की व्याख्या की। शब्द के अंतरीव भाव ने भाई समन्दे की आत्मा पर बहुत असर किया। उस की बुधी जाग गई। वह सोचने लगा कि जो कुछ मैं कर रहा हुं यह अच्छा है या जो कुछ गुरमख कहते हैं यह अच्छा है ? वह बौंदलिया सा हो गया। उठ कर घर गया। रोटी खाने को मन नहीं किया। रात को सोया तो नींद नहीं आई। रात के बारह बज गए नींद नहीं आई जहां पहली रात ही घूक सो जाता था। वह सोच में पढ़ गया। मायो इकट्ठी करनी अच्छी है या नहीं ? स्त्री, धी, पुत्र का सम्बन्ध कहां तक है ? उस की आंखों के आगे कई झांकीयाँ आईं और गई।

एक यह झांकी भी आई कि कोई मर गया है। उस के पुत्र, नूंहें, धी, और स्त्री उस को जला कर घर आ गए हैं।

चार दिन बाद उसका किसी ने नाम भी न लिया। वह भूल गया। समुन्दे को आपणा मां बाप भी याद आणा। वह उस कोलों तुर गए। चार दिन के दुख के बाद भूल गए। वह ऐसे विचारों में गवाचा रहने लगा ऐसे ख्यालों में ही सोते में सपना आया जो बहूत भिआनक था। उस ने देखा - वह बिमार हो जाता है। बीमारी के समय उसके लड़के लड़कीयां स्त्री और साक सम्बन्धी उस के पास आते जाते हैं। पहले पहले हित करते रहे और धीरे धीरे जैसे जैसे उस की बीमारी बडती जाती है। वैसे वैसे ही उनका हित कम होता जाता है। आखर समय आ जाता है कि यमदूत उस की जान निकालने के लिए आए। उनकी भिआनक शकल देख कर वह भयभीत हो जाता है स्त्री को कहता हैं कि मेरी सहायता करो। मुझे जमों से बचाओ। वह

अगों रौंदी पई सिर फेर देती है कि वह बचा नहीं सकती, जम उस की रूह को मारते पीटते धरमराज के पास ले जाते हैं। धरम राज कहता है 'यह महां पापी है। इस ने सारे जीवन में सिमरन बिलकुल नहीं किया। नेकी नहीं कमाई। इस महां पापी को आग के नरक में फैंको। जहाँ कई जन्म जलता रहे। फैंको! फैंको! महां पापी है।' धरमराज का यह हुकम सुण कर जम उस को आग-नरक की और ले गए। जब नरक के नजदीक गए तो समुन्दे ने देखा - बहूत भिआनक आग जल रही थी' उस का सेक दूर दूर तक जाता था नजदीक आने से पहले ही हर चीज जल जाती थी। समुन्दे ने देखा और सुणा कि कई महां पापी उस नरक भठ में जल कर कुरला रहे हैं। समुन्दा दहिल गया। जब जम उस को उठा कर आग में फैंकने लगे तो उस की डाड निकल गई। उस डाड के साथ ही उस की नींद खुल गई। वह त्रबक कर उठ बैठा। आंख मल कर उस ने देखा, वह नरकों में नहीं बलिक आपणे घर बैठा है। वह मरा नहीं जीवित है। पर उसका कलेजा इतनी जोर से धड़का कि उस का सांस आणा भी मुश्किल हो रहा था वह पसीने से तर हो गया।

समुन्दा बिस्त्र से उठ गया। अभी रात ही थी। आसमान में तारे हंस रहे थे। घर वाले और आंढ गुआंढ सब सोए पड़े थे। चारों और चुप थी उस चुप के अन्धेरे में समुन्दा घर से निकला। जिस तरह किसी के घर से चोर निकलता है। दबे पाँव, धड़कता दिल, जल्दी जल्दी समुन्दा उस टिकाणे गया जहाँ गुरमुख आए हुए थे। वह गुरमुख जाग रहे थे। पिछली रात समझ कर उठे थे और स्नान कर रहे थे। स्नान करके उन्होंने रबी भजन करना शुरु कर दिया। घबराया हुआ समुन्दा उन के नजदीक बैठा रहा। बैठे को दिन चढ़

गया, दिन चढ़े उन गुरमुखों के चरनों गिर कर ऐसे कुरलाने और बेनतीयां करने लगा। 'मुझे नरकों का डर है। मैं कैसे बखशिया जाऊं। मुझे स्वर्गों का रास्ता बताओ। नरकों की भिआनक आग से बचाओ। संत जगत के रक्षक होते हैं। भूले हुए लोगों को रास्ते में डालते हैं। मेरी कूक पुकार भी कोई सुणे। आप ही तो सब कुछ हो। सोई आत्मा जाग गई।

वह गुरमुख श्री गुरु अरजन देव जी के सिख हैं। श्री हरिमन्दिर साहिब की उसारी के लिए नगरों में से सामान इकट्ठा कर रहे थे। उन्होंने भाई समुन्द की बेनती सुणी। उस को धीरज दिया और कहा, 'पुरषा! सुबह हमारे साथ चलना। वहां जगत रक्षक गुरू जी हैं उन के दर्शन करना तब उधार होगा।

अगले दिन भाई समुन्दा सिखों के साथ साथ 'चक्क रामदास' आ गए। दीवान लगा था। गुरगद्दी पर बिराजे हुए सच्चे सतिगुर सिखों को उपदेश कर रहे थे। समुन्दा भी जा चरनों पर गिरा। रो कर बेनती की, 'दाता बख्श! मुझे इस भव सागर से पार होने का साधन बताओ। नरकों की आग से मुझे भय लगता है। बड़ी आयू व्यर्थ गंवा ली है। अच्छे जीवन का ढंग बताओ! हे दाता! दयालू सतिगुरू मुझ पर मेहर करो।

अंतर्यामी सतिगुरू जी ने देखा, कि समुन्दे की आत्मा पछता रही है। यह नेकी और धर्म के रासते चलने के लिए त्यार है। इस को गुरमत बखशनी योग है। सतिगुरां ने फुरमाया - 'हे सिखा! तुझे वाहिगुरु ने इस संसार में नाम सिमरन और लोक सेवा के लिए भेजा है, इस लिए उठ कर वाहिगुरु सिमरन करना। धरम की ही किरत करनी, गुरबाणी ही सुणना। निंदिआ, चुगली, बखीली से दूर रहणा। यह जगत तेरे लिए जीवन नहीं, बलिक रासते का

सहारा है। जीवन का मनोरथ है, प्रभू से बिछड़े हां, उस के पास पहुंचना और उस के साथ इस तरह घुल मिल जाना जिस तरह पानी के साथ पानी मिल जाता है। जिस तरह दो दीपकों की रोशनी एक मालूम होती है। सच्च बोलना गुरद्वारे जाना और भूखे सिखों को भोजन खलाया करना। यह है जीवन जुगती !'

★

६७. साधू रणीआं जी की कथा

जहां सरोवर रामसर है, सतिगुरू हरिगोबिंद साहिब जी के समय एक साधू शरीर पर खाक लका कर वृक्ष के नीचे बैठा हुआ शिवलिंग की पूजा कर रहा था। वह टलीयों को बजाई जाता और जंगली फूल चड़ाई जाता था, वह कोई पक्का शिव भगत था।'

जिस समय वह शिवलिंग की पूजा में मगन था तो यकायक उस के कानों में यह शब्द गूंजें 'ओ भगता! एक चोरी को छोड़ा, दूसरा पाखण्ड शुरू कर दिया। उल्टे रास्ते से मुड़ उल्टे रास्ते पर चलना ठीक नहीं।

यह बचन सुन कर उस ने आंखों को उपर उठा कर देखा तो सतिगुरू हरिगोबिंद साहिब जी घोड़े पर सवार उस के साहमने खड़े मुसकरा रहे हैं। जैसा कि कभी उस ने दर्शन किये थे। कोई बादशाह समझा था। जीवन की घटना उस को फिर याद आने लगी।

www.9009.co.in

वह साधू उठ कर खड़ा हो गया। हाथ जोड़ कर बेनती की 'महाराज! आप के हुकम से चोरी और धाड़ा छोड़ दिया है। साधू हो गया और बताओ क्या करूं ?'

उस की बेनती सुण कर मीरी पीरी के मालक ने फुरमाया - 'हे गुरमुखा पत्थर की पूजा नहीं करनी। आत्मा को समझ! उस की पूजा कर, उस का नाम सिमर, जिस ने शिव जी, ब्रह्मा विष्णु आदि देवताओं की सिरजणा की है। करतार का नाम सिमर, सतिसंगत में बैठ, सेवा कर यह जन्म बहुत कीमती है।' मानस जन्म दुरलभ है होत न बारंबार।' यह बचन करके मीरी पीरी के मालक गुरू के महिलों में चले गए और साधू सोच में पढ़ा रहा।

वह साधू भाई रणीआं था जो पहले धाड़वी होता था। अकेले-दुकले स्त्री पुरुषों को दबा कर उस से सोना चांदी छीन लिया करता था। एक दिन की बात है। रणीआँ का दो दिन कहीं दाव न लगा किसी से कुछ छीनने का। वह घूमता रहा। अन्त वह एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। और उडीक करने लगा। उसकी तेज निगाह ने देखा एक स्त्री सिर पर रोटी रख कर खेतों को जा रही थी। उस के पास बर्तन था। बर्तन की चमक देख कर वह उठा था। और उस सुआणी को जा घेरा। उस के गले में जेवर था। बर्तन छीन कर जेवर छीनने लगा तो उस के पास से छरर करके तीर निकल गया। उसने अभी मुड़ कर देखा ही था कि एक तीर और आकर उसके पास छोड़ा गया।वह डर गया उसके हाथ से बर्तन खिसक गया और हाथ औरत की टूमों से परे हो गए।

इतनी देर में घोड़े पर सवारमीरी पीरी के पातशाह पास पहुंच गए

औरत हो हौंसला हो गया। वह बर्तन ले कर चली गई और रणीऐं को सच्चे पातशाह ने बस यही बचन किया -

'जा गुरमुखा ! कोई नेकी कर ! अन्त काल के वस में पढ़ना है।' रणीआं चुप चाप चला गया। उस ने गंडासी फंक दी और वह बचन याद करता हुआ वह घर को जाने की जगह साधूओं के पास चला गया। एक साधू ने उस को नांगा साधू बणा दिया। घूमता घूमता वह गुरु की नगरी में आ गया।

सतिगुरू जी जब गुरू के महलों में चले गए तो साधू रणीए ने शिव-लिंग वहीं पर रहने दिया। वह जब दुखभंजनी बेरी के पास पहुचा तो सबब से गुरु का सिख मिला। वह गुरमुख और नाम सिमरन वाला था उस की संगत से रणीआ सिख बण गया। उस ने कपड़े बदले। सत्गुरू जी के दीवान में गया। सत्गुरू जी के दीवान में गया तो गुरु के लंगर की सेवा करने लगा। रणीआं जी बड़े नामी भाई बणे।

६८. भाई भाना परउपकारी जी की साखी

जिउ मणि काले सप सिर हस्स हस्स रस देइ न जाणै ॥
जाण कथूरी मिरग तन पीवंदियां किउ कोई आणै ॥
आरन लोहा ताईअै घड़ीअै जिउ वगदे वादाणै ॥
सूरण मारण साधीअै खाहि सलाहि पुरस परवाणै ॥
पान सुपारी कत्थ मिल चूनं रंग सुरंग सिञाणै ॥
अउखध होवै काल कूटि मारि जीवालन् वैद सुजाणै ॥
मन पारा गुरमुख वस आणै ॥

(भाई गुरदास जी)

भाई गुरदास जी फुरमाते हैं, जैसे काले नाग की सिरी में मणी होती है पर उस को ज्ञान नहीं होता। मिरग की धुन्नी में कस्तूरी होती है। दोनों के मरने पर उत्तम वस्तुएं लोगों को प्राप्त हो जाती हैं। इसी प्रकार लोहे की अहिरण होती है। जिमीकंद धरती में होता है। उस की सिआणे उपमा करते और खाते हैं। लाभ पहुंचता है। ऐसे ही देखो पान, सुपारी, कथा, चूना मिल कर रंग और सवाद पैदा करता है। काला सांप जहरी होता है। सिआणे मार देते हैं और उस से लाभ लेते हैं।

इस प्रकार जिज्ञासू जनो! मन जो है वह पारे की तरह है और सदा डोलता रहता है। उस पर काबू नहीं पाया जा सकता। अगर कोई मन पर काबू पा ले तो उसका कल्याण हो जाता है। ऐसे ही भाई भाना जी हुए हैं, जिन्होंने मन पर काबू पाया हुआ था। उन को कोई कुछ कहे वह गुसा न करते थे न खुशी मनाते। आपणे मन को प्रभू सिमरन और लोक सेवा में लगाई रखते थे।

ग्रन्थों में उन की कथा इस प्रकार आती है -

भाना प्रयाग (इलाहबाद) का रहने वाला था, यह छटे सतिगुरू जी के हजूरी सिखों में थी, वह सदा धरम की किरत करता। जब कभी विहल मिलती तो दरिआ जमना किनारे जा कर प्रभू जी का सिमरन करता। किसी का दिल न दुखी करता। किसी की निंदा या चुगली करनी जाणता ही नहीं था। कोई भी उस को मंदे शब्द कहे तो वह चुप रहता।

एक दिन भाई भाना जमना किनारे पर बैठा हुआ सतिनामु का सिमरन कर रहा था बाणी पढ़ता जा रहा था। चौंकड़ा मार कर बैठे हुए ने लिव गुरचरनों से जोड़ी हुई थी। उस के मन की ऊंची अवस्था के कारन उस की आत्मा श्री अमृतसर में घूम फिर रही

www.9009.co.in

थी और तन जमना किनारे था, अलख निरंजन अगम अपार ब्रह्म के नजदीक होने पर उस के भेतों को पाने का यत्न करता रहा था। वह गुरू का सिख बणा था तब वह जवान उमर में था। व्यापारी आदमी था। व्यापार में झूठ बोलणा न जाणता था।

हां, भाई भाना गुरू जी की बाणी पढ़ रहा था। शाम पढ़ रही थी। डूबता हुआ सूर्य आपणी सुनहिरी किरने को जमनां के निरमल जल पर फेंक रहा था। उस समय एक नासतक [रब से बेमुख] मूरख भाई जी के पास आ बैठा। भाई जी को कहने लगा - 'हे पुरषा ! मुझे यह समझाओ कि रोज तुम हर समय प्रमात्मा को बे-आराम क्यों करता है। क्या तेरा प्रमात्मा तंग नहीं होता? एक दिन किसी को अगर बात बोल दी तो वह काफी है। रोज बुढ़ बुढ़ करते रहिणा।

भाई भाने ने नासतक के कौड़े बचनों का गुस्सा नहीं किया। प्रेम से कहने लगा, सुण नेक पुरषा मैं बहुत ज्ञानी तो नहीं पर जो कुछ मैं समझता हूं तुम को समझाने का यत्न करता हूं। जरा ध्यान से सुनो। जैसे किसी को चोर मिलें वह राजे के नाम की पुकार करता है तो चोर दौड़ जाते हे। क्योंकि चोरों को भय होता है कि राजा उन को सजा न दे। इस प्रकार मनुष्य के चारों और काम, क्रोध, लोभ मोह और हंकार पांच चोर हैं। वह जीव को सुख से नहीं बैठने देते, जीव का भविखत लूटते हैं। पाप करम की और परेरते हैं। उन पांचों चोरों से छुटकारा पाने के लिए जरूरी है कि सतिगुरां के बताए ढंग से राज्यों के राजे भगवान के नाम का सिमरन किया जाए, साथ ही अगर भगवान को याद रखीए तो वह भी हम को याद रखता है। सांस सांस नाम याद रखणा चाहिए। भगवान्न को

www.9009.co.in

भूलने वाला आपणे आप को भूल जाता है। जो आपणे आप को भूल मंदे करम करता है। मंदे करमों का फल उस की आत्मा को दुख होता है। वह संसार में बदनाम हो जाता है। उस को कोई अच्छा नहीं समझता।

जैसे पोले वांस में फूंक मारने से दूसरी और निकल जाती है और उस वांस पर कोई असर नहीं होता उसी प्रकार भाने के अच्छे और बुरे बचनों का असर कुछ भी न हुआ। एक कान से सुणा और दूसरे से निकाल दिया। साथ ही क्रोधवान हो कर भाई भाने को कहने लगा 'मूरख ! बेसमझ क्यों कूड़ तोली जाणा ऐं। ना कोई प्रमात्मा है ओर न किसी को याद करना चाहिए। यह कह कर उस ने भाई साहिब को एक जोरदार थप्पड़ मारा। थप्पड़ मार कर आप चलता बणा। रास्ते में जाता जाता भाई जी और प्रमात्मा को गाली निकालता चलता गया।

भाई भाना जी हौंसले वाले पुरुष थे। उन्होंने थप्पड़ का गुस्सा नहीं किया। बलिक उठ कर घर चले गए। घर जा कर सतिगुरां जी के आगे बेनती की, 'हे सच्चे पातशाह ! मैं तो शायद कत्ल होने लायक था पर आप की मेहर है कि एक थप्पड़ से ही खलासी हो गई है। लेकिन मैं तो यही चाहता हूं कि इस नास्तक का भला हो और यह सीधे रास्ते लगे।'

यह घटना होने के कुछ समय पश्चात एक दिन भाई भाना जी फिर जमना के किनारे पर गए। आगे जा कर देखतें हैं कि वही नासतक वहां बैठा हुआ था। उस का हुलीआ खराब था। तन के कपड़े फटे हुए थे। तन पर फोड़े ही फोड़े थे। जैसे उस की आत्मा भृष्टि हुई थी उसी प्रकार उस का तन भी भृष्टा गया था। वह कुरला रहा था । उस के अंग अंग में से पीड़ें निकलतीं

www.9009.co.in

थे । उस का कोई दरदी न बनता । भाई भाने जी को देखते ही वह शरमिंदा सा हो गया, आंखें नीचे कर लीं । भाई साहिब की तरफ देख न सका । उस की बुरी दशा पर भाई साहिब को बहुत तरस आया, उन्हों ने दया कर उस को बाजू से पकड़ लिया और आपणे घर ले आए । घर ला कर सेवा करनी आरंभ कर दी, सतिनाम वाहिगुरू का सिमरन उस के कानों तक पहुंचाया । उस को समझाया कि प्रमात्मा जरूर है । उस महान शक्ति की निंदा करनी अच्छी नहीं । धीरे धीरे उस का शरीर अरोग हो गया । आत्मा में तबदीली आ गई । वह प्रमात्मा को याद करने लगा, जैसे जैसे सतिनाम कहता गया तिवें तिवें उस के शरीर के सभी रोग दूर होते गए ।

उस ने भाई भाने के आगे बेनती की कि भाई साहिब उस को आपणे सतिगुरां पास ले चलें, गुरां के दर्शन करके मैं भी तर जावां, क्योंकि उस ने आपणे बीते जीवन में कोई नेकी का काम नहीं किया ।

यह सुन कर भाई भाने को बहुत खुशी हुई, उस ने उसी समय जाने की त्यारी की और मंजलो-मंजली चल कर श्री अमृतसर पहुंच गए, आगे सतिगुरां का दीवान लगा हुआ था, दोनों ने जाकर सतिगुरां के चरनों पर मत्था टेका । गुरु जी ने मेहर कर भाई भाने के साथ उस नासतक को भी तार दिया, वह गुर सिख बन गया, फिर वह कहीं न गया । गुरु के लंगर में सेवा करके जन्म सुफला करता रहा । इस तरह मन पर काबू पाने वाले भाई भाना बहुत लोगों को गुरु घर के दर्शनों के लिए लाए ।

★

६९. भाई साईआं जी की साखी

गुरमुख मारग आखीऐ गुरमति हितकारी ॥
हुकमि रजाई चलणा गुर शबद वीचारी ॥
भाणै रावै खसम का निहचउ निरंकारी ॥
इशक मुशक आकार है होइ परउपकारी ॥
सिदक सबूरी साबते मसती हुशिआरी ॥
गुरमुखि आपि गवाइआ जिन हउमै मारी ॥

(भाई गुरदास जी)

भाई गुरदास जी महां ज्ञानी थे। आप आपणी रचना से गुरमुखों या सच्चे सिखों बाबत बताते हैं कि सच्चा सिख या गुरमुख वही है, जो गुरमति गुर की शिक्षा से प्यार करता हुआ करतार के हुकम में चलता है। यकीन से करतार का नाम सिमरता है और भाणा मानता है। वह उसी तरह परउपकारी होता है जैसे कपूर, सुगन्धी कस्तूरी आदिक होती है। अगले को वाषना आती है। वह गुरमुख आपणे गुणों, पर-उपकारों और सेवा से दुनीआं को सुख देता है। किसी को दुख नहीं देता। सिदकवान होता है। सब से बड़ी बात यह है कि वह आपणे आप हंकार को खत्म करके गुरू या लोगों का ही हो जाता है।

गुरू घर में ऐसे अनेकों गुरसिख हुए हैं, जिन्होंने हउमै को मारा और आपणा नाम जताते हुए सेवा और परउपकार करने के साथ साथ नाम का सिमरन भी करते रहे।

ऐसे निरमाण सिखों में से एक भाई साईआं जी भी हुए हैं।

आप नाम का सिमरन करते और आपणा आप न जताते। रात दिन भगती करते रहते। आप ने गांव से बाहर बोहड़ के नीचे कखों की झोंपड़ी डाल ली। खाणा पीणा भी भूल गया। नगर वासी आपणे आप कुछ न कुछ खिला देते। इस प्रकार कहीए कि उन्होंने रिजक की डोर भी वाहिगुरू के आसरे छोड़ दी। मोह माया हंकार लालच सब वस्तुओं का त्याग कर दिया था। उस को भजन करते काफी समय बीत गया।

एक समय आया जब देश में बारिश न हुई। हाड़ सारा ही निकल गया। सावण का पहला हफ्ता आ गया पर पाणी का एक बूंद न गिरी टोबे, तालाब सब सूख गए। पशू और पक्षी भी प्यासे मरने लगे। धरती सड़ गई, तती लो मनुखों को तड़पाने लगी। हर एक जीव ने आपणे इष्ट देव के आगे अरदास की, जगलाऐ गऐ। वहां कुवारी लड़कीयों को भी दरखतों पर बैठाया गया, पर आस्मान पर बादलों के दर्शन न हुए। इंदर देवता को तरस न आया।

उस इलाके में लोग बड़े व्याकुल हुए क्योंकि वहां कुएं बिल्कुल नहीं थे। टोबिओं और तालाबों का जल पीने के लिए था, पाणी सूख गया। आठ आठ कोह पर पीने का पानी लाने लगे। भाई साईआं के नगर वासी और चौगिरदे के नगरों वाले इकठ्ठे हो कर भाई साईआं के पास गए। सब लोगों ने मिल कर हाथ जोड़ कर गले में पलू डाल कर भाई साईआं को प्रार्थना की।

'हे भगवान के भगत! हम गरीबों, पापीओं और निमाणिओं बंदिओं, बेजुबान पशूओं के जीवन के बदले भगवान के आगे अरदास करो कि बारश हो। कोई अन्न नहीं बीजा, पशु पक्षी और मनुष्य प्यासे हैं। इतना दुख होते हुए भी उस भगवान को हमारा कोई

ख्याल नहीं। क्या मालुम हम ने कितने पाप किए हैं। हमारे पापों का फल है कि मींह नहीं पड़ रहा। दया करो! मेहर करो! मासूम बच्चों पर तरस किया जाए।

भाई साईयां ने मनुष्य हृदय का रोणा सुणा, उस के नैणों में से अथरू निकल आए। उस का मन इतना भर गया कि वह बोल ना सका। उस ने आंखें बन्द की। आधा घण्टा अन्तर ध्यान हो गया। आपणे गुरदेव (श्री गुरू हरिगोबिंद साहिब जी) के चरन कमलों में लिव जोड़ी! कोई आधे घण्टे बाद नैण खोल कर कहने लगा - भगतो! यह पता नहीं किस के पापों का फल है जो भगवान इतना क्रोधवान है आपणे आपणे घर को जाओ। प्रमात्मा से अरदास करो। यह कहकर भाई साईयां आपणी झोंपड़ी में से उठा और उठ कर बाहर चला गया लोग देखते ही रहि गए। वह चलता गया और लोगों की आंखों से दूर हो गया। लोग खुशी खुशी आपणे घरों में आ गए कि अब जरूर वर्षा होगी, भाई साईआं आपणे गुरु के पास जाएगा। हम गरीबों के लिए अरदास की जाएगी। लोग घर गए तो उत्तर पश्चिम दिशा से हनेरी उठी। धीरे धीरे वह हनेरी लोगों के सिर के ऊपर आ गई। उस की हवा बहुत ठण्डी थी।

हनेरी के बाद महां काली घटा लुकी थी। हनेरी आगे निकल गई और मोहलेधार बारिश होणी शुरु हो गई। एक दिन और एक रात वर्षा ही वर्षा होती रही। चारों ओर जल थल हो गया। टोबे तालाब भर गए। खेतों की वटों पर से पाणी निकल गया। पक्षी और पशू कीड़े मकोड़े और मनुष्य आनन्द मगन हो कर नाच करने लगे। उजड़ा और मोया देश सुरजीत हो गया, जिन लोगों ने भाई साईआं जी के आगे बेनती की थी या बेनती करने वालों के साथ गए थे,

वह सभी भाई साईआं के गुण गाने लगे, कोई कहे - 'भाई साईआं पूरा रब्ब हो गया है।' किसी ने कहा 'उस का गुरु बड़ा है, सभ गुरुओं की बरकतें हैं। हम कंगालों के लिए उस ने गुरु के आगे जा कर बेनती की। गुरु जी ने अकाल पुरख को कहा, बस अकाल पुरख ने दया करके इन्दर देवता को हुकम दिया। इन्दर देवता दिल खोहल कर बसा। बात क्या, साईआं जी और उन के सतिगुरां की उपमा चारे पासे होने लगी।

जिस समय बारश हट गई तो नगरवासी इकट्ठे होकर भाई भाईआं जी की तरफ आए। भाई जी को भेट करने के लिए वस्त्र, चावल, गुड़ और नकद रुपये थाली में रख कर हाथों पर उठा लाए। जूह के बोहड़ नीचे चोंदी छत वाली झोंपड़ी में बैठा साईआं वाहिगुरु का सिमरन कर रहा था, संगत को आते देख साईआं आगे ही उठ कर दस कदम आगे हुआ। उसने दोनों हाथ उपर उठा कर कूक मारी, 'ठहर जाओ! क्यों आते हो? क्या मामला है?'

'आप गुरदेव है, हम आप का धन्यवाद करने आए हैं। उजड़ा हुआ देश बस गया। हम ने आप के दर्शन करने हैं। चरन धूड़ी लेणी है और लंगर चलाने हैं। आप के लिए पकी कुटीया बणानी है। हमारे आप ही प्रमेश्वर हैं।

यह कहते कहते हुए लोग श्रद्धा से आगे बढ़ आए। और मलो मली साईआं जी के चरनों में माथा टेकने लगे। और जो सामग्री साथ लाए थे उस के ढेर ही लग गए। जब सब लोगों ने माथा टेक लिया तो भाई साईआं जी भुबों भुबीं रोने लग पड़े। आए लोग हैरान हो गए। मौत जैसा सन्नाटा छा गया। भाई साहिब रोते हुए कहने लगे। मेरे सिर भार चढ़ाया है, मैं महां पापी हां, मेरे यहां बैठे रहने के कारण ही बारश नहीं होती थी। मेरे पापी के सिर और भार चढ़ाया मुझे

माथा टेक कर, मुझे गुरदेव कहा अगर मैं जरूर नरकों का भागी बनूंगा। मुझे क्षमा करो। मुझे कखों की कुली में रहणा है। मेरा और कोई टिकाणा नहीं। यह बरसात सतिगुरां की किरपा है। धन्य छटे पातशाह मीरी पीरी के मालक सच्चे पातशाह! मैं आप से बलिहारे जाऊं। वारे जावां, दुखभंजन मेहरवान सतिगुरू? जिन्हों ने जलती लोकाई को शांत किया है। मैं कहता हूं यह सारी सामग्री, सारा कपड़, सारे रुपए इकट्ठे कर के मेरे सतिगुरां के पास अमृतसर ले जाओ। मुझे आपणे पाप बखशाने दो। मैंने जीवन भर इस कखों की झोंपड़ी में रहना है। मैं पहले ही पापी हाँ। मेरे चंदरे पापों के बदले बरसात न हुई। अब मुझे गुरू कहि कर और भागी न बणाओ। जाओ बजुरगो जाओ!

समझदार लोग भाई साईआं जी की निमरता पर बड़े खुश हो गए और उस की उस्तत करने लगे। दूसरों को समझा कर वापस मोड़ दिया। सारी सामग्री बांध कर अमृतसर भेज दी। सारा बाहरा जो आगे देवी देवताओं का पुजारी था, वह श्री गुरु नानक देव जी के पंथ में शामल हुआ। श्री गुरू हरिगोबिंद साहिब जी महाराज को नगर में बुला कर सभी ने सिखी धारन की, गुरु जी ने भाई साईयां जी को निहाल किया। उस का लोक और प्रलोक भी संवार दिया। धन्य हैं सतिगुरू जी और धन्य हैं नेक कमाईयां करने वाले सिख!

★

www.9009.co.in

७०. माई सरखाना जी की कथा

मान सरोवर हंसला खाइ माणक मोती ॥
कोइल अंब परीति है मिठ बोल सरोती ॥
चंदन वास वणासपति होइ पास खलोती ॥
लोहा पास भेटीऐ होइ कंचन जोती ॥
नदीआं नाले गंग मिल होन छोत अछोती ॥
पीर मुरीदां पिरहड़ी इह देख सिओती ॥२७६॥

(भाई गुरदास जी)

आज की दुनीयां में प्यार और श्रद्धा की बेअन्त साखीयां हैं। गुरू घर में तो अणगिणत सिख हुए हैं जिन्होंने गुर चरनों से ऐसी प्रीती की है जिस की मिसाल और धरमों में कम ही मिलती है। ऐसी प्रीति की व्याख्या करते हुए भाई गुरदास जी फुरमाते हैं कि सिख गुरू से ऐसी प्रीति करते हैं जैसे मान सरोवर और हंस मोतीयों से प्यार करते हैं, भाव मोती खाते हैं। कोइल का प्यार आमों से है और उन के वैराग में मीठे गीत गाती रहती है। चन्दन की सुगन्धी से सारी बनासपती झूम उठती है। लोहा पारस से मिल कर सोना हो जाता है। नदीयों के साथ गंगा साथ मिल कर पवित्र हो जाते हैं। अन्त में भाई साहिब कहते हैं, सिखों का प्यार ही उन की रास पूंजी होता है।

जब इतिहास को वाचीए तो माई सरखाना का नाम भी आता है। आप गुरू घर में बहुत सतिकार प्राप्त कर चुकी हैं। उस के प्यार की कथा बहुत श्रद्धा दर्शाने वाली है। वह प्यारी दीवानी

www.9009.co.in

श्रद्धालू और अमर आत्मा हुई। जिस का जस आज तक भी गाया जाता है।

किसी गुरसिख से माई ने गुरू घर जी की शोभा सुणी। उस समय वह बुढापे के नजदीक थी और जवानी दूर जा चुकी थी धी पुत्र ब्याहे जा चुके थे, जिम्मेवारीयां सिर से टल चुकीं थी। उस को अब जन्म मरन के गेड़ का ज्ञान हो चुका था पर यह नहीं मालुम था कि चुरासी का गेड़ा कैसे समाप्त होता है।

गुरसिख ने माई सरखाना को गुरसिखी का ज्ञान करवाते हुए यह शब्द पढ़ा।

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ।।

ऐकु सबदु मेरै प्रानि बाहुड़ि जनमि न आवा ।।१।।

यह शब्द जो हृदय में बसता है, वह शब्द सतिगुरू जी की और से प्राप्त होता है। सत्गुरू त्रैकाल दर्शी थे। सत्गुरू नानक देव जी की गुर गद्दी पर छेवें पातशाह हैं। मीरी पीरी के मालक उन को याद कर उन के चरनी से लिव जोड़ कर मन में श्रद्धा धारन करो।

'बहूत अच्छा ! मैं श्रद्धा करांगी। मुझे बताओ सेवा के लिए भेटा क्या रखूंगी। जब दर्शन करूं। माई सरखाना ने पूछा था।

गुरसिख - सतिगुर जी प्रीत और श्रद्धा चाहते हैं। कार भेटा जो भी हो। पहुंच से ज्यादा कुछ नहीं मांगते। एक टके से भी प्रसन्न होते हैं। उन के दरबार में सेवक, हाथी, घोड़े, दुशाले रेशमी वस्त्र और सोना चांदी बेअन्त भेटा चढ़ाते हैं। नौ निधीआं और बारह सिधीआं हैं। सतिगुरू जी जरूर आप का जन्म मरण का गेड़ा काटेंगे। मेहरों के सागर हैं।

हरिगोविंद गुरु अरजनहु गुरु गोबिंद नाउं सदवाया ।।

गुर मूरति गुर शब्द है साध संगत विच परगटी आया ॥
पैरीं पाइ सभ जगत तराया ॥

(भाई गुरदास जी)

इस तरह गुरु घर की शोभा सुन कर माई सरखाना गुरु घर की श्रद्धालू बन गई। उस ने ध्यान कर लिया और गुरसिख के मूंह से सुने मूल मन्त्र का जाप करने लगी। उस के मन अन्दर प्रेम जाग पड़ा। मन के साथ हाथों की सेवा के लिए उत्शाही हुई। आपणे खेतों से मोटे मोटे गुलों वाली कपाह चुणी। कपाह चुण कर वेली और फिर रूं को पिंजाया गया तो फिर सतिगुरु जी का ध्यान धर कर कातती रही। रूं काता गया तो फिर जुलाहे से श्रद्धा के साथ कपड़ा त्यार करवाया। बुढापे और लम्बी आयु के तजुरबे के साथ बरीक और सूतर का कपड़ा रेशमी कपड़े जैसा था। हाथों से चादरे को सीता और मन में श्रद्धा धारी - 'सतिगुरु जी के दर्शन हों।'

मगर गुरसिखों से सुनती रही, 'गुरु जी के दरबार में राजे, महाराजे और वजीर आते हैं।' फिर वैराग से मन में सोचती मैं तो एक गुरसिख हूं। जिस के पास एक चादरा वह भी एक खदर का। किस तरह सतिगुरु जी प्रवान करेंगे? इस तरह मन में वैराग आया मन के उतरा चड़ा रहे।

मीरी पीरी के मालक सतिगुरु हरिगोबिंद साहिब जी मालवे की धरती को पूजनीक बनाने और सिख सेवकों को तारन गए थे। डरोली भाई में दीवान लगा था, सिख संगत आती और दर्शन कर के वापस जाती। घरों और नगरों में जा कर गुरु जस को सुगंधी की तरह फैलाती।

माई सरखाना को भी खबरां मिल गईआं कि सतिगुरु जी नजदीक ही आ गए हैं। वह भी सतिगुरु जी के दर्शनों के लिए चली

देसी खण्ड में घिउ रलाया। मखण के परौंठे पकाए और चादर को जोड़ कर सिर पर रख कर चल पड़ी। चार पांच कोह का सफर कर जिस समय वह गुर दरबार के पास पहुंची तो माई के पाँव रुक गए। वह मन ही मन में विचार करने लगी - 'मैं गरीबणी हां। मेरी खदर की चादर, खण्ड, घी के परौंठे क्या कीमत रखते हैं? यहां राजों महाराजों के कीमती दुशाले आए होंगे।...छती प्रकार के भोजन छकन वाले दाते, यह भारी परौंठे क्या मालूम खाएं के न खाएं यह तो....

वह दीवार के साथ लग कर खड़ी हो गई। आंखें बन्द कर लीं और अन्तर-आत्मे में सतिगुरु जी को याद करने लगी। वह दुनियां भूल गई, अट्टल ध्यान लग गया सुरत जुड़ गई।

उधर सच्चे पातशाह सतिगुरू हरिगोबिंद साहिब जी महाराज, मीरी पीरी के मालक भवजल से पार करने की समरथा रखने वाले दाते, दयालू, अंतर्यामी जाण गए। माता सरखाना धिआन करके खड़ी है। उस के आगे भरम की दीवार है। वह दीवार की और नहीं हट सकती जितनी देर मेहरां न हों।

अंतर्यामी दातार ने हुकम दिया - 'घोड़ा आऐ' यह हुकम कर पलंघ से उठ खड़े हुए। जोड़ा डाला और जल्दी से दीवान से बाहर आए। सिख संगत चोजी प्रीतम के चोज को देख कर हैरान हुई। जो भेती थे वह समझ गए किसी जीव का पार उतारा करने के लिए महाराज चले हैं, जो नए थे वह हैरान ही थे। उन की हैरानी को दूर करने वाला कोई न था।

उधर माई सरखाना की आँखें बन्द थी और वह बेनतीयां ही किए जा रही थी। उस की आत्मा कहे जा रही थी-'हे सचे पातशाह!'

में कंगालन हां। कैसे दरबार आऊं। डर लगता है। आपणी मेहर करो मै दर्शनों के लिए दूर खड़ी हां। कोई चारा नहीं। डर आगे चलने नहीं देता. दाता जी मेहर करो! दया करो।

ऐसे नेत्र बन्द करके सतिगुरू जी को याद किए जा रही थी।

उधर सतिगुरू जी घोड़े पर सवार हुए। घोड़े को दौड़ाया और उस जगह आ गए जहां माई सरखाना दीवार से लग कर खड़ी थी। सतिगुरू जी ने आवाज दी -

'माता जी देखो! आंखें खोल कर देखो! सतिगुरां का यह बोल सुण कर माई ने आंखें खोली, देखा कि दाता घोड़े पर सवार उस के साहमने खड़े थे। माई जल्दी से आगे हुई, चरनों पर माथा टेका। खुशी में इतनी बिहबल हो गई कि उस की जबान न खुली। वह बोल न सकी। वह सतिगुरां की ओर देख दर्शन करती गई।

सच्चे पातशाह ने कहा - 'अच्छा माता जी! रोटी दो हम खाएं। हम को बहुत भूख लगी है। ...परोंठे....आप को हम देखते रहे। आप रासते में ही खड़े रहे।

माइ ने बुकल में घी, खण्ड वाला छन्ना और परौंठे निकाल कर सतिगुरों को पकड़ा दिए। सतिगुरां ने प्रसन्न हो कर प्रशादे छके। छकने के बाद सतिगुरू जी ने चादर की मांग की। माई ने चादर गुरू जी को भेंट कर दी माई ने दर्शन जी भर कर किए और मन की श्रद्धा पूरी हो गई। माई निहाल हो गई उस का जन्म मरन का गेड़ समाप्त हो गया। दाता ने आपणी क्रिपालता से माई सरखाना को अमर कर दिया।

सतिगुरू जी माई सरखाना को तार ही रहे थे कि पीछे सिख आ गए। हजूरी सिख को सतिगुरू जी ने हुकम दिया कि माता जी को

दरबार में ले आओ।' यह हुकम कर के आप दरबार में पधार गए। माता सरखाना दो दिन दरबार में रहि कर दरशन करती रही। उस का कल्याण हो गया। उस माई के नाम पर आज उस के गांव का नाम भी सरखाना मालवे मशहूर है।

★

७१. भाई सुजान जी की कथा

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥
मंनै परवारै साधारु ॥
मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥
मंनै नानक भवहि न भिख ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥

★

गुर का बचनु जीअ कै साथ ॥
गुर का बचनु अनाथ को नाथ ॥

उपरोकत महां वाक का भाव अरथ है कि जो प्रमात्मा के नाम का सिमरन करते, उस को मानते, आपणे गुरू का हुकम मानते हैं वह सदा मोखश को प्राप्त करते हैं। जो भगती भाव से चलते हैं, वह दूसरों को भी तार देते हैं। साथ ही दाते का फुरमान है कि गुरु जी का बचन, जिंदगी भर न भूले, हृदय में बसाया जाए। गुरू जी का बचन, यह तो सभ का आसरा है। उस आसरे

ही जीवन बतीत करते हैं भाव कि गुरु घर में हुकम मानणा, नाम का सिमरन और सेवा ही महानता रखती है। यही सिखी जीवन सभ से अच्छा है।

सेवा और नाम सिमरन वाले सिखों में एक सिख वैद्य सुजान जी हुआ है। श्री कलगीधर जी की आप पर मेहर हुई थी। जन्म मरन काटा गया था।

वैद्य सुजान जी लाहौर के वसनीक थे। फारसी पढ़ने के साथ साथ वैद्य हकीम भी बने थे और फारसी की कविता करया करते थे। वह हिकमत करता तो उस का मन अशांत रहता। मन की शांती ढूंडने के लिए एक कवी मित्र के साथ श्री अनंदपुर साहिब पहुंचा। उस समय श्री अनदपुर साहिब में सतिगुरु जी के पास ५२ कवी थे। आप कवीओं की बहुत इज्जत करते थे। उन की महिमां सारे उतरी भारत में थी।

भाई सुजान जी आए। दो दिन तो श्री अनंदपुर शहिर की महिमा देखते रहे। जिस समय सतिगुरु जी के दरबार में पहुंचे दर्शन किए तो सतिगुरु जी ने एक अनोखा ही कौतक किया।

जिस समय दर्शन करन गया भाई सुजान ने सतिगुरु जी के चरनों पर मथा टेका तो उस समय सतिगुरु जी ने अनोखा ही बचन किया।

'हे सुजान! तुम वैद्य हो! दुखीओं की सेवा कर चले जाओ, दूर चले जाओ और सेवा करो। उस में आप को शांती प्राप्त हो जाएगी तर जाएंगा, भाग जाओ।'

'महाराज! किधर जाउं?' भाई सुजान ने पूछा।

'भाग जाओ! आप की आत्मा जानती है कि किधर जाना है, आप ही ले जाएगी। बस अनंदपुर से चला जा!'

फिर नहीं पूछा, चरनों पर माथा टेका, सारीआं भुखां त्रिशनां

www.9009.co.in

मिट गईयां। पाणी पीने की त्रिशना न रही। जोड़ा पाना भूल गया। नंगे पांव दौड़ उठा। कीरतपुर निकल गया, सरसा पार कर गया। वह दौड़ने से न रुका। एक फौजी की तरह दौड़ता गया। सूरज डूबने वाला हो गया। वागी घरों को डंगर मोड़ कर ले जा रहे थे। वह दौड़ रहा था, उस की मंजिल कब खत्म होगी ? यह उस को पता न था। हाँ सूरज डूबने के साथ ही एक नगर आया। उस की दीवारों के नजदीक जाकर उसको ठेडा लगा। मूंह के बल गिरा। गिरते हुए के मूंह से निकला - 'वाहिगुरू' और बेसुध हो गया।

नगर की बीबीयों ने देखा कि दौड़ा आता राही गिर कर बेसुध हो गया। उन्होंने शोर मचा कर गांव के आदमीयों को बुला लिया। मरदों ने भाई सुजान सिंह को उठाया। बिस्तर पर लिटा कर उसकी सेवा की। उस के पैरों में छाले थे। खून बहि रहा था। पैरों को गरम पाणी से धोया। होश में लाए। जब सुरत आई तो नजदीक मरद बीबीयों को देख कर उस के मुख से सहिज ही निकल आया 'धन्य कलगीयां वाला पिता !'

'आप ने कहां जाणा है ?' गांव के मुखी ने पूछा -

'कहीं नहीं, जहां पर जाणा था वहां पर आ गया। मेरा मन कहता है कि यहाँ रहणा है। मैं वैद्य हां। रोगीयों और दुखीयों की सेवा तन मन हो कर करूंगा। बताओ जिन को रोग है मैं फीस नहीं लेता। मुझे यहां रहणा है रोटी खानी और सेवा करनी है। सुजान चन्द जो ने उत्तर दिया।

जो लोग वहां सुणने वाले थे खुश हुए प्रमात्मा ने उन पर बड़ी मेहर की। वह बड़े गरीब लोग थे। गरीबी के कारण उन के पास कोई न आता था। उन के धन भाग जो हमारे पास हकीम आ गया। एक एक माई आगे आई, उस ने कहा मेरा तो ताप ही नहीं टूटता। मुझे

www.9009.co.in

दवाई बताओ !'

'अबी टूट जाएगा ! यह......वस्थु खा ले । वस्थु खाने लगी जबानों कहना - 'धन्न कलगीधर पातशाह !' वह बुढ़ी घर गई उस ने वैद्य जी की बताई हुई वस्थु को खाया जबानों कहा 'धन्न गुरु कलगीधर पातशाह, सचमुच उस का बुखार टूट गया, वह अरोग हो गई। वैद्य की उपमा सारे गांव में खिलर गई। एक कखों की झौंपड़ी में उस ने सफ विछा लई और बाहर से जड़ी बूटीयां को ले आया, और लगा रोगीओं की सेवा करने। सफ पर रात को सो जाता, वाहिगुरु का सिमरन करता और आए गए रोगी की सेवा करता। इस तरह कई वर्ष बीत गए। स्त्री बच्चे और माता पिता याद न आए। अमीरी खाना भूल गया, वह एक सन्नयासी की तरह निथावाँ जिहा होकर लोग सेवा में लगा रहता। शाही रास्ते पर गाँव था, जिस समय रोगीओं से फुरसत मिलती तो आने जाने वालों का पानी पिलाने लग जाता। पानी पीने वाले हर किसी को कहता - कहो, 'धन्न गुरु कलगीधर पातशाह !' यात्रू ज्यादा श्री अनंदपुर साहिब को आते जाते थे, जो जाते वह श्री अनदपुर जाते तो जाकर बताते रास्ते में एक सेवक है, वह बहुत सेवा करता है, हर एक जीव से कहलाता है, 'धन्न गुरु कलगीधर पातशाह' यह सुन कर गुरु जी थोड़ा सा मुसकरा दिया करते थे !

एक दिन एसा आन पहुंचा जिस दिन भाई सुजान चन्द जी की घाल थाएं पढ़नी थी। उस के छोटे बड़े ताप संताप और पाप खण्डन होने थे । खबरां आईआं सतिगुरू जी शिकार खेलने आ रहे हैं। यह खबर भाई सुजान को भी मिल गई। दिल खुशी से बागो बाग हो गया, दर्श करने की लगन तेज हो गई, बिहबल हो गया मगर डर भी था कहीं दर्शन करने से न रह जाएं। भाग्य जवाब न दे जाएं । आखर

वह समय आ गया। गुरू जी गांव के नजदीक आ गए। नगर वासी दौड़ कर स्वागत के लिए आगे जाने लगे। पर उस समय एक माई आई। उस ने आकर धाह मारी - 'वे पुत्रा! नसीं जल्दी करीं, मेरी नूंह को सूल हो रहा है। उसकी जान बचाओ। वह आफर गई है। गरीब पर तरस करो। चल सत्गुरू तेरा भला करे, जल्दी चल।'

भाई सुजान के आगे मुश्कल खड़ी हो गई। एक तरफ रोगी कुरला रहा है। दूसरी और कलगीधर पिता जी आ रहे हैं। गुरू जी के दर्शन करने भी जरूरी हैं, पर रोगी को भी छोड़ा नहीं जा सकता। अगर बूढ़ी की नूंह मर गई तो उस हत्या का भागी भाई सुजाण होगा उस की आत्मा ने आवाज दी।

भाई सुजान! इस प्रकार क्यों दुचिती में पढ़ा है? रोगी की सेवा करो, तुम्हें सेवा करने के लिए दाता ने हुकम किया है। उस प्रीतम का हुकम है, गुरू परमेश्वर के दर्शन लोक सेवा में हैं।

उस समय सुजान दवाईयों का झोला उठा कर माई के घर को दौड़ उठा। लोग उत्तर की और दौड़ रहे थे सुजान दक्षिण की और जा रहा था। लोगों को गुर-दर्शन करने की तांघ थी और भाई सुजान को रोगी को देखने की काहल थी। लोग गुरु जी के पास पहुंच गए और सुजान माई के घर पहुंच गया। उस ने जा कर माई की नूंह को देखा, वह सच मुच ही घड़ी पल की प्राहुणी थी। उस ने उसे दवाईयां घोल कर पिलाई। वैदिक असूलों के अनुसार सम्भाल की हिदायतें दी। पर एक घण्टा लग गया। रोगण अब खतरे से बाहर हो गई। उस का अफरेवां मठा हो गया। सूल की दरद अब नरम हो गई। भाई सुजान जी दवाईयां दे कर वापस मुड़े। जल्दी जल्दी मूड़कर क्या देखते हैं उस की कखों की कुली के आगे लोगों की बहुत

भीड़ है । घोड़ सवार खड़े हैं, सारा गांव इक्ट्ठा हुआ हुआ है। भाई सुजान भीड़ चीर कर आगे लंघ गया । झौंपड़ी के अन्दर जाकर क्या देखता है कि सच्चे सतिगुरू नीले के सवार सच्चे पातशाह गरीब की सफ पर बैठे हुए छत की तरफ देख रहे हैं । जाते ही भाई सुजान सतिगुरू जी के चरन कंवलों पर दड़ करता गिर पड़ा। आँखों में खुशी के आंसू आ गए, चरन पकड़ कर बेनती की 'चोजी प्रीतम ! दाता, मेहर कीती जे गरीब की झौंपड़ी में पहुंच कर गरीब को दर्शन दिए, मेरे धन्न भाग ।'

'भाई सुजान निहाल !' सच्चे सतिगुरू जी ने बचन किया । सचमुच तूं गुरु नानक देव जी की सिखी को समझा है। गरीबों की सेवा की है यही सच्ची सिखी है ! 'उठो! अब श्री अनंदपुर साहिब को चलो, हम आप को लेने आए हैं ।'

गुरु के बचनों को मनणा सिख का परम धरम है। उसी समय उठ कर भाई सुजान गुरु जी के साथ चल पड़ा और श्री अनंदपुर साहिब में आन पहुंचा। गुरु जी ने आप को अमृत छका कर सिंघ सजा दिया। नाम 'सुजान सिंघ' रखा। लाहौर से प्रवार को भी मंगवा लिया। परवार को भी अमृत छकाया गया। सारा प्रवार भाई सुजान सिंघ को मिल कर बहुत खुश हुआ। भाई सुजान सिंघ की धरम पत्नी जिस ने कई वर्ष पती का विछोड़ा उठाया और पती के हुकम में सती समान रही. उस के हृदय को कौन समझ सकता है ।

★

www.9009.co.in

७२. जटू तपे की साखी

प्रेम पिआला साध संग शबद सुरत अनहद लिव लाई ।।
धिआनी चंद चकोर गति अमृत दृसटि सृसटि वरसाई ।।
घनहर चात्रिक मोर ज्यों अनहद धुनि सुनि पाइल पाई ।।
चरन चमल मकरंद रस सुख संपट हुइ भवर समाई ।।
सुख सागर विच मीन हुइ गुरमुख चाल न खोज खुजाई ।।
अपिउ पीअण निझर झरण अजर जरण न अलख लखाई।।
वीह इकीह उलंघ के गुर सिखी गुरमुख फल खाई ।।
वाहिगुरू दी वडी वडिआई ।।

अधिआत्मिक दुनियां में प्रमात्मा के दर्शन प्राप्त करने के लिए अनेकों रासते आपो आपणी सूझ के अनुसार अनेकों महां पुरखों और अवतारों ने बताए हैं। जिन्हों को ज्ञान ध्यान, जप तप आदिक नाम दिये जाते हैं। पुन्न, सेवा सिमरन भी हैं। भारत में ज्ञान पर ही ज्यादा जोर रहा है। ज्ञान के पश्चात ध्यान आया, मूरती पूजा के रूप में और जप आया मन्त्रों के रूप में, यारां हजार, करोड़ बार किसी मन्त्र का जाप साध लेना तो कहना बस और कुछ करने की जरूरत नहीं समझो कि रिधयां सिधयां करामातें आ गई हैं। जाप का फल प्राप्त करने के पश्चात हंकार हो जाता रहा। उस हंकार की वरतों जादू टूने, मन्त्र लोगों को आपणे जेर करने में होती रही जप के साथ ही जोगी लोगों ने शरीर जो पन्ज भूतक का बना है परुष का सुन्दर घर । जोगी समझते रहे कि शरीर में जो शक्ति

www.9009.co.in

है, उस को निरमल किया जाए तो मन आपणे आप काम क्रोध मोह की और नहीं दौड़ेगा। भाव यह कि सरीरक शक्तियों को कमजोर करते थे।

भारत में जोगीयों और साधूओं की कई संप्रदाएं जो तपस्या पर भरोसा रखती थीं। भारत में अनेकों तपे हुए हैं। उन तपीओं में एक जटू तपा था। उस के तप की बहुत चर्चा थी। पर उस की तपस्या ने उसको ना रब्ब के नजदीक किया था और न ही उस के मन को शांती आई थी।

उस तपे की साखी इस प्रकार है कि वह करतारपुर (बिआसा) में रहता था और तप किया करता था। उस के तप करने का यह ढंग था कि वह आपणे चारों और पाँच धूणीयां जला लेता और आप उस के बीच बैठा रहता। सर्दी होती या हाड़। वह धूणीयाँ धुखा कर बैठा तपस्या करता रहता। उस की तपस्या की बड़ी चर्चा थी।

करतार पुर नगर को पांचवें पातशाह ने आबाद किया था। गुरू की नगरी का नाम प्राप्त हो गया। जब जटू तप करता था तब वहां सतिगुरू हरिगोबिंद साहिब जी महाराज करतारपुर बिराजे हुए थे और वहां धार्मिक कामों के इलावा सैनिक काम भी होते थे। नित शिकार खेले जाते और वैरी दलों से मुकाबला करने की सिखलाई होती। देश की सेवा का भी मनोरथ था।

जटू तपे को रबी ज्ञान बता कर उस को शरीरक कष्ट से बरी करने के लिए सतिगुरू जी ने ध्यान किया। तपे की दशा बड़ी तरस योग थी वह व्याकुल रहता। हंकार और लालच में आ गया था। उस की मनो बिरती ठीक नहीं रहती थी। ऐसी दशा में फसा होने पर भी कभी-२ गुरु घर की निंदा कर देता। उस के मन को फिर चैन न आता। उस शरीर दुखी रहता। पर सतिगुरू जी ऐसे दुखीयों का दुख नविरत करते थे।

सतिगुरू जी शिकार को जाते हुए तपे के पास आ गए। उस समय तपा पांच धूणीआँ लगा कर तप कर रहा था। उस का ध्यान बिखरा था। बैठा कुछ सोचता था।

सतिगुरू जी घोड़े पर सवार ही रहे। तपे जट्ट की और सतिगुरू जी ने मेहर की दृष्टि से उस की आँखों में आंखें डाल कर देखा। कोई चार पाँच मिण्ट देख कर साहिबां ने उस के तप की और भरम की शक्ति को खींच लिया और यह बचन करके कि 'तपिआ ! थापिआ न कर। कहो सतिकरतार।' साहिब जी घोड़े को ऐडी लगा कर आगे निकल गए।

सतिगुरू जी के जाने के पश्चात जटू तपे के दिल दिमाग में खलल मच गया। वह आप-मुहारा हो कर मलो-मली कहता गया। 'तपिआ खपिआ म कर ! तपिआ खपिआ न कर। 'कहो सति करतार सति करतार।'

यह भी कौतक हूआ कि उस की पांचों धूणीआँ ठण्डीयां हो गईयां उस की हिम्मत न रही। वह उठ कर फुकां भी न मार सका। उस ने किसी को आवाज भी न लगाई। वह आपणे आसण से उठ बैठा, उस ने कहा 'सतिकरतार !'

वह 'सतिकरतार कहता हूआ वह नाचता रहा। उस को हाल चढ़ गया। उसे तो बस नाम की ऐसी शक्ति आई कि वह सिमरन करने लग गया। वह पागलों की तरह घूमने फिरने लगा और बच्चे अते आम साधारन लोग जो आतमिक दुनीआँ के भेती नहीं थे, वह मजाक करने लगे। 'तपिआ खपिआ न कर, तपिआ खपिआ ना कर !' पर वह किसी का गुस्सा न करता, बलिक कहता - 'कहो भाई ! सतिकरतार।' इस तरह हर कोई उस को शौदाई समझने लग गया। उस की गुरू दर्शनों की लिव लग गई। और वह दर्शनों के लिए

www.9009.co.in

तड़पने लगा, उतनी देर में सतिगुरू जी सबबीं श्री अमृतसर जी को चले गए ।

मगरों तपे की व्याकुलता बढ़ गई और वह 'सति करतार' का सिमरन करता हुआ व्याकुल झला हो गया। उस के गले वाले वस्त्र फट गए और कभी कजिया और कभी नंगा फिरने लगा। उस की दशा बिगड़ने लगी ।

उस को यह ज्ञान हो गया कि सतिगुरू जी श्री अमृतसर को चले गए हें तो वह भी बिआसा से पार हो कर पीछे गया तो वह अमृतसर पहुंच गया ।

वह शहिर अमृतसर में और श्री हरिमंदर साहिब जी के चौगिरदे घूमता रहा। मगर उस को सतिगुरु जी के दरबार में दाखल होने की आज्ञा न मिली ।

'लें आओ !' सतिगुरु जी ने एक दिन हुकम दिया कि यह गुरमुख हें तपा पहले खपदा था, अब तपदा है। नाम अभिआसी हो गया है ।

भाई जटू को सतिगुरू जी के दरबार में हाजर किया गया, सतिगुरू जी के चरनों पर गिर पड़ा और रो रो कर वह बेनतीयां करने लगा - 'हे दाता जी ! जिस तरह पहले मेहर की है, अब भी दया करो ! होश रहे, सिमरन करां ।

सतिगुरू जी ने कृपा करके गुर-मन्तर बखशा, उस के मन को शांत किया और अन्तर आत्मे ज्ञान कराया । उस को वस्त्र पहनाए और गुरु घर में सेवा पर लाया । उन्हों की लिव लगी और सच्चा प्यार पैदा हो गया । धूनीओं का सेक जो हंकार पैदा करता था, वह खत्म हो गया ।

सतिगुर नानक देव जी ने सिमरन और सिखी मारग को प्रगट

कर के कलयुगी जीवों को कल्याण के साधन बस नाम सिमरन, सच्चे प्यार और सेवा ही बताया। वैसे ही भाई गुरदास जी फुरमाते हैं कि गुरू घर में प्यार का प्याला मिलता है। वह भी अनहद की धुनी बजती है। प्यार चांद चकोर जैसा होता है। ध्यान लगा रहता है। सिख को सच्चे प्यार की मेहर होती है गुरमुखों को ऐसा सुख मिलता है, सतिगुरू की वडिआई है।

सो हे जिज्ञासू जनों! नाम का सिमरन करो! धरम किरत और सेवा करो। पाखण्ड करके शरीर को गालने की जरूरत नहीं। सच्ची तपस्या तो नाम सिमरन है।

★

७३. छजू झीवर की साखी

श्री हरिक्रिशण धिआईऐ जिसु डिठे सभ दुख जाइ ॥

सतिगुरू हरिक्रिशण साहिब जी दिल्ली को जा रहे थे। आप को बालक रूप में गुरू गद्दी और बिराजमान देख कर कई अज्ञानी औरं हंकारी पण्डित मजाक करते थे। उन के ख्याल में गुरू साहिब के पास कोई आत्मक शक्ति नहीं थी। ऐसे पुरख जब नजदीक होकर चमत्कार देखते तो सिर नीवाँ कर लेते। पर हर एक गुरू साहिब में सतिगुरु नानक देव जी अकाल पुरख से प्राप्त की हुई शक्ति थी। जो चाहे कर सकते थे।

एक नगर में पड़ाव किया। जीव दर्शन करके निहाल होते। उन के जन्म मरन कटते और दुख नविरत करते थे। सतिगुरु जी की उपमा सुण कर अनेकों आए थे और दिवान सज गया था। उसी समय एक पण्डित आ गया। उस का नाम लाल जी था। उस ने दर्शन

www.9009.co.in

कीये। हउमैं से वलवले हुए मन में ख्याल आया - मैं चार वेद गीता के उपनिष्दों का कथा वाचक हूं मेरी बराबरी कौन कर सकता है। यह गुरु है तो गीता के अरथ करें। ऐसी मन की भाखया उस ने प्रगट भी कर दी। उस समय जो उन के खड़े थे उन को शंका हुई।

जोती सरूप मेहरों के दाते, अन्तरजामी श्री सतिगुरु जी, पण्डित लाल के मन की बात जान गए। उन्हों ने उंच्ची आवाज में बचन किया - 'पण्डित जी ! आप के मन में जो शंका है नविरत कर लो। सतिगुरू नानक देव जी जानी जान हैं।

पण्डित लाल कुछ शरमिंदा हुआ फिर भी उस को विद्या और आयू का अभिमान था। उठ कर आगे हुआ और कहने लगा--

'गीता के अरथ सुनाओ'

'अगर हम ने अरथ बताए तो आप ख्याल करेंगे शाइद अरथ याद किये हैं, इस लिए कोई आदमी बाहर से ले आओ। आप ने सतिगुरु महाराज के घर पर भी शंका किया है, आप उस को नविरत करो।' सतिगुरु जी ने पण्डित को फुरमाया।

पण्डित लाल बहुत हंकार में गया। वह दीवान से उठ कर बाहर गया और एक अनपढ़ झीवर छजू को पकड़ कर ले आया, सतिगुरु जी ने छजू को आपणे पास बिठाया और उस के सिर पर छिटी रखी तो सतिगुरु जी ने बचन किया--

'हे पण्डित ! जिस को आप ले आए हैं, ठीक है, करमों की गति न्यारी है यह तो पूरबले जन्म में पण्डित था। चार वेद और गीता की कथा किया करता था। मगर इस समय दाणे भुनता है और आप लोग अज्ञआनी मूरख ख्याल कर रहे हो। इस का ज्ञान किसी को नहीं है।

यह सुन कर पण्डित लाल बहुत हैरान हुआ और उधर छज्जू की भी पूरबले जन्म की सुरत जाग पड़ी। उस के साहमने गीता आई। गीता के सभी श्लोक आए तो आए श्लोकों का भाव अरथ! उस ने हाथ जोड़ कर सतिगुरू जी के पास बेनती की - 'महाराज ! आप की अपार कृपा दृष्टि हुई है, जो आप ने पूरबले जन्म का ज्ञान करा दिया है। मुझ से हंकार हो गया था, इस लिए मैं जितना विद्वान और ज्ञानी था उतना ही फिर बेसमझ अनपढ़ और अज्ञानी हुआ। यह जन्म मेरे हकार करने का डंड है। प्रमात्माँ की लीला है कि ढोअ बना दिया और आप के चरनों में हाजर हो गया हूं। जिस तरह आप हुकम करोगे उसी तरह ही होगा। आप तो त्रिलोकी के मालक और ज्ञानी हो ब्रह्म ज्ञान का पता है। करो कृता तो यह पुतली नाचती रहेगी।

पण्डित लाल ने छज्जू के मूंह से यह बचन सुने तो उसके पाओं के नीचे से मिट्टी निकल गई, उस को प्रतख नजर आया, छज्जू पण्डितों की तरह तिलकधारी बैठा था और उस के गले में जनेऊ था उस ने आंखों को मला और हैरान हुआ मगर उस की हंकारी आत्मा इस भेत को न जान सकी और उसी समय कहने लगा 'यह भी देख लेता हूं किस तरह आप का ज्ञान है।'

'हे पण्डित लाल जी ! आप श्लोक पढ़ो और पण्डित छज्जू जी कथा करेंगे। व्याख्या भी हर श्लोक की होगी।

सतिगुरू जी पण्डित लाल को कहा और उस ने एक श्लोक पढ़ा जिस को वह समझता था कि वह बहुत कठिन पाठ और अरथ भाव वाला श्लोक था।

'पण्डित लाल जी !' छज्जू बोला - 'आप ने श्लोक अशुद्ध पढ़ा है असल पाठ इस तरह है-

छजू संस्कृत का सलोक जबानी पढ़ने लग पढ़ा और सलोक का पाठ करने के पश्चात उस ने अरथ करने शुरू किए। भगवान कृष्ण जी उचारते हैं - मैं प्रमात्मा माया रूप भी हुं और निरंजन भी. जीव आत्मा अमर है। इस के बाद व्याख्या की। व्याख्या को सुण कर पण्डित लाल को पसीना आ गया। वह बहुत पशेमान हुआ कि उस ने सतिगुरू नानक देव जी की गुरता पर शक क्यों किया ? जैसे सतिगुरू नानक देव जी महान हैं, उसी तरह पिछले गुरू महाराज।'

पण्डित लाल के हंकार का सिर नीचा हो गया। उस को ऐसे लगा जैसे उस की सारी विद्या छजू के पास चली गई थी। वह तो शुद्ध पाठ भी करने के योग नहीं रहि गया था। उठ कर सतिगुरू जी के चरनों में गिर गया। आंखों में आंसू आ गए। दिल में पछतावा और वैराग। वह बेनती करने लगा।

'हे दातार ! आप तो प्रतख अवतार हैं मुझे क्षमा करो। मेरी विद्या मुझे वापस कर दो। मैं मूरख न बन जाऊं। छजू पण्डित है कि नहीं पर आप तो जरूर पण्डितों के भी पण्डित और महां विद्वान हैं।'

सतिगुरु महाराज जी दया के घर में आए। बखशन हार दातार ने पण्डित लाल की भूल को क्षमा किया। उसका हंकार खत्म करके उसे सुखी जीवन का सही रास्त दिखाया। वह गुरु घर में रहि कर सेवा करने लगा और कहा, मैं आप के चरनों में रहांगा।'

सतिगुरु जी महाराज ने उस की इस बेनती को भी प्रवान कर ली और उस को यह हुकम दिया कि गुर चरनों से ध्यान जोड़ कर प्रभू नाम का सिमरन किया करो। आप का कल्याण होगा। आप अनपढ़ जीवों को अक्षर ज्ञान करवाया करो। गांव में धरमसाल कायम

www.9009.co.in

कर। नाम ज्ञान और हरी कीरतन की मंडली त्यार करके भजन बंदगी में लग। गुणों का लोगों को लाभ पहुंचा।

पण्डित लाल ने सभ बचनों को सिर माथे माना। छज्जू का भी जन्म मरन काटा गया और भजन करने लगा।

सतिगुरू जी की विशाल और अपार महिमा बाबत भाई गुरदास जी फुरमाते हैं--

धंन गुरू गुर सिख धंन आदि पुरख आदेस कराया॥
सतिगुरू दरशन धंन हैं धंन दृष्टि गुर धिआन धराया॥
धंन धंन सतिगुरू शब्द सुरत शब्द गुर ज्ञान सुणाया॥
चरन कवल गुर धंन धंन धंन मसतक गुर चरनी लाया॥
धंन धंन गुर चरनामतो धंन मुहत जित अपिउ पीआया॥
गुरसिख सुख फल अजर जराया॥

(भाई गुरदास जी)

भाई साहिब जी फुरमाते हैं कि सतिगुरु जी भी धन्न हैं, उन्हों की महिमा बताई नहीं जा सकती और सतिगुरु जी के सिख भी, जिन्हों ने अनेकों कुरबानीयां कीं। टहिल सेवा करते और हुकम मानते हुए कोई कसर बाकी न छोड़ी। सतिगुरु जी ने अकाल पुरख के आगे डंडवत कराई अथवा नाम सिमरन की तरफ लगाया। सतिगुरू जी के दर्शन भी धन्न उपमा योग हैं क्योंकि दर्शन करने से जन्म जन्म के बंधन काटे जाते हैं, एक तरफ मन लग जाता है। धंन हैं सतिगुरु जी के चरन कंवल, जिन्हों पर जिस समय माथा टेकता हूं तो जंगाले हुए पाप भी दूर हो जाते हैं। सतिगुरु जी का दिया हुआ चरनांम्रित (पौहुल) आज कल खण्डे का अमृत नशा होता है कि जीवन भर

www.9009.co.in

नहीं उतरता और सदा--

'नाम खुमारी नानका चड़ी रहै दिन रात ॥'

वाली बात होती हैं । सतिगुरू महाराज ने गुरमुखों को ऐसा बना दिया कि वह निरमाण हो गए । हउमै खतम हो गई ।

ऐसी ही कृपा श्री हरिकृष्ण जी ने आठवें जामे में पण्डित लाल और भाई छजू पर की ।

★

७४. भाई जोगा सिंह जी की साखी

अखीं वेख न रजीआ बहु रंग तमासे ॥
उसतत निंदा कंन सुण रोवण ते हासे ॥
खांदी जीभ न रजीआ कर भोग बिलासे ॥
नक न रजा वास लै दुरगंध सुबासे ॥
रज न कोई जीविआ कूड़े भरवासे ॥
पीर मुरीदां पिरहड़ी सच्ची रहिरासे ॥

(वार भाई गुरदास जी)

गुर इतहास में भाई जोगा सिंह जी की कथा आती है । आप गुरू घर के महान सिख हुए हैं और सेवा सिमरन भी ऐसा किया कि आप जी का गुरद्वार पेशावर में अब तक काइम है । जिंदगी वाले सिख थे । उन्हों की जीवन कथा बड़ी शिक्षा देने वाली है । भाई गुरदास जी के कथन अनुसार सरीरक इन्दरे भोग बिलास करते हुए रजदे नहीं । कोई गुरमुख ही इन्हों पर काबू पा सकता है । वह भी जे सतिगुरू महाराज की अपार कृपा हुए तो, नहीं तो मत डोल जाता आंखें देखते हुए नहीं रजतीं । जीभा छती प्रकार के भोजन खाते

कोई नहीं भरती और कान निंदा चुगली सुनने को त्यार रहते हैं। जिन पुरषो की आयु सौ दो सौ साल हुई। वह मृत्यु के समय रोए और पछताए। रावण और सुलेमान पैगम्बर भी राज करते और भोग बिलास करते हुए भुखे के भुखे ही रहे। चक्रवरती राजे हुए। करोड़ों पती माया इकत्र करके न रजे।

मगर जो गुरु घर में आ गए उनकी त्रिशना खत्म हो गई। वह सबर सन्तोख में ऐसे आए कि भटकना न रही। ऐसे सन्तोखीओं में भाई जोगा सिंह जी भी हुए हैं, जिन की एक बार परीक्षा भी हुई। कलगीधर पिता जी ने कौतक किया था--

'जे गुर साँग पलटदा सिख सिदक न हारे।'

उन्हों ने परीक्षा ली थी। मगर सिख का मन डोला, तो सतिगुरु जी ने आप कृपा कर उस को बचा लिया। धन्न हैं सतिगुरु कलगीधर जी पिता आपणे सिखों का ख्याल रखते हैं।

भाई जोगा सिंह के माता पिता जी पिशावर के रहने वाले गुरु घर के प्रेमी थे। सगत अथवा संग के साथ श्री अनंदपुर साहिब सतिगुरु जी के दर्शन करने जाया करते थे।

भाई जोगा सिंह जी बाल अवस्था में थे कि माता पिता के साथ श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे। सतिगुरु जी के चरनों पर नमस्कार की तो महाराज ने पूछा, 'काका आप का नाम क्या है?'

'जोगा!' बाल रूप सुहिज सुभा भाई जोगा सिंह ने गुरु जी को उत्तर दिया।

'किस जोगा?' सतिगुरु जी का दूसरा बचन था।

'गुरु जी! आप जोगा!' उत्तर दिया।

बालक भाई जोगा सिंह से ऐसा बचन सुन कर सतिगुरु जी बहुत प्रसंन हुए तो उन्हों ने सिर पर प्यार दे कर बालक को निहाल

www.9009.co.in

कर दिया। अच्छा! फिर यहां रहो।

सतिगुरु जी ने बचन कर दिया। भाई जोगा सिंह हजूरी में रह कर सेवा करने और विद्या पढ़ने लगा।

कुछ समय गुरु घर में सेवा करके जद पेशावर की संगत वापस जाने लगी तो भाई जोगा सिंह के माता पिता भी वापस जाने को त्यार हो गए। उन्हों ने जोगा सिंह को साथ चलने के लिए कहा तो उस ने उत्तर दिया--

मैं नहीं जाना, मैं तो गुरु घर में ही रहाँगा। सतिगुरु जी की सेवा कराँगा। मैं नहीं जाना, पढ़ना है।

माता पिता यह सुन कर हैरान हुए कि सुभावक बात की थी कि बच्चे के मन को लग गई। उन्हों ने बहुत जोर लगाया मगर भाई जोगा सिंह माता पिता के साथ जाने को त्यार न हुआ। वह श्री अनंदपुर साहिब ही रहने लगा।

जोगा सिंह के माता पिता की सधर

समय ने आपणी रफतार के साथ चली जाना है यह रोकने से नहीं रुकती, समय के साथ ही मनुष्य की आयु बढ़ती जाती है। आज का बच्चा कल का जवान और परसों का बूढ़ा। इस तरह काल का चक्र चलता रहता है। जोगा सिंह महाराज की हजूरी में रहते हुए जवान हो गया, विद्या पढ़ गया और दाढ़ी मूछ प्रगट हो गई सुन्दर शरीर बना, उचा लंबा जो देखता वह ही बड़ा खुश होता।

सतिगुरु महाराज की उस पर बड़ी कृपा दृष्टि हुई। अक्षरों की विद्या के साथ साथ शस्तरों की विद्या भी सीखी। अच्छा घोड़ सवार और लड़ाका बहादुर संत-सिपाही बन गया। रात दिन सेवा में जुटा रहने लगा।

www.9009.co.in

पेशावर की संगत आई। संगत के जरिए जोगा सिंह के मां बाप भलों एक चिट्ठी आई। वह चिट्ठी सतिगुरू जी के आगे रखी गई। चिट्ठी में लिखा था -

'महाराज! सेवकों की सनिमर बेनती है कि जोगा सिंह के लिए एक सुशील कंनिआं का जोग बणता है। जोगा सिंह का विवाह करने की सद्दर है। आप क्रिपालता करो और जोगा सिंह को एक बार पेशावर भेज दो। महाराज जी! विवाह होने के पश्चात जल्द आप के पास आ जायेगा। हमारी उमर वडेरी हो रही है। यही ध्यान है कि इस का विवाह कर जाऐं। सांसो का क्या पता कितनी देर रहें कि न रहें। महाराज कृपा करें और जोगा सिंह को एक बार भेज दें। बार बार ताकीद है।

सतिगुरू जी ने जब चिट्ठी वाची तो उन्होंने भाई जोगा सिंह को आपणे पास बुलाया और बचन किया -

जोगा सिंह - आप के माता पिता ने यह चिट्ठी भेजी है।

जोगा सिंह - पिता जी यह दर छोड़ कर कहीं जाने को मन नहीं करता। आपणे चरनों में रखो क्या लेना है घर जा कर।

सतिगुरू जी - तेरे पिता जी ने चिट्ठी में यह बताया है कि वह आपकी शादी करना चाहते हैं। बेटा! मां बाप के कहने लगो चाहिए उन के मन की मुराद को भी पूरा कर के खुशीयां हासल करनी चाहिए।

जोगा सिंह - पिता जी! हुकम मान लेता हूं पर मन तो यहां से जाने को नहीं करता। तन मन सभी आप के चरनों में रखणा चाहता हूं यह आनन्दपुरी सच ही आनन्दपुरी है।

सतिगुर जी - जब तुम्हारी जरुरत महिसूस होगी, उस समय चिट्ठी भेजेंगे। चिट्ठी देखते ही आ जाणा।

जोगा सिंह ने सतिगुरू जी का हुकम मान लिया और घर जाने को त्यार हो गया। सतिगुरू जी ने कृपा दृष्टि कर के उस के मन में घर और मां बाप रिश्तेदारों आदि का मोह प्यार भी पैदा कर दिया। वह खुशी से जाने को त्यार हुआ और संगत के साथ मिल गया। वहां से पैदल रास्ता बडा लम्बा था। रास्ते में खतरे थे और संग बिनां जाना आना कठिन था। भाई जोगा सिंह जवानी में होने के कारन बड़े उत्साह से चलता गया।

भाई जोगा सिंह का विवाह

आखर संग के साथ पंध समाप्त करके भाई जोगा सिंह पेशावर आ ही गया। पुत्र को घर आया देख कर उस के मां बाप बड़े प्रसन्न हो गए। उनकी खुशी की कोई सीमा न रही। रिश्तेदार मिले और जल्द ही विवाह की त्यारी कर दी। जैसे सतिगुरु जी ने कौतक को वरताणा था। वैसे सारे रिश्तेदार और आपणे सम्बन्धी बुलवाए। खुशीयों का साजो सामान इकट्ठा किया गया। उसी शहिर में बारात जाणी थी। बारात त्यार हो गई। भाई जोगा सिंह को सुन्दर चोला डाल कर और सिर पर सेहरे बांधकर नौंगर बणाया। घोड़ी पर चढ़ कर लाड़ा विआण चलिआ। बहिनों ने वाग पकड़ी। काफी रुपए लिए आतिशबाजी और बैंड वाजे की गूंजार में बारात अगले घर में जा पहूंची। सुबह ही लावां फेरे का समय था। आसण बिछा कर लाड़ा लाड़ी को बैठाया गया। गुरु जस करने वाले रागीयों ने कीरतन किया और लावां पढ़नीयां शुरु हो गईयां। पहली लांव पढ़ी गई। दूसरी शुरु हो गई -

'अंतर बाहरि हरि प्रभु ऐको मिलि हरि जन मंगल गाए॥
जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए॥'

दूसरी लाव की अन्तम तुक अबी भाई जी के होठों पर थी। दूल्हे ने मत्था टेका, दुलहन अभी मत्था टेक रही थी तो सतिगुरू जी का हुकमनामा भाई जोगा सिंह जी के हाथों में पकड़ा दिया । भाई जोगा सिंह जी वहां ही रुक गए और जलदी से उसको पढ़ना शुरू कर दिया। सतिगुरू जी ने लिखा था--

'जिस समय हुकमनामा आप को मिले उसी समय श्री अनदपुर साहिब पहुंच जावो जितनी जलदी हो।'

गुर चरनों के भौरे ने गुरू का हुकमनामा पढ़ा तो झट त्यार हो गया, मैं चला हाँ, मैं नहीं ठहिर सकता। मैं बाकी लावां नहीं लैनीयां, मेरे सतिगुरू जी का हुकम है। मैं किस तरह ठहिरूं सतिगुरु जी क्या कहेंगे मेरे सतिगुरु जी।

माता पिता और बहिन भाई, रिश्तेदार और रागी विद्वान सभी रोक रहे कि और पाँच सात मिंट लगेंगे अरदास के पश्चात चले जाना इतनी देर में गुरु नराज नहीं हो जाएंगे।

मगर भाई जोगा सिंह न ठहिरा, आखर भाई और उसके घर वालों ने उस का परना और उसकी कृपान रख ली उसी के साथ बाकी की लावों को पढ़ कर शादी की रीती को पूरा किया। उसकी बनी पत्नी हैरान हुई। सभी ने कहा कैसा प्यार है गुरु जी के साथ। भाई जोगा सिंह इतने को पेशावर की बाहरली आबादीयों को पार कर चुका था वह तो घड़ीओं कोह करने पर तुला हुआ था, श्री कलगीधर पिता जी ने आपणी परेम डोरी डाली थी, खींच लिया सिख को कौतक कोई करना था। वाह मेरे दाता जी।

होशिआरपुर रुकना

पेशावर से भाग कर रावलपिंडी और रावलपिंडी से लाहौर आ

www.9009.co.in

लाहौर से भाई जोगा सिंह श्री अमृतसर आए। आपणे प्यारे सतिगुरू को मिलने की तड़पना दिल में थी। हुकम की पालणा करने की सद्दर दिल में थी। वाहो दाही पंध मिबेड़ कर होशियारपुर आया। कुदरत के खेल, सच्चे पातशाह जी ने सिख का इमतहान लेणा था। होशियारपुर में और भी कौतक रच कर रोक लिया।

भाई जोगा सिंह जिस बाजार में से निकलने लगा वह वेश्याओं का बाजार था। रूप माया ही आदमी को भुला लेती है। इस के खिचाव से बचणा असम्भव है। बचता वही है जिसको सच्चा सतिगुर आप रखे।

उस बाजार में एक सुन्दर वेश्या थी। उस की मनमोहनी सूरत को देख कर मरद दंग रहि जाते थे। उस ने आवाज दे कर जोगा सिंह को रोका। उस ने देखा आँखों में आँखें डाल कर हाथ से इशारा किया। भाई जोगा सिंह उस के नैणों के जाल में फंस गया। उस सुन्दरी की और देखने लगा। पर जल्दी ही ख्याल आ गया कि वह गुरु का सिख है। उस दे तेड़ कछहिरा, हाथ में कड़ा और सिर पर दस्तार है। अगर कोई उस को देखेगा तो क्या कहेगा।

यह विच र कर कुछ शरमिंदा सा हो गया। दस कदम आगे गया आगे जा कर फिर खड़ा हो गया, उस सुन्दरी का चित्र आंखों में था, सपने की तरह उस को इशारा करती प्रतीत हो रही थी। भाई जोगा सिंह फिर खलो गया सूरज की रोशनी में वह वेश्या को बैठक पर कैसे जाए ? लोग उस को क्या कहेंगे ? उस को गुरु और गुरू का हूकमनामा भूल गया। सिरफ दिमाग, आंखों में याद रहा लोक शरम और वेश्वा, उसके हृदय में एक आश्चर्ज ही घोल करने लग पड़े। करता के खेल, कहीं कचकौल वरगी सुन्दर स्त्री को घर

छोड़ कर दौड़ आया। उस से पूरी लावां भी न लीं। पर वेश्या के रूप में फंस गया। जहाँ धरम और इखलाक का नष्ट होणा था। तन को रोग लगने का डर था। घर छोड़ी स्त्री देवी और धर्म थी। उस का मेल और वेश्या का मेल जमीन आसमान का फरक था। भाई जोगा सिंह को आनन्दपुर का रास्ता भूल गया। वह शहिर से बाहर जा बैठा इस उडीक में कि हनेरा होने पर वह वेश्या की बैठक पर जाएगा। उस रूपवती को जरूर मिलेगा।

गुरू का सिंघ डोल गया। सच्चा गुर आपणे सिंघ की राखी भी करता है। चोजी प्रीतम को पता चल गया वह आपणी आत्मक शक्ति से सिख को बचाने लगे। एक सन्तरी का रूप धार कर वेश्या की पौड़ी के आगे जा खड़े हुए। काफी अन्धेरा हो गया था, भाई जोगा सिंह पीछे मुड़ा। लोग अभी भी बाजारों में घूम रहे थे। उस वेश्या की बैठक के नीचे बैठ गया। देखा कि बैठक की पौड़ीयों के नजदीक एक आदमी खड़ा है। उस के हाथ में सोटा है और उस के वस्त्र अमीरों के अर्दलीयों जैसे हैं। भाई जोगा सिंह दबा दब पौड़ीयां चड़ने लगा तो उस ने डांटा। ओए! किधर जाता है। उधर न जाओ, ऊपर सेठ साहिब गए हैं, चलो आपणी राह लो।'

भाई जोगा सिंह शरमिंदा सा हो कर परे हट गया। सड़क की दूसरी ओर होकर बैठक की ओर देखा तो बैठक में दिए की रोशनी तो थी, पर वह सुन्दरी बैठी नजर न आई। उस ने भरोसा कर लिया कि जरूर ही कोई न कोई सेठ ऊपर होगा, अगर न होता तो वह सुन्दरी जरूर बारी में ही बैठ कर किसी न किसी की उडीक कर रही होती। भाई जोगा सिंह जिधर से आया था वह उधर ही वापस हो गया। उस के दिल को खुतखुती लगी हुई थी। बेचैनी से वकत गुजार रहा था। कभी यह भी याद आ रहा था, बहुत काहल की। घर से

चलने की, आपणी पत्नी का मुख देख कर आता। काम के उबाल ने उस का शरीर लूंई कंडे कर दिया। दो घण्टे बेचैनी से काट कर वह फिर पीछे मुड़ कर आया। उस वेश्या की बैठक पर गया तो उस के पैर रुक गए। दिल को मायूसी हुई। क्योंकि वह सन्तरी अभी खड़ा था। बैठक में चानण था पर वेश्या बारी के आगे खड़ी न थी। आगे हो कर पूछने लगा - 'तेरा सेठ कब घर को जाऐगा ?'

'मुझे क्या मालुम, मुझे तो हुकम है, ऊपर किसी को न जाने देणा। जब तक सेठ नीचे न आ जाए। पर तुम हो कौण? संतरी ने उत्तर दिया और पूछा।

'मैं कोई भी हूं, तुम को इस से क्या लेना?' भाई जोगा सिंह का यह उत्तर था।

'चले जाओ फिर सर पर पैर रख कर, आज रात तेरा दाव नहीं लगेगा, तुम सिआणे और साऊ दिखते हो, देखने को रहणी बहणी का बंदा, की लभेगा इस माड़े का से तुझे? चले जाओ! राखे ने बहुत ही गुस्से और ताने के लहजे में कहा।

पर उस समय तो भाई जोगा सिंह का मन डोल चुका था। वह तो वासना में अन्धा हो रहा था। वह इस उडीक में था कि ऊपर गया आदमी नीचे आ जाए। पर उस समय भाणे होर के होर वरत गए। सिख की लाज सतिगुरू जी ने रखणी थी। आपणी अपार शक्ति से सतिगुरू जी ने वेश्या को सूल कर दिया। वह पीड़ा से तड़पने लगी और सभी बारीयां दरवाजे बन्द हो गए। भाई जोगा सिंह बड़ा हैरान था। रात चोखी निकल गई थी। सन्तरी ने फिर जोगा सिंह को डाँट कर कहा -

'जाओ दूर हो जाओ! कुकड़ बांग देने वाला है। तूं तो गुरु का सिख लगता है। क्यों आग की और बढ़ता है। यह नरकों की आग है'

www.9009.co.in

सन्तरी के इन शब्दों ने भाई जोगा सिंह जी का दिल हिला दिया। वह कांपा और उस को इस तरह प्रतीत हुआ जिस तरह उस की गुम हुई अकल मुड़ आई । जिस तरह वह सोया हुआ उठा हो। उस को ज्ञान हुआ उस की जबान से निकला--

'मेरे सतिगुरू जी' यह कह कर वह भाग उठा, जिस तरह चोर भागता है। वह डर गया, उस का शरीर कांप गया। डर के साथ भागने से दो चार बार गिर पड़ा। बख्शो दाता जी ! यह क्या भाना वरता ।' उस की आत्मा पश्चाताप करने लगी । वह भागता ही गया ।

भाई जोगा सिंह पश्चाताप करता हुआ चला गया, रोता गया। उस की आत्मा कहे जाती थी।

मेरा सतिगुरू क्या कहेगा ? मैं ने बहुत बुरा किया। धिक्कार है ऐसे जीवन को ! फिर स्त्री रूप में चल कर ठहिर गया, धिक्कार है तुझे जोगिआ ! जोगिआ !' इस तरह पश्चाताप करता, दुख मनाता हुआ दरिया सतलुज के किनारे जा पहुंचा। उस समय दिन काफी चड़ आया था। गुरु की नगरी नजर आई तो दरिया में छलांग लगा दी। मरने का ख्याल न किया। बेड़ी की इन्तजार न की। उस को जलदी थी, श्री अनंदपुर साहिब पहुंचने की।

भाई जोगा सिंह श्री अनंदपुर पहुंच गया मगर डर और सहिम ने उस की मानसक दशा बिगाड़ दी। वह डरते डरते सतिगुरू जी की हजूरी में पहुंचा। डंड-वत प्रनाम करने लगा मूंह के भार गिर पड़ा और रोई जाने लगे । दीवान में बैठी हुई सिख संगत हैरान हुई सतिगुरु जी मुसकराते रहे। आपणे सिख की तरफ देखते रहे।

'मुझे बख्शो दाता जी !' भाई जोगा सिंह बोला । हाथ बढ़ा कर सतिगुरु जी के चरनों पर लाए। सिदकी सिख देखते रहे ।

www.9009.co.in

सतिगुरु जी दया के घर आए। आपणे सिख पुत्र की भूल को एक सच्चे पिता की तरह भूलने लगे फिर गले लगाने को त्यार हो गए। साहिबाँ ने एक ही बचन किया।

'भाई जोगा सिंह! तुझे रुकणा नहीं चाहिए' फिर पिता जी ने जोगा सिंह को उठाया। बचन किया-'जोगा सिंह! देख पराईयां चंगीयाँ मावां भैणाँ धीआं जाणँ' गल ला के बख्श दिता ते भाई जोगा सिंह को सच्चा सिंह बणा दिया।

★

७५. बीबी बसन्त लता जी की साखी

श्री कलगीधर पिता जी की महिमां अपरम्पार हैं। श्री आनन्दपुर में चोजी प्रीतम ने बड़े चोज किए थे। अमृत त्यार करके गिदड़ों को शेर बणा दिया। धरम, अणख, सिदक, देश भक्ति और रब्बी प्यार की नई जोत जगाई। सदीयों से गुलाम रहने के कारण भारत की नारी निरबल होकर सच्च ही मरद की गुलाम बण गई और मरद से बहुत डरने लगी। सतिगुरु नानक देव जी ने जैसे स्त्री जाती को समानता और सतिकार देने का होका दिया था। वैसे सतिगुरू जी ने स्त्री को बलवान बनाने बदले अमृत छकण का हुकम दिया। अमृत छक कर स्त्रीयां सिंघणीयां बणने लगीं और वह धरम की रक्षा आप करने लगीं। और उन को पूरन ज्ञान हो गया कि धरम क्या चीज है? अधरमी पुरुष किस प्रकार नारी को धोखा देते हैं। सिदक के बेड़े पार होते हैं।

ऐसी बहुत सी सिदकवान बीबीयों में से एक बीबी बसन्त लता

थी, वह सतिगुरू जी के महिल श्री माता साहिब कौर जी के पास रहती और टहिल किया करती थी। नाम बाणी का सिमरन करने के साथ साथ वह बहुत दलेर और निडर थी। उस ने शादी नहीं की थी स्त्री धरम को सम्भाल कर रखा था। उस का दिल बड़ा मजबूत और श्रद्धालू था।

बीबी बसन्त लगा दिन रात माता साहिब कौर जी की सेवा में ही रहा करती थी। सेवा कर के जीवन व्यतीत करने में ही खुशी अनुभव करती थी।

माता साहिब कौर जी की सेवा करते हुए बसन्त लता की उमर सोलह साल की हो गई। जवान हो गई देख कर माता पिता शादी करना चाहते थे। पर उस ने इंकार कर दिया। कुछ और भी अकाल पुरख ने भाणे वरता दिए। श्री आनन्दपुर पर पहाड़ी राजाओं और मुगल की फौजों ने चढ़ाई कर दी। लड़ाई शुरु होने पर सभी खुशी के समागम रुक गए और सभी सिख तन मन और धन स नगर की राखी और गुरू घर की सेवा में लग गए।

बसन्त लता ने मर्दों की तरह वस्त्र पहिन लिये और माता साहिब कौर जी के महिल में रहने लगी। सिख भी पहरा देते। उधर सिख सूरमे वैरीयों से लड़ते हुए शहीद होते। बसन्त लता का बाप भी लड़ता हुआ शहीद हो गया। इस तरह लड़ाई के अन्धेरे ने सभी दूर किए। बसन्त लता कंवारी रही।

जैसे दिन में रात आ जाती है। झखड़ झोले शुरु हो जाते हैं। वैसे सतिगुरू जी और सिख संगत को श्री आनन्दपुर छोड़ना पड़ा। हालात ऐसे थे कि और टिकणा मुश्कल था। कुछ राजाओं और मुगल सेनापतीयों ने धोखा किया। उन्होंने कुरान और गऊ की कसम खाई पर मुकर गए। भाणे ऐसे वरतणे थे।

सर्दी की रात, रात भी हनेरी ।। उस समय सतिगुरू जी ने किला खाली करने का हुकम कर दिया। सभी ने आपणा घर और घर का सामान छोड़ा। माता साहिब कौर और माता सुन्दर कौर जी भी त्यार हुए। उन के साथ सब टहिलीए त्यार हुए। कोई पीछे रहि कर दुश्मनों के रहिम पर नहीं रहना चाहता था। आपणे सतिगुरू के चरनों से घोल घुमाई जाते हैं। बसन्त लता भी माता साहिब कौर के साथ साथ चलती रही। उस ने वीर सिंघों की तरह शस्त्र धारन किए। चण्डी की तरह हौंसला था। वह रात के अन्धेरे में चलते गऐ। काफला चलता गया। पर जब अन्धेरे में सिख संगत वहीर के रूप में दूर निकली तो वैरीयों ने सभी प्रण भुला दिए और उन्होंने सिख संगत पर हमला कर दिया। रास्ते में लड़ाईयां शुरु हो गई। सिख लड़ते लड़ते सिरसा के किनारे पहूंच गए।

वाहिगुरू ने क्या भाणा वरताणा है यह किसी को नहीं मालुम। उस के रंगों कौतकों भाणों को बस वह ही जाणता है और कोई नहीं जाण सकता। उसी सर्दी की पोह महीने की रात को हनेरी और बादल आ गए। बादल बहुत जोर का था। हनेरी ने राहीयों को रास्ता भुला दिया। उधर वैरी ने लड़ाई छेड़ दी बस बहुमुला सामान लूटने के लिए। इस भिआनक समय सतिगुरू जी के सिखों ने सिदक न छोड़ा और सरसा में छलांग लगा दी। पार हौने का यत्न किया। बिजली चमकती बर्षा और सरसा के भिआनक रोहड़ का मुकाबला करते हुए सिख सिंघणीयां आगे जाने लगे।

बसन्त लता ने कमर कसा किया हुआ था और एक नंगी तलवार हाथ में ली थी। उस ने पूरी हिम्मत की कि माता साहिब कौर की पालकी के साथ रहे, पर बलवान पाणी के वहिन ने उसे विछोड़ दिया

www.9009.co.in

उन से रुड़ कर अलग हो गई और अन्धेरे में पता न लगा किधर को जा रही थी। पीछे दुश्मन लगा था। नदी से पार हुई तो अकेली दुश्मनों के हाथ आ गई। दुश्मन उस को पकड़ कर खान समुन्द खान के पास ले गए। उन्हों ने जवान और सुन्दर देख कर आग सिकाई और बसन्त लता को होश में लाए। दुश्मनों की नीयत अच्छी नहीं थी। वह तो उसे बुरी निगाह से देखने लगे।

समुन्द खान एक छोटे कसबे का हाकम था। वह बड़ा ही माना बद-चलण था। किसी से नहीं डरता और मन आई करता। वह बसन्त लता को आपणे साथ आपणे किले में ले गया। बसन्त लता की सूरत ऐसी थी जो सही न जाती थी। उस के चेहरे पर लालीयां भख रहीं थी। समुन्द खान को यह भी भुलेखा था कि शायद बसन्त लता गुरु जी के महलों में से एक थी। जैसे कि मुगल हाकम और राजे अनेकों दासीयाँ बेगमें बहुत रखते हैं। उस ने बसन्त लता को कहा - इस का मतलब हुआ कि तुम पीर गोबिंद सिंह की पत्नी नहीं।'

बसन्त लता - नहीं ! मैं एक दासी हू सेवा करती रही हाँ माता कौर जी की।'

समुन्द खान - इस का मतलब यह हुआ कि स्वर्ग की हूर अभी तक कंवारी है। किसी मरद के लड़ नहीं लगी।

बसन्त लता - मैंने प्रतिज्ञा की है, कुवारी रहिण और मरने की। मैंने शादी नहीं करवाणी और न किसी मरद की सेवक बखना है मेरा सतिगुरू मेरी सहायता करेगा। मेरे धरम को अटूल रखेगा। जीवन भर प्रतीज्ञा का पालन करूंगी।

समुन्द खान - एसी प्रतिज्ञा तो औरत को कभी भी नहीं करनी चाहिए। दूसरा तेरा गुरु तो मारा गया। उस के पुत्र भी मारे गए।

www.9009.co.in

कोई शक्ति नहीं रही। कौण तेरी मदद करेगा ?

बसन्त लता - 'यह झूठ है। गुरू महाराज जी नहीं मारे जा सकते। वह तो हर जगह आपणे सेवक की सहायता करते हैं। वह तो घट घट के जानणहार, दुखीयों की सार लेते हैं। उन को कौन मारने वाला है वह तो आप अकाल पुरख है। तुम झूठ बोलते हो। वह कोई नहीं मरे।

समुन्द खान - हठ न करो। सुणो मैं तुझे बेगम बणा कर रखांगा। जो दुनीयां के सुख हैं वह दूंगा। तेरे रूप पर मुझे तरस आता है। मेरे कहने लगो हठ न कर तेरे जैसी सुन्दरी तो मुगल हरमों में ही शोभा देती है। मेरी बात मान जाओ।

बसन्त लता - 'नहीं ! मैं भूखी मर जाऊंगी, पुरजा पुरजा काट दो। जो प्रतिज्ञा की है, वह नहीं तोड़नी। धरम जान से भी प्यारा होता है। सतिगुरू जी को क्या मूह दिखलाऊंगी । जो मैं इस प्रतिज्ञा को तोड़ दू।

समुन्द खान - अगर मेरी बात न मानोगी तो याद रखो तुझे कष्ट दिए जाएगे। उल्टा लटका कर खाल उधेड़ दूंगा। कोई तेरा रखवाला नहीं बनेगा। मर जाएगी।

बसन्त लता - धरम बदले मरने और कष्ट सहने की शिक्षा मुझे श्री आनन्दपुर से मिली थी। मेरे लिए कष्ट कोई ओपरा नहीं।

समुन्द खान - मैं तुझे बन्दीखाने में फेंकूंगा। क्या समझती है अन्धेरा और भूखी रहेगी तो होश टिकाणे आ जाएंगे।

बसन्त लता - 'गुरु राखा'

समुन्द खान ने जब देखा कि यह हठ नहीं छोड़ती तो उस ने भी आपणे हठ से काम लिया। उस को बन्दी खाने में बन्द कर दिया। उस के अहिलकार उस को रोकते रहे। किसी ने भी सलाह न दी कि

www.9009.co.in

बसन्त लता जैसी स्त्री को वह बंदीखाने में न डाले। मगर वह न माना तो बंदीखाने में डाल ही दिया। परंतू बसन्त लता का राखा सतिगुरू था। गुरु जी का हुकम भी है--

राखनहारे राखहु आपि ॥ सरब सुखा प्रभ तुमरै हाथि ॥

बसन्त लता को बन्दीखाने में डाल दिया गया। बन्दीखाना नरक के रूप में था, जिस में चूहे, सिल मछर आदि था। मौत जैसा अन्धेरा रहता। किसी मनुष के माथे न लग सकता। ऐसे बन्दीखाने में लता को डाल दिया गया। मगर उस ने किसी कष्ट का ख्यान किया।

वाह प्रमात्मा के रंग पहली रात बसन्त लता के सिर उस बंदीखाने में आई। दुश्मन पास न रहे। उस अन्धेरे में अकेली बैठी को आपणा ख्याल भूल गया, मगर सतिगुरू जी और सतिगुरू जी के प्रवार का ख्याल आ गया। अनंदपुर की रौणक, उदासी, त्याग और सरसा किनारे अन्धेरे में भियानक लड़ाई की झाकीयां आंखों के आगे आया उस का सडौल तन कांप गया। सिंघों का माता साहिब कौर की पालकी उठा कर भागना और बसन्त लता का गिर जाना उस को इस तरह प्रतीत हुआ कि वह बंदीखाने में नहीं जैसे सरसा के किनारे पर है, उस के संगी साथी उस पासों बिछड़ रहे हैं। वह डाडें मार उठी - 'माता जी! प्यारी माता जी! आप मुझे यहां छोड़ चले हैं किधर जाओगे? मैं कहां आकर मिलूं? आप बिनां जी नहीं सकती, गुरु जी के दर्शन कब होंगे। माता जी! आप मुझे छोड़ कर न जाओ वलवले के वहिण में डूबी हुई बसन्त लता इस तरह पुकारती हुई भाग कर आगे होने लगी तो बंदीखाने की भारी पत्थरीली दीवार के साथ उस का माथा लगा, उसको होश आई, वह सरसा किनारे नहीं बलकि बंदीखाने में है, वह सुतंत्र नहीं, कैदण है! उफ! मैं कहां हूं ? उस के

मूहों निकला।

गोठ मार कर बैठ गई दोनों हाथ जोड़ कर सतिगुरु जी के चरनों का ध्यान किया। अरदास बेनती इस तरह करने लगी - 'हे सच्चे पातशाह! कलयुग को तारनहार, पतित पावन, दयालू पिता! मैं दासी को आप का ही आसरा है, आपकी अनजान पुत्री ने भोलेपन में प्रण कर लिया था कि आपके चरनों में जीवन बतीत करेगी। माताजी की सेवा करती रहेगी। गुरु घर के जूठे बर्तन साफ कर संगतों के जोड़े झाड कर जन्म सफल करेगी। दाता! तेरी खेड का तुझे ही मालुम है। मैं तो अनजान हूं, कुछ नहीं जानती क्या भाणा वरताया। सभी विछड़ गए आप भी दूर चले गए। मैं कैद हूं। मेरा रूप और जवानी मेरे दुश्मन बण रहे हैं। हे दाता दया कर, मेहर कर, दासी को बचाओ। दासी की पवित्रता बचाओ। अगर मेरा धरम चला गया तो मैं मर गई। नर्कों में वासा होगा। मुझे कष्ट के शिकंजे मे से बचाओ। द्रोपती की तरह तेरा ही आसरा है हे जगत रक्षक दीन दयाल प्रभू!

'राखनहारे राखहु आप ।। सगल सुखा प्रभु तुमरे हाथि ।।

बेनती खत्म न हुई थी कि बंदीखाने में दिए का चानण हुआ। रोशनी देख कर उस ने पीछे मुड़ कर देखा तो एक अधखड़ उमर की स्त्री बंदीखाने के द्वार पर खड़ी थी।

आने वाली स्त्री ने आगे हो कर बड़े प्यार मीठे और हंसते हुए लहजे में बसन्त लता को कहना शुरू किया।

'बेटी! मैं हिंदनी हुं। तेरे लिए मैं खाना बना कर लाई हुं। नवाब समुंद खान ने बोला था। बना कर लाई हूं। खाना खा लो, यह बड़ा पवित्र भोजन है।

बसन्त लता . 'मुझे तो भूख नहीं।'

स्त्री - बेटी!' आपणे पेट से तो कभी भी दुश्मनी नहीं करनी चाहिए

अगर सिर पर मुसीबत पढ़ी है तो क्या डर, भगवान टाल देगा। दुख का टाकरा करना भी पड़े तो तन्दरुस्त शरीर ही कर सकता है। रोटी तो तंदरुस्त रखती है। जो भाग्य में लिखा है सो करना और खाना पढ़ता है तूं सिआणी है।

बसन्त लता - रोटी से ज्यादा मुझे बंदीखाने से निकाल दो तो ठीक होगा, मैं तुर्कों के हाथ का नहीं खाणा, मरना कबूल है। जाओ! तुझ से भी मुझे डर लग रहा है। खतरनाक डर। कुछ नहीं खाणा। मैं कहती हुं कुछ नहीं।

स्त्री - 'यह मेरे बस की बात नहीं। खाने के हुकम के बिनां इस किले में पता नहीं हिल सकता। हाँ खान साहिब दिल के इतने बुरे नहीं, बीबे हैं। जरा जवान होने के कारण रंगीले जरुर हैं। वह तो तेरे रुप के दीवाने बने हुए हैं। मैं हिन्दनी हां। चन्द्रप्रभा मेरा नाम है। डरो न, खा लो रोटी।

बसन्त लता - मुझे क्या सबूत कि तुम हिन्दनी हो ?

स्त्री - राम राम, क्या मैं झूठ बोलती हां। मेरा लड़का खान साहिब के पास नौकर है। हम हिन्दू हैं। यह हिन्दूओं से बहुत प्यार करते हैं अच्छे हैं।

बसन्त लता - यह मन के बहुत चंचल हैं। बस तेरे इस रुप पर भूल गए हैं। वह इतने मस्त हुए हैं कि उन को खाना पीना भूला है। कुछ नहीं खाते पीते बस तेरा ध्यान है।

बसन्त लता - 'इस का मतलब है कि वह मुझे....।

स्त्री - (बसन्त लता की बात तोड़ कर) नहीं नहीं! तुझे डरने की कोई जरुरत नहीं। वह तुम से धोखा नहीं करेंगे। समझाऊंगी वह मेरी मानते हैं। वह तेरे साथ धोखा नहीं करेंगे। अगर तेरी मरजी

न होवे तो वह आप के शरीर को हाथ भी नहीं लगाएंगे। बहुत अच्छे हे। ऐसे डर कर तन का खून न सुका।

बसंत लता - भाई आप की बातें अच्छी नहीं, आप जरूर।...

स्त्री - राम राम कहो पुत्री। आप के साथ में कोई धोखा करना है, फिर आप का और मेरा धर्म एक, खाना खा ले। राम का नाम ले। जो सिर पर बनेगी सहो मगर भूखी न मरो। भूखा मरना ठीक नहीं।

चन्द्र प्रभा की परेरना करने और सुगन्ध खाने पर बसंत लता ने खाना खा लिया। वह कई दिनों की भूखी थी, खाना खा कर पानी पिया और सतिगुरू महाराज का धन्यवाद किया।

वह दिन गया और अगला दिन आया समुन्द खान की रात मुश्कल से निकली, दिन निकलना औखा हो गया। वह बंदी खाने में गया तो उस ने बसंत लता को जा देखा।

बसंत लता उस समय आपणे सतिगुरू जी का ध्यान धर कर अरदास बेनतीयां कर रही थी। जिस समय समुन्द खां ने आवाज दी तो वह दीवार के साथ लग कर खड़ी हो गई और उस की तरफ ऐसे देखने लगी जिस तरह भूखी शेरनी शिकार की तरफ देखती है कि शिकारी के वार करने से पहले वह उस पर ऐसा वार करे कि उस की आंतड़ीयों को बाहर खींच ले, मगर वह खड़ी हो कर देखने लगी कि समुन्द खां क्या कहता है।

'बसंत लता!' समुन्द खां बोला। 'यह ठीक है कि आप का और मेरा मजहब नहीं मिलता मगर स्त्री - पुरष का कुदरती मजहब तो है। आप के पास जवानी है यह जवानी को ऐवें न गवा। आराम से रहो। आप के साथी नहीं रहे। उन्हों को लश्कर ने चुन चुन कर मार दिया है। आप का गुरू...!

पहले तो बसंत लता सुनती रही। मगर जिस समय समुन्द खां के

मूंह से 'गुरु' शब्द निकला तो वह शेरनी की तरह गरज कर बोली, 'देखना ! पापी न बणना ! मेरे सतिगुरु के बारे कोई बुरा शब्द न कहना, सतिगुरू सदा ही जागता है। वह मेरे अंग संग है।'

मैं नहीं जानता आप के गुरू को ! जो खबरें मिली हैं, वह बताती हैं कि गुरु सभ खत्म. . .कोई नहीं बचा। सारा इलाका सिखों से खाली, मैं नहीं छोड़ सकता। आप के इश्क का दीवाना हो गया हूं। कहना मान. . . .बस अगर मेरे साथ खुशी से न बोलोगी तो समझ लो - मैं जबरदसती उठा लूंगा।

जालम दुश्मन की जबान से ऐसे बचन सुन कर डरी नहीं। उस को आपणे सतिगुरू महाराज की अपार शक्ति पर माण था। उस ने कहा - 'मैं आप को लाख बार बता चुकी हूं। मैं मर जाऊंगी, मगर मैं किसी पुरष की संगत नहीं करनी। मेरा सतिगुरु मेरी रक्षा करेगा। मेरे साथ धक्का करने का जो यत्न करेगा, वह मरेगा. . . .मैं चन्डी हूं ! मेरी पवित्रता का राखा भगवान् है। वाहिगुरु ! सतिगुरु !'

पिछले शब्द लता ने इतने जोर से कहे कि बंदीखाना गूंज पड़ा। एक नहीं कई आवाजें पैदा हुईं। यह आवाजें सुन कर समुन्द खाँ को अकल न आई। वह तो पागल हो चुका था। वास्ना ने उस को अंधा कर दिया था।

'मैं कहता हूं कहना मान जाह ! आप की रक्षा कोई नहीं कर सकता तुम मेरे. . .! यह कह कर वह आगे बड़ा तो उस ने बसंत लता को बाहों में लेने के लिए बाहें फैलाई तो उस की एक बाँह को दरद सी हुई। उसी समय बसंत लता पुकार उठी--

'जालम ! पीछे हट जाह ! वह देख, मेरे सतिगुरू जी आ गए। आ गए !' बसंत लता को सीढ़ीयों में रोशनी नजर आई। बसंत लता के इशारे पर समुन्द खां ने पीछे घुम कर देखा तो उस को कुछ

नजर न आया। उस ने मुड़ कर लता को कहा - 'इस तरह लगता है कि तुम पागल हो गई हो ? डर मत, बस फिर आप मेरे साथ चलो, नहीं तो. . . : .

'अब मैं आप की बात क्यों मानूं। मेरे सतिगुरु जी आ गए हैं, मेरी रक्षा कर रहे हैं।' बसन्त लता ने उत्तर दिया।

'देखो ! महाराज देखो ! यह जालम नहीं समझता, इस को अकल दिओ इस को पकड़ो। धन्न हो मेरे सतिगुरो ! आप बंदीखाने में दासी की पुकार सुन कर आए।'

समुन्द खां आगे बढ़ने लगा तो उस के पाँव धरती के साथ जुड़ गए। बाहें आकड़ गईं, उस को इस तरह प्रतीत होने लगा जिस तरह वह सिल पत्थर हो रहा था। उस के कानों में कोई कह रहा था--

इस देवी को बहिन कहो, अगर बचना है तो कहो बहिन।

अनोखा कौतक था, उधर बसन्त लता दूर जा कर नीवें गोठ मार दोनों हाथ जोड़ कर कहने लगी, 'सच्चे पातशाह ! आप धन्न हो ! मैं आप से बलिहारे जाती हूं। सतिनाम ! वाहिगुरु हे दाता ! आप ही तो अबला की लाज रखने वाले हो, दातार हो।'

समुन्द खान घबरा गया उस को ऐसे मालूम हुआ जिस तरह कोई अगंमी शक्ति उस के सिर में जूते मार रही थी। उस की आंखों के आगे मौत आ गई और वह डर गया। उस की जबान से निकला, 'हे खुदा ! मुझे बख्शो मिहर करो ! मैं कहता हूं, बहिन लता-- बहिन बसन्त लता !

यह कहने की देर थी कि उस के सिर पर लगने वाले जूते रुक गए। एक बांह हिली तो उस ने फिर वासता पाया--'हे खुदा ! हे सतिगुर जी श्री अनंदपुर वाले सतिगुरु जी मेहर करो ! मैं फिर ऐसा नहीं करूंगा, बसन्त लता मेरी बहिन है। बहिन ही समझूंगा यहां

www.9009.co.in

कहेंगी भेज दूंगा। मैं कान पकड़ता हूं।' इस तरह कहते हुए जैसे ही उस ने कानों की तरफ हाथ बड़ाए तो वह बड़ गए। उस की बाँह खुल गई और पांव भी हिल पड़े। उस का शरीर उस को हल्का हल्का सा महिसूस होने लगा, उसने आगे बड़ कर बसन्त लता के पांवों पर हाथ रख दिये और कहा--

'बहिन! मुझे मुआफ करो। मैं पागल हो गया था, आप का सिदक ठीक है। आप पाकदमन हो मुझे क्षमा करो।'

'सतिगुरां की मेहरें हैं। मैं कौन हूं, सतिगुरु जी ही तुझे मुआफ करेंगे। मैं बलिहारे जावां सच्चे सतिगुरु जी के। बसन्त लता ने उत्तर दिया और उठ कर खड़ी हो गई। समुन्द खान बसन्त लता को बहिन बना कर बन्दीखाने से बाहर ले आया और हरमों में ले जा कर बेगमों को कहने लगा - 'यह मेरी बहिन है।'

बसन्त लता का बड़ा सतिकार हुआ उस को देवी समझा गया। कोई खुदाई शक्ति वाली पाकदामन स्त्री और उस को बड़ी शान के साथ आपणे किले से विदा किया, घोड़ सवार साथ दिये। वस्त्र और नकदी रुपये दिये। उसी तरह जैसे एक भाई आपणी बहिन को विदा करता है। चन्द्र प्रभा भी उस के साथ चल पड़ी और रास्ते में पूछते हुए 'सतिगुरु जी, किधर को गए हैं।' वह चलते गए आखर दीने के मुकाम पर पहुंचे तो वहां सतिगुरु जी ठहिरे हुए थे, सतिगुरु जी के महिल माता सुन्दरी जी और साहिब देवां जी भी वहां घूमते घुमाते पहुंच गए।

बसन्त लता ने जैसे ही सतिगुरु जी के दर्शन किये तो भाग कर चरनों पर गिर पड़ी। चरनों की छोह प्राप्त की। आंखों से श्रद्धा के आंसू गिरे। दाते से प्यार लिया। ॥ समाप्त ॥

छापक : हरभजन सिंघ जीवन प्रिंटरज़, बाज़ार धोबीयां, अमृतसर । फोन : 543478

www.9009.co.in